आयुर्वेद का प्राण : वनौषधि विज्ञान











-ब्रह्मवर्चस

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

आयुर्वेद का प्राण : वनौषधि विज्ञान

*

लेखक

ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

*

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मूल्य : २५० रुपये

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयुर्वेद का प्राण वनौषधि विज्ञान

लेखक : ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



सर्वाधिकार सुरक्षित

सम्पर्क
गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखड) 249411
दूरभाष : (91) 1334 260403, 260602, 2611955,
Fax : (91) 1334 260866
E-mail: shail@del2.vsnl.net.in
Internet: http://www.gayatripariwar.com

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



जिस तरह सितार की एक कड़ी भी टूटी होने पर
उससे सुमधुर स्वर लहरी निकल पाना कठिन है,
उसी प्रकार प्रकृति की जीवन शृंखला से
जीवों-वनस्पतियों की किसी भी कड़ी का
टूटना हानिकारक है,
जो समूचे 'पर्यावरण चक्र' को प्रभावित करता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूमिका

मनुष्य आज जिस जीवन पद्धति का आदी हो चुका है, वह स्वाभाविक रूप से उसे रोगी बनाती है। नीरोग जीवन प्रकृति का एक अनुदान है, सृजेता की रीति-नीति का एक अंग है जबकि रोग विकृति का नाम है। उस भोगवादी संस्कृति के विकास ने आज घट-घट में स्थान बना लिया है। हम जो खाते हैं, पीते हैं—श्वास लेते हैं, सभी में कहीं न कहीं जहर घुला हुआ है। इसके अतिरिक्त बढ़ते लालच एवं दौड़ती आधुनिकता के तनाव ने मनुष्य को खोखला बना दिया है। जो भी कुछ शरीरगत मनोगत कष्ट आज मानव भुगतता दिखाई देता है, उसके मूल में वह अशक्ति ही है— मनोबल का ह्रास ही है, जो उसकी रचनाधर्मी जीवनचर्या को खण्डित करता रहता है। यह अशक्ति सर्वाधिक आज की परिस्थितियों में जन्मे तनाव से (स्ट्रेस से) हो रही है। प्राय: सभी प्रकार के रोग उससे होते सिद्ध किये जा सकते हैं।

चिकित्सा पद्धति की त्वरित परिणाम दिखाने की गुणवत्ता के कारण एलोपैथी लोकप्रिय होती चली गयी पर किसी ने भी उसके दुष्परिणामों पर ध्यान नहीं दिया। आज सारी मानव जाति पाश्चात्य औषधि प्रणाली की विषाक्तता से पीड़ित है। ऐसी परिस्थिति में एक मात्र चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ही ऐसी नजर आती है जो प्रकृति के सर्वाधिक समीप है एवं समग्र स्वास्थ्य के संरक्षण की बात कहती है। परम पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इस आयुर्वेद का पुनर्जीवन कर इसे सार्वजनीन सर्वसुलभ बना दिया। आज सभी प्रकार की काष्ठ औषधियाँ परिष्कृत रूप में उपलब्ध हैं। इनके कोई दुष्परिणाम भी नहीं होते। आयुर्वेद की यही विशिष्टता उसे सर्वोपरि बनाती है एवं सबके लिये सुलभ भी।

आयुर्वेद का प्राण है वनौषधि विज्ञान। जन-जन के मन में आज जो यत्किंचित् आशंका-दुविधा दिखाई देती है तो वह आयुर्वेद के उस प्रस्तुतीकरण के कारण जिसमें घुन लगी औषधियाँ, जो प्रभाव खो चुकी हैं— पंसारी द्वारा दी जाती है एवं गलत तरीके से ग्रहण की जाती हैं। यदि शुद्ध रूप में इन वनौषधियों को जन-जन तक पहुँचाया जा सके तो कोई कारण नहीं कि सबको स्वास्थ्य इस सदी के प्रारंभिक दशक में ही सुलभ न हो सके।

''आयुर्वेद का प्राण-वनौषधि विज्ञान'' पुस्तक जो **स्व० डॉ. एस. बी. नरूला** के अथक प्रयासों तथा ब्रह्मवर्चस के सामूहिक पुरुषार्थ द्वारा लिखी गई, जन-जन के लिए प्रस्तुत है। शरीर को स्वस्थ बनाए रखना सबसे बड़ा धर्म है, यह मानकर परिजन इसे पुन: उसी लोकप्रियता के साथ जन-जन तक पहुँचाएँगे—स्वास्थ स्वास्थ संरक्षण की क्रांति का एक निमित्त इसे बनाएँगे—ऐसी इच्छा है। इस स्तुत्य प्रयास के लिए हमारी हार्दिक मंगल कामनाएँ।

(डॉ. प्रणव पण्ड्या)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औषधि प्रयोग से संबंधित कुछ महत्त्व की जानकारी

किसी भी रोग का उपचार करने से पहले रोग का निश्चित निदान, औषधि के गुण-दोष, देश, ऋतु तथा प्रकृति का विचार करना अत्यन्त ही आवश्यक होता है; क्योंकि इन सब बातों का ध्यान रखे बगैर यदि औषधि का प्रयोग किया जाता है, तो हो सकता है लाभ होने के बजाय हानि हो। जैसा कि गाय का तुरन्त दुहा हुआ ताजा दूध पथ्य, तेजोवर्धक, सद्यः वीर्य उत्पन्न करने वाला उत्तम औषधि के रूप में माना गया है। जबकि नये पित्तज्वर, अतिसार, संग्रहणी, अर्श, कफ, कास, विद्रधि, कृमि, नया सुजाक एवं कुष्ठ रोगों में यह दूध हानिकर माना जाता है। इसीलिए औषधि का प्रयोग करने से पहले पूरी तरह से विचार करना चाहिए।

इसी प्रकार कुछ ऐसी वनौषधियाँ हैं, जिनका प्रयोग करने से पहले शोधन किया जाता है- कलिहारी, कुचला, भिलामा, कनेर, अफीम, भाँग, धतूरा के बीज एवं गुँजा के बीज।

औषधि की तरह हींग का प्रयोग घी में तल कर किया जाता है, फिटकरी का प्रयोग फुला कर ही करना चाहिए।

क्वाथ मिट्टी के बर्तन में तथा ढके बगैर बनाना चाहिए, यदि मिट्टी का बर्तन उपलब्ध न हो, तो कलई किया पीतल के बर्तन में क्वाथ बनाना चाहिए। इसी तरह तेल को सिद्ध करने के लिए पीतल के बर्तन का ही प्रयोग करना चाहिए।

कल्क के लिए लोहे के बर्तन का प्रयोग किया जाता है।

अपथ्य वस्तु का सेवन स्वेच्छा से या भूल से भी किया जाता है, तो औषधि का लाभ नहीं होता, इसलिए पथ्य वस्तुओं पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

लोहभस्म वाली औषधि भोजन पश्चात् सेवन करना लाभकारी है।

जुलाब की औषधि प्रातःकाल में लेना चाहिए।

गर्भवती महिलाओं को विरेचक या तेज औषधि का सेवन नहीं करना चाहिए।

वाजीकारक (शक्तिवर्धक) औषधि का सेवन करने से पहले शरीर में से सभी रोगों को दूर कर लेना चाहिए तथा शरीर का पूर्ण शोधन कर लेना चाहिए।

स्तनपान करते बच्चों को औषधि देने से पहले माँ भी रोग से पीडित है, तो उसे भी औषधि देनी चाहिए।

प्रसूति रोग तथा त्रिदोष में घी का सेवन पूर्णतया वर्जित है।

एल्युमीनियम बर्तन का प्रयोग किसी भी प्रकार की औषधि बनाने में, भोजन तैयार करने में, शुद्ध करने में, उबालने में, वस्तु संग्रह में, जल पीने के लिए, खाद्य पदार्थ सेवन में कभी भी नहीं करना चाहिए।

औषधि का चयन- जहाँ तक संभव हो ताजी औषधि का ही प्रयोग करना चाहिए, किन्तु पीपर, गुड़, वायविडंग, धनिया, मधु तथा घी - यह छः पदार्थ एक वर्ष पुरानी होनी चाहिए।

गिलोय, अडूसा, शतावर, अश्वगंधा, पीलावासा, सौंफ, प्रसारनी (हरनपदी-कोन्वोल्वुलस), कुटज की छाल तथा पेठा (कोहड़ा)- ये नौ औषधियाँ जहाँ तक ताजी उपलब्ध हों, उसी का उपयोग करना चाहिए, ताजा होने के कारण दुगुनी मात्रा में नहीं लेनी चाहिए, अन्य औषधियाँ सूखी तथा नयी लेनी चाहिए। जबकि ताजी हो तो दुगुनी मात्रा में लेनी चाहिए। जिस प्रयोग में औषधि सेवन का समय न बताया गया हो, उसका सेवन प्रातःकाल ही करना चाहिए। जिस औषधि का प्रयोज्य अंग न बताया गया हो, उसके मूल का ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोग करना चाहिए। जिस प्रयोग में भाग (हिस्सा) न कहा गया हो, वह सम भाग में लेनी चाहिए। जंगल की वनस्पति से तथा ताजी वनस्पति से बनाई हुई औषधि के गुण एक वर्ष के बाद बहुत कम हो जाते हैं। इसमें भी बनाया हुआ काढ़ा या क्वाथ आठ पहर में तथा कूट कर बनाया हुआ चूर्ण दो माह में गुणहीन हो जाता है। जबकि घी तथा तैलादिक चार माह में गुणहीन हो जाते हैं। गोली, अवलेह तथा पाक एक वर्ष बाद हीनवीर्य हो जाते हैं। घी तथा मधु ये कभी भी सम भाग में नहीं लेने चाहिए, क्योंकि यह जहर बन जाता है। जामुन तथा मधु के साथ दूध का सेवन सर्प विष की तरह घातक प्रभाव वाला होता है। गरम किया हुआ दूध बीस घंटे तक ही गुणकारी होता है। रात का रखा हुआ दूध दिन में नहीं पीना चाहिए। महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष कम तथा कोमल औषधियों का सेवन करना चाहिए। इसी प्रकार अग्निमांद्य रोगियों को घी वाला आहार नहीं देना चाहिए।

औषधि कब एवं कैसी लानी चाहिए- औषधि लाने के लिए प्रातःकाल का समय उत्तम माना जाता है। इसी प्रकार उत्तम स्थल पर उगी हुई वनौषधि के मूल या छाल जो भी अंग लेने हों, वही लें। गंदे स्थल पर या नमी वाले स्थल पर उगी वनौषधि तथा श्मशान में जिस स्थल पर घास उगा हुआ न हो, वैसे स्थल की वनौषधि का प्रयोग औषधि की तरह नहीं करना चाहिए। कार्तिक तथा आसो मास में सभी प्रकार की वनौषधियाँ गुणवाली तथा रस से भरी होती हैं, इसी कारण इन्हीं महीनों में औषधियाँ लानी चाहिए। जबकि रेचन तथा उल्टी के लिए वनौषधि वैशाख तथा जेठ माह में लानी चाहिए। जिस वृक्ष के मूल बड़े तथा मोटे हों, उस वृक्ष के मूल की छाल लेनी चाहिए। जिस वनौषधि के मूल छोटे हों, उसके मूल का ही प्रयोग औषधि के रूप में करना लाभकारी होता है।

स्वरस (अंग रस)- ताजी वनौषधि को कूट कर स्वच्छ कपड़े द्वारा निचोड़ने से जो रस निकलता है, उसको स्वरस या अंग रस कहते हैं।

सूखी हुई वनौषधि सोलह तोला लेकर उसका चूर्ण बना कर उसमें दुगुना जल मिलाकर मिट्टी के घड़े में आठ पहर तक भिगोकर रखना चाहिए, इसके पश्चात् दूसरे दिन इसको छान कर इस जल का प्रयोग करना चाहिए।

सूखी हुई वनौषधि लेकर उसमें आठ गुना जल मिलाकर उबालना चाहिए, चौथा हिस्सा जल बाकी रहे, तब तक उबालना चाहिए, इसको छानने के पश्चात् प्राप्त हुआ रस अंग रस कहलाता है। यदि इसका सेवन करना है, तो केवल दो तोला ही करना चाहिए। यदि सूखी औषधि को रात भर भिगोकर रखने के पश्चात् काढ़ा बनाया गया है, तो उसकी सेवन मात्रा चार तोला होती है। यदि स्वरस में मधु, शर्करा, गुड़, जीरा, तेल, घी मिलाना है, तो आधा-आधा तोला ही मिलाना चाहिए।

क्वाथ- इसके लिए सभी औषधियाँ मिलाकर चार तोला लेकर कूट लें, इसमें ६४ तोला जल मिलाकर धीमी अग्नि पर, मिट्टी के घड़े में या अन्य बर्तन में उबालें, आठ तोला जल बाकी रहे, तब तक उबालें। इसको छानकर सेवन की मात्रा बच्चों के लिए तीन माशा से एक तोला होती है। क्वाथ में शर्करा, दूध, गुड़ पीपर आदि पदार्थों को अनुपान के अनुसार उचित मात्रा में मिलाना चाहिए।

चूर्ण- सूखी यानि शुष्क औषधि (द्रव्य) लेकर कूट लें तथा महीन कपड़े से छान लें, इसको चूर्ण कहते हैं। इसका सेवन प्रौढ़ के लिए छः माशा से एक तोला तथा छोटे बच्चे के लिए एक माशा से तीन माशा लम्बे समय तक होता है। चूर्ण में गुड़ दुगुनी मात्रा में घृतादि पदार्थों में चूर्ण डालना हो तो चूर्ण से घी की मात्रा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुगुनी डालनी चाहिए। इस चूर्ण का क्वाथ बनाना हो, तो यह चूर्ण पूरी तरह भीग जाये, इतनी मात्रा में प्रवाही डालना चाहिए।

गोलियाँ (वटिका) बनानी हो तो- अगर यह गोलियाँ मधु या गुग्गुल में बनानी हों, तो यह चूर्ण के सम भाग में लेते हैं, यदि गुड़ में बनानी हों, तो गुड़ की मात्रा दुगुनी लेते हैं, किन्तु शर्करा में बनानी हों, तो चूर्ण से शर्करा की मात्रा चौगुनी लेकर पाक बनाकर उसमें चूर्ण मिलाकर गोलियाँ बनायी जाती हैं।

हिम (शीत कषाय)- चार तोला औषधि कूटकर, चौबीस तोला जल में रात भर भिगोकर रखा रहने दें तथा प्रातः छान लें। इसको हिम या शीत कषाय कहते हैं। इसकी सेवन मात्रा आठ तोला होती है।

कल्क- ताजी हरी वनौषधि को बारीक चटनी की तरह घोटकर यदि सूखी वनौषधि हो, तो उसमें जल मिलाकर घोट लें। सेवन मात्रा दस माशा होती है। यदि कल्क में घी, तेल मिलाना है, तो कल्क से इनकी मात्रा दुगुनी लेनी चाहिए। यदि शर्करा मिलानी हो, तो दोनों ही सम मात्रा में होने चाहिए।

अवलेह- जिस प्रधान वनौषधि का अवलेह बनाना है, उसका स्वरस लें या क्वाथ बनाकर छान लें, इस क्वाथ प्रवाही को पुनः धीमी आग पर गाढ़ा होने दें। इसमें मधु, गुड़ या शर्करा तथा घी एवं तेल भी मिलाया जा सकता है। यह जानने के लिए कि अवलेह तैयार हो गया है या नहीं, इसके लिए जल से भरे प्याले में अवलेह को डालने से यदि वह डूब कर तल में बैठ जाता है, तो वह ठीक तैयार हो गया है। इसकी सेवन मात्रा १/२ से २ तोला तक की होती है।

पाक- जिस वनौषधि का पाक बनाना है, उसका चूर्ण बनाकर उसमें १६ से २० गुना दूध डालकर खोया (मावा) बना लें, इसके पश्चात् इसमें घी मिलाकर अग्नि पर रख कर हिलाकर उसको दाना स्वरूप कर लें। इस तैयार हुए दाने में इसी के सम वजन में शर्करा की तीन तार की चासनी बनाकर मिला दें। इसके पश्चात् आवश्यकतानुसार इसमें बादाम, पिस्ता, बंगादिभस्म मिलाकर थाली में घी लगाकर पाक को इसमें ठंडा कर लें। इसके लड्डू या बरफी जैसे टुकड़े काट लें।

आसव- जिस वनौषधि का आसव बनाना है, उसको जल में उबालें, बगैर कलई किये हुए पीतल के बर्तन में ठंडे जल में मिलाकर एक से दो माह रखने से आसव तैयार हो जाता है। इसकी मात्रा चूर्ण ५०० ग्राम, मधु ढाई किलोग्राम, गुड़ छः किलोग्राम तथा जल छः लीटर मिलाकर आसव तैयार किया जा सकता है।

अरिष्ट- किसी भी औषधि के उबाले हुए जल में औषधि का चूर्ण मिलाकर मिट्टी के बर्तन में मुँह बंद कर एक से दो माह तक रखने से अरिष्ट तैयार होता है। जहाँ निश्चित मात्रा (प्रमाण) न लिखी हो, उस समय औषधि सहित दो लीटर उबले हुए जल में मधु ढाई किलोग्राम, गुड़ छः किलोग्राम मिलाकर अरिष्ट बनाया जा सकता है।

शरबत- जिस औषधि का शरबत बनाना हो, उसका स्वरस, अर्क या काढ़ा तैयार कर उसमें स्वरस से डेढ़ गुनी शर्करा की चासनी तैयार कर मिलायी जाती है, तो औषधि का शरबत तैयार हो जाता है।

मुरब्बा- जिस औषधि का मुरब्बा तैयार करना हो यदि यह चीज कठिन है, तो इसको चाकू से कट (चीर) मारकर जल में उबाल लें, यदि छाल सहित है, तो छाल निकाल कर अंदर के मृदु भाग के टुकड़े कर उबाल लें। इसके पश्चात् इस वस्तु से तीन गुनी शर्करा की चासनी बनाकर उसमें यह उबली हुई वस्तु डाल दें। कारण कि इस वस्तु में रहा जल चासनी में मिलकर चासनी को पतली कर देता है। रुचि अनुसार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें इलायची, केसर डालकर इस मुरब्बे को शीशी के मर्तबान में भरकर मुँह बंद कर कुछ समय के लिए रखा रहने दें। इसमें अच्छा स्वाद व गुण पैदा हो जाएगा।

घी-घृत- जिस औषधि का घी सिद्ध करना हो, उस औषधि के स्वरस या कल्क से चार गुना घी लेते हैं, घी से चार गुना जल या दूध या गोमूत्र लें। यदि वनौषधि सुखी है, तो १६ गुना जल में क्वाथ बनाकर घी सिद्ध किया जा सकता है। क्वाथ या कल्क के साथ उबलता जल जब सम्पूर्ण रूप से सूख जाये तथा औषधि का भाग पककर लाल हो जायें एवं घी अलग हो जाये तब घी तैयार हो गया है समझना चाहिए। सेवन मात्रा एक से दो तोला की होती है।

तेल सिद्ध करना - उपर्युक्त पद्धति से ही किया जा सकता है। घी के बदले तेल का प्रयोग किया जाता है।

फांट- जिस औषधि का फांट बनाना है, उस औषधि का महीन चूर्ण गरम जल में मिट्टी या शीशे के बर्तन में दो घंटे तक भिगोकर रख दें। इसके पश्चात् छान कर इस जल का प्रयोग किया जा सकता है या ठंडे जल में बारह घंटे रखा रहने के बाद यह फांट तैयार हुआ माना जाता है। सेवन मात्रा चार तोला की है। उसमें अनुपान के रूप में एक तोला मधु मिलाया जा सकता है।

पुटपाक- जिस किसी वनौषधि का पुट पाक बनाना है, उस ताजी वनौषधि को पीसकर इसका गोला बनाकर इस पर वट, एरण्ड या जामुन के पत्तों को लपेट कर उस पर कपड़े सहित मिट्टी का एक इंच स्तर चढ़ा कर इस गोले को गोबर के कण्डे की आग में रखें, जब पूर्ण रूप से गोला लाल हो जाय, तब मिट्टी का स्तर हटा कर गोले से रस निचोड़ लें। यदि वनौषधि सूखी है, तो उसको जल में घोट कर उसका गोला बना सकते हैं। इस रस की सेवन मात्रा दो से चार तोला होती है। यदि आवश्यक लगे, तो उसमें आधे से एक तोला तक मधु मिला लें।

रसक्रिया-घन - जिस वनौषधि की रस क्रिया-घन करनी है, उसकी चूर्ण सोलह गुना जल में मिलाकर आठवें हिस्से का जल बाकी रहे, ऐसा क्वाथ बना लें। इसक्वाथ को छानकर इसको दुबारा उबाल कर गाढ़े खोये (मावा) जैसा तैयार हो जाये तब तक उबालें, यह गाढ़ा पदार्थ रस क्रिया-घन कहलाता है। भारतवर्ष में दारुहल्दी, गिलोय, मधुयष्टि जैसी अनेक वनौषधियों की रस क्रिया करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है।

सिरका- मीठे प्रराही जैसे गत्रे का रस, जामुन का रस, अंगूर का रस शीशे के मर्तबान में भरकर उसका मुँह बंद कर रखे रहने से सिरका तैयार हो जाता है। इस रस का सिरका तैयार होने तक प्रत्येक सप्ताह के अंतर पर उसे छानते जायें।

मंथ (हिम)- वनौषधि चूर्ण में सोलह गुना जल मिलाकर अच्छी तरह हिलावें, उसके पश्चात् इसे कपड़े से छान लें, छना हुआ प्रवाही मंथ होता है। इसकी सेवन मात्रा आठ तोला होती है।

क्षार- जिस वनौषधि का क्षार तैयार करना हो उसका पंचांग एक बड़े बर्तन में जला कर उसकी भस्म बना लें। इस भस्म को ६४ गुना जल में मिला दें, इसे एक दिन तक रहने दें, इस जल में तमाम क्षार घुल जायेगा तथा भस्म का हिस्सा नीचे बैठ जायेगा। इसके पश्चात् ऊपर से निथरे हुए जल को दूसरे बर्तन में एकत्र कर अच्छी तरह उबालने से क्षार तैयार हो जाता है। इस क्षार में भस्म रहने से क्षार काला दिखता है,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसको दुबारा थोड़े जल में डालकर अच्छी तरह हिला कर पाँच से सात घंटे रहने दें, इसके ऊपर का निथरा हुआ जल छान कर उबाल लें, तो शुद्ध सफेद क्षार प्राप्त होगा।

औषधि का सेवन समय-

⇒ क्वाथ, अंग रस (स्वरस), चूर्ण - प्रातःकाल।
⇒ अरुचि तथा अग्निमांद्यता हो तो भोजन के साथ।
⇒ स्वरभंग के लिए रात्रि भोजन के साथ।
⇒ धातुपुष्टि के लिए प्रातःकाल एवं सायं भोजन के पश्चात्।
⇒ कान में तेलादिक डालने के लिए रात को सोते समय।
⇒ काढ़ा, चूर्ण, रसायन इत्यादि **औषधियाँ** सेवन करनी हो तो ३, ७, १४, २१ या ४२ दिन लगातार एक या दोनों समय सेवन करनी चाहिए।
⇒ मूत्रल औषधि दिवस प्रातःकाल।
⇒ मृदुविरेचन रात को सोते समय।
⇒ अतिरेचन की औषधि खाली पेट प्रातःकाल।
⇒ वमन कराने के लिए औषधि प्रातःकाल **कांजी** पिलाकर।
⇒ फल खाने के समय भोजन के पश्चात्।
⇒ मादक या पसीना लाने के लिए **औषधि** सेवन रात को सोने के दो घंटे पहले।

पथ्य पालन- ऐसा कहा जाता है कि पथ्य पालन करने वाले रोगी का रोग औषधि सेवन के बिना भी ठीक हो जाता है लेकिन पथ्यहीन रोगी के रोग, सैकड़ों औषधियों के सेवन से भी ठीक नहीं हो पाते। यदि पथ्य पालन किया जाये, तो औषधि सेवन की कोई आवश्यकता नहीं होती। पथ्य पालन नहीं करने वाला यदि औषधि का भी सेवन करता है, तो यह औषधि सेवन अर्थहीन हो जाता है।

विनापि भेषजैर्व्याधिपथ्यादेव निवर्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि।।
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।। (लोलिराज बृ.)
यथा काष्ठचयं दूरात् प्राप्य घोरतरोऽग्निकः,
तथाऽपथ्यस्य संयोगाद् भवेद् घोरतरोऽगदः।। (हारीतसंहिता)

जिस तरह लकड़ी के ढेर पर दूर से गिरी अग्नि अंत में भयानक रूप ले लेती है, उसी तरह अपथ्य सेवन करने वाले रोगी का रोग भयानक स्वरूप ले लेता है।

अनुपान - इस पुस्तक में औषधि सेवन के समय जहाँ अनुपात नहीं बताये गये हैं, वहाँ रोग अनुसार निम्नलिखित अनुपान देने चाहिए।

सन्निपात में ⇒ अदरख का रस।

खाँसी (कास) एवं कफ विकार में ⇒ अडूसा स्वरस या त्रिकटु का चूर्ण।

ज्वर तथा विषम ज्वर में ⇒ मधु तथा पीपर।

संग्रहणी में ⇒ छाछ। जीर्ण ज्वर में ⇒ मधु तथा लींडी पीपर।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृमिरोग में ⇒ वायविडंग। क्षयरोग में ⇒ शिलाजीत।

मूल व्याधि में ⇒ चित्रक तथा भिलामा। श्वासरोग में ⇒ भारंगी मूल तथा शुण्ठी।

प्रमेह में ⇒ आँवला, हल्दी एवं शर्करा वाला त्रिफला।

तृषा में ⇒ तपाये हुए सोने से छमकाया (छौंका) हुआ जल।

ज्वर तथा तृषा में ⇒ तपाये हुए लोहे से छमकाया हुआ जल।

त्रिदोष में ⇒ अदरख का स्वरस तथा मधु। शूल में ⇒ घी एवं हींग।

आम में ⇒ करंज, गोमूत्र तथा एरण्ड का तेल।

प्लीहा में ⇒ त्रिफला तथा पीपर। खाँसी में ⇒ कंटकारी तथा त्रिकटु।

वात व्याधि में ⇒ गुग्गुल, लहसुन तथा घी। रक्तपित्त में ⇒ अडूसा स्वरस।

फेफड़े तथा स्वर शुद्धिकरण के लिए - वच, अक्करकरा तथा मधु।

उदररोग में ⇒ विरेचन। वातरक्त में ⇒ गिलोय एवं एरण्ड का तेल।

मेदरोग में ⇒ जल में मधु मिलाकर सेवन। प्रदर में ⇒ लोध्र।

अरुचि में ⇒ अनार या बिजोरा का रस। व्रण में ⇒ त्रिफला एवं गुग्गुल।

शोक में ⇒ मधु का आसव। अम्लपित्त में ⇒ द्राक्षा।

नेत्ररोग में ⇒ त्रिफला। उन्माद में ⇒ पुराना घी।

निद्रा नाश में ⇒ भैंस का दूध। कुष्ठ रोग में ⇒ खदिर की छाल-जल।

श्वित्ररोग में ⇒ बावची तथा काली गूलर। अजीर्णता में ⇒ निद्रा तथा हरड़।

मूर्छा रोग में ⇒ शीतोपचार। अश्मरी में ⇒ शिलाजीत।

मूत्रघात में ⇒ कोमल मूली के पत्रों का स्वरस तथा सूर्याखार मिलाकर।

गुल्म (आध्मान) में ⇒ वरुण की छाल। विद्रधि में ⇒ शीतविधि।

स्वर शुद्धि करने के लिए ⇒ पुष्कर मूल का सेवन मधु के साथ।

रोगी के लिए जल का प्रयोग -

शीतल जल का सेवन - मूर्छा, पित्त, गरमी, दाह, विष विकार, रक्त विकार, तमक श्वास, वमन, ऊर्ध्व रक्तपित्त जैसे रोगों में लाभकारी।

उबले हुए गुनगुने जल का सेवन - प्रतिश्याय, वातरोग, आध्मान, विबंध, अतिरेचन में, नवीन ज्वर, अरुचि, संग्रहणी, श्वास, खाँसी, गण्ड, हिचकी जैसे रोगों में तथा तेलादि स्नेह पीने के पश्चात् शीतल जल का सेवन नहीं करना चाहिए। इसलिए इन रोगों में उबला हुआ गुनगुना जल का सेवन करना चाहिए।

सन्निपात रोग में रोगी जब तृषा से बहुत ही घबराता हो, उस समय शीतल जल का सेवन मृत्यु को निमंत्रण देना होगा। विषूचिका रोग की उल्टी हुई हो, तो आवश्यकता होने पर सौंफ का उबाला हुआ जल एक-एक चम्मच देते रहना चाहिए। अरुचि, जुकाम, अग्नमांद्यता, शोथ, यक्ष्मा, उदररोग, श्वित्र, नेत्ररोग, नवीन ज्वर, व्रण तथा मधुमेह जैसे रोगों में थोड़ा-थोड़ा जल देते रहना चाहिए।

उष्ण जल का सेवन - रक्तपित्त, मूर्छा, रक्त विकार एवं पित्तप्रधान रोगों में अति हानिकारक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुक्रमणिका

	Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
1)	Abrus precatorius.	गुंजा	LEGUMINOSAE (FABACEAE)	17
2)	Abutilon indicum.	अतिबला	MALVACEAE	19
3)	Acacia catechu.	खदिर	LEGUMINOSAE (MIMOSAE)	21
4)	Acacia concinna.	शिकाकाई	LEGUMINOSAE (MIMOSAE)	23
5)	Acacia nilotica.	बबूल	LEGUMINOSAE (MIMOSAE)	24
6)	Acalypha hispida.	सुलतान	EUPHORBIACEAE	26
7)	Achyranthus aspera.	अपामार्ग	AMARANTHACEAE	27
8)	Aconitum heterophyllum.	अतिविषा	RANUNCULACEAE	29
9)	Acorus calamus.	वचा	ARACEAE	31
10)	Adansonia digitata	गोरक्षी	BOMBACACEAE	33
11)	Adhatoda vasica.(Nees)	अडूसा	ACANTHACAE	35
12)	Adiantum lunulatum (Burm)	हँसपादी	POLYPODIACEAE	37
13)	Aegle marmelos (Corr)	बिल्व	RUTACEAE	38
14)	Agave americana (Linn)	कंटाला	AGAVACEAE	40
15)	Ailanthus excelsa (Roxb)	अरलवो	SIMARUBACEAE	41
16)	Albizzia lebbek (Benth)	शिरीष	LEGUMINOSAE (MIMOSAE)	43
17)	Allium cepa (Linn)	पलाण्डु	LILIACEAE	45
18)	Allium sativum (Linn)	लसुन	LILIACEAE	47
19)	Alocasia indica (Roxb)	मानकंद	ARACEAE	49
20)	Aloe barbadensis (Mill)	घृतकुमारी	LILIACEAE	50
21)	Alpinia galanga (Willd)	महाभरीवच	ZINGIBERACEAE	52
22)	Alstonia scholaris (R.Br)	सप्तपर्ण	APOCYANACEAE	53
23)	Althea officinalis (Linn)	खेरु	MALVACEAE	55
24)	Amaranthus spinosus (Linn)	तण्डुलीय	AMARANTHACEAE	56
25)	Amarryllis beladonna (Linn)	बैलाडोना लिली	AMARRYLLIDACEAE	58
26)	Amomum subulatum (Roxb)	बृहदेला	ZINGIBERACEAE	59
27)	Amorphophallus companulatus (Blume)	सूरनकंद	ARACEAE	60
28)	Anacardium occidentales (Linn)	बताड़	ANACARDIACEAE	61
29)	Anacyclus pyrethrum (D.C)	आकार करम	ASTERACEAE (COMPOSITEAE)	62
30)	Ananas cosmosum (Merr)	अन्नानास	BROMELIACEAE	64
31)	Andrographis paniculata (Nees)	भूनिम्ब	ACANTHACEAE	66
32)	Annona squamosa (Linn)	सीताफल	ANNONACEAE	68
33)	Anthocephalus cadamba (Miq)	कदम्ब	RUBIACEAE	69
34)	Apium graveolens (Linn)	अजमोत	UMBELLIFERAE	70
35)	Aralia nudicaulis (Linn)	लक्ष्मणा	ARALIACEAE	71
36)	Areca catechu (Linn)	पूगीफल	PALMAE	72
37)	Argemone maxicana (Linn)	कटुपर्णी	PAPAVARACEAE	73
38)	Argyreia speciosa (Sweet Syn)	वृद्धदारक	CONVOLVULACEAE	75
39)	Aristolochia indica. (Linn)	ईश्वरी	ARISTOLOCHIACEAE	76
40)	Artemissia vulgaris (Linn)	दमनक	ASTERACEAE (COMPOSITAE)	78
41)	Artocarpus integrifolia (Linn)	पनश	MORACEAE	80
42)	Asclepias curassavica (Linn)	काकनासा	ASCLEPIADACEAE	81
43)	Asparagus adscendens (Roxb)	श्वेतमुशली	LILIACEAE	82

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
44) Asparagus recemosus (Willd)	शतावर	LILIACEAE	83
45) Asteracantha longifolia (Nees)	कोकिलाक्ष	ACANTHACEAE	85
46) Averrhoa carambola.	कमरख	OXALIDACEAE	86
47) Azadirachta indica.	नीम	MELIACEAE	87
48) Bacopa monieri (Linn)	जलनीम	SCROPHULARIACEAE	89
49) Balanites roxburghii (Planch).	इंगुदी	SIMARUBACEAE	90
50) Bombusa arundinacia (Willd)	वंशलोचन	POACEAE (GRAMINAE)	91
51) Barleria prionitis (Linn)	पीलावासा	ACANTHACEAE	92
52) Basella alba (Linn)	पूतिका	CHENOPODIACEAE	94
53) Bauhinia purpurea (Linn)	कोविदार (लाल)	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	95
54) Bauhinia variegata (Linn)	कचनार	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	96
55) Berberis aristata (D.C)	दारुहल्दी	BERBERIDACEAE	98
56) Biophytum sensitivum (Linn)	अलम्बुषा	GERANIACEAE (OXALIDACEAE)	99
57) Boerhaavia diffusa (Linn)	लाल पुनर्नवा	NYCTAGINACEAE	100
58) Brassica campestris.	सरसों	CRUCIFERAE (BRASSICACEAE)	102
59) Brassica Juncea (Linn)	लालराई	BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)	103
60) Brassica oleracea (Linn)	पत्ता गोभी	BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)	104
61) Bryophyllum calycinum Salib	पत्थरचूर	CRASSULACEAE	105
62) Butea frondosa koenex (Roxb)	पलाश	LEGUMINOSAE (FABACEAE)	106
63) Caesalpinia bonducela Fleming.	पूति करंज	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	108
64) Callicarpa macrophylla (Linn)	प्रियंगु	VERBENACEAE	109
65) Calotropis procera (Aif)	अलर्क	ASCLEPIADACEAE	110
66) Cannabis indica (Linn)	देवकिली	CANNABINACEAE	112
67) Cannabis Sativa (Linn)	भांग	CANNABINACEAE	114
68) Capsicum annum (Linn)	मिरचा	SOLANACEAE	115
69) Carica papaya (Linn)	पपीता	CARICACEAE	117
70) Carum copticum (Benth & Hook)	अजवायन	UMBELLIFERAE	119
71) Cassa auriculata (Linn)	अर्बूर	CAESALPINACEAE	121
72) Cassia absus (Linn)	चक्षुष्या	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	123
73) Cassia angustifolia (Vahl)	सनाय	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	124
74) Cassia fistula (Linn).Cassia rhombifolia.	अमलतास	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	125
75) Cassia occidentalis (Linn)	कासमर्द	LEGUMINOSAE. (CAESALPINACEAE)	126
76) Cassiatora (Linn)	चक्रमर्द	LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)	128
77) Catharanthes roseus (L.) vincarosea.	सदाबहार	APOCYANACEAE	129
78) Cedrela toona (Roxb Syn) toona ciliata roem.	तून	MELIACEAE	130
79) Cedrus deodara. (Roxb) Loud.	देवदार	PINACEAE	131
80) Celastrus paniculatus (Willd)	माल कांगनी	CELASTRACEAE	132
81) Celosia argentea. (Linn)	शितिवार	AMARANTHACEAE	134
82) Centella asiatica (Linn) (Hydrocotyle asiatica)	मंडूकपर्णी	UMBELLIFERAE	135
83) Cestrum diuranum(Linn)	दिन का राजा	SOLANACEAE	137
84) Cestrum nocturnum (Linn)	रातरानी	SOLANACEAE	138
85) Chenopodium albu (Linn)	बथुआ	CHENOPODIACEAE	139
86) Chlorophytum borivilianum (Sant & Ferm)	सफेद मूसली	LILIACEAE	140

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
87) Cicer arietinum (Linn)	चना	LEGUMINOSAE (FABACEAE)	141
88) Cinnamomum camphora (Nees & Eberm)	चीनक कर्पूर	LAURACEAE	142
89) Cinnamomum tamala (Nees & Eberrm)	तेजपात	LAURACEAE144	
90) Cinnamomum zeylanicum (Blume Syn)	दाल चीनी	LAURACEAE145	
91) Cissampelos pareira (Linn)	पाठा	MENISPERMACEAE	147
92) Cissus quadrangularis (Linn)	हड़जोड़	VITACEAE149	
93) Citrullus colocynthis (Schrader)	इन्द्रायण	CUCURBITACEAE	151
94) Citrus medica var. acida watt.)	कागजी नींबू	RUTACEAE153	
95) Citrus medica (Linn)	बिजोरा	RUTACEAE155	
96) Cleome viscosa (Linn Syn)	पीला हुरहुर	CAPPARIDACEAE	156
97) Clerodendron inerme (Linn)	छोटा अरनी	VERBENACEAE	157
98) Clerodendron phlomidis (Linn)	अरनी	VERBENACEAE	158
99) Clerodendron serratum (Spreng)	भारङ्गी	VERBENACEAE	160
100) Clitoria ternatea (Linn)	अपराजिता	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	162
101) Coccinia indica (W & A)	कुन्दरू	CUCURBITACEAE	164
102) Coleus aromaticus (Benth)	पत्थरचूर	LABIATAE	166
103) Commiphora mukul (Hook & Exstocks)	गुग्गुल	BURSERACEAE	167
104) Convolvulus pluricaulis (Choisy)	शंखपुष्पी	CONVOLVULACEAE	169
105) Cordia myxa (RoxbSyn) Cordia dichotoma	लिसोड़ा	BORAGINACEAE	169
106) Coriandrum sativum (Linn)	धनिया	UMBELLIFERAE	171
107) Costus speciosus (Koen) smith	केवुक कन्द	ZINGIBERACEAE	172
108) Crataeva nurvala (Buch-Ham)	बरुण	CAPPARIDACEAE	174
109) Crinum asiaticum (Linn)	सुदर्शन	AMARYLLIDACEAE	175
110) Croton tiglium (Linn)	जमालगोटा	EUPHORBIACEAE	177
111) Cuminum Cyminum (Linn)	सफेद जीरा	UMBELLIFERAE	179
112) Curculigo orchioides (Gaertn.)	काली मूसली	AMARYLLIDACEAE	180
113) Curcuma amada (Roxb)	आमा हल्दी	ZINGIBERACEAE	182
114) Curcuma domestica (Valsyn) longa	हल्दी	ZINGIBERACEAE	183
115) Cuscuta reflexa (Roxb)	अमरवेल	CONVOLVULACEAE	184
116) Cymbopogon citratus (Andropogon citratus)	भूतृण	POACEAE (GRAMINAE)	186
117) Cymbopogon Schoenanthus (Linn)	रोहिष घास	POACEAE (GRAMINAE)	187
118) Cynodon dactylon (Linn) Pers.	हरी दूब	POACEAE (GRAMINAE)	188
119) Cyperus rotundus (Linn)	मोथा	CYPERACEAE	189
120) Dalbergia sissoo (Roxb)	शीसम	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	190
121) Datura metal (Linn. Syn) Datura innoxia	काला धतूरा	SOLANACEAE	191
122) Datura Stramonium (Linn)	कनक धतूरा	SOLANACEAE	192
123) Daucus Carota L. Var. Sativa D. C.	गाजर	UMBELLIFERAE	194
124) Desmodium gangeticum (D.C.)	शालपर्णी	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	196
125) Digitalis purpurea (Linn)	तिलपत्री	SCROPHULARIACEAE	198
126) Dillenia indica (Linn)	चिल्ता	DILLENIACEAE	200
127) Dioscorea bulbifera (Linn)	वाराही कंद	DIOSCORIACEAE	201
128) Eclipta alba (Hassk.)	भृंगराज	ASTERACEAE (COMPOSITAE)	202
129) Elettaria Cardamomum (Maton.)	छोटी इलायची	ZINGIBERACEAE	203

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
130) Embelia ribes (Burm. F.)	वायविडंङ्ग	MYRSINACEAE	205
131) Emblica officinalis (Geartn.)	आमलकी	EUPHORBIACEAE	207
132) Erioborya Japonica (Linn)	लौकाट	ROSACEAE	209
133) Ervatamia Coronaria (Jacq. Syn) Tabernaemontana divaricata	चांदनी	APOCYANACEAE	211
134) Erythrina indica (Lam)	पारिभद्र	FABACEAE. (LEGUMINOSAE)	212
135) Euphorbia antiquorum (Linn)	वज्रकण्टक	EUPHORBIACEAE	213
136) Euphorbia hirta (Linn) E.pilulifera (Linn)	दुग्धिका	EUPHORBIACEAE	214
137) Euphorbia neriifolia (Linn)	सेंहुड	EUPHORBIACEAE	215
138) Euphorbia tirucalli (Linn)	शातला	EUPHORBIACEAE	217
139) Euryale ferox (Salisb)	मखाना	NYMPHAEACEAE	219
140) Evolvulus alsinoides (Linn)	नील शंखपुष्पी	CONVOLVULACEAE	220
141) Feronia elephantum (Correa)	कपित्थ	RUTACEAE	221
142) Ferula foetida (Regd. Syn) feruala narthex (Boiss)	हींग	UMBELLIFERAE	223
143) Ficus bengalensis (Linn)	वट	MORACEAE	225
144) Ficus Carica (Linn)	अंजीर	MORACEAE227	
145) Ficus glomerata (Roxb. Syn) F. recemosa	गूलर	MORACEAE	229
146) Ficus religiosa (Linn)	पीपल	MORACEAE230	
147) Foeniculum Vulgare (Mill)	सौंफ	UMBELLIFERAE	232
148) Fumaria indica (Pugsley)	पित्त पापड़ा	FUMARIACEAE	234
149) Gardenia gummifera (Linn)	डीकामाली	RUBIACEAE	236
150) Gloriosa superba. (Linn)	कलिहारी	LILIACEAE	237
151) Glycyrrhiza glabra (Bois)	मधुयेष्ठी	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	239
152) Gmelina arborea (Roxb)	गम्हार	VERBINACEAE	241
153) Gossypium herbaceum (Linn)	कपास	MALVACEAE	243
154) Grewia subinaequalis (D.c.Syn) gasiatica	फालसा	TILIACEAE	245
155) Grevillea robusta. (A.Cunn.)	सिल्वर ऑक	PROTEACEAE	247
156) Gymnema Sylvestre (R. Br.)	गुड़मार	ASCLEPIADACEAE	248
157) Gynandropsis pentaphylla. (D.C.)	श्वेत हुर-हुर	CAPPARIDACEAE	249
158) Hedychium spicatum (Hamex. smith)	गंध पलाशी	ZINGIBERACEAE	250
159) Helianthus Annuus (Linn)	सूर्यमुखी	ASTERACEAE (COMPOSITAE)	251
160) Hemidesmus indicus (R.Br.)	सारिवा	ASCLEPIADACEAE	253
161) Hibiscus rosa-sinesis (Linn)	गुड़हल	MALVACEAE	255
162) Holarrhena antidysenterica (Wall)	कुटज	APOCYANACEAE	257
163) Jasminum grandiflorum (Linn)	चमेली	OLEACEAE	259
164) Jasminum Sambac (Ait.)	मोगरा	OLEACEAE	260
165) Jatropha Curcas (Linn)	व्याघ्र एरण्ड	EUPHORBIACEAE	261
166) Jatropha gossypifolia (Linn)	रतनजोत	EUPHORBIACEAE	262
167) Juniperus communis (Linn)	हपुषा	CUPRESSACEAE	263
168) Lagerstroemia speciosa (Pers. Syn.)	जारूल	LYTHRACEAE	264
169) Lantana camara (Linn)	वन तुलसी	VERBINACEAE	265
170) Lawsonia inermis Linn. L. alba.	मेन्दिका	LYTHRACEAE	266
171) Lepidium Sativum Linn	चर्महन्त्री	BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)	268
172) Leptadenia reticulata. W & A	जीवनी	ASCLEPIADACEAE.	269

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
173) Leucas Cephalotes spreng.	द्रोणपुष्पी	LAMIACEAE (LABIATAE)	271
174) Linum Usitatissimum. (Linn)	अलसी	LINACEAE	273
175) Litchi chinensis Syn. Nephelium litchi comb.	लिची	SAPINDACEAE	275
176) Loranthus longiflorus Desrsyn. Dendropthoe falcala.	वांदा	LORANTHACEAE	276
177) Luffa acutangula (Linn) Roxb Var.amaraclark.	कड़वी तोई	CUCURBITACEAE	277
178) Lycopersicon esculentum Mill	टमाटर	SOLANACEAE	279
179) Mallotus Phillippinensis Muell Arg	कपीला	EUPHORBIACEAE	281
180) Mangifera indica. (Linn)	आम	ANACARDIACEAE	282
181) Melia azedarach. (Linn)	वकायन	MELIACEAE	284
182) Mentha Piperata (Linn)	पिपरमिन्ट	LAMIACEAE	285
183) Mentha Spicata (Linn)	पुदीना	LAMIACEAE (LABIATAE)	286
184) Mesua ferrea	नागकेशर	GUTTIFERAE	288
185) Michelia champaca (Linn)	सोनचम्पा	MANGNOLIACEAE	290
186) Mimosa pudica (Linn)	लज्जावन्ती	MIMOSAE (LEGUMINOSAE)	291
187) Mimusops elengi (Linn)	बकुल	SAPOTACEAE.	292
188) Mirabilis jalapa (Linn)	गुलबास	NYCTAGINACEAE	294
189) Momordica charantia (Linn)	करेला	CUCURBITACEAE	295
190) Momordica dioica (Roxb)	ककोंटकी	CUCURBITACEAE	297
191) Moringa pterygosperma (Gaertn)	सहिंजना	MORINGACEAE	298
192) Morus indica (Griff.)	सहतूत	MORACEAE	300
193) Mucuna Pruriens (Bek.)	कौंच	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	301
194) Murraya koenigii. Spreng	मीठी नीम	RUTACEAE	302
195) Murraya paniculata Jack Syn. M.exotica	कामिनी	RUTACEAE	303
196) Musa sapientum (Linn) M. paradisiaca.	केला	MUSACEAE	304
197) Myrica nagi Thunb. M.esculanta	कायफल	MYRICACEAE	306
198) Myristica fragrans Houtt.	जायफल	MYRISTICACEAE	307
199) Myristica fragrans Houtt	जावित्री	MYRISTICACEAE	308
200) Nardostachys jatamansi	जटामांसी	VALERIANACEAE	309
201) Nelumbium speciosum (Willd)	कमल	NYMPHAEACEAE	311
202) Nerium odorum Soland.	कनेर	APOCYANACEAE	313
203) Nigella Sativa Linn	कलौंजी	RANUNCULACEAE	315
204) Nyctanthes arbor-tristis (Linn)	हरसिंगार	OLEACEAE	316
205) Ocimum basilicum (Linn)	कूपर तुलसी	LAMIACEAE (LABIATAE)	318
206) Ocimum canum sines. o. americanum	वन तुलसी	LAMIACEAE (LABIATAE)	320
207) Ocimum grattisimum (Linn)	राम तुलसी	LAMIACEAE (LABIATAE)	322
208) Ocimum sanctum (Linn)	गौरी तुलसी	LAMIACEAE (LABIATAE)	323
209) Oldenlandia Corymbosa (Linn)	क्षेत्र पर्पट	RUBIACEAE	325
210) Operculina terpthum Silva Manso. Ipomoea terpethum	निशोथ	CONVOLVULACEAE	327
211) Oroxylum indicum Vent.	सोना पाठा	BIGNONIACEAE	329
212) Oxalis Corniculata (Linn)	चांगेरी	OXALIDACEAE	331
213) Pandanus odoratissimus Roxb	केवड़ा	PANDANACEAE	332
214) Papaver Somniferum (Linn)	अफीम	PAPAVARACEAE	334
215) Pedalium murex (Linn)	बड़ा गोखरु	PEDALIACEAE	336

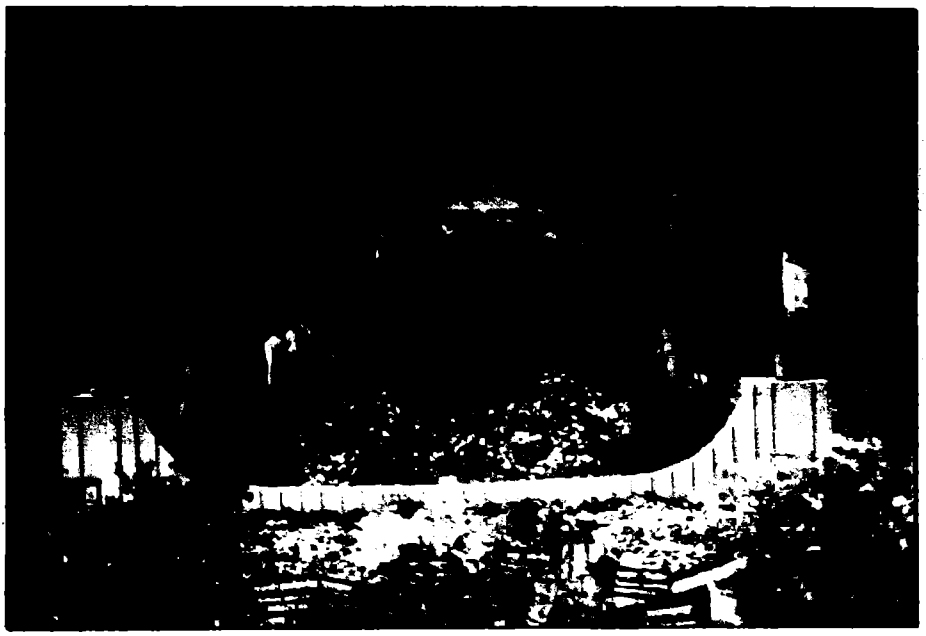
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
216) Peucedonum graveolens (Linn)	शतपुष्पा	UMBLLIFERAE	338
217) Phaseolus trilobus. Ait	वन मूंग	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	339
218) Phyllanthus niruri (Linn) P. asperulatus	भुँई आँवला	EUPHORBIACEAE	340
219) Physalis minima (Linn)	टंकारी	SOLANACEAE	342
220) Phyla nodiflora. Lippia nodiflora Rich.	जल पीपल	VERBENACEAE	343
221) Picrorrhiza kurroa. Royle exbenth.	कटुकी	SCROPHULARIACEAE	344
222) Pinus longifolia Roxb.	चीड़	PINACEAE	346
223) Piper betle Linn.	पान	PIPERACEAE	347
224) Piper longum (Linn)	पिप्पली	PIPERACEAE	349
225) Piper nigrum (Linn)	काली मरिच	PIPERACEAE	351
226) Piper Sylvaticum Roxb	पहाड़ी पीपल	PIPERACEAE	353
227) Pluchea lanceolata oliver & Hiern.	कृत्रिम अशोक	COMPOSITAE (ASTERACEAE)	354
228) Plumbago Zeylanica Linn.	चित्रक	PLUMBAGINACEAE	355
229) Plumeria acutifolia Poir.	रासना	APOCYANCEAE	357
230) Pluchea lanceolata oliver & Hiern.	खेर चम्पा	COMPOSITAE (ASTERACEAE)	358
231) Pongamia Pinnata Syn P. glabra. Vent	करंज	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	359
232) Portulaca oleracea (Linn)	बड़ी लोणा	PORTULACEAE	361
233) Portulaca quadrifida (Linn)	लघु लोणा	PORTULACEAE	362
234) Prosopis Spicigera	शमी	MIMOSAE (LEGUMINOSAE)	363
235) Prunus amygdalus Batsch.	बादाम	ROSACEAE	365
236) Prunus Persica Batsch.	आड़ू	ROSACEAE	367
237) Psoralea Corylifolia (Linn)	बाकुची	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	368
238) Psidium guajava(Linn)	अमरूद	MYRTACEAE	370
239) Pterocarpus marsupium. Roxb.	असन	FABACEAE (PAPILIONACEAE)	371
240) Pueraria tuberosa D.C.	विदारी कंद	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	373
241) Punica granatum. (Linn)	अनार	PUNICACEAE	374
242) Putranjiva roxburghii. Wall	पितौंजिया	EUPHORBIACEAE	376
243) Pyrus malus (Linn)	सेव	ROSACEAE	378
244) Quisqualis indica (Linn)	मधुमालती	COMBRETACEAE	379
245) Randia dumetorum Lam.	मदन	RUBIACEAE	380
246) Raphanus Sativus Linn	मूली	BRASICACEAE (CRUCIFERAE)	381
247) Rauwolfia Serpentina Benth. ex. kurz.	सर्प गंधा	APOCYANACEAE	383
248) Ricinus communis Linn	एरण्ड	EUPHORBIACEAE	385
249) Rosa centifolia (Linn)	गुलाब	ROSASEAE	387
250) Rubia cordifolia Linn	मंजिष्ठा	RUBIACEAE	389
251) Saccharum officinarium. Linn.	ईख	POACEAE (GRAMINAE)	390
252) Salmalia malbarica.	सेमल	BOMBACEAE.	392
253) Santalum album Linn.	सफेद चन्दन	SANTALACEAE	394
254) Sansevieria roxburghina Schult.	नागदमन	HAEMODORACEAE	396
255) Sapindus trifolialus (Linn)	रीठा	SAPINDACEAE	397
256) Saraca indica	अशोक	CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)	398
257) Saxifraga ligulata Wall.	पाषाणभेद	SAXIFRAGACEAE	400
258) Sesamum indicum Linn.	तिल	PEDALIACEAE	401
259) Shorea robusta gaertn.	शाल	DIPTEROCARPACEAE	403
260) Sida Cordifolia (Linn)	बला	MALVACEAE	405

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Botanical Name	हिन्दी नाम	Family Name	Page No.
261) Sida rhombifolia (Linn)	महाबला	MALVACEAE	407
262) Smilex china (Linn)	चोप चीनी	LILIACEAE	408
263) Solanum indicum (Linn)	बृहती	SOLANACEAE	409
264) Solanum melongena (Linn)	बैगुन	SOLANACEAE	410
265) Solanum nigrum (Linn)	मकोय	SOLANCEAE	411
266) Solanum Surattense Brumt. S.Xanthocarpum.	कंटकारिका (लघु)	SOLANACEAE	413
267) Soymida febrifuga. A. Juss	रोहिनी	MELIACEAE	415
268) Spinacia oleracea (Linn)	पालक शाक	CHENOPODIACEAE	417
269) Strychnos nux vomica (Linn)	कुचला	LOGANIACEAE	418
270) Swertia chirayata Roxb.Syn.	चिरायता	GENTIANACEAE	420
271) Symplocos racemosa Roxb. Syn.	लोध्र	SYMPLOCACEAE	422
272) Syzygium aromatica. Meril & Perry.	लौंग	MYRTACEAE	424
273) Syzygium cumini Skeels Syn.	बड़ी जामुन	MYRTACEAE	425
274) Tagetes erecta (Linn)	गेंदा	ASTERACEAE	427
275) Tamarindus indica (Linn)	इमली	CAESALPINACEAE LEGUMINOCEAE	428
276) Tamarix articulata. Vahl.	छोटी पत्रवास	TAMARICACEAE	430
277) Tamarix gallica (Linn)	बड़ी पत्रवास	TAMARICACEAE	432
278) Tectona grandis (Linn)	सागवान	VERBINACEAE	433
279) Tephrosia purpurea Linn	शरपुंख	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	434
280) Teramnus labialis spreng	माषपर्णी	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	436
281) Terminalia arjuna. Bedd.	अर्जुन	COMBRETACEAE	437
282) Terminalia belerica. Roxb.	विभीतक	COMBRETACEAE	439
283) Terminalia chebula Retz.	हरीतकी (बड़ी)	COMBRETACEAE	440
284) Terminalia tomentosa. W & A.	असन	COMBRETACEAE	442
285) Thevetia neriifolia Juss.	पीला कनेर	APOCYANCEAE	443
286) Thuja orientalis	मयूर पंख	CUPRESSACEAE	444
287) Tinospora cordifolia (Willd) Miers.	गिलोय	MENISPERMACEAE	445
288) Trapa natans (Linn)	सिंघाड़ा	TRAPACEAE	447
289) Tribulus terrestris (Linn)	गोक्षुर	ZYGOPHYLLACEAE	448
290) Trichosanthes dioica. Roxb.	परवल	CUCURBITACEAE	450
291) Trigonella foenum graecum (Linn)	मेथिका	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	452
292) Tylophora indica (Burmf.) Merr.	अर्कपर्णी	ASCLEPIADACEAE	454
293) Uraria picta. Desv.	पृश्निपर्णी	FABACEAE (LEGUMINOSAE)	455
294) Urginia indica. kunth.	जंगली प्याज	LILIACEAE	456
295) Vernonia anthelmintica (Willd)	वन जीरा	ASTERACEAE (COMPOSITAE)	458
296) Vernonia cinerea Less.	सहदेवी	ASTERACEAE (COMPOSITAE)	460
297) Vetiveria zizanioides (Linn) Nash.	वीरणमूल	POACEAE (GRAMINAE)	461
298) Viola odorata Linn	गुलबनफ्शा	VIOLACEAE	462
299) Vitex negundo (Linn)	निर्गुण्डी	VERBENACEAE	464
300) Vitis Vinifera (Linn)	द्राक्षा	VITACEAE	466
301) Withania Somnifera Dunal.	अश्वगंधा	SOLANACEAE	468
302) Wrightia tinctoria R. Br. Syn.	मीठा इन्द्रजव	APOCYANACEAE	470
303) Zingiber officinale Roscoe.	अदरख	ZINGIBERACEAE	472
304) Zizyphus Vulgaris Lam.	राज बदर	RHAMNACEAE	474

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

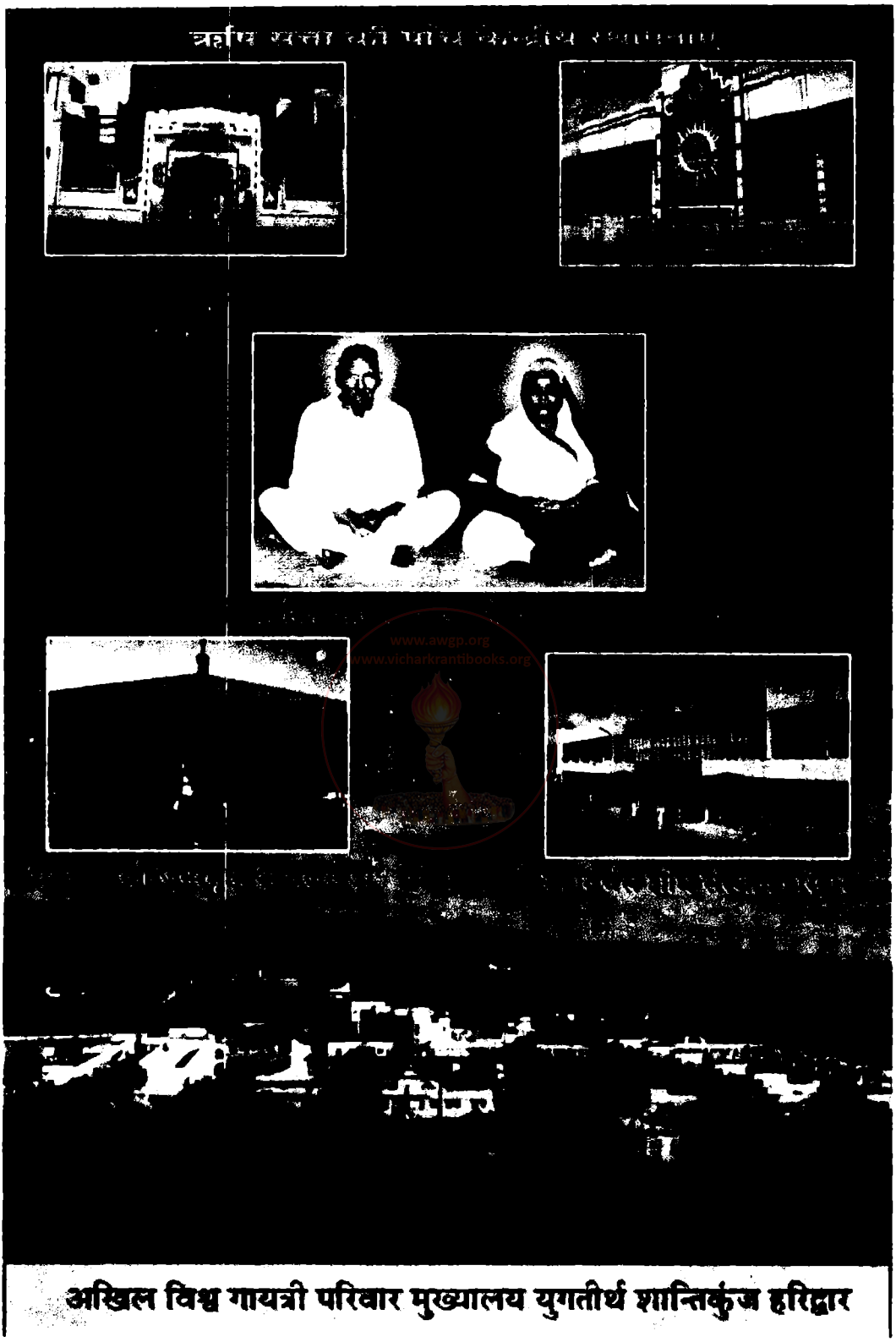


अपनी प्राकृतिक सुषमा बिखेरता हरीतिमा देवालय



दुर्लभ औषधीय पौधों की नर्सरी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



अखिल विश्व गायत्री परिवार मुख्यालय युगतीर्थ शान्तिकुंज हरिद्वार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान : एक झलक झाँकी

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



वनौषधि क्वाथ से असाध्य रोगों की चिकित्सा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



प्रायः पाँच सौ वनौषधियों की एक प्रदर्शनी-ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान



कम्प्यूटीकृत शोध आँकड़ों का संकलन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुंजा Abrus precatorius.Linn. FABACEAE LEGUMINOSAE

1

ENGLISH NAME - Jaquirity; Hindi- Ratti
PARTS-USED - Root, Leaf and Seed
DESCRIPTION - A perennial twiner with pale purple or pink flowers, paripinnate compound leaves; leaflets 10-20 pairs, opp osite, linear oblong, membranous.
TASTE- Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds contain Lupeol acetate, Sitosterol, Sucrose, Gallic acid, Orientin, Isoorientin; Abrussic acid, Haemagglutinin; Root Contains:- Stigmasterol, Glycine, Glutamicacid, Asparticacid, Tyrosin, Quercetin, Luteolin, Kaempferol, Taxalbumin, Alkaloid abrin, Glucoside- abralin, Monoglucosidic. Anthocyanin-abranin. Leaves Contain:- Precol, Abrol, Abrasine, Precasine.
ACTIONS:-Purgative, Emetic, Aphrodisiac, Antispasmodic.
USED-IN:-In nervous disorder, Cattlepoisoning, Emmenagogue, Abortifacient, Antibacterial, Antifertility, Anthelmintic, Analgesic, Antileprotic, Muscle relaxent, Leaves:- Sweet and Expectorant, wound healer. biliousness, promotes taste, ophthalmia, leucoderma, itching, fever, stomatctis, Asthma, thirst dental cries.

प्रचलित नाम - रत्ती

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र तथा बीज

स्वरूप- बहुवर्षायु चक्रारोहीलता, संयुक्त पक्षाकार पत्ते, पुष्प श्वेत या गुलाबी रंग के, बीज चमकीले सिंदूर वर्ण या श्वेत रंग के काले दाग के साथ।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके बीज में- ल्युपियोल ऐसीटेट, सिटोस्टीरोल, सुक्रोज़ गैलीक अम्ल, ओरीऐन्टीन, आइसोओरीऐन्टीन, ऐबरूसिक अम्ल, हीमाग्लुटिनिन, इसके मूल में- स्टीग्मास्टीरोल, ग्लायसीन, ग्लुटामीक अम्ल, ऐस्पारटिक अम्ल, टायरोसीन, क्रेरसेटिन, ल्युटियोलिन, किम्फेरॉल, टेक्साल्बमिन, ऐल्केलॉयड ऐब्रीन, ग्लुकोसाईड-ऐब्रालिन, मोनोग्लुकोसीडीक ऐन्योसायनीन-ऐबरानीन, पत्रों में- प्रिकॉल, एबरॉल, ऐब्रासिन, प्रिकेसीन।

गुण- अतिरेचक, वामक, बल्य, बाजीकर, उद्वेष्टहर।

उपयोग में- वातिक, जांङ्गमविष, गर्भ निरोधक, जंतुघ्न, गर्भपात कराने में सक्षम, कृमिघ्न, शूलहर, कुष्ठघ्न तथा पेशी विश्रामक, इसके पत्र-मुलेठी की तरह मधुर तथा कफ शामक, व्रण रोपण।

(१) इसके पत्र मिश्री के साथ चूसने से स्वरभंग में लाभकारी।

(२) वीर्य विकार में दो माशे मूल को दूध में पकाकर भोजन के पूर्व रात में देने से लाभ होता है।

(३) श्वेत कुष्ठ में पत्र स्वरस चित्रक मूल में मिलाकर प्रयोग किया जाता है।

(४) गंजापन दूर करने के लिये रत्ती का चूर्ण जल में मिलाकर इसका लेप सिर पर बार-बार करने से बाल आ जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कण्डु एवं कुष्ठ रोगों में भृंगराज के रस में गुंजा का चूर्ण मिलाकर तेल सिद्ध करना चाहिये, इस तेल के प्रलेप से लाभ होता है। गण्डमाल में गुंजाफल (५०० ग्राम), गुंजामूल (५०० ग्राम) के क्वाथ से सिद्ध किया हुआ तेल के नस्य एवं अभ्यंग से इस रोग का नाश होता है। गृध्रसी में सायटिका नाड़ी पर गुंजाकल्क का लेप करना चाहिये, इससे वेदना नष्ट होती है। नेत्र के तिमिर रोग में, शिरोरोगों में गुंजामूल स्वरस का नस्य देना चाहिए, इससे सभी प्रकार के शिरोरोग दूर हो जाते हैं।

दंतकृमि में-गुंजा के ताजे मूल का प्रयोग दातून की तरह करने से दंत मूल में रहे कृमि नष्ट हो जाते हैं।

वाजीकरणार्थ-गुंजा फलों को दूध में पकाकर निस्तुप कर लेना चाहिए, फिर उसका चूर्ण बनाकर नियमित प्रातः सायं दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य सशक्त होकर अच्छी तरह संभोग कर सकता है।

औषधोपयोगी कार्य में गुंजा (श्वेत) के बीजों का ही उपयोग करना चाहिए। कंठ शोथ में-गुंजा के हरित पत्र कंकोल के साथ चबाने से, इसका रस गले से नीचे उतारने पर स्वरभेद एवं कंठ शोथ में लाभ होता है। मूत्र कृच्छ्र एवं रक्तपित्त में-श्वेत गुंजा के पत्र, जीवन्ती के मूल, श्वेत जीरक एवं सिता के साथ मिलाकर चूर्ण बनाकर इसका सेवन करने से लाभ होता है।

त्वक् रोगों में-चित्रक के मूल के साथ गुंजा पत्र का कल्क बनाकर प्रयोग करने से लाभ होता है। गुंजा बीज का ताजा क्वाथ ही उपयोग करना चाहिए। गुंजा मूल का प्रवाही क्वाथ पुरानी खाँसी में अत्यंत लाभकारी है। संधिवात की वेदना में-उस स्थान पर सरसों के उष्ण तेल में गुंजापत्र डुबोकर बांधने से बहुत ही लाभ होता है।

विष प्रभाव- बिना शोधन के बीज का प्रयोग वामक एवं विरेचक होता है। शोधन-इसके बीज गाय के दूध में एक प्रहर उबालकर छिलके निकाल कर गरम पानी से धोकर प्रयोग करना चाहिये।

मात्रा में- मूल/पत्र चूर्ण- १-५ ग्राम,
बीज चूर्ण-६०-१८० मिलीग्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिबला Abutilon indicum. (Linn) Sweet MALVACEAE

2

ENGLISH NAME:- Indian Mallow, Hindi- Kakahi, Kanghi
PARTS-USED:- Root bark, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- A perennial Softly tomentose shrub, 2-3 meter high, Leaves dentate & ovate cordate Flowers-yellow, fruits schizocarpus caprule.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS:- Plant Contains:-Gossypetin, Glucosides, Cyanidin, Rutinosides, Essenlial Oil; Root Contains: Fatty acids, Aspargin, Rafinose Stem & Leaves Contains Alkanol, Beta-Sito sterol, Vanillic acid, Caffeicacid, Fumaric acid, Fructose, Glucose, Galactose, Leucin, Histidine, Threonin, Serine, Glutamic acid and Aspartic acid.
ACTIONS:-Analgesic, Laxative Expectorant, Diuretic, Carminative, Aphrodisiac, Diphoretic, Anthelmintic, febrifuge.
USED-IN- Seeds: In piles, chronic cystitis, Gonorrhoea; Leaves: Locally applied to boiles, ulcers, fomation to painful parts; Decoction of Leaves: In Toothache, Gums; Given internally for bladder in flammation, Root: In fever & chest affections.

प्रचलित नाम- कंघी

प्रयोज्य अंग- मूल की छाल, पत्र तथा बीज

स्वरूप- बहुवर्षायु, मृदु, श्वेत मखमली रोमावरण युक्त क्षुप, एक से दो मीटर ऊँचा, पत्र दन्तुर, हृदयाकार एवं लम्बेवृन्तयुक्त, पुष्प पीतवर्णी के, फल चक्राकार गोल कंघी जैसे।

स्वाद- मधुर

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में- गोसीप्टीन, ग्लुकोसीड्स, सायनीडीन, रूटिनोसाईड्स, उत्पत्ततेल, इसके मूल में- मेद अम्ल, ऐस्पारजीन, रेफीनोज़, कांड तथा पत्र में-ऐल्कानॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, वैनीलिक अम्ल, कैफिक अम्ल, फ्युमारिक अम्ल, फ्रुक्टोज, ग्लूकोज, गैलेक्टोज, ल्युसीन, हिस्टीडीन, थ्रियोनिन, सराईन, ग्लुटामिक अम्ल तथा ऐस्पारटिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- वेदनाहर, मृदुरेचक, कफशामक, मूत्रल, वातहर, बाजीकारक, स्वेदजनन।

उपयोग में- इसके बीज-अर्श में, जीर्ण मूत्राशय शोथ, अपसर्गिका मेह, पत्रों का बाह्य प्रयोग- पीड़िकाओं तथा व्रण में, पत्रों का सेक वेदनायुक्त स्थानों पर, पत्रों का क्वाथ-दंतशूल में तथा ढीले मसूड़ों पर (कुल्ला कराते हैं) मूत्राशय शोथ में मूल के क्वाथ का निग्रहण लाभकारी। मूल का प्रयोग ज्वर तथा छाती के रोगों में लाभकारी। बलवर्धक-अतिबला के मूल के रस का सेवन दूध या घी-मधु के साथ प्रातः खाली पेट करने से लाभ होता है। स्वास्थ्य एवं आयु बढ़ती है। इस प्रयोग के समय चावल घी तथा दूध मिलाकर सेवन करना चाहिये। मूत्रकृच्छ्र में-इसके कांड की छाल का क्वाथ बनाकर सेवन करने से लाभ होता है। प्रमेह में-इसके बीज तथा छाल का क्वाथ बनाकर सेवन करना चाहिये। अतिबला के मूल, छाल,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्र एवं बीज सभी अंग पौष्टिक गुण वाले हैं। नपुंसकता दूर करने के लिये इसके बीजों का प्रयोग अति लाभकारी है। कफ एवं दाह युक्त ऐसे विषम ज्वर में-अतिबला के मूल एवं शुण्ठी का क्वाथ बनाकर दो या तीन दिन पिलाने से लाभ होता है। ज्वर में-पत्रों तथा मूल का क्वाथ लाभकारी।

रक्त प्रदर में मूल का चूर्ण मधु के साथ लाभकारी। अर्श, नपुंसकता में बीज का चूर्ण लाभकारी।

मात्रा- मूल का चूर्ण-एक तोला।

बीज का चूर्ण-४-८ माशा।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'गुरु और शिष्य का सम्बन्ध पूर्वज और वंशज के सम्बन्ध जैसा ही है। श्रद्धा, नम्रता, शरणागति और आदर भाव से शिष्य गुरु का मन मोह ले तो ही उसकी आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है।' - संतवाणी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खदिर Syn : Acacia Chundra (Roxb) Willd. Acacia catechu willd MIMOSACEAE (LEGUMINOSAE)

3

ENGLISH NAME:- Black Catechu. Hindi- Khair, Kattha

PARTS-USED:- Pithregion, Bark, Cendensed extract of heart wased.

DESCRIPTION- A medium sized spiny tree, spines are modification of Stipules, leaves 30-40 pairs pinnal 10-20 pairs; pinnules, flowers on spikes, small creamish white, podthin brown shining.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Inner wood contains catechin and catechutannicacid, Catechutannic acid contain about 50% Tannin.

ACTIONS- Anti-inflammatory, Wound healing, Astringent, Cooling, Digestive, Bloodpurifier.

USED-IN- Skin deseases, Dental disorder, Dry cough, Stomatis, Anaemia, Leprosy, Bronchitis, Pruritus, Diarrhoea, Polyuria.

प्रचलित नाम- खैर

प्रयोज्य अंग- खदिर सार, त्वक्।

स्वरूप- मध्यम कद का कंटकीय वृक्ष, पर्णवृंत के नीचे एक जोड़ी कंटकों की, पत्ते संयुक्त पुष्प श्वेत या हल्के पीले, जो मंजरीयों में होते हैं।

स्वाद- कटु।

रासायनिक संगठन- इसके अंदर की काष्ठ (लकड़ी) में कैटेचिन एवं कैटेचुटैनिक अम्ल पाये जाते हैं। इस कैटेचुटैनिक अम्ल में ५० प्रतिशत टैनिन पदार्थ होता है।

उपयोग - चर्मरोगों में, दंत विकारों में (मसूढ़ों की शिथिलता), शुष्ककास, मुखगत व्रण में, पाण्डुरोग में, कुष्ठरोग, श्वसनी शोथ में, कण्डुरोग में, अतिसार में तथा प्रमेह में लाभकारी।

कुष्ठ रोग में-- कत्थे से स्नानादि कराते हैं तथा खिलाते हैं। कत्था- संग्रहणी, अतिसार तथा खट्टी डकार में लाभकारी, मसूड़ों के रक्तस्राव में-कत्थे का कुल्ला करने से लाभ होता है।

खाँसी(कास) में-रात्रि के समय वात के कारण होने वाली सूखी खाँसी में दही के एक कप पानी में दो ग्राम खदिर सार डालकर प्रातः एवं सायं पिलाना चाहिये। खदिर के अंतः छाल का चार भाग, बहेड़ा की छाल दो भाग तथा लौंग एक भाग, इन सबका चूर्ण बनाकर दिन में तीन बार एक-एक ग्राम, मधु के साथ चाटने से शुष्क कास में आराम मिलता है।

स्वर भेद (कंठदोष) में- तिल के तेल में कत्था मिलाकर इसमें छोटा सा स्वच्छ कपड़ा भिगोकर मुँह में रखने से गला खुल जाता है।

चर्मरोग (श्वित्र, खाज, खुजली एवं कुष्ठरोग) में- इसके पंचांग का क्वाथ बनाकर प्रतिदिन प्रातः सायं दो-दो चम्मच सेवन करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए, इसके पंचांग को जल में उबालकर इस जल से स्नान करने से या रोग ग्रस्त भाग को इस जल से धोना चाहिये।

श्वित्र रोगों में- खदिर की छाल तथा इसका समभाग आँवला मिलाकर अच्छी तरह उवालकर, इसका सेवन प्रात: सायं इसमें एक-एक चम्मच आँवले का चूर्ण मिलाकर करना चाहिए।

व्रण में- खदिर को जल में उबालकर इस जल से व्रण को साफ करना चाहिए एवं इस जल में दो-दो ग्राम त्रिफला मिलाकर प्रात: सायं पिलाना चाहिए। रक्त पित्त (मुख, नासिका, गुदा, मूत्र मार्ग द्वारा रक्त स्राव होता हो) में-खदिर के पुष्पों का चूर्ण एक-एक चम्मच में मधु मिलाकर प्रात: सायं सेवन करना चाहिए। अतिसार में-छाछ में पाँच ग्राम कत्था चूर्ण घोलकर पिलाने से इसमें बहुत ही लाभ होता है। यह एक प्रभावी उपचार है। भंगदर में खदिर की छाल तथा त्रिफला का काढ़ा बनाकर, इसमें भैंस का घी तथा विडंग का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। वातरक्त में- खदिर के मूल का चूर्ण इसका समभाग आँवले का रस समभाग मिलाकर इसमें घी तथा मधु मिलाकर प्रात: सायं पिलाना चाहिए।

मात्रा- त्वक् चूर्ण-१-३ ग्राम,
क्वाथ-५०-१०० मि.ली.
खदिरसार-१/२ से १ ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'बिना उचित कर्त्तव्य पालन के अधिकारों का उपयोग अर्थहीन है।' -महात्मा गाँधी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विमला/समला Acacia concinna D.C. Syn. A. sinuata (Lour) Merrue MIMOSAE (IEGUMINOSACEAE)

4

ENGLISH NAME:- Shikakai. Acacia. Hindi- Shikaki

PARTS-USED:-Leaves & Fruits.

DESCRIPTION:- A Scandent spreading spiny shrub, branches are slender and long, sub branches are creamish white with five rows of curved spines. Leaves pinnate compound. Flowers in globose head; yellow-whitish or pink. Fruits abod fleshy, beaked and constricted.

TASTE:-Bitter, acidic

CHEMICAL CONSTITUENTS- Legumes (Fruite) Contains:- Saponin, Malic acid, Resin, Glucose, Gum, Fibers.

ACTIONS:-Fruits Expectorant, Carminative, Emetic, Stimulant Dueretic. Leaves Acidic, Laxative, Appitizer, Liver stimulant.

USED IN:- Chronic Cough, Asthmetic obstruction, Jaundic, Vomiting, Liver disease, Abdominal lump, Scorpion Venom, Lice and Dendriff, Alopecia.

प्रचलित नाम- शिकाकाई

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं फल।

स्वरूप-एक फैला हुआ कंटकी गुल्म, शाखाएँ लम्बी पतली, उपशाखाएँ श्वेताभ जिन पर वक्रकाटों की पाँच कतारें होती हैं। पत्ते पक्षाकार संयुक्त पुष्प श्वेत पीतवर्णी या गुलाबी जो गोल मुंडक में होते हैं। फलियाँ लम्बी मांसल तथा बीच-बीच में संकुचित होती हैं।

स्वाद-तिक्त, अम्ल।

रासायनिक संगठन- इसके फलों में सेपोनिन, मैलिक अम्ल, राल, गोंद, रेशे तथा ग्लूकोज पाये जाते हैं।

गुण-फल, कफ निःसारक, वातानुलोमक, वामक, उत्तेजक, मूत्रल, पत्र खट्टे, विरेचन, रुचिकर, यकृत उत्तेजक।

उपयोग-जीर्ण कफ रोगों में कप पतला करने के लिए, श्वासावरोध क न करने के लिए, कामला में, वमन में, यकृत रोगों में, उदर गुल्म नष्ट होने के लिए, बिच्छू विष में, केश में जूं एवं रुसी होने में, वमन होकर पित्त बाहर निकलता है। जिससे यकृत की कार्य विधि में सुधार होता है। जूं तथा रुसी का नाश करने के लिए इसकी फलियों के क्वाथ से बाल धोने से जूं मर जाती है एवं रुसी साफ होकर बालों में वृद्धि होती है। बिच्छू विष में इसके पत्रों का सेवन कराने से इस विष का प्रभाव कम हो जाता है। कफ पतला करने के लिए तथा श्वासावरोध कम करने के लिये इसकी फलियों का फांट (२-४ तोला) बनाकर पिलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मल की शुद्धि होती है तथा गुल्म नष्ट होता है। यकृत रोगों में भोजन के साथ शिकाकाई के पत्रों एवं काली मिर्च की चटनी बनाकर खाने से यकृत रोग ठीक होते हैं। वातरोग में इसके फूलों से पकाया हुआ घी का सेवन लाभकारी है। इमली के पत्तो के बदले शिकाकाई के पत्तों का प्रयोग किया जा सकता है। शिकाकाई की फलियों का जल में भिगोकर मसलने से रीठे जैसा झाग बनता है, जिससे केश एवं रेशमी वस्त्र धो सकते हैं।

मात्रा-पत्रों का चूर्ण २ से ४ माशा। फली का फांट २ से ४ तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बब्बूल Acacia arebica (L.) Del SSP indica Brenen Syn : Acacia arubica Lumk (Mimosaceae)

5

ENGLISH NAME:- Indian Gum tree. Hindi- Babul
PARTS-USED:- Stem, Leaves, Fruits, Stembark, Gum, Seeds.
DESCRIPTION:- A medium sized, spiny tree with short trunk, spines straight and sharp, in pairs, shipular leaves compound, pinnae 6-12 pinnules 20-40; flowers bright, yellow, in heads, axillary.
TASTE: Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark contains: Beta-amyrin, Gallic acid, Tannins, Catechin, Quercetin, Leucocyanidin; Fruits Contain: Gallic acid, Catechin, Chlorogenic acid, Gum contains: Galactose, Arabic acid, Calcium & Magnesium. Seeds Contain: Ascorbicacid, Niacin Thiamine, Aminoacids.
ACTIONS:- Astringent, Anthelmintic, Antidotal, Anti-inflammatory, Anti leprotic, emolient demulcent
USED-IN- Skin deseases, Blood dysentery, Hemorrhagic diseases, polyuria, Leucorrhoea, Fracture, Styptic, Wound healing, Drycough, gargle, stomatis

प्रचलित नाम- कीकर (बबूल)

प्रयोज्य अंग-कांड, पत्र, फल, कांड की छाल एवं गोंद।

स्वरूप- मध्यम कद का कंटकीय वृक्ष, मुख्य तना छोटे कद का, पत्र संयुक्त, चमकीले पीले पुष्प गोलमुंडक में।

स्वाद- कटु कषाय।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में बीटा-ऐमीरीन, गैलीक अम्ल, टैनिन, कैटेचीन, क्वेरसेटिन, ल्युकोसायनीडीन। फल में-गैलिक अम्ल, कैटेचीन, क्लोरोजैनिक अम्ल। गोंद में- गैलेक्टोज़, एरेबीक अम्ल, कैल्सियम एवं मैग्नेशियम के लवण, इसके बीज में- ऐस्कोरबीक अम्ल, नियासिन, थायमीन एवं एमिनो अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, कृमिघ्न, विषहर, शोथहर, कुष्ठघ्न।

उपयोग- चर्मरोग में, रक्त प्रवाहिका, रक्तस्रावी रोग में, प्रमेह, श्वेत प्रदर में, अस्थिभग्न, रक्तस्तंभक, व्रणरोपण, शुष्ककास। गोंद- पौष्टिक, मुख के छाले, गले के सूखने में इसको चूसने से लाभ, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार में तथा मधुमेह में इसका सेवन लाभकारी। छाल का क्वाथ-मुख रोग, दाँत हिलना तथा गले की सूजन में लाभ। अतिसार में- इसकी पत्तियों का स्वरस छाश में मिलाकर पिलाने से हर प्रकार के अतिसार में लाभ होता है। इसकी दो फलियाँ खाकर ऊपर से छाछ पीनी चाहिए। प्रवाहिका में- इसकी कोमल पत्तियों के एक चम्मच रस में थोड़ा-सा हरड़ का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए तथा ऊपर से छाछ पिलानी चाहिए। अत्यार्त्तव में- इसकी छाल का क़ाढ़ा बनाकर पिलाने से मासिक में अधिक रक्त बहना बंद होता है। दाह एवं तृषा में इसकी छाल के काढ़े में मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए। अरुचि में-इसकी कोमल फलियों के आचार में सैन्धव लवण मिलाकर खिलाने से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रुचि बढ़ती है तथा जठराग्नि प्रदीप्त होती है। मुख रोग-दंत रोग-इसकी छाल को जल में उबालकर इस जल से कुल्ला करना चाहिए। या इसका दातून या गोंद मुँह में चबाने से उपर्युक्त रोगों में लाभ होता है। ट्रॉन्सिल में- छाल के काढ़े से या पत्रों के रस से कुल्ला करना चाहिए। कोमल टहनी या पत्रों के रस में हल्दी मिलाकर तीन या चार दिन तक पिलाना चाहिए। रक्तस्राव में- शरीर के किसी भी अंग से रक्तस्राव होता हो, तो उस पर पत्रों का रस (पीसकर) लगाना चाहिए या सूखे पत्रों या सूखी छाल का चूर्ण उस पर छिड़क देना चाहिए। पित्तजकास में- गरमी की खाँसी में इसके पत्रों को चबाकर इस रस को कुंठ में उतारना चाहिए तथा इसकी गोंद को चूसना चाहिए। यह प्रयोग स्वर भेद के लिये भी उपयोगी है। अस्थिभग्न में-इसके बीजों का चूर्ण मधु में मिलाकर चटाने से बहुत ही लाभ होता है। जलोदर में-इसकी छाल के क्वाथ को घन स्वरूप बनाकर इसकी आधे ग्राथ की गोली बनाकर एक-एक गोली प्रातः, सायं, रात्रि समय मधु के साथ या छाछ के साथ सेवन करानी चाहिए। कान्तिवान संतान के लिये सूखे पत्रों का चूर्ण दो से चार ग्राम गर्भवती महिला को प्रतिदिन प्रातः सेवन कराने से सुंदर बालक का जन्म होगा। धातु पुष्टि में- अति मैथुन के कारण या गरमी के कारण वीर्य पतला हुआ हो या प्रमाण कम हुआ हो, तो इसके गोंद को घी में तल कर दुगुनी शर्करा मिलाकर सेवन कराना चाहिए।

मात्रा- छाल का क्वाथ-५०-१०० मि.ली.। फल का चूर्ण-३-६ ग्राम। गोंद- ३-६ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुलतान/मुक्तवर्चा Acalypha hispida, Burm. EUPHORBIACEAE

6

ENGLISH NAME- Red Hot : Cat-tail. Hindi- Kuppi

PARTS-USED- Wholeplant, Leaves, Flowers.

DESCRIPTION- A small monoecious herb with copper Red/Green Variegated leaves. Redish/Green Slender Spikes.

TASTE- Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- PlantContains: Kaempferol, Acalyphamide, Quonone, Sterols, Cyanogenic glyceride

ACTIONS:- Expectorant Laxative.

USED-IN- Flowers: In Diarrhoea, Plant is used in Haemoptysis, Gastro-intestinal, Respiratory affections, Fractures, Toothache and Earache, Leaves Beatenup with Greentobaccoleaves are useful in Severe Cough associated withbleeding from Lungs.

प्रचलित नाम - सुलतान (ताम्रपत्र एवं हरित पत्र) कुप्पी

प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र, पुष्प।

स्वरूप- लघु एक सदनी गुल्म, पत्र भिन्न वर्णी (रक्त, हरित या ताम्र), पुष्प मंजरीया लाल/ हरी।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में- किम्फेरॉल, ऐकेलिफामाईड, क्रोनोन, स्टीरोल्स, सायनोजेनिक ग्लीसराईड्स घटक पाये जाते हैं।

गुण- कफ नि:सारक, मृदुरेचक।

उपयोग--इसके पुष्प-अतिसार में लाभकारी, पंचांग का प्रयोग रक्त निष्ठीवन, अमाशय तथा आंत्रशोथ, श्वासरोग, अस्थि भग्न दंतशूल तथा कर्णशूल में लाभकारी। इसके पत्रों को तमाकू के हरे पत्रों के साथ पीसकर चबाने से जीर्णकास-फेफड़ों से रक्तस्राव सहित के रोग में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपामार्ग Achyranthes aspera, Linn. AMARANTHACEAE

7

ENGLISH NAME- Prickly-chaff Flower. Hindi- Latjeara/chirchita
PARTS-USED- Woleplant, Leaves, Roots, Seeds.
DESCRIPTION- An annual erect herb with Square Stem, 1-3 feet high, yello wish pink Flowers.
TASTE- Bitter and Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain: Saponin A&B Ecdy steron, Oligosacharide, Root contains: Oleonilic acid, Maslinic acid, Unripe FruitsContain: Saponin C&D Plant Contains: Nitrogenous Compounds-Achranthine and Alkaloids.
ACTIONS:- Purgative, Diuretic, Antibiotic, Astringent, Stomachic, Digestive Expectorant, Anthelmintic, Antidotal, Emetic.
USED-IN- Seeds: in Hydrophobia, Cough, Cold, Abdominal colic, Toothache, Scabies, Rheumatism, Piles, Boils, Dysntery, Snakebite, Hypotensive & Spasmogenic, Skindisease (Leprosy).

प्रचलित नाम-चिरचिरा (लटजीरा)
प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र, मूल, बीज।
स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत गुल्म, कांड चतुष्कोणी, १-३ फुट ऊँचा, पीले-गुलाबी पुष्प।
स्वाद- तिक्त एवं कटु।
रासायनिक संगठन-इसके बीज में- सेपोनीन ए तथा बी, एक्डीस्टीरोन, ओलीगोसेकेराईड, इसके मूल में- ओलियोनॉलीक अम्ल, मासलीनीक अम्ल, इसके अपरिपक्वफल में: सेपोनिन सी तथा डी वनस्पति में नाईट्रोजन युक्त यौगिक-एकीरेन्थाईन तथा एलकलॉयड्स पाये जाते हैं।
गुण- मृदुरेचक, मूत्रल, जीवाणु नाशक, ग्राही, दीपन, पाचन, कफघ्न, कृमिघ्न, विषघ्न, वामक।
उपयोग- इसके बीज-संत्राल, कास, प्रतिश्याय, उदरशूल, दंतशूल, कण्डुरोग, आमवात में, अर्श, पिड़िका, प्रवाहिका, सर्पविष में लाभकारी। यह औषधि दाबह्रासी तथा उदवेष्टक गुण वाली है। त्वक् रोग (कुष्ठ) में लाभकारी, इसके पंचांग का क्वाथ: भोजन के पूर्व सेवन से कुपचन, आमाशय की शिथिलता एवं पीड़ा में लाभकारी। भोजन के २-३ घंटे बाद गरमा-गरम क्वाथ देने से यकृत पर अच्छा प्रभाव-पित्तस्राव उचित मात्रा में, पिताश्मरी तथा अर्श में लाभ। मूल, पंचांग या बीज पीसकर देने से-सर्पविष तथा पागल कुत्ते के काटने से लाभ। दंतशूल में पत्र स्वरस मसूड़ों पर मलते हैं। इसका दातुअन करने से लाभ। संधिशोथ में पत्र को पीस कर गरम कर बांधते हैं। पंचांग के क्वाथ- इससे स्नानादि कराने से कण्डूरोग दूर होता है।

अर्श में-अपामार्ग के मूल का चूर्ण एक चम्मच चावल के पानी तथा मधु के साथ मिलाकर सेवन करने से इस रोग में लाभ होता है। कृमिरोग में-अपामार्ग तथा श्याम शिरीष के पत्रों का रस समभाग मिलाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा मधु मिलाकर प्रतिदिन तीन बार एक-एक चम्मच सेवन से कृमि मर कर बाहर निकल आते हैं। शिरःशूल में-अपामार्ग के बीजों से सिद्ध किये हुए तेल की सिर में मालिश करने से प्रत्येक प्रकार के सिर दर्द से आराम मिलता है। अश्मरी में-दो से चार ग्राम अपामार्ग के क्षार का सेवन भेड़ के एक कप मूत्र के साथ सेवन से अश्मरी बाहर निकल जाती है। नेत्र शोथ में- ताम्र पात्र में मधु तथा सैन्धव लवण डालकर उसमें अपामार्ग मूल घिसना चाहिए इस तरह के तैयार प्रवाही को नेत्रों में अंजन करने से नेत्र शोथ मिट जाता है। नये जख्म में-चोट लगने के कारण हुए जख्म में रक्त स्राव होता हो, तो अपामार्ग के पत्रों को पीसकर इसका रस जख्म में भर देने से बहता रक्त रुक जाता है। पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से भी अधिक बहता रक्त भी बंद हो जाता है। रक्तार्श एवं शूल युक्त अर्श में- अपामार्ग के बीजों को चावल के मांड में पीसकर इसके कल्क पिलाना चाहिए। पुत्रोत्पत्ति के लिये-अपामार्ग के मूल को दूध में घिसकर मासिक ऋतु स्राव के समय सेवन कराने से पुत्र पैदा होता है। मूत्रकृच्छ्र (मूत्रावरोध) में-अपामार्ग के मूल को बकरी के दूध में घिस कर पिलाने से मूत्रावरोध दूर होता है। विसूचिका में (कालेरा)- इसके मूल को नींबू के रस में पीसकर पिलाने से लाभ होता है। निद्रा रोग में- इसके पंचांग का क्वाथ पिलाने से नींद आ जाती है। कांटे को गलाने के लिये- जब कांटा चुभा हो तब अपामार्ग के तीन-चार पत्रों को पीसकर गुड़ में इसकी गोली बनाकर तीन चार दिन तक खिलाने से कांटा अपने-आप ही अंदर सड़ जाता है या इसके पत्रों को पीसकर चुभे हुए कांटे पर बांधने से भी लाभ होता है। दंतशूल में-इसके पत्रों को चबाने से या इसका रस लगाने से या इसके पत्रों के रस में हींग डालकर कुल्ला करने से दांत का दर्द ठीक होता है। कामला में-इसके मूल को छाछ में घिस कर इसमें पीपर मूल का चूर्ण डालकर प्रातः, सायं सात दिन तक पिलाने से लाभ होता है। जुकाम, खाँसी में- इसके पत्रों की राख में मधु मिलाकर एक से दो ग्राम चटाना चाहिए। गण्ड में-इसके पत्रों को पीसकर, इसका लेप करने से लाभ होता है।

मात्रा- मूल तथा बीज १/२-१ तोला,
मूल का क्वाथ-डेढ़ से छः तोला।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिविषा Aconitum heterophyllum Wall. RANUN CULACEAE

8

ENGLISH NAME:- Indian Atees. Hindi- Atis

PARTS-USED:-Rhizome.

DESCRIPTION:- A small herb about 3 to 4 feet high; Stem cy-lindrical; leaves heterophyllus, radical leaves near the root are pentapalmate, upper cauline leaves are small and dentate. Flowers blue or greenish blue.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Rhizome Contains:- Non poisonous Alkaloid (Atisine), Aconitic acid, Tanic acid, Fat, Oleic acid, Palmitic acid, Stearic glyceride, Gum, Sugar.

ACTIONS:-Stomachic, Astringent, Anthelmintic, Anti-emetic, Anti dyric. Digestive.

USED IN:- All types fever, Cough, Liver disease, Worms infectation, Piles, Rhinitis, Diarrhoea, Antidote, Vomiting, Tonic, Malarial fever. Indigestion, Oedema, Colicpain.

प्रचलित नाम- अतीस

प्रयोज्य अंग- मूल कंद (नवीन सफेद कंद १ इंच लम्बा तथा १/२ इंच मोटा) बिना कीड़ा लगा।

स्वरूप-एक छोटा क्षुप जो लगभग ३ से ४ फीट ऊँचा होता है। इसका काण्ड गोल जिस पर दो तरह के पत्ते होते हैं। कंद मूल के पास के पत्ते पंचपत्री एवं गोल जबकि कांड के अग्र की ओर के पत्ते छोटे एवं दन्तुर, पुष्प नीले या हरित नीलवर्णी होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके कंद में वसा, एकोनाइटिक अम्ल, टैनिक अम्ल, क्षारभ (अतिसिन-विषैला नहीं), पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक ग्लीसराइड्स, गोंद, शर्करा पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, ग्राही, कृमिघ्न, वमनशामक, तृषा शामक, तीक्ष्ण, त्रिदोष शामक, उष्ण, वीर्य तिक्त पौष्टिक, पाचन।

उपयोग-इसके कंद का प्रयोग सभी प्रकार के ज्वरों में, खाँसी, यकृत रोगों, कृमिरोग, अर्श, प्रतिश्याय, अतिसार, विषघ्न, वमन में, बल्य, विषम ज्वर में, कुपचन, शोथ में, शूल में इसका प्रयोग लाभकारी है। छोटे बच्चों के रोगों में यह एक उत्तम औषधि है। बच्चों को खाँसी, श्वास रोग, ज्वर एवं वमन में इसके कंद का चूर्ण ऋतु, शरीर का बंधारण, उम्र एवं रोग का विचार कर योग्य मात्रा में मधु मिलाकर सेवन कराना चाहिए। छोटे बच्चों के ज्वर तथा वमन में अतिविष एवं नागरमोथा का चूर्ण मधु में मिलाकर सेवन करना चाहिए। पित्तातिसार में अतिविष, इंद्रयव एवं कुटकी की छाल का चूर्ण चावल के धोवन में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। श्वास रोग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा खाँसी में अतिविष का तीन से चार माशा लेकर इसे मधु में मिलाकर रात को तीन से चार बार चाटने से श्वास रोग एवं खाँसी ठीक हो जाते हैं। संग्रहणी सभी प्रकार के ज्वरों, अरुचि तथा अग्निमांद्यता में, अतिविष, नागर मोथा, लोध्र, पहाड़ी मूल, वाला (खस), कुटकी, एवं धव के पुष्प का क्वाथ बनाकर सेवन से ऊपर दर्शाये गये सभी रोग ठीक होकर धातु में वृद्धि होती है। तृषा में अतिविष एवं बच का क्वाथ पिलाना चाहिए। बच्चों के आमातिसार में अतिविष, शुण्ठी एवं नागरमोथा का क्वाथ पिलाना चाहिए। बच्चों के सभी प्रकार के अतिरिक्त में-अतिविष के चूर्ण को मधु या गुड़ में मिला कर सेवन कराना चाहिए। संग्रहणी में अतिविष, शुण्ठी एवं गिलोय का क्वाथ बनाकर पिलाने से लाभ होता है। कृमिरोग में अतिविष तथा विडंग का क्वाथ बनाकर सेवन से कृमि बाहर निकल जाते हैं।

मात्रा-चूर्ण आधा से दो माशा (अतिसार में)। चूर्ण दो से चार रत्ती (बल्य तथा पौष्टिक)।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'वनस्पतियों का जीवन श्रेष्ठ है, क्योंकि इनके द्वारा सब प्राणियों को सहारा मिलता है, उनका निर्वाह होता है। जैसे किसी सज्जन पुरुष के घर से कोई याजक खाली हाथ नहीं लौटता, वैसे ही इन वृक्षों से भी सभी को कुछ न कुछ मिल ही जाता है।'

-श्रीमद्भागवत पुराण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वचा/ उग्रगंधा Acorus calamus, Linn. ARACEAE

9

ENGLISH NAME:- Sweet Flag. Hindi- Bach
PARTS-USED:- Rhizome.
DESCRIPTION:-A small aquatic or marshy herb, with tuberous fleshy, creeping, aromatic cylinctrical rhizonai leaves linear strap shaped, thiclcened on vains
TASTE:- Bitter. Pangent
CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains: Flavon, Essential oil which contains asarone and Beta-asarone, Calaminol, Calamene, Calamenone, Eugenol, Camphene, acids in small quantity (Palmitic, Heptylic, Butyric acid) Starch Gum, Tannin and Calcium oxalate.
ACTIONS:- Emetic, Stomachic, Anticonvulcent, Antipyretic, Alterative, hypotensive, carminative, anthelmintic Antibiotic, Diphoretic, Anti-inflammatory. Expectorant, Spasmolytic. Thermogenic, laxative, Dinretic.
USED-IN- Dyspepsia, Colic, Remittant fever, Caused depression in blood pressure epilepsy bronchilis and Respiration, Cough, Throat disorder, Chronic diarrhoea, flattulence and Calculi: It is a nerve tonic, Musclerelaxent and Tranquilizing. delirium, hyrteria, tumours, thirst

प्रचलित नाम- वच/(घोर वच)

प्रयोज्य अंग-भूमिगत कांड।

स्वरूप- कीचड़ या जल में उगने वाले लघु गुल्म, मूल कंद मांसल, भू प्रसरी सुगंधित, पत्ते लम्बे तलवार के समान पुष्प मंजरी सघन पत्र कोशों से ढकी हुई।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके भूमिगत कांड में फ्लेवॉन, सुगंधित उड़नशील तैल, जिसमें ऐसारॉन तथा बीटा-ऐसारोन, कैलामिनॉल, कैलामीन, कैलामिनोन, युजीनॉल, कैंफीन, अल्प मात्रा में अम्ल(पामीटिक, हेप्टीलिक, ब्युटरिक अम्ल), स्टार्च, गोंद, टैनिन तथा कैल्शियम ऑक्सेलेट पाये जाते हैं।

गुण- वामक, दीपन, आक्षेपशमन, ज्वरहर, कीटाणुघ्न, स्वेदजनन, शोथहर, कफ नि:सारक, उद्वेष्टन।

उपयोग- अग्निमांद्य, आंत्र शूल, विषमज्वर, रक्तदाब तथा श्वसन क्रिया में न्यूनता लाती है, कास, कण्ठरोग, जीर्ण अतिसार, आध्मान तथा अश्मरी में प्रयोग होता है। यह औषधि मेध्य, पेशी विश्राम तथा संज्ञास्थापक गुण वाली है। अपस्मार एवं अंगघात जैसे रोगों में उत्तम औषधि है, इसके सेवन से मेधाशक्ति बढ़ती है। इसका सेवन दूध अथवा मधु के साथ ज्यादा दिनों तक करने से ही लाभ। खांसी एवं श्वास में वमन कराने के लिये अधिक मात्रा में जल एवं नमक के साथ प्रयोग किया जाता है।

क्वाथ- प्रतिश्याय, गले की सूजन, खांसी, श्वसनी शोथ में लाभकारी। इसमें इसका प्रयोग वच चूर्ण को कपड़े में बांधकर सूघते हैं। अपस्मार में-इसका चूर्ण तथा मधु सेवन करना चाहिये या वच के टुकड़े कर सात दिन तक घी में भिगोकर तथा इसके पश्चात् इसका तेल निकाल कर इसको सूंघने से तुरंत लाभ होता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। उन्माद में- इसके स्वरस में कोष्ठ कुलिंजन का चूर्ण तथा मधु मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। गर्भवती स्त्री को अनाहवात में- दूध में लहसुन तथा वच मिलाकर गर्मकर उसमें हींग तथा काला नमक मिलाकर सेवन कराने से अनाहवात नष्ट होकर सगर्भा स्त्री को सुख प्राप्त होता है। प्रसव के लिये-वच को जल में घिसकर इसमें एरण्ड का तेल मिलाकर इसका लेप नाभि पर करने से सुखमय प्रसव होता है। आमातिसार, रक्तातिसार तथा खाँसी में- वच, धनियाँ तथा जीरे का क्वाथ पिलाना चाहिये। विषम ज्वर में-वच, हरड़ तथा घी का धुंआ करने से लाभ होता है। वच के चूर्ण में एक अद्‌भुत गुण पाया जाता है। इसके चूर्ण का सेवन जल या दूध के साथ एक माह तक करने से मनुष्य बुद्धिशाली बनता है। वच का प्रयोग अधिक मात्रा में करने से शिर तथा रुधिर को नुकसान होता है। इसलिये इसका प्रयोग थोड़ी मात्रा (तीन माशा) में करना चाहिये। अधिक मात्रा में सेवन से वमन होता है तथा वमनार्थ इसका सेवन जल के साथ ३०-४५ रत्ती किया जाता है। वच के टुकड़े को मुख में रखने से कफ आराम से बाहर निकल आता है। बच्चों को खाँसी में वच को जल में घिसकर पिलाने से लाभ होता है। औषधि सेवन मात्रा केवल दो से पाँच रत्ती होती है।

डॉ. देसाई वच को उष्ण, रचेदल, कास हर, कफघ्न, वामक, सुगंधी तिक्त, दीपन, वातहर, उत्तेजक, वेदना स्थापन एवं कृमिघ्न मानते हैं। इसका प्रयोग कफ वात तथा पित्त प्रकोप में किया जाता है। वच पुरुषों से ज्यादा शिशुओं तथा महिलाओं को अधिक अनुकुल है। शिशुओं को दाँत आते समय जो ज्वर आता है, उसमें वच का प्रयोग अधिक लाभकारी है। अपस्मार में-वच का चूर्ण मधु के साथ प्रात: एवं सायं सेवन से लाभ होता है। उन्माद में-जब रोगी थक जाता है उस समय वच का चूर्ण कद्दू के रस में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। पक्षाघात में- अंगघात भाग पर वच की मालिश करने से लाभ होता है। गर्भवती महिला के प्रसव समय वच का प्रयोग केसर तथा पीप्पलीमूल के साथ करने से लाभ होता है। शिशुओं की उदर वेदना तथा प्रवाहिका में वच को सेंककर सेवन कराना चाहिए (अल्पमात्रा)।

मात्रा- चूर्ण- १२५-५०० मि.ग्राम। क्वाथ-२५-५० मि.ली.। वमनार्थ-१-२ ग्राम।

●●●

'खुद साफ रहो, सुरक्षित रहो और औरों को भी रोग और बीमारी से बचाओ।' - परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोरक्षी/पंचपर्णी/शीतफल Adansonia digitata Linn. BOMBACACEAE

ENGLISH NAME:- Monkey bread Tree/Baobab.

Hindi- Gorakh Emli/Kalpuriksha

10

PARTS-USED:-Stem Bark, Fruits & Leaves.

DESCRIPTION:- Large tree, trunk with large dimension at the base becoming narrow at the apex. Leaves compound, leaf lets 3-9 with hairy petioles obovate, oblong. Flowers large white, solitary axillory, stamens many. Fruits woody pendulous, oblong amphisarca pulp is acidic.

TASTE:-Sweet/Acidic.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Pulp of Fruit Contains:- Free Tarteric acid, Potassium bitartrate. Leaves Contain Mucilage; Stem bark Contains: Bitter Crystalloid Adansenin.

ACTIONS:-Pulp of Fruit: Cooling, Appitizer, Oily, Heart tonic. Leaves-Astringent; Bark is cooling, Stomachic and Astringent.

USED IN:- Tender leaves are useful in Curing Swellings and Burning sensation. Bark in Malarial fever. Pulp in Thirst, Dysentery, Diarrhoea; it also cures bleeding with Diarrhoea.

प्रचलित नाम- गोरख इमली

प्रयोज्य अंग- कांड की छाल, फल तथा पत्ते।

स्वरूप-एक विशाल वृक्ष, जिसका तना नीचे से मोटी गोलाई में तथा अग्र की ओर शंक्वाकार, पत्ते संयुक्त, पत्रिका ३-९ की संख्या में, पत्र वृन्त रोमश। पुष्प सफेद एवं बड़े, नरकेसर अगणित, फल लौकी की तरह लम्बे कठोर कवच वाले इसका गूदा खट्टा होता है।

स्वाद-मधुर- अम्ल।

रासायनिक संगठन- फल के गूदे में मुक्त टार्टरिक अम्ल, पोटेशियम बाईटारर्टेट होते हैं। छाल एवं पत्तों में-चिकना लुआब, प्रचूर मात्रा में होता है। जबकि इसके काण्ड की छाल में कटु स्फटिकमय-एडेन्सोनिन तत्व पाया जाता है **गुण**-फल का गूदा- शीतल, रुचिकर, स्नेहन, हृदयबल्य, पत्र ग्राही, छाल शीतल, दीपन ग्राही।

उपयोग-कोमल पत्रों के प्रयोग से सूजन तथा दाह ठीक होता है। छाल का प्रयोग विषम ज्वर में लाभकारी। फल का गूदा तृषा, प्रवाहिका, अतिसार तथा अतिसार में रुधिर का आना इन रोगों में इसका सेवन लाभकारी होता है। इसके मूल तथा छाल का क्वाथ गर्मी के रोगों में उपले पक की तरह प्रयोग से लाभ होता है। इसके तने में से निकलने वाले गोंद का प्रयोग मुखव्रणों में लाभकारी। इसकी छाल का चूर्ण ज्वर के रोगियों के लिये लाभकारी होता है। इसकी छाल की पुल्टिस गण्ड पर बाँधने से लाभ होता है। संग्रहणी, अतिसार, पित्त विकार तथा ज्वर में फल के गूदे में फुले हुए खारा के साथ गोली बनाकर सेवन से लाभ होता है। ग्रीष्मऋतु में इसके फल के गूदे का शरबत पीने से लू का असर बिलकुल नहीं होता। बच्चों के प्रवाहिका तथा अतिसार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसके फल के गूदे में अनार के फल के छिलके पीसकर दोनों के स्वरस का सेवन करना चाहिए। श्वासरोग में इसके फल के गूदे को सुखाकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सूखे या ताजे अंजीर में भरकर सेवन करने से लाभ होता है। अम्ल पित्त में इसके फल के गूदे का काढ़ा बनाकर पिलाना चाहिए या इसके गूदे के शरबत में जीरा चूर्ण तथा मिश्री का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। प्रदर में इसके फल के गूदे का शरबत बनाकर पिलाने से लाभ होता है। गरमी के कारण होने वाले व्रण एवं सभी प्रकार के जख्मों पर इसके बीजों को जलाकर इसकी राख को मक्खन में मिलाकर इन पर लगाने से लाभ होता है।

मात्रा-छाल का चूर्ण एक से तीन ग्राम।
क्वाथ पाँच से दस मि.ली.।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'हिमालय की वनस्पतियाँ वस्तुतः शिव जी की जटायें हैं, क्योंकि पेड़-पौधे वर्षा की बूँदें अपने में धारण कर धीरे-धीरे जमीन में उतारते हैं।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अड़ूसा Syn : Adhatoda Zeylanica Medik Adhatoda vasica, Nees. ACANTHACEAE

11

ENGLISH NAME:- Malabarnut. Hindi- Arusa

PARTS-USED:- Whole plant, Leaves, Flowers and Root bark.

DESCRIPTION:- A much branched evergreen shrub, 4 to 8 feet high, Leaves elliptic opposite simple, entire pointed at both ends. with white flowers, bracts & bracteoles.

TASTE:- Bitter - Acrid. Artringent

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves contain: A bitter Vasicine, Adhatodic acid, voilatile oil, Vasa, Resin, Sugar, Gum & Yellow pigments, Plant contain: Alkaloids (Vasicoline, Adhatodine, Vasicolinine, Anisolin) Vasicine and Vasicinone.

ACTIONS:- Coolind Expectorant, Bronchodilator, Antibiotic, Diuretic, Anti-inflammatory, Stimulant, Anthelmintic, Antileprotic, Antiseptic, Antiperiodic.

USED-IN- Cough, chronic bronchitis, Asthma, Rheumatism, Respiratorydisorder, Antipyretic, Antituberculosis, Spasmolytic, gonorrhoea, Jaundice, ophthalmia.

प्रचलित नाम- वासा

प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र, पुष्प, मूल की छाल।

स्वरूप-सदा हरित अति शाखीत क्षुप, ४-८ फुट ऊँचाई वाले, पत्र अभिमुखी दोनों तरफ से नोकदार, पुष्प श्वेत जो निपत्र एवं निपत्रिका युक्त होते हैं।

स्वाद- तिक्त एवं कटु।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में-तिक्त प्रकार का वेसिसिन, आधाटोडिक अम्ल, उड़नशील तेल, वासा, राल, शर्करा, गोंद तथा पीतरंजक द्रव्य पाये जाते हैं। इसके पादप में ऐल्कलॉयड्स (वेसीकोलीन, आधाटोडाईन, वेसिकोलीनीन तथा ऐनाईसोलिन) वेसीसीन एवं वेसिसिनोन तत्व पाये जाते हैं।

गुण- कफ निःसारक, श्वसनी विस्तरण, जंतुघ्न, मूत्रल, शोथहर, उत्तेजक, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न।

उपयोग - कास में, जीर्ण श्वसनी शोथ, श्वासरोग में, आमवात, श्वसन तंत्रगत विकार, ज्वरघ्न, क्षयघ्न, उद्वेष्टन निरोधी। इसके पत्रों का प्रयोग कफ विकारों में अधिक होता है। श्वसनी शोथ में विशेष लाभकारी। इसका स्वरस (१/२से डेढ़ तोला) आर्द्रक स्वरस एवं मधु के साथ मिलाकर देते हैं। रक्तपित्त-इसका स्वरस मधु के साथ सेवन से लाभ। मलेरिया में-पत्र का चूर्ण लाभकारी। आध्मान, अतिसार एवं प्रवाहिका में-पत्रों का स्वरस दिया जाता है। इससे आंत्रस्थ जीवाणुओं का नाश होता है एवं अन्न का सड़ना रुकता है। रक्तपित्त में-इसके पत्रों का रस मधु के साथ एक-एक कप प्रतिदिन तीन बार पिलाना चाहिए। या तीन मास के अंदर सुखाये हुए पत्रों का चूर्ण मधु के साथ चटाना चाहिये या फूलों का छाया शुष्क चूर्ण दो ग्राम मधु के साथ चटाना चाहिए।

राजयक्ष्मा (टी.बी.) में- इसमें खाँसी के साथ बलगम आती हो तो अड़ूसा के १०-२० ताजे पत्रों का रस प्रातः सायं सेवन कराते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहना चाहिए। श्वासरोग में-इसके पत्र, सम भाग हरड़ एवं काली द्राक्षा मिलाकर क्वाथ पिलाने से या अडूसा के पत्रों के रस में अदरख एवं मधु मिलाकर सेवन कराने से श्वास रोग में लाभ होता है। या सोंठ के क्वाथ में पत्रों को उबालकर ठंडा कर इस में मधु मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। कृमिरोग में-इसके पत्रों के रस में मधु मिलाकर पिलाने से कृमिनाश होकर बाहर निकल जाते हैं। चर्मरोग (खाज, खुजली, दद्रु में)- इसके २० पत्रों में दस ग्राम हल्दी को गोमूत्र में पीसकर उस पर लेप करने से इन रोगों में लाभ होता है। वमन में- इसके पत्रों के रस में मधु या नींबू का रस मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। ज्वर में-कफ ज्वर में इसके पत्र, गिलोय, तुलसी तथा मोथा का क्वाथ बनाकर देना चाहिए।

कामला में- इसके पत्रों तथा फूलों का रस मधु के साथ देना चाहिये या दो ग्राम लौंडी पीपर का चूर्ण दो चम्मच घृतकुमारी का रस तथा चार चम्मच अडूसा के पत्रों का रस इन सबको मिलाकर पिलाना चाहिये। मूत्रघात में-गन्ने के रस या काली द्राक्षा के क्वाथ में अडूसा के पत्रों का रस दो चम्मच मिलाकर पिलाना चाहिये। या इसके पत्रों या मूल (अडूसा) का क्वाथ पिलाना चाहिये। जुकाम (प्रतिश्याय) में-इसके पत्रों के दो चम्मच रस में एक चम्मच तुलसी के पत्रों का रस तथा एक चम्मच मधु मिलाकर प्रातः सायं पिलाना चाहिये।

मात्रा-पत्रों का ताजा रस-१०-२० मि.ली., पुष्प का ताजा रस-१०-२० मि.ली.।
पंचांग चूर्ण-१०-२० ग्राम।
मूल का क्वाथ-२०-८० मि.ली.।

●●●

'प्रतिदिन एक वृक्ष से आधे घंटे तक चिपका रहने से कड़े परिश्रम की थकान से राहत मिलती है।' - चांसलर विश्मार्क

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हँसपादी Adiantum lunulatum Burm. POLYPODIACEAE

12

ENGLISH NAME:- Maiden hair. Hindi- Hansraj

PARTS-USED:-Whole Plant.

DESCRIPTION:- Small handsome herb with under ground stem; Rachis black-shining, ponds kichney shaped are orbicular or ovate, margin simple at apex but at the bose oblique. Non flowering plant, lower surface with sporangia. (Sori)

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Bitter, Astringent, Expectorant, Antiulcer, Diueretic Cooling.

USED IN:- Fever, Blood purification, Ulcer, Inflammation, Diarrhoea, Cough, Throat disorder, Agalactogogue. It alleviates vitiated blood and Cures Serious type of ulcer.

प्रचलित नाम- हँसपदी/हंसराज

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-एक छोटा आकर्षक क्षुप जिसका काण्ड भूमिजन्य, इसके पत्ते संयुक्त, पत्रवृन्त काला चमकीला, पत्रक गोलाकार या अण्डाकार, अग्र भाग सरल किन्तु आधार की ओर के किनारे घुमावदार, पुष्प रहित पत्रक के अधर तल के किनारे पर बीजाणु कोष होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-

गुण-तिक्त, ग्राही, कफ नि:सारक, व्रणघ्न, शीतवीर्य, मूत्रल, शीतल।

उपयोग-ज्वर, रक्त विकार, व्रण, दाह, अतिसार, बच्चों के कास में, कण्ठ विकार में लाभकारी। बच्चों की खाँसी में इसके पत्रों को पान के पत्ते में रखकर चबाकर खाने से लाभ होता है।

महिला के दूध विकार में इसके पत्तों को सुखाकर इसकी खीर गाय के दूध में बनाकर मिश्री मिलाकर पिलाने से नया दूध अधिक मात्रा में आता है। यह औषधि बच्चों के लिये उत्तम है। बच्चों को इसकी मात्रा एक से तीन रत्ती। इसके पंचांग का शरबत औषधि के रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है। (आधा से एक तोला की मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।) इस औषधि का प्रयोग अधिक मात्रा में करने से वमन होता है। जो कि कफ रोग में वमन लाभकारी होता है। इसके सेवन से अशुद्ध रक्त शुद्ध होता है तथा अत्यन्त दूषित व्रण ठीक होता है।

मात्रा-चूर्ण १० से ३० रत्ती।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिल्व Aegle marmelos (Linn.), Corr. RUTACEAE

13

ENGLISH NAME:- Bengal Quince. Hindi- Bel

PARTS-USED:- Roots, Bark, Leaves, Ripe-Unripe Fruit, Flowers.

DESCRIPTION:- Medium deciduous glabrous tree with long spines on the branches. leaves or trifoliate compound, Flowers greenish white, fruit large globose, rind hard, ripe after one year pulp, sweet, edible.

TASTE:- Bitter-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit contanis: Gum, Pectins, Reducing Sugars, Sugars, Oil, Which contains Marmelosin (This Contains Voiletileoil) small amount of Tannin; Leaves & Root contains: Reducing Sugars, Tannins, Iron, Calcium, Magnessium, Potassium.

ACTIONS:-Antibilious, Febrifuge, Stomachic, Astringent, Expectorant (Fruits); Leaves: Carminative, Anti-inflammatory, Antipyretic, Astringent.

USED-IN- Diarrhoea, Dysentery, Diabetes, Eardisease, Jaundice, Piles, Inflammation, Vomiting.

प्रचलित नाम- बेल

प्रयोज्य अंग-मूल, छाल, पत्र, पके-कच्चे फल, पुष्प।

स्वरूप- बहुवर्षायु (चिरस्थायी), पतनशील, चिकना लघुवृक्ष, जिसकी शाखाओं पर लम्बे कांटे होते हैं। त्रिपर्णी संयुक्त पते, श्वेत हरिताभ पुष्प, फल बीजिमांसल।

स्वाद- तिक्त कषाय।

रासायनिक संगठन-इसके फल में-गोंद, पैक्टीन, प्रह्रासक शर्करा, शर्करा, तेल जिसमें मार्मेलोसीन, (इसमें उड़नशील तेल होता है।) इसके उपरांत अल्पमात्रा में टैनिन्स, इसके पत्रों तथा मूल में-प्रह्रासक शर्करा तथा टैनिन्स, लोह, कैल्शियम, मैग्नेशियम तथा पोटैशियम पाये जाते हैं।

गुण- फल-पित्तहर, ज्वरहर, दीपन, ग्राही, कफ निःसारक, पत्र वातहर, शोथहर, ज्वरघ्न, ग्राही।

उपयोग में- अतिसार, प्रवाहिका, मधुमेह, कर्णरोग, कामला, अर्श, शोथ तथा वमन में। इसके फल का शरबत जीर्ण विबंध, अर्श, आध्मान एवं कुपचन में लाभकारी। (प्रतिदिन प्रातः)। मूल की छाल का क्वाथ विषम ज्वर में लाभकारी। ताजे पत्रों का स्वरस ज्वर, कफ ज्वर, कफ विकारों तथा शोथ में लाभकारी। मधुमेह में ताजे पत्रों का स्वरस १-२ तोला, इसके उपरांत कामला तथा विबंध में भी लाभकारी। प्रवाहिका में-इसके फल की मज्जा एवं तिल समान भाग लेकर दोनों का कल्क बना लें, दही की मलाई या घी के साथ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। रक्तातिसार एवं पित्तातिसार में-कच्चे फल की मज्जा के चूर्ण में यष्टिमधु, मधु तथा मिश्री मिलाकर तण्डुलोदक में डालकर सेवन कराना चाहिये। पसीने से शरीर में आने वाली दुर्गन्ध में बिल्व पत्रों के स्वरस को पूरे शरीर पर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगाने से दुर्गन्ध दूर होती है। संग्रहणी में- कच्चे फल की मज्जा का चूर्ण तथा सोंठ दोनों समभाग लेकर तक्र से पी जाये तथा भोजन न कर केवल तक्र का सेवन करे। छर्दि में- बिल्व मूल क्वाथ में मधु मिलाकर सेवन करने से तीनों प्रकार की छर्दि का शमन होता है। रक्तार्श में-इसके फल के गूदे का सेवन तक्र के साथ कराना चाहिये। शोथ में-इसके पत्रों का स्वरस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन से सर्व प्रकार के शोथ, कामला, अर्श में होने वाले विबंध रोगों में लाभ होता है। बधिरता- बिल्व को गोमूत्र में पीसकर तेल में गर्म कर सिद्ध करें, इस तेल को कान में डालने से बधिरता दूर होती है। आम शूल में- इसके अपरिपक्व फल की मज्जा का चूर्ण गुड़ मिलाकर सेवन कराना चाहिये। विषम ज्वर में-बिल्व वृक्ष पर उत्पन्न बन्दाक स्वरस तक्र या घृत के साथ सेवन कराना चाहिये। अपक्व बिल्व मज्जा को तेल में एक सप्ताह तक रखने के बाद स्नान करने से पूर्व इस तेल की मालिश करने से शरीर तथा पैर के तलुओं का दाह ठीक होता है। इसके पत्ते बिना पानी डाले, बारीक पीसकर कल्क बनायें, इस कल्क का प्रयोग दूषित व्रणों पर करने से व्रण ठीक हो जाते हैं।

मात्रा- छाल तथा मज्जा का चूर्ण- ३ से ६ ग्राम (नित्य तीन बार)।

स्वरस- १० से २० मि.ली.।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

फूल की तरह खिलें, चंदन की तरह सुगंधित बनें, तो भगवान् भी मस्तक पर धारण करेंगे। - माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कंटाला Agave americana, linn.AGAVACEAE

ENGLISH NAME:- Century plant. Hindi- Rambans

14

PARTS-USED:- Leaves.

DESCRIPTION:- Alarge perennial shrub, leaves or radical in a massive rossette, long, thick heavy prickly at margins, sharp pointed, large scapose inflorescence.

TASTE:- Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves contain: Hecogenin, Steroidal saponinsc Agave saponin-c & Agavosides; Sugars, Glucose, Galactose, xylose, Rhamnose, Discidic acid, Glycosides, Chlorogenin, Kaempferol, Glucosides, Rutinosides.

ACTIONS:-Anti-inflammatory.

USED-IN- Leafjuice: Used for Worts, Cancerous ulcers and Putrid tumour, Ascites, Dropsy, veneral sores, Syphilis and Dysentery.

प्रचलित नाम- गुनील केतकी

प्रयोज्य अंग- पत्र।

स्वरूप-चिरस्थायी विशाल गुल्म पत्ते मूल पत्री जो घने गुलाबाकार, पत्र अग्र तीक्ष्ण कंटकीय, पुष्प विशाल पुष्प दंड पर गुंथे हुए रहते हैं।

स्वाद- कटु।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में हेकोजेनिन, स्टीरॉईडलसेपोनिन्स-एगेव सेपोनिन-सी, तथा एगेवोसाईड्स, शर्करा, ग्लुकोज, गैलेक्टोस, जायलोज, रहामनोज़, डीसीडीक अम्ल, ग्लायकोइसाईड्स, क्लोरोजैनिन, किम्फेरॉल, ग्लुकोसाईड्स तथा रुटिनोसाईड्स पाये जाते हैं।

गुण- शोथहर।

उपयोग- पत्रों का स्वरस- मासांकुर, केन्सर युक्तव्रण, गण्ड, कोष्ठ, जलोदर, मैथुन संबंधित छालों तथा प्रवाहिका में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरलूमहानिम्ब Ailanthus excelsa, Roxb. SIMARUBACEAE

15

ENGLISH NAME:- Ailanthus. Hindi- Mahanimb/Asan

PARTS-USED:- Leaves and Bark.

DESCRIPTION:- A large lofty tree 60 to 80 feet high, Leaves Compound 2-3 feet long. Flowers yellowish inlax panicle, fruit a samara.

TASTE:- Bitter-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Glaucarubin, Glauca rubinone, Excelsin, Glaucarubol, Ailanthion, Ail antic acid, Malanthin, Tricontane; Hexatricontane. Leaves Contain: Ailantic acid, Beta-Sitosterol (Vitexin).

ACTIONS:-Bitter Tonic, Astringent, Antipyretic, Antispasmodic, Stomachic, Anthelmintic.

USED-IN- Dyscrasia, Malaria, Asthma, Bronchitis, Dyspepsia, Burning, sensation giarcliasis ulcerative colitis. Dysentery, Paste of Levaes: Locally Appliedon Ulcers, Goiter swelling, Erysipalous.

प्रचलित नाम- घोड़ करंज/ महानिम्ब

प्रयोज्य अंग- पत्र तथा छाल

स्वरूप- विशाल ६०-८० फुट ऊँचा मृदु वृक्ष, पत्र संयुक्त, २-३ फुट लम्बे, पत्रक दंतुर धार वाले तथा तिरछे आधार वाले; पुष्प पीले हरे।

स्वाद- तिक्त कषाय।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में ग्लौकारुबिन, ग्लौकारूबिनॉन, एक्सेलसिन, ग्लौकारुबोल, ऐलैन्थियोन, एलेन्टिक अम्ल, मैलेन्थिन, ट्रायकोन्टेन, हेक्साट्राय कोन्टेन। इसके पत्रों में ऐलान्टिक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरॉल पाये जाते हैं।

गुण-तिक्त, बल्य, ग्राही, ज्वरहर, उद्वेष्टहर, दीपन, कृमिघ्न।

उपयोग- रक्तदोष में, विषमज्वर में, श्वासरोग में, श्वसनीशोथ, अग्निमांद्य में, संताप में, प्रवाहिका में, पत्रों के कल्क का लेप व्रण में, गलगण्डारी सूजन तथा विसर्प में लाभकारी। इसकी छाल एवं पत्रों का क्वाथ- प्रसव पश्चात् दौर्बल्य में लाभकारी। इसके उपरांत जीर्णज्वर या दौर्बल्य में इसका प्रयोग लाभकारी। अग्निमांद्य में- इसकी छाल का रस डेढ़ औंस मात्रा में दिन में दो बार। अतिसार में -इसकी त्वचा का पुट पाक विधि से रस निकाल कर मधु के साथ सेवन करने से चिरकालीन अतिसार भी नष्ट हो जाता है। कर्णशूल में- इसकी त्वचा का पुटपाक विधि से रस निकालकर कान में डालने से कर्णशूल ठीक हो जाता है। अरलु के काण्ड की त्वचा सुगंधित होती है तथा यह बल्य होने के साथ-साथ ज्वर में लाभकारी मानी गई है। इसके अतिरिक्त यह कफघ्न तथा उद्वेष्ट-निरोधी है इस का प्रयोग श्वासरोग प्रधान ज्वर तथा श्वास में किया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरलु की ताजी त्वचा (हरी त्वचा) का रस-नारियल जल, गुड़, मधु या किसी सुगंधित द्रव्य के साथ दिया जाता है, इससे प्रसूति पश्चात् की वेदना शान्त हो जाती है या इसकी छाल का क्वाथ थोड़े दिन तक पिलाना चाहिये इससे ज्वर भी नष्ट होता है। इसका प्रयोग ग्राही के रूप में संग्रहणी तथा आमातिसार जैसे रोगों में किया जाता है। संग्रहणी में- इसकी छाल का रस १५ बूंद, छाछ १०० ग्राम में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। रक्तातिसार तथा रक्तार्श में-इसकी छाल का रस दो से ढाई ग्राम पिलाने से लाभ होता है। प्रसूता की शक्ति के लिये इसके पत्रों का स्वरस-२० ग्राम, हरा नारियल को पीसकर तैयार किया गया दूध-४० ग्राम तथा मिश्री एवं मधु आवश्यकता अनुसार मिलाकर पिलाने से शक्ति प्राप्त होती है। संधिवात में-मूल का चर्ण प्रतिदिन तीन बार देना चाहिये।

मात्रा- त्वचा का चूर्ण- १ से ३ ग्राम।

स्वरस- १० से २० मि.ली.।

♦♦♦

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'बीज ही बीज नहीं, मनुष्य भी बीज है। बीज ही अंकुरित नहीं होते, मनुष्य भी अंकुरित होते हैं, बीज ही फूल नहीं बनते हैं, मनुष्य भी फूल बनते हैं और धर्म मनुष्यता के बीजों को फूल बनाने का विज्ञान है।' - आचार्य रजनीश

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिरीष Albizzia lebbek, (Linn.) Benth. MIMOSAE (LEGUMINOSAE)

16

ENGLISH NAME:- East Indian walnut. Hindi- Siris
PARTS-USED:- Stem-bark, Leaves, Flowers and Seeds.
DESCRIPTION:- An unarmed deciduous, spreading tree, 15-18 meter high, bark grey-brownish. Compound pinnate leaves, pinnal 2-3 pairs, pinnules 4-6 pairs costa oblique. Flowers greenish-yellow and aromatic in large heads, bad thin strap shaped.
Taste:- Bitter-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Bark Contains: Tannins, Saponin; Echinocyticacid and Beta-sitosterol, Podscontains: Saponins, Echinocytic acid Olionilic acid Albigenine and Albigenic acid, Lebbekanin-c, Glucose & Rhamnose: Seeds Contain: Triterpenic saponin.
Actions- Tonic, Anti-inflammatory, Bloodpurifier Astringent, Analgesic, Emetic. Antidote.
USED IN- All types of Cough, Asthma, Scabies, Dyscrasia, Leprosy, Pruritus, Remedy for Night blindness, Powder of Root bark: Good for Gums, Externally applied as plaster in leprous ulcers.

प्रचलित नाम- सिरिस

प्रयोज्य अंग- कांड की छल, पत्र, पुष्प तथा बीज।

स्वरूप- अल्प शाखीत, पतनशील, फैला हुआ १५-१८ मीटर ऊँचा वृक्ष, पत्र संयुक्त पक्षवत, पुष्प पीत हरिताभ, सुगंधित मुंडक में।

स्वाद- तिक्त, कषाय।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में टैनिन्स, सैपोनिन, ऐकिनोसायटीक अम्ल एवं बीटा-सिटोस्टीरोल, इसके फल में सैपोनिन्स, ऐकिनोसायटिक अम्ल, ओलियोनोलिक अम्ल, ऐल्बीजेनाईन तथा ऐलबीजेनिक अम्ल, लेबाकैनिन-सी, ग्लुकोस तथा रहामनोस, इसके बीज में-ट्रायटर्पेनिक सैपोनिन पाया जाता है।

गुण- बल्य, शोथहर, रक्तशोधन, ग्राही, वेदनाहर, वामन, विषघ्न।

बीज का चूर्ण- नस्य के कफ प्रधान रोगों में लाभकारी। पुष्पों का स्वरस पिपली का चूर्ण एवं मधु के साथ श्वास रोग में लाभकारी।

उपयोग- सभी प्रकार के कास में, श्वास रोग में, कण्डुरोग, रक्तदोष, कुष्ठरोग, रतौंधी के उपचार में। मूल की छाल का चूर्ण मसूड़ों के लिये उत्तम, कुष्ठरोग के छालों पर इसका प्रयोग प्लास्टर के रूप में लाभकारी। कुष्ठरोग में- इसकी छाल पीस कर कुष्ठ रोग के छालों पर लेप करना चाहिये। कफज विसर्प में- शिरीष के पुष्पों के चूर्ण में घृत का थोड़ा सा मोयन देकर जल में पीसकर लेप करना चाहिये। श्वासरोग में-शिरीष के ताजे पुष्पों का स्वरस पिप्पली एवं मधु के साथ पिलाना चाहिये। सर्प विष में-श्वेत मरिच के चूर्ण में शिरिष पुष्प रस की सात दिन तक भावना देकर, शुष्क चूर्ण बनाकर इस चूर्ण का नस्य सेवन एवं अंजन करने से सर्प विष नष्ट होता है। विषघ्न वनस्पतियों में इसे श्रेष्ठ बताया गया है। अर्धाव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेदक में-इसके मूल तथा फली का स्वरस नासिका में एक-दो बूंद टपकानी चाहिये। कृमिनाश के लिये-शिरीष की कोमल पत्र सहित टहनियों का रस एवं अपामार्ग के पंचांग का रस मधु के साथ पिलाना चाहिये।

नवीन नेत्राभिष्यंद में-शिरीष के पत्रों का स्वरस में मधु मिलाकर नेत्रों में अंजन करना चाहिये। इसके काण्ड के अंदर से निकाली गई कोमल त्वचा प्राप्त होती है, इस त्वचा का वस्त्रपूत चूर्ण बना लेना चाहिये। यदि किसी को कोई चोट लगी हो, सिर फूट गया हो कोई अंग कट गया हो या रक्तस्राव हो रहा हो, तो इस चूर्ण को उस जगह भर कर दबा देने से रक्त स्राव शीघ्र ही बंद हो जाता है तथा एक पट्टी में क्षत का रोपण हो जाता है। गण्डशोथ में-इसके पत्रों की पीसकर कल्क बना गर्म करके बांधना चाहिए, इसका प्रयोग प्रत्येक दो-दो घंटे बाद करने से गण्ड को अंदर से पकाकर बाहर खींच लाता है। इसके (शिरीष) बीजों का तेल रक्तातिसार में उपयोगी है। कण्ठमाल की गांठों में-इसके बीज का चूर्ण का सेवन करना चाहिए तथा इन बीजों को पानी में पीसकर बाहर लेप करना चाहिये। **मात्रा**- छाल तथा बीज का चूर्ण-३ से ६ ग्राम। छाल का क्वाथ- ५० से १०० मि.ली.। स्वरस- १० से २० मि.ली.।

◆◆◆

प्रदूषण मानव को प्राणहीन, शक्तिहीन तथा आलसी बनाता है। वनस्पति संवर्धन एवं रक्षा ही इसका उपचार है। - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलाण्डु Allium cepa Linn. LILIACEAE

17

ENGLISH NAME:- Onion. Hindi- Pyaj

PARTS-USED:- Leaves and Bulb (Red variety).

DESCRIPTION:- A small herb with tunicated bulb, leaves tubular and cylindrical, Flowers white in head.

TASTE:- Pungent-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bulb contains: Glutamyl, Arginin, Cystein, Quercetin, Kaempferol, Diosgenin, Methylcysteine Sulphoxide, Propylcystein, Sulphoxide, Propylcystein, Saponins and Sugars.

ACTIONS: Stimulant, Diuretic, Expectorant, Aphrodisiac, sex stimulant

USED-IN- Dysentery, Piles, Bronchitis, Ischaemic Heat disease, Flattulance, Hypoglycaemic, Anti tumour, Alsouseful in Jaundice, Anus prolapse, Gum swelling, Night blindness.

प्रचलित नाम- पियाज

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं कंद (लाल जातिका)

स्वरूप-लघु गुल्म, शल्कावरित कंद, पत्र पोली नलिका जैसे, पुष्प गोल गुम्मजदार सफेद गुच्छों में होते हैं।

स्वाद- चरपरा एवं कटु।

रासायनिक संगठन-इसके कंद में ग्लुटामिल, अर्जीनाइन, सिस्टीन, क्रेरसेटिन, किम्फेरॉल, डायोस्जेनिन, मिथाइल सिस्टीन सॅल्फोक्साईड, प्रोपिल सिस्टीन सल्फोक्साइड तथा प्रोपिल सिस्टीन, सेपोनिन्स तथा शर्करा पाये जाते हैं।

गुण- उत्तेजक, मूत्रल, कफ निःसारक, कामोद्दीपन।

उपयोग- प्रवाहिका, अर्श, श्वसनीशोथ, हृदयरोग, आध्मान, रक्त में शर्करा का प्रमाण कम करता है एवं अर्बुदनाशक। इसका उपयोग कामला, गुदभ्रंश, मसूड़ों की सूजन, रात्र्यंध में लाभकारी। प्याज के बीज सिरका में पीसकर दाद पर लगाने से लाभ होता है। कंद के रस को सरसों के तेल में मिलाकर आमवातादि, संधि विकार, दाह, कण्डु चर्मरोगों में लाभकारी। बच्चों एवं वृद्धों के कफ विकारों में प्याज के रस को मिश्री में मिलाकर चटाया जाता है। अर्श में इसके रस को १-२ तोला मिश्री में मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। मसूढ़ों की सूजन तथा शूल में नमक के साथ पिलाते हैं। इसका रस साधारण गरम कर कर्णशूल में लाभदायक होता है। इसके कंद सफेद एवं लाल दो प्रकार के होते हैं। सफेद कंद-बल्य, तीक्ष्ण, वृष्य, गुरु, मधुर, रुचिकर, स्निग्ध, कफकर, धातुवर्धक, निद्राप्रद तथा दीपन है। यह यक्ष्मा, हृदयरोग, वमन, अरुचि, रक्त पित्त, वात पित्त, कफार्श, वातार्श, पसीना, सूजन तथा रक्तदोष का नाश करता है। लाल कंद-शीतल, स्निग्ध, गुरु, अग्नि दीपक, तीक्ष्ण, मधुर, किंचित् उष्ण, पित्तकर, वृष्य एवं बलकर है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह कफ, वायु, सूजन, अर्श तथा कृमियों का नाश करता है। पलाण्डु के बीज-वृष्य तथा दाँत के कृमि एवं प्रमेह का नाश करते हैं। बच्चों के इक (टिटेनस) अकड़न रोग में-इसके सफेद कंद को दबाकर तोड़ने के पश्चात् सुंघाने से लाभ होता है। उन्माद रोगों में-सफेद कंद का रस निकाल कर नेत्रों में अंजन करने से लाभ होता है। गरमी के कारण कपाल में दर्द होने पर कंद को तोड़कर सूंघना चाहिए एवं चंदन में कपूर घिसकर इसका कपाल पर लेप करना चाहिये। नाक में से रक्त स्राव होने पर कंद के रस का नस्य करने से लाभ होता है। कालेरा में-प्रत्येक १५ मिनट के पश्चात् कंद का रस पिलाते रहना चाहिये। कालेरा रोग की महामारी से बचने के लिये रात्रि भोजन पकाकर कंद के रस में एक चने मात्र में हींग घिसकर उसमें एक माशा सौंफ तथा एक माशा धनिया चूर्ण मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। बिच्छुदंश में-विच्छु दंश स्थान पर कंद के दो टुकड़े कर अच्छी तरह घिसना चाहिये। वीर्य वृद्धि के लिये-कंद का रस मधु में मिलाकर सेवन करना चाहिये। ततैया दंश में कंद का रस निकालकर अच्छी तरह घिसना चाहिये। शिशुओं के शीघ्र बढ़ने के लिये-बच्चों को गुड़ तथा इसका कंद खिलाने से बच्चे शीघ्र बढ़ते हैं। प्रवाहिका में (मरोड़ के साथ रक्त आता हो)- कंद को बारीक काट कर उसके टुकड़ों को अच्छी तरह चार से पाँच बार जल में धोकर गद्देदार दही के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। अतिसार में-कंद के रस में अफीम मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। नपुंसकता में-सफेद कंद का रस, मधु, अदरक का रस तथा घी इकट्ठा कर प्रात:काल २१ दिन तक पिलाने से पुरुषत्व प्राप्त होता है। या कंद का रस सात माशा, घी तीन माशा, मधु तीन माशा इन सबको इकट्ठा कर प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सेवन करना चाहिये तथा रात को २५० मि.ली. गरम दूध में मिश्री मिलाकर दो माह तक पीने से वीर्य में वृद्धि होती है। कामला रोग में-इसके सफेद कंद, गुड़ एवं उसमें थोड़ी हल्दी मिलाकर प्रात: या सायं सोते समय सेवन करने से लाभ होता है। जुकाम हुआ हो तो सफेद कंद को काटकर नासिका द्वारा सूंघने से लाभ होता है।

◆◆◆

'श्रेष्ठता और संस्कृति का पहला गुण स्वच्छता है।'

- परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लसुन Allium. sativum, Linn. LILIACEAE

18

ENGLISH NAME:- Garlic. Hindi- Lahsun
PARTS-USED:-Bulb & Leaves.
DESCRIPTION:- A small herb with half tunicated bulb; Leaves flat linear grasslike, Flowers white on a globose umbel.
TASTE:-Acrid, Sweet
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bulb Contains:-Avoltile oil which contains Allyl disulphide, Allyl-propyl disulphide and Poly sulphide; Allicin (Anti bacterial): Allicetion-I and Allicetion-II (Antibiotics.).
ACTIONS:-Spermopoitic, Aphrodisiac, Oleative, Digestive, Bitter, Pungent, Bone heeling, Tonic, Rejuveinator. Diphoretic, Stomachic, Diuretic, Stimulant-Expectorant, Antiseptic, Antibacterial.
USED IN:- Malarial fever, Flatulance, Epilepsy, Tuberculosis, Ulcer, Ear troubles, Externally applied as Rubefaciant & Antiseptic, Throat disorder, Skin disease, Bone ulcer, Chronic cough, Asthma, Bronchitis, Gangerne of Lungs, Lobar pneumonia.

प्रचलित नाम- लहसुन

प्रयोज्य अंग- कंद एवं पत्र

स्वरूप-लघु गुल्म, अर्धशल्कावरित कंद, पत्र सपाट, पतले, लम्बे घास जैसे, पुष्प सफेद, गोल छत्र में।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके कंद में-एक उड़नशील तैल जिसमें एलिल डासल्फाइड तथा ऍलिल-प्रॉपिल डासल्फाइड तथा पोलीसल्फाइड (अल्पमात्रा में) ऍलिसिन (कीटाणुघ्न), एलिसेशन-प्रथम तथा एलिसेशन-द्वितीय (प्रति जैविक) पदार्थ भी पाये जाते हैं।

गुण-धातुवर्धक, वीर्य वर्धक, स्निग्ध, पाचक, कटुरस युक्त, तीक्ष्ण, भग्न संधान कारक, बल्य, रसायन, दीपन, मूत्रल, स्वेदजनन, उत्तेजक, कफ नि:सारक, प्रति दूषक, कीटाणुघ्न।

उपयोग-विषम ज्वर में, वातगुल्म में, अपस्मार, राजयक्ष्मा, व्रण, कर्णरोगों में, बाह्य प्रयोग त्वगरोग कारक तथा प्रतिदूषक के रूप में, कण्ठ शोथ, फुफ्फुस पाक। विषम ज्वर में-भोजन से पहले तेल के साथ लहसुन खिलाना चाहिए। वातगुल्म में-सूखे लहसुन की कलियाँ-१६ तोला, दूध-५०० मि.ली., जल चार लीटर, इन सबको उबालकर इसका क्षीर शेष पकाकर, इस दूध का सेवन कराने से वातगुल्म, गृध्रसी, विषम ज्वर, हृदयरोग, शोथ, रोग नष्ट होते हैं। अपस्मार में- तेल एवं लहसुन का सेवन कराना चाहिये। इसका फांट भोजन के पूर्व एवं पश्चात् देना चाहिए। राजयक्ष्मा में-इसके दण्डाणु से उत्पन्न सभी विकृतियों जैसे फुफ्फुस विकार, स्वर यंत्र शोथ, चर्म विकार, अस्थि व्रण में लहसुन का सेवन (रस के रूप में प्रयोग) निश्चित रूप से लाभदायक सिद्ध हुआ है। स्वर यंत्र शोथ में-लहसुन का टिंक्चर आधा से एक ड्राम दिन में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो-तीन बार देते हैं। पुराने कास, श्वास, श्वसनिकाभिस्तीर्णता एवं श्वास कृच्छ्र में-लहसुन का अवलेह बनाकर उपयोग किया जाता है। वायविडंग के साथ लहसुन का सेवन भी लाभदायक है। जीर्ण आमवात में एवं संधिशोथ तथा शिर:शूल में-लहसुन का सेवन तथा इसका बाह्य लेप किया जाता है।

कृमिरोग (कैंचुवा)-लहसुन के रस की १०-३० बूँद दूध में मिलकार पिलाने से लाभ होता है। आंत्रिक एवं तंद्राम ज्वर में लहसुन का टिंक्चर एक ड्राम हर ४ या ६ घंटे पर शरबत के साथ देते हैं। आंत्रिक प्रति दूषक के रूप में लहसुन का प्रयोग किसी भी अवस्था में किया जा सकता है, जबकि बच्चों को आधा ड्राम की मात्रा में शरबत के साथ देना ही ठीक है। वात व्याधि में-लहसुन को पीसकर घृत के साथ खिलाना चाहिए। आहार में घी युक्त पदार्थ अधिक लेने चाहिए। इस से वायु के रोग नष्ट हो जाते हैं। व्रण में कृमि पड़ गये हों, तो लहसुन को सूक्ष्म पीसकर, इसके कल्क की लुग्दी बना व्रण पर बाँधने से कृमियों का नाश होता है। कर्णशूल में-तिल के तेल में २-३ कली पका कर, उस तेल की एक-दो बूंदें कान में डालनी चाहिए। हृदयरोग में-लहसुन के प्रयोग से आध्मान कम होकर हृदय के ऊपर का दबाव दूर होता है, हृदय को बल मिलकर, मूत्र अधिक होता है। खास-खुजली (स्केबीस)-सरसों के तेल में लहसुन को पकाकर सिद्ध किया हुआ तेल इन पर तथा फोड़ों पर लगाने से लाभ होता है। लहसुन का सेवन करने वाली स्त्रियाँ-इनका रूप नहीं बिगड़ता, यौवन दिन प्रतिदिन विकसित होता है, कमर का दर्द नहीं रहेगा, इसके श्रोणी प्रदेश का सौंदर्य चिरस्थायी शरीर मृदु रहेगा, उसकी संतान मेधावी, दीर्घायु एवं सुंदर होगी। प्रतिदिन चार तोला लहसुन घृत एवं किंचित् मधु के साथ खाना चाहिए।

मात्रा-स्वरस १०-३० बूंद, कल्क-२-३ माशा।

●●●

पीपल का रहस्य -

'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः।
गंधर्वाणां चित्ररथः, सिद्धानां कपिलो मुनिः॥' - गीता
अ० १० श्लो० २६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानकंद/महापत्र Alocasia indica (Roxb.) Schott ARACEAE

19

ENGLISH NAME:–Giant Alocasia. Hindi- Mana

PARTS-USED:- Corm.

DESCRIPTION:- A giant herb, 3 to 6 feet high. Leaves 2-3 feet long.

TASTE:- Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Corm Contains: Large amount of Starch and calcium Oxalate.

ACTIONS: Cooling, Digestive, Nutritive, Diuretic, Laxative.

USED IN:- Inflammation, Ascities, chronic Constipation, Piles, Earache, Arthritis.

प्रचलित नाम- मानकंद

प्रयोज्य अंग- स्कन्ध

स्वरूप-३-६ फूट ऊँचा महागुल्म; पत्ते २-३ फूट लम्बे, स्कंद मांसल, पुष्प लम्बे वृंत पर गुंथे हुए होते हैं।

स्वाद-कषाय।

रासायनिक संगठन-इसके कंद में-स्टार्च अधिक मात्रा में एवं कैल्शियम-ओक्सेलेट पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, पाचन, पौष्टिक, मूत्रल, मृदुरेचन।

उपयोग- इसके स्कंध का उपयोग शोथ, जलोदर, जीर्ण विबंध, अर्श, कर्णशूल एवं संधिशोथ में लाभकारी है। इसमें मीठे कंद का प्रयोग औषधि के रूप में किया जाता है। इसके स्कंध (सूखे) का चूर्ण चावल की मांड के साथ पकाकर देने से शोथ एवं जलोदर में लाभ होता है।

स्कंध को भूनकर इसका स्वरस कर्णस्राव में डालने से लाभ होता है।

मात्रा- स्कंध का चूर्ण- १०-२० ग्राम।

●●●

'स्वच्छ रहना देवत्व के समीप रहना है।' -पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घृतकुमारी Aloe barbadensis, Mill. LILIACEAE

20

ENGLISH NAME:- Barbados Aloe. Hindi- Ghee Kuar/Gwarpatha

PARTS-USED:- Whole Plant, Dried juice and Pulp of Leaves.

DESCRIPTION:- A small herb with stolon, fleshy and radical leaves, flowers pinkish red on long scape.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Carbohhdrates, Tannins, Proteins, Chromones (Abesin and Aloesone), Malic acid, Citric acid, Tartaric acid, Jelly from Leaves Contain: Acetylated glucomannans, Iron, Calcium, Potassium and Magnessium.

ACTIONS: Purgative, Carminative, Digestive, Tonic, Anti-inflammatory, Analgesic.

USED IN:-Thepulp is used to cure: Piles, Rectalfissures, Cough, Cold, Rheumatism, Constipation Fevers, Colic, Menstrual disorder, It is also stomachic, Anthelmintic, Hepatoprotective, Uterus Stimulant, Hypotensive.

प्रचलित नाम- ग्वारपाठा

प्रयोज्य अंग-पंचांग, शुष्करस एवं पत्रों का गूदा।

स्वरूप-लघु गुल्म, पत्ते मूल पत्री तथा मांसल, पुष्प लम्बे पुष्प दंड पर गुलाबी या लाल रंग के होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में-कार्बोदित, टैनिन्स प्रोटीन्स, क्रोमोन्स (एवेसिन एवं एलोसॉन) मैलिक अम्ल, सिट्रिक अम्ल, टारटेरिक अम्ल। इसके पत्रों के गुदे में एसिटीलेटेड ग्लुकोमनान्स, लोह, कैल्शियम, पोटेशियम तथा मैग्नेशियम घटक पाये जाते हैं।

गुण- अतिरेचक, वातघ्न, पाचन, बल्य, शोथहर, वेदनाहर।

उपयोग-पत्रों के गूदे का उपयोग अर्श में, गुदा विदर, कास, प्रतिश्याय, आमवात, विबंध में, ज्वर, शूल, आर्त्तवदोष में होता है। यह औषधि दीपन, कृमिघ्न, यकृत रोग निवारक, गर्भाशय उत्तेजक तथा दाबहासी गुणवाली है। घृतकुमारी का रस सैन्धव एवं हरिद्रा के साथ प्रयोग से विबंध, गुल्म, पाण्डु, पाचन विकार तथा यकृत प्लीहा रोगों में लाभदायक है। इसके रस का प्रयोग अनार्त्तव (स्त्रियों के विकार) में लाभकारी। इसके रस का बाह्यलेप स्तनशोथ, चर्मविकार, नेत्राभिष्यंद, अर्श एवं व्रण में लाभकारी। सूत्र कृमियों में लाभकारी। ज्वर में (विषम ज्वर-मलेरिया)- घृत कुमारी का रस एक चम्मच में चार दाने काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन कराना चाहिए। जीर्ण ज्वर में-घृतकुमारी के एक चम्मच रस में दो ग्राम हरड़ का चूर्ण मिलाकर प्रातः एवं सायं सेवन कराना चाहिये। कामला में-घृतकुमारी के दो तोला रस में इतना ही मूली का रस मिलाकर या एक चुटकी लींडी पीपर का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिये। रक्तगुल्म में-महिलाओं को होने वाले रक्तगुल्म का उदर में हुई गांठ में घृतकुमारी का गर्म रस पुराने गुड़ में मिलाकर प्रतिदिन दो बाद खिलाना चाहिये।

उदर रोगों में-जलोदर, यकृतोदर, प्लीहोदर रोगों में दो से चार चम्मच घृतकुमारी का रस दुगुने गोमूत्र में मिलाकर पिलाने से उपर्युक्त रोगों में लाभ होता है। टॉन्सिल में-इसके रस में हल्दी का चूर्ण मिलाकर एक-एक चम्मच प्रतिदिन तीन बार सेवन कराने से टॉन्सिल में लाभ होता है। इससे खाँसी में भी लाभ होता है। जुकाम (प्रतिश्याय) में-इसके रस में हल्दी, अजवायन का चूर्ण या अदरख का रस मिलाकर रस चटाने से लाभ होता है। गण्ड में-घृतकुमारी के गर्भ से हल्दी का चूर्ण मिलाकर पुल्टिश बांधनी चाहिये। इससे सूजन में भी लाभ होता है। नेत्र रोग में इसके गर्भ में हल्दी का चूर्ण मिलाकर नेत्रों पर पट्टी बाँधने से आँखों की लाली नष्ट होती है। विस्फोटक में- घृतकुमारी के गर्भ का लेप करना चाहिए एवं सेवन कराना चाहिए। दुष्टव्रण में- व्रण में कीड़े पड़े हों या दुर्गन्ध आती हो तो घृतकुमारी के मूल गोमूत्र में घिसकर व्रण पर लगाना चाहिए। चर्म रोगों में (खाज-खुजली-दद्रु)-इसके रस का लेप करना चाहिए तथा गाय के मूत्र में मिलाकर पिलाना चाहिए। रक्तपित्त में-इसके रस में अडूसा, गिलोय या आँवला का रस मिलाकर सेवन कराना चाहिए, प्रतिदिन दो या तीन बार।

मात्रा-पत्र स्वरस-१०-२० मि.ली.।
एलुवा-०.१-०.३ ग्राम।

***

'धरती पर स्वर्ग अवतरित करने का प्रारंभ सफाई और स्वच्छता से करें।' - परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाभरी वच Alpinia galanga willd. ZINGIBERACEAE

21

ENGLISH NAME:- Greater galangal/ Java Galangal. Hindi- Kulinjan Bhed
PARTS-USED:- Root (Tuberous)
DESCRIPTION:- A perennial herb with underground aromatic tubrous roots 6-7 feet high, leavs-6-15 inch long, flowers greenish white.
TASTE:- Pungent Aromatic.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Tuberous roots contain: Light yellow coloured oil which contains Eugenol, cineol-d- penene, Cadenens, Bassorin, Galangin; Crystaloid Substnces like Kaepferide, Galongol, Monomethyl ether of Galangin, Starch, Resin, Tannin, Phlobaphane, Fats.
ACTIONS:- Aromatic Stimulant, Expectorant, Stomachic, Digestive, Carminative, Tonic Aphrodisiac.
USED IN:- Cough cold, Rheumatism, Catarha, Asthma, Diabetes, Harseness of voice, Dentifrices, also used to made other medicines aromatic.

प्रचलित नाम- कुलिंजन
प्रयोज्य अंग -मूल कंद
स्वरूप- चिरस्थायी गुल्म, भूमिजन्य, सुगंधित मूल कंद युक्त, ६-७ फूट ऊँचे, पत्ते ६-१५ ईंच लम्बे, पुष्प श्वेत हरिताभ।
स्वाद- उग्र गंध युक्त
रासायनिक संगठन-इसके मूल कंद में हल्के पीले रंग का तेल-जिसमें युजीनोल,सीनीयोल-डी-पिनीन,केडेनीनूस,बैसोरीन, गैलेन्जीन, स्फटिक पदार्थ-कीफेराईड, गैलेंगोल, गैलेन्जीनका मोनोमिथाइल ईथर, स्टार्च,ग्राल, टैनीन, फ्लोबाफेन तथा वसा तत्व पाये जाते हैं ।
गुण-सुगंधित,उत्तेजक,कफनि:सारक, दीपन,पाचन, वातहर,बल्य वाजीकरण
उपयोग-कास-जुकाम, आमवात, श्वासरोग, मधुमेह, स्वरभंग, दंतरोगों में; अन्य औषधियों को सुगंधित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इसके मूल का चूर्ण-मधु के साथ चटाने से-खाँसी, श्वास रोग, कुकास खाँसी, बच्चों तथा वृद्धों के श्वसन संस्थान विकारों में लाभ होता है एवं श्वास कृच्छ्र दूर होकर ज्वर में लाभकारी। इसके उद्वेष्टनरोधी गुण के कारण श्वास रोग में लाभ होता है। पाचन विकारों में इसके पाचन, दीपन एवं सुगंधि जैसे गुणों के कारण लाभ होता है। मधुमेह एवं अपने आप होने वाले मूत्रत्याग में इसके क्वाथ का प्रयोग लाभकारी। इसकी जड़ को चबाने से मुख की दुर्गंध दूर होती है एवं वाजीकरण के लिए लाभ होता है। दंतशूल में-जड़ का चूर्ण दांतों में रगड़ने से लाभ होता है। शरीर पर अधिक पसीना आता हो तो इसका चूर्ण शरीर पर रगड़ना चाहिए। इसका अर्क बनाकर पीने से उत्तम 'कान्तिमय देह बनता' है। यदि दाँत दु:खते हो, तो कुलिंजन चबाने से दाँतों का दर्द शांत होता है ।
मात्रा-चूर्ण-२ से ८ मिली ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सप्तपर्ण Alstonia scholaris R.Br. APOCYANACEAE

22

ENGLISH NAME:- Devil's tree. Hindi- Chhatwan
PARTS-USED:- Leaves, Bark and wood.
DESCRIPTION:- A large tree with whorled branches and leaves with bitter milky juice, white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Picralinol; Akuammigine, Tubotaiwine, Akuammicine; Flowers: Picrinine, Strictamine, Tetrahydro alstonic, Hexacosane, Lupeol, Beta-Amyrin, Palmiticacid, Urolicacid. Stembark: Echitamine, Glucoside (Venoterpine).
ACTIONS:- Astringent, Sedative, Liver Tonic, Antileprotic, Stomachic, Blood Purifier, Galactagogue.
USED IN:-Ulcers, Dyscrasia, Beriberi, Liver congestion, Dropsy, Dysentery, Malaria, Gastro-intestinal troubles: Milkylatex applied externally on sores, Rheumatic pain and Toothache; Wood paste applied on Rheumatism and Wounds.

प्रचलित नाम- सतवन (सतौना)

प्रयोज्य अंग-पत्र, छाल एवं काष्ठ।

स्वरूप-विशाल वृक्ष, शाखाएँ चक्राकार समूह में, पत्र तिक्त दुग्ध रस युक्त एवं सप्तवर्णी पुष्प सफेद रंग के होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में- पिक्रालिनॉल, एकॉमीजाइन ट्यूबोटायविन, ऐकुवामिसीन, इसके पुष्पों में: पिक्रीनाईन, स्ट्रीक्टामाईन, टेट्राहाइड्रो एलसटोनिक, हेक्साकॉसेन, ल्युपियॉल, बीटा-एमीरीन, पामीटिक अम्ल तथा यूरोलिक अम्ल। कांड की छाल में एकीटामाइन, ग्लुकोसाइड (वेनोटरपाइन) पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, संज्ञास्थापन, यकृत बल्य, कुष्ठघ्न, दीपन, रक्तशोधन, स्तन्य जनन।

उपयोग- व्रण, रक्तदोष, बेरीबेरी, यकृत अवरोध, जलोदर, प्रवाहिका, मलेरिया ज्वर, जठरांत्र अवरोध में लाभकारी, दुग्धक्षीर का बाह्य प्रयोग छालों में, आमवातशूल में, दंतशूल में, काष्ठ की पेस्ट का प्रयोग आमवात तथा कटे-छिले भाग में लाभकारी। मलेरिया ज्वर में इसके प्रयोग से केवल ज्वर नियंत्रण होता है, तिक्तद्रव्य से पाचन सुधरता है। छाल का क्वाथ: अतिसार तथा जीर्ण प्रवाहिका में लाभकारी। प्रसूति के पश्चात् इसके सेवन से दुग्ध की मात्रा बढ़ती है। दुग्ध क्षीर का लेप- जीर्ण व्रणों तथा चर्मरोगों में लाभकारी। ज्वर, शूल, गुल्म में-इसकी छाल का क्वाथ पिलाने से लाभ। व्रणरोपण के लिये-इसकी छाल को दूध में पीसकर इसका लेप करने से व्रण रोपण क्रिया शीघ्र होती है। मूत्रकृच्छ्र में- इसकी कोमल टहनियों के अग्रभागों के स्वरस में मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ।

जुकाम एवं ज्वर में-सप्तपर्ण की छाल, गिलोय, नीम की अंतर छाल- यह सब दो-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो तोला की मात्रा में लेकर इनका क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिये।

अमेरिका के फार्मास्युटीकल एसोसिएशन (१८७७) के रिपोर्ट में सप्तपर्ण को शक्तिवर्धक एवं ज्वर नाशक माना गया है तथा इसका प्रयोग बार-बार आने वाले ज्वर में तथा जुकाम में बहुत ही किया गया था, इसका परिणाम बहुत ही संतोषजनक था। इसकी छाल में से उपलब्ध डीटेइन तथा डीटेमिन तिक्त रसायन है जो अतितिक्त है, जो क्वीनाईन से भी ज्यादा गुणकारी माने गये हैं। क्वीनाईन तथा डीटेमाईन दोनों ही समान मात्रा में दिये जाते हैं तथा दोनों का परिणाम एक ही जैसा आता है। क्वीनाईन अधिक मात्रा में लेने से कानों में बहराश आती है तथा नींद नहीं आती। जबकि डीटेमाईन का कोई ऐसा प्रभाव नहीं होता तथा इसका प्रभाव अच्छा तथा सफल होता है। शिशुओं को सप्तपर्ण की छाल आधा ड्राम तथा प्रौढ़ों को यह एक ड्राम (प्रतिदिन) तक दी जा सकती है। सैनिक अस्पतालों में डीटेमाईन का प्रयोग किया जाता था (क्वीनाईन के बदले में)। जीर्ण अतिसार तथा प्रवाहिका में इसकी छाल का प्रयोग अतिलाभकारी है। चरक संहिता में सप्तपर्ण की छाल, रस तथा बीज वातपित्त प्रशमन कारक, कुष्ठघ्न, दर्दनाशक तथा शीत निवारक कहा गया है। सुश्रुत संहिता में इसको आम वात प्रशमन, अरुचि नाशक गुल्म शूल नाशक, आम पाचक कहा गया है। इसकी छाल थोड़ी कड़वी सुगंधित एवं खट्टी होती है।

मात्रा-त्वक् चूर्ण- ४-८ग्राम।
क्वाथ के लिए २-४ ग्राम।

***

'हरे पेड़ काटने वाले और जानवर को मारने वालों को खुदा भी माफ नहीं करता है।' -कुरान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खेरू Althaea rosea Cav. Linn. MALVACEAE

23

ENGLISH NAME:- Marsh Mallow / Holly hock. Hindi - Khatmi

PARTS-USED:- Leaves and Seeds, Flowers.

DESCRIPTION:- A large perennial shrub, about 70 to 80 cms. or more leaves long petioled, ovate cordate 5-7 lobed high, Flowers large on long and stout raceme, purple, rose, yellow or white

TASTE:- Mucilaginous.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Cantaion: Alkaloids, Saponins, Resins, Volatile oils and Calcium, Mucilage, Starch, Phosphate of lime.

ACTIONS:- Resolvent, Concoctive, Laxative, Cicatrizant.

USED IN:-Renal calculus, Arthritis, Scrofula, Pleurisy, Pneumonia and Bronchitis, Cold and Cough.

प्रचलित नाम- गुलखैरो

प्रयोज्य अंग-पत्र, बीज एवं पुष्प।

स्वरूप- चिरस्थायी विशाल क्षुप, ७०-८० से. मी. ऊँचा, पुष्प बड़े जो लम्बे मजबूत पुष्प विन्यास दंड पर कलगी में गुँथे हुए होते हैं।

स्वाद- श्लेष्मल।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में- एल्कलॉयड्स, सैपोनिन्स, रेसीन्स, उड़नशील तेल एवं कैल्शियम, श्लेष्मल, स्टार्च तथा चूने के फोस्फेट्स पाये जाते हैं।

गुण- विस्थापक, पाचन, मृदुरेचक, व्रणरोपण, शीतल, स्नेहन, कासहर, वेदनास्थापन।

उपयोग- वृक्क अश्मरी, संधिशोथ, गण्डमाल, उरोग्रह, न्यूमोनिया, श्वसनी शोथ, प्रतिश्याय एवं खांसी में लाभकारी। इसके पत्रों एवं बीज को पीसकर शोथ ग्रस्त भाग पर बांधने से लाभ। इसके मूल का शरबत खाँसी, आंत्रशोथ, मूत्राशयशोथ, दाह को शांत करता है। इसके अतिरिक्त आंत में से रक्तस्राव हो तो इसके मूल के शरबत से लाभ होता है। बच्चों की खाँसी के लिये मूल का क्वाथ अतिलाभकारी। इसके पुष्पों का शरबत तथा गुलकंद कफ में लाभकारी।

भारत में इस वनौषधि का उपयोग वैद्यों द्वारा कफ का क्वाथ बनाने में किया जाता है।

मात्रा- बीज चूर्ण- ५-१० ग्राम।

Seeds Powder 5-10 gms.



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तण्डुलीय Amaranthus spinosus Linn. AMARANTHACEAE

24

ENGLISH NAME:- Prickly Amaranthus. Hindi - Kateli Chaulai
PARTS-USED:-Roots and Leaves.
DESCRIPTION:- A small annual, erect herb with reddish much branched stem, axillary spines. Leaves alternate, Ovate, entire. sharp pointed. Flwoers in axillary clusters or terminal spikes.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- Carbohydrates, Proteins, Mineral, Iron, Vitamin-A and Calcium (Leaves.).
ACTIONS:-Cooling, Appitizer, Stomachic, Antidote, Blood puri fier, Antibillious, Diuretic, Galactogogue.
USED IN:- Plant is Anti dote, Anti billious, Antifatigus; useful in Inflammation, Blood impurities, Insanity, Hemorrhagicdisease, Fever, Cough, Diarrhoea; Lucorrhoea, Gonorrhoea, Metrorrhagia.

प्रचलित नाम- चौलाई का शाक/कटैली चवलाई

प्रयोज्य अंग- मूल तथा पत्र

स्वरूप-छोटा, एक वर्षीय, सीधा, क्षुप, काण्ड अतिशाखीत लाल रंग का कोण में कंटक होता है। पत्ते एकान्तर, अण्डाकार, अखण्ड, नोकदार, पुष्प गुच्छ या मंजरियों में होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में कार्बोदित, प्रोटीन्स, खनिज एवं लोह तत्व पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसके पत्रों में विटामिन-ए, कैल्शियम पाया जाता है।

गुण-शीतल, रुचिकर, मूत्रल, दीपन, विषघ्न, रक्तशोधक, पित्त शामक, स्तन्यजनन।

उपयोग-विष, पित्त, श्रम, दाह, रक्त विकार, उन्माद, रक्त पित्त, ज्वर, कास, कफ, अतिसार को नष्ट करता है। रक्त प्रदर, सोजाक, श्वेत प्रदर, चर्मरोगों में इसका प्रयोग लाभकारी। सर्प विष में इसके मूल एवं काली मिर्च को चावल के धेवन में पीसकर पिलाने से लाभ होता है। सभी प्रकार के प्रदर में इसके मूल को पीसकर कर इस कल्क को रसवंती (दारुहरिद्रा का अष्टमांश क्वाथ बनाकर, इतनी ही मात्रा में इसमें बकरी का दूध मिलाकर उबालकर मावा बनाकर कूट कर चूर्ण बना लें) मिलाकर पिलाने से सभी प्रकार के प्रदर का नाश होता है। गर्भ की स्थिरता के लिये- ऋतुचक्र के समय चौलाई के मूल को चावल के धोवन में पीसकर पिलाने से लाभ होता है। विषम ज्वर में इसके मूल को सिर पर बाँधने से यह ज्वर ठीक हो जाता है। गर्भवती एवं प्रसूता के रक्तस्राव में इसके मूल को चावल के धोवन में पीसकर पिलाने से लाभ होता है। बिच्छू विष में इसके पंचांग के स्वरस में मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अर्धावभेदक (आधा शीशी) में इसके पंचांग के कल्क

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा जटामान्सी के कल्क में घी को सिद्ध कर इसका नस्य लाभकारी। उदर रोग में इसके पंचांग के स्वरस का सेवन या इसकी भाजी नित्य खाने से लाभ होता है। अग्निदग्ध व्रण में इसके पंचांग के स्वरस को लगाना चाहिए। सोजाक में चौलाई की जड़ के क्वाथ में यष्ठीमधु एवं अपामार्ग मिलाकर सेवन कराना चाहिए। फोड़े एवं गण्ड आदि शीघ्र पकाने हेतु इसके मूल को जल में घोट कर इसका लेप करना चाहिए। चर्मरोग (दाहयुक्त) इसके पत्तों को पीसकर लेप करने से दाह शान्त होता है। स्तन्य वृद्धि के लिए चौलाई के पंचांग को अरहर की दाल के साथ पकाकर खिलाना चाहिए। रक्तातिसार में (अतिसार में रक्त आता हो) इसके मूल को चावल के धोवन में पीसकर मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए। खाज-खुजली में इसके मूल तथा पत्रों को पीसकर लेप करने से लाभ होता है। रक्तपित्त में (शरीर के किसी भी हिस्से से रक्त बहता हो) इसके पत्रों के स्वरस में मिश्री मिलाकर नित्य सेवन करना चाहिये। शूलयुक्त अर्श, बवासीर, मूत्र में रक्त आता हो, शरीर में दाह अनुभव होता हो- इसके पंचांग को कूटकर इसका क्वाथ बनाकर पिलाने से इन रोगों में लाभ होता है। चौलाई का शाक आहार एवं उत्तम औषधि दोनों ही गुणों वाला है।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

ईश्वर की प्रसन्नता एक ही केन्द्र बिन्दु पर केन्द्रित है, किसने उसके विश्व-उद्यान् को सुन्दर-समुन्नत बनाने के लिए कितना योगदान प्रस्तुत किया है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बैलाडोना लिली Amarryllis beladonna, Linn. Syn: Hippeastrum equestre.AMARRYLLIDACEAE

25

ENGLISH NAME:- Belladonalily.

PARTS-USED:- Bulbs.

HABIT:- Asmall herb with large radical leaves and bulb, Flowers white or Red on Scape.

TASTE:- Poisnous Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bulb Contains: Alkaloids: Bellamarin & Lycopine, Beta-Sitosterol and Tazettine.

ACTIONS: Poisnous.

USED IN:- Bulbs are used as Poultice in Swellings of the neck contusion.

प्रचलित नाम- बेलाडोना लिली

प्रयोज्य अंग-कंद।

स्वरूप- लघु गुल्म, पत्ते लम्बे मूल पत्री पुष्प सफेद या लाल, लम्बे पुष्प विन्यास दंड के ऊपर गुँथे हुए होते हैं।

स्वाद- विषैला, कटु।

रासायनिक संगठन-इसके कंद में- एलकलॉयड्स बेलामरीन एवं लायको पाइन, बीटा-सिटोस्टीरोल एवं टेजेटाइन पाये जाते हैं।

गुण- विषयक।

उपयोग- इसके कंद की पुल्टीस का प्रयोग गर्दन की सूजन एवं नीलांछन पर अतिलाभकारी है।

❀❀❀

बहुत सारे लोग पेड़ों को काटकर बिमार पड़ जाते हैं, उन्हें पता नहीं चलता है कि यह बिमारी उन्हें क्यों आयी है ?

-महावीर स्वामी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बृहदेला Amomum subulatum Roxb. ZINGIBERACEAE

26

ENGLISH NAME:- Cardamon major. Hindi- Doda/Bari Elayachi

PARTS-USED:- Ripe dried Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- Leafy herb like turmeric plant, about 100 to 200 cm. high. With under ground rhizome.

TASTE:-Pungent bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Aroma and Flavour Which Contains: Very little Alpha terpinylaceatate. Ceniol aroma, Flavonoids and essential oils.

ACTIONS: Stimulant, Laxative, Aromatic, Astringent, Stomachic, Digestive Carminative, Appitizer.

USED IN:-Tonic for heart and liver, useful for Headache & Toothache, Decoction of Seeds used as a gargle in affection of Gums and teeth; Also used in Flatulance; Liver pain, Diarrhoea and Dysuria.

प्रचलित नाम- बड़ी इलायची

प्रयोज्य अंग-सूखे पके हुए फल एवं बीज।

स्वरूप-हल्दी के पौधे जैसा पत्रीय गुल्म, जिसकी ऊँचाई औसतन १००-२०० से. मी. इसका भूमिजन्य रहाईज़ोम जमीन में फैला रहता है।

स्वाद- चरपरा- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में सुगंध एवं मधुरगंध जिसमें अल्पमात्रा में एल्फाटर्पीनिलऐसीटेट तथा अधिक मात्रा में सिनियॉल मधुरगंध, फलेवीनोइड्स तथा उड़नशील तेल घटक पाये जाते हैं।

गुण- उत्तेजक, मृदुरेचक, मधुरगंध युक्त, ग्राही, दीपन, पाचन, वातघ्न, रुचिकर।

उपयोग-यकृत एवं हृदयबल्य, शिरोवेदना, दंतशूल में लाभकारी। इसके बीज का क्वाथ दांत तथा मसूड़ों के कष्ट में कुल्ला कराया जाता है। इसका उपयोग आध्मान, यकृत शोथ, अतिसार तथा मूत्र कृच्छ्र में लाभकारी। इसके बीज एवं तरबूज के बीज का संयोजन मूत्रल होने के कारण वृक्क अश्मरी में लाभकारी।

मात्रा- १-३ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूरन कंद Amorphophallus companulatus Blume. ARACEAE

27

ENGLISH NAME:- Wild corm/Vegetable-Cultivated corm. Hindi - Suran

PARTS-USED:-Under ground stem (corm)

DESCRIPTION:- A stout- her baceous with large under ground corm, leaves large 1-3 feet broad, dissected lamina, flowers in spadix.

TASTE:-Acrid- Pungent.

CHEMICALCONSTITUENTS-Corm contains Proteins, fats, Carbohydrates,Minerals, Calcium Oxalate, Phosphorus, Iron and Vitamins A & B.

ACTIONS: Pungent, carminative Stomachic, Digestive, Apitizer, Nutritive Anthelmitntic

USED IN:- Piles, Asthma, Spleenomegally, Flatulance, Rheumatism,Gastric troubles, Colic, Worms, Cough, Vomiting

प्रचलित नाम- जिमी कंद

प्रयोज्य अंग-भूमिजन्य कांड (कृषि कंद)

स्वरूप-एक मजबूत गुल्म, भूमिजन्य कंद विशाल कद का, पत्ते बड़े कद के १-३ फूट चौड़े, खंडित, पुष्प मंजरियों में होते हैं।

स्वाद- तीक्ष्ण कटु।

रासायनिक संगठन- इसके कृषि कंद में प्रोटीन, वसा, कार्बोदित, क्षार, कैलशियम ओक्सेलेट, फोस्फरस, लोह एवं विटामिन ए तथा बी पाये जाते हैं ।

गुण- तीक्ष्ण, वातघ्न, दीपन, पाचन, रुचिकर, पौष्टिक, कृमिघ्न ।

उपयोग- कंद का उपयोग अर्श,श्वास रोग, खाँसी, प्लीहा वृद्धि, आध्मान, आमवात, वायु-विकारों में आंत्रतशूल, कृमिरोग तथा वमन में लाभकारी । आंत विकारों में कंद का शाक बना कर सेवन से लाभ होता है। इसके सेवन से अर्श रोग का नाश होता है, इसी कारण इसका नाम अर्शोघ्न भी है । यकृत क्रिया ठीक करने हेतु एवं प्लीहावृद्धि में कंद के चूर्ण का सेवन लाभकारी। अर्श तथा विबंध में कंद का शाक बना कर सेवन से अर्श की रक्त वाहिनियों का संकोचन होता है। आंव पर कंद को सुखा कर इसका चूर्ण बनाकर, इसको घी में सेकें एवं चीनी मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। कमजोर (अशक्त) के लिए (दर्बुलता में) यह पौष्टिक तृषा शामक, वातहर एवं अर्शोघ्न गुण वाला है। इसकी जाति Amrpho-phallus syvestricus (मदन मस्त)-धातु पौष्टिक, कामशामक तथा अर्शोघ्न है ।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बताड़ (काजूतक) Anacardium occidentale, Linn. ANACARDIACEAE

28

ENGLISH NAME:- Cashewnut Tree. Hindi - Kaju
PARTS-USED:- Root, Bark and Fruit.
DESCRIPTION:- A small evergreen crooked tree 5-12 meter high. Leaves Simple rounded at apex. Flowers in terminal panicle: Nut reni formSeated on a lage pyri form fleshy Thalamus.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Nut Contain: Polysaccharides, (Galactose), Galact uronic acid; Leaves: P-Hydroxybenjoic, Protocatechuic, Gentistic acid, Gallicacid, Glucosides, Rhamnosides, Arabinosides, xylosides, kaempferol, Quercitol, Nutshells, Contain-Cyanidin, Delphinidin, Pelargonidin, Quercetin, Galactosides, Myricetion & Gallic acid. It also contains Vitamin-C in large amount & Carotene in Small amount.
ACTIONS:- Aphrodisiac, Diuretic, Demulcent, Astringent.
USED IN:-Fruits: in haemorrhagic diseases, kidney troubles; is spermato-poitic, Antibacterial, Anti diarrhoeal, Antiscorbutic, Emollient, Nutritious. Bark is applied externally in leprosy and ulcers: Root is purgative. Fruit is also useful in Dropsy, Dyspepsia, Fever, Piles, Sprue.

प्रचलित नाम- काजू बदाम

प्रयोज्य अंग-मूल, छाल तथा फल।

स्वरूप-लघुकद के सदा हरित वृक्ष ५-१२ मीटर ऊँचे, पत्ते सरल, अग्र हिस्सा गोल, पुष्प अग्रस्थ शाखा प्रबंधित पुष्प विन्यास में गुँथे हुए, काष्ठ फल वृक्काकार जो सेब आकार के मांसल पुष्पासन पर लगा होता है।

स्वाद- चरपरा-कटु।

रासायनिक संगठन-इसके फल में- पोलीसैकेराइड्स (गैलेक्टोज), गैलेक्टयुरोनिक अम्ल, इसके पत्रों में पी-हाइड्रोक्सी बेन्जोइक, प्रोटोकेटुचुइक, जेन्टीस्टीक अम्ल, गैलीक अम्ल, ग्लूकोसाइड्स रहामनोसाइड्स, एरेबीनोसाइड्स तथा जायलोसाइड्स किम्फरॉल, क्वेरसिटोल, इसके फलावरण में- सायनीडीन, डेल्फीनीडीन पेलारगोनीडीन, क्वेरसेटीन, गैलेक्टोसाइड्स, मियरीसटीन एवं गैलीक अम्ल इसके अतिरिक्त इसमें विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में, केरोटिन्स अल्प मात्रा में पाये जाते हैं।

गुण- कामदीपन, मूत्रल, शामक, ग्राही।

उपयोग- फल का उपयोग रक्तस्रावी रोगों में, वृक्क अवरोध में होता है। यह औषधि शुक्रवर्धक, कीटाणुघ्न, अतिसार हर, रक्त पित्त रोग नाशक, त्वचा को मृदु बनाने के गुण वाली तथा पौष्टिक है। इसकी छाल का बाह्य प्रयोग कुष्ठरोग तथा व्रण में होता है। इसके मूल अतिरेचक गुण वाले हैं। इसके फल का प्रयोग जलोदर, अग्निमांद्य, ज्वर, अर्श, संग्रहणी में होता है। वर्षा ऋतु में-वर्षा के जल से पैरों की चमड़ी गल जाने पर-काजू के बीज के क्षीर का प्रयोग करने से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकारकरम Anacyclus pyrethrum, D.C. ASTERACEAE (COMPOSITEA)

29

ENGLISH NAME:- Spanish Pellitory. Hindi - Akarkara

PARTS-USED:- Roots, Leaves and Flowers.

DESCRIPTION:- A perennial procumbent herb, leaves compound bipinnatisect; flowers yellow in heads (Capitulum).

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Alkaloids, Protein, Sugars and Volatile Oil, Aluminium, Iron, Potassium, Magnessium, Polyacetylenic Compounds, Pellitorine, Anacyclin, Enetriyne, Hydrocarbolin, lnulin, Sesamin, Tyramineamides.

ACTIONS:- Silagogue, Stimulant, Sedative, Antibacterial Acrid.

USED IN:-Toothache, Paralysis, Rheumatism, Epilepsy and in Sexual disordes in males.

प्रचलित नाम- अकरकरा

प्रयोज्य अंग-मूल, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-चिरस्थायी सीधे किन्तु झुके हुए गुल्म, पत्ते दिपक्षवत् संयुक्त, पुष्प पीले रंग के जो मुंडक में होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में- एलकलॉयड्स, प्रोटीन्स शर्करा तथा उड़नशील तैल, एल्युमिनियम लोह, पोटेशियम, मेग्रेशियम, पोलीएसेटीलिनिक यौगिक, पैलीटोरीन, एनासायकलिन, एनेट्रायीन, हाइड्रो-कार्बोलिनिक, इन्युलिन, सेसामीन, टायरामीनऐमीड्स।

गुण- लाल प्रषेवक, उत्तेजक,निद्राजनक, कीटाणुघ्न।

उपयोगः- दंतशूल, पक्षाघात, आमवात, अपस्मार एवं पुरुषों के लिंग विकारों में प्रयोज्य।

अपस्मार में-इसका चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है।

दंत शूल में- अकरकरा तथा कंट सरैया सम भाग में मिलाकर पीस कर इसको दांत के बीच में रखने से लाभ होता है। इसके मूल का उपयोग टूथपेस्ट बनाने में किया जाता है।

मूत्राश्मरी-अकरकरा, गोक्षुर मूल, तुलसी का रस, पाषाण मेद, एरण्ड का मूल, पिप्पली, मुलैठी, निर्गुण्डी, लौंग, सोंठ इन सबका क्वाथ बनाकर इसमें छोटी इलायची का चूर्ण मिलाकर, सात दिन तक सेवन से बड़ी से बड़ी अश्मरी मूत्र मार्ग द्वारा बाहर निकल जायेगी। अकरकरादि चूर्ण या अमृत प्रभाचूर्ण के उपयोग से मंदाग्नि, अरुचि, खाँसी, श्वासरोग, प्रतिश्याय एवं उन्माद दूर होता है।

अमृत प्रभाचूर्ण-इसके लिये अकर करा, सेंधव नमक, चित्रा, ऑवला, काली मिर्च, पिप्पली, अजवायन, हरड़ इन सबका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक-एक भाग तथा सोंठ दो भाग इन सबको मिलाकर चूर्ण बनाने के पश्चात् इसको विजोरा के रस की भावना देकर चूर्ण या गोली बनाई जाती है।

वैदिक शास्त्र में इसको अमृत प्रभा या अकरकरादि चूर्ण कहते हैं। अकरकरा चूर्ण-इसका बारीक चूर्ण सूंघने से बंद नासिका का स्वर खुलता है। अकरकरा को मधु के साथ चबाने से पक्षाघात एवं आँखों में अंधेरा छाने जैसे रोगों में लाभकारी। फिरंग रोग में- शुद्ध पारद आधा तोला, खदिर सार आधा तोला, अक्करकरा एक तोला, मधु डेढ़ तोला इन सबको मिलाकर इन की सात गोलियाँ बना लो। रोगी को प्रतिदिन एक गोली जल के साथ खाने से लाभ होता है। नमक तथा खट्टे पदार्थ का सेवन वर्जित है। पीनस तथा प्रतिश्याय में-इसके चूर्ण का नस्य लेने से लाभ होता है।

न्युरालजिक शिर:शूल तथा कृमि जन्य दंत रोग में- इसके अर्क (टिंक्चर) के प्रयोग से शूल का प्रशमन होता है। इसको बारीक पीसकर महुए के तेल में मिलाकर मालिश करने से पक्षाघात में लाभ होता है।

श्वित्र रोग में-इसके पत्रों के स्वरस को सफेद दागों पर लगाने से श्वित्र रोग नष्ट होता है।

मात्रा- १/२-१ ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मन के लिये अध्ययन उतना ही जरूरी है, जितना देह के लिये आराम। - एडीसन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्ननास Ananas cosmosus Merr. Ananas sativa Syn. BROMELIACEAE

30

ENGLISH NAME:- Pineapple. Hindi - Annanas

PARTS-USED:-Fruit

DESCRIPTION:- A spiny herb with under ground stem. Leaves are radicle incluster, long with dentate spiny margin. Fruit is composite spiny, large, rough, Red orange from inside.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Fresh fruits are Appitizer, Hear tonic, Antifatigue, Guru, Kapha-Pittakark, Anthelmintic, Laxative; Ripen Fruits are sweet, Antibillious, Rasa-vikar, Diuretic, Digestive.

USED IN:- Worms infestation, Polyuria, Indigestion, unripen fruit is abortifacient, Laxative and Anthelmintic.

प्रचलित नाम- अनानास

प्रयोज्य अंग- फल

स्वरूप-एक कंटकीय क्षुप, भौमिक काण्ड, पत्र बड़े, कांटेदार, गुच्छाकार, पत्र किनारी दन्तुर तथा काँटेदार, फल बड़े जो क्षुप के पत्रों के मध्य से निकलते हैं। समग्र फल खुरदरा तथा कांटेदार, फल अंदर से लाल पीला या नारंगी रंग का होता है।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन-

गुण-ताजेफल, रुचिकर, हृदय, बल्य, श्रमहर, गुरु, कफ पित्तकारक, कृमिघ्न, विरेचक, ग्लानि नाशक पके हुए फल-मधुर, पित्त शामक, रस विकार, मूत्रल, पाचक।

उपयोग-पके हुए फल बहूमूत्र रोग (प्रमेह) अजीर्णता में लाभकारी। जबकि कच्चे फल कृमिघ्न, गर्भपात, मृदुरेचक होते हैं। अजीर्णता में-अच्छी तरह से पके हुए फल के महीन टुकड़े कर उन पर काली मिर्च तथा सैन्धव नमक छाँट कर खाने से लाभ होता है। कृमिरोग में केवल अनानास के फल का सेवन करने से कृमि नष्ट होकर निकल जाते हैं। या इसके पत्तों के स्वरस को सेवन करने से उदर कृमि नष्ट होते हैं। प्रमेह (बहूमूत्र रोग) में पके हुए फल का छिलका एवं मध्य कठिन हिस्सा निकाल कर बाकी के बचे हुए हिस्से का रस निकाल कर उसमें जीरा, जायफल, लेण्डी पीपल तथा काला नमक मिलाकर सेवन करने से या अनानास के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लेण्डीपीपल का चूर्ण डालकर सेवन करने से लाभ होता है।

उदरशूल में पके हुए फल का रस एक तोला, इसमें अदरख का रस दो तोला सैन्धव नमक दो गुंजा एवं भुनी हुई हींग एक गुंजा मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। उदर में बाल गया हो तो पका हुआ अनानास

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाने से, उदर में बाल के कारण होने वाला शूल ठीक हो जाता है। अनानास फल का मध्य भाग निकाल देना चाहिए क्योंकि यह अवगुण कारक होता है फिर यदि किसी कारण से खाने में आ गया हो तो प्याज, दही तथा मिश्री का सेवन कर लेना चाहिए। खाली पेट या भूख लगी हो तब अनानास का सेवन नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार गर्भवती महिला के लिये अनानास का सेवन वर्जित होता है। इसके पके हुए फल का सेवन सूर्य की गरमी के कारण होने वाले दोष को नष्ट करता है। अनार्त्तव में इसके कच्चे फल का रस एक तोला तथा इसमें पीपल (अश्वथ) की छाल का चूर्ण एक माशा एवं गुड़ एक माशा मिलाकर खिलाने से महिला का मासिक धर्म ठीक आने लगता है। धातु क्षीणता में अनानास के पके फल का एक तोला रस में त्रिफला, मुलैठी, गिलोय, सफेद मूसली, नागकेसर, विदारी कंद एवं सालमपंजा (सम मात्रा में) लेकर इनका चूर्ण बना लें, इसके पश्चात् इसमें घी तथा मधु मिलाकर प्रति दिन सेवन कराना चाहिए । यह प्रयोग लाभकारी है।

मात्रा-पत्र स्वरस- एक से दो तोला।

फल का स्वरस-दो से पाँच तोला।



तुम लोग ज्यादा से ज्यादा दरख्त लगाओ और जब मनुष्य इनसे फल खायेंगे या जानवर चारा चरेंगे तो तुमको उतना ही पुण्य मिलेगा, जितना तुमको फल या चारा खिलाकर मिलता है। - हजरत मुहम्मद

प्रसन्नता वसंत की तरह है, जिसके आगमन पर हृदय की कलियाँ खिले-फूल की तरह हँस पड़ती हैं। - पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूनिम्ब Andrographis paniculata, Nees. ACANTHACEAE

31

ENGLISH NAME:- The Creat. Hindi - Kalmegh

PARTS-USED:- Whole Plant, Leaves and Roots.

DESCRIPTION:- An erect -branched, annual herb with Square stem, opposite leaves, flowers white with purple dots on corolla.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Kalmeghin, Andrographolid Tannicacid, Sodium and Potassium.

ACTIONS: Hepatic stimulant Cholagogue, Antiperiodic, Antileprotic, Stomachic, Digestion, Nutritive.

USED IN:-Hepatomegally, Anorexia, Malaria, Oedema, Skindiseases Blood Purifier.

प्रचलित नाम- कालमेघ

प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र एवं मूल।

स्वरूप- एक वर्षायु उन्नत शाखीत गुल्म, कांड चतुष्कोणक, पत्ते अभिमुखी, पुष्प श्वेत, पंखुड़ियों के ऊपर बैंगनी रंग के धब्बे होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में कालमेघिन, एन्ड्रोग्राफोलिड, टैनिक अम्ल, सोडियम एवं पोटेशियम घटक पाये जाते हैं।

गुण- यकृत्तेजक, पित्तसारक, नियत कालिक, ज्वर प्रतिबंधक, कुष्ठघ्न, दीपन, पाचन, पौष्टिक।

उपयोग- यकृतवृद्धि में, अरोचकता, विषम ज्वर, शोथ, चर्मरोगों में एवं रक्त शोधन में। आमवात एवं जीर्ण ज्वर में- इसका पंचांग तीन ग्राम २५ मि.ली. जल में रात को भिगोकर, प्रात: कपड़े से उसे छानकर उसमें दो मि. ग्रा. कपूर, दो मि. ग्रा. शिलाजीत, पाँच ग्राम मधु के साथ मिलाकर सात दिन तक सेवन से लाभ होता है। अम्लपित में- इसका पंचांग एवं भांग को मिलाकर इसका क्वाथ मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। उदरशूल एवं अजीर्णता में-इसके ताजे पत्रों का रस जिसमें काली मिर्च, सैंधव नमक तथा थोड़ी हींग मिलाकर प्रतिदिन दो बार सेवन से लाभ होता है। कालमेघ नवायस नाम के योग का उल्लेख 'सिद्धयोग संग्रह' (जादव जीत्रि आचार्य रचित) इसका प्रयोग बच्चों के पाण्डुरोग, जीर्णज्वर, यकृत रोगों में अत्यंत लाभकारी। कालमेघ नवायस-शुण्ठी, काली मिर्च, पिप्पली, हरड़, बहेड़, आँवला, नागरमोथा, बायविडंग तथा चित्रक-इन नव द्रव्यों को सम भाग में लेकर इसमें सबके समान लोह भस्म मिलाने से यह नवायस बनता है। इस नवायस के समभाग में कालमेघ पंचांग का चूर्ण मिला दो। इसको कालमेघ के पत्रों के रस की सात भावनाएँ देने के पश्चात यह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कालमेघ नवायस तैयार होता है। इस औषधि का प्रयोग ३ से ६ रत्ती की मात्रा में बच्चों को मधु के साथ चटाना चाहिये या दूध के साथ पिलाना चाहिये। इससे-जीर्ण विषम ज्वर, आशक्ति, कुपचन के कारण होने वाले अतिसार तथा यकृत वृद्धि में (लिवर सोरोसीज़) में लाभ होता है। कालमेघ के पत्रों का रस थोड़ी काली मिर्च के साथ देने से ज्वर उतर जाता है एवं कृमियों का नाश होता है। काल मेघ नवायस का प्रयोग पाण्डुरोग में भी अतिलाभकारी।

मात्रा- स्वरस-एक छोटा चम्मच।
चूर्ण-एक से तीन मि. ग्राम।
क्वाथ- दो से चार तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विचारों के युद्ध में किताबें ही अस्त्र होती हैं।
- वर्नाडशन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीता फल Annona squamosa Linn. ANNONACEAE

32

ENGLISH NAME:- Custard Apple Tree. Hindi - Sitaphal
PARTS-USED:- Roots, Leaves, Fruit and Seeds.
DESCRIPTION:- A Small tree with Cauliflorous condition, growing wild, flowers greenish leaves oblanceolate, glabrous pale or white with fleshypetals, fruits greenish-yellow a confluent of fleshy carpels.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Anonaine, Roemerine, Corydine, Narcorydine, Norlaureline, Isocorydine, Norico corydine, Gloucine, Friedelin, Alkaloids, Essential Oils, Volatile Oil, Carvone, Michelabine, Liriodedine, Diazepine, Squamolone, Beta-Caryophylline, Beta-Sitosterol, Camphor, Bormeol.
ACTIONS: Fruits: Anticancer, Stimulant, Laxative, Cardio tonic, Pesticidal (Seeds).
USED IN:-Leves and Fruits: Used against cancer and Tumour, Spasmogenic, Juice is useful in wounds (Anti septic), Paste of Leaves: applied on ulcers, Leaves, Fruit and Root: Used in Cold, Rheumatism, Fever, Syphilis Carbuncle, Seeds: Pesticidal against bed bug: Fruit is useful in burning sensation.

प्रचलित नाम- शरीफा

प्रयोज्य अंग-मूल, पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप-लघु वृक्ष, पुष्प काष्टीय शाखाओं पर उत्पन्न होते हैं, जंगल में प्राकृतिक रूप से उगते हुए पाये जाते हैं। पुष्प हरित-श्वेत, पंखुड़ियाँ मांसल, फल हरे-पीले समूह में होते हैं।

स्वाद- मधुर।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में- एनोनन, रॉमेरीन, कोरीडीन, नारकोरीडीन, नॉरलॉरेलीन, आइसोकोरीडीन, नॉरीकोकोरीडीन, ग्लॉसीन, फ्रेडेलीन, एलकॉलोइड्स, उत्पत्ततेल, उड़नशील तेल, कारवॉन, माईकेलाबीन, लिरियोडडीन, डायजेपीन, स्क्वेमोलॉन, बीटा - कैरियाफायलीन बीटा-सिटोस्टीरॉल, कम्फर एवं बोरमिऑल घटक पाये जाते हैं।

गुण- फल दुष्टार्बुद नाशक, उत्तेजक, मृदुरेचक, हृद्यक, कीटनाशक (बीज)

उपयोग- पत्र एवं फल का उपयोग-दुष्टार्बुद तथा अर्बुद चिकित्सा में होता है, उद्वेष्टक, पत्रों के स्वरस का उपयोग व्रण में (पूतिरोधी), पत्रों के पेस्ट का प्रयोग भी व्रण में किया जाता है। पत्र, फल तथा मूल का उपयोग प्रतिश्याय, आमवात, ज्वर, सिफिलिस पीड़ीका में। इसके बीज कीटनाशक (खटमल नाश करने हेतु) एवं गर्भपातक है। दाह एवं रक्त पित्त में फल का प्रयोग लाभकारी। इसके बीज एवं पत्र को पीसकर जूँ मारने के लिए लगाते हैं। पत्रों का लेप फोड़ों पर लगाते हैं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कदम्ब Syn: Anthocephalus Chinensis (Lamk.) A Indicus A-Rich. Anthocephalus cadamba Miq. RUBIACEAE

33

ENGLISH NAME:- Kadamba. Hindi - Kadam
PARTS-USED:-Roots, Stembark, Leaves, Flowers and Fruits.
DESCRIPTION:- A large tree leaves opposite and stipul, flowers fragrant in globose heads pairs 3-4 cm in diam globose, pulpy, edible
Taste:-Bitter- Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Alkaloids (Kadambine and 3-alphadihydrocadambine); Glycosides alkaloids (Iso-Dihydrocadambine & Beta Sitosterol); Root and Stembark Contain: Quinovic acid, Pentacyclic triterpenic acid, Cadambagenic acid, Quinoric acid, Saponin; Flowers: Essential oils.
Actions:- Tonic, Astringent, Febrifuge, Anti-inflammatory, Stomachic, Digestive, Wound healing.
USED IN:- Snakebite, Cardiac depressent, depres sant effect on spinal reflex, is hypotensive, Antipyretic, Antidiuretic, Antibacterial Anti-abortifacient, Anticalculii, improve Complexion.

प्रचलित नाम- कदम

प्रयोज्य अंग-मूल, कांड की छाल, पत्र, पुष्प तथा फल।

स्वरूप-विशाल कद के वृक्ष, पत्ते अभिमुखी तथा उपपत्र युक्त, पुष्प सुगंधित, गोल मुंडक में होते हैं।

स्वाद- तिक्त कषाय।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में- एल्कालॉयड्स (कदाम्बाई न.-३ अल्फा-डीहाइड्रोकदम्बीन), ग्लायकोसीड्स एल्कलॉयड्स (आइसो- डीहाइड्रोकदम्बीन एवं बीटा-सिटोस्टीरॉल), इसके मूल एवं कांड की छाल में क्वीनोविक अम्ल, पेन्टासायक्लीक, ट्रायटर्पेनिक अम्ल, कदम्बाजेनिक अम्ल, क्वीनॉरिक अम्ल, सेपोनिन, इसके पुष्प में उत्पत्ततेल घटक पाये जाते हैं।

गुण- बल्य, ग्राही, ज्वरघ्न, शोथहर, दीपन, पाचन, व्रणरोपण।

उपयोग- सर्पदंश, हृदय अवसाद, नाड़ी स्तंभ के परावर्तिक अवसाद के प्रभाव में, यह औषधि दाब ह्रासी, ज्वरघ्न, मूत्रस्तंभन, कीटाणुघ्न, गर्भपातक, अश्मरी नाशक एवं वर्णय। इसकी छाल का रस जीरा एवं मिश्री के साथ बच्चों के ज्वर, वमन एवं अतिसार में लाभकारी।

नेत्राभिष्यंद में इसका रस पलकों पर लगाते हैं। इसकी छाल का रस, इसमें अफीम एवं फिटकिरी मिला कर इसको नींबू के रस में घोट कर गरम कर पलकों पर लगाने से लाभ होता है। मुखगत व्रण में- इसकी छाल के क्वाथ का कुल्ला (दिन में तीन से चार बार) करने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अजमोत/अजमोदा Apium graveolens. Linn. UMBELLIFERAE

34

ENGLISH NAME:- Celery fruits. Hindi - Ajwain

PARTS-USED:-Roots and Fruits.

DESCRIPTION:- An annual herb, about 2-3 feet high leaves are deeply dissected, Flowers White in small umbels, Fruits ovals and yellow.

TASTE:-Aromatic-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: AVolatile oil of light yellow colour, Which Contains. Sulphur, Apoil (Poisnous Substans, Glucoside (Apiin) Albumin, Gum, Minerals.

ACTIONS:-Bitter, Stomachic, Astringent, Tonic, Aromatic, Digestive, Carminative, Stimulant, Diuretic, Anthelmintic, Uterine contraction.

USED IN:- Rheumatism Abdominal pain, Flatulance, Vomiting, Indigestion; Toothache, Worms infestation, Urinetrouble, Bronchitis, Asthma, Calculii, Liver and Spleen trouble.

प्रचलित नाम- बड़ी अजवायन

प्रयोज्य अंग- मूल एवं फल

स्वरूप-एक वर्षायु गुल्म, २-३ फूट ऊँचा; पत्ते गहराई तक कटे हुए, पुष्प सफेद छोटे-छोटे छत्रों में, फल अंडाकार पीत वर्णी।

स्वाद-सुगंधित-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें एक उड़नशील तेल हल्के पीले रंग का इसमें गंधक, एपोइल (विषैला पदार्थ) ग्लूकोसाइड (एपीन) एल्ब्युमिन, गोंद तथा क्षार पाये जाते हैं।

गुण-तिक्तरस युक्त, दीपन, ग्राही, बल्य, सुगंधित, पाचक, वातानुलोमक, उत्तेजक, मूत्रल, कृमिघ्न तथा योनि संकोचन।

उपयोग- आमवात, उदरशूल, आध्मान, वमन, कुपचन, दंतशूल, कृमिरोग, मूत्ररोग, श्वसनी शोथ, श्वासरोग, अश्मरी, यकृत तथा प्लीहा रोगों में इस का प्रयोग लाभकारी। बड़ी अजवायन का तेल-इसका प्रयोग आमवात एवं संधिशोथ में लाभकारी। मूल का प्रयोग-यह मूत्रल एवं रसायन गुण के कारण सर्वांग शोथ एवं शूल में लाभकारी। मस्तिष्क एवं वात नाड़ियों में-इसके मूल की कोफी का सेवन बलकारी एवं लाभकारी। जीर्णज्वर, जुकाम एवं शरीर में ठंड लगने में बड़ी अजवायन चार माशा नित्य प्रातः एवं सायं ठंडे जल के साथ सेवन से लाभकारी। गर्भवती महिलाओं में जठराग्नि प्रदीप्त करने के लिये, बड़ी अजवायन, सोंठ, लौंडी पीपर एवं जीरा इन सबका चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। अर्श में-इसकी पोटली बनाकर सेक करने से लाभ होता है। उदररोग तथा उदर शूल में-उष्ण जल के साथ थोड़ा सा सैन्धव लवण मिलाकर इसके फलों के बीज का सेवन करना चाहिए। यह स्नायु शैथिल्यकर होने के कारण श्वसनी शोथ तथा श्वासरोग में लाभकारी।

मात्रा-फल का चूर्ण-१-४ ग्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्मणा (जिन्सेंग) Aralia nudicaulis Linn. ARALIACEAE

35

ENGLISH NAME:- Ginseng

PARTS-USED:- Roots, Whole plant.

HABIT:- A Small undershrub with variegated leaves.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Pimara-8 Oic acid Nonane, Petroselinic acid, Araloside A&B, Stigma-sterol and Beta sitosterol.

ACTIONS: Bitter and Aromatic, Expectorant.

USED IN:-It exhibit-anti-inflammatory activities, Root of this plant is very effective medicine, The leaves Which are having human like impression on lamina is equal to Ginseng of china which is Cansidered to give a son.

प्रचलित नाम- जिन्सेंग
प्रयोज्य अंग- मूल एवं पंचांग।
स्वरूप-लघु उपक्षुप, पत्र भिन्न वर्णी।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में पिमारा-८, ओइक अम्ल, नेनॉन, पेट्रोसेलीनीक अम्ल, एरेलोसाइड ए एवं बी, स्टीग्मान्स्टीरॉल एवं बीटा सिटोस्टीरॉल पाये जाते हैं।

गुण- तिक्त एवं सुगंधित, कफ नि:सारक।
उपयोग- यह वनस्पति शोथहर प्रक्रिया दर्शाती है, इसके मूल को अत्यंत प्रभावशाली औषधि मानते हैं। इसके पत्रों पर मानवाकृति सदृश्य चिह्न होते हैं। यह रोग निवारक एवं जराव्याधि नाशक है, यह औषधि चीन की जिनसेन्ग औषधि के समकक्ष है एवं पुत्र देने वाली बताया गया है।

❀❀❀

अच्छी से अच्छी उम्मीदें करो, किन्तु बुरी से बुरी परिस्थितियों के लिये भी तैयार रहो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूगीफल Areca catechu Linn. PALMAE

36

ENGLISH NAME:- Betal Nut Palm. Hindi - Supari

PARTS-USED:- Root, Leaves, Seed.

DESCRIPTION:- A Slender tallpalm tree, 40-60 feet high, flowers in largespadix.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Aflatoxins-B and G_1 Several alkaloids (Aracaidine, Arecoline, Guvacine, Isoguvacine), Phosphorus, Iron and many other Salts.

ACTIONS: Antimicrobe, Antifertility; Cooling, Astringent, Anthelmintic Stimulant.

USED IN:-Diarrhoea, Urine disorder, Smallpox, Veneral sores, Cholera, Syphilis, Dysentery, Fractured bone.

प्रचलित नाम- सुपारी।

प्रयोज्य अंग-मूल, पत्र एवं बीज।

स्वरूप- लम्बा पतला पाम जैसा वृक्ष, ४०-६० फीट ऊँचा, पुष्प बड़ी काष्ठीय मंजरियों में होते हैं।

स्वाद- कटु

रासायनिक संगठन-इसके बीज में एफलाटोक्सीन्स बी एवं जी-१, अनेक एल्कलॉयड्स (एरेकॅडाइन, एरेकॉलाईन, गुवासीन एवं आईसो गुवासीन), फोस्फरस, लोह एवं अन्य अनेक क्षार पाये जाते हैं।

गुण-जीवाणुघ्न, गर्भरोधी, शीतल, ग्राही, कृमिघ्न, उत्तेजक।

उपयोग- अतिसार, मूत्रविकार, चेचक रोग, मैथुनी अंगों के छालों, विसूचिका, सुजाक, प्रवाहिका तथा अस्थिभग्न में। सुपारी को जलाकर इसके चूर्ण का प्रयोग दंतमंजन में किया जाता है। कच्ची सुपारी को दूध में पीसकर सेवन से फीताकृमि नष्ट होते हैं। सुपारी के चूर्ण के सेवन से रक्त मिश्रित आंव में लाभ। सुपारी को हमेशा चबाने से कैन्सर होने की संभावना है।

आमवात में सुपारी के टुकड़े रात भर जल में भिगोकर रखे रहने के पश्चात् प्रातः पीसकर इसमें पुरानी इमली का मोटा कल्क मिलाकर सेवन करना चाहिए तथा इसके ऊपर गुनगुना जल पीने से रेचन होकर आमवात में लाभ होता है। शिरःशूल (माइग्रेइन) आधी सुपारी को जल में घिसकर इसका लेप करना चाहिए। खाज-खुजली में-सूखी सुपारी की ऊपर की छाल (शुष्क फलावरण) को जलाकर, इसकी काली राख को तिल के तेल में अच्छी तरह घोट कर, रोग ग्रस्त अंग पर इसका लेप करना चाहिए। कंठमाल-चिकनी सुपारी इमली की गुठली एवं गुग्गुल इन सबको गरम जल में घिसकर इसका लेप करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटुपर्णी (सुवर्णक्षीरी) Argemone maxicana Linn. PAPAVARACEAE

37

ENGLISH NAME:- Mexican Poppy/ Prickly poppy. Hindi - Satyanashi
PARTS-USED:- Roots and Yellowlatex.
DESCRIPTION:- A Prickly herbwith spreading branches and yellow sap. leaves Spiny & Variegated; Flowers-Yellow. Spine ending, amplexicaule, lobect
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contain:-Berberine, Protopine nitrate, Fatty acids, Ceryl alcohol, Allocryptopine; Flowers Cantain: Tannin, Resin and Argemone oil; Root Cantain: Betasitosterol, Leaves Cantain: Glucosides, Kampferin, Anthraquinone, Essential oil & Chrysophanic acid; Seeds Contain: Tasteless. oil of Darkbrowncoluor and Carbohydrates, Albumin, Phosphate & Sulphate.
ACTIONS: Expectorent Anthelmintic, Laxative, Demulcent, Antileprotic, Anti-inflammatory, Rejuvinator.
USED IN:-Latex-yellow used in Jaundice, skin affection, Malaria, applied externally to stopbleeding from cuts and wounds; Root's juice mixed with peppar is given to children for the disease of supposed to be caused by cats, in woud healing, Leprosy, Blood purifier.

प्रचलित नाम-पीलाधतूरा/ सत्यानाशी
प्रयोज्य अंग-मूल एवं पीतक्षीर।
स्वरूप-कंटकी गुल्म, फैली हुई शाखाएँ, पत्ते कंटकयुक्त एवं भिन्न वर्णी; पुष्प पीतवर्णी।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन-इसके मूल में- बर्बेरिन, प्रोटापाइन नाईट्रेट, वसा अम्ल, सेरिल एल्कोहल एलोक्रिप्टोपाईन, इसके पुष्पों में टैनिन, रेसीन एवं आर्जीमोन तेल, इसके मूल में बीटासिटोस्टीरॉल, इसके पत्रों में ग्लुकोसाइड्स, केम्फेरीन, एन्थराक्वीनॉन, उत्पततेल एवं क्राइसाफेनीक अम्ल, इसके बीज में स्वादहीन गहरे बदामीरंग का तेल एवं कार्बोदित, एल्युमिनियम, फोस्फेट एवं सल्फेट घटक पाये जाते हैं।
गुण- कफ नि:सारक, कृमिघ्न, मृदुरेचक, शामक, कुष्ठघ्न, शोथहर, रसायन।
उपयोग- पीतक्षीर-कामला, त्वक् रोग एवं विषम ज्वर में लाभकारी। इसका बाह्य प्रयोग अंग एवं व्रण से बहते रक्त को बंद करने में किया जाता है। मूल का स्वरस कालीमिर्च के साथ मिलाकर बच्चों के बिल्ली काटने से होने वाले रोग पर लाभकारी, व्रण रोपण में, कुष्ठ रोग में एवं रक्तशोधन में लाभकारी। रेचन के लिये-इसके मूल का चूर्ण गरम जल के साथ (शक्ति अनुसार) सेवन करना चाहिये। नपुंसकता दूर करने के लिये-कटुपर्णी की एक माशा छाल तथा बरगद का दुग्ध क्षीर दोनों को गरम कर, चने के बराबर गोली बनाकर १४ दिन तक पान के साथ सेवन करने से नपुंसकता दूर होती है। सुवर्णक्षीरी तेल- इसके ७५० ग्राम बीज उबलते हुए जल में डालने पर कुछ समय पश्चात् जल को ठंडा होने दो, जिससे बीज का तेल जल पर तैरने लगेगा, रुई के फाहे द्वारा इस तैरते हुए तेल को इकट्ठा कर एक छोटी सी शीशी में भर लेना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। इस तेल का प्रयोग-खाज-खुजली में-प्रतिदिन स्नान से पहले किया जा सकता है। नेत्र रोग में-सुवर्णक्षीरी का क्षार एक माशा, पाँच तोला गुलाब जल में मिलाकर, प्रतिदिन दो बार दो-दो बूंद नेत्रों में डालने से-नेत्र शोथ नेत्रों की लाली धुँध, जाली तथा नेत्रफूली दूर होकर नेत्रों को लाभ होता है। इसके अतिरिक्त इसके पत्रों का स्वरस नेत्रों में डालने से उपुर्यक्त नेत्ररोगों में लाभ होता है। श्वास रोग तथा कास में-इसके मूल का चूर्ण आधा से एक ग्राम उष्ण जल या दूध के साथ पिलाने से कफ बाहर निकल जाता है। या चार से पाँच बूँद पीतक्षीर को बतासे पर डालकर सेवन कराने से लाभ। नेत्र रोगों में-इसके पीतक्षीर को शीशे के बर्तन में डालकर इस रस से दो गुना गाय का घी मिलाकर अच्छी तरह घोंटना चाहिए। नेत्रों में इसका अंजन करने से अनेक नेत्र रोग दूर हो जाते हैं। दद्रु रोग में-इसके स्वरस का प्रयोग रोग ग्रस्त भाग पर करने से लाभ होता है। जलोदर में-इसका स्वरस पिलाने से मूत्र खुल कर आता है तथा संग्रहित जल निकल जाता है। उत्तम रक्त शोधक-इसके पंचांग का स्वरस एक भाग, दो भाग मधु में मिलाकर एक तार की चासनी कर बोतल में भर लेना चाहिये। इसमें से एक तोला लेकर, दो तोला जल में मिलाकर पिलाने से सर्व प्रकार के रक्त विकार मिट जाते हैं। चर्म रोगों पर (छाले, फोड़े, फुन्सी, विस्फोटक, खुजली, दाह, फिरंग, उपदंश)-पंचांग का रस या पीतक्षीर को रोग ग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। कफ प्रकोप सहित श्वास रोग में-इसके पत्रों के रस के रस क्रिया (घन) बनाकर इसमें बेन्झेइक एसिड समभाग मिलाकर चने के बराबर बनाकर श्वासरोगी को खिलाने से लाभ होता है। इयोसीनोफिलिया नाम का श्वास रोग हुआ हो, जिसमें रक्त में श्वेत कणों की मात्रा बढ गयी हो एवं श्वासरोग जैसे ही चिह्न दिखाई देते हैं, इसका प्रयोग करने से इस रोग में लाभ होता है। फिरंग रोग (सिफिलिस)-कटुपर्णी के पंचांग का रस निकालकर, इसमें से आधा तोला लेकर एक मि. ली. दूध में मिलाकर पिलाना चाहिए। इसके छालों पर कटपुर्णी का क्षीर भी लगाना चाहिये। कुष्ठ रोग (लप्रेसी)-इसके स्वरस में थोड़ा नमक छांट कर सेवन से (कुछ लम्बे समय तक) लाभ होता है। प्रतिदिन आधा से एक तोला ताजे रस का सेवन लाभकारी होता है यह प्रयोग चालू रखना चाहिए। खाज-खुजली में-कटुपर्णी का क्षीर लगाने से लाभ होता है। या इसके पत्रों के रस को तेल में पका कर (१०० मि.ली. रस को ४०० मि.ली. सरसों का तेल) इस पके हुए तेल का प्रयोग लाभकारी है। पीतक्षीर का प्रयोग पीलिया तथा विषम ज्वर में लाभकारी। पुराने व्रण एवं खुजली में लगाने से लाभ होता है।

❀❀❀

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

38

ENGLISH NAME:- Elephant Creeper. Hindi - Bidhara
PARTS-USED:- Whole plant, Root, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- Extensive climber all parts Covered with tomentum of softsilkyhairs; leaves broadly. ovate cordate upper surface smooth, lower surface covered with soft silky hairs; fls-rose purple fruit globose on persistant calyse, apiculate.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Arginine, Lycine, Valine, Behenic acid, Linolicacid Linolenicacid, oleicacid, Palmitic and Stearic acid, Argoclavine, Clanoclavine-I & II Elymoclavine, Ergine, Isoergine, Ergometrine, Fastuclavine, Iso-Setoclavine and Setoclavine, Lysergine, Lysergol, Lysergicacid, Caffeic acid, Anthocyanin, Coumarin, Flavonoids, Quercetine, Kaempferol and Beta-Sitosterol.
ACTIONS: Rejuvenator, Tonic, Aphrodisiac, Diuretic, Nervine tonic, Anti-inflammatory. It is also Hypotensive, Spasmolytic, Emolient, Rubifacient. Emalient, digestive aperient, carminative.
USED IN:-Oedema, Rheumatoid arthritis, Cough, Fever, Gonorrhoea, Chronic ulcers, Externally applied to Eczema, Ringworm and other skin diseases and wounds.

प्रचलित नाम- वधारा/घावपत्ता

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पत्र एवं बीज।

स्वरूप-घनी विशाल लता, सभी अंग मृदुरोम द्वारा आच्छादित, पत्ते हृदयाकार जिनकी ऊपरी सतह चिकनी जबकि निचली सतह मृदुरोम द्वारा आच्छादित। पुष्प सफेद (बाहर से) भीतर से गुलाबी या जामूनी रंग के होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में आर्जीनाइन, लायसिन, वॅलीन, बेहनीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, लिनोलेनिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामीटिक एवं स्टीयरिक अम्ल, आरगोक्लेविन, क्लैनॉक्लेविन-डु × डुडु एलिमोक्लेविन, एरजीन, आइसोएरजीन, अर्गोमेट्रिन, फेस्टुक्लेविन, आइसो-सिटोक्लेविन एवं सिटोक्लेविन, लायसारजिन, लायसरगोल, लायसरजीक अम्ल, कैफिक अम्ल, ऐन्थोसायनिन, कॉमेरिन, फ्लेवोनोइड्स, क्वेरसेटिन, किम्फेरॉल एवं बीटा-सिटोस्टीरॉल घटक पाये जाते हैं।

गुण-रसायन, बल्य, बाजीकरक, मूत्रल, मेध्य, शोथहर।

उपयोग- शोथ, आमवात, संधिशोथ, कास, ज्वर, अपसर्गिकामेह, जीर्णव्रण में लाभकारी। इसका बाह्य प्रयोग कण्डु, दाद तथा अन्य चर्मरोगों में किया जाता है। यह औषधि दाबह्रासी, उद्वेष्टहर, स्नेहन, रक्तोल्कलेशक (जिन द्रव्यों का लेप त्वचा पर करने से लाल हो जाय)। इसके मूल को ३-६ माशा देने से दस्त साफ होता है एवं यह एक पौष्टिक औषधि है। इसके मूल के सेवन से आमवात एवं वात विकारों में लाभ होता है। इसके पत्रों को गरम कर संधिशोथ भाग पर बांधने से लाभ होता है। व्रणशोथ में भी पत्रों को गरम कर बांधने से लाभ होता है। पंचांग का चूर्ण एवं अश्वगंधा का चूर्ण समभाग (३माशा) दूध के साथ सेवन से श्वेत प्रदर में लाभ होता है। गण्ड या गेंगरीन पर पत्र की रोमश सतह वाला हिस्सा बांधना चाहिये, किन्तु गण्ड फूटने के लिये रोमश रहित सतह वाला हिस्सा बाँधना चाहिये।

मात्रा-चूर्ण-३-६ ग्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरी/गंधनाकुली /अर्कमूल Aristolochia indica Linn. ARISTOLOCHIACEAE

39

ENGLISH NAME:- Indian birthwort. Hindi - Antamool

PARTS-USED:- Whole plant.

DESCRIPTION:-A Woody climber, branches cylindrical striated and aromatic. Leaves cordate green, flowers green. Capsule basket shaped; seeds winged.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Three bases of Aristolochine, Nitrogenous acids (Aristinic acid, Aristidinic acid and Aristolicacid). Volatile Oil which. perhaps contains Borneol, Resin, Tannin & Starch.

ACTIONS: Tonic, Stimulant, Ebolic, Anti pyretic, Analgesic & Antidote, purgative, anthet mintic, stomachic, cardiotonic, anti-inflammatory, sudorefic.

USED IN:-Fever, Rheumatism, Arthritis and Ascities; In Small amount stimulant to stomach but poisnous when it is used in large amount, flatulence strangary, ameno, rrhoea, catarrh.

प्रचलित नाम- ईशर मूल/रुद्रजटा।

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-काष्टीय लता, शाखाएँ नलाकार धारदार एवं सुगंधित; पत्ते हृदयाकार एवं हरे रंग के, पुष्प बतख आकार एवं हरित वर्णी होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में- एरिस्टोलॉकिन के तीन क्षार, तीन भूयात्य अम्ल (एरीस्टीनिक, एरीस्टीडीनिक एवं एरिस्टोलिक अम्ल) इसके अतिरिक्त उड़नशील तेल जिसमें संभवत: बोर्नीऑल पाया जाता है। राल, टैनिन एवं स्टार्च घटक भी पाये जाते हैं।

गुण- बल्य, उत्तेजक, गर्भाशय संकोचक, ज्वरहर, शूलहर एवं विषहर।

उपयोग- ज्वर, आमवात, संधिशोथ एवं कोष्ठ अल्पमात्रा में आमाशय उत्तेजक, अधिक मात्रा में प्रयोग विषैला है। चूर्ण का प्रयोग ज्वर एवं संधिशोथ में अत्यंत लाभकारी। श्वित्र में पंचांग का रस मधु में मिलाकर लगाया जाता है। पत्रों के रस का प्रयोग सर्पविष में काली मिर्च के साथ सेवन से लाभ होता है।

पत्रों का उदर पर लेप बच्चों के विबंध में लाभकारी। ईश्वरी की एक अन्य वनौषधि जो कीड़ामार नाम से जानी जाती है। जो वर्षा ऋतु में उगती है, जो लघु क्षुप होने के साथ-साथ जमीन पर फैली रहती है, पत्र गोल हल्के हरे रंग के (धुँआ लगा हो ऐसे हरे रंग के) पुष्प बैंगनी रंग के होते हैं। यह वनौषधि तिक्त, उष्णवीर्य, शोथघ्नी, कृमिघ्न, कासहर, विषघ्न, रुचिकर (स्वयं अरोचक किन्तु गुण में रुचिकर), वात, कफ तथा ज्वर नाशक। यह वनौषधि लोगों में बहुत ही प्रचलित है। ताजी अवस्था में इसका प्रयोग अति गुणकारी है। यह गर्भाशय को उत्तेजित करती है, इसलिये गर्भवती महिलाओं के लिये इसका प्रयोग वर्जित है, किन्तु जिन स्त्रियों को अनार्त्तव शूल होता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो, मलावरोध होता है, ऐसे समय इसके पंचांग का सेवन कराने से अच्छा लाभ होता है। कीड़ा मार के पत्रों पर एरण्ड का तेल लगाकर थोड़ा गरम कर बच्चों की नाभि पर बाँधने से दस्त होकर पेट साफ हो जाता है। उदरशूल के कारण शिशु रोता हो, तो भी शांत हो जाता है।

कृमिरोग में इसके पत्रों का रस प्रतिदिन आधा चम्मच सेवन कराने से कृमि नष्ट हो जाते हैं। प्रसव समय गर्भाशय संकोचन के लिये इसके मूल का प्रयोग किया जाता है, इसमें अर्गट जैसा गर्भाशय संकोचन गुण है। प्रसव पश्चात् गर्भाशय के संकोचन के लिये इसके मूल का प्रयोग किया जाता है। सोराइसीस चर्मरोग में इसके पंचांग का एरण्ड के तेल में पकाकर इसका प्रयोग करने से लाभकारी सिद्ध हुआ है।

यह वनौषधि समग्र वर्ष ताजी अवस्था में उपलब्ध नहीं होती, अतएव जब ताजी अवस्था में उपलब्ध हो, उस समय इसका रस निकालकर या पत्रों को थोड़े से भाप में उबालकर कल्क बनाकर उसमें समभाग काली मिर्च मिलाकर एक-एक रत्ती की गोली बनाकर प्रयोग करना लाभकारी है।

मात्रा-पंचांग मात्रा वयस्क व्यक्ति के लिये-१००-३०० मि.ग्राम।

बच्चों के लिये कीटारि घनवटी-एक से दो जल में घिस कर सेवन करानी चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दमनक Artemissia vulgaris Linn. ASTERACEAE (COMPOSITAE)

40

ENGLISH NAME:- Indian worm wood/Fleabane. Hindi - Nagdaman

PARTS-USED:- Whole plant.

DESCRIPTION:- A tall aromatic shrub like herb, 0.5-2.5 meter high leaves linear dissected.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Carbohydrates, Glycosides, Proteins, Resins, Steroids Triterpenoids, Tannins, Phenols; Aluminium, Calcium, Iron Lead & Volatile oil.

ACTIONS: Rejuvenator, Demulcent, Diuretic, Antipyretic, Stomachic, Digestive, wound healing, Emetic, Anti spasmodic.

USED IN:-Inflammation, Retention of urine, Fever, Asthma, Flatulance, Worms and Dropsy (Inchilderen)

प्रचलित नाम- दवना/दौना

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-गुल्म जैसा लम्बा सुगंधित क्षुप, आधे से ढाई मीटर ऊँचे, पत्ते लम्बे पतले एवं खंडित होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में कार्बोदित, ग्लायकोसाइड्स-ट्रायटर्पेनोइड्स, टैनिन्स, फिनॉल्स, एल्युमिनियम, कैल्शियम, लोह लैड एवं उड़नशील तेल घटक पाये जाते हैं।

गुण- रसायन, शामक, मूत्रल, ज्वरघ्न, दीपन, पाचन, व्रण रोपण, वामक, उद्वेष्टनरोधी।

उपयोग- शोथ में, मूत्र अवरोध, ज्वर, श्वासरोग, आध्मान, कृमि एवं बच्चों के जलोदर में प्रयोग किया जाता है। इसके स्वरस को कर्णशूल में डालते हैं। यह कफ, वायु, विष दोष, श्वासरोग, ज्वर, कृमि तथा दुर्गन्ध का नाश करता है। इसके पत्रों के स्वरस का सेवन करने से बच्चों के कृमि नष्ट होते हैं, उदरशूल तथा आध्मान में भी लाभकारी। इसी प्रकार इसके पत्रों के स्वरस का उपयोग यदि प्रौढ़ व्यक्ति करता है, तो अजीर्णता एवं उदरशूल में उसे लाभ होता है। यदि घरों में चांचड जैसे जन्तु हो गये हों, तो दमनक के पौधे घर में रखने पर इसकी उग्रगंध से ऐसे जीव जन्तु बाहर भाग जाते हैं।

डॉ. देसाई के मतानुसार दमनक कड़वा, पाचन, ज्वरघ्न, संकोच विकास प्रतिबंधक, वामक, आनुलोमिक, आर्त्तवजनक एवं व्रणरोपण है। अधिक मात्रा में इसका सेवन हानि करता है, इसलिए पत्र स्वरस की ५-१० बूँद ही सेवन करनी चाहिए। यह औषधि बच्चों के लिये दिव्य औषधि है, बच्चों के सर्वरोगों में उपयोग किया जाता है। वात तथा संकोच विकास प्रधान रोगों में विशेषत:

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमजोरी होने पर सेवन कराया जाता है।

उदर एवं आंतरोगों में तथा आध्मान उदरकृमि में त्रिकटु एवं डीकामाली के साथ प्रयोग किया जाता है। इसके पंचांग के क्वाथ से दुष्टव्रण को धोने से दर्द कम होकर व्रण ठीक होता है। इसके फांट का प्रयोग अनार्त्तव में लाभकारी।

कृमिरोग में इसके पंचांग का चूर्ण रात भर जल में भिगोकर प्रात:काल दातून करने के पश्चात् थोड़ा खाकर इस जल को छानकर पीने से कृमि थोड़ी ही देर में बाहर निकल आते हैं।

मात्रा-पंचांग का क्वाथ-५मि.ली.

चूर्ण- १/२ -१ ग्राम।

'अब आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य आधुनिकता के अंधे दौर में जीव-वनस्पति जगत् एवं पर्यावरण के बीच तारतम्य को नष्ट न करे अन्यथा उसकी भौतिक प्रगति, उसकी जीवन-रक्षा न हो पायेगी। इसलिये पुनः नये सिरे से उपयोगी जीवनदायी वनस्पतियों का आरोपण तथा विकास प्रक्रिया आरंभ करें। इससे दोहरा लाभ है। एक तो मनुष्य को शक्ति व सामर्थ्यों से युक्त नया जीवन मिलेगा और दूसरा वातावरण में संव्याप्त प्रदूषण की समस्या सुधरेगी। आयुर्वेद का पुनर्जीवन इस माध्यम से यदि संभव हो सके, तो यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी।' -पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पनश Artocarpus integrifolia Linn. MORACEAE

41

ENGLISH NAME:- Indian Jack Fruit. Hindi - Kathal
PARTS-USED:- Root, Bark, Leaves and Fruit.
DESCRIPTION:- A Large evergreen tree with rough bark and milky latex, 30-40 meter high.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Cycloartenyl acetate, Cycloartenol, Tannins and Cycloartenone: Root Contains: Beta-Sita sterol, Betulinic acid and Ursolic acid, Artoflavanone, Artocarpesin, Norartocarpetin. Iron, Fruit Contains:- Vitamin A and C, Iron Phosphorus and Proteins, Seed: Vitamin B_1&B_2. Driedlatex: Artostenone which isconverted in to Artosteron which Shows Androgenic properties.
ACTIONS: Cooling, Diuretic, Aphrodisiac (Seeds), Laxative (Ripen Fruit) & Tonic.
USED IN:-Unriped Fruit:- Acrid, Carminative and Tonic; Ripen Fruit Cooling and useful in Seminal debility, bilious ness; Leaves : A sh is used inhealing of wound & uldcers and skindiseases; Roots: in asthma, Diarrhoea, Stomach Complaints, Toothache, Sores, Carbuncle and Smallpox.

प्रचलित नाम- कटहल

प्रयोज्य अंग- मूल, छाल, पत्र एवं फल।

स्वरूप-विशाल सदा हरति वृक्ष जो ३०-४० मीटर ऊँचा; छाल खुरदरी, दुग्धमय क्षीर, फल एवं पुष्प मोटी काष्ठीय शाखाओं पर लगते हैं, जो पीतवर्णी, फल बड़े-बड़े कोमल काँटें युक्त।

स्वाद- कटु ।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में- सायक्लोआर्टीनिल एसीटेट, सायक्लो आर्टीनोल, टैनिन्स एवं सयक्लोआर्टीनान इसके मूल में- बीटा-सिटास्टीरॉल, बेटुलिनिक अम्ल एवं अर्सोलिक अम्ल, आटोफ्लेवॉनॉन, आर्टोकार्पेसिन, नोर आर्टोकार्पेटिन, इसके फल में विटामिन ए तथा सी, लोह, फास्फोरस, प्रोटीन, इसके बीज में विटामिन बी$_१$ तथा बी$_२$ सूखे क्षीर में- आर्टोस्टीनॉन जिसका परिवर्तन आर्टोस्टीरॉन में हो जाता है। जिसमें पुंरस्वजन गुण पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, मूत्रल, बाजीकर (बीज) एवं मृदुरेचक, बल्य (पके फल)।

उपयोग-कच्चे फल- कटु, वातघ्न एवं बल्य, पके हुए फल-शीतल, शुक्र दौर्बल्य में तथा पित्त संबंधीत रोगों में लाभकारी।

पत्र- की राख व्रण रोपण में तथा त्वक् रोगों में लाभकारी। मूल-श्वास रोग, अतिसार, उदर रोगों में, दंतशूल में, छालों में, फोड़ों में तथा चेचक रोग में लाभकारी।

मात्रा-इसके दुग्ध-क्षीर का प्रयोग लेप कर फोड़ों को पकाने में किया जाता है।

क्वाथ-५०-१०० मि.ली.।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काकनासा/ काक तुण्डी Asclepias curasavica Linn. ASCLEPIADACEAE

42

ENGLISH NAME:- Bustard/Wild Ipecacaunha. Hindi - Kauathori
PARTS-USED:- Whole plant, Root, Leaves and Flowers.
DESCRIPTION:- A Small perennial erect herb with milky juice leaves alternate, lanceolate, cuneate, glabrous flowers-inumbel, corollaratate scarlet orange, Yellow spathulate.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves contain: Beta-sitasterol, Beta-amyrin, Myristic acid, Palmitic acid, Stearicacid, Oleic aced, Linoleic acid, Arachidic acid and Arachidonic acid, Rutin Quercetin, Glucose, Fructose, Acidic mucilage, Cardenolides, Asclepine (Glycoside).
ACTIONS: Cardiotonic, Purgative, Emetic, Spasmogenic, Expectorant, styptic, anthelmintic, sudorefic, bacteriocide. Worms, Emmenagogae, It is a aborti facient, Hypertensive, Cardiotonic, Antipyertic and Diphoretic. Carcinoma.
USED IN:-Piles, Gonorrhoea, Haemorrhagic Diseases.

प्रचलित नाम- काकांगी/अंत्रमूल/ रक्तपुष्पी

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-छोटी चिरस्थायी गुल्म, लघु दुग्ध रस युक्त, पुष्प पीले-नारंगी रंग के होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में-बीटा-सिटास्टीरॉल, बीटा-एमीरीन, मिरस्टीक अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ऑलिक अम्ल, लिनालिक अम्ल, एरेकीडीक अम्ल एवं एरकीडॉनिक अम्ल, रुटिन, क्वेरसेटिन, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, एसीडीक म्युसीलेज, कार्डेनोलिड्स, एस्कलेपिन (ग्लायकोसीड्स) घटक पाये जाते हैं।

गुण- हृद्य अति रेचक, वामक, उद्वेष्टक, कफनि:सारक।

उपयोग-अर्श, अपसर्गिकामेह, रक्त प्रसादक, आर्तव जनन एवं कृमियों में, यह औषधि गर्भ पातक, हृद्य ज्वरघ्न एवं स्वेदजनन, रक्त भाराधिक्य में लाभकारी। इसके पत्रों एवं पुष्पों का लेप रक्त स्राव रोकने हेतु किया जाता है। अधिक मात्रा में इसका प्रयोग वामक तथा रेचक होता है। कफ विकारों में इसको देने से कफ पतला हो कर निकल जाता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्वेतमुशली/तालमूली Asparagus adscendens, Roxb. LILIACEAE

43

ENGLISH NAME:- Musale. Hindi - Musele.

PARTS-USED:- Fleshyroots and cladodes.

DESCRIPTION:- A large spinyclimber, Scandent angular, branches, spines 1/2 to 3/4 Inch. Cladodes 6-20 incluster.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fleshyroots Contains: Sugars & Mucilage, Cladode Contains Glycosides and Saponins.

ACTIONS: Cooling, Demulscent and Tonic, Sweet, Spermopoiteic.

USED IN:-Diabetes, General debility, Seminal debility, Leucorrhoea, Diarrhoea, Dysentery.

प्रचलित नाम- सफेद मुशली/खैरूव।
प्रयोज्य अंग- रसदार मूल एवं पत्राभास कांड।
स्वरूप-विशाल कंटकीय लता, शाखाएँ झुकी हुई धारदार, कंटक १/२ से ३/४ इंच लम्बे पत्ते सदृश शाखाएँ जो ६-२० के झुमके में होती है।
स्वाद-मधुर।
रासायनिक संगठन-इसके रस युक्त मूल में शर्करा एवं श्लेष्मा (लुआन) पाये जाते हैं। पत्राभास कांड, ग्लायकोसाइड्स एवं सेपोनिन्स घटक पाये जाते हैं।
गुण- शीतल, स्नेहन, बल्य, मधुर, शुक्रवर्धक।
उपयोग- इसमें स्टार्च न होने के कारण इसके कांड का उपयोग मधुमेह में किया जाता है। सभी प्रकार के दौर्बल्य में शुक्रदौर्बल्य में, श्वेत प्रदर में, अतिसार एवं प्रवाहिका में लाभकारी। शुक्र वृद्धि के लिये-इसके मूल कंद को अच्छी तरह धोकर ऊपर से छील कर तथा अच्छी तरह सूखने के पश्चात् महीन चूर्ण बनाकर रख लेना चाहिए। इसके पश्चात् प्रतिदिन १४ तोला गाय के दूध में मूसली का चूर्ण दो तोला मिला कर अग्नि पर परख कर इस दूध को अच्छी तरह उबाल लो (आधा दूध रह जाने तक) इसमें तीन तोला मिश्री, घी दो तोला, मिलाकर थोड़ा पका लो, इसके पश्चात् इसमें जायफल, छोटी इलायची दाना का चूर्ण एवं केसर तथा बादाम एवं चिरौंजी मिला लो (मात्रा अनुसार) इसमें से आधा पाक प्रात: तथा आधा सायं समय नित्य सेवन करना चाहिये। इस तरह प्रतिदिन ताजा तैयार कर सात दिन या चौदह दिन तक सेवन करने से शुक्रवृद्धि होकर वीर्य गाढ़ा बनता है। अश्मरी में-इस मूसली के कंद खाने से अश्मरी गलकर बाहर आ जाती है। प्रदर में-इस मूसली के कंद तथा गुड़हल की कलियाँ मिश्री के साथ खाकर ऊपर से दूध पीना चाहिये। संग्रहणी में:-इस मूसली के कंद को छाछ में पीसकर एक तोला खिलाना चाहिये। पथ्य-छाछ एवं चावल खाने चाहिये।
मात्रा- इसका प्रयोग एक ग्राम चूर्ण में एक ग्राम चीनी मिलाकर दूध के साथ किया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शतावर Asparagus racemosus, Willd. LILACEAE

44

ENGLISH NAME:- Asparagus. Hindi - Satawar/Sahasmuli
PARTS-USED:- Fleshyroots and cladodes.
DESCRIPTION- Extensive spinous much branched climber, leafless with cladodes white & small Flowers.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fleshyroots Contains: Sugars, Mucilage& saponins, Fresh cladodes contain:- Diosgenin, Four saponins (Shatavarin), Shatavarin IV is Glycosides of Sarsa sapogenin, Rhamnese and Glucose.
ACTIONS: Rejuvenator, Nervine tonic, Astringent, Galactogogue, spermo poietic Heart tonic Diuretic.
USED IN:-Threaten abortion, Leucorrhoea, Seminal debility, Goneral debility, Agalactia, Headach, Hysteria, Reduces blood pressur; Useful in acidity and ulcer patient, Extract of cladode is Anticancer.

प्रचलित नाम- सतमूली/सतावर

प्रयोज्य अंग- कंद सदृश रस युक्त मूल तथा पत्राभास कांड।

स्वरूप- विशाल घनी, अतिशाखीत, पत्र रहित, कंटकयुक्त लता तथा पत्र सदृश्य शाखाएँ, पुष्प सफेद छोटे होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन-इसके रस युक्त मूल में- शर्करा, श्लेष्मा (लुआब) एवं सेपोनिन्स, इसके ताजे पत्राभास कांड में-डायोसजेनिन, चारसेपोनिननस (शतावरीन) चौथे शतावरीन में ग्लायकोसाइड्स। (सारसा सेपोजेनिन) रहामनीस तथा ग्लूकोज घटक पाये जाते हैं।

गुण- रसायन, मेधावर्धक, ग्राही, स्तन्य जनन, शुक्रवर्धक, हृद्य तथा मूत्रल।

उपयोग- संभावित गर्भपतन, श्वेत प्रदर, शुक्रदौर्बल्य, सामान्य दौर्बल्य, दुग्ध वर्धक, शिरोवेदना, मूर्छा में, रक्तमाराधिक्य को कम करता है। अम्लपित्त एवं आमाशयिक व्रण में उपयोगी। पत्राभास कांड का सत कैंसर प्रतिरोधक है। पत्राभास कांड का स्वरस- २-४ चम्मच दिन में दो बार दुग्ध एवं शर्करा के साथ इसका प्रयोग बलवृद्धि के लिये किया जाता है। मूत्र में रक्त आना-इसके मूल के चूर्ण में समभाग गोक्षुर का चूर्ण मिलाकर इसमें से एक चम्मच चूर्ण लेकर एक कप दूध में उबाल कर, शर्करा मिलाकर प्रातः प्रतिदिन तीन बार सेवन कराने से मूत्र में रक्त का आना बंद होता है। रक्तातिसार में-शतावरी का ताजा चूर्ण बकरी के दूध में सेवन कराने से तथा चावल का सेवन बकरी के दूध के साथ कराना चाहिए। मूत्रकृच्छ्र में-इसके मूल का चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन कराना चाहिए। स्वरभेद (कंठ दोष)में- जुकाम-कफ के कारण स्वर भेद हो जाये, तो इस में शतावर के मूल का चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन कराना चहिए। रात्रि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंधता में-इसकी हरिताभ शाखाओं को घी में सेक कर सेवन कराने से लाभ होता है। रक्तपित्त में-शतावर के मूल का चूर्ण दूध में उबालकर सेवन कराने से इस रोग में लाभ होता है। आंतव्रण में-उदर, अमाशय, छोटी आंत में अल्सर होने पर शतावरी के मूल का चूर्ण (बड़ी चम्मच) बकरी के दूध में उबालकर प्रतिदिन तीन -चार बार सेवन कराने से इस में लाभ होता है। अम्लपित्त में शतावर के मूल का चूर्ण दूध में उबालकर सेवन कराना चाहिए या चूर्ण जल के साथ फाकी के रूप में सेवन कराने से लाभ होता हे। स्त्रीरोग में प्रसूता माता के दूध में कमी हो या गर्भाशय में किसी प्रकार की विकृति हुई हो तो शतावर मूल का चूर्ण अधिक बार सेवन कराने से लाभ होता है। शुक्रदोष में शुक्रांणुओं की कमी, वीर्य का पतला होना, शुक्रदौर्बल्य, नपुंसकता में शतावर के मूल का सेवन दूध के साथ या चूर्ण का पाक बनाकर सेवन कराना चाहिए। वृक्क शोथ में रक्त प्रदर एवं श्वेत में-इसके मूल का चूर्ण-दूध में उबालकर सेवन कराने से लाभ होता है। प्रमेह में (मधुमेह) बीस प्रकार के प्रमेह में एक कप दूध में २० ग्राम शतावर रस मिलाकर पिलाना चाहिए। राजयक्ष्मा में (टी. बी.) इसके मूल का चूर्ण एक-एक चम्मच प्रात: सायं दूध के साथ सेवन कराना चाहिए। आरोग्य सुरक्षा के लिये-स्वास्थ्य, बुद्धि, शक्ति, शुक्र दौर्बल्य में, एक चम्मच शतावर चूर्ण दूध में उबालरक या जल के साथ सेवन कराना चाहिए।

मात्रा- मूल का चूर्ण- ३-६ ग्राम। क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.। स्वरस १०-२० मि.ली.।

●●●

'मुकुट बनकर इतराने वाले फूल की क्या प्रशंसा? सराहो उन शूलों की, जो कली की लाज बचाने के लिये कमर कसे रहते हैं।' - पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोकिलाक्ष/इक्षुगंधा Asteracantha longifolia Nees. Hygrophila spinosa T. And.Syn. ACANTHACEAE.

45

ENGLISH NAME:- Long Leaved Barleria. Hindi - Ta!'makhana

PARTS-USED:-Roots, Leaves, Seeds.

DESCRIPTION- Aspiny herb growing near moist places. Spine are yellow in whorl of Six. Leaves sessile, in whorl 6 leaves at each node Flowers bluish purple.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:- Yellow Coloured Oil; Diastase, Lipase, Protease, Salts of Potassium; Mucilage.

ACTIONS:-Cooling, Diuretic, Sweet, Spermopoietic, Galactogogue, Tonic.

USED IN:- Dropsy, Disuria, Cystitis, Jaundice, Gout, Oedema, Liver disorder, Calculii. Eye trouble.

प्रचलित नाम- तालमखाना

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, बीज।

स्वरूप-एक छोटा कंटक युक्त क्षुप जो नमी वाले स्थानों पर उगता है। कंटक पीले, प्रतयेक पर्व पर ६-६ की संख्या में, पत्ते ६-६ के चक्र में, पुष्प नीले बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में पीतवर्णी स्थिर तेल, डायास्टेस, लायपेस एवं प्रोटियेस पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त पोटेशियम के लवण तथा पिच्छिल द्रव्य पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, मूत्रल, मधुर, शुक्रवर्धक, स्तन्य जनन, बल्य।

उपयोग-जलोदर, मूत्रकृच्छ्र, बस्थिशोध, कामला, वातरक्त, शोथ, यकृतोदर, यकृत में अवरोध होने के कारण उत्पन्न शोथ में, अश्मरी, नेत्ररोग में लाभकारी। इसके बीजों का दूध के साथ सेवन से बस्थिशोथ में लाभ होता है। मूल के क्वाथ के सेवन से मूत्र में वृद्धि होती है। यकृत रोग में मूल के क्वाथ का सेवन लाभकारी। कास रोग में पत्तों का उपयोग लाभकारी। संधिशूल में इसके पत्रों को पीसकर लेप करना लाभकारी। शोथ में इसके पंचांग की राख का गोमूत्र या जल के साथ सेवन से लाभ होता है। बाजीकरण के लिये इसके बीज एवं कौंच के बीजों का चूर्ण में शर्करा मिलाकर जल के साथ सेवन से लाभ। अतिसार में इसके पंचांग को दही में पीसकर सेवन कराना चाहिए। क्षतकास में इसके पंचांग के चूर्ण में मधु तथा ताजा घी मिला कर सेवन करने से लाभ होता है। धातु पुष्टता के लिए इसके पंचांग के चूर्ण का सेवन मिश्री के साथ करें तथा ऊपर से ऊष्ण दूध पीने से लाभ होता है। या तालम खाना, मूसली एवं गोक्षुर का चूर्ण गाय के दूध में मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है। प्रमेह में तालम खाना को दूध में उबालकर पीने से लाभ होता है। योनि संकोचन के लिये इसके पंचांग के क्वाथ में तालमखाना का चूर्ण मिलाकर योनी के अंदर इसका लेप करने से लाभ होता है।

मात्रा-क्वाथ-चार तोला, चूर्ण-दो से चार माशा, क्षार-दो से पाँच रत्ती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मरङ्ग/बृहदम्ल Averrhoa carambola Linn. AVERRHOACEAE

46

ENGLISH NAME:- Carambola. Hindi - Kamrakh

PARTS-USED:- Fruits.

DESCRIPTION:-A medium tree, about 15-30 feet high, evergreen, flowers pinkishar purplish fruit pentangular with drooping branches; leaves semisemrilive imparipinnate leaflets 5-11, oblong, oblique. ellipooid fleshy.

TASTE:-Sour.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains: Vitamin 'A' and Acid Potassium oxalate.

ACTIONS: Ripen fruit: Cooling, Tonic, Blood purifier, Appitizer.

USED IN:-Fever, Scorbutic, Bleedingpiles and Thirst Sharbat is prepared from the ripen fruits and used as medicine.

प्रचलित नाम- कमरख

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप-१५-३० फूट उँचे, सदा हरित लघु वृक्ष; फल पाँच धार वाले होते हैं।

स्वाद-आम्ल।

रासायनिक संगठन-इसके फल में-विटामिन 'ए' एवं पोटेशियम आक्सेलेट अम्ल पाया जाता है।

गुण- पके फल शीतल, बल्य, रक्त शोधक, रुचिकर।

उपयोग- पके फलों का शरबत- ज्वर में, रक्तपित्त, रक्तार्श एवं तृषा में लाभकारी। इसके फलों का अचार, शर्बत, चटनी बनायी जाती है। धातुओं के बने बर्तनों में लगी जंग इससे छुड़ाई जाती है। कमरख के फल अम्ल, ग्राही, वातघ्न, उष्ण, पित्तकृत् किन्तु पके हुए फल मधुर एवं खट्टा (खट्टा-मीठा) रुचिकर, बल तथा पुष्टिकारक है। ज्वर नाश तथा ठंडक के लिए पिलाया जाता है।

ॐ ॐ ॐ

'सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्त्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं।'- वन्दनीया माता जी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निम्ब Syn. Azadirachta indica. A. Juss. Melia azadirachta Linn. MELIACEAE

47

ENGLISH NAME:- Margosa tree (Nimb tree)
PARTS-USED:-Whole plant, Root bark, stem bark, Leaves, Flowers, Fruits (Young & Ripe)
DESCRIPTION:- A large tree, impari pinnate compound leaves leaf-lets 9-15 lanceolate acuminate oblique, flowers creamish-white and aromatic, drupe oblong 1-2 cm., sweet pulpy when ripe.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Margocin (Bitter), Nimbadin, Sulphur, Nimban, Nimbosterol, Tannin, Essential oil, Resin, Glycosides, Fatty acids, Gum, Free Aminoacids, Starch Sugars. Leaves Contain:-Quercetin, Beta-sito sterol (Nimbasterol).
ACTIONS:-Bark: Bitter, Tonic, Astringent, Purgative, Demulcent, Anthelmintic. Leaves: Anti-inflammatory, Wound healer, Anthelmintic, Liver stimulant, Anti leprotic.
USED IN:- Bark: Rhinitis affections, Hypoglycaemic, Rheumatism, Antipyretic, Analgesic, Malarial fever. Seadtive, Anti ulcer, Anti bacterial; Leaves are useful in Eczema, Ringworm, Fungal affections, Antiseptic; Whole Plant: useful in Scabies, Ulcer, Leucoderma, inflammation, Blood purification, Oil: is used in Rheumatism, Leprosy & Ulcer.

प्रचलित नाम- नीम

प्रयोज्य अंग- पंचांग मूल की छाल, कांड की छाल, पत्र, पुष्प, फल (कच्चे तथा पके हुए)

स्वरूप-यह एक सघन विशाल ३५-४५ फीट ऊँचा वृक्ष, जिसकी शाखाएँ तथा उप शाखाएँ फैली हुई होती है। शाखाओं के अंतभाग में संयुक्त पत्ते होते हैं। पत्रक विषम, नुकीले एवं दंतुर होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे सफेद तथा सुगंध युक्त होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें मार्गोसिन (तिक्त) निम्बाडीन, गंधक, निम्बान, निम्बोस्टीरॉल, टैनिन, उत्पत्त तेल, राल, ग्लायकोसाईड्स, वसा अम्ल, गोंद, मुक्त एमिनो अम्ल, स्टार्च, शर्करा। इसके पत्रों में उपरोक्त तत्वों के अतिरिक्त क्वेरसेटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल (निम्बास्टीरॉल) तत्व पाये जाते हैं।

गुण-छाल तिक्त बल्य, ग्राही, अतिरेचक, शामक, कृमिघ्न, पत्र-शोथहर, व्रणरोपण, कृमिघ्न, यकृत उत्तेजक कुष्ठघ्न।

उपयोग-इसकी छाल का प्रयोग प्रतिश्याय (जुकाम) रक्तशर्करा प्रमाण नियंत्रण में, आमवात में, ज्वरहर, वेदनाहर, विषमज्वर, निद्राजनक, कैन्सर नाशक, कीटाणुनाशक। इसके पत्रों का प्रयोग खाज-खुजली दादर, फफूंदी रोग, पूतिरोधि। पंचांग का प्रयोग कण्डुरोग, व्रण श्वित्र, दाह, रक्तशोधन में लाभकारी। तैल का प्रयोग आमवात, कुष्ठरोग, व्रण में लाभकारी। मलेरिया ज्वर में छाल का चूर्ण लाभकारी। श्वेत प्रदर में नीम की छाल तथा बबूल की छाल का क्वाथ लाभकारी। पत्तों का प्रयोग त्वचा विकार, व्रण, कुष्ठरोग, कण्डु, छाजन, दूषित व्रण में लाभकारी। विचर्चिका में (व्हीपिंग एक्जीमा) पत्तों को पीसकर इस पर बाँध देते हैं, लाभ होता है। अर्श में इसके बीज को गुड़ के साथ खिलाते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। कुष्ठरोग में पंचांग का चूर्ण या क्वाथ का स्नान, सेवन तथा लेप से लाभ। प्रतिदिन नीम के एक सौ पत्रों का चूर्ण जल के साथ यदि छः मास तक लगातार सेवन किया जाये, तो कितना भी जीर्ण कुष्ठरोग हो मिट जाता है। या नीम के पत्र एवं हरड़ का चूर्ण सेवन करने से एक मास तक सब तरह के कुष्ठ रोग मिट जाता है। दाह ज्वर में नीम के कोमल पत्रों को थोड़ा कूट कर, जल में इनको अच्छी तरह मसलने से इसके ऊपर झाग आयेगी, इस झाग को लेकर इसमें मधु मिलाकर सेवन करने से वमन होगा तथा दाह शांत होगा। कफ युक्त तृषा में नीम के पत्रों के रस को गरम कर सेवन से वमन होगा, जिससे लाभ होता है। व्रण शोधन के लिये इसके प्रत्रों को पीसकर, इसमें थोड़ा मधु मिलाकर व्रण पर इसका लेप करने से लाभ होता है। कामला इसके पत्रों के रस में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है नेत्र रोगों (नेत्र शोथ, खुजली एवं दर्द) में इसके पत्रों को सोंठ के साथ बारीक पीसकर, इसमें थोड़ा सैंधव लवण मिलाकर, गरम कर इसकी थप्पे पलकों पर रखने से लाभ होता है। कृमिरोग में इसके पत्रों के रस में मधु मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। शारीरिक स्थूलता एवं मधुमेह रोग में नीम का तेल दस बूंद कैप्स्यूल में भरकर प्रतिदिन सेवन करना चाहिए, प्रतिदिन दस बूंद बढ़ाना चाहिए, जब तक वमन या जी मचलाये तब तक यह एक अद्‌भुत प्रयोग है। प्रतिदिन नीम की दातुन करने से दाँतों में सड़न, दुर्गन्ध एवं कीटाणु नहीं रहते। सिर के बालों में रूसी हुई हो, तो नीम के पत्रों का काढ़ा बनाकर सिर धोने से रूसी का नाश होता है। संधिशोथ एवं आमवात तथा गठिया रोग में नीम के पत्रों का रस तथा क्वाथ का सेवन करने से अच्छा लाभ होता है। सफेद बाल काले करने के लिए नीम के तेल की कुछ बूँदें नासिका छिद्रों में टपकाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं इस प्रकार का कथन शास्त्रकारों का है।

मात्रा-पत्र रस-१०-२० मि.ली. प्रतिदिन। छाल का चूर्ण-दो ग्राम। तेल-५-१०बूँद। पत्र का चूर्ण-२-५ ग्राम।

●●●

'अपने निकृष्ट चिंतन को उत्कृष्ट में परिणत करने के शौर्य-साहस का नाम ही आत्मबल है।'- पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नीर ब्राह्मी :जलनीम Bacopa monieri (Linn) Penell. SCROPHULARIACEAE

48

ENGLISH NAME:- Bacopa. Hindi - Jalneem

PARTS-USED:- whole plant.

DESCRIPTION:-A small succulent herb creeping, rooting at nodes, aquatic with purpleblueflowers.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Alkaloids-Brahmine and Herpestine; Bacoside-A and B (Saponins), Betulic acid, Hersaponin, Nicotine, Becogenin-A, Potassium, Sodium, Calcium, Iron, Mucilage, Oleic acid and Palmitic acid.

ACTIONS: Tonic, Anti-inflammatory, blood purifier, Diuretic, Laxative.

USED IN:-Dyspepsia, Cough, fever, Insomnia, Epilepsy, debility after heart attack, Hoarsness of voice, Less memory, Tension, Bloodpurifier.

प्रचलित नाम-जलब्राह्मी

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप- मांसल लघु गुल्म, जो प्रसरण शील, तथा इनकी पर्व से मूल उत्पन्न होते हैं, यह पानी में या नमी वाले स्थानों पर प्राकृतिक रूप से उगते हैं। बैंगनी नीले पुष्प।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में- एल्कलॉयड्स-ब्राह्मीन, हर्पेस्टीन, बेकोसाईड-ए एवं बी. (सेपोनिन), बेटुलिक अम्ल, हरसेपोनिन, निकोटिन, बैकोजेनिन-ए, पोटैशियम, सोडियम, कैल्शियम, लोह, श्लेष्म(लुआव), ऑलिक अम्ल एवं पामीटिक अम्ल।

गुण- बल्य, शोथहर, रक्तशोधक, मूत्रल, विरेचक।

उपयोग- अग्निमंद्यता, कास, ज्वर, अनिद्रारोग, अपस्मार, हृदयघात के पश्चात् की दुर्बलता में, स्वरभेद में, स्मृति ह्रास, तनाव, रक्तशोधन, अल्पमात्रा में इसके प्रयोग से रक्त का दबाव कुछ बढ़ता है तथा श्वसन क्रिया को भी बल मिलता है। अति अल्पमात्रा में प्रयोग से आंत्र एवं गर्भाशय की मांस पेशियाँ उत्तेजित होती हैं। स्वरस का बाह्य प्रयोग आमवात में लाभकारी। जबकि एक चम्मच स्वरस से बच्चों की खांसी एवं जुकाम में लाभ होता है। पत्रों का चूर्ण अवसाद एवं मानसिक दौर्बल्य में लाभ।

मात्रा-पंचांग चूर्ण- २-५ग्राम। ताजा स्वरस- १०-२०मि.ली.।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इंगुदी/दीर्घकण्टा Balanites roxburghii. Planch. SIMARUBACEAE

49

ENGLISH NAME:- Balanite. Hindi - Hingota
PARTS-USED:-Fruits, Seeds and oil.
DESCRIPTION:- A small tree, about 10-20 feet high, thorny, thorns are straight and leafy, leaves bifoliate, leaflets are ovate, elliptic Flowers green & Scented incorymb; drup 5-grooved rind woody, grey.
TASTE:- Bitter(Root). Fruit (sweet)
CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit and Seeds Contain:- Oil of yellow colour and taste less, Pulp of fruit conatins: Saponin.
ACTIONS:-Leaves are-Bitter, Laxative, Anthelmintic, Fruits: Acrid, Laxative, Anthelmintic, Expectorant, Wound healing (oil)
USED IN:- Fruits are useful to cure chronic cough, Leprosy, Worms infestation, Leaves are used in cough, Throat infection and worms for children, oil is used on burned parts, Seedsin: Colic, Cough.

प्रचलित नाम- हिंगोट/इंगुजा

प्रयोज्य अंग- फल, बीज तथा तैल

स्वरूप-१०-२० फूट ऊँचे वृक्ष वृक्ष, कंटकयुक्त, कांटे सीधे तथा पत्र युक्त, पत्ते संयुक्त द्वि पत्री, पत्रक अंडाकार, पुष्प सुगंधित तथा हरितवर्णी।

स्वाद-तिक्त (मूल) मधुर (फल)।

रासायनिक संगठन- इसके फल तथा बीज में-पीले रंग का स्वादहीन तैल पाया जाता है। इसके फल के गूदे में सेपोनिन होता है।

गुण-तिक्त, मृदुरेचक, कृमिघ्न; फल-कटु, मृदुरेचक, कृमिघ्न कफ नि:सारक, व्रणरोपण (तैल)।

उपयोग-इसके फल का प्रयोग-जीर्ण कास, कुष्ठरोग, कृमिरोग में लाभकारी। इसके पत्र बच्चों के कास, कुष्ठ रोग तथा कृमिरोग में लाभकारी। इसका तैल जले हुए हिस्से पर लगाने से लाभ। बीज-उदरशूल तथा कास में लाभकारी। कुष्ठरोग में हिंगोट का तैल लगाने से लाभ होता है। मूषक विष में शिरीष तथा हिंगोट फल के गूदा का कल्क मधु के साथ चाटने से लाभ होता है। रक्त पित्त हिंगोट फल मज्जा यष्टिमधु के साथ सेवन से इस रोग में लाभ होता है। दुष्ट व्रण में हिंगोट का तैल रोपणार्थ दुष्टव्रण पर लगाया जाता है। व्यङ्ग में इंगुदीफल की त्वचा के नीचे की रक्ताभ मज्जा शीतल जल में पीसकर इक्कीस दिन तक मुख पर लगाने से व्यंग ठीक होकर मुख कान्तिमय हो जाता है। अग्नि या उष्णता के कारण जल जाने से इंगुदी तैल लगाना लाभकारी होता है। इसके बीजों का प्रयोग उदरशूल तथा कास में अत्यंत लाभकारी तथा कृमिरोग में लाभकारी होते हैं। इसके पत्रों का प्रयोग यह तिक्त एवं कटु होने के कारण रेचक तथा कृमि रोग में लाभकारी होते हैं। अफ्रीका में इसके फलों की मज्जा का प्रयोग-डीटरजेन्ट के रूप करते हैं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वंशलोचन Bambusa arundinacea, willd POACEAE (GRAMINAE)

50

ENGLISH NAME:- Bamboo. Hindi - Bans
PARTS-USED:- Stem and young shoots.
DESCRIPTION:-Agiant bamboo with stout rootstalks, the clump reaching 50-60 feet high/ stem golden yellow.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Stem contains: Cyanogenic glucoside, Taxiphyllin, Solid accumulation-Banslochan, Lliquid-accumulation in hollow inter nodes is tabashin and Benjoic acid.
ACTIONS: Expectorent, stimulant, Tonic, Aphrodisiac, Anti, spasmogenic, Antithirst.
USED IN:-Culms: Shootmixed withlime, applied externally on cuts & wounds, used internally tocure blood tuber culsis, Bronchitis, Asthma, Bans lochan is also useful in Tuberculosis, Asthma, Leprosy; Extract of the young aerial shoots is blood purifier and also useful in leucoderma and inflammation.

प्रचलित नाम-बांस

प्रयोज्य अंग- कांड एवं कोमल शाखाएँ।

स्वरूप-महाकाय बांस जिसकी ऊँचाई लगभग ५०-६० फूट, कांड पीत स्वर्णिम मूलकांड-मजबूत भूमिजन्य होते हैं।

स्वाद-कटु ।

रासायनिक संगठन-इसके कांड में-सायनोजेनिक ग्लूकोसाइड, टैक्सीफायलिन, कांड की पर्व में नक्कर पदार्थ-वंशलोचन, जबकि इसमें प्रवाही पदार्थ तबशीर होता है, इसके अतिरिक्त कांड में बेन्जोइक अम्ल पाया जाता है।

गुण- कफ नि:सारक, उत्तेजक, बल्य, बाजीकारक, उद्वेष्टननिरोधी, तृषाशामक।

उपयोग- पर्व का मृदुभाग चूने में मिलाकर इसका बाह्य प्रयोग जख्मी भागों तथा व्रण में लाभकारी, इसके अंतर्ग्रहण से रधिरक्षय, श्वसनीशोथ, श्वासरोग में लाभ होता है। वंशलोचन के सेवन से क्षय, श्वासरोग, कुष्ठ रोग में लाभ होता है। कोमल शाखाओं का सत-रक्त शोधक गुणवाला एवं श्वित्र तथा शोथ में लाभकारी। इसकी गांठो को पीस कर इसका लेप जोड़ों के दर्द पर लाभकारी होता है। मूल का कल्क चर्मरोगों (दाद एवं विस्फोटक व्याधियों) पर उपयोगी। कोमल पत्रों का प्रयोग ज्वर, सूत्रकृमि, कुष्ठरोग एवं कफ में रक्त आने जैसे रोगों पर अति लाभकारी।

मात्रा-क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.। वंशलोचन-१-३ ग्राम।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सैरेयक Barleria prionitis, Linn. ACANTHACEAE

51

ENGLISH NAME:- Spiny yellow-Barleria. Hindi - Kata Saraya/Piyavasa

PARTS-USED:- Root and Leaves.

DESCRIPTION:-A small shrub, much branched, very prickly with yellow flowers.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Beta-sitosterol, Scutellarein-7 Rhamocyl glucoside, Iridoids, Barlerin and Ac-Barlerin. It also contains Potassium.

ACTIONS: Diuretic, Diphoretic, Expectorant, Antiseptic, Anti-inflaminatory. Wound healing, Antidote.

USED IN:-Leaf Juicein: Catarrha, Abadominal disorder, Fever, Driedbark in: Cough, Decoction of Plant in: Dropsy, Cough, Toothache, Paralysis, Paste of Root applied in: boils and glandular swellings Juice of bark in Anasarca.

प्रचलित नाम-कट सरैया/पीला वासा

प्रयोज्य अंग- मूल एवं पत्र।

स्वरूप-लघु क्षुप, अतिशाखीत तथा कंटक युक्त; पुष्प पीतवर्णी।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में बीटा-सिटोस्टीरॉल, स्कूटेलॉरिन ७-२ रहामनोसिल ग्लूकोसाईड, इरीडोइड्स बारलेरिन एवं एसी-बारलेरिन इसके अतिरिक्त इसमें पोटैशियम अधिक पाया जाता है।

गुण- मूत्रल, स्वेद जनन, कफ नि:सारक, पूतिरोधी, शोथहर, व्रणरोपण, विषघ्न।

उपयोग- पत्र का रस-प्रतिश्याय, उदर विकारों तथा ज्वर में लाभकारी। सूखी छाल कास में, पंचांग का क्वाथ- जलोदर, कास, दंतशूल, पक्षाघात में लाभकारी, मूल का कल्क-पीड़िका एवं ग्रंथि शोथ में छाल का रस-जलशोथ में उपयोगी। पिसे हुए पत्रों का व्रण पर लेप लाभकारी। पत्रों के रस को नारियल के तेल में मिलाकर मुंह पर लगाने से मुंह के मुंहासे एवं पीड़िका नष्ट होते हैं। मधु के साथ पत्रों के रस का सेवन बच्चों के कफ युक्त खांसी में लाभकारी। पत्रों का लेप कुष्ठरोग पर लाभकारी। नमक के साथ पत्रों को पीसकर इसका लेप मसूड़ों एवं दांतों पर करने से लाभकारी। गर्भवती स्त्रियों के लिए यह वनौषधि अमृत समकक्ष है। इसके मूल के रस में दाल चीनी, पीपर (पिप्पली), लौंग का चूर्ण मिलाकर सेवन कराना चाहिये। इसके अतिरिक्त इसमें एक चौथाई ग्राम केसर मिलाकर सेवन कराने से गर्भावस्था के समय होने वाले अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है। चर्मरोगों (दाद, खाज-खुजली) में-सैरेयक के पंचांग को पीसकर कल्क बना उसमें थोड़ा तैल मिलाकर मंद अग्नि पर थोड़ी देर रखने के पश्चात् उतार कर अच्छी तरह घोट लेना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए, इसमें थोड़ा कपूर मिलाकर इसका प्रयोग करने से लाभ होता है। इसके पत्रों के रस के प्रयोग से ज्वर, प्रतिश्याय आदि में लाभ होता है। इसके पत्रों की राख जात्यादि घृत में घोंट कर व्रण, जख्म आदि पर लगाने से लाभ होता है। सूजन पर-इसके पंचांग के स्वरस का लेप सूजन वाले भाग पर करने से लाभ। बच्चों के खाँसी-जुकाम में-इसके पत्रों के स्वरस को मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। वीर्य पतन में- सफेद कट सरैया के पत्रों के स्वरस में जीरा मिला कर सात दिन तक सेवन कराने से लाभ होता है। पित्त में- कट सरैया, तुलसी तथा भृंगराज के पत्रों को सम भाग में मिलाकर पीसकर गाय के दूध में मिलाकर पिलाना चाहिए। दंत शूल में-कट सरैया तथा अकरकरा दोनों को मिलाकर पीसकर दाढ़ के नीचे रखने से दंत एवं दाढ़ शूल नष्ट होता है। मुँह में छाले पड़ने पर-कट सरैया, जामून की छाल तथा आँवला मिलाकर, क्वाथ बनाकर कुल्ला करने से मुँह में हुये छाले ठीक हो जाते हैं। दाँतों में से रक्त आता हो तो-कटसरैया के पत्रों का स्वरस मधु में मिलाकर दाँतों पर घिसने से रक्त बहना बंद होता है। दंत कृमि में- कटसरैया के पत्रों को चबाने से दाढ़ के नीचे रखने से या इसकी दातून करने से दंत कृमि नष्ट होते हैं। वातरोगों में-कट सरैया, देवदार तथा सोंठ का क्वाथ बनाकर उसमें एरण्ड तैल मिलाकर पिलाने से वातरोग ठीक हो जाता है। **मात्रा**- स्वरस- १०-२० मि.ली., क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

●●●

हरा वृक्ष नहीं नदी काटना यह सबका है मंतव्य।
रक्षा में तत्पर रहें, जान यही कर्त्तव्य॥ - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूतिका Basella alba Linn. Var. rubra Sewads. CHENOPODIACEAE

52

ENGLISH NAME:- Indianspinach. Hindi - Poi

PARTS-USED:- Leaves.

HABIT:-Large perennial twiner with fleshyleaves and stem and Flowers white.

TASTE:-Sour.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Polysaccharides, ascorbic acid, Fats and sterols.

ACTIONS: Demulcent, Diuretic.

USED IN:-Leaves are used in: Syphilitic ulcers in nose, Gonorrhoea, Fruit Juice: applied to eyes in conjuctivitis, Roots: used as poultice to reduce local swellings; Decoction to Root: To stop billiousvomiting and in intestinal Complaints.

प्रचलित नाम- पुई

प्रयोज्य अंग- पत्र।

स्वरूप-विशाल चिरस्थायी लता, पत्र तथा कांड मांसल; पुष्प श्वेतवर्णी।

स्वाद-आम्ल।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में पोलीसेकेराइड्स, एस्कोर्बीक अम्ल, मेद एवं स्टीरॉल्स घटक पाये जाते हैं।

गुण- मूत्रल, शामक।

उपयोग-इसके पत्रों का उपयोग नासिका व्रण एवं अपसर्गिका मेह में लाभकारी। इसके फल का रस नेत्र श्लेश्मलाशोथ में लाभकारी, मूल का प्रयोग-पुल्टिस के रूप में शरीर के किसी भी भाग में होने वाले शोथ पर लाभकारी। मूल के क्वाथ का प्रयोग पित्तज वमन शमन के लिये एवं आंत अवरोध में लाभकारी।

ॐ ॐ ॐ

अपराधी अपने अलावा सभी को दोषी ठहराता है।
- सिसरो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोविदार (लाल) Bauhinia purpurea, Linn. CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)

53

ENGLISH NAME:- Bauhinia-Red (Red Ebony). Hindi - Koenar

PARTS-USED:- Stem bark, Flowers & Leaves.

DESCRIPTION:-Moderate sized deciduous tree, bark is brown, leaves are deeply incised 9-11 nerved. Flowers Rosy-purple, petals oblanceolae, exerted.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Flowers Contain: Pelargonidin-3-glucoside. Pelargonidin-3-Triglucoside, Chalcon galac toside, Isoquercetin and Astragalin.

ACTIONS: Laxative, Astringent, Carminative, Anthelmintic, Rejuvenator, Tonic Wound healing Cooling.

USED IN:-Flowers in: Piles, Blood dysentery, Stembark in: Diarrhoea; Rootbark's: Powder mixed with curd in: Haemorrhoids, Leucorrhoea, Cough, Root barks paste with Ginger in: Goitre, Powder of Flowers mixed with honey is useful in Scorbutic.

प्रचलित नाम- रक्त कंचन-खैखरवाल

प्रयोज्य अंग- कांड की छाल, पुष्प एवं पत्र।

स्वरूप-मध्यम कद का सदा हरित वृक्ष इसकी छाल बदामी रंग की, पत्र अति खंडित (खंड दो) पुष्प गुलाबी बैगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन-इसके पुष्प में पेलारगोनीड़ीन - ३ - ग्लूकोसाइड, पेलारगोनीडीन - ३ - ट्रायग्लूकोसाइड चालकॉन गैलेक्टोसाइड, आइसोक्वेरसेटिन एवं एस्ट्रागैलिन घटक पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचक, ग्राही, वातघ्न, रसायन, बल्य, व्रणरोपण, शीतल।

उपयोग- पुष्प- अर्श, रक्त प्रवाहिका में, कांड त्वक् अतिसार में लाभकारी। मूल की छाल का चूर्ण दही के साथ मिलाकर, अर्श, श्वेतप्रदर एवं कास में लाभकारी। मूल की छाल का कल्क अदरख के साथ मिलाकर सेवन करने से गलगण्ड में लाभकारी। रक्तस्राव रोग में पुष्प का चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है।

पुष्पों का क्वाथ- रक्त प्रदर, रक्तार्श, रक्तमेह, कास एवं रक्तातिसार में लाभकारी। मूल का क्वाथ-कुपचन तथा आध्मान में लाभकारी।

मात्रा- छाल का चूर्ण-२-४ माशा।

पुष्प कली का चूर्ण १-२ माशा।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कचनार Bauhinia variegata Linn. CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)

54

ENGLISH NAME:- Mountain Ebony. Hindi - Kachanar

PARTS-USED:- Stembark & Flowers.

DESCRIPTION:- A moderate sized tree, leaves bilobed, upto middle, broader than long; flowers large fragrant, pink-purple, bod-flat long.

TASTE:- Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Stem bark Contains: Sugars and Tannins. Flowers: Hentria Contane, Octacosanol, Beta-sitosterol, stigma sterol, Flavonoid; Sees & Bark Contain: Myrcetol, Glycoside, kaempferol glycoside.

ACTIONS: Astringent, Tonic, Expectorant, Anti-inflammatory, anthelmintic anti leprotic, supurative, anti obenitic.

USED IN:-Flowers in: Scrofula, Prolapse rectum, Obesity, Diabetes, Controls metabolism: Stem; bark in: Skin disease, Ulcer, intestinal worms, Asthma, Tuberculous gland; Dried buds in: Pilles, Dysentery and Diarrhoea, goitre.

प्रचलित नाम- कचनार

प्रयोज्य अंग- कचनार की छाल एवं पुष्प।

स्वरूप-मध्यम कद का वृक्ष, पत्र द्विखंडी, पुष्प सुगंधित बड़े कद तथा गुलाबी बैगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन-इसके कांड की छाल में शर्करा एवं टैनिन्स, पुष्प में-हेन्ट्रीआकॉन्टेन, ओक्टाकोसानॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, स्टीग्मास्टीरॉल एवं फलेवोनोइड, बीज एवं छाल में- मिरसीटॉल, ग्लायकोसाइड, किम्फेरॉल ग्लायकोसाइड घटक पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, बल्य, कफनि:सारक, शोथहर।

उपयोग- पुष्प-गण्डमाल, गुदभ्रंश, मेदा वृद्धि, मधुमेह, चयपचय संतुलन में, कांड की छाल-चर्मरोग, व्रण, आंतकृमि, श्वासरोग, क्षय गण्ड में, सूखीकलियाँ-अर्श, प्रवाहिका एवं अतिसार में लाभकारी। गण्डमाल-इसकी छाल का चूर्ण चावल की मांड में अदरख के रस के साथ पीसकर लेप करने से लाभ। इसकी छाल या पुष्पों का क्वाथ बनाकर उसमें सोंठ का थोड़ा चूर्ण मिलाकर ४२ दिन तक प्रात: एवं सायं सेवन से लाभ होता है। सब प्रकार के गण्ड को पकाने हेतु इसके मूल चित्रक तथा अडूसा इन सबको पीसकर सात दिन तक लेप करने से लाभ होता है। व्रण शोथ- पकने वाले व्रण पर चावल की मांड़ में इसकी छाल का चूर्ण मिलाकर, गरम कर पुल्टिस बांधने से लाभ होता है। मंदाग्नि में-इसके मूल के क्वाथ का सेवन करने से अग्नि प्रदीप्त होकर भूख बढ़ती है। रक्तार्श-इसकी पुष्प कलियों को सुखाकर चूर्ण बनाकर समभाग में मिश्री का चूर्ण मिलाकर, इसे मक्खन में मिलाकर प्रतिदिन तीन बार सेवन से लाभ होता है। रक्तदोष में-इसकी सूखी पुष्प कलियों का क्वाथ बनाकर सेवन से लाभ होता है। मुखगत व्रण में-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसकी अंतर छाल तथा अनार के पुष्पों को जल में उबालकर इसके ठंडे जल द्वारा दिन में तीन-चार बार कुल्ला करने से लाभ होता है। खाँसी में-इसकी पुष्प कलियों का क्वाथ ठंडा होने के पश्चात् मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। यह प्रयोग रक्त प्रदर में भी लाभकारी सिद्ध हुआ है। दंतशूल में-इसकी सूखी टहनियों को जला कर बारीक पीसकर इसकी राख को छानकर प्रतिदिन इसका दंत मंजन करने से लाभ होता है। जीर्ण विबंध तथा रक्तार्श में:- इसकी कलियों का गुलकंद उपयोग में लाया जाता है। गुलकंद बनाने की विधि-कचनार की अर्ध विकसित डेढ़ किलो ग्राम कलियाँ एवं दो किलोग्राम चीनी लेकर घी वाले पुराने मिट्टी के बर्तन में सबसे पहले थोड़ी चीनी फैला दो उस पर अंदाजित २५० ग्राम कलियाँ, बिछा कर उस पर फिर चीनी बिछा दो उस पर फिर कलियाँ बिछानी चाहिये, इस तरह चीनी तथा कलियों के स्तर करने के पश्चात इस बर्तन को अच्छी तरह बंद कर सात से आठ दिन तक सूर्य की गर्मी में रखना चाहिए, गुलकंद तैयार हो जायेगी तथा उपरोक्त रोगों में प्रतिदिन प्रात: काल दूध के साथ २० तोला गुलकंद का सेवन करने से लाभ होता है। प्रमेह पौष्टिकता के लिये तथा वृद्धिगत गण्डमाल में-कचनार की छाल का चूर्ण २५० ग्राम इसमें २५० ग्राम, चीनी मिलाकर प्रात:-सायं ५-१० ग्राम चूर्ण जल या दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। बच्चों के अस्थि विकार (कुबड़ेपन में)-इसकी छाल का क्वाथ प्रवाल की भस्म के साथ सेवन करना चाहिये, या कचनार के पुष्प या पत्रों का चूर्ण ढाई तोला तथा प्रबल भस्म १/१६ ग्राम चीनी के साथ सेवन से लाभ होता है। इसके सेवन के पश्चात् दूध पिलाना चाहिए।

मात्रा- छाल का चूर्ण-३-५ ग्राम।
छाल का क्वाथ-४०-८० मि.ली.।
पुष्प रस- १०-२० मि. ली.।

●●●

जीवन दया पालणी, रुखा लीला नहीं जावे।
-विशनोई

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दारुहरिद्रा Berberis aristata DC. BERBERIDACEAE

55

ENGLISH NAME:- Indian Berberry. Hindi - Daruhaldi/Kilmora
PARTS-USED:- Root bark, stem, wood and Fruits.
DESCRIPTION:-Alarge decidous spiny herb, 6-12 feet high, flowersgolden yellow.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: About eight types of alkaloids like Berberine, Oxycanthine, Berbamine, Palmatine, jatrorrhisine, Columbamine, Berberrubine Hydrastine but Berberine Oxycanthiine and Berbamine are more important also Contains gum & starch; Fruit Contains: Malicacid, Tarteric acid and Citricacid.
ACTIONS: Astringent Alterative, Antifertility Anti bacerial, Anti Tonic, Stomachic, Antipyretic, Rejuvenator, Blood purifier, Laxative, Wound healing.
USED IN:-Malaria, Indigestion, Skin disease, Leucorrhoea, Menorrhagia, Jaundice, Severe diarrhoea, Cholera Effective Control Over gastroenteristis in children; Snake bite Liver and spleen megaly Mainly used in Eye, Ear, Oral cavity diseases.

प्रचलित नाम- दारुहल्दी
प्रयोज्य अंग-मूल की छाल, कांड, काष्ठ एवं फल।
स्वरूप-पतनशील कंटक युक्त विशाल गुल्म, पुष्प स्वर्णिम पीत वर्णी।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में लगभग आठ तरह के क्षाराभ पाये जाते हैं, जो इस तरह है बर्बेरिन, ऑक्सीकेन्थीइन, बर्बेमाईन, पामेटाईन, जेट्रोहाझाईन, कोलम्बेमाईन, बरबेरूबाइन, हाइड्रेस्टाइन परन्तु बर्बेरिन, ओक्सीकेन्थीन एवं बर्बेमाईन विशेष महत्त्व के हैं। इसमें गोंद एवं स्टार्च भी पाये जाते हैं, इसके फल में मैलिक अम्ल, टार्टेरिक अम्ल एवं सिट्रीक अम्ल पाये जाते हैं।
गुण- ग्राही, विपर्यय, कीटाणुघ्न, गर्भ निरोधक, दीपन, ज्वरघ्न, रसायन, रक्तशोधक, मृदुरेचक, व्रणशोधक।
उपयोग- मलेरिया, कुपचन, चर्मरोग, श्वेतप्रदर, अत्यार्त्तव, कामला, बच्चों के जीर्ण अत्यातिसार, हैजे (विसूचिका) में, बच्चों के जठरान्त्र शोथ में प्रभावी नियंत्रण करती है। सर्प दंश एवं यकृत-प्लीहा वृद्धि में लाभकारी। इस औषधि का प्रयोग विशेषत: नेत्र, कर्ण, मुख सम्बन्धी रोगों को दूर करने में किया जाता है। श्वेत प्रदर में-इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर, इनको कूटकर इसमें थोड़ी शर्करा मिलाकर २० ग्राम लेकर इसमें १६० मि.ली. जल में पकाकर ५० मि.ली. जल शेष रहे, तब तक गर्म करना चाहिए, इसको छानकर इसके दो हिस्से कर प्रात: सायं एक-एक मात्रा का सेवन करना चाहिये। दो सप्ताह तक सेवन करने से लाभ होता है। इसकी क्वाथ में शर्करा मिलाये बगैर कुल्ला करने से मुँह में पड़े छालों को आराम मिलता है। कामला में-इसका चूर्ण (दारुहरिद्रा) दो-दो ग्राम प्रतिदिन तीन बार मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। औषधि सेवन के पश्चात् एक-दो घूँट जल पीना चाहिए।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाजवन्ती
अलम्बुषा : झुलीपुष्प Biophytum sensitivum (Linn) D.C. OXALIDACEAE (GERANIACEAE)

56

ENGLISH NAME:- Sensitive Plant. Hindi - Lajadhur

PARTS-USED:- Wholeplant, Leaves, seeds.

DESCRIPTION:-A small herb with Sensitive on touch with pinnate compound leaves alternati, leaflet 5-11 pairs, Flowers Yellow with long pedicle, terminal; capruleellipsoid.

TASTE:-Tasteful.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:- Cooling, Astringent, Tonic, Stimulant, Anthelmintic.

USED IN:-Chest Complaints, Cramp and inflammatory tumour; Seed's Powder: Applied on wounds, Leaves Astringent, Diuretic, Antiseptic and Styptic; Juice or Paste of Whole Plant applied on Cuts, Wounds: Decotion in Asthma, Tuberculosis; Root's Decoction in: Fever, Gonorrhoea & Urinary Calculii.

प्रचलित नाम- लकजन

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र एवं बीज।

स्वरूप-लघु गुल्म, संवेदनशील संयुक्त पत्र जो भूमि पर प्रसरणशील होते हैं। पुष्प पीत वर्णी जो लम्बे पतले दंड पर होते हैं।

स्वाद-स्वादिष्ट ।

रासायनिक संगठन-

गुण- शीतल, ग्राही, बल्य, उत्तेजक, कृमिघ्न।

उपयोग- फुफ्फुसगत रोगों में, शोथमयगण्ड तथा शूलयुक्त स्नायु संकोचन, बीज का चूर्ण जख्मी अंग एवं व्रण पर प्रयोज्य, पत्र-ग्राही, मूत्रल, प्रतिरोधी एवं रक्तरोधी (रक्त स्तम्भक), स्वरस अथवा कलक का बाह्य प्रयोग कटे हुए अंग एवं व्रण पर लाभकारी, पत्रों का क्वाथ-श्वास रोग एवं यक्ष्मा में- मूल का क्वाथ-ज्वर में अपसर्गिका मेह एवं मूत्राशय अश्मरी में लाभकारी। मूल को पीसकर इसका लेप अर्श पर करने से लाभ होता है।

मात्रा- स्वरस- १०-२० मि.ली.।

●●●

यदि कोई शुभ संकल्प मन में आये तो उसे पूरा करने में विलम्ब मत लगाओ। -पूंज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्त पुनर्नवा Boerhaavia diffusa Linn. NYCTAGINACEAE

57

ENGLISH NAME:- Hogweed Horsse Purslene. Hindi -

PARTS-USED:- Fresh whole plant, Root, Leaves and Flowers.

DESCRIPTION:-A small perennial Creeping herb with purplish Stem and divaricate branches and branches areswollen at nodes.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Alka loids-Punarnavan, Sterol, Beta-sitosterol, Alpha-2 sitosterol, Elentine, Stearicacid, Palmiticacid, Minerals: Potassimnitrate, Sodium sulphate and Chloride.

ACTIONS: Laxative, Stomachic, Stimulant, Anti-inflammatory Antibacterial & Antiviral, Diphoretic.

USED IN:-Asthma, Anaemia, Jaundice, Scanty urine, internal inflammation, Snake venam, Epilepsy, Heart disease, Eye-troubles, Cough Bronchitis, Mycocardial Stimulant.

प्रचलित नाम- लाल पुनर्नवा

प्रयोज्य अंग- ताजा पंचांग, मूल, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-चिरस्थायी प्रसरणशील लघु गुल्म, कांड बैंगनी रंग का, शाखाएँ अग्र भाग से झुकी तथा पर्व से फूली हुईं होती है। पुष्प छोटे-छोटे गुलाबीरंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त ।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में एल्कलॉयड्स, पुनर्नवान, स्टीरॉल, बीटा, सिटोस्टीरोल, एल्फा-२ सिटोस्टीरॉल, एलेन्टीन, स्टीयरीक अम्ल, पामीटिक अम्ल, क्षार-पोटेशियमनाइट्रेट, सोडियम सल्फेट एवं क्लोराइड पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचन, दीपन, उत्तेजन, विषघ्न, शोथहर कीटाणुघ्न, विषाणुघ्न, स्वेदल।

उपयोग- श्वासरोग, पाण्डुरोग, कामला, मूत्राल्पता, आंत्रशोथ, सर्पविष, अपस्मार, हृदयरोग, नेत्ररोग, (नेत्राभिष्यंद) कास, श्वसनीशोथ, हृदयस्नायुत्तेजक। नेत्ररोग (नेत्राभिष्यंद) में इसके ताजे मूल को मधु में पीसकर आँख में लगाते रहें। इसके पत्रों का शाक शोथ तथा कुपचन में लाभकारी। अश्मरी में इसके मूल को दूध में उबालकर पिलाने से अश्मरी नष्ट होती है। अनिद्रा रोग में श्वेत पुनर्नवा के मूल का क्वाथ पिलाने से नींद आती है। पाण्डुरोग में इसके पंचांग के रस में हरड़ का चूर्ण मिलाकर नित्य सेवन कराना चाहिए। मूत्रावरोध में इसके पंचांग के एक कप स्वरस का सेवन कराना चाहिए।

रक्तार्श में इसके मूल को पीसकर छाश या बकरी के दूध में सेवन कराना चाहिए। हृदयरोग में-इसके कारण सर्वांग शोथ में इसका मूल १० ग्राम तथा अर्जुन की छाल १० ग्राम का क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए। मोतिया बिन्द में श्वेत पुनर्नवा के पुख्त बड़े मूल को भृंगराज

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रस में घिस कर आँख में अंजन करना चाहिए। मेद वृद्धि में इसके पंचांग का दो चम्मच चूर्ण मधु में मिलाकर प्रातः सायं सेवन कराने से शरीर की स्थूलता तथा चर्बी कम होती है।

सभी प्रकार के ज्वर में एक कप दूध में एक कप जल मिलाकर इसमें २० ग्राम इसके मूल को उबाल कर, जल को जला देने के बाद बचा हुआ क्षीर पाक के सेवन से सभी प्रकार के ज्वर में लाभ होता है। नेत्र कण्डु में आँखों में खुजली होती हो, तो श्वेत पुनर्नवा के मूल को दूध में घिसकर आँख में अंजन करने से लाभ होता है। मूत्राल्पता एवं जलन में इसके मूल का चूर्ण आधा-आधा तोला प्रतिदिन दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। वृद्धावस्था में प्रोस्टेट ग्रंथि में वृद्धि इसके मूल का चूर्ण नियमित सेवन करने से लाभ होता है। यकृत वृद्धि तथा कामला में इसके मूल का क्वाथ प्रतिदिन सेवन से लाभ होता है, या पुनर्नवा मूल एक तोला एवं सहिजन की छाल एक तोला दोनों का क्वाथ बनाकर सेवन करने से यकृत सूजन में लाभ होता है। यह दोनों वनौषधियाँ एण्टीवायोटिक मानी जाती हैं, जबकि एण्टीवायोटिक के सेवन से शरीर में अन्य खराब प्रभाव पड़ते हैं, किन्तु आयुर्वेद में यह दोनों (सहिजन तथा पुनर्नवा) कभी भी हानिकारक प्रभाव नहीं करती सदैव लाभकारी ही सिद्ध हुई हैं। इनका प्रयोग किसी भी प्रकार की सूजन में किया जा सकता है। इस क्वाथ का प्रयोग अन्य रोगों में भी किया जा सकता है। उरस्तोय (प्ल्युरसी) में:-फेफड़ों के स्तर में सूजन या फेफड़ों के जलोदर में। जलोदर, अंतर्विदधि (एपेन्डीसाइटिस) हृदयावरण शोथ (पेरीकार्डाइटिस), वृक्कशोथ (नेफ्राइटिस) गर्भाशय शोथ (एण्डोमेट्राइटिस), यकृत वृद्धि (लिवर सोरोसीज), कामला (हिपेटाइटिस) अश्मरी-मूत्राशय (स्टोन इन दी ब्लेडर), मूत्रघात (रीटेन्शन ऑफ यूरिन)-इन सब रोगों में पुनर्नवा का प्रयोग स्वरस, चूर्ण क्वाथ या आसव रूप में किया जा सकता है। इसके सेवन समय लवण का प्रयोग वर्जित है तथा केवल गाय या बकरी का दूध ही पीना चाहिए।

बागभट्ट के अनुसार पुनर्नवा के ताजे मूल का चूर्ण दो तोला-दो सप्ताह तक, माह, दो माह छः माह या एक वर्ष तक दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध व्यक्ति भी युवावस्था प्राप्त करता है। **मात्राः**- स्वरस- १०-२० मि.ली.।

●●●

'समय को व्यर्थ गँवाना और श्रम से जी चुराना यह दो दुर्गुण जीवन को बर्बाद करने के लिये पर्याप्त है।' -पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्षप/कटु स्नेह Brassica campestris, Var. Sarson. Prain. BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)

58

ENGLISH NAME:- Yellow sarson/Indian Colza/Rape seed. Hindi - Sarson
PARTS-USED:-Seeds and oil.
DESCRIPTION:- A large erect, herb, having different types of leaves; leaves glaueous, lower stem clasping. Flowers yellow, With long terminal raceme, Fruits long thin siliqua, seeds globose, black, pitted.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:-Alkaloid-Cinapene; Myrocene, Cinigrin, Inosyte, Albumins, Gums, Colouring matter, Volatile oil, Erucic acid; Protein.
ACTIONS:-Bitter, Fatty, Pungant, Digestive (Leaves) Laxative; Seeds & Leaves, Antipuritic.
USED IN:- Alliviate kapha, Carminative, Increases Apitize Scorbutic Spermatorrheal, used in Puritic, worms infestation Leucoderma, Leprosy, Epilepsy, Insomnia, Dental disorder.

प्रचलित नाम- सरसों
प्रयोज्य अंग- बीज एवं तेल
स्वरूप-उन्नत छोटे गुल्म भिन्नपर्णी, पुष्प पीतवर्णी जो लम्बी कलगी में एवं फल लम्बी फलियों के रूप में होते हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसके बीज में सिनापिन नामक एल्कलोइड है, इसके अतिरिक्त माइरोसिन, सिनिग्रीन, आइनोसाईट, आल्ब्युमिन्स, गोंद, रंगीन पदार्थ, उड़नशील तैल, एरुसिक एसिड प्रोटीन तथा स्थिर तैल।
गुण-तिक्त, स्निग्ध, तीक्ष्ण, पाचन (पत्र) मृदुरेचन (पत्र तथा बीज) कण्डुघ्न।
उपयोग-कफ, वातनाशक, रक्तपित्त तथा जठराग्नि को बढ़ाने वाला शुक्र नाशक, कण्डु, कृमि एवं श्वित्र तथा कुष्ठरोग नाशक, अपस्मार उन्माद तथा वातरक्त दाँत के रोगों में लाभकारी। कुष्ठ रोग में-सरसों का तेल कुष्ठरोग में अति उपयोगी है। उरुस्तंभ में-करंज फल तथा सरसों को गोमूत्र में पीसकर लेप करना चाहिए। श्लीपद में-इस रोग के नाश के लिये सरसों के तेल का सेवन करना चाहिए। अपस्मार तथा उन्माद में-करंज के बीज तथा सरसों के बीज समभाग लेकर गोमूत्र में पीसकर गोली बना कर छाया में सुखा लें। अपस्मार तथा उन्माद के रोगी की आँख में अंजन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है। आमवात- सरसों के उष्ण तेल में कपूर मिलाकर मालिश करने से लाभ होता है। दाँत के रोगों में-सैन्धव लवण में सरसों का तेल मिलाकर दाँतों पर अंगुली से घिसना चाहिए। सभी प्रकार के दंतरोगों में लाभ होता है। वातरक्त में-सरसों के बीजों का चूर्ण-लेप करना चाहिए। श्लीपद में-बैंगन के पत्ते तथा सरसों के बीज को पीसकर लेप करना चाहिए। सरसों के पौधों के कोमल पत्ते एवं कांड का शाक बनाकर खाना चाहिए है। सरसों का तेल उत्तम प्लीहाघ्न है। सरसों के तेल की मालिश त्वक् रोगों एवं वात विकारों में की जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजिका Brassica juncea Ezern & Cass BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)

59

ENGLISH NAME:- Indian mustard. Hindi - Bari Rai

PARTS-USED:-Seeds.

DESCRIPTION:- A small erect herb lined with reddish parple with simple leaves pimatifid lamina deeply incised, flowers yellow racerned fueling to white, siliqua 4-6 cm. Oeng beaked; seed black, small, globose.

TASTE:-pungent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain:-Essential Oils, Isothiocyanates, 2 Antithiamine comppunds, Flavonol glycosides, It also contain Protein, Oil & Fibres Oil is more clear and doesnot give smell like Indian colza.

ACTIONS:-Digestive, Stomachic, Stimulant, Diphoretic, Emetic.

USED IN:- Oil: Cures swelling and Colic, Leucorrhoea, Polyuria, Oil added with garlicjuice: applied externally in Rheumatic arthritis, oil is Antispasmogenic and Neuralgic, Sour water of Rai is Anthelmintic.

प्रचलित नाम- लालराई

प्रयोज्य अंग- बीज

स्वरूप- छोटे उन्नत गुल्म, पत्र सरल किन्तु पत्र फलक अति खंडित, पुष्प हल्के पीतवर्णी होते हैं।

स्वाद-तीक्ष्ण।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में उत्पत्त तेल, आईसोथायोसायनेट्स दो एन्टीथायमिन यौगिक, फलेवोनॉल, ग्लायकोसाइड्स इसके अतिरिक्त इसमें प्रोटीन तेल एवं रेशे पाये जाते हैं। इसका तेल अधिक स्वच्छ एवं सरसों की जैसी गंध इसमें नहीं होती।

गुण-पाचन, दीपन, उत्तेजक, स्वेदजनन, वमन।

उपयोग-तेल के प्रयोग से शोथ एवं शूल में लाभ होता है। इसके उपरांत श्वेत प्रदर एवं प्रमेह में लाभ। लहसुन का रस तेल में मिलाकर इसका बाह्य प्रयोग आमवात एवं संधिशोथ पर उपयोगी, इसका तेल उद्वेष्टन निरोधी एवं वात व्याधि रोग में। राई का खट्टा पानी कृमिघ्न गुण वाला होता है। राई को पीसकर इसके लेप से आंतरिक शोथ में लाभ होता है। प्रतिश्याय में इसके तेल को नाक पर मलते हैं।

मात्रा- बीज का चूर्ण- १ से ३ ग्राम।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेली Brassica oleracea Linn Var, Capitata Linn. BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)

60

ENGLISH NAME:- Cabbage. Hindi - Karamkalla/Bandgobhi

PARTS-USED:-Seeds.

DESCRIPTION:- A small Suffruticose herb, stem small, leaves forming elenre capitular rosette; flr-in raceme, white.

TASTE:-Agreeable Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains:-Alkaloid, Protein, Sugar and oil.

ACTIONS:-Diuretic, Laxative, Stomachic, Digestive, Appitizer, Cooling Astringent.

USED IN:- Rheumatism, Headache, Chronic Cough, Inflammation of Spleen, Emmenagogue, Polyuria, Leprosy, Dyscrasia, Vertigo and Fever.

प्रचलित नाम- पत्ता गोभी

प्रयोज्य अंग- बीज

स्वरूप-भूमि स्पर्शी छोटे गुल्म के रूप में।

स्वाद-स्वीकार्य मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में एल्कलॉयड, प्रोटीन, शर्करा एवं तैल पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, मृदुरेचन, दीपन, पाचन, रुचिकर, शीतल, ग्राही।

उपयोग-आमवात, शिर:वेदना, जीर्णकास, प्लीहाशोथ, आर्त्तवजनन, प्रमेह, कुष्ठरोग, रक्तदोष, भ्रम एवं ज्वर में इसका उपयोग लाभकारी है।

●●●

आप दुनिया में सबसे महान् पुरुष हैं। एक ही दुर्गुण उसे ढके हुए है, वह दुर्गुण है-सद्गुणों को व्यवहार में न लाना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्णबीज Bryophyllum calycinum Salib. Syn. Kalanchoe pinnata Pers. CRASSULACEAE

61

ENGLISH NAME:- Life Plant/Stonecrop. Hindi - Ghavpatta
PARTS-USED:-Leaves and its juice.
DESCRIPTION- A perennial stout erect herb with simple or pinnate type of fleshy leaves. with Crenate margin, opposite, Flowers tubular & Red.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contains: Alkanes, Hentriacontaine, Tricontane, Alpha and Beta-Amyrin, Beta-Sitosterol, Fumaricacid, Malic acid, Citricacid, Quercetin, Kaempferol, Calcium sulphate, Acid tartrate of potassium & Calcium oxalate.
ACTIONS:-Wound healing, Styptic, Astringent, Stimulant.
USED IN:- Polyuria, Disuria, Ulcers, Diarrhoea, Dysentery, Tuberculosis, Roasted Crushed Leaves: Applied externally to wounds, Cuts, Ulcers, Bite of Venomous insects; bleeding, cholera, Calculii.

प्रचलित नाम- पथरचूर

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं इसका स्वरस

स्वरूप-मजबूत उन्नत चिरस्थायी गुल्म, मांसल पक्षवत, गोल दंतुरकिनारी वाले पत्र, पुष्प नलिकाकार रक्तवर्णी।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में-एलकेन्स, हैन्ट्रियाकोन्टेन, ट्रायकोन्टेन, आल्फा तथा बीटा-ऐमिरिन, फ्युमेरीक अम्ल, मैलिक अम्ल, सिट्रीक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरोल, क्वेरसैटिन, किम्फेरॉल, कैल्शियम सल्फेट, पोटेशियम का एसिडटारट्रेट तथा कैल्शियम ऑक्सेलेट तत्व पाये जाते हैं।

गुण-व्रणरोपण, रक्तस्तंभक, ग्राही, उत्तेजक।

उपयोग-प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, अतिसार, प्रवाहिका, यक्ष्मा में लाभकारी। इसके पिसे हुए तथा सिके हुए पत्रों का बाह्य प्रयोग घाव, कटे हुए हिस्से, व्रण विषैले कीटदंश में लाभकारी। रक्तस्राव, विसूचिका तथा अश्मरी में लाभकारी। रक्त युक्त अतिसार में इसके पत्रों का रस आधा तोला, घी एवं जीरा (दुगुना) के साथ देने से खून बहना बंद होता है। चोट, मोच, व्रण, फोड़े एवं कीटदंश पर-पत्रों को थोड़ा गरमकर कूटकर बांधने से सूजन एवं वेदना कम होती है। घावों पर-इसके पत्ते गरम कर एवं पीसकर बांधने से लाभ होता है। किसी भी प्रकार का घाव (जख्म) हुआ हो तथा रक्त स्राव होता हो, तो पत्रों का रस निकाल कर जख्म पर अच्छी तरह लेप कर, पत्रों का कल्क रखकर पट्टी बांध देनी चाहिए, रक्त स्राव बंद हो कर जख्म शीघ्र ही भर जाता है। रक्त मिश्रित प्रवाहिका में- इसके पत्रों का रस सेवन करने से आंतों के अंदर पड़े हुए छालों में से रक्त बहता हो, तो नित्य १/४ से आधा तोला पत्रों का रस थोड़ा-सा घी डाल कर सेवन से रक्त बहना बंद हो जाता है। इस पौधे को प्रत्येक घर में गमले में लगाकर रखना चाहिए। उपरोक्त उपचार के अतिरिक्त इसके पत्तों के रस का सेवन करने से मूत्राशय अश्मरी निकल जाती है।

मात्रा-१/४-१/२ तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलाश : Syn: Butea monosperma (Lamk.) Taub Butea frondosa koenex Roxb FABACEAE

(LEGUMINOSAE) 62

ENGLISH NAME:-Flame of the Forest. Hindi - Dhak, Chheola Tesu Gum- Kamarkas
PARTS-USED:-Bark, Flowers, Seeds and Gum.
DESCRIPTION:- A moderate sized deciduous tree, about 15 meter high, leaves rough trifoliate, obovati laterases smale unequal sided flowers bright orangered indense raceme pod flate silky outside, seeds, orbicalar flat.
TASTE:-Bitter (Flowers)
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Fats, oils, Mucilage, Protein, Resin, Butin, Glucoside, Butein, Isomonospermoside, Coreopsin, Sulphurein, Palasttrin, Butrin, Isobutrin; Agun which contains Thiamine and Riboflavin; Fatty acids Myristicacid, Palmitic, Stearic and Arachidicacid.
ACTIONS:-Anthelmintic, Carminatrve, Anti-inflammatory, Diuretic, Astringent, Aphrodisiac.
USED IN:- Piles, Intestinal worms, Seeds: in scabies, Pruritus, Ringworms, Gum: useful in Diarrhoea & Dysentery.

प्रचलित नाम-ढाक टेसू

प्रयोज्य अंग- छाल, पुष्प, बीज एवं गोंद।

स्वरूप-मध्यम आकद का पतनशील वृक्ष जिसकी ऊँचाई औसतन १५ मीटर होती है, पते खुरदरे, त्रिपत्री, पुष्प चमकीले नारंगी-रक्तवर्णी।

स्वाद-तिक्त (पुष्प)

रासायनिक संगठन- इस वनस्पति में वसा, तेल, श्लेष्म, प्रोटीन, रोंल, ब्युटिन, ग्लूकोसाइड, ब्युटेन, आइसो, मोनो स्पर्मोसाइड, कॉरियोप्सीन, सल्फयुरेन, पालास्ट्रीन, ब्युटीन, आइसोब्युट्रिन, इसमें एक गोंद पायी जाती है, जिसमें थायमिन एवं रीबोफ्लेवीन होते हैं। इसमें पाये जाने वाले वसा अम्लों में मिरस्टीक, पामीटिक, स्टीयरीक एवं ऐरेकीडीक अम्ल होते हैं।

गुण-कृमिघ्न, वातघ्न, शोथहर, मूत्रल, ग्राही, वाजीकर।

उपयोग-अर्श, आंतकृमि में, बीज के प्रयोग से कुष्ठरोग, कण्डुरोग, दद्रु में लाभ। इसके गोंद के प्रयोग से अतिसार एवं प्रवाहिका में लाभ होता है। इसकी गोंद का प्रयोग भोजन के पश्चात् करने से प्रवाहिका एवं अतिसार में लाभ होता है। इसके बीज को नीबू के रस में पीसकर चर्मरोग में लाभ। फूलों का फांट मूत्रावरोध में लाभकारी।

अतिसार में-इसके बीज का क्वाथ बनाकर, इससे एक चम्मच तथा बकरी का दूध एक चम्मच मिला कर दिन में तीन बार सेवन करने के उपरांत भोजन में बकरी का उबला हुआ एवं ठंडा किया हुआ दूध तथा चावल ही लेना चाहिए। अर्श में इसके ताजे पत्रों की भाजी घी में छोंक लगाकर दही की मलाई के साथ सेवन से लाभ होता है। चर्मरोग-कुष्ठ, खाज-खुजली, दद्रु, सोरायसिस, श्वित्र, इसके बीज को नीबू के रस में पीसकर इसका लेप रोग ग्रस्त भाग पर करने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके फूलों को जल में उबालकर इस जल से स्नानादि करने से तथा रोगग्रस्त भाग को इससे धोने से लाभ होता है। नेत्ररोग में-रात्रि अंधता में, इसके मूल का अर्क नेत्र में अंजन करने से लाभ होता है।

हाथी पगा (श्लीपदा) रोग में- इसके मूल के रस में सम भाग सफेद सरसों का तेल मिलाकर दो-दो चम्मच प्रातः एवं रात्रि समय पीने से लाभ होता है। संधिवात में-इसके बीज को मधु के साथ महीन पीसकर शूल युक्त भाग पर लेप करने से लाभ होता है। प्रतापी पुत्र प्राप्ति के लिये- गर्भधारण पश्चात प्रारंभ से ही इसका कोमल एवं ताजे पत्र को गाय के दूध में पीसकर इसी दूध के साथ पीने से शक्तिशाली बालक का जन्म होता है।

रसायन प्रयोग-इसके पंचांग का छाया-शुष्क चूर्ण एक-एक चम्मच प्रातः-सायं असमान भाग मधु एवं घृत में एक वर्ष तक सेवन करने से निरोगी रह दीर्घायु होकर बुढ़ापा नहीं आता। पित्ताभिष्यन्द में-पलाश के पुष्पों के रस में मधु मिलाकर नेत्रों में अंजन करने से लाभ होता है। रक्तपित्त में-इसके पंचांग के रस में घी को पकाकर ठंडा होने पर मधु के साथ सेवन करना चाहिए। शरीर में ज्वर के कारण जलन होने पर-पलाश के पत्रों का रस शरीर पर लगाने से दाह प्रक्रिया का शमन होता है।

गर्भाधान रोकने के लिये-पलाश के बीजों को महीन पीसकर इसमें घी तथा मधु मिलाकर ऋतु चक्र समय योनि पर लेप करने से कभी भी गर्भ धारण नहीं होता। बिच्छु डंक में-पलाश के बीज को अर्क के दुग्ध में घिसकर दंश पर लगाने से वेदना कम होकर आराम मिलता है। व्रण रोपण के लिये-पलाश गोंद का सूक्ष्म चूर्ण अत्यंत ही व्रणरोपण गुण वाला है। प्रमेह में-पलाश के पुष्पों का चूर्ण, आधा तोला मिश्री का चूर्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ।

मात्रा- क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।
पुष्प चूर्ण- ३-६ ग्राम।
बीज का चूर्ण- ३-५ग्राम।

●●●

'प्रशंसकों पर ही प्रसन्न न हों, महत्त्व उन्हें भी दें, जो सही आलोचना कर सकते हैं।'

- पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Bonduc Nut (Fevernut) Hindi - Gateran, Seed - Sagar goti
PARTS-USED:-Root, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- A large perennial, scandent, prickly, extensive, shrub with yellowspines and flowers leaves large with a pair of reduced pinnal at base pinnae 12-16, pinnules oblong, mucronate, pod rhomboid, echinate seed sphirical, led coloured.
TASTE:-Very Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains:-Fattyoils, Starch, Sucrose Caesalpins, Bonducellin, Fatty acids, Phytosterinin, Saponins Phytosterols, Aminoacids, A bitter glucoside Bonducin.
ACTIONS:-Thermogenic, pungent, Anti-in flammatory, Antipyretic, Antimalarial, Styptic anti leprotic, anthelmintic, digestive, Anti-bronchitis.
USED IN:- Powder of Seeds in Colic pain, chronic fever, Leprosy, Antidote, Malarial fever, urogenital diseases, biles, ulcers, flatalence.

प्रचलित नाम- कंट करंज

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र एवं बीज

स्वरूप-चिरस्थायी महाकाय कटक युक्त झकुी हुई घनी लता जैसा क्षुप, पुष्प तथा कंटक पीतवर्णी।

स्वाद-अति तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में वसा तैल, स्टार्च, सुक्रोज, सीझालपिन्स, बौन्डुसेलीन, वसा अम्ल, फायटोस्टेरीनिन, सेपोनिन्स, फायटोस्टीरोलस, एमीनो अम्ल, एक तिक्त ग्लूकोसाइड्स बोन्डुसिन घटक पाये जाते हैं।

गुण-शोथहर, ज्वरघ्न, विषम ज्वर नाशन, रक्त स्तंभन।

उपयोग-बीज का चूर्ण आंतशूल, जीर्णज्वर, कुष्ठरोग, विषघ्न, विषमज्वर में अति लाभकारी। बीज का चूर्ण काली मिर्च के साथ पीसकर ज्वर से पूर्व देने पर अतिलाभदायक है। यह बल्य गुण वाला है, इसलिए ज्वर के पश्चात् सेवन से बल मिलता है। बीज का चूर्ण सेवन से प्रसूतावस्था में सभी प्रकार के रोगों में लाभ होता है। मूल एवं पत्रों का रस जीर्ण ज्वर शीत-पित्त एवं चर्मविकारों में लाभ। दुष्ट व्रण में कंट करंज एवं करंज दोनों के तेल का मिश्रण का प्रयोग इन व्रणों पर करनें से लाभ होता है। गुल्म में-कंट करंज एवं अमलतास के कोमल पत्रों को घी में सेक कर सेवन करने से लाभ होता है। कृमिरोग में-इसके पत्रों का स्वरस मधु के साथ सेवन करने से कृमिनष्ट हो जाते हैं। अम्लपित्त में-इसके फल के शृंग घी में सेक कर रोगी को सेवन कराने के पश्चात् गुनगुना जल पिलाना चाहिये। चेचक में- इसके पत्रों का रस एवं आँवले का रस मिश्री तथा मधु में मिलाकर पिलाने से कफजन्य शोथ नष्ट होता है। इसके कोमल पत्रों का प्रयोग विषम ज्वर तथा आंत कृमियों में तथा यकृत रोग में अत्यंत लाभकारी। इसके बीज मलेरिया तथा प्रसूति ज्वर में अत्यंत लाभकारी। यह गर्भाशय संकोचक होने के कारण प्रसूतावस्था में ज्वर के समय सेवन कराना चाहिए। इसके बीज के तेल का प्रयोग अकड़न में लाभकारी है।

मात्रा- बीज का चूर्ण- ५ से १० मि. ग्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रियंगु Callicarpa macrophylla (Linn) Vahl. VERBENACEAE

64

ENGLISH NAME:- Flowers Priyangu. Hindi - Priyangu

PARTS-USED:- Roots and Leaves.

DESCRIPTION:-A shrub about 2-3 meter high, branches irregularily spreading Flowers pink.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Calliterpenone, Crategolicacid, 2 Alpha-Hydroxyursolic acid, Beta-Sitosterol, Apigenin, Luteolin, Propitonic acid, Fatty acids.

ACTIONS: Cooling, Stomachic, Analgesic, Tonic.

USED IN:-Heated Leaves on Rheumaticparts; Oil of Root: Aromatic, useful in Vertigo and burning sensation, Fever and vomiting.

प्रचलित नाम- डइया: बूढ़ी घासी

प्रयोज्य अंग- मूल एवं पत्र।

स्वरूप-दो-तीन मीटर ऊँचा क्षुप जिसकी शाखाएं अनियमित तरीके से फैली हुई पुष्प गुलाबी रंग के।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके वनस्पति में-कैलीटर्पेनान, क्रेटेगॉलिक अम्ल २ आल्फा-हाइड्रॉकसी-अर्सोलिक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरॉल ऐपीजेनिन, ल्युटियोलिन, प्रोपियोनिक अम्ल, वसा अम्ल घटक पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, पाचन, वेदना हर, बल्य।

उपयोग- पत्रों को गर्म कर आमवात संधि शोथ स्थानों पर बांधने से लाभ होता है। मूल का तेल सुगंधित होता है, इसका प्रयोग भ्रम एवं दाह, ज्वर में तथा वमनशामक है। इसका फल कफ, पित्त नाशक है। यह औषधि रक्त एवं पित्त की अतिवृद्धि को शांत करती है।

मात्रा- १-३ माशा।

ॐ ॐ ॐ

भुखमरी से जितने लोग मरते हैं, उससे दोगुने लोग ज्यादा खाने के कारण करते हैं।

- पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अलर्क: मंदार Calotropis procera (Ait) R. Br. ASCLEPIADACEAE

65

ENGLISH NAME:- Shallow wort. Hindi - Aak/Akua/Madar

PARTS-USED:- Root, Leaves, Flowers and Latex.

DESCRIPTION:-An erect shrub, young parts clothed with white cotony pubescence, Latex (Milky) flowers in umbel cymes.

TASTE:-Slightly Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Cardiac Steroid glycoside-terpenoids. Resin, Glycosides, Carbohydraties, Aluminum, Iron, Magnessium, Sodium.

ACTIONS:-Analgesic, Resolvent, Anti-inflammatory, Emetic, Expectorant, Stomachic, Digestive, laxative, anthelmintic, depurative.

USED IN:- Skindiseases:- Leucoderma, Eczema, Ulcer, Piles, spleenomegaly, Dropsy, stranguory, Anthelimintic: Fresh Leaves in: Rheamatiod Arthritis, Inflammation; Dried & yellow Leaves. Useful in cough and Asthma.

प्रचलित नाम- रक्तार्क अर्क

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, पुष्प एवं क्षीर।

स्वाद-अल्प तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में हृदय का स्टीरोइडग्लुकोसाइड- टर्पेनोइड्स, रेसीन, ग्लायकोसाइड्स कार्बोदित एल्युमिनियम लोह, मेग्रेशियम एवं सोडियम घटक पाये जाते हैं।

गुण- वेदना स्थापना, विस्थापक, शोथहर, वमन, कफनि:सारक, दीपन, पाचन।

उपयोग-चर्मरोगों में श्वित्र, खाज-खुजली, व्रण, अर्श, प्लीहावृद्धि, जलोदर, कृमिघ्न, ताजा पत्रों का उपयोग आमवात संधिशोथ एवं शोथ में लाभदायक, सूखे एवं पीले पत्रों का प्रयोग कास एवं श्वासरोग में लाभकारी। दुग्ध का प्रयोग उदररोग, प्लीहा एवं यकृत वृद्धि में लाभकारी। दुग्ध को नमक के साथ मिलाकर मोच तथा संधिशोथ पर लगाने से सूजन कम होती है। पुष्प राब में उबालकर सेवन से खाँसी एवं श्वासरोग में लाभदायक। पत्रों का चूर्ण व्रण पर लगाने से तुरंत लाभ होता है। चर्मरोग में इसके पत्रों के रस में हल्दी का कल्क मिलाकर सरसों के तेल में पकाना चाहिए। इस तेल (अर्कतेल) के बाह्योपयोग से खाज, खुजली, सोरायसिस जैसे चर्म रोगों में लाभ होता है। इसके पके हुए पत्रों (७५) का एक मजबूत धागे में पिरोकर हार बनाना चाहिए, इसको स्टीम में ढक कर उबाल कर शीघ्र ही इनका रस निकाल कर इस रस में तिल का तेल (५० मि. ग्राम) मिलाकर गरम करना चाहिए। जब इसमें उबाल आधी रह जाय, तब इसमें ५० ग्राम गंधक का चूर्ण मिला दें। इस तेल को ठंडा कर छान लें। रात के समय गाय के गोबर के बने हुए उपलों को जलाकर उसके पास बैठ कर धीरे-धीरे समस्त शरीर पर इस तेल की मालिश करते जाये, यह क्रम दो घंटे तक करने से समस्त शरीर पर हुई

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाज-खुजली मिट जाती है। इस चमत्कारिक उपचार से एक दिन में ही आराम हो जाता है। रक्त विकार में- ५ ग्राम अर्कमूल, ४० ग्राम गिलोय तथा ४० ग्राम नीम की अंतर छाल सुखाकर, इन सबको पीसकर बारीक चूर्ण बना ले, इस चूर्ण का सेवन प्रतिदिन दो ग्राम जल के साथ करना चाहिए। नेत्र रोगों में- इसके बीजों को दूध में उबालकर सदैव रात को इसका सेवन करने से तिमिर रोग, नेत्र फूली तथ दृष्टिमांद्य जन्य रोग मिट जाते हैं। खाँसी में-इसके पत्रों से टपकाया हुआ दूध २-३ बूँद बतासे पर इसका सेवन कर, इसके ऊपर काली द्राक्षा या कोई मिठाई का सेवन करें, इससे रात को आने वाली शुष्क खाँसी नियंत्रित रहती है। विषम ज्वर (मलेरिया)- अर्क का एक कोमल पत्र लेकर इसको पान के पत्ते पर रखकर चबाकर खाने से यह ज्वर मिट जाता है। विषूचिका (कोलेरा) में- इसके मूल के २० ग्राम छाल को लेकर ३० ग्राम अदरख के रस में पीसकर मूँग के दाने जितनी गोलियाँ बना लें, इनका सेवन प्रत्येक आधे-आधे घंटे के बाद नीबू या प्याज के रस के साथ एक-एक गोली खिलाना चाहिए। संधिवात, आमवात में- इसके पके हुए पत्रों पर एरण्ड तैल लगाकर सबको पीस कर इसका लेप करने से संधिवात में लाभ होता है।

मात्रा- मूलत्वक् चूर्ण- डेढ़ से एक ग्राम।
क्षीर- १/४-३/४ ग्राम।
पुष्प- १-३ ग्राम।
सूखे पत्र- ३/४ -१ ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



'इस विश्व वाटिका में एक से बढ़कर एक सुगंधित और सुन्दर फूल खिलते रहते हैं, काँटें तो यहाँ मात्र अपने भ्रम-जंजालों और दुष्कर्मों के ही हैं।'

-पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भङ्गा Canabis sativa Linn. CANNABINACEAE

66

ENGLISH NAME:- Indian hemp. Hindi - Bhang, Ganja.
PARTS-USED:- Leaves, The Part of Male flowering twitg Resin.
DESCRIPTION:-A small annual, erect, herb 3-8 feet high, Leaves much divided palminerved Flowers small, unisexual and greenish white.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:Cannabinoids, Cannabispirans, Alkaloids , Cannabiglendol, Cannabidiolic acid. Resin (Cannabinone),Gum, Sugars, Calcium, Phosphate, Volatile Oil.
ACTIONS: Astringent, Digestive, Diuretic, Stomachic, Fungitoxic, Narcotic, Stimulant, Analgesic, Antispasmodic, Aphrodisiac.
USED IN:-Bigger Leaves are used as Bhang and Smaller Leaves as ganja; Leaves are used in Ear troubles, Anthelmintic, Juice mixed with sugarapplied, to cuts and wounds; Crushed leaves in skindisease; Flowering tops used in Gonorrhoea, opaque cornea, urethral carbuncle Diarhoea, Dysentery and Colitis.

प्रचलित नाम- भांग-गांजा

प्रयोज्य अंग-पत्र, नरपुष्प सहित की शाखा एवं राल।

स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत ३-८ फूट ऊँचा छोटा गुल्म, पत्र अतिखंडित, पंजाकार की शिराओं युक्त, पुष्प छोटे एकलिंगी तथा श्वेत हरिताभ।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में-कैनाबिनोइड्स कैनाबिस पायरेन्स, ऐल्केलॉयड्स, केनाबिगलेन्डोल, केनाबिडियोलिक अम्ल, राल (कैनाबिनॉन), गोंद, शर्करा, कैल्शियम फॉस्फेट, उड़नशील तेल (अल्पमात्रा में)।

गुण- ग्राही, पाचन, मूत्रल, दीपन, फंफूदी नाशक, मादक, उत्तेजक, वेदना स्थापन, उद्वेष्टनरोधी, वाजीकर।

उपयोग- इसके बड़े पत्रों का उपयोग भांग तथा छोटे पत्रों का उपयोग गांजा की तरह किया जाता है। पत्रों का उपयोग कर्ण अवरोधों, कृमिघ्न, स्वरस को शर्करा के साथ मिलाकर कटे हुए एवं घावों पर लगाने से लाभ। पिसे हुए पत्रों का प्रयोग चर्मरोगों में लाभकारी। पुष्प शाखा के अग्र भाग का प्रयोग अपसर्गिकामेह, अपारदर्शक नेत्रिका, मूत्र संस्थान के गण्ड पर, अतिसार, प्रवाहिका एवं आंतशोथ पर लाभकारी। जीर्ण आमवात में-गांजा के प्रयोग से लाभ एवं इसके बीजों के तेल मालिश से लाभ होता है। शुष्क कास एवं तमक श्वास में गांजा का प्रयोग लाभकारी। जू एवं अरुंषिका में पिसे हुए पत्रों के बालों में लेप से लाभ होता है। यह वनौषधि-वेदना शामक, वीर्य स्तंभक, जठराग्नि प्रदीप्त करने वाली तान-खेंच (अकड़न) में इसका सेवन अतिलाभकारी। इसमें केना बिनाने नाम का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अत्यंत मादक तत्व पाया जाता है। हरस तथा अर्श में- इसके पत्रों को पीसकर इसके कल्क को कपड़े की थैली में भरकर हरस या अर्श में बाँधने से वेदना का शमन होता है।

मस्तिष्क के लिये शान्तिप्रद चूर्ण- भांग १०० ग्राम, मिश्री २०० ग्राम, बादाम १०० ग्राम, पिस्ता ५०० ग्राम, सौंफ २०० ग्राम, गांजा २० ग्राम, पिप्पली तथा जावंत्री दस-दस ग्राम इन सबका चूर्ण बनाकर, इसका सेवन दो से ढाई ग्राम मात्रा में करना चाहिए। इसकी मात्रा अधिक नहीं लेनी चाहिये।

प्रमेह में-भांग का प्रयोग बंगभस्म के साथ लाभकारी।

मात्रा- भांग- १२५-१५० मि. ग्राम।
गांजा-६०-१२५ मि. ग्राम।
चरस- ३० मि. ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'कच्चे फल को तोड़कर मत खाना; क्योंकि कच्चा फल जब तोड़ा जाता है, तो वृक्ष के प्राणों में वैसी ही पीड़ा होती है, जैसे कोई आपका हाथ तोड़ ले।'

– अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवकिली Canna indica, Linn. CANNACEAE

67

ENGLISH NAME:- Indianshot. Hindi - Keli

PARTS-USED:- Rhizome.

DESCRIPTION-A large tall herb with big fleshy underground rhizome, variously coloured flowers.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains: Triacontanol, Stigmasterol, Betasitosterol, Compesterol, Starch (portland arrow root.)

ACTIONS: Anti-inflammatory.

USED IN:-Rhizome is used in inflammation and it is hypotensive and exhibit enterokinase activities.

प्रचलित नाम- देवकिली: अकलबेर

प्रयोज्य अंग-भूमिगत कांड।

स्वरूप-एक बड़ा, ऊँचा गुल्म, जिसमें भूमिजन्य, मांसल कांड होता है, पुष्प विविधवर्णी।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन-इसके भूमिगत कांड में ट्रायकॉन्टानॉल, स्टीग्मास्टीरॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, काम्पेस्टेराल, स्टार्च (इसे पोर्टलेन्ड अरारोट भी कहते हैं।)

गुण- शोथहर।

उपयोग- इसके भूमिगत कांड का का उपयोग शोथ में किया जाता है एवं यह दाबह्रासी तथा एन्टरॉकीनेज प्रक्रिया दर्शाता है।

●●●

'प्राण वायु को औषधि समान समझें।' - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लंका Capsicum annum Linn var Grossum, Sendt. SOLANACEAE

68

ENGLISH NAME:- Redchilli / Capsicum. Hindi - Harimirch
PARTS-USED:- Fruits.
DESCRIPTION:-A Small herb with swollen nodes and purple stem. White axillary Flowers.
TASTE:-Pungent-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains: Aminoacids, Ascorbic acid, Follic acid, Glutathion, Citric acid, Glyceric, Mallic, Mallonic, Oxalic, Quinic, Shikimic, Succinic acids, Biflavonoid, Carotenes, Capsanthin, Cryptocapsin, Capsorubin diester, Lutein Neoxanthin, Phytoene, Phytofluence, Violaxanthin, Capsaicin, Capsicidin, Capsicosin, alpha-amyrin, Cholestrol.
ACTIONS: Inflammatory, Antidiarrhoeal, Carminative, Stimulant.
USED IN:-Paste of Fruits: Applied on Carbuncle andburns, these are useful in diarrhoea; dyspepsia and is stomachic, Driedfruits burn in hot oil: The Oil isuseful in Eczema Joints pain, dogbite and insect bite.

प्रचलित नाम- मिरचा (हरी, लाल)

प्रयोज्य अंग-फल

स्वरूप-एक छोटा गुल्म, कांड बैंगनी रंग का तथा इसकी पर्व फूली हुई, पुष्प सफेद तथा पत्र कोण होते हैं।

स्वाद-चरपरा-कटु।

रासायनिक संगठन-इसके फल में- एमीनो अम्ल, एस्कॉर्बीकअम्ल, फौलिक अम्ल, ग्लुटाथीयॉन, सिट्रीक अम्ल, ग्लीसरीक अम्ल, मैलिक अम्ल, मैलोनिक अम्ल, ऑक्सेलिक अम्ल, क्युनिक अम्ल, शीकीमिक अम्ल, सक्सीनीक अम्ल, बाय फलेवॉनोईड, करोटिन्स, कैप्सैन्थीन, क्रिप्टोकैप्सीन, कैप्सोरुबीन डायेरस्टर, ल्युटिन नियोजैन्थीन, फायटोइन, फायटोफ्लु एन्स, वायोलाज़ैन्थीन कैप्साइसीन, कैप्सीडीन, कैप्सीकोसीन, आल्फा-एमीरीन एवं कॉलेसटरॉल घटक पाये जाते हैं।

गुण- दाहकारक, अतिसार शामक, वातानुलोमक, उत्तेजक।

उपयोग- फल का कल्क- गण्ड पर लगाने से यह नाश होता है। इसका उपयोग अतिसार, अग्रिामंद्य में लाभकारी एवं यह दीपन है। सूखे हुए फल को गर्मतेल में जलाने से इस तेल का उपयोग खाज-खुजली, संधि शोथ, श्वान एवं ततैया के काटने पर लगाने से लाभ। इसका प्रयोग विशेषत: शिथिल कु पचन में किया जाता है। आमवात में इसका बाह्य प्रयोग लाभदायक है। उदरशूल में इसके बीजों का सेवन गुन-गुने जन के साथ करने से जुकाम के कारण होने वाले उदरशूल में अधिक उपयोगी है। विसूचिका (कोलेरा) में एक चम्मच मिर्च का चूर्ण तथा एक चम्मच नमक गरम जल में डालकर अच्छी तरह उबालने के पश्चात् गरम-गरम प्राशन कने से लाभ होता है। खटमलों के नाश के लिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाल सूखे मिर्च को जल में उबाल कर क्वाथ बनाकर इस क्वाथ का प्रयोग जहाँ पर खटमल हो उस स्थान पर लगा देने से वहाँ पर दुबारा खटमल नहीं होते। हड़काये कुत्ते के काटने पर सूखे लाल मिर्च के फलों को पीसकर इस कल्क को जख्म में भर देने से विष जल जाता है एवं जख्म भर जाता है। शराबियों के भ्रम में मिर्च का चूर्ण दस रत्ती एक-एक औंस गुनगुने जल में दिन में दो से तीन बार पिलाने से शराब का नशा उतर कर भ्रम दूर हो जाता है।

मात्रा- ३०-६० मि. ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पिप्पलाद ऋषि

दधीचि मुनि द्वारा व्रज निर्माण हेतु अस्थि देने के लिए शरीर त्याग देने के बाद उनकी पत्नी सुवर्चा ने भी अपना शरीर त्यागने के लिए चिता तैयार की। उसी समय आकाशवाणी हुई- हे देवि! तुम्हारे उदर में ऋषि की सन्तान है। सुवर्चा शरीर छोड़ने के लिए बेचैन थी अत: उसने पत्थर से अपना पेट फाड़ दिया, तो एक दिव्य तेजयुक्त रुद्र अवतार शिशु निकला। सुवर्चा ने उससे कहा-पुत्र! तुम इस पीपल वृक्ष के निकट चिरकाल तक स्थित रहो। तुम समस्त प्राणियों के लिए सुखदाता होओ और अब मुझे प्रेमपूर्वक पतिलोक में जाने की आज्ञा दो। बाद में यही बालक पिप्पलाद ऋषि के नाम से विख्यात हुआ। - 'शिवपुराण'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एरण्डकर्कटी Carica papaya Linn. CARICACEAE

69

ENGLISH NAME:-Papaw Tree. Hindi - Papitta
PARTS-USED:- Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:-A Small tree, deciduous with milky juice, 5-7 meter high; with hollow stem and unisexual flowers.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Latex of unripe Fruit Contains: Papain, Proteolytic enzyme, Chymopapain, Pectin, Mallic acid; Fruit Contains: Protein, Sugars, Cryptoxanthin, Violaxanthin, Zeaxanthin, Beta-carotene, Ascorbic acid, Thiamine, Riboflavin and other Vitamins, Carpasemine Ripen Fruits Contain Two-Three thous and Intern ational units of Carotene from which Vitamin A is formed.
ACTIONS: Appitizer, Digestive, Laxative, Stomachic, Carminative, Diuretic.
USED IN:- Fruit: Haemorrhagic disease, Piles; Latex useful in Spleenomegaly; Milky Latex of Green fruit: Anthelmintic, used in Liver enlargement, Ringworm, Diarrhoea, Seeds: Anthelmintic and usedin: Emmenagogue; Juice of Leaves useful in Cardiac disease.

प्रचलित नाम- पपीता

प्रयोज्य अंग-पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप-एक छोटा पतनशील ५-७ मीटर ऊँचा दुग्ध रस युक्त वृक्ष, तना पोला, पुष्प एक लिंगी, पत्ते एरण्ड पत्रों जैसे अति खंडित है।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन-कच्चे फल के क्षीर में- पॅपेइन, प्रोटियोलायटिक उत्सेचक, कायमो पेपेइन, पैक्टिन, मैलिक अम्ल। इसके फल में प्रोटीन, शर्करा, क्रिप्टाजैन्थिन, वायोलाजैन्थिन, झीया जैन्थिन, बीटा- केरोटिन, एस्कोर्बीकअम्ल, थायमिन, रीबोफलेविन एवं अन्य विटामिन्स, कार्पेसमाईन घटक पाये जाते हैं। इसके पके हुए फल से कैरीटिन के दो से तीन हजार इन्टर नेशनल युनिट्स पाये जाते हैं, जिसमें से विटामिन ए बनता है।

गुण- रुचिकर, पाचक, मृदुरेचक, दीपन, वातानुलोमक, मूत्रल।

उपयोग- इसका फल रक्तस्रावी रोग एवं अर्श में लाभदायक, क्षीर प्लीहावृद्धि में, कच्चे फल का दुग्ध क्षीर-कृमिघ्न, यकृत वृद्धि, दद्रु, अतिसार में लाभकारी।

इसके बीज कृमिघ्न, आर्त्तवजन्य, पत्रों का स्वरस हृदय रोग में लाभकारी। इसके दुग्ध क्षीर का उपयोग (मुँह पर लगाने से) से मुहासे दूर होते हैं। कच्चे फल को काटने के बाद निकलने वाले रस का उपयोग दद्रु में लाभकारी। फल के दुग्ध क्षीर में चीनी मिलकार सेवन से प्लीहा वृद्धि में लाभ। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग बच्चों के आंतकृमियों में लाभकारी। इसके मूल अश्मरिघ्न गुण वाले होने के कारण-इसका प्रयोग प्रतिदिन करने से लाभ होता है। एक तोला मूल तथा पाँच तोला कुलथी-इन दोनों का क्वाथ बनाकर सेवन करने से अश्मरी नष्ट होती है। पके हुए पपीता के रस में दूध मिश्री मिलाने से मधुर एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वादिष्ट पेय बनता है, इसका सेवन एक ग्लास प्रातः, एक ग्लास सायं करने से अनिद्रारोग मिट कर मधुर नींद आती है। विबंध, मलावरोध तथा अजीर्णता में अतिलाभकारी है। इसके अतिरिक्त यह पित्त नाशक, वीर्यवर्धक, व्रण नाशक है। इसमें विटामिन्स ए, बी, सी तथा डी होते हैं, जिससे नेत्र रोगों, मूत्राशय रोगों, अस्थि रोगों, रक्तचाप पक्षाघात रोगों से मुक्ति दिलाती है। चर्मरोगों में पपीते का प्रयोग-पके हुए पपीते के फल का कल्क बनाकर सारे शरीर या मुख पर मालिश करने से ओजस् प्राप्त होता है। मालिश करने के आधे घंटे पश्चात् स्नान करने से शरीर का रंगरूप चमकदार हो जाता है। इसके अतिरिक्त मुँह के कील-मुहासे तथा घुमौरियाँ मिट जाती हैं। नेत्र में तेज के लिये-पपीते के बीज का सेवन करने से नेत्र का तेज बढ़ता है। कच्चे पपीते का प्रयोग-कच्चे फल पर चाकू द्वारा चीरा करने से निकलने वाले दुग्ध को दाद पर लगाने से आराम मिलता है। गण्ड में कृमि पड़े हों, तो इस दुग्ध का प्रयोग करने से कृमि मर जाते हैं तथा रूझ जल्दी आती है। पपीता के पत्रों के स्वरस से हृदयरोग में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त कच्चे फल में से निकलने वाले दुग्ध को बतासे पर लेकर सेवन करने से हृदय रोग में लाभ होता है। कृमिरोग में-इसके कच्चे फल का दूध डेढ़ तोला, उबलते हुए जल में मिलाकर ठंडा कर पिलाने से कृमि नष्ट हो जाते हैं। इसके तीन-चार घंटे पश्चात् जुलाब लेना चाहिए। कच्चे पपीते में चीरा करने से निकलने वाला दुग्ध एक प्लेट में इकट्ठा कर सूर्य की गरमी में सुखाकर चूर्ण बनाकर सेवन करने से रक्तचाप का नियंत्रण होता है एवं अस्थिरोग में लाभ होता है।

मात्रा-दुग्ध क्षीर-३ से ६ ग्राम। बीज का चूर्ण-१/२ से १ ग्राम।

●●●

'आवश्यकतानुसार सिर्फ इज़खिर घास काट सकते हो, कोई दूसरा हरा भरा वृक्ष नहीं।'-हदीस बुखारी शरीफ़

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- The Bishop's weed/Ajova Seeds. Hindi - Parseek Ajwain

PARTS-USED:-Leaves and Fruits.

DESCRIPTION:- Annual aromatic, herb, 1-3 feet high, pinnatetype dissected leaves, Flowers white and in umbels.

TASTE:-Acrid pungent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Volatile oil whic contains: Thymol, Stearoptin Cymon, Terpene.

ACTIONS:-Digestive. Stomachic, Spasmolytic, Stimulant, Tonic, Anthelmintic, Appitizer, Heart tonic.

USED IN:- Diarrhoea, Indigestion Abdominal pain, Flatulence. Cholera, Rheumatism, Heart disease, Spleeno-megally, spermatorrheal and gives colic releif.

प्रचलित नाम- अजवायन

प्रयोज्य अंग- पत्र तथा फल

स्वरूप-एक वर्षायु, सुगंधित, १-३ फूट ऊँचा गुल्म, पत्र पक्षवत तरीके से कटे हुए पुष्प सफेद जो छत्र में गुँथे हुए होते हैं।

स्वाद-तीक्ष्ण-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तैल (अजवायन का तैल-थायमोल) स्टीअरोप्टिन (अजवायन का सत-अजवायन फूल) साईमोन, टर्पेन आदि तत्व पाये जाते हैं।

गुण-पाचन, दीपन, उद्वेष्टन निरोधी, उत्तेजक, बल्य, कृमिघ्न, रुचिकर, हृद्य।

उपयोग-अतिसार, कुपचन, उदरशूल, आध्मान, विसूचिका, आमवात, हृदयरोग, प्लीहावृद्धि, शुक्र नाशक एवं शूल नाशक। सरसों एवं मिर्च का तीतापन, चिरायता का कड़वापन तथा हींग का उद्वेष्ठन निरोधि तीनों गुण एक साथ इसमें पाये जाते हैं। पुरानी खाँसी में-इसके फल के चूर्ण के सेवन से जब कफ कम होता है, तो कफ पीला होकर निकल जाता है। श्वासरोग में-अजवायन का चूर्ण गर्म जल के साथ सेवन से लाभ होता है। अजीर्णता से उदर विकारों में-अजवायन का चूर्ण सेंधव लवण के साथ सेवन से लाभ। उदरशूल-आध्मान में- अजवायन सेंधव नमक, हींग, काला नमक तथा आँवला का चूर्ण सब मिलाकर इसमें से आधा से एक माशा मधु के साथ सेवन से लाभ। शराबियों का मद्य की आदत छुड़ाने के लिये- अजवायन चबाने से लाभ होता है। बच्चों के अतिसार तथा विसूचिका में- अजवायन अर्क का प्रयोग लाभकारी। अजवायन के सत का प्रयोग-कृमियों का नाश करने हेतु, सड़न दूर करने के लिए तथा प्रति दूषक पदार्थ है। अजवायन का अर्क एवं सत अंकुश कृमियों पर (आंत्रिक) तथा दंत शूल पर लाभकारी। अमृत धारा-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अजवायन का सत, पिपर मिंट का सत एवं कपूर इन तीनों के मिश्रण से एक तरल पदार्थ बनता है, इसका प्रयोग विसूचिका में ३-४ बूंद (अमृतधारा की) बतासे में सेवन से लाभ होता है।

कीट दंश में- इसके पत्रों को पीस कर इसका लेप करने से लाभ होता है। उदरशूल एवं आमवात संधिशोथ में- अजवाइन का पुल्टिस बनाकर गरम कर इसका सेक करने से लाभ होता है। बहुमूत्र (प्रमेह) में-अजवायन तथा तिल का मिश्रण कर सेवन से लाभ होता है। शिर:शूल तथा प्रतिश्याय में- अजवायन का चूर्ण कपड़े में बांधकर रात को सोते समय सूंघन से लाभ होता है। खाँसी तथा कफ ज्वर में-अजवायन, लींडी पीपर, अड़ूसा एवं खसकास के डोडे का क्वाथ बनाकर सेवन से लाभ।

मात्रा-चूर्ण- ३-६ ग्राम।
अर्क- १-२ मि.ली.।
सत: ०.४-१ मि.ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'तुलसी के मूल में ब्रह्मा, मध्य भाग में विष्णु तथा ऊपरी मंजरी में महादेव रहते हैं।' -अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्बूर/आवर्त्तकी Cassia auriculata Linn. CAESALPINACEAE

71

ENGLISH NAME:- Tanners Cassia.
PARTS-USED:-Bark, Flowers and Seeds.
DESCRIPTION- A much branched shrub. Leaves paripinnate compound, leaflets 8-12 pairs; each pair with linear, erect gland between them; Stipules large, leafy, cordate, oblique. Flowers yellow showy round the year pods flat, thin papery.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Whole Plant Contains:- . Tannins; white Bark Contains more Tanic acid.
ACTIONS:-Anti-inflammatory, Wound healing, Astringent, Anti pruritus, Tonic, Expectorant, Febrifuge.
USED IN:- Stomatitis, Inflammation, Leucoderma, Worm-infesfation, Diar rohea, Oedema, Colic, Ulcer and Fever, Eye infections, Disuria, Leucorrhoea, Dysentery, Diabetes, Polyuria.

प्रचलित नाम- खखसा

प्रयोज्य अंग- छाल, पुष्प एवं बीज।

स्वरूप-अतिशाखित क्षुप, पत्ते पक्षाकार संयुक्त ८-१२ जोड़ पत्रक, प्रत्येक पत्रक जोड़ के बीच एक सीधी, पतली ग्रन्थि होती है। उपपत्र-पत्र जैसे हृदयाकृत, पुष्प सुन्दर, पीतवर्णी समग्र वर्ष दरम्यान आते हैं। फलिका चिपटी तथा कागज के समान पतली होती है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में टैनिन्स पाया जाता है। जबकि छाल में टैनिक अम्ल की मात्रा अधिक होती है।

गुण-शोथघ्न, व्रणरोपण, ग्राही, कंडुघ्न, पौष्टिक, कफनि:सारक, ज्वरघ्न।

उपयोग-मुखगतव्रण, दाह, श्वित्र, कृमिरोग, अतिसार, शोथ(सूजन) व्रण, मूत्रघात, नेत्ररोग, शूल एवं ज्वर में इसका प्रयोग लाभकारी। प्रदर, प्रवाहिका, मधुमेह, प्रमेह में अतिलाभकारी। गर्भवती महिला के वमन में-खखसा के एक तोला पुष्पों को गाय के दूध में उबालकर इसमें एक तोला मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिए। पैर में या घूटने में मोच आई हो या सूजन हुई हो तो खखसा के पत्रों को गरम कर इनके पैड बाँधने से लाभ होता है। बच्चों के कोलेरा में-खखसा एवं बैंगन के मूल की छाल को जल में घिस कर पिलाने से लाभ होता है। घूँटण में सूजन होने पर खखसा एवं सोमलता के पंचांग को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। उपदंश में इसके पंचांग (दो तोला) तथा शमी के पत्र (दो तोला) को जल में घोट कर थोड़ा जीरा एवं धनिया मिला कर सात दिन तक सेवन करने से लाभ होता है। नेत्रों में फूली पड़ने पर खखसा के बीजों को रतनजोत (जैट्रोफाकर्कस) के दुग्धक्षीर में घिसकर नेत्रों में अंजन करने से लाभ होता है। मूत्रघात में इसके बीजों को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल में घोट कर पिलाना चाहिए एवं नाभि पर लेप करने से लाभ होता है। मधुमेह में खखसा के पुष्पों की चाय का सेवन करने या खखसा के पंचांग के चूर्ण (३० रत्ती) या बीजों का चूर्ण जल के साथ सेवन से प्यास कम लगती है, मूत्र की मात्रा घटती है या इसके साथ तगर का मिश्रण करने से अधिक लाभ होता है। अतिसार तथा प्रवाहिका में खखसा के मूल की छाल को चबाकर इसके रस के दो-तीन घूँट उदर में उतारने पर चमत्कारिक लाभ होगा। कोलेरा (विसूचिका) कुपचन, शूल, वमन तथा अतिसार में खखसा के मूल की छाल नमक के साथ चबाकर रस को उदर में उतारने पर लाभ होगा। उदरशूल में खखसा के पत्रों को गरम कर उदर पर बाँधने से लाभ होता है। नेत्रशूल में इसकी छाल के स्वरस की एक-दो बूंदें नेत्रों में डालने से लाभ होता है। चोट या मार लगी हो खखसा के पत्रों तथा इमली के पत्रों में साजीखार मिलाकर इन सबको पीसकर कल्क बना लें। इस कल्क का लेप करने से लाभ होता है। कठिन गण्ड नरम न पड़ता हो खखसा के पत्रों को इन गण्ड पर बाँधने से गण्ड नरम पड़ कर वेदना कम होती है। मुखगत व्रण में खखसा के पत्रों को मुख में रखने से या इसके रस से कुल्ला करने से लाभ होता है। प्रदर एवं प्रमेह में खखसा के पुष्पों की गुलकंद का सेवन करने से लाभ होता है। मधु प्रमेह में खखसा के बीजों के चूर्ण से लाभ होता है।

खखसा रस के बीज में रामचन्द्र जी के पदचिह्न स्पष्ट दिखाई देते हैं। इसके पुष्पों को अपनी सुन्दरता का अभिमान हुआ श्रीरामचन्द्र जी ने इन फूलों से सीता जी के बारे में पूछताछ की, किन्तु कोई उत्तर न देने पर श्रीरामचन्द्र जी ने इन फूलों को अभिशाप दिया- तुम में कोई सुगंध न रहेगी किसी भी देवी-देवता पर तुम चढ़ाये नहीं जाओगे एवं तुम्हारा उपयोग चमार लोग करेंगे। (चर्म रंगने में करते हैं) गाया जाता है- सिया राम जी से गर्व कियो ते नर हार्यो। गर्व किया खखसा के फूलड़े, तो जाई चमार कुण्ड में डार्यो॥

मात्रा-पंचांग-चूर्ण-३० रत्ती।

●●●

'वृक्ष तो सज्जनों जैसे परोपकारी रहते हैं। स्वयं धूप में खड़े रहते हुए भी वे दूसरों को छाया देते हैं। उनके फल भी दूसरों के उपयोग के लिये होते हैं।' -विक्रम चरित्तम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चक्षुष्या Cassia absus Linn. LEGUMINOSAE (CAESALPINACEAE)

72

ENGLISH NAME:-Four Leaved Cassia. Hindi - Chakshu

PARTS-USED:- Seeds.

DESCRIPTION:-A Small annual herb-about 20-60 cms. high, leaflets 4, flowers yellow only four stamens.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seed Contains: Alkaloids, Sugars, fats Tannins, Mucilage and major protein, it also contains trace of Mangenese.

ACTIONS: Astringent, Blood purifier, Styptic.

USED IN:- Seeds are externally useful in various eye affection like: Conjuctivitis and cataract, also in Leacoderma, Leprosy and skin eruptions: Infusion of Seeds: check the haematuria.

प्रचलित नाम- चाक्षुस/बन कुल्थी

प्रयोज्य अंग-बीज।

स्वरूप-एक वर्षायु छोटा, २०-६० से.मी. ऊँचा गुल्म पत्र संयुक्त, पत्रिका चार, पुष्प पीतवर्णी, नर के सरों की संख्या भी चार

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके बीज में एल्कलॉयड्स, शर्करा, वसा, टैनिन्स, श्लेष्म एवं प्रधान प्रोटीन तथा मेन्गनीज़ का अंश पाया जाता है।

गुण- ग्राही, रक्तशोधन, रक्तस्तंभक।

उपयोग- इसके बीज का बाह्य प्रयोग- अनेक प्रकार के नेत्र रोगों में जैसे नेत्राभिष्यंद एवं मोतियाबिन्द में इसके अतिरिक्त श्वित्ररोग में, कुष्ठरोग एवं त्वचा पर होते फोड़े-फुन्सियों में इसका फांट मूत्र में रक्त कण का आना रोकता है। नेत्राभिष्यंद में- चाकसू के भुने हुए बीजों की मज्जा का चूर्ण अल्पमात्रा में पलकों के अंदर लगाने से लाभ होता है। चाकसू के २१ बीज तथा सफेद चंदन पाँच माशे रात में जल में भिगोकर सुबह उस जल को छान कर पिलाने से मूत्र में रक्त कण का आना रुकता है।

मात्रा-फांट (प्रवाही स्वरूप में) २-३ ग्राम। कल्क बाह्य प्रयोग।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मार्कण्डिका Syn: Cassia Sennalinn Var Senna Brenan Cassia angusti folia

Vahl. CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)

73

ENGLISH NAME:-Indian Senna. Hindi - Sonapatti

PARTS-USED:- Pod and Leaves.

DESCRIPTION:-A Small shrub about 2-3 feet high, Compound leaves with 1-8 pairs of leaflets. yellow flowers in axillary raceme, pod flate; seeds many, compressed

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain:- Rhein, Aloe-emodin, Kaempferin, Isorhamnetin in the form of Glycoside and Kaempferol, Myricyl alcohol and Phyto sterolin. Leaves Contain: Gum, Calcium oxalate, Resin and Methyl-anthraquinone.

ACTIONS: Laxative, Antileprotic, Anti-dote, cathartic.

USED IN:- Cough, Abdominal troubles, Constipation (In spasmatic constipation, Irritable colon and colitis is not advisbtes to use.) splean enlargement, Typhiod jaundice, anernia, foul breath.

प्रचलित नाम- सनाय

प्रयोज्य अंग-फली एवं पत्र।

स्वरूप-एक लघु क्षुप जो औसतन २-३ फूट ऊँचा, संयुक्त पत्र जिसमें १-८ जोड़ी पत्रिकाओं की, कोणीय रेशम के पीत पुष्प होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में- रहीन एलो-इमोडीन, केम्फेरिन, आइसो रहामनेटीन, ग्लायकोसराइड के स्वरूप में एवं किम्फेरॉल, मियरी सिल एल्कोहॉल एवं फायटोस्टेरोलिन, इसके पत्रों में गोंद, कैल्शियम ऑक्सेलेट, राल तथा मिथाइल-एन्थरोक्वनॉन घटक पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचन, कुष्ठघ्न, विषघ्न।

उपयोग- खांसी, उदररोग, विबंध में यह औषधि लाभदायक है। (आवेष्टन युक्त विबंध, प्रक्षोभ युक्त बृहदांत्र एवं बृहदांत्र शोथ में इसका प्रयोग निषिद्ध है।) इसके पित्तज्वर में विरेचन के लिये उपयोग से दूषित पित्त निकल जाता है एवं दाह शिर:वेदना कम हो जाता है। पित्तज्वर में- इसके पत्रों तथा अमलतास का चूर्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है। विबंध में-इसके पत्रों का चूर्ण-इमली के स्वरस के साथ सेवन करना चाहिए। अग्निमांद्य में-इसके पत्रों के चूर्ण का प्रयोग बिजोरा के रस तथ मिश्री के साथ करने से भूख लगती है। वातगुल्म में-इसके पत्रों का चूर्ण वच के साथ सेवन करने से लाभ होता है। जलोदर तथा श्वित्र में-इसके चूर्ण का प्रयोग आँवले के रस के साथ करने से लाभ होता है।

मात्रा-बीज चूर्ण- ३-१० मि. ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:-Indian Laburnum/Riding Pipe Tree, Purging cassia. Hindi - Amaltas
PARTS-USED:- Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:-A medium sized tree, large compound leaves with 4 to 8 pairs of leaflets. Flowers, golden yellow on racemes, fruits long cylindrical legumes.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains: Glycosides, Carbohydrates, Resin, Tannins, Magnessium, Calcium, Potassium, Iron and other compounds are Fistucacidin, Beta-sitosterol, n-tricontanol, Leucopelargonidin, Flavonoids and Glucosides, Gum, Volatile Oil.
ACTIONS: Cooling Laxative, Anti-inflammatory, Antipyretic, Expectorant, Antileprotic, Analgesic.
USED IN:- Juice of Leaves: Cures Ringworms, Facial paralysis, Rheumatism. (Rubbed in to the affected parts) One of the best Laxative (Fleshy part of the Fruit) is very useful in Constipation, flatulence, worm infestation, skin diseases.

प्रचलित नाम- अमलतास
प्रयोज्य अंग-पत्र एवं फल।
स्वरूप-एक मध्यम कद का वृक्ष, पत्ते बड़े, संयुक्त पक्षवत, पत्रिका ४-८ जोड़ी में, पुष्प स्वर्णिम पीतवर्णी, फल लम्बे नली आकार के।
स्वाद-मधुर
रासायनिक संगठन-इसके फल में- ग्लायकोसीड्स, कार्बोदित, रेसीन, टैनिन्स, मेग्रेशियम, कैल्शियम, पोटेशियम, लोह एवं अन्य यौगिक फिस्टुकासीडीन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, एन-ट्राय कोन्टानॉल, ल्युकोपेलारगोनीडीन, फ्लेवोनोईड्स एवं ग्लूकोसीड्स, गोंद तथा उड़नशील तेल घटक पाये जाते हैं।
गुण- मृदुरेचक, शोथहर, ज्वरघ्न, कफनि: सारक, कुष्ठघ्न, वेदना स्थापन।
उपयोग-इसके पत्रों का रस प्रयोग-दद्रु, चेहरा पक्षाघात, आमवात (प्रभावित भागों पर मालिश करने से) फल की गुद्दी सर्वश्रेष्ठ मृदुरेचक, यह ज्वर अवस्था, सुकुमार, बाल एंव गर्भवती महिलाओं में प्रयोग किया जाता है। यह विबंध एवं अजीर्ण में अति लाभकारी है।
मात्रा-फल मज्जा-५ से १० ग्राम।
विरेचनार्थ १०-२० ग्राम।
पुष्प- ५ से १० ग्राम।
क्वाथ- ५०से १०० मि. ली.।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कासमर्द Cassia occidentalis Linn. CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)

75

ENGLISH NAME:-The Negro coffee. Hindi - Kasondi
PARTS-USED:- Whole plant, Root, Stem, Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:-A large woody herb, offensive odorous, 3-6 feet high, Compound leaves, dinkgreen. leaflets oposite, ovate-oblong or lanceolate acuminate. Yellow Flowers. pod flate, falcate, explate between seed.
TASTE:-Bitter. sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Emodin, Tannic acid, Fattyoils, Mucilage Aminoðacids chrysophanol, Sitosterol, Xanthon, Cassiodin, Nitrogen bases-Betain, Choline, Stachydrine, Trigonelline; Seeds Contain: Galactomanon.
ACTIONS: Aphrodisiac, Stomachic, Diuretic, Appitizer, Anti pyretic, Anti leprotic, Expectorent, Digestive, Anti cough. Thermogenic, blood purifier, purgative.
USED IN:- Cough, increases digestive power, clears throat obstruction and Decoction of Root bark in: Diysuria and inflammation. Seeds are used in Skin disorder. (Leprosy) toxicosis.

प्रचलित नाम-कसौंदी

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल, कांड, पत्र एवं फल।

स्वरूप-एक महाकाय काष्टिय ३-४ फूट ऊँचा, दुर्गन्ध युक्त गुल्म, पत्र संयुक्त पक्षवत, गहरे हरे रंग के, पुष्प पीतवर्णी, चिपटी फली, ४-५ इंच लम्बी।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनपस्ति में- इमोडीन, टैनिक अम्ल, वसा तेल, एमीनोअम्ल, म्युसीलेज, क्राइसोफेनॉल, सिटोस्टीरॉल, झैन्थोन, कैशियोडीन, नाइट्रोजन बॅस- बीटेइन, कॉलीन, स्टैकीड्रीन, ट्राइगोनेलीन, इसके बीज में गैलेक्टोमनान घटक पाये जाते हैं।

गुण- कामोत्तेजक, दीपन, मूत्रल, रुचिकर, ज्वरघ्न, कुष्ठघ्न, कफ नि:सारक, पाचक, कासहर।

उपयोग- कास में, पाचन शक्तिवर्द्धक, कंठ अवरोधनाशक, रक्तशोधक, मूल की छाल का क्वाथ मूत्र कृच्छ्र एवं शोथ में लाभकारी, बीज का उपयोग चर्म विकारों (कुष्ठ रोग में) लाभदायक। पत्र रस का मधु के साथ उपयोग कफ-ज्वर एवं श्वासरोग में लाभकारी। पत्रों को पीस कर इसका लेप व्रण शोथ एवं दाह युक्त चर्मरोगों में लाभदायक। इसके बीज का प्रयोग कॉफी में किया जाता है, इसलिए इस वनौषधि को अंग्रेजी में नीग्रो कॉफी प्लान्ट कहा गया है। इसके बीज को लोहे के तवे पर थोड़ा घी डालकर सेकना चाहिय इन बीजों को पीसकर इसके चूर्ण का प्रयोग पेाल्सन कॉफी के स्थान पर किया जा सकता है। इसके सेवन से ज्वर, कास तथा श्वासरोग में लाभ होता है। श्वासरोग तथा हिचकी में- इसके पत्रों का क्वाथ बनाकर पिलाने से इन दोनों रोगों में लाभकारी। श्वासरोग के रोगी के लिये इसके पत्रों का शाक अत्यंत लाभकारी है। इसके बीज में काईसोफेनिक अम्ल होता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। दद्रु जैसे चर्मरोग में यह अम्ल अत्यंत मूल्यवान प्रभाव डालता है। इसके बीजें का मलहम बना कर प्रयोग किया जाता है। इसी तरह इसके बीजों को छाछ में पीसकर दद्रु रोग पर प्रयोग करने से लाभ होता है। इसके पंचांग का क्वाथ बनाकर पिलाये जाने से श्वासरोग, कास तथा काली खाँसी में लाभ होता है। क्वाथ बनाने के लिये इसके पंचांग का चूर्ण दो तोला, जल (३२ तोला) में उबालकर, चार तोला शेष रह जाये, तब छानकर एवं थोड़ा-सा मधु मिलाकर सेवन करना चाहिए। इस क्वाथ के सेवन से खाँसी तथा श्वास रोग के अतिरिक्त यह रक्त शोधक तथा चर्मरोगों में भी लाभकारी।

दद्रु चर्मरोग में-इसके मूल को सिरके में पीसकर, प्रयोग करने से लाभ होता है। चरक संहिता में श्वास रोग एवं खाँसी के लिये कासमर्द का प्रयोग लिखा है-इसमें कास मर्द सहिजन तथा मूली के पत्रों का सूप प्रयोग करना चाहिए। इन तीनों के यूष की मिश्रित कर सेवन करना चाहिए। कास (खाँसी) इसके बीज का चूर्ण एक से तीन ग्राम उष्ण जल के साथ प्रतिदिन तीन बार सेवन करना चाहिए। गण्ड में इसके पत्रों को पीस कर थोड़ा सा गरम कर फोड़े पर बाँधना चाहिये, पक कर फूट जाता है

मात्रा-पत्र स्वरस-१०-२० मि.ली.। बीज चूर्ण- ३-६ ग्राम। मूल क्वाथ- ४०-८० मि.ली.।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'दुनिया में आलस्य को पोषण देने जैसा दूसरा भयंकर पाप नहीं है।' - पूज्य गुरुदेव

'जिस घर में तुलसी उगी रहती है, वहाँ यमदूत भी नहीं जा सकते, मामूली राक्षसों की बात ही क्या है।' - गरुड़ पुराण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चक्रमर्द Cassia tora Linn. CAESALPINACEAE (LEGUMINOSAE)

76

ENGLISH NAME:-Foetid cassia/ Ringworm Plant. Hindi - Pawar/Chakwar
PARTS-USED:- Seeds.
DESCRIPTION:-An annual herb, 30-90 Cm. high, Compound leaves, three pair of leaflets, smelling badly; flower in axillary pairs. Small yellow pod long, slender.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain:- Glucosides, (Emodin) Proteins, Steroids, Aminoacids, Reducing Sugars, Triterpenes, Tannins, Oleic acid, Linotic acid, Palmiticacid, Lignocenic acid, Rubrofusarin, Fixed oils, Sodium, Potassium and Iron.
ACTIONS: Laxative, Expectorant, Anti-leprotic, Tonic, Stomachric, depurative, anthelmintic, ophthalmic, anodyne, cardictonic, febrifuge, analgeric.
USED IN:- Seeds: Applied Externallyon.Skin diseases: Leucoderma and Leprosy, Piles, Ring worm, Taken internally in: Asthma and for blood Purification, Leaves are used: as Laxative, Anthelmintic and Antipyretic, cough, eczema, cephalalgia.

प्रचलित नाम- चकवड़
प्रयोज्य अंग-बीज।
स्वरूप-छोटा एक वर्षायु ३०-९० से.मी. ऊँचा गुल्म, पत्र संयुक्त, पत्रिका तीन जोड़ी, दुर्गन्धयुक्त, पत्रकोण में जोड़ी में पीतवर्णी पुष्प।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन-इसके बीज में ग्लूकोसाईड्स (इमोडीन) प्रोटीन, स्टीरॉइड्स, एमीनोअम्ल, रिड्युसींग शर्करा, ट्रायटर्पेन्स, टैनिन्स, ऑलिक अम्ल, लिनोटिक अम्ल, पामीटिक अम्ल, लिग्रोसेनीक अम्ल, रिबरोफ्युसेरीन, स्थिर तैल, सोडीयम, पोटेशियम एवं लोह घटक पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचन, कफ नि:सारक, कुष्ठघ्न, बल्य, दीपन।
उपयोग- इसके बीज का बाह्य प्रयोग चर्मरोगों- श्वित्र एवं कुष्ठरोग, अर्श, दद्रु में लाभकारी। इसका निग्रहण से श्वासरोग, कास एवं कृमियों का नाश होता है। रक्त शुद्ध होता है। पत्रों का प्रयोग मृदुरेचन, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न गुण वाला है। इसके बीज को नीबू के रस के साथ पीस कर लगाने से दाद में लाभ होता है। छाजन में बीज को मट्ठे के साथ पीसकर लगाने से लाभ होता है। पत्रों का क्वाथ विशेषत: बच्चों के दंतोदभव समय ज्वर पर लाभकारी, पत्रों को पीसकर इसका पुल्टिस, फोड़ों पर बाँधने से फोड़े जल्दी पकते हैं।
मात्रा-बीज चूर्ण- १-३ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सदपुष्पा Catharanthes roseus (L.) G. Don Syn. Vinca rosea Linn. APOCYANACEAE

77

ENGLISH NAME:-Periwinkle. Hindi - Sadabahar/Barahmasi/Sadasuhagan

PARTS-USED:- Wholeplant, Leaves, Roots and Flowers.

DESCRIPTION:-An erect herb 30-60 Cms. high, with simple opposite leaves and white or rosy flowers.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Indole alkaloids-Vincamine; Bis-Indole alkaloids- Vinblastine, vincristine; Aracidicacid, Behenicacid, Lauricacid, Linoleicacid, Oleic acid, Palmiticacid and Stearic acid (Seeds); Stem Contains: Beta-sito sterol, Ursolicacid; About one hundered alkaloids are found in this plant.

ACTIONS: Laxative, Astringent, Tranquilizer, Hypotensive.

USED IN:- Leucomia, Menorrhagia, Incancer treatment of breast and bladder, Pediatric tumour, Cardiotonic, Haemorhagic disease, Diabetes; Flowers cures fistula.

प्रचलित नाम- सदाबहार

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल, कांड, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-एक उन्नत, ३०-६० से.मी. ऊँचा गुल्म, पत्र सादा, अभिमुख, पुष्प सफेद या गुलाबी रंग के।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनपस्ति में इन्डॉल एल्कालॉयड्स (विन्कामाईन), बिस-इन्डोल एल्कलॉयड्स (विनब्लास्टीन, विनक्रिस्टीन), इसके बीज में एॅरकीडीक अम्ल, बेहेनीक अम्ल, लॉरीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल एवं स्टीयरीक अम्ल, इसके प्रकांड में बीटा-सिटेस्टीरॉल, अर्सोलिक अम्ल, इस वनस्पति में लगभग एक सौ जितने एल्कलॉयड्स पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचन, ग्राही, संज्ञा संस्थापन, दाबह्रासी।

उपयोग- रक्त कैन्सर में, अत्यार्तव, स्तन एवं मूत्राशय कैन्सर के उपचार में लाभदायक। बच्चों के अर्बुद में, रक्त स्त्रावी रोगों में, मधुमेह मेंलाभकारी। यह औषधि हृदयबल्य है। इसके पुष्पों के प्रयोग से हरस रोग में लाभ होता है। इसके कोमल पत्रों का मुरब्बा अल्पमात्रा में सेवन से निद्राजनक गुण होता है। इसका सविशेष प्रयोग शरीर में वेदना के समय किया जाता है।

सदाबहार दक्षिण अफ्रिका में इसके पत्रों का प्रयोग मधुमेह रोग में किया जाता है। इसी प्रकार भारत तथा श्री लंगा में भी इसका प्रयोग मधुमेह के लिए ख्याति प्राप्त है। ततैया तथा मधुमखी के दंश में इसके पत्रों का रस लगाने से शोथ एवं शूल कम में लाभ होता है। लाल सदाबहार में पाये जाने वाले एल्कलॉयड में रक्तदाब कम करने का गुण पाया जाता है। इसमें पाये जाने वाले एल्कलायड्स, सर्पगंधा में पाये जाने वाले एल्कलॉयड्स से अधिक गुणकारी है। इसमें मांसपेशियों की अकड़न को कम करने वाला गुण भी पाया जाता है तथा सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम पर शामक प्रशाव करने वाला होता है।

मात्रा- स्वरस-१०-२० मि.ली.।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृणी-नन्दीवृक्ष Syn. Toona ciliata Roem ex Rott Cedrela toona Roxb MELIACEAE

78

ENGLISH NAME:-Red Cedar: The Toon. Hindi - Tun
PARTS-USED:- Stembark and Flowers.
DESCRIPTION:-Large or mediumsized hand desciduous, some tree 55 to 90 feet-high, Compound leaves, large, baribinnate leaf lets oblique ovate lancealate, undulate, Flowers creamy white & scented in drooping panicle, seeds winged.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Wood and Seeds Contain: A bitter substance-Nyctanthin, Cedralone, Beta-sitosterol; Flowers: Bargapten Flavone, Glucoside and Nyctanthin; Bark Contains: Toonacilin and Toonacilids, bitter Resin, Wood Contains: Ferneslene, Geronyl, Geraniol, Siderin and goldenyellow coloured volatile oil.
ACTIONS: Astringent, Tonic, Sweet aroma, Spermatopoietic Antileprotic, Blood purifier.
USED IN:- Bark is used in chronic dysentery and Dyscrasia, External application in: Ulcer, Burning Sensation, Headache, Leucoderma; Flowers are used in emmenagogue and menstrual disorder.

प्रचलित नाम- तून

प्रयोज्य अंग-कांड की छाल एवं पुष्प।

स्वरूप-ऊँचे या मध्यम कद का ५५-९०फीट ऊँचा आकर्षक वृक्ष, पत्र संयुक्त पत्रिकाएँ तिरछी, पुष्प सुगंधित तथा श्वेतवर्णी

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके काष्ठ तथा बीज में- एक कड़वा पदार्थ-निकटैन्थीन, सिड्रालोन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, इसके पुष्प में बर्गेप्टीन, फलेवॉन, ग्लुकोसाईड एवं निक्टैन्थिन, इसकी छाल में टूनासिलीन एवं टूनासिलीड्स कड़ुवी राल, इसकी काष्ठ में फर्नेसलिन, जिरोनिल, जिरॉनियॉल, सिडेरीन एवं पीत सुवर्ण रंग का उड़नशील तैल पाया जाता है।

गुण-ग्राही, बल्य, मधुर, सुगंधित, शुक्रवर्धक, कुष्ठघ्न, रक्तशोधन।

उपयोग- इसकी छाल का प्रयोग जीर्ण प्रवाहिका एवं रक्तदोष में लाभकारी। इसका बाह्य प्रयोग व्रण में, दाह में, शिर:वेदना, श्वित्र में, इसके पुष्पों का उपयोग आर्तवदोष में लाभकारी। छाल का प्रयोग- जीर्ण अतिसार एवं प्रवाहिका तथा विषम ज्वर में लाभदायक। छाल का लेप- व्रण पर उपयोग से लाभ। पुष्प का फांट- यदि गर्भाशय की शिथिलता के कारण अत्यार्तव हो, तो दिया जाता है।

मात्रा- छाल का फांट उसमें कालीमिर्च मिलाकर पाँच मि.ली. देते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवदारु Cedrus deodara (Roxb) Loud. PINACEAE

79

ENGLISH NAME:- Himalayan Cedar. Hindi - Deodar
PARTS-USED:-Leaves, Tenderbranches, Pith and Oil.
DESCRIPTION:- A large perennial handsome tree, 150-180 feet high leaves triangular, acicular, 1-1$^1/_2$ inch long Single Spiral onlong branches and in dusters on Short branches. cone single at apex of branch.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- Terpentine oil, Chalan oil, Wood Contains more amount of aromatic oil where as Bark Contains Small amount only. It aslo contains black coloured tar and brown-Yellow Coloured oil and Manas-Sugar.
ACTIONS:-Bark: Diuretic, Antipyretic: Wood: Aromatic, Antibacterial; In form of Medicine: Carminative, Diphoretic, Febrifuge, Diuretic, Blood purifier.
USED IN:- Bark is used in: Fever, Abdominal; Wood in form of Medicin: Arthritis, Polyuria, Chronic fever, Calculii; Urinary Troubles; Headach; Oil is used in: Skin diseases (chronic Eczema and tches) Headache.

प्रचलित नाम- देवदार

प्रयोज्य अंग- पत्र, कोमल टहनियाँ, काष्ठसार एवं तेल

स्वरूप-महाकाय चिरस्थायी सुन्दर १५०-१८० फुट ऊँचा वृक्ष, पत्र सुई आकार के त्रिकोणी, एक से डेढ़ इंच लम्बे, दीर्घ शाखाओं पर एकाकी सर्पिल जबकि लघु शाखाओं पर गुच्छे में, शाखा के भाग पर एकाकी शंकु होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसमें टर्पेन्टाईन तेल, कालान तेल, इसके काष्ठ में अधिक मात्रा में सुगंधित तेल जबकि छाल में अल्प मात्रा में यह तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें काले रंग का टार एवं पीत बादामी तैल तथा मनास शर्करा पाये जाते हैं।

गुण-छाल मूत्रल, ज्वरघ्न, काष्ठ सुगंधित, कीटाणुघ्न, औषध रूप में वातहर, स्वेदजनन, ज्वरघ्न, मूत्रल तथा रक्तशोधक।

उपयोग-छाल का प्रयोग ज्वर में, उदरशूल में, काष्ठ औषधि स्वरूप में संधि शोथ, प्रमेह, जीर्ण ज्वर, अश्मरी, मूत्र रोग में, शिर:शूल इसके तैल का प्रयोग-चर्मरोगों में (जीर्ण-खाज, खुजली) शिर:शूल में मस्तिष्क पर घिसकर लगाने से लाभ। सुजाक, फिरंग, वातरक्त एवं आमवात में-देवदार का क्वाथ रसायन के रूप में प्रयोग से लाभ होता है। हृदयरोग में-देवदार एवं सोंठ को पीसकर पिलाने से हृदयशूल तथा हृदय की धड़कन पर नियंत्रण करता है। श्वासरोग में-देवदार का क्वाथ बनाकर पिलाने से लाभ। जीर्णशोथ में-देवदार हल्दी एवं गुगल को साथ पीसकर लेप करने से लाभ होता है। कुष्ठरोग में-देवदार के तेल का प्रयोग लाभकारी, इसके उपरांत जीर्ण त्वचा रोगों में इसका सेवन तथा बाह्योपचार लाभकारी। कर्णशूल में-इसके तेल की एक-दो बूंद कान में डालने से लाभ होता है।

मात्रा-चूर्ण- ३-६ ग्राम। तेल- १०-४० बूंद।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्योतिष्मती Celastrus paniculatus Willd. CELASTRACEAE

80

ENGLISH NAME:- Climbing Staff plant. Hindi - Malkangni

PARTS-USED:-Whole plant, Bark, Leaves and Seeds.

DESCRIPTION:- A woody climber, white lenticels on branches, leaves ovate, nearly orbinculate capsule globose; seeds ellipsoid. Flowers greenish-yellow.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain: Concentrate reddish-brownish bitter and pungent oil, Resin, Tannin, Celastrin and Paniculatin.

ACTIONS:- Laxative, Stimulant, Aphrodisiac, Anti-inflammatory, Stomachic, Carminative, Brain tonic, abortifacient, emmenagogue, emollient rubifacient.

USED IN:- Rheumatism, Gout, various fever, Paralysis, Leprosy, Blood pressure, Colic, Nutritive, Hypotensive, Emetic, Tranquilizing, Antiviral, used to improve complexion, pruritus, leucoderma, amenorrhoea, dysmenorohoea.

प्रचलित नाम- मालकांगनी

प्रयोज्य अंग-पंचांग, छाल, पत्र एवं बीज।

स्वरूप-एक काष्टीय लता, शाखाओं पर सफेद धब्बे होते हैं, पुष्प हरित पीतवर्णी।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके बीज में- एक गाढ़ा लाल-बादामी तिक्त एवं गंध युक्त तेल पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक कड़वाराल, टैनिन, सिलास्ट्रीन एवं पेनीकुलेटीन घटक पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचन, उत्तेजन, बाजीकर, शोथहर, दीपन, वातघ्न, बुद्धिवर्धक।

उपयोग-आमवात, वातरक्त, विविध ज्वरों, पक्षाघात, कुष्ठरोग, रक्तदाब, आंतशूल, पौष्टिक, दाबहासी, वामक, संज्ञास्थापक, विषाणुघ्न, वर्ण्य। इसके बीजों को पीसकर इसका लेप व्रण के ऊपर करने से लाभ होता है। अधिकतर इसके तेल का प्रयोग पाँच से पन्द्रह बूंद बतासे में डालकर सेवन से नवीन बेरी-बेरी रोग में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त मलेरियल ज्वर जैसी पीड़ा जब आमवात में होती है एवं पक्षाघात में इस तेल की मालिश करने से लाभ होता है। इसके बीज मेधावर्धक तथा वातरोगों में लाभकारी होते हैं, इसलिये इनका प्रयोग चढ़ती मात्रा में प्रत्येक दिन करना चाहिए, एक बीज से प्रारंभ कर प्रत्येक दिन एक-एक बीज बढ़ाते जाना चाहिये, पचास तक पहुँचने के पश्चात् फिर एक-एक घटा कर एक बीज तक आना चाहिए। इस प्रयोग से वातरोग नष्ट होते हैं तथा मेधा का प्रमाण बढ़ता है। इसके बीजों का तेल जलोदर रोग में अत्यंत ही लाभकारी है। इसके सेवन से पसीना आता है तथा मूत्र अधिक मात्रा में विसर्जित होता है। ज्योतिष्मती के तेल में थोड़ा-सा मक्खन मिला कर वात रोगों में मालिश करने से लाभ होता है। अफीम के विष में ज्योतिष्मती के पत्रों के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रस का सेवन करना चाहिए ।

खुजली में इस के बीजों का तेल लगाना चाहिए या इस के बीजों को गोमूत्र में पीस कर लगाना चाहिए।

सर्व वात रोगों में ज्यातिष्मती के बीज, शुण्ठी, अजवायन, इन सब को सम भाग मिलाकर, इस से दोगुना पुराना गुड़ डालकर, इन सबको पीस कर, आधा-आधा तोला की गोलियाँ बना लेनी चाहिये, प्रत्येक दिन एक गोली घी के साथ खाने से सब प्रकार के वात रोग नष्ट होते हैं।

अर्श दाह में इस के बीजों को पीस कर अर्श पर लेप करना चाहिये।

सर्प विष में इस के मूल को जल में घिस कर लेप करने से सर्प विष उतर जाता है।

आर्त्तवरोध में इस के पत्रों के रस का सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा- तेल-१०-३० बूंद।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'हे शक्तिशाली वृक्ष! मैं तुझे प्रणाम करती हूँ। मेरे पति का प्रण पूरा कराने की कृपा करो, जिससे मैं अपनी पूजनीया सास कौशल्या और समुत्रि के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ। रामायण में सीता हाथ जोड़कर बरगद को प्रार्थना करती है।' - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शितिवार (भुरुण्डी) Celosia argentea Linn. AMARANTHACEAE

81

ENGLISH NAME:-Celosia. Hindi - Murga

PARTS-USED:- Leaves and Seeds.

DESCRIPTION :-A small annual erect herb about 2 to 3 feet high grooved stem, Leaves long and linear, Flowers in spikes.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain: Saponin of Hyaluronic acid.

ACTIONS: Aphrodisiac, Astringent, Spasmolytic, cooling, Nutritive.

USED IN:- Seeds are useful in diarrhoea, dysuria, seminal disease, Kapha Pitashamak.

प्रचलित नाम- सफेद मुर्गा (शिरियारी)

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं बीज।

स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत २-३ फुट ऊँचा गुल्म, जिसका कांड खांच वाला, पत्ते लम्बे पतले, पुष्प मंजरियों में गुंथे हुए होते हैं।

स्वाद- कटु।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में हयाल्युरोनिक अम्ल के सेपोनिन पाये जाते हैं।

गुण-वाजीकर, ग्राही, उद्वेष्टहर, शीतल एवं पौष्टिक।

उपयोग- इसके बीजों का उपयोग अतिसार, मूत्रघात, शुक्र दौर्बल्य एवं कफ-पित्त शमन में लाभकारी।

इसके बीजों का फांट मिश्री एवं गरम दूध के साथ कामोत्तेजना के लिये देते हैं। अश्मरी एवं मूत्रघात में इसके बीज एक माशा तथा मिश्री एक माशा, दोनों को मिलाकर सेवन कराने से (दो से तीन बार) पेशाब खुल कर हो जाता है। भांग या गांजा के अधिक नशा होने पर शितिवार के मूल को ठंडे जल में घिसकर पिलाने से नशा उतर जाता है। कफ तथा मूत्रकृच्छ्र में- इसके बीज छाछ में पीसकर पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा- बीज १/२ से १ तोला।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंडूकपर्णी Centella asiatica (Linn) Urban syn: Hydrocotyle asiatica Linn. UMBELLIFERAE

82

ENGLISH NAME:-Indian Penywort. Hindi - Meghapati
PARTS-USED:-Whole plant, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:-A small creeping herb with slender reddish stem rooting at nodes, leaves orbicular kidney shaped, margin creanate with long petiole, Flowers pink in Fascicled umbels.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Alkaloids: Brahmin, Herpestin and Bacosides A & B In Bacoside- A: Arabnosilglucose, Arabnose, Becogenine, Betulic acid, D-Manitol, Stigmasterol, Beta-sitosterol and Tannins, Green leaves Contain: Glucosides, Volatile oil, Dryparts Contain: Centoic acid and Centalic acid. Whole plant also Contains: Pectic acid, Valerin, Resin & Ascorbic acid.
ACTIONS: Stimulant, Antiamaoebic, Insecticidal, Brain tonic, Rejuvenator, Diuretic, Blood purifier, Anti-leprotic, Wound healing.
USED IN:- Skindiseases, disease of Nervous disorder, improvement of memmory, Leprosy, Tuber culosis, Anaemia, Cough, Fever, Asthma, incrases blood protein and RBC, Respiratory stimulant, Hepatoprotective, Hypotensive and wound healer.

प्रचलित नाम- ब्रह्ममाण्डुकी

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र एवं बीज

स्वरूप-छोटा भूप्रसरी गुल्म, कांड रक्तवर्णी तथा कमजोर, पर्व से उत्पन्न होते मूल, पत्र गोल वृक्काकार, पत्र किनारी दंतुर लम्बा पत्रवृंत।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में ब्राह्मीन एवं हरपेसटीन एलकलॉयड्स, बेकोसाइड्स- ए तथा बी, इसके बेकोसाईड- ए में एरेबनोसिल ग्लूकोज़, एरेबनोज़ बेकोजेनिन पाये जाते हैं, बेटुलिक अम्ल, डी-मैनिटॉल, स्टीग्मा-स्टीरोल, बीटा-सिटोस्टीरॉल एवं टैनिन्स, हरे पत्रों में-ग्लूकोसाईड, उड़नशील तेल, सूखे अंगों में सेन्टोइक अम्ल एवं सेन्टॉलिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके पंचांग में पैक्टिल अम्ल, वेलेरीन, रॉल तथा एस्कोबीर्क अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-उत्तेजक, अमीबा नाशक, कीटनाशक, मेधावर्धक, रसायन, मूत्रल, रक्तशोधन, कुष्ठघ्न, व्रणरोपण। तिक्त कषाय पचने में लघु, शीत वीर्य, वय:स्थापन, हृद्य, कफ पित्तहर।

उपयोग- चर्मविकारों में, स्नायुतंत्रगत रोगों में, मेधावर्धक, कुष्ठरोग, क्षयरोग, पाण्डुरोग, ज्वर, कास, श्वास रोग में लाभदायक। यह औषधि लाल रक्तकणों एवं रक्त में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाती है, श्वसन उत्तेजक, यकृत संरक्षक, दाबहासी एवं व्रणरोपक। पत्रों का स्वरस- बच्चों के आंव में इसके स्वरस को जीरक एवं मिश्री के साथ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। बच्चों के शब्द उच्चारण एवं तुतलाकर बोलने में इसके पत्रों को चबाकर खाने से लाभ होता है। पंचांग का चूर्ण-दुग्ध में मिलाकर सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। पंचांग का स्वरस मधु में मिलाकर सेवन से अपस्मार तथा चेचक जैसे रोगों में लाभ होता है। पागलपन में मानसिक विकारों में (स्नायु तंत्रगत रोग) मण्डूकपर्णी के पत्रों का ताजा रस या

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पत्रों के चूर्ण का प्रयोग लाभकारी। प्रत्येक दिन इसका प्रयोग एक तोला पत्रों के रस में थोड़ा मधु मिलाकर सेवन करना चाहिये। इससे अधिक मात्रा नहीं लेनी चाहिए। चर्मरोगों (कुष्ठरोग) में मडागास्कर टापू के लोग कुष्ठ रोग के निवारण के लिये मण्डूक पर्णी का प्रयोग करते हैं, इसके अतिरिक्त सामान्य आरोग्य में वृद्धि होती है, अतएव यह रसायन तथा मेधावर्धक भी है। व्रणरोपण के लिये इसके पत्रों का प्रयोग लाभकारी है। औषधि के रूप में ताजे पत्रों का ताजा रस या सूखे पत्रों का चूर्ण प्रयोग करना चाहिये, इसका क्वाथ या फांट नहीं बनाना चाहिये। इसके चूर्ण या पत्र स्वरस में मधु मिलाकर ही प्रयोग करना चाहिये। अधिक मात्रा में (एक तोला से अधिक) इसके सेवन से त्वचा लाल होकर खुजली होती है। मानसिक रोगियों के लिये मण्डूकपर्णी के पत्रों का शाक लाभकारी है। वय: स्थापन होने से यह वनौषधि शरीर तथा मन दोनों पर प्रभावकारी है। चरक ने इसको मेधा रसायन अर्थात् बुद्धिवर्धक एवं रसायन कहा है। उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर)- मण्डूकपर्णी का चूर्ण-२५ ग्राम, रस सिंदूर-१२ ग्राम, चंद्रप्रभा नं१-१० ग्राम इन सबको घोट कर इसका सेवन प्रात: एवं सायं एक से डेढ़ ग्राम करना चाहिए। अनिद्रा में मण्डूकपर्णी का चूर्ण-३ ग्राम, शंखपुष्पी चूर्ण ३ग्राम तथा १½ ग्राम रात को दूध के साथ सेवन से नींद आ जाती है। रक्तचाप में अर्जुन की छाल का चूर्ण, शंखपुष्पी तथा मण्डूकपर्णी इन सबका समान मात्रा में मिला कर प्रात: सायं सेवन से लाभ होता है। एक गोली सर्पिना की लेनी चाहिए। अपस्मार में-इसके पत्रों के स्वरस का सेवन दूध के साथ करने से लाभ होता है। उदर रोगों में-मण्डूक पर्णी तथा निशोथ (त्रिवृत) का शाक इन दोनों के स्वरस में पका कर (सिर्फ उबला हुआ) खटाश तथा घी के वगैर सेवन करना चाहिए। जब प्यास लगे तो इन दोनों के स्वरस का ही सेवन करना चाहिए। शीतल रोग में-मण्डूकपर्णी का स्वरस मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। फोड़े-फुन्सियों में-इसके पंचांग का स्वरस लगाने से लाभ होता है। **मात्रा**- ताजे पत्र- बच्चों को २ से ४ प्रतिदिन। प्रौढ़ों को- ८ से १२ प्रतिदिन। स्वरस- १० से २० मि. ली. प्रतिदिन। पत्रों का चूर्ण प्रतिदिन १-२ मि.ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिवासीनी Cestrum diuranum Linn. SOLANACEAE

83

ENGLISH NAME:-The day Jasmine. Hindi - Din-Ka-Raja

PARTS-USED:-Stem and Leaves.

DESCRIPTION:-An erect shrub, much branched, branches with white lenticels, Flowers greenish white.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Ursolic acid, Saponin, Tigonin, Tigegenin, Alkaloids-Nomicutine and Nicotine.

ACTIONS:- Anti bacterial Antifungal.

USED IN:- Aerialparts are used in: Spasmodic, CNS depressant; Leaves and their essential oil; is Fungitoxic, Antitumour and Cardiotonic.

प्रचलित नाम- दिन का राजा

प्रयोज्य अंग- कांड एवं पत्र

स्वरूप-एक उन्नत अति शाखीत क्षुप, शाखाओं पर सफेद श्वसन छिद्र होते हैं, पुष्प श्वेत हरिताभ।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में अरसोलिक अम्ल, सैपोनिन, टिगोनिन, टिगाजेनिन एल्कलॉयड्-नोमोक्युटिन एवं निकोटिन घटक पाये जाते हैं।

गुण-कीटाणुघ्न, फंफूदीनाशक।

उपयोग-वनस्पति के हवाई अंगों का प्रयोग-उद्वेष्टकर, केंद्रीय नाड़ी संस्थान को सक्रियता प्रदान करता है। पत्र एवं इसका उत्पत्ततेल फंफू दी नाशक, गण्डनाशक (विस्फोटक नाशक) एवं हृद्य बल्य ।

●●●

'मानव अपने अनुभव तथा वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा प्रकृति के सभी नियमों को जान सकता है।' -अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रातरानी Cestrum nocturnum Linn. SOLANACEAE

84

ENGLISH NAME:-Night blooming Jasmine. Hindi - Ratrani

PARTS-USED:-All Aerial Parts.

DESCRIPTION:-A scandent much branched shrub, branches are with yellowish lenticels, Flowers Creamish yellow and aromatic.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Tigogenine, Yuccagenine, Saponin; Alkaloids; Nomicotine, Continine and Myosmine; Essential oil.

ACTIONS: Diuretic.

USED IN:- Extract of aerial parts is: Spasmolytic, Hupotensive and diuretic.

प्रचलित नाम- रात की रानी

प्रयोज्य अंग- सभी हवाई अंग

स्वरूप-कमजोर अतिशाखीत क्षुप, शाखाओं पर पीतवर्णी श्वसन छिद्र, पुष्प सुगंधित सफेद पीतवर्णी।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में टिगोजेनिन, युक्काजैनिन, सेपोनीन, नोमीकोटाईन, कोन्टीनाइन एवं मयोस्माईन एलक्लॉयड्स पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें उत्पत्ततेल पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल।

उपयोग-इसके हवाई अंगों का सत उद्वेष्टहर, दाबहासी एवं मूत्रल गुण वाला है।

'पौधों को फूल-फल और पत्तों का जैसा उपयोग हो, उसे नष्ट करने वाले को उसी के अनुसार दण्ड देना चाहिए।' - मनुस्मृति

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वास्तुक/वीर शाक Chenopodium album. Linn. CHENOPODIACEAE

85

ENGLISH NAME:- White goose foot/Lamb's guarters. Hindi - Bathua

PARTS-USED:-Leaves and Seeds.

DESCRIPTION:- A small erect-annual herb, branches and leaves are of various. colours, flowers are small green in campact spikes.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- A volatile oil, Which contains Ascaridol; Saponin, Vitamin-C, Magnissium Phosphate, Carotene.

ACTIONS:-Anthelmintic, Sweet, Laxative, Antipyretic, Appitizer, Stomachic.

USED IN:- Bleedingpiles, Dysentery, For longevity of life, Intrinsic heamorhage Cough, Poly uria, Disuria.

प्रचलित नाम- बथुआ

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं बीज

स्वरूप-छोटा उन्नत, एक वर्षायु गुल्म, शाखाएँ तथा पत्र भिन्न वर्णी, पुष्प सूक्ष्म कद के हरे रंग के सघन मंजरियों में होते हैं।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन- इस वनस्पति में मूल को छोड़कर बाकी भाग में एक उड़नशील तैल पाया जाता है। इसमें एस्केरीडोल मुख्य तत्व रहता है। इसमें सेपोनिन (मूल में अधिक) विटामिन-सी, मैग्रेसियम फॉस्फेट केरोटिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-कृमिघ्न, मधुर, मृदुरेचन, ज्वरघ्न, रुचिकर, दीपन, त्रिदोषघ्न (वात, पित्त, कफ)।

उपयोग-रक्तार्श, प्रवाहिका, रक्तपित्त में, दीर्घायुष्य के लिये, वातजन्य कास, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र। रक्तार्श में-बथुआ की भाजी का रस बकरी के दूध के साथ देने से रक्तार्श नाश होता है। प्रवाहिका में-दही एवं खट्टे अनार के रस में सिद्ध किया हुआ और भली भाँति तेल डाला हुआ शाक खाने से लाभ होता है। वातजन्य कास में-बथुआ का शाक इसमें लाभकारी होता है। उरुस्तम्भ में जल एवं तेल में पकाया हुआ इसके पत्रों का शाक नमक डाले बिना सेवन करने से लाभ होता है। दीर्घायुष्य के लिये-इसका शाक सेवन करने से तथा नमक डालकर तक्र पीने से सब प्रकार की व्याधियाँ नष्ट होती है। रक्त पित्त में इसके बीजों का चूर्ण मधु के साथ सेवन से रक्त पित्त नष्ट होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफेद मूसली Cholorophytum tuberosum borivilianum. Sant & Fern. LILIACEAE

86

ENGLISH NAME:-White Musale. Hindi - Safed Musli

PARTS-USED:-Fleshy Roots and Tubers.

HABIT:- A s mall herb becomes cons picuous after rainy season; when it flowers Leaves are flat ribbonshaped and 15 inch long.

TASTE:-Tasteless.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contain: Steroids, Resin, Phenolics, Tannins, Carbohydrates, Calcium, Magnessium and Potassium.

ACTIONS: Cooling, Diuretic, Aphrodisiac, Tonic.

USED IN:- Diarrhoea, Leucorrhoea, Dysentery, Gonorrhoea, Seminal debility and General debility.

प्रचलित नाम- सफेद मूसली

प्रयोज्य अंग- पुष्ट मूल एवं कंद

स्वरूप- लघु गुल्म, वर्षा ऋतु के पश्चात अति स्पष्ट हो जाता हे, जब पुष्प उत्पन्न होते हैं, तो पते लम्बे पतले तथा औसतन १५ इंच के होते हैं।

स्वाद- स्वादहीन (अस्वाद)

रासायनिक संगठन-इसके पुष्ट मूल में स्टीरॉयड्स, रेज़ीन, फैनोलिक्स, टैनिन्स, कार्बोदित, कैल्शियम, मैग्नेशियम एवं पोटेशियम घटक पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, मूत्रल, वाजीकारक, बल्य।

उपयोग-अतिसार, प्रदर, प्रवाहिका, अपसर्गिकामेह शुक्र दौर्बल्य एवं सामान्य दौर्बल्य में लाभदायक।

मात्रा- चूर्ण-पाँच ग्राम। इसके कंद का भी उपयोग मूसली के सामन किया जाता है। इसी कारण इसको कुछ लोग सफेद मूसली मानते हैं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चणक Cicer arietinum Linn. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

87

ENGLISH NAME:- Bengal Gram. Hindi - Chana
PARTS-USED:-Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- An annual erect or spreading, much branched herb, all parts covered with glandular hairs, leaves pinnate, pinnae small close set oval, oblong; flowers solitary, axillary; pod oblong.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain:- Protein, Carbohydrates, Phosphorus Aminoacids, Oxalic acid, Mallic acid, Vitamins A, D, E, Isoflavin, Saponins, Vanillic acid; Seedling Contains: Isoliquiritigenin, Biochanins, A,B and C.
ACTIONS:-Appitizer, Astringent, Antibillous, Diuretic, Laxative, Cooling, tonic, dimulcent carminative
USED IN:-Seeds are Used in: Polyuria, it brighten Complexion, Causes flatulauce, Nutritive, Cough, Dyscrasia, Roasted Seeds are Aphrodisiac, Nutritive, Spermopoitic, blood purifier and useful in cough, Paste of Leaves applied to Sprain & dislocation of limbs, dysmenorrhoea, prophylectic.

प्रचलित नाम- चना

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं बीज

स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत या प्रसरणशील अतिशाखीत गुल्म इसके तमाम भाग ग्रंथी रोम द्वारा आच्छादित, एकाकी कोणीय पुष्प।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में प्रोटीन, कार्बोदित, फोस्फोरस, एमीनो अम्ल, ऑक्सेलिक अम्ल, मैलिक अम्ल, विटामिन्स- ए, डी एवं ई, आइसोफ्लेवीन, सैपोनिन्स, वैनीलिक अम्ल, बीजांकुरों में आइसोलिक्विरीटी जेनिन, बायोचैनिन्स ए, बी एवं सी घटक पाये जाते हैं।

गुण-रुचिकर, ग्राही,पित्तघ्न, मूत्रल, मृदुरेचन, शीतल।

उपयोग-इसके बीजों का उपयोग प्रमेह में, कास, रक्तदोष में, पौष्टिक, वर्णय, आनाह उत्पन्न करता है। भुने हुए चने वाजीकारक, पौष्टिक, शुष्क्रवर्धक, रक्तशोधक एवं कास में लाभकारी। पत्रों का कल्क-मोच एवं अस्थिभग्न तथा संधिच्युत में लाभकारी। कामला रोग में भुने हुए चने एवं गुड़ तीन दिन खाने से लाभ होता है। पानी की प्यास लगने पर इस का घोल बनाकर पीना लाभकारी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चीनक कर्पूर Cinnamomum camphora Nees & Eberm. LAURACEAE

88

ENGLISH NAME:- Camphor plant. Hindi - Kapur
PARTS-USED:-Stem, Leaves and Extract.
DESCRIPTION:- Medium sized ever green hand some tree about 20-25 meter high Flowers small yellowish or creamish white.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Stem and leaves Contain: Essentialoils, (Stearoptens), sesquiterpenes, Campherenone, Campherenol, Laurolistine, Reticulein, Palmiton and Cyclepentenone.
ACTIONS: Anti fungal, Antibacterial, Cooling, Carminative, Stomachic, Antipyretic, Aphrodisiac, Stimulant.
USED IN:- Cold, Cough, pulmonary inflammation, carbuncles, Headache, Disuria, Throat disorder, Dental disorder CNS depressant, Anti spasmolytic, Anthel mintic, Hypotensive.

प्रचलित नाम- चीनिया कपूर
प्रयोज्य अंग-कांड, पत्र एवं सत।
स्वरूप-मध्यम कद का सदा हरित सुन्दर २०-२५ मीटर ऊँचा वृक्ष, पुष्प छोटे पीतवर्णी या क्रीमीश श्वेत रंग के।
स्वाद-तिक्त
रासायनिक संगठन-इसके पत्रों एवं कांड में उड़नशील तेल (स्टीयरौप्टीन्स) सेस्कवीटर्पेन्स, कैम्फीरीनॉन, कैम्फारीनॉल, लॉरॉलिस्टीन, रेटीक्युलीन, पामीटॉन एवं सायक्लोपेन्टीनॉन पाये जाते हैं।
गुण-फंफूदी नाशक, कीटाणुनाशक, शीतल, वातहर, दीपन, ज्वरघ्न, वाजीकर, उत्तेजक।
उपयोग-जुकाम, कास, फेफड़ों के शोथ, प्रमेह पीड़िका, शिर:शूल, मूत्रकृच्छ, कंठदोष, दंतदोष, केन्द्रीय नाड़ी संस्थान दबाव में, उद्वेष्टनरोधी, कृमिघ्न एवं दाबह्रासी में लाभकारी। कपूर के प्रयोग से उदर रोगों में लाभ होता है। अतिसार, आध्मान, वमन, शूल आदि में कपूर का प्रयोग बतासे के साथ किया जाता है। बिच्छू विष में-पान में थोड़ा सा कपूर डाल कर सेवन करने से, खाज-खुजली में कपूर एक तोला, सफेद कत्था एक तोला तथा सिंदूर आधा तोला, इन सबको इकट्ठा कर कांसे के बर्तन में डालकर इस में दस तोला घी मिलाकर, हाथ से अच्छी तरह मर्दन कर जल से अच्छी तरह धोना चाहिये, इसका प्रयोग खाज-खुजली वाले भाग पर करने से लाभ होता है। पलकों के बाल झड़ने पर- नीबू के रस में कपूर को अच्छी तरह घोट कर इसका प्रयोग पलकों पर करने से लाभ होता है। पैरों में खाली चढ़ने पर-कपूर को गरम तेल में मिला कर मालिश करने से लाभ होता है। कृमिरोग में-बच्चों को गुड़ में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ा-सा कपूर मिलाकर खिलाने से कृमि नाश होकर बाहर आ जाते हैं। दंतशूल तथा दंत कृमि में-दाढ़ों के नीचे थोड़ा-सा कपूर रखने पर लाभ होता है। नेत्रों में फूली पड़ने पर कपूर को वट दुग्ध में पीसकर नेत्रों में अंजन करने से नेत्र फूल नष्ट होता है। मूत्राघात में कपूर चूर्ण की कपड़े में बत्ती बना कर धीरे-धीरे शिश्न द्वार में प्रवेश कर थोड़ा समय रखने पर मूत्राघात ठीक हो जाता है। शरीर के विभिन्न भागों में वेदना शमन के लिये-कपूर को खरल में डालकर अच्छी तरह घोट कर (चूर्ण बन जाये) उसमें चार गुना तेल मिलाकर पुनः घोटना चाहिए, इस तैयार हुए तेल की मालिश वेदना युक्त अंग पर करने से वेदना का शमन होता है।

मात्रा- सत्व-१२५-३७५ मि.ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जिस प्रकार रस वृक्ष की जड़ से लेकर शाखाग्र पर्यन्त रहता है, किन्तु इस स्थिति में उसका आस्वादन नहीं किया जा सकता है। वही जब अलग से होकर फल के रूप में आ जाता है। तब संसार में सभी को प्रिय लगने लगता है।'- श्रीमद् भागवत महापुराण महालय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तमाल पत्र Cinnamomum tamala Nees & Eberm. LAURACEAE

89

ENGLISH NAME:- Tamala tree. Hindi - Tamal

PARTS-USED:-Leaves

DESCRIPTION- A medium sized, evergreen, scented, about 25 feet high, flowers yellowish in panicles.

TASTE:-Sweet aromatic.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Essential oil, Eugenol and Iso eugenol (Volatile aromatic oil.)

ACTIONS: Expectorant, Digestive, Carminative, Antifungal, Antibacterial, Tonic, Cooling.

USED IN:-Cough, Asthma, Abdominal disorder, diarrhoea, Indigestion, Decoction of leaves in: diabetes, Dyspepsia, Cough and is anti-inflammatory.

प्रचलित नाम- तेजपात

प्रयोज्य अंग-पत्र

स्वरूप-मध्यम कद का सुगंधित, सदाहरित औसतन २५ फूट ऊँचा वृक्ष, पुष्प पीतवर्णी शाखा प्रबंधित पुष्प विन्यास में गुंथे हुए।

स्वाद-मधुर सुगंधित।

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में- उत्पत्ततेल, युजीनॉल एवं आइसोयुजीनॉल (उड़नशील सुंगधित तैल) पाया जाता है।

गुण-कफ नि:सारक, पाचन, वातहर, फंफूदीनाशक, जीवाणुघ्न, बल्य, शीतल।

उपयोग-कास, श्वासरोग, उदर विकारों, अतिसार, अजीर्ण में लाभकारी। पत्रों का क्वाथ- मधुमेह, अग्निमांद्य, कास में, यह औषधि शोथहर गुणवाली है। इसके अतिरिक्त तमाल पत्र का प्रयोग गर्भाशय की शिथिलता में किया जा सकता है। तमाल पत्र का फांट ज्वर की पूर्वावस्था में पिलाने से अधिक मूत्र होकर पसीना छूटता है, जिससे ज्वर नहीं आता।

मात्रा- पत्र चूर्ण- १-३ मि.ग्राम।

●●●

'विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्। विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवन्ति। विज्ञानं प्रत्यन्त्यमिसंविशन्तीति।'

- तैत्तिरीय उपनिषद् (३.५.१)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्वक दारुसिता Cinnamomum zeylanicum Blume Syn, C. verum. LAURACEAE

90

ENGLISH NAME:- Cinnamombark. Hindi - Dalchini

PARTS-USED:-Stem Bark.

DESCRIPTION:- A small sized evergreen tree, but longerthan Tamalapatra tree, bark is alos more aromatic.

TASTE:-Pungent Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Brak Contains: Essential oil, Cinnamonoil, Eugenol, Volatile oil, Cinnamaldehyde, Camphor, Cinnzeylamine, Tannin and Gum.

ACTIONS: Antiseptic, Antifungal, Aromatic, Carminative, Stomachic, Digestive, Stimulant.

USED IN:- Bark: Gastroenterological Complaints, Flue, Indigestion, Mouth Washes, Leafoil: Anti fungal, Antimicrob, Clears throat, useful in Cough, Heart disease, Eczema, Piles and worms, Essential oil: Inhibitory effectoin pathogenic and non pathogenic fuugi.

प्रचलित नाम- दालचीनी

प्रयोज्य अंग-कांड की छाल

स्वरूप-लघु कद काा सदाहरित वृक्ष, तमाल पत्र वृक्ष से ऊँचा, इसकी छाल भी अधिक सुगंधित होती है।

स्वाद-तीक्ष्ण मधुर।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में उत्पत्ततैल, सिनामोन तेल, युजीनॉल, उड़नशील तेल, सिनाम एल्डीहाइड, कैम्फर, सिनझेलामाईन, टैनिन एवं गोंद घटक पाये जाते हैं।

गुण-पूतिरोधक, फंफूदी नाशक, सुगंधित, वातानुलोमन, दीपन, पाचन, उत्तेजक।

उपयोग-छाल पाचन संस्थानगत विकारों, फ्लु ज्वर, अजीर्णता, मुख गुहा सफाई में, पत्र तेल-फंफूदी नाशक, जीवाणु नाशक, कंठदोष दूर करता है, कास, हृदय रोग, खाज-खुजली अर्श तथा कृमि में उत्पत तेल रोग उत्पादक एवं रोग अनुत्पादक, फंफूदीनाशक। इसके तेल का प्रयोग क्षयज व्रण पर किया जाता है। आमाशय के रोगों में इसका अधिक प्रयोग होता है। आध्मान, मरोड़, आमाशयिक शूल एवं वमन में इसके तेल को मिश्री के साथ खिलाते हैं। वात विकार में- दालचीनी के तेल की मालिश करने से लाभ होता है। पित्त बनकर वमन होने पर-दालचीनी का क्वाथ बनाकर पिलाने से लाभ होता है। जुकाम के कारण शिर:शूल में-दालचीनी को घिसकर गरम कर लेप करना चाहिए या दालचीनी का अर्क निकालकर मस्तिष्क पर लेप करने से लाभ होता है। कास, कंठ रोग, यक्ष्मा में-दालचीनी के तेल का अल्प मात्रा में सेवन करने से कीटाणुओं पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है, इससे कीटाणुओं का नाश होकर रोग ठीक हो जाता है। प्रसव पीड़ा में मांस पेशियों की शिथिलता घटाने के लिये दालचीनी का प्रयोग पीपल मूल एवं भांग के साथ करने से लाभ होता है। संधिवात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(आरथ्राइटिस) में- दालचीनी का चूर्ण एवं मधु की पेष्ट बनाकर संधिवात ग्रस्त भाग पर धीरे-धीरे मालिश करने से लाभ होता है। एक कप गुनगुने जल में मधु एवं दालचीनी का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए। मूत्राशय संक्रमण में-एक ग्लास गुनगुने जल में एक चम्मच मधु तथा दो चम्मच दालचीनी चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

कास प्रतिश्याय में-एक चम्मच मधु को थोड़ा सा गुनगुना कर एक चौथाई चम्मच दालचीनी चूर्ण मिलाकर दिन में तीन-चार बार । कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिये-एक कप चाय के पानी में दो ग्राम मधु तथा तीन ग्राम दालचीनी चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन तीन बार सेवन से अति लाभकारी। उदररोगों में:- मधु में दालचीनी चूर्ण मिलाकर चाटने से (दिन में तीन बार) उदर रोगों के साथ-साथ उदर व्रण में लाभ होता है। शीत प्रधान संक्रामक ज्वर में-मधु में दाल चीनी का चूर्ण मिलाकर सेवन से ज्वर के कीटाणुओं का नाश होता है। चर्मरोगों में-मधु एवं दाल चीनी चूर्ण (समभाग) मिलाकर पेस्ट बनाकर रोग ग्रसित भाग पर लगाने से थोड़े ही दिनों में खुजली, खाज तथा फोड़े-फुन्सी जैसे चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं।

मात्रा- छाल चूर्ण- १-३ मि.ग्राम।



'विद्यां चाविद्यां च यस्त द्वेदोभयꣳ सह। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृत मश्नुते॥' - ईशोपनिषद्

अर्थात्- जो आत्म ज्ञान तथा प्राकृतिक विज्ञान इन से मृत्यु को दूर करके आत्म-ज्ञान से अमरत्व प्राप्त करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लघुपाठा Cissampelos pareira Linn. MENISPERMACEAE

91

ENGLISH NAME:- Velvetleaf. Hindi - Patha
PARTS-USED:- Root and Bark.
DESCRIPTION:-A climber, branches grooved, pubescent with peltate & orbicular cordate leaves flowers small and greenish-white, drupe small, subglobose
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Root and its bark contain: A lkaloids: Cissampareine, Berberine, Cissampeline, Pelosine, Hayantin, Hayatinin, Saponin.
ACTIONS: Wound healing, Astringent, Blood puri fier, Antileprotic, Antipyretic, Tonic, Diuretic, anthelmintic, expectorant, galactogogue
USED IN:-Roots in: Ulcer, Gonorrhoea Chronic inflammaiton in bladder; Decoction in: Enlargedspleen, Lowering blood pressure, Indigestion, Headache, Diarrhoea, Leaves Juice in: Eyetroubles; Paste of Crushed leaves applied in skindiseases & Wounds; Leaves chewed in fever, Epilepsy, Gravel, Cholera, Bronchitis, Colic & Dysentery.

प्रचलित नाम- पाठा

प्रयोज्य अंग- मूल एवं छाल

स्वरूप-एक काष्ठीय घनी लता, जिसका कांड खांच युक्त रोमेश, पत्र गोल छत्राकार हृदयाकार, पुष्प सूक्ष्म तथा श्वेत हरित।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके मूल एवं मूल की छाल में-एल्कलॉयड्स-सिसाम्पेरीन, बर्बेरिन, सिसाम्पेलीन, पॅलोसिन, हयान्टिन, हयातिनिन एवं सोपोनिन घटक पाये जाते हैं।

गुण- व्रण रोपण, ग्राही, रक्त शोधन, कुष्ठघ्न ज्वरघ्न, बल्य, मूत्रल।

उपयोग- मूल-व्रण अपसर्गिका मेह, जीर्ण मूत्राशय शोथ में, मूल का क्वाथ-प्लीहावृद्धि, रक्त भाराधिक्य कम करने में, कुपाचन, शिरःवेदना, अतिसार में, पत्रों का रस-नेत्र रोगों में, घुटे हुए पत्रों के कल्क का बाह्य प्रयोग चर्मरोगों एवं घाव में, ज्वर, अपस्मार, अश्मरी, हैजे में, श्वसनीशोथ, उदर शूल एवं प्रवाहिका में पत्रों को चबाने से लाभ होता है।

मूल का फांट- अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, रक्त मूत्र जैसे विकारों में लाभदायक।

पीनस रोग में-पाठादि तेल इसकी तीन बूंद नाक में डालने से अति कष्ठपीनस रोग भी ठीक होता है।

शीत ज्वर (मलेरिय ज्वर)- इसके मूल का क्वाथ बनाकर काली मिरच का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।

अतिसार एवं दाह में-इसके मूल तथा आम की अंतर छाल दही में पीसकर सेवन से लाभ होता है।

सूजन पर-इसके मूल को गरम जल में पीसकर सेवन कराना चाहिए तथा सूजन पर इसका लेप करने से लाभ होता है।

शीतमेह में-इसके मूल तथा गोक्षुर का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्तातिसार-इसके मूल का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। मूत्राश्मरी (मूत्राशय में होने वाली छोटी-छोटी अश्मरी) इसके मूल का क्वाथ पिलाने से अश्मरी निकल आते हैं।

सान्द्रमेह में (मूत्र में म्युकस या सफेद क्षार आता हो) नीम की छाल, पाठा के मूल, गोमूत्र में क्वाथ बनाकर मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। यह वनौषधि मूत्रेन्द्रिय रोगों में लाभकारी। (शोथहर शूल शामक तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तमूत्र)।

मात्रा- क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.। चूर्ण- १-३ ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रामचरित मानस के उत्तर काण्ड में शिवजी पार्वतीजी को काक - भुशुण्डि जी के निवास स्थान का वर्णन निम्न प्रकार से करते हैं-

पीपर तरु तर ध्यान जो धरई। जाप यज्ञ पाकरि तर करई॥
आँब छाँह करि मानस पूजा। तजि हरि भजन काहु नहिं दूजा॥
वट तर कह हरि कथा प्रसंगा। आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अस्थिसंहारी Syn. Viti Cissus quadrangularis Linn. squadrangularis Wall. VITACEAE

92

ENGLISH NAME:-Edible-stemmed Vine. Hindi - Harjuri

PARTS-USED:-Root, stem and Leaves.

DESCRIPTION:- A tendril climber, stem quadrangular, grean with distinct articulate nodes and inter nodes, tendrils at nodes, opposite the leaf, leaves simple, ovate, dentate, flowers greenish-white, in branched cyme.

TASTE:-Tasteless (Mucilaginous)

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Carotene, Calcium oxalate, Vitamin-c, alpha-Amyrin, alpha-Amyrone and Beta-sitostosterol.

ACTIONS: Stomachic, Digestive, Spermopioitic, Alterative.

USED IN:- Piles, Union of fracture, irregular mensturation, Asthma, treat ment of Eye, Anthelmintic, Antiscorbutic, Scurvy; Juice of Plant given internally and applied externally on fractured bone.

प्रचलित नाम- हड़जोड़

प्रयोज्य अंग-मूल, कांड एवं पत्र

स्वरूप-सूत्रारोही लता, कांड चतुष्कोणी, हरित इसमें पर्व तथा आंतरपर्व स्पष्ट सूत्रों का उद्भव पर्व पर से तथा पत्र के सन्मुख होते हैं।

स्वाद-अस्वाद (श्लेष्मक)

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में कैरोटीन, कैल्शियमऑक्सेलेट, विटामिन-सी, अल्फा-एमिरीन, आल्फा-एमिरॉन एवं बीटा-सिटोस्टीरॉल घटक पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, पाचन, शुक्रवर्धक, विपर्यय।

उपयोग-अर्श, टूटी हड्डी को जोड़ने में, अनियमित आर्त्तव, श्वासरोग, नेत्र रोग उपचार, कृमिघ्न, रक्त पित्त नाशक, स्कर्वी, पंचांग का स्वरस, टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में इसका अंतर्ग्रहण एवं बाह्य प्रयोग किया जाता है। मूल का चूर्ण-जो प्लास्टर के प्रभाव जैसा होता है, टूटी हुई हड्डी पर लेप करने से लाभ होता है। इसके कांड को पीस कर इसका लेप तीन दिन तक अस्थिभग्न पर करने से लाभ होता है। पंचांग का स्वरस कर्णस्राव एवं नासिका के रक्त स्राव में डालते हैं। कुपचन में पत्र एवं कांड का शाक बनाकर खिलाते हैं। इसका कांड एवं पत्र पाचक, रक्तशोधक तथा रक्त संग्राहक होता है। सर्वप्रकार के वात रोगों में-इसके कांड के ऊपर की छाल निकाल कर इसका चूर्ण बनाकर उड़द की दाल के आटे में मिलाकर तिल के तेल में इसके वड़े तल के सेवन करने से सभी प्रकार के वात रोगों में लाभ होता है। अस्थिभग्न में-हड़जोड़ में घी को पका कर सेवन करने से या हड़जोड़ के स्वरस में घी मिलाकर सेवन से टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिये-हड़जोड़ के स्वरस इसके ही कल्क के साथ तेल पकाकर स्त्री को आर्त्तव के समय पिलाना चाहिए। अजीर्णता के कारण होने वाले उदर रोगों में-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हड़जोड़ के पत्र एवं कोमल टहनियों को सुखा कर चूर्ण बनाकर सेवन से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यह एक उत्तम रसायन है। श्वासरोग में-इसकी कोमल टहनियों का चूर्ण अति लाभकारी। कर्णशोथ में-इसकी टहनियों का स्वरस कान में एक से दो बूँद डालने से लाभ होता है। इसके पंचांग को सुखाकर जलाकर इसकी राख का प्रयोग बेकिंग पाउडर की तरह किया जाता है। हड़जोड़ के बारे में बनारस कॉलेज के मेडीकल साईन्स विभाग के डॉ. के. एन. उडुपा ने एक महत्त्वपूर्ण जानकारी दी है।

हड़जोड़ के प्रत्येक एक सौ ग्राम में ४७८ मि.ग्राम एस्कोर्बीक एसिड तथा २६७ मि.ग्रा. कैरोटिन होता है। इसके अतिरिक्त कैल्शियम ऑक्सेलेट प्रचुर मात्रा में एनाबोलिक स्टीरोइड जैसा एक पदार्थ भी इसमें होता है। उपर्युक्त सभी रसायनिक घटक अस्थि भग्न पर बांधने से अच्छा लाभ होता है।

मात्रा- स्वरस-१० से २० मि.ली.

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जहाँ धरती माता सबसे अधिक खुश होती है, वह है जहाँ पर सत्य पर चलने वाला मनुष्य अन्न, घास और फल लगाता है। उन्हें पैदा करता है और सुखी जमीन को पानी से सींचता है।'

- अपेस्ता (पेंदीदाद-पारसी धर्मग्रंथ)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन्द्रवारुणी Citrullus colocynthis schrader. CUCURBITACEAE

93

ENGLISH NAME:-Colocynth/Bitter apple. Hindi - Indrayan
PARTS-USED:-Fruit & Root.
DESCRIPTION:- A perennial monoecious climber, creeping on ground with tendril, Flowers of light yellow colour.
TASTE:- Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contain: Steroid, Alpha-Elaterin, Colosynthin, Colosynthotin and Saponins; Seeds Contain: Fixed oil, Phytosterolin, Phytosterol, Saponin, Alkaloid, Glycosides, Tannins Fatty acids; Fruit Contains: Citrulluin, Citrullic acid, Glucose, Frucose, Manolic acid.
ACTIONS: Cooling, Bitter, Antibillous, Laxativc, Diuretic, Anti inflammatory Anthelmintic.
USED IN:- Jaundice, Cough, spleenomegaly, Epilepsy, Leprosy, Fever, ulcer, Asthma, Dropsy Goiter; Small fruits taken out during rainy, season and stuffed with common salt and Ajvain: Cures acutestomach pain, usedin kala-azar, and is Hypogly caemea Rheumatism.

प्रचलित नाम- इन्द्रायण

प्रयोज्य अंग-फल एवं मूल

स्वरूप-चिरस्थायी, एक सदनी लता जो भूमि पर प्रसरण शील तथा सूत्र युक्त, पुष्प अल्प पीतवर्णी।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके मूल में स्टीरोईड, आल्फा-इलैटेरीन, कोलोसिन्थीन, कोलोसिन्थोटिन एवं सेपोनिन्स, इसके बीज में स्थापित तेल, फायटोस्टेरोलिन, फायटोस्टेरॉल, सेपोनिन्स, एल्कलॉयड्स, ग्लायकोसीड्स, टैनिन्स वसा अम्ल, इसके फल में, सिट्रुल्युन सिट्रुलेन, सिट्रुलिक अम्ल, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज़ एवं मैनोलिक अम्ल घटक पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, तिक्त, पित्तनाशक, मृदुरेचक, मूत्रल, शोथहर, कृमिघ्न।

उपयोग-कामला, कास, प्लीहा वृद्धि, अपस्मार, कुष्ठरोग, ज्वर, व्रण, श्वासरोग, जलोदर, गण्डमाल (गलगण्ड) में लाभदायक। वर्षाऋतु में इसके छोटे-छोटे फलों को इकट्ठाकर उसमें नमक एवं अजवायन भरके उसके सेवन से तीव्र उदरशूल, काला-झार एवं रक्त में शर्करा की मात्रा कम होने तथा आमवात में इसका प्रयोग लाभकारी।

सर्पदंश में-इसके मूल का चूर्ण पान के पत्ते के साथ सेवन करने से लाभ। अनार्त्तव में मूल का चूर्ण लाभकारी। इसके बीजों का तेल बालों को काला करने में किया जाता है।

बच्चों के न्यूमोनिया में इन्द्रवारुणी के मूल का चूर्ण १/२ से एक ग्राम तथा सैंधव लवण १/४ ग्राम उष्ण जल के साथ सेवन कराना चाहिए। कास (खाँसी) में इसके फल में काली मिरच भरकर सूर्य की गरमी में सूखने के लिए रखना चाहिए। इसके पश्चात्

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें से प्रतिदिन सात काली मिर्च के दाने मधु तथा पिप्पल के साथ सेवन करने से कास में लाभ होता है। इसके मूल अतिरेचक होने के कारण यह आँव तथा कफ को बाहर निकालते हैं।

आर्त्तव की रुकावट में इन्द्रवारुणी के तीन ग्राम बीज, पाँच दाने काली मिर्च इन सबको पीस कर २०० ग्राम जल में १/४ क्वाथ बनाना चाहिए, ५० ग्राम जल बाकी रहे, तब अग्नि से उतार कर, इसको छानकर पिलाना चाहिए।

मात्रा- फल का चूर्ण- १/८ से २/८ ग्राम।
मूल का चूर्ण- १ से ३ ग्राम।



www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'अध्यात्म की अग्नि आस्तिक और नास्तिक के समान रूप से प्रज्वलित रहती है, प्रेम का अस्तित्व आस्तिक है, नास्तिक में समान रूप से होता है। आस्तिक का प्रेम ईश्वर की ओर अभिमुख होता है। नास्तिक का प्रेम प्रकृति की ओर अभिमुख होता है।' -श्रीसत्यसांई बाबा 'सनातन सारथी'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निम्बूक Citrus medica Linn. var. acida Watt. RUTACEAE

94

ENGLISH NAME:-Lime/ plant. Hindi - Baranimbu
PARTS-USED:-Fruit.
DESCRIPTION:- Small thorny shruby tree, 5-10 feet high, ovate leaf with winged petiole and white flowers 3 to 10 in axil of leaf, fruits evoid, yellow, pulp acidic.
TASTE:-Sour.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit contains: Ascorbic acid, Fructose, Glucose, Sucrose, Pectin, Jasmonic acid, Eriodictyol, Rutinosides, Flower bud contains: Amino acids; Leaves: Bergaptin, Citropten Eriocitrin, Limettin, Deoxyribonucleic acid and starch; Leaf oil contains: Citronellal, Citronellol Geranial, Limonene. Linalool, Myrecene, Ocimene.
ACTIONS: Antiseptic, Appitizer, Astringent, Digestive, Stomachic, Anthelmintic, Diuretic, Antipyretic, Anti-thirst.
USED IN:- Liver troubles, scorbutic, in vomiting, Burning sensation, Cough, Throat disorder, Colic, Tuberculosis, Arthritis, Anthelmintic; Juice of fruit is used as Refregerrant drink and allaying thirst, useful in Diarrhoea and Fever.

प्रचलित नाम- कागजी नींबू

प्रयोज्य अंग-फल

स्वरूप-छोटा कंट की क्षुप जैसा वृक्ष, जो ५-१० फुट ऊँचा, पत्र सपक्षा वृंत युक्त, पुष्प श्वेत तथा पत्र कोण में से उत्पन्न होते हैं।

स्वाद-आम्ल।

रासायनिक संगठन-इसके फल में एस्कोर्बीक अम्ल, फ्रुक्टोज़, ग्लुकोज, सुक्रोज, पेक्टीन, जस्मोनिक अम्ल, एरियोडीक्टीयॉल एवं रुटीनोसाइड्स, इसकी पुष्प कली में एमीनो अम्ल पाये जाते हैं। पत्रों में बर्गेप्टीन, सिट्रोप्टीन, ऐरियोसिट्रीन, लिमेटिन, डीओक्सीरीबोन्युक्लीयक अम्ल एवं स्टार्च, पत्र के तेल में सिट्रोनिलाल, सिट्रोनीलोल, जिरानियॉल, लिमोनीन, लिनालूल मिरसीन एवं ओसीमीन घटक पाये जाते हैं।

गुण-पुतिरोधी, रुचिकर, ग्राही, पाचन, दीपन, कृमिघ्न, मूत्रल, ज्वरहर एवं तृषा शामक।

उपयोग-यकृतरोगों, रक्तपित्त रोग, छर्दि, दाह, कास, कंठ अवरोध, शूल, क्षय, आमवात, कृमिरोग में लाभदायक। फल का रस शीतल पेय के कारण तृषाशामक है। इसका उपयोग अतिसार एवं ज्वर में लाभकारी।

निम्बू का रस, अदरख एवं कालानमक को मिलकर भोजन से पहले सेवन करने से अजीर्णता में लाभकारी, इससे अग्नि प्रदीप्त होती है एवं वायु कफ तथा आमवात का नाश होता है। इसके अतिरिक्त नीबू के रस को चीनी में मिलाकर सेवन करने से हैजे का आजार नहीं होता है।

विषूचिका (कोलेरा) में प्रतिदिन दो नींबू के रस का सेवन भोजन पूर्व करना चाहिये या रस को मिश्री के साथ मिलाकर सेवन करने से कोलेरा प्रभाव हीन हो जाता है। पित्तशमन के लिये नींबू के रस में मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्त का शमन होता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। नीबू का रस नवीन आमवात, रक्तपित्त तथा वातरक्त में अति लाभकारी है। आमवात में नींबू का रस एक-दो औंस अतिलाभकारी है। आमवात में नींबू का रस एक-दो औंस चार-चार घंटे बाद सेवन करना चाहिये। नेत्र रोगों में नींबू के रस में अफीम को लोहे के तवे पर पीस कर नेत्रों पर लेप करना चाहिए या लोहे के जंग को नींबू के कटे हुए आधे भाग पर छांट कर पीले कपड़े में पोटली बनाकर नेत्रों पर स्पर्श कर घुमाने से आँखों में होने वाली जलन, खुजली तथा लाली सभी नेत्र विकार नष्ट हो जाते हैं।

मात्रा- फल का रस-१० से २० मि.ली.।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

''वह पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करता है, पाकर वृक्ष के नीचे जप यज्ञ करता है, आम की छाया में मानसिक पूजा करता है। श्री हरि के भजन को छोड़कर उसे दूसरा कोई काम नहीं है। बरगद के नीचे वह श्री हरि के कथाओं के प्रसंग कहता है, वहाँ अनेक पक्षी आकर कथा सुनते हैं।'' - वनस्पति अध्यात्म

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीजपुर Citrus medica Linn. RUTACEAE

95

ENGLISH NAME:-Citron. Hindi - Nimbu

PARTS-USED:-Fruit and Leaves.

DESCRIPTION:- A small tree, about 10 feet high, branches thick small and spiny with white flowers, leaves simple; petiole winged. fruit globose, yellow, acidic.

TASTE:-Sour.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit Contains: Vitamine-c, Citric acid; Rind Contains very aromatic oil-Citron oil.

ACTIONS: Stomachic, Heart Tonic, Anti-emetic, Appitizer, Astringent.

USED IN:- Throat disease, Heart disease, Antiscorbutic, Cough, Asthma, increases appitizer, Allaysthirst, Roots: Anthelmintic, used in Vomiting and urinary Calculii. Infusion of Leaves in Fever.

प्रचलित नाम- बीजोरा नींबू

प्रयोज्य अंग-फल एवं पत्र

स्वरूप-लघु वृक्ष, औसतन १० फूट ऊँचा, शाखाएँ मोटी-छोटी तथा कंटकयुक्त, पुष्प सफेद।

स्वाद-आम्ल

रासायनिक संगठन-इसके फल में- विटामिन-सी, सिट्रीक अम्ल, इसके छिलके में अत्यंत सुगंधित तेल-सिट्रोन तेल पाया जाता है।

गुण-दीपन, हृद्य, कृमिघ्न, वमन शामक, रुचिकर, ग्राही।

उपयोग-कंठदोष, हृदयरोग, रक्तपित्त रोग, कास, श्वासरोग में लाभकारी। इससे भूख बढ़ती है एवं तृषा शामक है। इसका मूल कृमिघ्न एवं वमन में तथा मूत्राश्मरी में लाभदायक। पत्रों का फांट ज्वर में लाभकारी। मूल का चूर्ण कृमिरोग एवं मूत्राश्मरी में सेवन से लाभ। फल का रस-स्वादिष्ट अम्ल रस युक्त जिससे तृषा तथा अरुचि दूर होते हैं।

गुल्म रोग में इसके मूल की छाल का चूर्ण जल के साथ सेवन से लाभ होता है। पित्त को अपने स्थान पर लाने के लिए-बिजोरा के रस में मधु, लौंड़ी पीपर, सोंठ तथा काली मिर्च मिलाकर पिलाने से पित्त अपने स्थान पर आ जाता है। बिजोरा के मूल का चूर्ण तथा इसके पुष्पों का चूर्ण (समभाग वजन में) मिलाकर चावल की मांड के साथ सेवन से रक्तपित्त ठीक हो जाता है। कर्णशूल में-इसके फल के रस की एक-दो बूंदें डालने से कर्णशूल ठीक हो जाता है। पित्त ज्वर वाले को तृषा अधिक लगने पर:-इसकी कली या मधु तथा सेंधव नमक यह सब एक साथ पीसकर मुख के तलवे पर लेप करने से तुरंत तृषा मिट जाती है। मूत्र में रेती आने पर- इसके मूल की छाल के महीन चूर्ण का सेवन रात के बासी जल के साथ प्रात:काल सेवन से लाभ होता है। वातजन्य शूल में- इसके मूल की छाल का एक तोला चूर्ण घी के साथ सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है। हृदय, पसलियों तथा वस्तिशूल में- इसके फल का रस, जवक्षार तथा मधु को मिलाकर पीने से इस प्रकार का शूल मिट जाता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पीत हुरहुर syn. Cleome. isocandra Linn. Cleome viscosa Linn Cleomaceae CAPPARIDACEAE

96

ENGLISH NAME:-Yellow-cleome. Hindi - Hul-Hul

PARTS-USED:-Leaves and Seeds.

DESCRIPTION:- Annual erect pole 1-3 feet high herb, stem grooved and hairy, leaves tri to pentafoliate, terminal leatlet is largest; flowers yellow and fruits long siliqua 10-13 cm, seeds-with transvers straitims bracts prominant blackish, shining.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Viscosic acid and visosin.

ACTIONS: Diphoratic, Stimulant, Anthelmintic.

USED IN:- Scorbutic, Asthma, Cough, Fever, Leprosy, Abscess, Polyuria, Uterus trouble, Anaemia and Worms.

प्रचलित नाम- चमनी-पीला हुरहुर

प्रयोज्य अंग-बीज एवं पत्र

स्वरूप- एक वर्षायु उन्नत १-३ फुट ऊँचा गुल्म, कांड रोमश तथा खांच युक्त पत्र तीन से पाँच पत्री, अग्रस्थ पत्रिका बड़ी, पुष्प पीतवर्णी तथा फली लम्बी एवं सिलीकुवा प्रकार की।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके बीज में विस्कोसीक अम्ल तथा विस्कोसीन तत्त्व पाये जाते हैं।

गुण-स्वेदजनन, उत्तेजक, कृमिघ्न, कोष्ठवात-प्रशमन।

उपयोग-रक्तपित्त रोग, श्वासरोग, कास, ज्वर, कुष्ठरोग, विस्फोटक, प्रमेह, योनिरोग, पाण्डुरोग तथा कृमिनाशक। बीज का प्रयोग- कृमियों में लाभकारी।

पत्रों का लेप- आन्तरिक शोथ में लाभकारी। पत्तों का पंचांग- स्फोटोत्पादन में लेप लाभदायक।

स्वरस में तेल मिलाकर- पूति व्रण एवं वार्धिय में कान में डालने से लाभ।

मात्रा- बीज- १ से ३ माशा।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षुद्र अग्निमंथ (कुंडली) Clerodendrum inerme (Linn) Geartn. VERBENACEAE

97

ENGLISH NAME:-Garden Quinine. Hindi - Arni

PARTS-USED:-Whole plant, Roots and Leaves.

DESCRIPTION:-Much branched stragling shrub, 1-2 meter high, with white flowers.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Neolignan, Flowers Contain: Galactose, Glucose, Fructose, Lysine, Arginine, Serine, Protein, Threonine and L-Glutamic acid, Stem and Leaves: Alpha-amyrin, Betulin, Neoclerodane, Diterpenoid, Cleroinermin, Beta-sitosterol, Clerodermic acid, Acacetin and Apigenin.

ACTIONS: Mucilaginous, Bitter, Fragrant, Nutritive, Blood Purifier.

USED IN:- Remittetn fever, (whole plant) Juice of Leaves: used in Scrofula, Veneral disease; Paultice of Leaves in Buboes; Roots Boiled in oil: Applied in Rheumatism; this plant possessless properties like Quinine.

प्रचलित नाम- छोटा अरनी/ लंजाई

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल एवं पत्र

स्वरूप-अति शाखीत १-२ मीटर ऊँचा क्षुप, पुष्प सफेद।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में नियोलिग्रॉन, इसके पुष्पों में गैलेक्टोज, ग्लूकोज़, फ्रुक्टोज, लायसिन, आर्जीनीन, सेरीन, प्रोटीन, थ्रियोनीन एवं एल-ग्लुटामिक अम्ल, कांड एवं पत्रों में आल्फा एमीरीन, बीटा-एमीरीन, बेट्युलिन, नियो क्लोरोडेन, डाय-टर्पेनोईड, क्लेरोइनरमाईन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, क्लेरोडर्मीक अम्ल, एकेसीटिन एवं एपीजेनिन घटक पाये जाते हैं।

गुण-श्लेष्मक, तिक्त, सुगंधित, पौष्टिक, रक्तशोधक।

उपयोग-इसके पंचांग का उपयोग विषम ज्वर में लाभकारी। पत्रों का स्वरस गण्डमाल एवं मैथुन संबंधित रोगों में लाभदायक, पत्रों की पुल्टिस का उपयोग प्लेग की गांठ पर लाभदायक। मूल को तेल में गरम कर इसका प्रयोग आमवात में लाभकारी। इसमें क्वीनईन थोड़े कम गुण पाये जाते हैं।

पत्रों एवं मूल को पीसकर इसकी पुल्टिस गण्ड एवं संधि शोथ तथा आमवात में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अग्निमंथ Syn.C.multiflorum (Burmf) O. Ktze Clerodendron phlomidis Linn. VERBENACEAE

98

ENGLISH NAME:-Clerodendron. Hindi - Erni
PARTS-USED:-Roots, Leaves & whole plant.
DESCRIPTION:- Large bushy shrub, shoots are pubescent, leaves rhomboid, ovate clentate flowers fragrant & white.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Pectolinargenin, Scuttelarein, Apigenin, Clerostrol, Hispudilin Luteolin, Clerodendrin, Cerolic acid, Cerylalcohol, Raffinose, Cholesterol Beta-sitosterol.
ACTIONS: Alterative, Tonic, Astringent, Demulcent, Stomachic, Anti inflammatroy glycosuria, coryza.
USED IN:- Oedema, Anaemia, Syphilis, Gastric stimulant, Bitter tonic for chrildren during measles, useful in Cold, cough, Piles, Swelling, Constipation, Rheumatism, Dyspepsia and Diabetes.

प्रचलित नाम- अरनी

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल एवं पत्र

स्वरूप-बड़ा झाड़ीदार क्षुप, शाखाएँ रोमश, पुष्प सफेद एवं सुगंधित।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में पेक्टोलिनारजेनिन, स्कूटेलेरेन, एपीजेनिन, क्लेरॉस्टीरॉल, हिस्पुडीलीन, ल्युटियोलिन, क्लेरोडेन्ड्रीन, सिरोलिक अम्ल, सिरल एल्कोहल, रैफीनोस, कॉलेस्टरॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल घटक पाये जाते हैं।

गुण-विपयर्य, बल्य, ग्राही, शामक, दीपन, शोथहर।

उपयोग-शोथ, पाण्डुरोग, फिरंग, गेस्ट्रीक उत्तेजक, तिक्तबल्य-जो बच्चों को खसरे तथा शीतला में लाभकारी। इसका उपयोग प्रतिश्याय, कास, अर्श, शोथ, विबंध, आमवात, अग्निमांद्य एवं मधुमेह में लाभकारी। पत्रों को पीसकर इसका लेप मोच तथा शरीर पीड़ा में लाभकारी। पत्रों का रस मधुमेह में लाभकारी पाया गया है। आन्तरिक ज्वर तथा आमवात में इसके मूल सोंठ एवं कालीमिर्च के साथ सेवन से लाभ होता है। मूल का क्वाथ-बच्चों को शीतला एवं खसरा ग्रस्त रोग में लाभदायक। इसके मूल का क्वाथ संधिवात, वात ज्वर तथा ज्वर पश्चात् होने वाली कमजोरी में पिलाने से लाभ होता है। इसके पंचांग का क्वाथ बनाकरं (अधिक मात्रा में) बड़े बर्तन में भर कर उसमें संधिवात कटिशूल तथा अर्श के रोगी को उसमें बिठाकर गरम क्वाथ की धार करने से लाभ होता है। शारीरिक स्थूलता कम करने के लिए (मेद घटाने के लिए)-अग्निमंथ का चूर्ण या क्वाथ प्रतिदिन पिलाना चाहिए या पत्र का स्वरस शिलाजीत के साथ सेवन करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। (पत्र स्वरस दो तोला तथा शिलाजीत १/१० तोला) यह प्रयोग स्थूलता निवारण के लिए उत्तम है।

प्रतिश्याय (जुकाम) में-इसके पत्रों को उबालकर इसमें काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पिलाने से पुराने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है। मुँह (चेहरे) पर काले दाग दूर करने के लिए-इसके मूल को जल में घिस कर इसका लेप चेहरे पर करना चाहिए या बकरी के दूध में अग्निमंथ के मूल को घिसकर इसका लेप करना चाहिए।

इक्षुमेह तथा वसामेह में- इसके मूल का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा- चूर्ण-१-३ ग्राम।

क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।

स्वरस- १०-२० मि.ली.

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'देखने में फूल खूब सुन्दर हो, पर उसमें सुगंध न हो तो उसका होना न होना बराबर है। उसी तरह जो आदमी बोलता तो बहुत मीठा है, पर जैसा बोलता है, वैसा करता नहीं, उसकी मीठी वाणी व्यर्थ है।' -धम्मपद पुष्प वग्गो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारङ्गी Clerodendron serratum Spreng. VERBENACEAE

99

ENGLISH NAME:-Turk's Turbon. Hindi - Agia
PARTS-USED:-Roots, Bark and Leaves.
DESCRIPTION:- A small shrub 4-8 feet high, three leaves at node, white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots and Leaves Contain: Glycosides, Olianolic acid, Querteroic acid, Serotonic acid, Manitol, Saponins; Orange Coloured Resinous Subtance, Starch.
ACTIONS: Anti-histaminic, Hypotensive, Antibiotic, Febrile, Blood purifier, Astringent Stomachinc, Carminative.
USED IN:- Malarial fever, Catarrheal affections, Asthma, Cough, Dropsy, Cholera, Fistula, Sores, Rheumatism, Tuberculosic cough; Decoction of Root: useful in fever, Cough, skin disease, Nervine ulcer and Tuber culosis.

प्रचलित नाम- भार्गी
प्रयोज्य अंग- मूल, छाल एवं पत्र
स्वरूप-लघु ४-८ फुट ऊँचा क्षुप, प्रत्येक पर्व पर तीन पत्र, पत्र किनार दंतुर, पुष्प सफेद।
स्वाद-तिक्त
रासायनिक संगठन-इसके मूल एवं पत्रों में- ग्लॉयकोसाइड्स, ऑलियानॉलिक अम्ल, क्वेरेटेरोइक अम्ल, सेरोटोनिक अम्ल, मेनीटॉल, सेपोनिन्स, नारंगी रंग का रालयुक्त पदार्थ एवं स्टार्च घटक पाये जाते हैं।
गुण-प्रत्युर्जताशामक, दाबह्रासी, जैवघ्न, ज्वरहर, रक्तशोधन, ग्राही, दीपन, वातहर, पाचक, रुक्ष, उष्ण।
उपयोग-विषम ज्वर, प्रतिश्याय, श्वास रोग, कास, जलोदर, हैजा, नाड़ीव्रण, फोड़ों पर, आमवात, यक्ष्मजकास, मूल का क्वाथ ज्वर, कास, चर्मरोग, नाड़ीव्रण एवं यक्ष्मा में लाभकारी। पत्रों को पानी में उबालकर जल को पीने से कृमियों का नाश होता है। श्वास रोगों में पत्र तथा शुण्ठी का क्वाथ या मूल का चूर्ण तथा अदरख का रस मिश्री के साथ मिलाकर सेवन से लाभ होता है। पत्रों की पुल्टिस बनाकर फोड़ों पर लगाने से लाभ होता है।

हरपीज़ (परिसर्प) में- इसके पत्र तथा कोमल डालियों का रस लगाने से लाभ होता है। संधिवात में- इसकी गोंद का सेवन इसमें लाभकारी है। मलेरिया ज्वर में-इसके कोमल पत्रों का शाक खिलाने से यह ज्वर नष्ट होता है। शोथ में-इसके बीजों का चूर्ण घी में भून कर खाते हैं।

उदर विष में-इसके मूल को जल में घिसकर १०० मि.ली. जल में मिलाकर पिलाना चाहिए तथा शरीर पर भी इसकी मालिश करनी चाहिए।

गण्डमाल में- इसके मूल को चावल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के जल में घिसकर लेप करने से लाभ होता है। सर्पदंश में-भारंगी तथा रीठा के पत्रों के स्वरस में रीठे के फल को घिसकर थोड़े-थोड़े अंतर पर पिलाना चाहिए।

मस्तिष्क शूल में-भारंगी के ताजे मूल को गरम जल में घिसकर कपाल पर इसका लेप करना चाहिए।

कर्णशूल में-इसके मूल को घिसकर इसकी एक बूँद कान में डालने से लाभ होता है।

हिचकी में-इसके मूल का चूर्ण मिश्री के साथ मिलाकर सेवन करना चाहिए।

मात्रा- मूल का चूर्ण- ३ से ६ ग्राम मधु के साथ दिन में दो या तीन बार।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रेतात्मा एक ऋषि की दृष्टि में- 'पेड़-पौधों पर तरह-तरह की आत्माओं के निवास करने के बारे में लोगों को बहुत तरह की भ्रान्तियाँ रहती हैं। यह सच है कि वृक्षों पर आत्मायें रहती हैं, किन्तु इस क्षेत्र में इतनी अधिक गलत धारणाएँ प्रवेश कर चुकी हैं कि आम आदमी का इससे अनावश्यक नुकसान होने लगा है। इस भ्रान्ति को दूर करने के लिये परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का एक विस्तृत लेख यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, जो मृत्योपरांत जीवात्मा की विभिन्न गतियों के संबंध में स्पष्ट प्रकाश डाल सकेगा तथा इस क्षेत्र में व्याप्त भ्रान्तियों को दूर करने में सहायक होगा।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विष्णुक्रान्ता/गिरीकर्णी Clitoria Ternatea. Linn. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

100

ENGLISH NAME:-Winged leaved Clitoria. Hindi - Aprajita

PARTS-USED:-Roots, also leaves, Flowers and Seeds.

DESCRIPTION:- Atwining herb, leaves imparipinnate compound with linear subulate stipules, leaflets 5-7 ovate . Flowers solilary, axilary bright or light blue or white bracts 2, bracteoles large orbicular fruits flattaned, 8-12 seeded.

TASTE:-Bitter-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Root bark Contains: Starch, Tannin, Resin, Seeds Contain: Oil, bitter blue coloured Resin.

ACTIONS: Bitter, Astringent, Antidote, Pungent, Cooling, Anthelmintic, Wound healing. Cathartic, Diuretic.

USED IN:- Root used in: Leprosy Headach, Cough disorder, Snake poison, Fever, Urine disorder, Scrofula, Goiter, Indigestion, Eye-infections, Arthritis, Insanity, Migrain.

प्रचलित नाम- अपराजिता।

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, पुष्प एवं बीज।

स्वरूप-आरोहण शील गुल्म, पत्ते पक्षवत संयुक्त, उपपत्र युक्त, पुष्पकोण में जो चमकदार हल्के नीले रंग के या सफेद, फलीयाँ चपटी होती हैं।

स्वाद-तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन-इसके मूल की छाल में:-स्टार्च टैनिन राल पाये जाते हैं। इसके बीज में तेल तथा भूरे रंग की कड़वी राल पायी जाती है।

गुण-तिक्त कषाय, ग्राही, विषघ्न, तीक्ष्ण, शीत, कृमिघ्न, व्रणरोपण, त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, भेदन, मूत्रल।

उपयोग-इसके मूल का उपयोग-कुष्ठ, शिर:शूल, कफ विकार, सर्पविष, ज्वर, मूत्र विकार, गलगण्ड, गण्डमाल, कुपचन, नेत्ररोग, आमवात, उन्माद, अर्धावभेदक (आधी सीसी) में होता है। श्वित्र रोग में श्वेत अपराजिता के मूल को जल में घिसकर लेप करने से एक माह में यह रोग नष्ट होता है। विरेचन के लिए-इसके बीज घी में तलकर इसके चूर्ण का गुनगुने जल से सेवन करने से विरेचन होता है। अर्धावभेदक तथा शिर:शूल में सफेद अपराजिता के मूल को जल में घिसकर सूंघने से लाभ होता है। कफ विकार में श्वेत अपराजिता के मूल का स्वरस दो तोला गाय के ताजे दूध के साथ पिलाना चाहिए। एकांतर ज्वर में इसके स्वरस का नस्य लेने से लाभ होता है। गर्भपतन में इसके मूल को दूध में घिसकर पिलाने से गर्भ का स्तंभन होता है। यकृत-प्लीहा रोग जलोदर तथा वृकोदर में इसके बीज का चूर्ण तीन माशा गुनगुने जल के साथ सेवन से लाभ होता है। इसके सेवन से विरेचन होकर शरीर में इकट्ठा हुआ विष बाहर निकल जाता है। जीर्ण वृकोदर में खाज-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खुजली एवं रक्त विकृत होकर लाल काले दाग हो जाते हैं एवं दृष्टि कमजोर हो जाती है ऐसे लक्षण जब दिखाई दें, तो इसके बीजों का जुलाब देने से लाभ होता है। इसी प्रकार यकृत प्लीहोदर में टागों पर जख्म होने पर इसका दूषितरक्त व्रण में जाता है एवं व्रण विष शरीर में प्रवेश कर जाता है। इस समय अपराजिता के बीज का जुलाब देना चाहिए। मूत्ररोग में इसके मूल का प्रयोग करने से शुक्रमेह तथा बस्तीशोथ में दस्त साफ होकर लाभ होता है, मूत्र अधिक होकर वेदना कम होती है। मूत्र में आने वाला श्लेष्मा कम हो जाता है। व्रणविष शरीर में प्रवेश करता है, तब ज्वर आता है कंठशोथ, कफ बढ़कर घबराहट होती है एवं आमवात में अपराजिता के मूल अधिक मात्रा में सेवन कराना चाहिए। इन रोगों में वमन एवं विरेचन होकर व्रण विष आमविष तथा कफ बाहर निकल आते हैं। विष निकल जाने से वाणी दोष दूर होकर आवाज खुलती है, दृष्टि ठीक होती है तथा बुद्धि मंदता दूर होती है। इस प्रकार अपराजिता के उपयोग से आमवात, कफदोष, मूत्ररोग, आमशोथ, व्रणविष तथा श्वित्ररोग ठीक हो जाते हैं।

मात्रा–भुने हुए बीज का चूर्ण १० से २० रत्ती। मूल का चूर्ण सोंठ के साथ ३०–६० रत्ती, मधुयष्टि मिलाकर फांट बनाकर सेवन करना चाहिए। मूल की छाल का चूर्ण– डेढ़ से तीन माशा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'हे प्रभु! मुझे अपनी शान्ति का एक यंत्र बना, जहाँ उदासी है, वहाँ पर प्रसन्नता ला सकूँ।' – संत फ्रांसिस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिम्बी-कुन्दुरी Syn: Coccinia grandis (L) Voigt. Coccinia indica W. & A. CUCURBITACEAE

101

ENGLISH NAME:-Ivy-gourd. Hindi - Kunduri
PARTS-USED:-Whole plant, Fruit, Leaves & Roots.
DESCRIPTION:- A perennial tendril climber, stem pentangular, leaves palmately lobed, denticulate, white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contain: Beta-amyrin, Lupeol, Beta-sitosterol; Fruit Contains: Beta-amyrin, Lupeol, Cucurbitacin, Beta-sitosterol, Taraxerol, Lycopene, Beta-carotene, crypto xanthin; Seeds contain: A fat rich in palmitic, oleic Linoleic acids; Plant Contains: Amino acids.
ACTIONS: Antifungal, Cooling, Astringent, Antiemetic, Wound healing. Fruit: Styptic, Appitizer, refrigerant, hypoglycimic.
USED IN:- Bitter species is very useful in: diabetes, fever, cough, Asthma, Jaundice, constipation; Tuberculosis, Flatulance, Ulcer; Externally applied on Burning, Eczema, Carbuncle and bowel.

प्रचलित नाम- कन्दूरी/कुन्दरू

प्रयोज्य अंग-पंचांग, फल, पत्र एवं मूल।

स्वरूप-चिरस्थायी सूत्रारोही लता, कांड पाँच धार वाला, पुष्प श्वेत एक लिंगी। फलमांसल कच्ची अवस्था में १० श्वेत धारियों से युक्त चमकीले हरे पकने पर गहरे लाल रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके मूल में बीटा-एमीरीन, ल्युपीओल, बीटा-सिटोस्टिरॉल, इसके फल में-बीटा-एमीरीन, ल्युपीऑल, क्युकर बिटासीन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, टैरेक्सरॉल, लायकोपिन, बीटा-कैरोटिन, क्रिप्टोजैन्थिन, इसके बीज में एक मेद जिसमें पामीटिक अम्ल, ऑलिक एम्ल एवं लिनोलिक अम्ल अधिक मात्रा में होते हैं। इस वनस्पति में एमिनो अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-फफूंदी नाशक, शीतल, ग्राही, वमन शामक, व्रण रोपण, फल-स्तंभक, रुचिकर।

उपयोग-इसकी कड़वी जाति अधिक औषधि गुणवाली इसका उपयोग, मधुमेह, ज्वर, कास, श्वासरोग, कामला, विबंध, यक्ष्मा, आध्मान, व्रण में लाभकारी। इसका बाह्य प्रयोग दाह, खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सियों में लाभकारी। कांड एवं पत्रों का रस-मधुमेह में लाभकारी। पत्रों का स्वरस-व्रण एवं त्वचा रोगों पर लाभकारी। फल का प्रयोग जिव्हा में छाले होने पर फल को चबाने से लाभ। इसकी कड़वी तथा मधुर दो प्रकार की जातियाँ पायी जाती हैं, कड़वी जाति कोई भी खाता नहीं जबकि मधुर जाति अधिक स्वादिष्ट होने के कारण इसके फलों का प्रयोग शाक बनाने में किया जाता है। ये मधुर तथा शीतल होते हैं। इसके फल-गुरु, शीतल, मलस्तंबक, स्तन्यकारक, रुचिकर जो पित्त, रक्त दोष, वात, श्वास रोग, शोथ, दाह तथा कास नाशक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। गर्भवती महिला को समय से पहले गर्भ चलन या आर्त्तव होने लगे तो इस लता के कांड एक अंगूठे जितने मोटे तथा जो माह चल रहा हो, उतनी ही पर्व लेकर ठंडे जल में डालकर अच्छी तरह कूटना चाहिए तथा औसतन १२५ मि.ली. जितना रस निकाल कर, इसमें ३ मासा जीरे का चूर्ण तथा दो तोला मिश्री मिलाकर प्रतिदिन दो बार आर्त्तव हुए दिन से चार दिन तक सेवन कराना चाहिए। इस औषधि का प्रयोग गर्भधारण के तीन माह पश्चात् से आरंभ करना चाहिए। इससे पहले इसका सेवन नहीं करना चाहिए।

मात्रा-पत्र, फल तथा मूल का स्वरस-३० मि. ली. दिन में तीन बार।

मूल की छाल का क्वाथ-३० मि.ली. दिन में दो बार।

चूर्ण (मूल की छाल)- १० ग्राम रात को सोते समय गर्म पानी के साथ।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वामी हरिदास जी की सीख-'ये प्रसिद्ध गायनाचार्य तानसेन के गुरु थे। वृन्दावन में यमुना के किनारे मधुवन में एक टट्टी गाड़कर रहते थे। अकबर द्वारा सेवा की प्रार्थना करने पर इन्होंने अकबर को तीन आदेश दिये थे- (१) बन्दरों के निमित्त कुछ चना पहुँचाते रहो। (२) बृजभूमि के वृक्ष और शाखा को कोई काटने न पाए। (३) तुम फिर कभी हमारे पास न आना। अकबर बादशाह ने आज्ञा का पालन किया।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाषाण भेदी Coleus aromaticus Benth. LABIATAE

102

ENGLISH NAME:- Iyrisp. Hindi - Putta Ajwain
PARTS-USED:-Roots and Tender twigs.
DESCRIPTION:- A small perennial, hairy herb, about 1-3 feet high with thick and fleshy leaves aromatic flowers light purple.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contains: Diterpene, Methylene-quinone, Couleon, Cyclobuta tucin, Roots Contain: Naphtho pyrone (Rocetin) and Dialdehyde, Avolatile oil carvacrol is also found.
ACTIONS: Stomachic Digestive, Carminative, Diurtic, Spasmolytic, Anti calculii.
USED IN:- Cardiovascular ailment, Heart troubles, lowering blood pressure, Lymphcaytic leukemia; Extract of aerial parts: is spasmolytic, Extract of Roots: Hypotensive. Leaves: Useful in polyuria, Thirst, flatulance, colic, Asthma, chronic cough, Epilepsy & urinary troubls.

प्रचलित नाम- पाथर चूर
प्रयोज्य अंग-मूल एवं कोमल टहनियाँ।
स्वरूप-चिरस्थायी, रोमश लघु, गुल्म, १-३ फुट ऊँचा, पत्र मांसल एवं सुगंधित, दंतुर रोमश एवं स्वाद में कटु, पुष्प हल्के बैंगनी रंग के होते हैं।
स्वाद-तिक्त
रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में डायटर्पेन, मिथाइलीन-क्वीनॉन, कॉलियोन, सायक्लोब्युटाटयूसिन, इसके मूल में नेप्ऊथोपायरॉन (रॉसेटिन) डायेल्डीहाइड एवं एक उड़नशील तेल कारवाक्रोल घटक पाये जाते हैं।
गुण-दीपन, पाचन, वातानुलोमक, मूत्रल, उद्वेष्टनहर, अश्मिरीघ्न।
उपयोग-हृदय रुधिर प्रवाह के उपचार, हृदय रोग,रक्त दाब को निम्न करने के लिये, रक्त कैन्सर, हवाई अंगों का सत, उद्वेष्टहर, मूल का सत् दाबहासी, इसके पत्र प्रमेह, तृषा, आध्मान, उदरशूल, श्वासरोग, जीर्णकास, अपस्मार, मूत्र संस्थान अवरोध में लाभकारी। अश्मरी जन्य मूत्र कृच्छ्र में- इसके मूल का क्वाथ लाभकारी जबकि शुक्राश्मरी में पंचांग का क्वाथ लाभकारी। शिर:शूल में, इसके पत्रों को पीसकर इसका लेप सिर पर करने से लाभ। पत्रों का उपयोग-अपचन, आध्मान एवं उदरशूल में अति लाभकारी।
मात्रा- चूर्ण ३-६ ग्राम।
क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।
स्वरस- ५-६ बूंद शर्करा के साथ।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Indian Bedellium tree. Hindi - Gugal/Dhup
PARTS-USED:-Gum Resin
DESCRIPTION:- A small tree with spinescent branches. Leaves trifoliate, crenate glabrous; Fruits are fleshy & globular.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Gum-Resin Contain: Sesamin, Steroids, Essentialoil; Guggul sterol, Gugguls steron, Myrcene, Dimercene, Polymercene and sugars, Flowers contain: Myrcyalcohol, Beta-sito sterol, Aminoacids, sugars, alpha-camphorene, Cembrene, Allylsembrol, Flavonoids and Ellagicacid. Seed oil: Linoleic acid, Oleic acid, Palmitic acid, stearic acid.
ACTIONS: Astringent, Expectorant, Aphrodisiac, Carminattive, Anti spasmodic Anti bacterial, Blood purifier, anthelmintic, anti-inflammatory, anodyne, diphoretic.
USED IN:-Emmenagogue, Arthritis, Leprosy, Impotency, Liver disorders, Hemiplagia, Thyroid to enriched protein in blood Sterility. Sciatica, neuralgia, scrophula reduces cholesterol and obesity.

प्रचलित नाम- गूगल/ देवधूप
प्रयोज्य अंग-गोंद रूप राल
स्वरूप-लघु कंटकी वृक्ष इसकी शाखाओं का अग्र भाग नुकीला होता है, पत्ते चिकने तथा सपत्र, जिनमें ३-३ पत्रक होते हैं, इसके फल मांसल लम्बे गोल छोटे बेर के समान होते हैं।
स्वाद-तिक्त
रासायनिक संगठन-इसके गोंद के रॉल में सेसामिन, स्टीरॉइड्स, उत्पत्ततेल, गुगुलस्टीरॉल, गुगल स्टीरोन, मिरसीन, डायमिरसीन, पोली मिरसीन एवं शर्करा, पुष्प में- मिरसी एल्कोहल, बीटा-सिटोस्टीरॉल एमीनोअम्ल, शर्करा, आल्फा-कैम्फॉरिन, सेम्बरीन, एलीलसेम्बरॉल, फलेवोनोइड्स तथा इलैजिक अम्ल, बीज के तेल में लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल घटक पाये जाते हैं।
गुण-ग्राही, कफ नि:सारक, वाजीकर, वातानुलोमक, उद्वेष्टननिरोधि कीटाणु नाशक, रक्त शोधक।
उपयोग-आर्तव जनन, संधिशोथ, कुष्ठरोग, नपुंसकता, यकृत विकारों में अर्धांगघात, गलगण्ड, रक्त में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने में तथा वंध्यता में लाभकारी। इसकी गोंद राल का प्रयोग सुप्तव्रण एवं बिस्तर व्रणों में लाभकारी। यह कफघ्न होने के कारण जीर्ण कफ रोगों में तथा जब अति तथा चिकना कफ निकलता हो एवं उसमें बहुत ही दुर्गंध आती हो, तब इसका प्रयोग अतिलाभकारी है। इसका प्रयोग दुर्बल एवं मध्यम आयुष्य वाले व्यक्तियों के लिये अति लाभकारी होता है। यह दीपन तथा सारक गुण वाला होने के कारण कुपचन तथा विबंध जैसे रोगों में एवं आंत तथा उदर शिथिल हो तब इसका प्रयोग किया जाता है। पुरुषों से अधिक महिलाओं को अधिक लाभकारी होता है। यह रक्त शोधक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होने के कारण गण्डमाल में अधिक प्रयोग किया जाता है। गुगुल के सेवन से रक्त में श्वेतकणों की मात्रा बढ़ती है तथा रक्त कणों में भी सुधार होता है। गुगुल का सेवन करने के पश्चात् यह त्वचा द्वारा बाहर निकलता है, इसी कारण प्रत्येक प्रकार के त्वचा रोगों में गुगुल का प्रयोग किया जाता है। निरोगी व्यक्ति भी यदि गुगुल का सेवन करता है, तो उसकी त्वचा का रंग खिलता है। गुगुल की गर्भाशय में अच्छी क्रिया होता है, गर्भाशय का संकोचन करता है इसलिए युवान महिलाओं के अनार्त्तव में इसका सेवन कराया जाता है। गुगुल को घी में कूट कर मलम बनाकर लगाने से व्रण शुद्धि तथा व्रणरोपण होता है। पकने के पश्चात् न भरे जाने वाले व्रणों में बहुत ही उपयोगी है। गुल्म तथा शूल में-शुद्ध गुगुल को गोमूत्र में मिला कर सेवन कराने से लाभ होता है।

मात्रा- निर्यास- २-५ ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वन देवियाँ- 'जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में वनस्पतियों को घात पहुँचाता है, उन पर वन देवियाँ क्रुद्ध हो जाती हैं और वनस्पतियों को छेड़ने वाले को छोड़ती नहीं हैं। वन देवियों की संख्या बारह मानी गयी है। वस्तुतः वन चेतना का मानवीकरण ही वन देवी का व्यावहारिक व्यक्तित्व है।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शङ्खपुष्पी Convolvulus pluricaulis Choisy. CONVOLVULACEAE

104

ENGLISH NAME:- Shankh Pushpi. Hindi - Shankhahuli

PARTS-USED:-Whole plant, Roots, Leaves and Flowers.

DESCRIPTION:- A small prostrate creeping herb, branches pubescent, flowers white.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Alkaloid shankhpushpin (Active compounds) Essential oil, Methyl pentos, Scamonolic acid and Palmitin acid, Phytosterol, Ipuranol, Sucrose Reducing sugars, starch and Olein.

ACTIONS: Brain, Tonic, Laxative, Stomachic, Anthelminitc, Spasmolytic.

USED IN:- Effective on brain and heart, Positive effect on blood pressure of acetylcolonine, Reduces blood pressure and tension, increaces memory, Effective on Thyroid high secretion; useful in mental disease, Epilepsy, Insomnia and Venum.

प्रचलित नाम-शङ्खाहुली

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-प्रसरणशील छोटा गुल्म, शाखाएँ रोमश, पुष्प सफेद रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में एल्केलॉयड-शंखपुष्पीन (सक्रिय यौगिक) उत्पत्ततेल, मिथाइल पेन्टॉज़, स्कैमोनॉलिक अम्ल, पामीटिन अम्ल, फायटोस्टेरॉल, आइप्युरानॉल, सुक्रोज़, प्रव्हासक शर्करा, स्टार्च एवं ऑलिन घटक पाये जाते हैं।

गुण-मेध्य, मृदुरेचन, दीपन, कृमिघ्न, उद्वेष्टनरोधि।

उपयोग-हृदय एवं मेधा पर असरकारक, रक्त दाब पर एसिटिल कोलोनीन का निश्चित प्रभाव होता है। रक्त दाब एवं तनाव शामक, स्मृति वर्धक, थाइराइड के अधिक स्राव पर प्रभावी असर, मानसं रोग, अपस्मार, उन्माद तथा विष में लाभकारी।

पंचांग का ताजा स्वरस- उन्माद में लाभकारी। पंचांग का फांट-ज्वर में निद्रा के लिये। पत्रों का धूम्रपान-जीर्ण कास तथा श्वासरोग में लाभकारी। पत्रों का स्वरस-रक्त स्राव एवं रक्त वमन में लाभकारी। ऊर्ध्वग रक्त पित्त में-मुख या नासिका से रक्त स्राव होता हो, तो इस में काली शंखाहुली का पाँच ग्राम चूर्ण दूध में शर्करा मिलाकर पिलाना चाहिए, आहार में दूध का सेवन विशेष रूप से करना चाहिए।

वमन में- इसके पंचांग का दो चम्मच रस में एक चुटकी काली मिरच का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ बार-बार पिलाने से वमन का नियंत्रण होता है।

बुद्धिमांद्य में-मेधा (ग्रहण शक्ति) शक्ति बढ़ाने के लिये ५ ग्राम इसके पंचांग का चूर्ण दूध में मिलाकर लेते रहने से इसमें अधिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाभ होता है।

पागलपन में- इसके पंचांग का स्वरस दो चम्मच इसमें मधु मिलाकर सेवन करते रहने से (रात्रि एवं प्रातः लम्बे समय तक) पागलपन दूर होता है। हिस्टीरिया-इसके पंचांग का पाँच ग्राम चूर्ण दूध के साथ प्रातः तथा रात्रि समय सेवन कराना चाहिए या इसके पंचांग का छाया शुष्क चूर्ण एक तोला, बादाम पाँच दाने, कसकास आधा तोला, सौंफ-१/४ तोला, इन सबके इकट्ठा कर सिल-बट्टे पर अच्छी तरह घोट कर महीन कल्क बना लो, इसमें १०० मि. ली. दूध मिला कर अच्छी तरह मसल लेना चाहिए। इसको (दूध सहित) छानकर मिश्री मिलाकर सेवन कराना चाहिए। इससे मेधा शक्ति में वृद्धि होती है। यदि इसमें ताजी मण्डुकपर्णी एक तोला मिलायी जाए तो अधिक लाभ होता है।

विशेष-शैक्षणिक संस्थाओं में शिक्षण प्राप्त करते बच्चों को सदैव शंखपुष्पी का चूर्ण दूध के साथ शंखपुष्पी का सिरप या घृत का सेवन कराते रहना चाहिए यह औषधि निर्दोष होने के कारण थोड़ी या अधिक मात्रा में सदैव सेवन से किसी प्रकार की हानि नहीं होती।

मात्रा-स्वरस- २ से ४ तोला।

चूर्ण- ३ से ६ माशा।

फांट- ४ से ८ तोला।



'एतेषां सर्व वृक्षाणाम् छेदनं नैव कारयेत्। चातुर्मास्ये विशेषेण विना यज्ञादिकारणम्॥'- स्कंदपुराण

इन सभी वृक्षों का काटना निन्दनीय है। यज्ञ के उद्देश्य के सिवाय वृक्ष कभी न काटे जायें और विशेष कर वर्षा ऋतु में तो काटे ही न जाएँ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुवार/श्लेष्मांतक Cordia myxa Roxb syn Cordia dichotoma forst. f. BORAGINACEAE

105

ENGLISH NAME:-Sebestan. Hindi - Lubhera/Lusora

PARTS-USED:-Fruits, Bark, Leaves and Seeds.

DESCRIPTION:- A medium sized tree about 40-50 feet high branches irregularily shaped & leaves are oblique & rough, flowers white on scorpoid cyme.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Bark Contain: Tannins. Fruits: Mucilage and Sugars.

ACTIONS: Fruits: Cooling, Astringent, Anthelmintic, Antidote, Expectorant.

USED IN:- Barks is useful in chronic fever & indigestion, Fruits are useful in urinary in flammation Diarrhoea; Paste of Seeds: used in Ring worm Applied externally.

प्रचलित नाम- लिसोड़ा

प्रयोज्य अंग-फल, छाल , पत्र एवं बीज

स्वरूप-मध्यम कद का ४०-५० फूट ऊँचा वृक्ष, शाखाएँ अनियमित टेढ़ी-मेढ़ी होती है, पत्र तिरछे एवं खुरदरे पुष्प श्वेत वर्णी, फल पीताभ भूरे पकने पर गुलाबी होते हैं

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में टैनिन्स पाये जाते हैं। इसके फल में श्लेष्म एवं शर्करा होते हैं।

गुण-फल-शीतल, ग्राही, कृमिघ्न, विषघ्न, कफ नि:सारक।

उपयोग-इसकी छाल का उपयोग जीर्णज्वर तथा कुपचन में लाभदायक। इसके फल मूत्र दाह एवं अतिसार में प्रयोग से लाभ होता है। इसके बीज पीसकर इसका लेप दद्रु पर लाभकारी। दंतशूल में इसकी छाल का क्वाथ बनाकर इसका कुल्ला कराने से लाभ। इसके फलों को सुखाकर चूर्ण बनाकर मिश्री के पाक में लड्डू बनाकर सेवन करने से बल प्राप्त होकर कमर में शक्ति आती है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धानक Coriandrum sativum Linn. UMBELLIFERAE

106

ENGLISH NAME:-Coriander. Hindi - Dhaniya

PARTS-USED:-Fruits, Leaves & Whole Plant.

DESCRIPTION:- A small annual strong smelling aromatic herb, Flowers white in umbels.

TASTE:-Bitter aromatic.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contain: Fixed oil, Flavonoids, Glycosides, Proteins/Aminoacids, Reducing sugans, Resin, Saponin, Volatileoils (Coriandrol) Steroids, Triterpenes. Salts of Sodium, Potassium, Calcium, Magnessium and Iron.

ACTIONS: Carminative, Diuretic, Refrigerent, Digestive, Anti pyretic, Astringent, Anti thirst.

USED IN:- Flatulance, Abdominal weakness, diarrhoea due to indigestion, Eye infections, Fever inflammalion, Vomiting, Colicpain, Asthma, Cough, Allays thirst, Anthelmintic, Brain and heart tonic; Paste of Fruits checks bleeding from wounds.

प्रचलित नाम- धनियां

प्रयोज्य अंग-फल, पत्र एवं पंचांग।

स्वरूप-एक वर्षायु, सुगंधित, तीक्ष्ण सुगंध वाला लघु गुल्म, पुष्प सफेद तथा छत्र में गुंथे हुए होते हैं। फल छोटे-छोटे अंडाकार गुच्छों में लगते हैं।

स्वाद-तिक्त एवं सुगंधित।

रासायनिक संगठन-इसके फल में स्थापित तेल, फलेवोनोइड्स, ग्लायकोसाइड्स, प्रोटीन्स/एमीनो अम्ल, प्रह्लासक शर्करा, राल, सैपोनिन, उड़नशील तेल (कोरिएन्ड्रोल) स्ट्रेरोइड्स, ट्रायटर्पेन्स, पोटेशियम, सोडीयम, कैल्शियम, मेग्नेशियम तथा लोह क्षार पाये जाते हैं।

गुण-वातानुलोमक, मूत्रल, दाहशामक, पाचन, ज्वरहर, ग्राही, तृषाशामक।

उपयोग-आध्मान, उदरदौर्बल्य, कुपचन के कारण होने वाले अतिसार में, नेत्र रोग, ज्वरजन्यदाह, वमन, शूल, श्वासरोग, कास, तृषाशामक तथा कृमिघ्न। मेध्य तथा हृद्य, फल के कल्क का लेप व्रण में से बहते रुधिर पर नियंत्रण करता है। फल का चूर्ण मिश्री के साथ मिलाकर जीर्ण प्रतिश्याय में लाभकारी। इसके क्वाथ में मिश्री मिलाकर देने से रक्तार्श में लाभ होता है।

इसके क्वाथ को छानकर नेत्र बिंदु के रूप में डालने से नेत्राभिष्यंद में लाभ होता है। शरीर में से शीतला (चेचक) के कारण इकट्ठी हुई गरमी निकालने के लिये-चेचक रोग अच्छी तरह से ठीक होने के पश्चात् धनिया तथा जीरे के फलों को चार गुना जल में भिगो कर रात भर रखा रहने दें, प्रातः इसको मसल कर छानकर तथा इसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से शरीर के अंदर की गरमी शांत हो जाती है। आँव में-धनिया तथा सोंठ के क्वाथ में एरण्ड मूल का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। अरुचि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में-धनिया, इलायची तथा काली मिरच का चूर्ण घी तथा मिश्री मिलाकर सेवन करने से भूख प्रदीप्त होकर भोजन के प्रति रुचि बढ़ती है। दाह तथा तृषा में-धनिया, अडूसा, आँवला, काली द्राक्षा/तथा पित्त पापड़ा इन सब औषधियों को थोड़ा कूटकर मिट्टी के बर्तन में डालकर जल मिलाकर प्रातः छानकर पिलाने से इन रोगों में लाभ होता है। अग्निमांद्य, श्वास, विषम ज्वर तथा अजीर्णता में- धनिया, लौंग, सोंठ तथा निशोथ सबका चूर्ण बनाकर उष्ण जल के साथ सेवन करना चाहिए। पित्त ज्वर एवं अंतर्दाह में-धनिया तथा चावल जल में भिगोकर, दूसरे दिन इसी जल में उबालकर पतली कांजी बना, ठंडी कर इसको पिलाने से लाभ होता है।

मूत्रघात में-धनिया तथा गोक्षुर के फलों का क्वाथ घी मिलाकर पिलाना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को होने वाली उल्टियों में-धनिया, सोंठ, मिश्री तथा नागरमोथा-इन चारों का आधा-आधा तोला लेकर ३२ तोला जल में क्वाथ बनाकर आठ तोला रह जाये, तब उतारकर गर्भवती को पिलाने से तथा अन्य किसी व्यक्ति को किसी कारण उल्टी होती हो तो पिलाने से तुरंत ही उल्टी बंद हो जाती है। लू लगने पर धनिये को जल में भिगोकर, मसल कर इसमें मिश्री मिलाकर इसका सेवन करना चाहिए।

मात्रा- फल का चूर्ण- ५-७ ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो प्रत्येक भूल उसे बहुत बड़ी शिक्षा दे सकती है। - अरस्तू

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केमुक Costus Speciosus (Koen) smith. ZINGIBERACEAE

107

ENGLISH NAME:- Kosht. Hindi - Kush

PARTS-USED:-Rhizome.

DESCRIPTION:- An erect herb 2-3 feet high, leaves oblong or lanceolate rhizomatous stem, white flowers on longscape, spirally arranged.

TASTE:-Bitter. Astringent

CHEMICAL CONSTITUENTS-Rhizome Contains: Alkaloids, Tigogenin, Diosgenine, Starch, Beta-sterol, Glucoside; Leaves contain: Alpha-Amyrin stearate, Beta-Amyrin and Lupeol palmitates.

ACTIONS: Anti-inflammatory, Antis pasmodic, Diuretic, Antiviral, Tonic, Blood purifier, Anthel mintic, stimulant, digestive, depurative, aphrodisiac, spermapoetic.

USED IN:- Ferver, Dropsy, Cholera, Gravel. Bronchial asthma, Anasarca, Rheumatism, Burning Sensation during urination, Cardio tonic useful in: Pain in bones, haemorrhage

प्रचलित नाम- केवुक कंद

प्रयोज्य अंग-भूमिगत कांड (मूल स्तंभ)

स्वरूप-२-३ फूट ऊँचा बड़ा क्षुप, कांड भूमिजन्य, पुष्प सफेद जो लम्बे पुष्प विन्यास दंड पर होते हैं। इनके कोणक पुष्प लाल रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके मूल स्तंभ में एल्कलॉयड्स, टिगोजेनिन, डायोसजेनिन, स्टार्च, बीटा-स्टीरॉल ग्लूकोसाइड, इसके पत्रों में आल्फा-ऐमिरीन स्टीरेटा, बीटा-एमिरीन तथा ल्युपियॉल पामीटेट्स घटक पाये जाते हैं।

गुण-शोथहर, उद्वेष्टनरोधी, मूत्रल, विषाणुघ्न, बल्य, रक्तशोथक, कृमिघ्न।

उपयोग-ज्वर, जलोदर, विसूचिका, अश्मरी, तमक श्वास, सर्वांग शोथ, आमवात, मूत्राशयदाह में लाभकारी। यह औषधि हृद्य है। हड्डियों में पीड़ा होने पर इसका प्रयोग लाभकारी। कर्णशूल में वनस्पति को उबालकर उसके स्वरस का उपयोग कान में डालने से लाभ होता है। इसके मूलस्तंभ का चूर्ण मधु के साथ सेवन से कास, श्वासरोग तथा हृदय रोग में लाभकारी।

मात्रा- चूर्ण ३-६ ग्राम।
स्वरस- १०-२० मि.ली.

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वरुण Syn: C. religiosa HK.F. th. Crataeva nurvala Buch-Ham. CAPPARIDACEAE

108

ENGLISH NAME:- Varuna. Hindi - Barna/Phulvani

PARTS-USED:-Bark, Leaves and Flowers.

DESCRIPTION:- A medium sized tree about 20-30 feet high, branches spreading, bark white leaves. Trifoliate Compound, Flowers Creamish white, barries ovoid, woody. 3.5 cm.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Tannin, Saponin; Root bark Contain: Lupeol, Stearic acid Lauric acid, Linoleic acid, Oleic acid, Triter penoids.

ACTIONS: Bitter, Astrirgent, thermogenic. Carminative, Diuretic, Blood purifier, Bactericidal, Lithontriptic. Stomachic, Cathartic, anthelmintic, laxative, lithotriptic, anti-pyretic, rubifacient.

USED IN:- Urinary calculu, colic, Disuria, Dyspepsia, Scrofula, Heart disease, Gonorrhoea, Cough, Dyscrasia, Flatulance, Flowers are used as blood purifier, depurative. Bronchitis, gout, Arthritis.

प्रचलित नाम- बरना/बरुन

प्रयोज्य अंग-छाल, पत्र एवं पुष्प।

स्वरूप-मध्यम कद का २०-३० फूट ऊँचा वृक्ष, शाखाएँ फैली हुई, छाल श्वेत वर्णी, त्रिपत्री संयुक्त पत्र, पुष्प पीत श्वेत या गुलाबी भिन्नवर्णी होते हैं। फल नीबू आकार के किन्तु पकने पर लाल हो जाते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में टैनिन, सैपोनिन पाये जाते हैं। इसके मूल की छाल में ल्युपीयॉल, स्टीयरीक अम्ल, लॉरीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल तथा ट्रायटर्पेनोइड्स घटक पाये जाते हैं।

गुण- वातानुलोमक, मूत्रल रक्तशोधन, कीटाणुनाशक, अश्मरी भेदन, दीपन, भेदक।

उपयोग-मूत्राशय अश्मरी, उदरशूल, मूत्रकृच्छ्र, अग्निमांद्य, गण्डमाल, अपसर्गिकामेह, हृदयरोग, रक्तदोष, आध्मान एवं कुपचन में लाभकारी। इसके पुष्प रक्त शोधन गुण वाले हैं। पत्रों का फांट- कुपचन तथा पेट के फूलने में लाभदायक है। अश्मरी में-इसके मूल के क्वाथ में ५-१० ग्राम वरुण के मूल का ही चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।

गण्डमाल में-इसके मूल की छाल का क्वाथ मधु मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

विद्रधि में-सख्त बड़े गण्ड को मिटाने के लिए इसकी छाल का क्वाथ पिलाना चाहिए। वातशूल में-वरुण की छाल तथा सहिजन की छाल को खट्टी छाछ में भिगोकर इसका लेप करने से शूलनष्ट होता है। यकृतवृद्धि में-इसकी छाल का क्वाथ बनाकर सेवन कराने से यकृत कैन्सर तथा यकृतोदर में लाभ होता है। वृक्क शोथ में इसकी छाल तथा गोक्षुर का क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।

गाल पचोड़ मम्पस (कर्ण पचोड़ा)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसकी छाल जल में घिसकर इसका लेप करना चाहिए तथा छाल का क्वाथ पिलाना चाहिए। अपेन्डीसाईटीस, पेरीकार्डाइटी से ब्रोन्काईटीस, लेरिन्जाइटीस जैसे रोगों में वरुण तथा सहिजन की छाल का क्वाथ आरोग्यवर्धिनी के साथ पिलाने से बहुत ही लाभ होता है। अश्मरी में, बस्तीशूल, मूत्रकृच्छ्र में वरुण तथा सहिजन की छाल का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। गण्ड तथा सूजन में-वरुण की छाल को घिसकर लगाने से तुरंत आराम मिलता है।

यकृत शोथ तथा यकृत विद्राधि में इसकी एक तोला छाल को कूट कर २०० मि. ली. जल में क्वाथ बनाकर सेवन करने से लाभ होता है। चेहरे पर काले धब्बे हुए हों तो वरुण की छाल को जल में घिसकर लगाने से लाभ होता है। वरुण की छाल गरम है, इसलिए दीपन तथा पाचन है। इसके सेवन से भूख लगती है। (वरुण तथा सहिजन की छाल का क्वाथ पिलाने से)।

मात्रा- छाल का चूर्ण ३-५ ग्राम।
छाल का क्वाथ-५ से १० मि.ली।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जिस व्यक्ति को यज्ञ में बलि स्तंभ के लिये वृक्ष काटना एक विवशता है, उसको शतपथ ब्राह्मण में यह निर्देश दिया गया है कि वह कुल्हाड़ी और वृक्ष के मध्य दूर्वा का तृण रखकर कहे-हे दूब! वृक्ष का कवच बन जा और प्रहार करने से पूर्व चिल्लाए हे कुल्हाड़ी चोट न पहुँचाना।' - शतपथ ब्राह्मण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुदर्शना/नागदमनी Crinum asiaticum AMARYLLIDACEAE

109

ENGLISH NAME:- Crinum. Hindi - Phukna

PARTS-USED:-Leaves & Rhizome.

DESCRIPTION:- A herb with big tunicated bulb. Leaves linear-lanceolate, acute, broad flat, sacpe bearing 15-50 flowers in umbel. Flowers white, fragrant at night, Fruits two seeded.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Contains:-

ACTIONS:-Anti bacterial, anti leprotic, Anti in flammatory, Emetic, Expectorant Anti pyretic, Pungent, Appiter.

USED IN:- Swellings Carbuncle, Piles, Ear ache, Arthritis, Skin disease (Leprosy) Cold and Cough disorders, Vomiting, Worms infestation, Disuria, Polyuria, Bowel complains, Throat disorder, Colic, Dyiscrasia, Flatulance, Fever.

प्रचलित नाम- सुदर्शन/सुखदर्शन

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं भौमिक काण्ड।

स्वरूप-यह एक क्षुप है, जिसका वल्की कंद बड़ा होता है। पत्ते पतले, नोकदार, चौड़े, चिपटी पुष्प सफेद जो लम्बे स्केप पर १५-५० की गिनती में होते हैं। पुष्प रात्रि समय सुगंधित फल अल्प गोलाकार जिसमें १-२ बीज होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके

गुण-जन्तुघ्न, कुष्ठघ्न, शोथघ्न, वामक, कफघ्न, ज्वरघ्न, रुचिकर, मधुर, तीक्ष्ण, उष्ण।

उपयोग-सभी प्रकार की सूजन में फोड़े-फुन्सियों में, अर्श, कर्णशूल, संधिशोथ, चर्मरोग (कुष्ठरोग), कास-जुकाम विकारों में, वमन, कृमिरोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, उदररोग, कंठदोष, शूल, रक्तदोष, आध्मान, ज्वर में। कास-जुकाम विकारों में-इसके कंद का प्रयोग वामक द्रव्य के रूप में किया जाता है। कफ पतला होकर उल्टी आती है। कर्णशूल में इसके पत्तों को गरम कर इसका स्वरस निकाल कर एक-दो बूंदें कान में डालने से लाभ होता है।

सूजन में सुदर्शन के पत्तों पर एरण्ड का तेल चोपड़ कर इनको गरम कर बाँधने से सूजन कम होकर लाभ होता है। अर्श एवं फोड़े (गण्ड) पर इसके पत्तों पर एरण्ड का तेल लगाकर इन पत्तों को गरम कर बाँधने से गण्ड पक कर फट जाता है एवं अर्श में लाभ होता है।

चर्मरोगों में (कुष्ठरोग) इसके पत्तों से सिद्ध किया तेल लगाने से लाभ होता है। विष में इसके कंद को शीतल जल में घिसकर पिलाने से वमन होकर विष निकल जाता है।

दद्रुरोग(दादर रोग में)इसके पत्रों के स्वरस में नमक मिलाकर धूप में कुछ समय तक पड़ा रहने के बाद तीन दिन तक लेप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने से लाभ होता है। बच्चों के कफ विकारों में इसके पत्रों को गरम कर इसका स्वरस निकाल कर मधु मिलाकर सेवन करने से उल्टी होकर कफ विकारों में लाभ होगा।

इसका प्रयोग बच्चों के कफ विकारों में बिना किसी दुष्परिणाम के किया जा सकता है। सुदर्शन के पत्ते श्रेष्ठ शोथहर हैं, इसके कंद की क्रिया अडूसा या एपिक क्युआना जैसी होती है। यह अल्प प्रमाण में स्वेद एवं श्लेष्महर है। वमन से थकान नहीं लगती या पेचिश, अतिसार अन्य कोई दुष्परिणाम नहीं होता। यह सौम्य एवं उत्तम वामक औषधि है। इससे उल्टी बहुत ही थोड़ी मात्रा में होती है। सूखे हुए कंद में ताजा कंद की अपेक्षा आधे गुण ही रह जाते हैं। इसके कंद का शरबत बनाकर रखने से इसके गुण कई दिनों तक बने रहते हैं।

मात्रा- वमन के लिए कंद का स्वरस एक से दो तोला। चूर्ण एक से दो माशा।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'एक दिन औषधि के लिये नामदेव बबूल लेने गये। पेड़ की डाल उन्होंने काटी थी कि उसमें रक्त के समान तरल पदार्थ बहने लगा। नामदेव को ऐसा जान पड़ा मानो मैंने किसी मनुष्य की गर्दन पर कुल्हाड़ी चलाई है। पेड़ को घाव पहुँचाने का उन्हें पश्चाताप हुआ। उसी दिन उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया और घर छोड़कर चल दिये।' - नामदेव महाराज

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जयपाल/दन्तिबीज Croton tiglium Linn. EUPHORBIACEAE

110

ENGLISH NAME:- Croton oil Seed. Hindi - Jaypal/Jamalgota
PARTS-USED:-Seeds and Seed oil.
DESCRIPTION:- A small sized ever green tree, branches short & pabescent, leaves with serrate margin.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Ciaarcinogenic (Active compound) Polyol, Phorbol, Acitic acid, Tiglinic acid, Myristic acid, Cicarcinogens, Beta-sitosterol, Haemolytic protein. Crotonic acid, Croton oil, which Contains crotonilic acid, Tiglic acid or Methyl crotonic acid and Crotonol.
ACTIONS: Oil: Toxic, Irritating, Inflammatory, stomachic, Digestive, Purgative, Anthelminitc.
USED IN:- Seed oil is used in: Rheumatism, Lymphocytic leukomia, Tuber culosis, Liver disease, Leucoderma, Arthitis; It is insecticidal and Anthelmintic.

प्रचलित नाम- जमाल गोटा

प्रयोज्य अंग-बीज एवं बीज का तेल

स्वरूप-छोटे कद का सदा हरित वृक्ष जिसकी शाखाएँ छोटी, रोमश, पत्र दंतुर पत्र किनारी वाले चिकने, नुकीले। पुष्प श्वेत हरिताभ एक लिंगी मंजरी के रूप में होते हैं। फल त्रिकोण या लम्बे अंडाकार होते हैं। बीज बदामी रंग के जिन्हें जमाल गोटा कहते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस के बीज में एक सक्रिय तत्त्व सिकारसीनोजैनिक पोलीयॉल, फोरबोल, एसीटिक अम्ल, टिगलीनिक अम्ल, मिरसीटीक अम्ल, सिकारसीनोजेन्स, बीटा-सिटोस्टीरॉल, हीमोलायटिक प्रोटीन, क्रोटोनिक अम्ल, क्रोटोन तैल, जिसमें क्रोटोनिलक अम्ल, टिगलिक अम्ल या मिथाइल क्रोटोनिक अम्ल एवं क्रोटोनॉल घटक पाये जाते हैं।

गुण-तेल, विषयक, तीक्ष्ण, शोथकारी, दीपन, पाचन, विरेचन, कृमिघ्न।

उपयोग-इसके बीज का तेल आमवात, रक्त कैन्सर, यक्ष्मा, यकृत रोग, श्वित्र, संधिशोथ में लाभकारी। यह एक कीटाणुनाशक तथा कृमिघ्न गुणवाली औषधि है। इसके तेल की एक बूंद के उपायेग से अनेक पतले दस्त होते हैं। अधिक मात्रा में इसके प्रयोग से मरोड़ होता है तथा श्लेष्मकला में शोथ होता है। बेहोश रोगी को एक बूंद तेल, मक्खन में मिलाकर जीभ पर लगाने से रोगी होश में आ जाता है। मस्तिष्क संबंधित रक्तस्राव जन्य अर्धांग रोग में इसका प्रयोग किया जा सकता है। आमवात एवं संधिशोथ में तेल का बाह्य प्रयोग लाभकारी है।

मात्रा-जुलाब के लिये दंति मूल का चूर्ण गरम पानी के साथ (३ ग्राम) सेवन किया जाता है। दंतीमूल का धुंआ श्वास तथा कास रोग में लाभकारी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुक्ल जीरक Cuminum cyminum Linn.UMBELLIFERAE

111

ENGLISH NAME:- Cumin Seed. Hindi - Jeera
PARTS-USED:-Fruits.
DESCRIPTION:- An annual herb cultivated in fields. Branches are delicate and thin. Leaves thin linear 2-3 at node. Flowers white minute in umbels. Fruits Cremocarp.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:-A Volatile oil. a simple oil which contains Cumic aldelyde; this oil Canbe Converted in to Thymol; Pentason is found in another, permant oil of this fruit; Also contains Vitamin 'A', 'C' and 'D'.
ACTIONS:-Stimulant, Astringent, Analgesic, Carminative, Aromatic, Digestive, Appitizer, Tonic.
USED IN:-Diarrhoea, Indig estion, Flatulance, Fever, Vomiting, Urinogenital system disorder, Gonorrhoea, Calculii, Disuria, Anorexia, Dyiscrasia. Fruits are particularily very useful in the indigestion of child.

प्रचलित नाम- जीरा/सफेद जीरा
प्रयोज्य अंग- फल।
स्वरूप-एक वर्षीय क्षुप जो खेतों में बोया जाता है। इसकी शाखाएँ नाजुक, पतली होती हैं। पत्ते पतले लम्बे प्रत्येक पर्व पर २-३ की संख्या में पुष्प छोटे-छोटे सफेद में होते हैं। फल सौंफ की तरह क्रमोकार्प।
स्वाद-कटु।
रासायनिक संगठन- इसके फलों में उड़नशील सुगंधित तेल, हल्के पीले रंग का एक अन्य तेल जिसमें क्युमिक आल्डीहाइड होता है। इस तेल को थाइमोल के रूप में परिवर्ति किया जा सकता है। एक स्थिर तेल जिसमें पेन्टोसान होता है। इसमें विटामिन 'ए' 'सी' तथा 'बी' पाये जाते हैं।
गुण-उत्तेजक, ग्राही, वेदनाहर, वातहर सुगंधित, पाचक, रुचिकर, बल्य।
उपयोग-फल अतिसार, कुपचन, आध्मान, ज्वर, वमन, मूत्र जजनेन्द्रिय संस्थान विकारों में, अरुचि, रक्त दोष, सुजाक, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, इसके फल बच्चों के कुपचन रोगों में अति लाभकारी होते है। जीर्ण ज्वर में इसके फलों का चूर्ण २०० मि. ग्रा. पुराने गुड़ में मिलाकर प्रातः या सायं सेवन करने से लाभ होता है। रात्रि अंधता (रतौंधी) में- जीरा, आँवला तथा कपास के पत्तों को शीतल जल में समभाग पीसकर सिर पर २१ दिन तक बाँधने से लाभ होता है। श्वेत प्रदर एवं रक्त प्रदर में इसके फलों का चूर्ण तथा मिश्री का चूर्ण चावल के धोवन में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। जीर्ण ज्वर में जीरे को गाय के दूध में भिगोकर सुखा लें, इसका चूर्ण बनाकर मिश्री के साथ सेवन से शारीरिक दुर्बलता दूर होकर बल मिलता है। मुखगत रोगों में जीरे को पीसकर जल में मिला लें, इस जल में चंदन घिसकर इलायची का चूर्ण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं फूली हुई फिटकरी का चूर्ण मिला लें, इस जल से कुल्ला करने पर मुखगत रोगों में लाभ होता है। मलेरिया ज्वर में करेले के एक तोला रस में जीरे का चूर्ण मिलाकर रस को पिलाने से लाभ होता है। ज्वर उतरने के पश्चात होठों पर छाले पड़ने पर जीरे को जल में पीसकर इस जल को होठों पर छाले पड़ने पर लगाने से यह छाले ठीक हो जाते हैं। बिच्छू के दंश में इसके फलों को महीन पीसकर इसमें थोड़ा घी तथा सेन्धा लवण मिलाकर बहुत ही महीन पीस लें तथा थोड़ा उष्ण कर बिच्छू के दंश पर लगाने से वेदना कम हो जाती है। प्रसूता महिलाओं के स्तनों में दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए जीरे का सेवन करना चाहिए। वात कफ ज्वर में जीरे का सेवन मधु के साथ करने के पश्चात् छाछ पीकर धूप में खड़े रहे, जब तक पसीना न आ जाये तब तक धूप में खड़े रहें। पसीना आने के पश्चात् ज्वर उतर जाता है। युनानी हकीम जीरे को सुगंधित एवं ग्राही मानते हैं। नेत्रों का तेज बढ़ाने के लिए जीरा जल से नेत्र धोने की सलाह देते हैं। छाती शूल में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके सेवन से मूत्र अधिक होता है तथा कृमियों का नाश होता है। महिलाओं को गर्भ स्थान में सूजन होने के कारण होने वाले शूल में जीरा जल में महिलाओं को बैठने की सलाह दी जाती है।

इसी प्रकार अत्यन्त शूल करने वाले बाहर निकले हुए हरस (अर्श) पर जीरे को पीसकर पुल्टिस बनाकर बाँधने से अर्श में होने वाला शूल ठीक होकर अर्श अंदर चले जाते हैं। जीरा सूप-१०० तोला जल में १० तोला जीरा डालकर अच्छी तरह उबालें केवल १० तोला जल बाकी रहे, नीचे उतार कर छानकर उसमें काली मिर्च का चूर्ण तथा नमक डालकर पीने से खट्टे डकार आने बंद होते हैं तथा अजीर्णता ठीक होकर मल शुद्धि होती है।

मात्रा-१/२ से दो माशा।

⌘⌘⌘

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काली मूसली Curculigo orchioides Gaertn. AMARYLLIDACEAE

112

ENGLISH NAME:- Black Musale. Hindi - Kalimusli

PARTS-USED:-Rhizom and Roots.

DESCRIPTION:- A small herb with stout root stock and fleshy root at bare, leaves linear lanceolate, sheathing 3--16 inch. long, flowers yellow, on escape; capsule 4 seeded.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Root stock Contain: Steroids-Terpenoids, Phenolics, Tannins, Glyeosides, Starch, Iron, Calcium, Magnessium, Sodium, Stranthium, Resin, Gum and Calcium Oxalate.

ACTIONS: Tonic, Demulcent, Diuretic, Aphrodisiac, cooling, stimulant, cosmatic, alterative, appetizer, restorative.

USED IN:- Piles, Diarrhoea, Gonorrhoea, Sexual debility, Jaundice, Colic, Disuria, polyurea, menorrhagia, leucorrhoea, leucoderma.

प्रचलित नाम- स्याह मूसली

प्रयोज्य अंग:-मूल तथा भूमिगत कांड।

स्वरूप-लघु गुल्म, जिसका मूल कंद मजबूत तथा मूलतंतु मांसल होते हैं। पत्र ३-१६ इंच लम्बे, पुष्पपीत वर्णी।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन-मूल स्तंभ में स्टीरोइड्स-टर्पेनोइड्स, फेनोलिक्स, टैनिन्स, ग्लायकोसाइड्स, स्टार्च, लोह, कैल्शियम, मेग्रेशियम, सोडियम, कैल्शियम ओक्सेलेट, स्ट्रैन्थियम, राल तथा गोंद तत्त्व पाये जाते हैं।

गुण- बल्य, मूत्रल, कामदीपन शामक (शान्ति प्रदायक)

उपयोग-अर्श, अतिसार, अपसर्गिकामेह, लिंग दौर्बल्य, कामला, शूल तथा मूत्रकच्छ्र में लाभकारी। कभी-कभी मूल स्तंभ को पीसकर इसका लेप अस्थिभंग तथा चोट पर किया जा सकता है।

मात्रा- मूल स्तंभ का चूर्ण ३-६ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आम्रगंधा हरिद्रा Curcuma amada. Linn. ZINGIBERACEAE

113

ENGLISH NAME:- Mango-ginger. Hindi - Aama Haldi

PARTS-USED:-Roots and Rhizome.

DESCRIPTION:- A herb with large root stock, pale yellow inside, smelling like mango, leaves large, oblong lanceolate, flowers pale yellow.

TASTE:-Bitter & sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Rhizome Contain: Essential oil (Pinene. ocimene, safrol) Resin, Sugars, Gum, Starch, Albuminoids, Crudefibres, Organic acid, Phytosterol, Zulenogeine, Camphor, Curcumene, Turmerone, Volatile oil.

ACTIONS: Cooling, Carminative, Aromatic, Stomachic, Astringent, Appitizer.

USED IN:- Skin diseases, Diabetes, Itching, Lowering blood cholestral, Chronic ulcer, Cough, Asthma, Fever, Colic, Stomatitis; Blood purifier useful to cure Eczema.

प्रचलित नाम- आमा हल्दी

प्रयोज्य अंग-मूल तथा मूल स्तंभ।

स्वरूप-एक गुल्म, बड़ा मूल-कांड जो अंदर से पीतवर्णी, आम जैसी सुगंध वाला, पुष्प हल्के श्वेत रंग के।

स्वाद-तिक्त-मधुर

रासायनिक संगठन-इसके भूमिगत कांड (मूल स्तंभ) में उत्पत तेल (पिनीन, ऑसीमीन, सैफरॉल) राल, शर्करा, गोंद, स्टार्च, एल्बुमीनोइड्स अपक्व रेशे, कार्बनिक अम्ल, फायटोस्टीरॉल, ज्युलेनोजिन, कैम्फर, करक्युमिन, टर्मेरॉन तथा उड़नशील तैल घटक पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, वातानुलोमक, सुगंधित, दीपन, ग्राही, रुचिकर।

उपयोग-चर्मरोग में, मधुमेह, खाज-खुजली, रक्त में वसा का प्रमाण घटाने हेतु, जीर्णव्रण, कास, श्वास रोग, ज्वर, आंत्र, शूल, मुखगत व्रण, रक्त शोधक। यह औषधि खाज-खुजली में उपयोगी। इस हल्दी को काली जीरी के साथ पीसकर रोगग्रस्त (खाज-खुजली) भाग पर लगाने से लाभ होता है। इस हल्दी को काले नमक के साथ पीसकर गरम पानी के साथ सेवन से कृमि नाश होते हैं। शरीर के किसी भी अंग में चोट लगने से रक्त जम जाये या दर्द हो या सूजन हो जाय, तो आमा हल्दी को जल में पीसकर थोड़ा गरम कर शूलयुक्त अंग पर लगाने से उपर्युक्त सभी तकलीफें दूर हो जाती है। मधुमेह के रोग में उपयोगी चूर्ण में भी हल्दी मिलाई जाती है। फोड़े-फुन्सियों पर आमाहल्दी को गोमूत्र में घिसकर लेप करने से लाभ होता है। जमाल गोटे का आयुर्वेद में व्यवहार शोधन करके ही किया जाना चाहिए।

मात्रा-चूर्ण १ से ३ ग्राम।
स्वरस- १० से २० मि.ली.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हरिद्रा Syn C. longa Linn. Curcuma domestica Val ZINGIBERACEAE

114

ENGLISH NAME:- Turmeric. Hindi - Haldi
PARTS-USED:-Rhizome.
DESCRIPTION:- Tall herb about 2-3 feet high with fleshy rhizomes of yellow-orange colour inside, tubers thick, cylindric, leaf large, long petioled; flowers in compound spikes, covered by enlarged bracts, yellow.
TASTE:-Slightly bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains: Active curcumin compound, Essential oils-Termericoil and Terpenoids, Avolatile oil: It contains curcumen (Terpene) Starch, Albuminoids; Curmene is helpful in disolving the cholesterol.
ACTIONS: Stimulant, cooling Aromatic, Blood purifier, Anti-inflammatary, Stomachic, Astringent, Carminative, Antidote, antiperiodic, alterative.
USED IN:- Cold, Cough, Skin diseases, Abdominal worms, Diabetes, Scabies, Leucoderma, Polyuria, Ulcer, Swellings, Anaemia, Indigestion. Jaundice, Conjectivities, blood purifer, Liver tonic, Promote Complexon, catarrh and purulent ophthalmia

प्रचलित नाम- हल्दी
प्रयोज्य अंग-भूमिगत कांड।
स्वरूप-२-३ फूट ऊँचा क्षुप, भूमिजन्य कांड मांसल, अंदर से नारंगी पीतवर्णी होता है। इसके पत्ते केले के नवनी पत्तों के सामने हैं जो पर्ण तल के तरफ कुछ नोकदार होते हैं। पुष्प पीत वर्णी होते हैं।
स्वाद- अल्प तिक्त
रासायनिक संगठन-इसके भूमिगत कांड में एकसक्रिय तत्व करक्युमिन, उत्पततेल-टरमेरिक तेल तथा टर्पेनोईड्स पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक उड़नशील तेल जिसमें करक्युमेन (टर्पेइन), स्टार्च, एल्वुमिनोईड्स घटक पाये जाते हैं। करक्यूमेन, स्नेह द्रव्य कॉलेस्टेरॉल घुलाने के लिये अच्छा होता है।
गुण- उत्तेजक, सुगंधित, रक्तशोधन, शोथहर, दीपन, ग्राही, वातहर, विषघ्न।
उपयोग-प्रतिश्याय, कास, चर्मरोग, उदरकृमि, मधुमेह, कण्डु, श्वित्र, बहुमूत्र, व्रण, सूजन (शोथ) पाण्डुरोग, कुपचन, कामला, नेत्राभिष्यंद, रक्त शोधन, यकृत बल्य तथा वर्णय।

खांसी-जुकाम में गरम दूध में हल्दी चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ।

मूर्छा में-हल्दीचूर्ण तथा मिश्री पानी में घोलकर सेवन से लाभ। जीर्ण कामला में चार तोला दही में एक तोला हल्दी का चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन सुबह देने से लाभ होता है। प्रतिश्याय श्लेष्मा-हल्दी के धुयें को रात के समय सूंघने से लाभ एवं इसके पश्चात् कुछ समय तक जल का सेवन वर्जित है। विबंध (मल बद्धता) में बकरी के मूत्र में हल्दी का चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है। खुजली एवं दाद में हल्दी के चूर्ण को मक्खन में मिलाकर रोगग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। प्रमेह में-हल्दी चूर्ण आंवले के रस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा मधु में मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

खाँसी (कास) में हल्दी को सेक कर रात को शयनकाल समय चबाकर खानी चाहिए। श्लीपदरोग में हल्दी का चूर्ण, गुड़ गोमूत्र में मिलाकर पिलानी चाहिए, इससे खाज एवं कुष्ठरोग भी नष्ट होते हैं। सर्व प्रकार के नेत्र रोगों में हल्दी के भौमिक कंद को अरहर की दाल में उबालकर इसके पश्चात् सुखाकर जल में घिस कर सूर्यास्त पहले दो बार नेत्र में अंजन करने से नेत्रों की लाली, झामर तथा सफेद फूली ठीक हो जाते हैं। स्तन रोगों में हल्दी एवं लोधर को जल में घिस कर स्तन पर लेप करना चाहिए या हल्दी एवं घृतकुमारी के मूल को जल में घिसकर लेप करने से स्तन रोग ठीक हो जाते हैं। स्वरभेद प्रतिश्याय (जुकाम) तथा खाँसी में हल्दी का चूर्ण गरम दूध में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। बिच्छू विष में हल्दी का चूर्ण कोयले के अंगारों पर डाल कर धुएँ की धूनी दंश स्थान पर करनी चाहिए तथा हल्दी का चूर्ण चिलम में डालकर तमाकू की तरह धूम्रपान करना चाहिए। मलबद्धता (विबंध) में बकरी के मूत्र में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए। चोट लगने के पश्चात् रक्त जम जाने पर हल्दी तथा नमक गरम कर लेप करने से लाभ होता है। चोट लगने के कारण होने वाली सूजन पर हल्दी तथा चूने का लेप करना चाहिए। रक्तपित्त रोग में ताजी हल्दी के रस का सेवन अतिलाभदायक है। जीर्ण ज्वर एवं कामला में दही में ताजे हल्दी का रस मिलाकर सेवन से लाभ होता है। घाव पर रूझ आती हो तो हल्दी को तिल के तेल में उबालकर, इस तेल के प्रयोग से घाव में रूझ आ जाती है।

मात्रा- चूर्ण १-३ ग्राम।
स्वरस- १०-२० मि.ली.।

♦♦♦

'शिक्षा की जड़ें कड़वी तथा फल मीठे होते हैं।'

'वनस्पति पूजा तथा देवताओं को पुष्प-पत्र व गंध आदि चढ़ाने में उच्चस्तरीय आयुर्वेदिक चिकित्सा निहित है।' - वैद्य श्रीनारायण शास्त्री

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमर वल्लरी Cuscuta reflexa Roxb. CONVOLVULACEAE

115

ENGLISH NAME:- Dodder. Hindi - Amarbel
PARTS-USED:-Stem and Seed.
DESCRIPTION:- A total parasitic leaf less twiner, stem pale green-yellow with white flowers.
TASTE:-Slightly bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Alkaloids, Proteins, Flavonoids, Resin, Tannins, Glycosides, Carbohydrates, Cuscutin, Cuscatalin, Reducingsugars, Seeds Contain: Fixedoil, Amarbelin (Pigment), Bitter Resin, Aluminium, Calcium Sodium, Potassium and Reducing sugars.
ACTIONS: Stomachic, Purgative, Liver stimulant.
USED IN:- Insanity, Intestinal worms, inailments arising out of excessive melanin, remove obstruction in the bronchial passage Eye infections, Cough, Spleenomegaly, Eczema, Constipation Heart disease, Epilepsy, Paralysis.

प्रचलित नाम- अमरवेल
प्रयोज्य अंग-कांड तथा बीज
स्वरूप-सम्पूर्ण परोपजीवी इसके फैलने से कभी-कभी सम्पूर्ण वृक्ष झुक एवं ढक जाता है। यह वेल पत्र रहित, कांड प्राय: पीले रंग का, पुष्प श्वेत या गुलाबी एवं सुगंधित, फल मांसल तथा गोल होते हैं।
स्वाद- अल्प तिक्त
रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में एल्कलॉयड्स, प्रोटीन्स, फलेवोनोइड्स, राल, टैनिन्स ग्लायकोसाइड्स, कार्बोदित, कसक्युटीन, कसक्युटालिन, प्रह्लासकशर्करा, एल्युमिनियम, कैल्शियम, सोडियम एवं पोटेशियम। इसके बीज में स्थायी तैल, रंजक द्रव्य अमरबेलिन, कडुवारॉल एवं प्रह्लासक शर्करा घटक पाये जाते हैं।
गुण- दीपन, अतिरेचक, यकृत उत्तेजक।
उपयोग-उन्माद, आंतकृमियों में, अधिक मात्रा में मेलानिन उत्पत्ति के कारण हुये रोगों में, श्वसनी नली में हुये अवरोध को दूर करने में, नेत्ररोग में, कास, यकृति वृद्धि, खाज-खुजली तथा विबंध में इसके अतिरिक्त हृदयरोग, अपस्मार तथा पक्षाघात में लाभकारी। कांड का स्वरस-यकृतिवृद्धि एवं विबंध में लाभकारी। कांड का फांट खुजली तथा व्रण प्रक्षालन में लाभकारी। पंजाब में इसका क्वाथ दाइयों द्वारा गर्भपात कराने में किया जाता है। मस्तिष्क तथा ज्ञान तंतुओं के रोगों में इसके पंचांग का चूर्ण एवं बनफशा का क्वाथ पिलाना चाहिए। जोड़ों की जकड़न में सिरके को उबालकर इसमें अमरवेल के पंचांग का चूर्ण मिलाकर ठंडा कर छानकर पिलाना चाहिए या इसके पंचांग का चूर्ण कपड़ं की पोटली में बाँध कर जल में या सिरके में उबालना चाहिए(थोड़ी देर के लिए ही)। कुछ वैद्यराज के अनुसार केवल अमरवेल के चूर्ण का सेवन फेफड़ों को हानिकर्त्ता होने के कारण इसका प्रयोग बादाम का तेल केसर के साथ किया जाना चाहिए।
मात्रा-इसकी छाल ४-३ ग्राम को जल में उबाल कर सिरप के साथ देते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Lemongrass/ Melisa grass. Hindi - Agiachai/Agiaghas

PARTS-USED:-Leaves.

DESCRIPTION- A tall perennial herbaceous grass about 6-7 feet high, leaves 3-4 feet long, fragrant; spikelets paired, decompound, enclosed in spathaceous bracts.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Volatile aromatic oil (Indian Melissaoil) Citronela or Indian oil of verbena which Contains: Citral, Citronellal, Geraniol, Citronellal Tespene and Nevol.

ACTIONS: Stimulant, Diphoretic, Carminative, Diuretic, Antipyretic, Spasmolytic, Stomachic, Digestive, Appitizer, anthelmintic, laxative.

USED IN:- Cold, Fever, Vomiting, Diarrhoea, Chronic malaria, Abdominal pain, Cholera, Flatulence, Rheumatism and Lumbago, gastric irritation, anoredia.

प्रचलित नाम–अगिनघास /(हरीचाय) भूतीक

प्रयोज्य अंग–पत्र।

स्वरूप–यह चिरस्थायी ६–८ फुट ऊँचा क्षुप, पत्ते तीन से चार फीट लम्बे रिबन जैसे होते हैं। पुष्प उभयलिंगी मंजरियों में होते हैं।

स्वाद– तिक्त

रासायनिक संगठन–इसमें सुगंधित उड़नशील तेल (इंडियन मेलिसा ऑइल) इसको सिट्रोनेला या इन्डियन ओइल ऑफ वर्बेना कहते हैं। इस तेल में नींबू के स्वाद जैसा सिट्राल तत्व पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें सिट्रोनिलाल, जिरानियॉल, सिट्रोनिलाल टर्पेन तथा नेवोल तत्व पाये जाते हैं।

गुण– उत्तेजक, स्वेदजनन, वातानुलोमक, मूत्रल, ज्वरघ्न, उद्वेष्टन निरोधी, दीपन, पाचन तथा रुचिकर।

उपयोग–प्रतिश्याय, ज्वर, वमन, अतिसार, जीर्ण मेलेरिया, उदरशूल, विसूचिका, आध्मान, आमवात तथा कटिशूल में लाभकारी। विसूचिका में दूध में इसके तेल की २–३ बूंद डालकर देने से लाभ। मलेरिया ज्वर में पत्रों का फांट उसमें दूध तथा चीनी डालकर पीने से लाभ। कोकम के तेल के साथ इसकी मालिश करने से लाभ होता है। दद्रु–खाज–खुजली में हरीचाय के तेल का प्रयोग लाभकारी है।

मात्रा– तेल–२–३ बूंद।

पत्र–३–६ माशा।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कत्तृण-रोहिष Syn: Cymbopogon martinii (Roxb.) wats Cymbopogon schoenanthus Linn. POACEAE (GRAMINAE)

117

ENGLISH NAME:- Rosha Grass. Hindi - Rusaghas

PARTS-USED:-Leaves.

DESCRIPTION:- An aromatic grass, about 5-6 feet high cultivated & also foundwild. leaves thin and long, linear, lanceolate; panicle of sub-drupping, spathaceous spike.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Geraniumoil, This oil Contains a volatile oil (Phellandrene) this oil gives ginger like taste but sweet smelling like Rose.

ACTIONS:- Diuretic, Diphoretic, Antipyretic, Stimulant, appetizer, cardiotonic, galactogogue, sudorefic.

USED IN:- Heart disease, Throat disease, Cough, Colic, Rheumatism, Cold, Fever, Indigestion, Alopecia, Scorbutic, catarrh, neuralgia, bronchitis anorexia, epileptic fits.

प्रचलित नाम- रोहिष घास

प्रयोज्य अंग:-पत्र।

स्वरूप-सुगंधित ५-६ फूट ऊँची घास का पौधा, वन स्वरूपी या खेतों में उगाया जाता है। पत्र पतले तथा लम्बे। पुष्प लाल बादामी रंग के होते हैं।

स्वाद- तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके पत्रों में जिरानियम तेल निकलता है। इस तेल में उड़नशील तत्व फैलेन्ड्रेन पाया जाता है। इसका स्वाद अदरख जैसा किन्तु गुलाब जैसी मधुर सुगंध होती है।

गुण- मूत्रल, स्वेदजनन, ज्वरघ्न, उत्तेजक।

उपयोग-हृदय रोग, कंठ रोग, कास, आंत्र शूल, आमवात, प्रतिश्याय, ज्वर, कुपचन, इन्द्रलुप्त, पित्तरक्त में लाभकारी।

आमवात में इसके तेल की मालिश से लाभ होता है। इन्द्र लुप्त में इसके तेल की सिर पर मालिश करने से लाभ होता है तथा शिर:शूल में भी लाभ होता है।

पत्रों का क्वाथ ज्वर, अजीर्णता तथा खांसी में लाभकारी।

मात्रा- ३-६ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नील दूर्वा/शतवल्ली Cynodon dactylon (Linn) Pers. POACEAE (GRAMINAE)

118

ENGLISH NAME:- Creeping cynodon. Hindi - Dub
PARTS-USED:-whole plant and Roots.
DESCRIPTION:- A Small perennial creeping grass, branches slender rooting at nodes, leaves thin and linear ultimati brandres bear Small and delicati flowers
TASTE:-Little Acrid & cooling.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Beta-sitosterol, Beta-carotene, Vitamin-c, Carotenes, Glucosides, Palmitic acid, Triterpenoid, Arundoin, Friedelene, Alkaloids-Erganovin, Erganovinine, Ferulic, mono and oligo saccharide-Glucose Fructose, Sucrose, Starch and Lignin.
ACTIONS: Diuretic, Astringent, Antifungal, Antiviral, Antibiotic, Antithirst.
USED IN:- Chronic diarrhoea, Dysentery, Epilepsy, Hysteria, Rhinitis, Opthalmia, Diabetes, Cancer, Eczema, Impotency, Menorrhagia, Wound healing, Blood purifier, Anti-intlammatory, Vomiting, Dyscrasia and Disuria.

प्रचलित नाम- हरीदूब

प्रयोज्य अंग-पंचांग तथा मूल

स्वरूप-चिरस्थायी प्रसरणशील घास, जिसकी शाखाएँ लम्बी अशक्त, जिनके पर्व से मूल उत्पन्न होते हैं, पत्र भी पतले तथा संकुचित इसकी अंत वाली शाखाओं पर कोमल पुष्प आते हैं।

स्वाद- अल्प कटु तथा शीतल।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में बीटा-सिटोस्टीरॉल, बीटा-कैरोटिन, विटामिन-सी, कैरोटिन्स ग्लुकोसाइड, पामीटिक अम्ल ट्रायटर्पेनोइड, एरन्डोइन, फेरुलिक मोनो तथा ओलिगो सैकेराइड (ग्लुकोज़, फ्रुक्टोज़, सुक्रोज़, स्टार्च तथा लिग्रीन) होते हैं।

गुण-मूत्रल, ग्राही, फफूंदीनाशक, विषाणुघ्न, कीटाणुघ्न, तृषाशामक।

उपयोग-जीर्ण अतिसार में, प्रवाहिका, अपस्मार, मूर्छा, प्रतिश्याय, नेत्र चिकित्सा, मधुमेह, कैन्सर, खाज-खुजली, नपुंसकता, रक्त प्रदर, व्रणरोपण, रक्तशोधन, शोथहर, वमन शामक, रक्तदोष तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभकारी। नासिका रक्त स्राव में इसका स्वरस नासिका में १-२ बूंद डालने से लाभ होता है। खाज-खुजली में इसके पंचांग स्वरस में चावल पीसकर इसका लेप करने से लाभ। आर्त्तव प्राप्ति के लिये इसके पंचांग स्वरस में अनार की बड़ी-बड़ी कलियों का रस मिलाकर सात दिन तक सेवन से लाभ होता है। हिचकी में इसके मूल का स्वरस एक माशा तथा इसमें एक तोला मधु मिलाकर पिलाना चाहिए। मस्तिष्क रोग में इसके पंचांग के स्वरस में चावल पीसकर इसका लेप कपाल पर करने से लाभ होता है। वमन में चावल की मांड में हरी दूब को पीसकर तथा इसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से वमन का शमन होता है। व्रण में:-इसके पंचांग के स्वरस में तेल को सिद्ध कर इसको व्रण पर लगाने से लाभ होता है। सर्व प्रकार के ज्वर में:-इसके मूल को सूत में लपेट कर हाथ पर बाँधने से सभी प्रकार के ज्वर में लाभ होता है। हरीदूब को जल के साथ मिट्टी के बर्तन में आग पर रखकर इसकी वाष्प का सेक लेने से अर्श (बवासीर) की पीड़ा शांत होती है।

मात्रा- स्वरस- १०- २० मि.ली.।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुस्तक Cyperus rotundus Linn. CYPERACEAE

119

ENGLISH NAME:- Nutgrass. Hindi - Nagarmotha
PARTS-USED:-Black-Tuberous Roots/ Rhizome.
DESCRIPTION:- A perennial glabrous herbaceous sedge, leaves arisefrom under ground rhizome.
TASTE:-Acrid- bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains: Essential oil which contains: Penene, cineol; Fattyoil which contains: Linoleic acid, Oleic acid, Myristic acid, Stearic acid; Glycerol Glycoside Cyperene, Cyperenone, Sugars Gum and Carbohydrates; Leaves Contain: Luteolin.
ACTIONS: Astringent, Stomachic, Digestive, Blood purifier, Anthelmintic Diuratic, revulsive galactogogue, nervine tonic, anti-inflammatory, carminative, expectorant.
USED IN:- Dyspepsia, Sprue, Skin disease, Diarrhoea, Thirst, Fever, Galactogogue, Uterus, stimulant, Wound healer Promote, hairs growth, anorexia, flatulence, diarrhoea, epilepsy, caliculi.

प्रचलित नाम- मोथा

प्रयोज्य अंग-काले कंद मूल भूमिगत कांड।

स्वरूप-चिरस्थायी चिकना गुल्म घास, पत्रों का उद्भव कठोर, भूमिजन्य कांड से होता है। पत्ते लम्बे पतले होते हैं। अन्तर्भूमि शायी कांड में से अंडाकार कंद निकलते हैं जो सुगंधित होते हैं। ठंडी पतली जिसके अग्र पर पुष्प वाहक शाखाएँ निकलती हैं, जो छोटे-छोटे आवृत्त काण्डज व्यूहों का संयुक्त व्यूह होती है, जिन पर पुष्प होते हैं।

स्वाद- कटु तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके भूमिगत कांड में उत्पततेल, जिसमें पिनीन, सिनीयॉल, वसा तेल-जिसमें लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, मिरस्टीक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल। ग्लीसरॉल, ग्लायकोसाइड, सायपेरीन, सायपेरीनॉन, शर्करा, गोंद तथा कार्बोदित, इसके पत्रों में ल्युटियोलिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, दीपन, पाचन, रक्तशोधन, कृमिघ्न, मूत्रल।

उपयोग-अग्निमांद्य, संग्रहणी, चर्मरोग, अतिसार, तृषा ज्वर, स्तन्य जनन, गर्भाशय उत्तेजक, व्रण रोपण, केशवर्धक।

ताजे कंद के रस को अदरख के रस में मधु के साथ देने से आमातिसार में लाभ। क्वाथशीतल-विसूचिका में तृषा शमन के लिये लाभकारी। ताजी जड़ का प्रयोग-जड़ को घिसकर गोघृत मिलाकर, व्रण पर लगाने से लाभ। इसके मूल कंद के क्वाथ के सेवन से पसीना एवं मूत्र आता है तथा मुख से लार गिरना बंद होता है।

मात्रा- चूर्ण- ३-५ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिंशपा Dalbergia sissoo Roxb. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

120

ENGLISH NAME:- Sissoo Tree. Hindi Shisham
PARTS-USED:-Leaves, Wood and Bark.
DESCRIPTION:- A tall deciduous tree, about 15-18 meters high, leaves pale, imparipinnate, 3-5 foliate leaflets broadly ovate cuneate, acuminate, flowers small in clusters, yellow; white, Legume flat & thin, strap shaped.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Dalbergin, Dalbergenone, Methyl-Dalbergin, Nordalbergin, Isodalbergin, Dalbergiphenol, Tecterigenin, Isocaviudin, Glucoside, Isocaviunin, Essential oil which Contains Bisboline and Nerolidol.
ACTIONS: Anti-emetic, Expectorant, Stimulant, Abortifacient. Astringent, constipative leaves, bitter, ophthalmic, digestive.
USED IN:- Skindiseases-Leprosy Leucoderma, stembark and wood; Astringent, thermogenic, emmanagogae, expectorant, aphrodisiac, abroti facient, antipyretic, appetizer. Urinary disease, Dyscrasia, Ulcer, Worms; Decoction of Leaves in: Gonorrhoea, Dried barkin: Hemostatic, Bleeding piles, Menorrhagia, Diarrhoea.

प्रचलित नाम- शीसम

प्रयोज्य अंग-पत्र, काष्ठ तथा छाल

स्वरूप-पतनशील ऊँचा वृक्ष, जिसकी ऊँचाई १५-१८ फूट होती है, पत्ते गोल, नोकदार, चिकने ऊपरी सतह चमकीली होती है। पुष्प झुमको में छोटे, फलियाँ लम्बी चिपटी तथा पतली होती है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में डालबर्जीन, डालबर्जीनोन, मिथाइल डालबर्जीन, नोरडालबर्जीन, आइसोडालबर्जीन, डालबर्जीफिनॉल, टैक्टेरीजेनिन, आइसोकेव्युडीन, ग्लूकोसाइड, आइसो-केव्युनिन, उत्पततेल जिसमें बिसबॉलीन तथा निरॉलीडाल घटक पाये जाते हैं।

गुण- वमन शामक, कफ निसारक, उत्तेजक, गर्भपातक।

उपयोग-चर्मरोगों में श्वित्र तथा कुष्ठरोग, मूत्ररोग, रक्तदोष, व्रण, कृमिरोग में, पत्रों का क्वाथ अपसर्गिकामेह में, सूखी छाल-रक्त स्राव में, रक्तार्श तथा कष्टार्तव में लाभकारी। लकड़ी का उपयोग वमन एवं चर्मरोगों में लाभकारी। पत्रों का क्वाथ- सोजाक में लाभकारी। शीशम का तेल, व्रण शोधन, कुष्ठरोग, कृमिरोग में लाभकारी।

मात्रा- चूर्ण- ३-५ ग्राम।
क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काला धतूरा Datura metal Linn. Syn Datura innoxia SOLANACEAE

D. fastuosa Linn; D. alba Nees

121

ENGLISH NAME:-Thorne apple. Hindi - Dhatura
PARTS-USED:-Roots, Leaves, Seeds, Fruits and Flowers.
DESCRIPTION:- A small shrub, 3-6 feet high branches greenish white, Leaves simple dentate ovaye, glabrous, alternate or opposite; petals white but usnally purple outside, fruit with numerous prickles and arepurple in colour.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds and Flowers Contain: Daturadiol, Daturalone, Fastusine, Beta-Sitosterol, Hyosine, Hyoscyamine, Atropine, Fastudin, Fastunine, Fastusic acid, Fastusidine, Fastusinine, Daluranolone, Citrostadienol, obtusifoliol, Allantoin, Caproic, Beta-Linolic, Linoleic acid, oteicacid, Datumetine, Datumetelin, Vitamin-C Chlorogenic acid and Fixed oil.
ACTIONS: Antiseptic, Antipyretic, Narcotic, Analgesic, Spasmolytic, Anticough, Anti-inflammatory, intoxicant, emetic.
USED IN:- Ulcer, Diarrhoea, Skindisease, Scabies, Pruritis, Fever, Insanity, oedema Antispasmodic, It causes vertigo but useful in Bronchial Asthma, neuralgia, myalgia hyperacidety, renal colic, caliculi.

प्रचलित नाम-काला धतूरा

प्रयोज्य अंग:-मूल, पत्र, बीज, फल तथा पुष्प।

स्वरूप-३-६ फूट ऊँचा लघु क्षुप, शाखाएँ हरी श्वेत, पत्ते अंडाकार कुछ लहरदार, असम, दंतुर, दोनों सतह चिकनी अकेले या युग्म (प्राय: एक छोटा एक बड़ा) में होते हैं। पुष्प सफेद किन्तु बाहर से लगभग बैगनी रंग के फल की बाहरी सतह पर छोटे-छोटे कटक जो बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके बीज तथा पुष्प में दतुराडियॉल, दतुरालोन, फेस्टुसिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, हयोसीन, हयोसायमीन, एट्रोपिन (अल्प मात्रा में) फैस्टुडिन, फेस्टुनीन, फेस्टुसिक अम्ल, फैस्टुसिडीन, फैस्टुसिनीन, दतुरानोलोन, सिट्रोस्टैडीनॉल, ऑबटयुसीफोलीयोल, एलान्टैन, कौपेरोईक बीटा-लिनोलिक, लिनोलिक अम्ल, ऑलिक, दतुरासेटाईन, विटामिन-सी, क्लोरोजेनिक अम्ल तथा स्थिर तैल घटक पाये जाते हैं।

गुण- पूतिरोधक, ज्वरघ्न, निद्राकारक, शूलहर, उद्वेष्टनरोधी, कासहर, शोथहर।

उपयोग-व्रण, अतिसार, चर्मरोग, कण्डु, खर्जु, ज्वर, उन्माद, उदवेष्टनरोधी, इसके सेवन से यह भ्रामक क्रिया पैदा करता है। यह तमक श्वास में लाभकारी। पत्रों के लेप से वेदना एवं शोथ कम होता है। शीत ज्वर (पारी से आना वाला) में बीज का चूर्ण दही में मिलाकर ज्वर आने से पूर्व दिया जाता है। पत्रों का क्वाथ- आमवात, संधिशोथ, आध्मान, नाड़ीशूल में क्वाथ का सेंक लाभकारी। पागल कुत्ते के विष में श्वेत पुनर्नवा का चूर्ण १/२ तोला तथा धतूरा मूल चूर्ण एक रत्ती दोनों को मिलाकर शीतल जल के साथ सेवन कराना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। इंद्रलुप्त में इसके पत्रों का स्वरस सिर पर लगाना चाहिए। वातजनेत्राभिष्यन्द में इसके मूल को जल में पीसकर इस रस की एक बूंद नेत्रों में डालनी चाहिए। स्तन शोथ में इसके २०-२५ पत्रों का कल्क बनाकर इसमें थोड़ी पिसी हुई हल्दी मिलाकर स्तन पर जहाँ वेदना हो बाँधना चाहिए, इस से स्तन की वेदना शांत हो जाती है। अर्जीणता में गुरु आहार (गेंहूँ, उर्द, मटर, मूँग, मोठ) के कारण हुए अजीर्ण में धतूरे के बीज का चूर्ण (एक रत्ती) सेवन से अजीर्ण नष्ट होता है। पैरों के तले फट गये हों तो मानक क्षार के जल में धतूरे के बीज पीसकर लेप करना चाहिए। कर्णरोग (मवाद बहता हो)में ८ पल सरसों का तैल, एक पल गंधक, एक पल हरिद्रा तथा ३२ पल धतूरे के पत्रों का स्वरस मिलाकर विधिपूर्वक तैल सिद्ध करके इस तेल की बूँदें कान में डालनी चाहिए।

मात्रा- बीज का चूर्ण-१/२-१मि. ग्राम। पत्र चूर्ण-१/२-डेढ़ मि.ग्रा. । बीज का टिंक्चर-१ से ५ बूंद। पागल कुत्ते के विष के लिए स्वरस की मात्रा १/४ तोला से एक तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कनक धतूरा Datura stramonium Linn. SOLANACEAE

122

ENGLISH NAME:-Dhatura
PARTS-USED:-Leaves, Flowers, Fruits and seeds.
DESCRIPTION:- A coarse annual herb, glabrous or pubesceut about 5 to 6 feet high, white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contain: Hyoscyamine, Hyoscine, Atropine, Scopolamine, Tigloidin, Tropine, Linoleic, Lignoceric, Myristic, Palmitic, oleic, Stearic acids. Beta-Carbolines, Compesterol, Beta-sitosterol, stigma sterol Beta-amyrin, Daturadiol, Gramisterol, Chlorogonic acid, Datugen, Datugenine, Daturalactone, Stramonolide.
ACTIONS: Sedative, Antiseptic, Narcotic, Antipyretic, Anti-leprotic, Anthelmintic.
USED IN:- Ulcer, Eczema, worm, Juice of plant applied to Scalp for Curing dandruff and lossof hairs; Juiceof flowers cures Earache, Paste of leaves applied on boils and sores.

प्रचलित नाम- राजधतूरा

प्रयोज्य अंग-पत्र, पुष्प, फल तथा बीज

स्वरूप-एक वर्षीय क्षुप औसतन ५-६ फीट ऊँचा, कांड काला-जामूनी या काला होता है। पत्ते हल्के हरे रंग के सतह चिकनी या लोमश (कोमल पत्र) एवं उग्र गंधयुक्त, पुष्प सफेद या कभी-कभी बैंगनी आभायुक्त, फल गोल जो कठोर कंटकों से ढका हुआ होता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसमें हयोसायमीन, हयोसाइन, ऐट्रोपाइन, स्कोपोलामाइन, टिग्लोइडीन, ट्रोपीन, लिनोलिक, लिग्नोसेरीक, मियरीस्टीक, पामीटिक ऑलीक, स्टीयरीक अम्ल बीटा-कार्बोलिन्स, कम्पेस्टेरॉल, बीटा-सीटोस्टीरॉल, स्टीग्मा-स्टीरॉल, बीटा-एमीरीन, दतुराडीयॉल ग्रामीस्टीरॉल, क्लोरोजैनिक अम्ल, दतुजेन, दतुजेनीन, दतुरालैक्टोन, स्ट्रेमोनोलीड्स घटक पाये जाते हैं।

गुण- निद्राजनक, पूतिरोधि, मदकारक, ज्वरघ्न, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न।

उपयोग-व्रण, खाज-खुजली, कृमिरोग में लाभकारी। पंचांग का रस बाल झड़ने एवं बालों में जुएँ तथा लीखों को दूर करने में लाभकारी। पुष्पों का रस कान में डालने से कर्णशूल में लाभ होता है। पत्रों का कल्क गण्ड तथा छालों में लगाने से लाभ होता है। श्वासहर योग इसके हरे ताजे फलों को बीज सहित बाहर से चार कट (चीरा) दें कर उसमें महीन नमक तथा हल्दी चूर्ण (समभाग) भर दें (फल में जितना आ सके), इस प्रकार अनेक फल तैयार कर प्रत्येक फल को धतूरे के पत्रों में लपेट कर, इन सबको एक घड़े में भर दो, घड़े के मुख को कपड़ मिट्टी से सील कर गोबर के कण्डों के ढेर में रखकर आग जला दो, जब घड़े के अंदर के सभी फल जल कर कोयले जैसे हो जाये, तब इनको पीसकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चूर्ण बना बोतल में भर लेना चाहिए। शुष्क कास तथा श्वास रोग के मरीज को प्रातः - दोपहर तथा सायं हल्दी के स्वरस में मधु मिलाकर प्रतिदिन दो-दो रत्ती की तीन पुड़िया सेवन करने से लाभ होता है। कटकवटी धतूरा पत्रों के स्वरस को स्टील की परात में भर कर धूप में रखना चाहिए। स्वरस सूखने के पश्चात् इसमें सम भाग काली मरिच का चूर्ण मिलाकर मूंग के दाने के कद के समान गोली बनाकर रख लें। इन का प्रयोग उदरशूल, जुकाम, खाँसी तथा श्वासरोग में एक से दो गोली चाय के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

कनक तेल इसके पत्रों का ४० तोला स्वरस लेकर इसमें इन्हीं पत्रों का कल्क ढाई तोला मिलाकर सरसों के दस तोला तेल को उबाल कर (स्वरस तथा कल्क सहित) जब तेल अच्छी तरह पक जाय, उतार कर कपड़े से छानकर एक शीशी में भर लें। इस तेल के प्रयोग से कर्णशूल तथा सूजन मिट जाते हैं। इस तेल का प्रयोग खुजली में किया जा सकता है।

इसके पत्रों तथा बीजों में तीन प्रकार के एल्कालाँयड्स होते हैं- (१) हयोसीमीन (२) एट्रोपीन (३) हायोसीन। इनकी मात्रा पौधे के अग्रभाग के पत्रों में अधिक होती है, वर्षा ऋतु में भी यह मात्रा अधिक होती है, अतः प्रातःकाल तोड़े हुए पत्रों में अधिक मात्रा होती है। इसी प्रकार छाया में सुखाये हुए पत्रों में यह मात्रा अधिक, स्वयं सूखे पत्रों में भी यह मात्रा अधिक होती है। पत्रों की अपेक्षा बीजों में इनकी मात्रा अधिक होती है। इसके पत्रों की सिगरेट श्वासरोग में लाभकारी होती है। इसके बीज चर्मरोग में लाभकारी है। इससे जूँ तथा लीख मर जाते हैं। रक्तार्श एवं गुदक्षत तथा गुदद्वार की पीड़ाओं में इस धतूरे के कोमल पत्रों का कल्क बनाकर लगाना चाहिए।

मात्रा- बीज का चूर्ण-१-२ मि. ग्राम। पत्र चूर्ण-आधा से डेढ़ मि. ग्रा.।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गर्जर/गृंजनक Daucus carota L. Var. Sativa. D.C. UMBELLIFERAE

123

ENGLISH NAME:- Carrot Root. Hindi - Gajar
PARTS-USED:-Fleshy Roots and Seeds.
DESCRIPTION:- A biennial, hairy herb, leaves bi-or tripinnate compound, Flowers white or pale yellow in to compound Umbels.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contain:- Protein, Fat, Carbohydrates, Fibres, Minerals-Calcium, Phosphorus, Iron, Vitamins, A. B_1, C, B, Thiamine, Riboflavin, Nicotinic acid. Essential oil.
ACTIONS:-Seeds- Aromatic, Stimulant, Carminative, Roots: Tonic, Aphrodis iac Diuretic.
USED IN:- Roots: Asthma, Swellings, Piles, Diarrhoea, Bleeding piles, Seeds are used as Nervine tonic and Aphrodisiac & used in uterinepain. Roots-decoction is useful in Jaundice. Raw Roots are anthelmintic.

प्रचलित नाम-गाजर

प्रयोज्य अंग- मांसल मूल तथा बीज

स्वरूप-द्विवर्षायु रोमश क्षुप, पत्र द्वि या त्रिपक्षवत् संयुक्त, पुष्प सफेद या हल्के पीत वर्णी जो संयुक्त छत्राकार में गुच्छ में होते हैं। इसके मूल मांसल (गाजर) ४-१२ इंच लम्बे होते हैं।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन- इसके मूल में प्रोटीन, वसा, कार्बोदित, रेशे, खनिज-कैल्शियम, फॉस्फरस, लोह, विटामिन्स-ए, बी$_1$, सी, बी (समूह के) थायमिन, उड़नशील तेल, रीबोफ्लेविन तथा निकोटीनिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-बीज-सुगंधित, उत्तेजक, वातानुलोमक, मूल (गाजर) बल्य, वाजीकरण, मूत्रल।

उपयोग-मूल-श्वास रोग, शोथ, अर्श, अतिसार, रक्तार्श में, इसका क्वाथ कामला में, इसके कच्चे मूल-कृमिघ्न।

बीज - नाड़ीबल्य, वाजीकरण तथा गर्भाशय शूल में लाभकारी। शोथ में - गाजर का शाक बना कर शोथ से पीड़ित रोगी को खिलाना चाहिए।

श्वास तथा हिक्का में - गाजर को जल में घिस कर नस्य देने से लाभ होता है।

अर्श में-दही तथा अनार की अम्लता के साथ घी-तेल में पकाया हुआ गाजर का शाक खिलाना चाहिए जो अर्श के रोगियों के लिये उत्तम है।

रक्तार्श में-अधिक रक्तस्राव होता हो तो-दही के मलाई के साथ गाजर का शाक खिलाना चाहिए।

अतिसार में-गाजर का रस पिलाना चाहिए। गाजर के बीज गर्भ पातक माने गये हैं। गाजर का हल्वा अत्यंत पुष्टिकारक माना गया है, क्योंकि इसमें विटामिन ए (केरोटिन)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अच्छे प्रमाण में होता है। इसके पत्रों के क्वाथ का उपयोग गर्भाशय को उत्तेजित करने के लिये प्रसवावस्था समय करते हैं। इसके बीज वाजीकरण माने जाते हैं और गर्भाशय शूल में उपयोग किया जाता है।

कामला रोग में-गाजर का क्वाथ पिलाना चाहिए। दग्ध स्थान में एवं दुष्ट व्रण पर पकायी हुई गाजर लगाई जाती है।

कृमिघ्न में-कच्ची गाजर खिलाने से कृमि नष्ट होते हैं।

कच्ची गाजर खाने के बजाय इसके रस का सेवन अधिक लाभकारी होता है। इसके बीज वृक्क रोगों में तथा जलोदर में लाभकारी हैं।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'पीपल को जल देने से दरिद्रता कालकर्णी (एक तरह का रोग) दुःख दुश्चिन्तता तथा सम्पूर्ण दुःख नष्ट हो जाते हैं। जो बुद्धिमान पीपल के पेड़ की पूजा करता है। उसने अपने पितरों को तृप्त कर दिया। भगवान् विष्णु की आराधना कर ली तथा सम्पूर्ण ग्रहों का भी पूजन कर लिया। अष्टाँग योग का साधन, स्नान करके पीपल के वृक्ष का चिंतन तथा श्रीगोविन्द का पूजन करने से मनुष्य कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।' -पद्म पुराण पाताल खण्ड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शालपर्णी Desmodium gangeticum. D.C. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

124

ENGLISH NAME:-Sarivan. Hindi - Salpan

PARTS-USED:-Whole plant, Roots and Seeds.

DESCRIPTION:- A herb or undershrb about 2-4 feet high spreading & geniculate, branches, stem occasionally angular, leaves, oblanceolate, simple obluse or acute flowers whitish pink.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Pterocarpanoids, Gangetin, Gangetinin, Desmodin, Alkaloids, Isoflavonoid Phytoalexins, Isoflavones genstein.

ACTIONS:- Bitter, thermogenic, tonic, Digestive, Febrifuge, Anti-inflammalory, Antidote Rejuvenator, Aphrodisiac, demulcent, anthelmintic, Diuretic, Haemostatic.

USED IN:- Malarial fever, Polyuria, Piles, Oedema, Diarrhoea, Vomiting, Tuberculosis, Cough, Bronchitis, Dyscrasia, dyspepsia, flatulence, Typhoid fever..

प्रचलित नाम- सरिवन

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल तथा बीज

स्वरूप-एक क्षुप या उपक्षुप लगभग २-४ फूट ऊँचा, फैला हुआ, शाखाएँ अग्रभाग से झुकी हुई, कांड कोणदार, पत्ते-एक पत्रक ३-६ इंच लम्बे तीक्ष्ण वाले होते हैं। पुष्प श्वेत गुलाबी या जामुनी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसमें टेरोकार्पेनोइड्स, गैन्जेटिन, गैन्जेटिनिन, डैस्मोडीन, एल्कलॉयड्स, आईसोफ्लेवोनोइड-फायटोएलेक्सीन्स, आइसोफ्लेवोनेस-जेनिस्टीन घटक पाये जाते हैं।

गुण- तिक्त बल्य, पाचन, ज्वरहर, शोथघ्न, विषघ्न तथा रसायन, वाजीकरण (वृष्य), सर्वदोषहर (वात, पित्त, कफ)।

उपयोग-विषम ज्वर, प्रमेह, अर्श, शोथ, अतिसार, वमन, राज यक्ष्मा, कास, श्वसनीशोथ, रक्तदोष तथा कृमिघ्न। पंचांग का क्वाथ- इस क्वाथ में काली मिर्च मिलाकर सेवन से रक्त विकार में लाभ होता है। अतिसार एवं शूल में शालपर्णी के मूल तथा त्रिकटु से सिद्ध किया हुआ क्षीर पाक का सेवन कराना चाहिए। आधा शीशी (शिर:शूल-अर्धाव भेदक) शालपर्णी के स्वरस या क्वाथ का नस्य देना चाहिए।

इसके मूल के सेवन से शरीर हृष्ट-पुष्ट होकर बुढ़ापे को दूर रखता है। इसलिए शालपर्णी के मूल प्रतिदिन खाने जैसे हैं। यदि ताजा मूल उपलब्ध हो, तो इसका सेवन उत्तम है या छाया शुष्क चूर्ण का सेवन दूध के साथ किया जा सकता है। प्रौढ़ के लिये इस चूर्ण की मात्रा १/२-१/४ तोला प्रतिदिन तीन बार, यदि ताजे मूल हैं तथा एक पौधे के मूल की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चटनी बारीक पीसकर दूध में मिलाकर पीनी चाहिए।

आंत रोगों (आंत यक्ष्मा) में प्रतिदिन इसका सेवन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सर्व प्रकार के अतिसार में इसके मूल का सेवन अतिलाभकारी।

विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर, अशक्ति, कुपचन इन सभी रोगों में इसका प्रयोग लाभकारी है।

यह वनौषधि वृष्य यानी वाजीकरण (शुक्रवर्धक) तथा सर्वदोषहर गुण वाली मानी गई है। इसमें शुक्रवर्धक हॉरमोन-टेस्टोस्टीरोन से मिलता एक होरमोन्स पाया जाता है।

मात्रा- क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'ब्रह्माजी ने राज्यों का बँटवारा करते समय नक्षत्र, ग्रह, ब्राह्मण, सम्पूर्ण वनस्पति और यज्ञ तथा तप आदि के राज्य पर चन्द्रमा को नियुक्त किया। स्थावरों का स्वामी हिमालय को और मुनिजनों का स्वामी कपिल देव जी को बनाया तथा वृक्ष को वनस्पतियों का राजा बनाया।' -नारद पुराण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हृत्पत्री Digitalis purpurea Linn. SCROPHULARIACEAE

125

ENGLISH NAME:-Foxglove. Hindi - Hridpatti

PARTS-USED:-Whole plant.

DESCRIPTION:- A large herb during first year it bears rosette of radical rugose, hairy leaves, 15-30 cm. ovoti-ovate-lanceolate with Solitary reddish blue flowers, campanulate, one sided on branches spotted..

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contain: Digitalin (Glucoside), Digitoxin, Digitophyllin, Digitonin, Digitatine, Digitatilic acid, Antirrhinic acid, Digito flavin; Flowers Contain: Polyphenol.

ACTIONS: Expectorant, Diuretic, Anti-inflammatory, Heart stimulant, cardio-tonic Haemostatic, irritant, aphrodiriac.

USED IN:-Irregularheart beat, Blood pressure, Haemorrhagic disease, Urinary disease, Ashtma, Cough, Tuberculosis, Nervous disorder, Liver and Spleendisease, Insanity, Fever and Uterine disease, dropsy, renal, obstruction, convulsions, dysmenorrhaea.

प्रचलित नाम-तिलपुष्पी

प्रयोज्य अंग-पंचांग

स्वरूप-लघु क्षुप, एकाकी, कोण में उत्पन्न होता पुष्प नील-रक्तवर्णी होता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में डीजीटालीन (ग्लूकोसाइड) डिजिटोक्सीन, डीजीटोफायलिन, डिजीटोनिन, डिजीटेटीन, डिजीटैटीलिक अम्ल, एन्टीरहीनीक अम्ल तटथा डीजीटोफले वान, इसके पुष्पों में पोलीफेनोल घटक पाये जाते हैं।

गुण- कफ नि:सारक, मूत्रल, शोथहर, हृदयोत्तेजक।

उपयोग-अनियमित हृदय स्पंदन, रक्त दाब, रक्त स्राव रोगों में, मूत्र रोग, श्वास रोग, कास, यक्ष्मा, स्नायुतंत्र विकारों में, यकृत तथा प्लीहा रोग में, उन्माद, ज्वर तथा गर्भाशय रोगों में लाभकारी। पत्रों का प्रयोग हृदय रोग के कारण होने वाले शोथ में लाभकारी। यह औषधि हृदय बल्य होने के कारण इससे हृदय गति नियंत्रित होती है। हृदय पटल को यह खूब शक्ति प्रदान करती है।

मात्रा- प्रारंभ में चूर्ण ५०० मि. ग्राम प्रतिदिन विभाजित मात्रा में ४-६ घंटे के अंतर में, लक्षणों की शान्ति होने पर १०० मि.ग्राम प्रतिदिन देते हैं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भव्य Dillenia indica Linn. DILLENIACEAE

126

ENGLISH NAME:-Dillenia. Hindi - Chaltr

PARTS-USED:- Fruits, Leaves and Bark.

DESCRIPTION:- A medium evergreen tree, leaves in cluster, oblong, large, parallel veined at the end of branches, flowers terminal solitary white, fruit- 4-6 cm., fragrant, covered by fleshy sepals.

TASTE:-Acrid-sour (Fruit).

CHEMICAL CONSTITUENTS-It Contains: Betalin, Betalinaldehyde, Betulic acid, Hydroxylaceton, Myricetin, Kaempferole, Isorrhamnetin, Dillentin, Naringenin, Mallic acid, Glucose, Tannin and sitosterol.

ACTIONS:-Laxative, Appitizer, Astringent, Heart Tonic.

USED IN:-Abdominal pain, Colic, Ripe fruit is Appitizer; Juice mixed with sugar and water is cooling beverage is useful in fever & cough, Leaves and bark is Astringent and Anti constipation.

प्रचलित नाम- चिल्टा

प्रयोज्य अंग-फल, पत्र तथा छाल

स्वरूप-सदा हरित लघु वृक्ष, पत्ते शाखाओं के अग्र स्थान पर झुमकों में जो दंतुर होते हैं। पुष्प श्वेत सुगंधित तथा एकाकी अग्रस्थ। फल ३-६ इंच व्यास के होते हैं।

स्वाद-कटु - आम्ल

रासायनिक संगठन-इसमें बेटुलिन, बेटुलिनाल्डीहाइड, बेटुलिक अम्ल, हाइड्रोक्सील ऐसीटोन, मिरीसेटीन, किम्फेरॉल, आइसोरहामनेटीन, डिलेनैटिन, नैरीन्जैनिन, मैलिक अम्ल, ग्लूकोज टैनिन तथा सिटोस्टीरॉल तत्व पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचक, रुचिकर, ग्राही, हृदयबल्य।

उपयोग-उदरशूल, शूल, पकेफल, रुचिकर, फल का रस शर्करा तथा पानी मिलाकर बना शरबत शीतल तथा यह ज्वर एवं खांसी में लाभकारी, इसके पत्र तथा छाल, ग्राही तथा इनके सेवन से शौच साफ होता है।

मात्रा- पके हुए फल के प्रयोग से ज्वर, खांसी में लाभ होता है। यह मुख शोधक एवं विष्टाम्भि है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाराही कंद Dioscorea bulbifera Linn. DIOSCORIACEAE

127

ENGLISH NAME:- Yam. Hindi - Bilaikand/Suar Kanda
PARTS-USED:-Under ground Tubers & Fruits.
DESCRIPTION:- A twiner with pubescent stem and bulbil in the axils of leaves; leaves alternate broadly ovate, cordate with nine main veins, monoecious, male inflorescence pendulous, fruits 3 winged.
TASTE:-Bitter & Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- A piosonous glucoside (Dioscorine) Tubers Contains:-Starch, Vitamin-B, Calcium oxalate, Protin, Iron.
ACTIONS:-Bitter, acrid, thermogenic Sweet, Rejuvenator, Stomachic, Spermatopiotic, Tonic, Billious, purgative deflatulent, aphrodiriac, anthelmintic.
USED IN:- Fruits are used in: Diarrhoea withblood Dysentery, Abdominal pain, Piles, Skin disease, improves sperms, Age, Cemplexion also used in curing: Cough, Leprosy, Polyuria, Disuria & Worms Infestation, scrofula, syphilis, Haemorrhoids, diabetic disorders; corm bulbil used as famine food.

प्रचलित नाम- गेंटी/बिबोला कंद
प्रयोज्य अंग- भूमिगत कंद तथा फल
स्वरूप-आरोहण शील लता, कांड रोमश तथा पत्र कोणों में गोलकंद सदृश रचनाएँ होता है। पत्र एकांतर, हृदयाकारपतले, पुच्छाकार लम्बे नोकदार होते हैं। पत्र धार पर ९ मुख्य शिराएँ होती हैं। नर पुष्प की मंजरियाँ नीचे की ओर झूलती हुई एवं २-४ इंच लम्बी, फल-तीन पंख वाले होते हैं।
स्वाद-तिक्त-मधुर।
रासायनिक संगठन- इसमें एक विषैला ग्लूकोसाईड (डायोस्कोरीन) पाया जाता है। इसके कंद में स्टार्च, विटामिन-बी, कैल्शियम ओक्सेलेट, प्रोटीन तथा लोह तत्व पाये जाते हैं।
गुण-यह मधुर रसायन, अग्निदीपन, शुक्रवर्धक, बल्य तथा पित्तवर्धक।
उपयोग-इसका फलों का प्रयोग-रक्तातिसार प्रवाहिका, उदरशूल, अर्श, चर्मरोग, यह शुक्राणु, आयु, स्वर, वर्ण, जठराग्नि को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त यह-कफ, कुष्ठरोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र एवं कृमियों का नाश करता है। इसके फल का सेवन शर्करा एवं जीरा मिलाकर किया जाता है।

यह हरस (बवासीर) पर अतिगुणकारी है। इसके कंद का प्रयोग किसी भी प्रकार की सूजन में लाभकारी होता है। इसके कंद वृष्य-वाजीकरण, बल्य एवं रसायन होते हैं।
मात्रा-३-६ ग्राम।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भृङ्गराज Eclipta alba Hassk. (Linn) ASTERACEAE. (COMPOSITAE)

128

ENGLISH NAME:- Trailing Eclipta. Hindi - Bhangra
PARTS-USED:- Whole plant, Leaves, Seeds and Roots.
DESCRIPTION:- A small annual and procumbent & Coarse herb, prostrating, leaves opposite, simple variable, Flowers white in Capitulum inflorescence.
TASTE:-Bitter/Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS:- Plant Contains: Glucosides-Phytosterol-A, Beta-Amyrin, Wedelolactone, Luteoline, Triterpenic acid, Fatty acids, Palmitic acid, Stearic acid, Oleic acid, Linolic acid, Nicotine, Ampliptene alkaloid, Ecliptine and Resin.
ACTIONS:-Emetic, Analgesic, Spasmogenic, Antiseptic, Antiviral, Hepatoprotective Stomachic, Digestive, Carminative, anti-inflammatory, anthelmintic, Hoematinic..
USED IN:-Jaundice, Ulcer, Wounds, Healing of fracturc, Anti-leprotic, Cancer, Chronic fever, Elephantitis, Leucoderma, blackening of hairs, useful in digestion, Liver troubles, Anaemia, Cough, Asthma, hypertension, strangury.

प्रचलित नाम- भाङ्गरा/भंगरैया

प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र, बीज तथा मूल।

स्वरूप-वर्षायु लधु क्षुप, प्रसरणशील अनेक शाखाएँ भूमि से उठी हुई, खुरदरी, ग्रंथियाँ प्राय: मूलयुक्त होती हैं। पत्ते अंडाकार या आयताकार, नुकीले एवं विपरीत रहते हैं।

स्वाद-तिक्त/ कषाय।

रासायनिक संगठन-इसमें ग्लूकोसाईड्स-फायटोस्टीरॉल-ए बीटा-एमीरीन, विडेलोलेक्टोन, ल्युटियोलिन, ट्रायटर्पेनिक अम्ल, वसा अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ऑलिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, निकोटिन, एम्पलीप्टीन एल्कलॉयड, एकलिप्टीन तथा रॉल तत्व पाये जाते हैं।

गुण- वामक, शूलहर, उद्वेष्टक, पूतिरोधि, विषाणुघ्न, यकृत संरक्षक, दीपन, पाचन तथा वातानुलोमक।

उपयोग-कामला, व्रण, घाव, अस्थिरोपण, कुष्ठघ्न, कैन्सर, जीर्णज्वर, श्लीपद रोग, श्वित्र, केशकाले करने में, कुपचन, यकृत विकारों, पाण्डुरोग, कास तथा श्वासरोग में लाभकारी। पंचांग का रस एक-दो बूंद मधु के साथ बच्चों की खांसी में लाभकारी। पंचांग का लेप चर्मरोग कुष्ठ, कण्डु, व्रण, इन्द्रलुप्त में लाभकारी। कामला में इसके पंचांग के स्वरस में काली मिरच का चूर्ण मिलाकर सात दिन तक दही के साथ सेवन से लाभ। विसूचिका में पंचांग के स्वरस में सेंधा नमक मिलाकर सेवन से लाभ। पाण्डुरोग में मूल के साथ पंचांग को छाया में सुखाकर इसका चूर्ण एवं इतनी ही मात्रा में मिश्री मिलाकर सेवन से लाभ होता है। स्वर भेद में इसके पंचांग के स्वरस में घी मिलाकर उबालकर, छानकर सेवन से लाभ होता है। अग्निदग्ध व्रण में इसका व्रण ठीक होने के पश्चात् जब सफेद दाग पड़ने लगता है, इसमें भृंगराज एवं काली तुलसी के पत्रों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का स्वरस बार-बार लगाने से श्वित्र जैसा दाग त्वचा पर नहीं पड़ता तथा त्वचा का वर्ण सामान्य हो जाता है। कास एवं श्वास में भृंगराज के दस गुने शुद्ध स्वरस में तिल तैल सिद्ध करके उसका उपयोग योग्य मात्रा में करने से श्वास कास नष्ट होता है।

रसायन के रूप में यदि इसके पंचांग का स्वरस एक मास तक नियमित प्रात:काल एक तोला सेवन किया जाता है तथा केवल दूध के आहार पर रहता है तो मनुष्य स्वस्थ होकर एक सौ वर्ष तक जीवित रह सकता है। इसका मुख्य कारण यह बताया जाता है कि इस के स्वरस में यकृत की क्रिया को सुधारने का परम गुण है। जिसके कारण कामला, यकृतवृद्धि, प्लीहावृद्धि, आर्श, उदररोग आदि विकार नष्ट होते हैं। स्वास्थ्य ठीक होता है, परिणामत: बल-वीर्य की वृद्धि होती है।

श्वेत कुष्ठ (श्वित्र)में एक लोह पात्र में तेल के अंदर भृंगराज के टुकड़े डालकर सेक लेना चाहिए, इन सिके हुए टुकड़ों को पीसकर सेवन कराना चाहिए, ऊपर से विजय सार से सिद्ध किया हुआ क्षीरपाक पिलाना चाहिए।

केशकाले करने के लिये भृंगराज के पुष्प, गुड़हल पुष्प, मेषीदुग्ध-इन सबको खूब सूक्ष्म पीसकर एक लोह पात्र में भरक बंद करके उस पात्र को सात दिन तक जमीन में गाड़ देना चाहिए। सात दिन पश्चात् निकाल कर पुन: भृंगराज स्वरस में भावित कर अच्छी तरह हिलाकर मिश्रित करना चाहिए। इस मिश्रण का सिर पर लेप कर उस पर वस्त्र बाँध देना चाहिए, प्रात:काल जल से सिर प्रक्षालन करना चाहिए, इस प्रकार यह क्रिया कुछ समय तक बार-बार करते रहने से बाल काले हो जाते हैं।

असमय गर्भस्त्राव न हो जाय इसके लिये भृंगराज का स्वरस एवं इतनी ही मात्रा में दूध मिलाकर गर्भवती महिला को पिलाना चाहिए जिससे गर्भस्त्राव नहीं होता।

आमातिसार एवं रक्तातिसार में भृंगराज मूल के सूक्ष्म चूर्ण को जल में मिलाकर गोलियाँ बनानी चाहिए, इन गोलियों का सेवन करने से यह रोग नष्ट होता है।

प्रसव के पश्चात् होने वाले योनिशूल में भृंगराज के मूल तथा बिल्व मूल का सूक्ष्म चूर्ण (समभाग) मधु के साथ मिलाकर प्राशन कराना चाहिए। योनि शूल तुरंत ठीक होता है।

मात्रा- ताजा स्वरस १ से २ चम्मच।

बीज चूर्ण-जीवनीशक्ति एवं शारीरिक क्षमता बढ़ाता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐला Elettaria cardamomum Maton. ZINGIBERACEAE

129

ENGLISH NAME:- Cardamum fruit. Hindi - Chhotielayachi

PARTS-USED:- Dried Fruit and Seed.

DESCRIPTION:- A perennial herb with thick root sotck, leaves large lanceolate, elliptical, sheathing hairybelow. flowers in panicle, from base, white, capsule trilocular

TASTE:-Acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Starch, Volatile oil which Contains Cineol, Terpineol Terpenene, Limonene, Sabinene and Terpineol in the formof Formic acid and Acetic acid It also contains Nitrogenous gum.

ACTIONS:- Cooling Powerful aromatic, Stimulant, Carminative, Stomachic, Analgesic, Refrigerent, Diuretic.

USED IN:-Cough, Asthma, Piles, Tuberculosis, Dysuria, Indigestion, Diarrhoea, Flatulance, Abdominal pain, Nausia, Vomiting, Scabies, Culculii and Throat disorder, urinary disorders

प्रचलित नाम- छोटी इलायची

प्रयोज्य अंग- सूखे फल तथा बीज

स्वरूप-चिरस्थायी बहुवर्षीय क्षुप मूल कांड नीचे से मोटा, भौमिक कांड से हरे रंग के कांड निकलते रहते हैं, जिन पर एकांतरित पत्ते लगे होते हैं। पत्ते एक-दो फूट लम्बे जिसकी नीचली सतह रोमश होती हैं। पुष्प नील लोहिताभ एवं छोटे-छोटे होते हैं। फल हल्के पीले या हरिताभ पीत रंग के होते हैं।

स्वाद-कटु

रासायनिक संगठन-इसके बीज में स्टार्च, उड़नशील तैल जिसमें सिनियॉल, टर्पेनियॉल, टर्पेनिन, लिमोनीन, सेबीनीन जो फोर्मीक अम्ल तथा एसीटिक अम्ल के रूप में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इस में नाइट्रोजीनस गोंद भी पायी जाती है।

गुण-अति सुगंधित, उत्तेजक, वातानुलोमक, दीपन, शूलहर, दाह प्रशमन, मूत्रल।

उपयोग-कास, श्वासरोग, अर्श, यक्ष्मा, मूत्रकृच्छ्र, कुपचन, अतिसार, आध्मान, उदरशूल, वमन, कण्डु, मूत्र अश्मरी, कंठ दोष में लाभकारी।

मूत्र तथा शुक्र रोगों में इलायची तथा सिंकी हुई हींग में दूध तथा घी के साथ सेवन से लाभ होता है।

फल का क्वाथ- उत्कलेश तथा वमन में लाभकारी। तिमिर में इसके बीज के सूक्ष्म चूर्ण में बकरी के मूत्र की तीन भावनाएँ देकर इस चूर्ण को अधिक सूक्ष्म कर आँख में अंजन करने से तिमिर, अल्पदृष्टि तथा पैल्लय जैसे नेत्र रोग ठीक हो जाते हैं। मूत्रकृच्छ्र में इसके बीज का सूक्ष्म चूर्ण आँवले के रस के साथ सेवन कराना चाहिए। या दही के साथ ऐला चूर्ण सेवन कराना चाहिए। या इलायची दाने का चूर्ण मधु के साथ चाटना चाहिए। उदावर्त्त में मधु के साथ ऐला का चूर्ण सेवन करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। हृदय रोग तथा गुल्म में एला का चूर्ण पाँच मि. ग्राम, पिप्पली मूल का चूर्ण पाँच मि.ग्राम घी के साथ चटाने से लाभ होता है। जीर्ण ज्वर एवं सभी प्रकार के ज्वर में इलायची दाने, बेल, पुनर्नवा, दूध तथा जल इन सबको इकट्ठा कर दूध शेष रहे तब तक उबालना चाहिए तथा सेवन करने से सभी प्रकार के ज्वर में लाभ होता है। रक्त प्रदर तथा रक्तमेह में इलायची के दाने, केसर, जायफल, वंशलोचन (बाँसकपूर), नागकेसर तथा शंखजीरा इन छः औषधियों को सम भाग मिलाकर चूर्ण बनाकर रखना चाहिए। प्रतिदिन इसमें से दो माशा चूर्ण, दो माशा मधु, छः माशा गाय का घी तथा तीन माशा मिश्री मिलाकर प्रातः एवं सायं इस प्रकार १४ दिन तक सेवन करना चाहिए। इसके पश्चात् रात को शयन काल समय २५० मि. ली.गरम दूध पीना चाहिए। इसमें गुड़ एवं नारियल का सेवन वर्जित है।

कफ रोग में इलायची के दाने, सैंधव नमक, घी तथा मधु इन सबको इकट्ठा कर सेवन करने से लाभ होता है। मुखगतरोगों में इसके बीजों का चूर्ण तथा फुलाई हुई फिटकरी का चूर्ण एकत्र कर इस मिश्रण को मुँह में रख लार गिरने देना चाहिए, इसके पश्चात् मुँह अच्छी तरह जल से कुल्ला कर साफ कर लेना चाहिए।

सर्वशूल में इलायची के दाने, हींग, सैंधव नमक इनका क्वाथ एरण्ड तेल डालकर सेवन कराना चाहिए । इससे कमर, हृदय, उदर, नाभि, पीठ, मस्तिष्क, कर्ण, नेत्र इन सबका शूल शीघ्र ही ठीक हो जाता है। वमन में इलायची के छिल्के जलाकर इसकी राख को मधु के साथ चटाने से वमन का शमन होता है।

मात्रा–०.५–१ग्राम। चूर्ण–५–१५ रत्ती।

●●●

'जो मुझे भक्ति से पत्र, पुष्प, फल और जल अर्पित करता है, उस नियतचित्त पुरुष की भक्ति की भेंट को मैं आनन्द से ग्रहण करता हूँ।' – गीता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विडङ्ग Embelia ribes Burm. f. MYRSINACEAE.

130

ENGLISH NAME:- Barbreng. Hindi - Mathasuru

PARTS-USED:- Fruit.

DESCRIPTION:- A large scandent shrub, bark rough, branches long thin with long internodes, leaves coriaceous, elliptic lanceolate, flowers white or yellowish light green, minute

TASTE:-Acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contains: Embelinn Quercitol compound, Volatileoil, Tannins, Alkaloids-Christembrine, Embelic acid and Resinoid.

ACTIONS:-Appitizing, Stomachic, Rejuvenator, Nervinetonic, Bloodpurifer Anthelmintic, alterative, Tonic, Anthelmintic

USED IN:-Tapeworms infestation, Skindisease, Dyspepsia, Leprosy, General debility, Toothache, Dentalcarries, Cough, indigestion, Colic, Asthma, Flatulance, Epilepsy, Heartdisease, cephalalgia, insomnia

प्रचलित नाम- वायविडङ्ग

प्रयोज्य अंग- फल

स्वरूप-एक झाड़ीनुमा एवं शीघ्र बढ़ने वाला पौधा, जिसकी छाल खुरदरी, इसकी टहनियाँ लम्बी, पतली तथा लचीली एवं लम्बे पर्व वाली होती है। पत्ते तीक्ष्णाग्र, ऊपर से चमकदार जबकि नीचली सतह रजताभ, सूक्ष्म ग्रंथियों युक्त होते हैं। पुष्प श्वेत या हल्के पीले रंग के तथा फल गोलाकार पकने पर लाल रंग के गुच्छों में आते हैं। यह सूखने पर काले रंग के दिखाई देते हैं।

स्वाद-कटु

रासायनिक संगठन-इसके फल में ऐम्बेलिन, क्वेरसिटोल के यौगिक, उड़नशील तैल, टैनिन्स, एल्केलॉयड्स-क्रिस्टम्ब्रीन, एम्बेलिक अम्ल तथा रेसीनोईड तत्व पाये जाते हैं।

गुण-रुचिकर, दीपन, रसायन, नाड़ी बल्य, रक्तशोधन, कृमिघ्न।

उपयोग-स्फीतकृमि में, चर्मरोग में, अग्निमांद्य, कुष्ठरोग, सामान्य दौर्बल्य, दंतशूल, कास, कुपचन, शूल, श्वासरोग, आध्मान, अपस्मार हृदयरोग में लाभकारी। कृमिरोग में फल का चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ। अरुचि तथा ज्वर में फल का चूर्ण मधु के साथ गोली बनाकर सेवन से लाभ। इसके अतिरिक्त यह गोली खांसी तथा श्वासरोग में भी लाभकारी। रसायन के रूप में विडंग एवं यष्टिमधु का सम भाग चूर्ण शीतल जल से पीना चाहिए। इस प्रकार नियमित प्रातः - सायं चौथाई तोला चूर्ण शीतल जल के साथ एक मास तक लेना चाहिए। आहार में केवल चावल, घी-मूँग तथा आँवले का सेवन करना चाहिए। प्रातः एवं सायं काल का भोजन इसी प्रकार लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का भोजन नहीं लेना चाहिए। इससे अर्श में लाभ होता है, कृमि मर जाते हैं, स्मरण शक्ति

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की वृद्धि होती है। इस तरह का प्रयोग एक-एक मास तक करने से सौ वर्ष की आयुष्य बढ़ती है।

महात्मा झण्डु भट्ट जी ने इस प्रयोग का नाम 'वसंत व्रत' रखा था। अर्धावभेद (आधा शीशी-शिरःशूल) में विडंग तथा काले तिल का सम भाग चूर्ण का नस्य देना चाहिए। कामला में विडंग एवं पिप्पली दोनों को समभाग लेकर जल में पीसकर नस्य तथा अंजन करना चाहिए।

सर्पविष में विडंग मूल को तण्डुलोदक में घिसकर पिलाना चाहिए। इससे सभी प्रकार के भीषण सर्पों का विष उतर जाता है। कृमिघ्न औषधियों में विडंग सर्वश्रेष्ठ है। विडंग एक दिव्य औषधि है, इसके सेवन से पाचन क्रिया सुधरती है, इसी कारण शिशुओं को विडंग का यवकुट्ट चूर्ण दूध में मिलाकर, उबालकर पिलाना लाभकारी।

कृमिरोग में इसका चूर्ण गुड़ मिलाकर सेवन से या मधु मिलाकर सेवन से कृमि नाश होता है। शिशु के निरोगी होने के लिए शिशु एक माह का हो जाये तब तक एक विडंग का चूर्ण मधु के साथ देना चाहिए। इस प्रकार प्रति मास एक-एक विडंग बढ़ाकर खिलाना चाहिए, इससे शिशु को कभी कोई रोग नहीं होगा। अरुचि तथा ज्वर में विडंग तथा मधु की गोली बनाकर मुख में रखनी चाहिए, जिससे अरुचि तथा जीर्ण ज्वर का नाश शीघ्र हो जाता है।

मात्रा-५-१० ग्राम।

www.vicharkrantibooks.org

■■■

'व्योम के नीचे खुला आवास मेरा। ग्रीष्म, वर्षा, शीत का अभ्यास मेरा।।
झेलता मैं मार मारुत की निरन्तर। खेलता यूँ जिन्दगी का खेल हँसकर।।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आमलकी Phyllanthus emblica Linn. Syn. Emblica officinalis Geartn. EUPHORBIACEAE.

131

ENGLISH NAME:-Emblic Myrobalan. Hindi - Aonla

PARTS-USED:- Fruit and Seeds.

DESCRIPTION:- A medium sized tree, leaves small looking like tamarindus leaves, Flowers unisexual creamish yellow & small, fruits : fleshy globose

TASTE:-Sour, Astringent, Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit Contains: Protein, Fats, Fibres, Carbohydrates, Vitamin-C, Nicotinic acid, Tannins; Afterdrying it contains Gallic acid, Ellagic acid and Flavin & Glucose, Seeds Contains: Linoleic acid, Linolenic acid and Oleic acid.

ACTIONS:-Tonic, Diuretic, Astringent, Cooling, Antifungal, Laxative, Liver tonic. Anodyne, carminative, stomachic

USED IN:-Haemorrhage, Diabetes, Polyuria, Headache, Hysteria, Jaundice, Eczema, Disuria, Piles, Diarrhoea, cold, Menorrhagia, Scurvy. dyspepsia, flatulence, menorrhagia.

प्रचलित नाम- आमला-आँवला

प्रयोज्य अंग- फल तथा बीज

स्वरूप-मध्यम कद का वृक्ष, पत्र छोटे जो इमली के पत्तों जैसे दिखाई देते हैं, पुष्प एवं लिंगी, बादामी पीतवर्णी तथा छोटे-छोटे होते हैं। फल डालियों में से सटे, गोल चमकदार तथा छः रेखाओं से युक्त होते हैं। कच्चे फल हरे, पकने पर पीले, सूखने पर काले रंग के हो जाते हैं।

स्वाद-अम्ल, कषाय, मधुर।

रासायनिक संगठन-इसके फल में प्रोटीन, वसा, रेशा, कार्बोदित, विटामिन-सी, निकोटीनक अम्ल, टैनिन्स, फल के सूखने पर इसमें गैलिक अम्ल इलैजिक अम्ल तथा फलेवीन एवं ग्लूकोज़ पाये जाते हैं। इसके बीज में लिनोलिक अम्ल, लिनोलेनिक अम्ल तथा ऑलिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-बल्य, मूत्रल, ग्राही, शीतल, फफूंदी नाशक, मृदुरेचन, यकृतबल्य।

उपयोग-रक्त स्राव, मधुमेह, प्रमेह, शिरःशूल, मूर्छा, कामला, खाज-खुजली, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, अतिसार, प्रतिश्याय, अत्यार्त्तव तथा प्रशीताद (मलेरिया) रोग में लाभकारी। मुखव्रण में पत्रों का क्वाथ लाभकारी। आँवला चूर्ण तथा हल्दीचूर्ण मधुमेह में लाभकारी (भोजन पश्चात् एक चम्मच सेवन)। प्रमेह में सूखे आंवले के चूर्ण का क्वाथ बनाकर उसमें दो ग्राम हल्दी का चूर्ण एवं मधु मिलाकर सेवन से लाभ। स्वर भेद में-गाय के दूध में आंवले का चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ। पित्त में सूखे आंवले का चूर्ण इससे दुगुनी शर्करा तथा इससे भी दुगना घी मिलाकर इसके सेवन से लाभ। मूत्रकृच्छ्र में आँवले के ताजे फल का रस तथा गन्ने का रस मिलकार सेवन से लाभ। योनिदाह में- आंवले के फल के रस में मिश्री मिलाकर सेवन से लाभ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुक्रवृद्धि के लिये ताजे आंवले के फल का रस-इसमें गाय का घी मिलाकर सेवन से लाभ। वृद्धत्व दूर करने के लिये-सूखे आंवले का चूर्ण तथा तिल का चूर्ण समभाग में मिलाकर घी तथा मधु के साथ २० दिन तक सेवन से लाभ होता है। पित शूल में-सूखे आंवले का चूर्ण मधु में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। ज्वर में ज्वर के जिस रोगी को निद्रा तथा प्रस्वेद न आता हो एवं तृषा छिपती न हो, उसको आँवले तथा अदरख की पेया घृत एवं मिश्री मिलाकर देनी चाहिए। ज्वर में आँवले के रस में घी का छौंक देकर सेवन करने से ज्वर नष्ट हो जाता है। रक्तार्श में आँवले के रस में दही के ऊपर की मलाई मिलाकर सेवन कराना चाहिए। श्वेत प्रदर में (१) आँवले के बीज के चूर्ण में मधु तथा मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिए। (२) आँवले का चूर्ण या रस में मधु मिलाकर सेवन करना चाहिए। रक्त पित्त में आँवले के स्वरस में या चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन करना चाहिए। इसमें स्वरस विशेष लाभकारी है। नेत्रों में तिमिर-अल्पदृष्टि में आमलकी चूर्ण, रसवंती चूर्ण, मधु एवं घृत में सिद्ध की हुई रस क्रिया का अंजन करवाना चाहिए, इससे नेत्र पटल एवं तिमिर रोग ठीक हो जाते हैं। मूत्रकृच्छ्र में पीड़ा होती हो तो आँवले का स्वरस १६ तोला पिलाना चाहिए, मूत्र होकर शूल तुरंत ठीक हो जाता है। कास में दूध में उबाला आँवले का चूर्ण घृत मिलाकर सेवन कराना चाहिए। प्रमेह में देह शुद्धि करवा कर आँवले के रस के साथ हरिद्रा चूर्ण एवं मधु मिलाकर सेवन कराना चाहिए। वाजीकरण के लिये आँवले के चूर्ण में आँवले के रस की २१ भावनाएँ देनी चाहिए, इस चूर्ण में से १/४ तोला प्रतिदिन प्रातः सायं मिश्री तथा मधु के साथ चटा कर ऊपर से दूध पिलाना चाहिए। इससे ८० वर्ष का वृद्ध युवक के समान काम-क्रीड़ा में प्रवृत्त हो सकता है। पाण्डुरोग में आँवले का रस तथा इक्षु का रस मधु के साथ मिलाकर रोगी को पिलाना चाहिए। मूर्छा में आँवले के स्वरस से सिद्ध किया हुआ घृत मधु के साथ सेवन कराना चाहिए। रक्त प्रदर में आँवले का चूर्ण मधु एवं मिश्री के साथ चटाना चाहिए या जल के साथ पिलाना चाहिए। मसूरिका में आँवले का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन कराना चाहिए। **मात्रा**-फल का चूर्ण ३-१० ग्राम प्रतिदिन दो बार-प्रातः एवं सायं। फल का ताजा रस-२५ मि.ली. प्रतिदिन दो बार-प्रातः एवं सायं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लौकाट Erioborya japonica Linn. ROSACEAE.

ENGLISH NAME:- Lokate. Hindi - Lukad

132

PARTS-USED:- Fruit.

DESCRIPTION- A small to medium sized tree, Leaves are hard coriaceous densly wooly sub-sessile Flowers dull white.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Ripe Fruit Contains: Sucrose, Leavulose, Mallic acid, Amygdolin in pericarp of unripe fruit.

ACTIONS:-Expectorant.

USED IN:-Ripe fruit is considered sedative and usful in vomiting and Thirst, Infusion of leaves is useful in diarrhoea.

प्रचलित नाम- लुगाठ

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप-एक लघु से मध्यम कद का वृक्ष, पत्ते कठिन खुरदरे घनिष्ठ रोमश युक्त, उपवन्ती, पुष्प मटमैले श्वेत होते हैं।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन-इसके पके फल में सुक्रोज़, लिव्युलोज, मैलीक अम्ल, कच्चे फल के बाह्य फलावरण में एमीग्डोलीन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-कफ नि:सारक।

उपयोग-पके हुए फल शामक गुण वाले, इसका उपयोग वमन में, तृषा में लाभकारी। पत्रों का फांट अतिसार में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Moonbeam/East Indian Roseby Hindi - Chandni
PARTS-USED:- Root, Root bark Wood, Leaves and Flowers.
DESCRIPTION:- A dichotomously much branched shrub, about 2-3 meter high with milky latex & white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Citric, oleic, Palmitic acids; Leaves, Stem and Roots Contain: Dregamine, Epiervatamine, Tabernaemontanine, Vobasine, Voaconjine, Voacamine, Flavonoid, Flavonol (Glycoside); Flowers Contain: Janetine, Hecubine, kaempferol; Stem bark contains: Alpha-Amyrin, Lupeol Beta-sitosterol, Coronaridine, Apparicine, Ervaticine, Ervatinine, Latex Contains: Enzymes, Amino acids, Proteins and Galactose.
ACTIONS:-Cooling, Refrigerant.
USED IN:-Flower Juice in Visual defects, Anti dotal, Mental disorder, Insanity, Fearpsychosis, Cures eye sores, skin disease; Leaves: Milky juice applied to wounds to prevent in flammation and used in opthalmia; Root bark: Anthelmintic.

प्रचलित नाम- चांदनी

प्रयोज्य अंग- मूल, मूल की छाल, काष्ठ, पत्र तथा पुष्प।

स्वरूप-अधिक बार दिशाखीत क्षुप लगभग २-३ मीटर ऊँचा जिसमें सफेद दुग्ध रस होता है। पत्ते सरल अभिमुखी, अग्रभाग नोकदार, गहरे हरे रंग के होते हैं। पुष्प दूध जैसे श्वेत चांदनी बिखेरते हुए रात्रि समय सुगंधित होता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके बीज में सिट्रिक अम्ल, ऑलिक, पामीटिक अम्ल, इसके पत्र, कांड एवं फल में-ड्रै गामाईन, ऐपीइखाटामाइन, टेबरनीमोन्टानीन, वोबासीन, बोआकेनजीन, वोऐकामिन, फलेवेनोइड, फलवोनोल (ग्लायको-साइड) इसके पुष्प में जैनेटीन, हैक्युबिन, कम्फरॉल, कांड की छाल में आल्फा-ऐमिरीन, ल्युपियॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, कोरोनेडरीडीन, ऐपेरीसिन, इरवेटीसिन इरवेटीनीन, इसके क्षीर में उत्सेचक, एमीनो अम्ल, प्रोटीन तथा गैलेक्टोज़ घटक पाये जाते हैं।

गुण-शीतल तथा दाह, प्रशामक।

उपयोग-पुष्प स्वरस- दृष्टिविकारों, दाह प्रशामक, मानसिक विकारों में, उन्माद, मानसिक भय, नेत्रव्रण में, चर्मरोग में, विषघ्न, पत्रों का दुग्धक्षीर बाह्य प्रयोग घाव, दाहशमन के लिये तथा नेत्रशोथ में लाभकारी। मूल की छाल कृमिघ्न। इसके मूल कडुवे तथा दाहक होते हैं, यह वेदनाहर होने के कारण इसका प्रयोग दंतशूल में किया जाता है। कृमिरोग में इसके मूल को जल में घिसकर इस जल के सेवन से कृमि नाश होते हैं। नेत्रशोथ में इसके पुष्पों के रस को तेल में मिलाकर नेत्रों में अंजन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चर्मरोग में भी इसका बाह्य प्रयोग किया जाता है। घाव में इसमें से निकलते दूध जैसे रस का प्रयोग घाव में लगाने या भरने से शीघ्र ही रूझ आ जाती है तथा घाव नहीं पकता। इसके पत्र तथा दुग्ध क्षीर रेचक गुण वाले होते हैं। जबकि इसके बीज नशाकारक होने के कारण निद्रा जनक एवं रेचक होते हैं तथा विषैले होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिभद्र Syn : Erythrina indica Lam. Erythrina variegata Linn.

FABACEAE.(LEGUMINOSAE)

134

ENGLISH NAME:- Coral Tree. Hindi - Hadua

PARTS-USED:-Leaves and Bark.

DESCRIPTION:- A medium sized tree, stem and branches with coloured conical prickles, leaves trifoliate Flowers large, dark red. papilionaceous, pod 15-30 cm. seeds oblong red, dark purple

TASTE:-Acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS-Bark Contains: A bitter Erytherine alkaloid & Resins, Leaves also contain Erytherine, alkaloid.

ACTIONS:-Bark: Astringant, Antipyretic, Tonic, Anthelmintic, Anti-inflammatory. Leaves: Diuretic, Laxative, Anti- inflammatory. sedative, vulnerary, carminative, antibilious, rejuvinative

USED IN:-Bark is used in: Fever, Blood dysentery, Conjectivitis, Tranquilising effect, Leaves are useful in fever, Disuria and in Worms, also in Wound healing, Earache, Dentalpain, dyspepsia, colic, insomnia

प्रचलित नाम- फरहद/पांगारा

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं छाल।

स्वाद-कटु

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में एक तिक्त ऐरीथेराइन क्षारभ तथा दो प्रकार के राल पाये जाते हैं। इसके पत्रों में भी उपरोक्त ऐरीथेराईन एलकेलॉयड पाया जाता है।

गुण-ग्राही, ज्वरघ्न, बल्य, कृमिघ्न, शोथहर, इसके पत्र मूत्रल, मृदुरेचन तथा शोथहर।

उपयोग-छाल का प्रयोग ज्वर, रक्तयुक्त आंव, नेत्राभिष्यंद, निद्रा लाने के लिये इसका प्रयोग लाभकारी। इसके पत्र फिरंग, ज्वर, अनार्त्तव, कष्टार्त्तव, मूत्रकृच्छ्र तथा कृमिनाश करने में लाभकारी। इसके अतिरिक्त व्रणरोपण, कर्णशूल दंतशूल में लाभकारी। पत्रों का लेप शोथ, व्रण, संधि पीड़ा में लाभकारी। पत्रों का क्वाथ नारियल के दूध में पत्रों को उबालकर इसका क्वाथ प्रसूता को पिलाने से आर्तव शुद्धि एवं दुग्ध वृद्धि होती है।

मात्रा-छाल का क्वाथ- ५-१० मि.ली।

पत्र स्वरस- एक से दो मि.ली.।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वज्रकण्टक Euphorbia antiquorum Linn. EUPHORBIACEAE.

135

ENGLISH NAME:- Triaugular sponge. Hindi - Thuar
PARTS-USED:- Whole plant, Root, Bark, Stem.
DESCRIPTION:- An erect, fleshy, glabrous, shrub or small tree like, branches triangular.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Euphol, Taraxerol, Epifriedelanol, Friedelan; Latex contains: Beta-Amyrin, Antiquorin, Cycloartenol, alpha-Euphorbol, Euphadienol.
ACTIONS:-Emetic, Irritant, Purgative, Stomachic, Expactorant, Antipyretic Blood purifier.
USED IN:-Burning sensation, skindisease, Flatulance Ascitis; Latex: Externally applied in Rheumatism, Skindiseases, Ulcer, Toothach; Stem decoction in Gout, Nervous diseases and useful in Leucoderma Leprosy Polyuria, Anaemia, Piles, Calculii, Jaundice, Snake poision.

प्रचलित नाम- तिधारा थूहर /तिधारा सेंहुड
प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, छाल, कांड।
स्वरूप-एक उन्नत, मांसल, चिकना क्षुप या लघु वृक्ष जैसा जो औसतन १२-१५ फीट ऊँचा होता है। शाखाएँ त्रिकोणक इन पर कंटकी मूल छोटे-छोटे उपपत्र होते हैं। पत्ते छोटे-छोटे होते हैं। पुष्प लाल रंग के होते हैं।
स्वाद-तिक्त
रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में युफोल, टैरेक्सेरॉल, एपिफ्रेडीलैनॉल, फ्रेडीलॉन, इसके क्षीर में वीटा-एमिरीन, एन्टीक्वोरीन, सायक्लो आरटीनॉल, आल्फा-युफोरबोल, युफेडीनॉल तत्त्व पाये जाते हैं
गुण-वामक, ज्वलनशील, अतिरेचन, दीपन, कफघ्न, ज्वरघ्न, रक्तशोधन।
उपयोग-दाह में, चर्मरोगों, आध्मान, जलोदर, दुग्ध क्षीर का बाह्य प्रयोग-आमवात, चर्मरोगों में, व्रण तथा दंतशूल में लाभकारी। कांड का क्वाथ, वातरक्त, नाड़ीरोगों में, श्वित्र, कुष्ठरोग में, प्रमेह, पाण्डुरोग, अर्श, मूत्र अश्मरी, कामला, सर्प विष में लाभकारी। मूल की छाल-अतिरेचक। दुग्धक्षीर को गुड़ के साथ मिलाकर सेवन से-कास, श्वास, यक्ष्मा तथा हृदयरोग में लाभदायक। मूल का क्वाथ- जीर्ण आमवात में लाभकारी। दुग्ध का बाह्य प्रयोग- दंतशूल, मस्से तथा आमवातिक पीड़ा में लाभ होता है।
मात्रा-कांड का स्वरस (बच्चों को)- डेढ़ से तीन माशा।
प्रौढ़ों को- डेढ़ से दो तोला।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुग्धिका Euphorbia hirta Linn Syn E. pilulifera Linn. EUPHORBIACEAE.

136

ENGLISH NAME:- Milk weed.
PARTS-USED:- Whole plant.
DESCRIPTION:- A small annual prostrate herb with ascending and tetragonal branches, hispid with yellow hairs.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Quercetin, Triacentane, Ellagic acid, Phenolic substance, Euphosterol, Phytosterol, Phytosterolin, Gallic, Mellistic, Palmitic, Oleic, Linoleica cids; Zanthorhamnin wax, Cautchouc, Chlorophyll, Resin, Tannins, Sugar, Mucilage, Carbohydrates, Albuminoids, Catchin, Oxalate.
ACTIONS:-Astringent, Expectorant, Lactagogue, Diuretic.
USED IN:-Intestinal worms in children, Bowel complaints, Cough, useful to nursing mothers When the milk formulation is stops or deficient also usedful in Leucoderma, Bronchial Asthma, Blood dysentery & Colic.

प्रचलित नाम- दुध्दी

प्रयोज्य अंग-पंचांग।

स्वरूप-वर्षायु प्रसरणशील छोटा क्षुप शाखाएँ उन्नत तथा चतुष्कोणक, कठिन रोमश, रोम पीतवर्णी पत्ते अभिमुखी, दंतुर संकुचित अथवा तीक्ष्णाग्र होते हैं। इस को तोड़ने पर सफेद दुग्ध क्षीर निकलता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में क्वेरसेटिन, ट्रायसेन्टेन, इलैजिक अम्ल, फनोलिक पदार्थ, युफोस्टीरॉल, फायटोस्टीरॉल, फायटोस्टेरोलिन, गैलिक, मैलीस्टीक, पामीटिक, ऑलिक तथा लिनोलिक अम्ल, झैन्थोरहामनिन मोम, कौचाऊक, क्लोरोफिल, रॉल, टैनिन्स, शर्करा, श्लेष्मल, कार्बोदित एल्बुमिनोइड्स, कैटचीन, ओकसेलेट तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, कफ नि:सारक, दुग्धवर्धक, मूत्रल।

उपयोग-बच्चों के आंतकृमियों में, आंत्र विकारों, कास, स्तनपान कराती माताओं में जब दूध की कमी अथवा दुग्ध निर्माण बंद हो जाने पर इसका सेवन लाभकारी। इसका प्रयोग श्वित्र, तमक श्वास, रक्त आंव, शूल में लाभकारी। दुग्धक्षीर-चर्मकील तथा दद्रु पर लगाने से लाभ। जड़ का प्रयोग-वमन रोकने के लिये अत्यंत लाभकारी। पंचांग स्वरस तमक श्वास तथा कफ विकारों में लाभकारी। दद्रु पर दाद पर पहले सूखे कण्डे से खूब घिस कर अच्छी तरह खुजला देना चाहिए तथा फिर उस पर दुग्धिका का स्वरस का लेप कर देना चाहिए। विस्फोटक में एरण्ड बीज की मींगी तथा दुग्धिका के स्वरस दोनों को मिलाकर सूक्ष्म पीसकर विस्फोट पर लेप करना चाहिए। दंतकृमि में इसके मूल को दांतों के नीचे रखकर अच्छी तरह चबाना चाहिए; इससे दंत कृमि

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नष्ट हो जाते हैं। श्वास रोग में यह वनौषधि बहुत ही लाभकारी है, ५-१० पत्रों का या इतने ही पौधों का स्वरस निकाल कर इसमें मधु मिलाकर सेवन से कफ मुक्त होकर बाहर निकल जाता है।

दाहयुक्त हरस (अर्श) में पंचांग के स्वरस में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। इसके पंचांग के स्वरस तथा कनेर के पत्रों के स्वरस को मिलाकर सिर के गंज पर घिसने से बाल सफेद होना बंद होकर गंजापन दूर होता है।

रक्त मिश्रित मरोड़ (प्रवाहिका) तथा उदरशूल में इसके पंचांग का स्वरस मधु के साथ मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

मात्रा-पंचांग स्वरस- १०-२० बूंद।

शुष्क चूर्ण- २-४ मि.ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

महाभारत काल में नकुल द्वारा घोड़ों की चिकित्सा में नीम के उपयोग का उल्लेख मिलता है। गार्सियाद और्टा (१५६३) ने घोड़ों के जख्मों की चिकित्सा में अपना अनुभव इस प्रकार लिखा है- जिन जातियों से मैं परिचित हूँ उनमें से एक अति प्रसिद्ध उपयोगी तथा चिकित्सा के काम का वृक्ष है, जिसे निम्बी कहते हैं। बालाघाट में मैंने इसके गुणों को जाना था, क्योंकि वहाँ मैंने इससे घोड़ों के पीठ के घावों को ठीक करने में सफलता प्राप्त की थी। इन जख्मों को साफ करना और ठीक करना बहुत कठिन था। ये घाव बड़ी शीघ्रता से साफ हो गये और घोड़े जल्दी ठीक हो गये थे। इन्हें पीसकर नींबू के रस में मिलाकर जख्मों पर रख दिया गया था। -गार्सिया द और्टा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेंहुड Euphorbia neriifolia Linn. EUPHORBIACEAE.

ENGLISH NAME:- Milk Hedge. Hindi - Sehund
PARTS-USED:- Roots, stem and Leaves.
DESCRIPTION:- A large fleshy much branched shrub, 10-15 feet high, branches are verticillate and spiny.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Euphol, Taraxerol, Friedelan; Resin, Gum, Bark Contains: n-Hexacosonol, Euphorbol, Hexacosanoate, Pelargonine, Diglusoside, Euphorbin; Root Bark; Methylene cycloartenol and Tulipanin 3-5 diglucoside.
ACTIONS:-Purgative, Expectorant, Gastric stimulant, Diuretic, Stimulant, Spasmolytic.
USED IN:-Colicpain, Flatulance, Ascites, Insanity, Skindiseases, Piles, Oedema, Urinary Calculii Anaemia, inflammation due to ulcer, Fever, spleenomegaly, Latex in skin diseses, Ascites and Piles.

प्रचलित नाम- थूहर

प्रयोज्य अंग-मूल, कांड तथा पत्र।

स्वरूप-अतिशाखीत, मांसल, १०-१५ फूट ऊँचा क्षुप, शाखाएँ चक्रों में तथा कंटकी एवं मांसल होती हैं। उपपत्र कंटकी भूत, शाखाओं के अंत में चारों ओर से गुच्छे कार पत्ते होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे हरापन लिये पीले होते हैं। इसके किसी भी अंग को तोड़ने से दुग्ध रस निकलता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में युफोल, टैरेक्सेरॉल, फैडीलान, राल गोंद, छाल में-हेक्साकोसोनोल, युफोरबोल, हेक्साकोसानाऐट, पेलारगोनिन, डायग्लुकोसाइड, युफोरबीन, मूल की छाल में-मिथाइलीन, सायक्लोआरटेनोल तथा टयुलीपेनीन-३, ५ डायग्लुकोसाइड तत्व पाये जाते हैं।

गुण-अतिरेचन, कफ नि:सारक, अमाशय, उत्तेजक, मूत्रल, उद्वेष्टननिरोधी।

उपयोग-आंत्रशूल, आध्मान, उन्माद, चर्मरोगों में, अर्श, शोथ, मूत्राशय, अश्मरी, पाण्डुरोग, व्रण के कारण होने वाले शोथ में, ज्वर, प्लीहावृद्धि में लाभकारी।

क्षीर का प्रयोग चर्मरोगों में, जलोदर तथा अर्श में लाभकारी। क्षीर उदररोग में लाभकारी (काली मिरच को क्षीर में भिगोकर तथा सुखाकर) इसका दुग्धरस, कर्णशूल तथा त्वचा पर होने वाले फोड़े-फुन्सियों पर लगाने से लाभ। तमक श्वास में पत्रों का स्वरस या कांड का रस मधु के साथ देने से लाभ। व्रण में क्षीर को घी के साथ मिलाकर लगाने से लाभ। सेहुण्ड का दुग्ध एक अच्छा रेचक तथा वामक है।

इसका प्रयोग कैप्स्युल में भरकर करना चाहिए।

जलंद जैसे रोग में जब शौच सख्त हो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गया हो तथा रेचन न होता हो, ऐसे समय तब इसके दुग्ध का प्रयोग (५-१० बूंद) शरबत में मिलाकर सेवन करने से रेचन होता है या एक पापड़ पर इसके दुग्ध की ३-४ लाइन कर, इसको अग्नि पर सेक कर खाने से ३-४ बार शौच हो जाता है।

जलोदर में सेहुण्ड के पत्रों का बिना नमक के शाक बना कर सेवन कराना चाहिए। सेहुण्ड के दुग्ध की लींडी पीपर के चूर्ण की २१ भावनाएँ देकर, इस पीपर का प्रयोग करने से जलंदर ठीक होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा रेचन अच्छा लगता है। पैरों की एड़ियाँ फट गयी हो तो सेहुण्ड का चार तोला दुग्ध एक तोला तिल का तेल तथा थोड़ा सा सैन्धव मिलाकर गरम कर समग्र दुग्ध जला कर केवल तेल रह जाये, तो इसको फटे हुए हिस्सों में भर देने से लाभ होता है।

मात्रा-मूल का चूर्ण- आधे से एक ग्राम।
कांड का स्वरस-५-१० मि.ली.।
क्षीर- १२५ से २५० मि.ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'निम्बफलं रसे तिक्तं पाके तु कटुमेदनम्। स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्श: कृमि मेघुत्॥'
अर्थात्-नीम का फल रस में तिक्त तथा पाक में कटु मल का भेदन करने वाला (कब्ज तोड़ने वाला) स्निग्ध लघु, उष्णवीर्य, कुष्ठ, गुल्म बवासीर, कृमि तथा प्रमेह का नाशक होता है।- भाव प्रकाश निघण्टु

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शातला Euphorbia tirucalli Linn. EUPHORBIACEAE.

138

ENGLISH NAME:- Milk Bush. Hindi - Thuhar

PARTS-USED:- Root stem, Latex & Bark.

DESCRIPTION:- Erect unarmed shrubor small tree 12-20 feet high, sub-branches are green and glabrous cylindrical verticillate with milkylatex.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Stem and latex Contain: Beta- sterol, Taraxerol; Bark and Root: Euphorbol, Hexacosanoate, Taraxerone, Ingenol, Triacetate, Euphorginol, Stem: Ellagic acid, kaempferol, Compestrol, Stigma-sterol; Latex; alpha-Amyrin, Cycloeuphordenol, Euphol, Euphorbinol, Tirucallol, Palmitic acid.

ACTIONS:-Milky Juice is Emetic, Purgative, Rubefacient.

USED IN:-Milky Juice in: Oedema, Consti pation, Dyscrasia, Cough, Earache, Toothache; Root useful in Colic.

प्रचलित नाम- अंगुलिया थूहर

प्रयोज्य अंग- मूल, कांड, क्षीर (दुग्ध) छाल।

स्वरूप-अशाखित उन्नत क्षुप या लघु वृक्ष जैसा तथा २०-२० फूट ऊँचा, इसकी उपशाखाएँ हरी तथा चिकनी, गोल, चमकीली चक्राकार पतली होती है। इन पर काँटे नहीं होते। इन पर केवल वर्षा ऋतु में छोटे-छोटे पत्र देखे जाते हैं। इसके किसी भी अंग को तोड़ने से दूध जैसा क्षीर निकलता है।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-इसके कांड तथा दुग्ध में बीटा-स्टीरॉल, टैरेक्सेरॉल, छाल तथा मूल में युफोरबॉल, हेक्साकोसानोऐट, टैरेक्सेरॉन, इन्जीनॉल, ट्रायऐसीटेट, युफोरजीनॉल, इसके कांड में एलैजिक अम्ल, किम्फरोल, कम्पेस्टरॉल, स्टीग्मा-स्टीरॉल, इसके दुग्ध में आल्फा - एमिरिन, सायक्लोयुफोरडे - नोल,युफोल, युफोरबी नॉल,टिरुकैलॉल तथा पामीटिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-दुग्ध स्वरस-वामक, अतिरेचक, रक्तोत्वलेशम (जिनके लेप से रक्त संचय के कारण त्वचा लाल होती है।)

उपयोग-दुग्ध स्वरस शोथ, विबंध, रक्त दोष, कास, कर्णशूल, दंतशूल, इसके मूल शूल में लाभकारी। खांसी में इसका दुग्धक्षीर मक्खन में मिलाकर आयु के अनुसार सेवन (तीन माशा), वमन होगा बाद में दही चावल देना चाहिये। नाड़ी शूल एवं संधि पीड़ा में-इसके दुग्ध का प्रयोग लाभकारी। दुग्ध के प्रयोग से मस्से गलकर गिर जाते हैं। इसके कोमल कांड का क्वाथ उदरशूल में लाभकारी।

मात्रा-दुग्ध-एक से दो रत्ती।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मखान्न/पद्म बीजाभ Euryale ferox Salisb. NYMPHAEACEAE.

139

ENGLISH NAME:- Gorgon Fruit Hindi - Makhana

PARTS-USED:-Fruits.

DESCRIPTION:- An Aquatic spiny herb. Leaves orbicular 1-4 feeet indiameter, upper surface greenish and lower surtace red or purple; Spines on Veins. Flowers green out side and red in side; 1-2 inch long. Fruits spiny with blackish seeds.

TASTE:-Sweet

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains:- Protein, Corbohydrates, Iron, Phosphorus, Corotene.

ACTIONS:-Tonic, Astringent, Aphrodisiac, Styptic.

USED IN:- Roasted seeds are useful for women in debility after delivery; Spermatorrhoea, Heart disease, Cough, Asthma.

प्रचलित नाम- मखाना

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप-जलीय कांटेदार क्षुप, पत्र गोलाकार, १-४ फीट घेरे में ऊपरी सतह हरितवर्णी जबकि नीचली सहत लाल या बैंगनी रंग की तथा शिराओं पर कांटे होते हैं। पुष्प १-२ इंच लम्बे, बाहर से हरे एवं अन्दर से लाल रंग के। फल कांटेदार तथा इसके अंदर काले रंग के बीज होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके बीजों में प्रोटीन, कार्बोदित, लोह, फोस्फोरस, केरोटिन पाये जाते हैं।

गुण-बल्य, ग्राही, वाजीकर, स्तम्भक।

उपयोग-भूने हुए बीज महिलाओं को प्रसव के पश्चात् होने वाले दौर्बल्य में शुक्रस्राव, वीर्याल्पता में इसका प्रयोग लाभकारी है। त्रिदोष विकारों में, विशेष रूप से वात, पित्तज विकारों में संग्रहणी में, हृदय रोग, कास, श्वास रोग में लाभकारी। इसके भूने हुए बीजों का मखाना कहा जाता है, यह सुपाच्य होने से आहार के रूप में इसका सेवन किया जाता है। इसका सेवन दूध में पकाकर खीर के रूप में भी किया जाता है।

मात्रा- आधा से एक तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विष्णु क्रान्ता Evolvulus alsinoides Linn. CONVOLVULACEAE.

140

ENGLISH NAME:- Blue shankhpushpi.Hindi - Neelishankh Puspi

PARTS-USED:- Whole plant.

DESCRIPTION:- A small Prostrate beautiful herb, allparts covered with soft hairs Flowers bright blue.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Yellow fattyelements, Minerals, Organic acid and Saline.

ACTIONS:-Brain tonic, stomachic, Rejuvenator, Appitizing.

USED IN:-Mental disorder, Insanity, Epilepsy, Disuria, Sexual debility, Chronic cough, Asthma, Haemorrhage, Blood vomiting.

प्रचलित नाम- नील शंखपुष्पी

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-प्रसरण शील एक छोटा सुन्दर क्षुप, इसके सभी अंग रोमश, (मृदुरोम आच्छादित) इसके मूल के ऊपर से ४-१५ इंच लम्बी शाखाएँ निकल कर जमीन पर चारों ओर प्रसरी होती हैं। पत्ते अखण्ड मृदुरोमों से आच्छादित होते हैं। पुष्प चमकीले नीले रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में पीत वसा तत्त्व, क्षारज तत्त्व, ऑरगेनिक अम्ल तथा सेलाइन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-मेध्य, दीपन, रसायन, रुचिकर।

उपयोग-मानसिक रोग, उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा रोग तथा भ्रम एवं विष में, शुक्रदौर्बल्य तथा गर्भाशय दौर्बल्य, जीर्णकास, श्वासरोग, रक्तस्राव तथा रक्त वमन में लाभदायक। जीर्ण कास तथा श्वासरोग में पत्रों का धूम्रपान लाभकारी। जड़ का प्रयोग इसके सेवन से गुल्म तथा आनाह से दस्त साफ होकर शारीरिक विष निकल जाता है। ताजे पंचांग का स्वरस उन्माद में दो से चार तोला सेवन से लाभ। पंचांग का फांट इसको जीरक तथा दूध के साथ देने से ज्वर में निद्रा के लिये लाभ होता है। फांट- चार से आठ ग्राम। वमन में इसके पंचांग का स्वरस तीन तोला तथा मधु एवं काली मरिच (चूर्ण) मिलाकर सेवन कराना चाहिए। उन्माद तथा अपस्मार में इसके पंचांग के स्वरस में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। जलशोथ में इसके मूल के स्वरस के सेवन से वमन होकर सूजन उतर जाती है। सर्वप्रकार के गण्ड पर इसके पत्रों तथा अतिबला के पत्रों को पीसकर (कांजी में) लेप करना चाहिए।

जीर्णकामला में इसके मूल को छाछ में डालकर पिलाने से लाभ होता है। रक्त मूल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्याधि में इसके मूल के रस में घी मिलाकर पिलाना चाहिए तथा इसके पत्रों के वड़े बनाकर रोगग्रस्त भाग पर लगाकर पट्टी बाँधने से लाभ होता है। अपस्मार तथा कण्ठमाल में इसके पंचांग का चूर्ण २०-३० ग्राम प्रतिदिन सेवन करने से लाभ होता है। मेध्य होने के कारण गर्मियों में ब्राह्मी के साथ ठंडाई की तरह घोटकर सेवन करना चाहिए। जबकि शरद ऋतु में इसके पंचांग का चूर्ण दूध के साथ सेवन करना अतिलाभदायक तथा दिमाग को ताकत देता है। इसके पत्र सुगंधित व स्वादिष्ट होने के कारण इसका शाक भी बना कर खाने से आंतों को शक्ति प्रदान करता है। इस वनौषधि कां मुख्य गुण मलेरिया ज्वर नाशक है। ज्वर आने से दो घंटे पूर्ण पाँच ग्राम पंचांग को पीसकर पान में रख कर खिला दें, आशा है ज्वर नहीं चढ़ेगा या ज्वर चढ़ने से कुछ मिनिट पूर्व ही इतनी ही मात्रा पान में रख कर फिर खिला दें, ज्वर नहीं चढ़ेगा, यदि ज्वर चढ़ भी गया, तो फिर अगली बारी के दिन इसी प्रकार फिर खिला दें, निश्चय ही ज्वर रूक जायेगा। इस वनौषधि का सेवन पान के स्थान पर चाय अथवा जल से भी किया जा सकता है। ज्वर में देने से पसीना आ कर उतर जाता है।

मात्रा- स्वरस- २-४ ग्राम,
चूर्ण- ३-६ मि.ग्राम।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

●●●

'किसी समस्या को हल करने के लिए उसे अधिकाधिक या जितने अंगों में संभव हो बाँट लेना चाहिए। इससे समस्या का हल सरल हो जाता है।' -रेनेदेकार्त (फ्रेंच दार्शनिक, आधुनिक दर्शन का जन्मदाता)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कपिर्त्थ/कपिप्रिय Syn : Feronia elephantum Correa. Feronia limonia (Linn.) Swingle RUTACEAE.

141

ENGLISH NAME:- Wood Apple. Hindi - Kaith

PARTS-USED:- Leaves[Fruits and Gum.

DESCRIPTION:- A large deciduous tree, armed with spines, leaves are imparipinnate compound, leaflets small, shining, green glandular petiole and rachis flat, flower slightly red, fruits hard and globose a berry amphisarca, grey filled with white pulp, edible.

Taste:-Sour.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains: Ribof lavine, Vitamin-c, Pectin, Iron and Phosphorus, Leaves Countain: Volatile oil which contains: Estragol.

Actions:-Sour, Astringent, Anti thirst, Stomachic, Carminative (Leaves) Anti scorbutic, Wound healing.

USED IN:-Fruit is used in: Diarrhoea, Dysentery, Scorbutic, Gum is useful in Colic; Leaves are useful in indigestion of children.

प्रचलित नाम-कैथ

प्रयोज्य अंग- पत्र, फल तथा गोंद

स्वरूप-विशाल वृक्ष जिस पर सीधे कांटे होते हैं। इसके पत्ते संयुक्त, पत्रक छोटे-छोटे अंडाकार के होते हैं, पुष्प हल्के लाल रंग के, फल गोल तथा इनका छिलका कठोर होता है।

स्वाद-आम्ल।

रासायनिक संगठन- इसके फल में राइबोफलेविन, विटामिन-सी पेक्टीन, लोह तथा फोस्फोरस खनिज तत्व पाये जाते हैं। इसके पत्रों में उड़नशील तैल जिसमें एस्ट्रागॉल होता है।

गुण-आम्ल, ग्राही, तृषाशामक, दीपन, वातानुलोमक, रक्तपित्तशामक, व्रणरोपण।

उपयोग-इसके फल का उपयोग-अतिसार, प्रवाहिका, रक्तपित्त में लाभकारी। इसकी गोंद आंत्रशूल में लाभदायक। पत्रों का प्रयोग बच्चों के अजीर्ण में लाभकारी। पित्त शमन के लिये इसके फल के मृदु भाग में शर्करा मिलाकर सेवन से या इसके पत्रों के रस में दूध मिलाकर सेवन से प्रबलपित्त का शमन होता है। प्रदर में इसके फल का मृदुभाग एवं बांस की मृदु शाखा को पीसकर मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। श्वास रोग में इसके फल का रस लिंडी पीपर तथा मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। पके फल शर्करा के साथ शरबत बनाकर या चटनी के रूप में उपयोग किया जाता है। हरस में कैथ के फलों का यूष का सेवन लाभकारी। हिचकी में कैथ के फल का रस मधु के सेवन से हिचकी मिट जाती है या कैथ एवं आँवला के रस, पिप्पली तथा मधु के साथ सेवन से हिचकी ठीक हो जाती है। कंठ में विष गया हो तो कच्चे कैथ का गुद्दा मिश्री तथा मधु के साथ सेवन से कंठ विष ठीक हो जाता है। रक्तपित्त में कैथ तथा खिरनी के पत्रों का कल्क घी में सेक कर सेवन करने

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से सभी प्रकार के रक्तपित्त रोग नाश होते हैं। इसके अतिरिक्त वातपित्त तथा पित्त विकार नाश होता है। नेत्रों में किसी ने विष दिया हो तथा नेत्रों में शोथ हो, तो कैथ के पुष्पों के रस का नेत्रों में अंजन करना चाहिए। वमन में कैथ के कोमल पत्रों का रस पिप्पली एवं मधु के साथ बार-बार चाटने से वमन से मुक्ति प्राप्त होती है। कफजन्य कर्णरोग में इसके पत्रों का स्वरस कान में एक से दो बूँद प्रतिदिन तीन बार डालनी चाहिए। प्रवाहिका में इसके पत्रों या बेर के पत्रों को पीसकर दही में मिलाकर सेवन करना चाहिए। नेत्र शोथ (नेत्रों में सूजन) में इसके पत्रों के स्वरस में इतना ही मधु मिलाकर इसकी एक-एक बूँद नेत्रों में डालने से शीघ्र ही वेदना से मुक्ति प्राप्त होती है। कफ पित्त प्रमेह में कैथ के पुष्पों का चूर्ण-मधु के साथ चाटना चाहिए। प्रदर में कैथ तथा बाँस के पत्र सम भाग लेना चाहिए, यदि ताजे एवं हरे पत्ते हैं तो स्वरस, सूखे पत्ते हैं तो चूर्ण बना कर मधु के साथ सेवन करना चाहिए। इसके तने में से (वर्षा ऋतु पश्चात्) गोंद निकलता है, जो जल में शीघ्र ही घुल जाता है तथा इसकी चिकनाई अच्छी होने के कारण जावा में इसकी स्याही बनाई जाती है।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'चक्षुष्य निम्बपुष्पं च कृमि पित्तविषप्रणुत्। वातलं कटुपाकं स्यात् सर्वारोचक नाशनम्॥'

- कैयदेव निघण्टु

अर्थात्-नीम के फूल आँख के लिए लाभकारी, कृमि, पित्त और विष का नाश करने वाले, वात बढ़ाने वाले, पाक में कटु तथा सभी प्रकार की अरुचि का नाश करने वाले होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिङ्गु Syn. Ferula narthex Boiss. Ferula foetida Regel Apiaceae UMBELLIFERAE

ENGLISH NAME:- Asafoetida. Hindi - Heeng

142

PARTS-USED:- Gum-Resin.

DESCRIPTION:- A small shruby tree 5-9 feet high, leaves hairy, ovate, decurrent, multifid, 1-2 feet long, flowers in terminal umbel of yellow colour.

TASTE:-Bitter-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Resin-Gum Contains: Volatileoil which Contains: Terpenes, Disulphide; Resin which contains: Asaresinotannol, Asaresinol ferulic acid ester, Free ferulic acid, Gum.

ACTIONS:-Stimulant, Carminative, Aphrodisiac, Appitizer, Digestivc, Stomachic Anti-spasmodic. expectorant, anti flatulence, anthelmintic, Tonic cardio tonic, Anti dote. An odyne

USED IN:-Colic, Cholera, Malarial fever, Pneumonia, Bronchitis, Nervous disorder of Hysteria, Cough, flatulance, Anthelmintic(Round worms) Nervine stimulant, dyspepria whooping cough, Asthma, constipation

प्रचलित नाम- हींग

प्रयोज्य अंग- राल-गोंद

स्वरूप- ५-९ फूट ऊँचा क्षुप जैसा छोटा वृक्ष, पत्र रोमश अति विभाजित १-२ फूट लम्बे, पुष्प टहनियों के अंत में पीतवर्णी छत्ते के रूप में होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसके रॉल तथा गोंद में उड़नशील तेल जिसमें टंरपेन्स, डायसल्फाईड, रॉल, जिसमें आसारेसीनो टैनोल, असारसीनोल फेरुलिक अम्ल ऐस्टर, मुक्त फेरुलिक अम्ल तथा गोंद घटक पाये जाते हैं।

गुण-उत्तेजक, वातानुलोमक, वाजीकारक, रुचिकर, पाचन, दीपन, उद्वेष्टनरोधी।

उपयोग- आंत्रशूल, विसूचिका, विषम ज्वर, न्युमोनिया, श्वसनी शोथ, मूर्छा, मेध विकारों, कास, आध्मान, कृमिघ्न (गोल कृमियों में) मेधा उत्तेजक है। मूत्रकृच्छ्र एवं शुक्र रोग में घी में सिकी हुई हींग तथा इलायची का तीन रत्ती चूर्ण दूध में मिलाकर सेवन से लाभ। गर्भपात को रोकने के लिये छः माशे हींग की ६० गोलियाँ बनाकर प्रारंभ में एक गोली दिन में दो बार, बाद में धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाते हुए १० गोली प्रतिदिन देते हैं, प्रसव तक धीरे-धीरे इसकी मात्रा कम करते हैं।

सूत्रकृमि, आध्मान तथा शूल एवं आक्षेप में २-३ माशा हींग जल के साथ घोट कर इसकी बस्ति दी जाती है। अजीर्णता तथा वात गुल्म में हींग की चने के कद की गोली बनाकर घी के साथ गले में उतारनी चाहिए। अपस्मार में हींग, सैन्धव नमक तथा घी एक-एक तोला गौमूत्र में मिलाकर उबालना चाहिए जब तक गाय का मूत्र सूख न जाये। इस प्रकार सिद्ध हुए, इस घी का सेवन मरीज की प्रकृति देखर कराया जाता है। हिचकी में धुँआ मुक्त जलते कोयले पर हींग तथा उड़द की दाल का चूर्ण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डालकर इसका धुँआ मुख द्वारा ग्रहण करनेसे हिचकी ठीक हो जाती है। अफीम का नशा उतारने के लिए हींग का चूर्ण छाछ या जल में मिलाकर सेवन करना चाहिए। उदर शूल में हींग तीन मासा, कोष्ठ तीन मासा, विडंग तीन मासा इन सबको मिलाकर दो तोला गरम जल में मिलाकर पिलाना चाहिए। ज्वर में हींग तथा पुराना घी इकट्ठा कर ज्वर समय नासिका छिद्रों में एक-एक बूंद डालना चाहिए। हिंग्वाष्टक चूर्ण बनाने की विधि इसमें सोंठ, काली मरिच, लींडी पीपर (पिप्पली), अजवायन, सैन्धव, जीरा, काला जीरा एवं तली हुई हींग यह सब समभाग लेकर चूर्ण बना लो, इस चूर्ण को चार गुने घी में या भोजन समय चावल के साथ सेवन करने से अग्निमांद्य, अजीर्णता, कोलेरा, पाण्डुरोग, आँव तथा गुल्म का नाश होता है। गर्भवती महिला को चक्कर तथा शूल होने पर हींग को घी में सेक कर तथा मिलाकर सेवन कराना चाहिये। बिच्छू विष में मदार के दूध में हींग को पीसकर लेप करना चाहिए। व्रण में कीड़ा पड़ने पर हींग तथा नीम के पत्रों को पीसकर व्रण पर लेप करने से व्रण ठीक होकर कीड़े मर जाते हैं। कोलेरा (विसूचिका) में तली हुई हींग, कपूर, आम की गुठली के अंदर के बीज दल-समभाग पुदीने का रस इकट्ठा कर खरल में पीसकर इसकी गोलियाँ बना कर सुखाकर एक-एक घंटे के अंतर पर एक-एक गोली चबा कर खानी चाहिए। मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोग तथा शुक्राणु रोग में सिकी हुई हींग तथा इलायची का चूर्ण तीन रत्ती दूध-घी के साथ सेवन करने से लाभ होता है। जुकाम के कारण कान में धाक पड़ी होने पर हींग को रुई में लपेट कर कान में रखने से लाभ होता है। दाढ़ शूल तथा दंतकृमि में तली हुई हींग दाढ़ के नीचे रखने से लाभ। हींग का उपयोग घी में तलकर करना चाहिए। दाद में इसको लगाने से लाभ होता है।

मात्रा- ०.१२-०.५ ग्राम।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वट Ficus benghalensis Linn. MORACEAE.

143

ENGLISH NAME:- Banyan Tree. Hindi - Br, Bargad
PARTS-USED:- Whole plant, Buds, Roots and latex.
DESCRIPTION:- Very large tree, with spreading branches, aerial prop roots, milky latex present in all parts, leaves ovate, obtuse and coriaceous, Flowers in receptacles; fig globose
TASTE:- Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Glucoside; Bengalenoside and Talbutamide; Leucoantho cyanidins. Phytosterolin, Beta-sitosterol, Freidelin, Quercetin, Galactoside, Ticlic acid, Tannin.
ACTIONS:-Anti-emetic, Anti-inflammatory, Cooling, Styptic, Wound healing, anodyne, depurative, antiarthritic
USED IN:-Infusion of Buds: useful in Diarrhoea and Dysentery. Tipsof young aerial roots: stops vomiting; Juice mixed with Sesamumooil: is applied on burns; Latex used in: Toothache, Genital diseases; Latexmixed with sugar is useful in cough, Bark: in Diabetes and Polyuria.

प्रचलित नाम- बरगद/ बड़

प्रयोज्य अंग- पंचांग, कलियाँ, मूल एवं दुग्धक्षीर

स्वरूप-अति विशाल वृक्ष, इसकी शाखाएँ फैली हुई तथा प्राय: भूमि की ओर झुकी हुई, पत्ते खुरदरे, लम्बे चौड़े तथा मोटे होते हैं। हवाई स्तंभ मूल जो वट जटा के नाम से जानी जाती है जो धीरे-धीरे बढ़कर पृथ्वी में घुस जाती है जो स्तंभ मूल कहलाती है। इसकी शाखाओं पर हरे गोल फल निकलते हैं, जो पकने पर लाल हो जाते हैं।

स्वाद-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसमें ग्लुकोसाइड, बैन्गलेनोसाइड एवं टालब्युटामाईड, ल्युको-ऐन्थोसायनीडीन्स, फायटोस्टेरोलिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, फ्रैडलिन, क्वेरसेटिन, गैलेक्टोसाइड, टिक्लीक अम्ल एवं छाल में टैनिन पाया जाता है।

गुण-वमन शामक, शोथहर, शीतल, स्तंभक, व्रणरोपण।

उपयोग-इसकी छाल का प्रयोग मधुमेह तथा प्रमेह में लाभकारी। कलियों का फांट अतिसार तथा प्रवाहिका में, वटजटा का अग्र-वमन शामक, इसका स्वरस तिल के तेल में मिलाकर दाह में बाह्य प्रयोग लाभदायक, दुग्धक्षीर, दंतशूल, योनि संबंधी रोगों में, दुग्ध क्षीर को शर्करा में मिलाकर कास में लाभदायक है।

कांड की छाल का क्वाथ मधुमेह, प्रमेह तथा अतिसार में लाभदायक।

दुग्ध क्षीर-इसका प्रयोग कटिपीड़ा, संधि पीड़ा तथा वर्षा ऋतु में होने वाले अंगुलियों के व्रणों पर लाभकारी। क्षीर का प्रयोग-सड़े हुए दाँतों पर लगाने से पीड़ा दूर होती है। वट जटा का प्रयोग-सूजाक में, वमन रोकने के लिये तथा बाह्य लेप के रूप में चर्म रोगों में लाभकारी। कृमि रोग में वट जटा के कोमल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंकुरों को पीसकर इसके रस का सेवन करने से लाभ। शुक्रवृद्धि के लिये इसका दुग्ध क्षीर बतासे में डालकर सेवन से लाभ। अतिसार में–वट जटा को चावल की मांड में पीस कर सेवन से लाभ। रक्तपित्त में वट जटा के कल्क में मधु मिलाकर सेवन से लाभ।

खाज–खुजली में इसके पके हुए पत्रों को जलाकर इसकी राख में तिल का तेल मिलाकर खरल में पीसकर लेप करने से लाभ।

मल–मूत्र बंद हुआ हो, तो इसके पके हुए सूखे पत्रों का क्वाथ पीने से लाभ होता है।

व्रण में इसकी छाल के काढे से व्रण को धोने से व्रण पर रूझ आती है। यदि व्रण में कीड़े पड़े हों, तो उसमें वट का दुग्ध भरना चाहिए। नेत्रफूली में इसके दुग्ध में मधु एवं कपूर मिलाकर इसका नेत्रों में अंजन करना चाहिए।

योनि रोगों में (योनिदाह, योनिस्राव) इसकी छाल के चूर्ण का सेवन दूध के साथ करना चाहिए तथा इसकी छाल के काढ़े में रुई का फाहा भिगोकर योनि में रखना चाहिए। दंत रोगों में दाँत हिलते हों, मसूड़ों में सूजन हुई हो, तो वट की टहनी की दातून करनी चाहिए या इसकी छाल के काढ़े का कुल्ला कराना चाहिए। अर्श में इसकी छाल का काढ़ा पिलाना चाहिए एवं इसके पत्रों की राख में मक्खन मिलाकर अर्श पर लगाना चाहिए।

दौर्बल्य में वट का दुग्ध एक–एक चम्मच प्रातः सायं मधु या घी के साथ सेवन कराना चाहिए। चेहरे पर चर्मकीलों के निशानों को दूर करने के लिए वट का दुग्ध हल्दी का चूर्ण मिलाकर चेहरे पर लेप करना चाहिए। रक्त दोष में वट के कोमल पत्रों को पीसकर इसका रस प्रतिदिन दो से तीन बार सेवन कराना चाहिए। स्त्री के वंध्यत्व में पुष्य नक्षत्र तथा शुक्लपक्ष में लाये हुए इसके अंकुरों का चूर्ण (२–५ ग्राम) प्रातः जल के साथ ४ से ६ दिन तक सेवन कराने से स्त्री का बंध्यत्व दूर होकर महिला गर्भ धारण करती है। श्वेत प्रदर में वट की छाल का क्वाथ बनाकर इसमें लोध्र का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।

मात्रा– क्वाथ–५० से १०० मि.ली.।

चूर्ण– ३–६ ग्राम।

क्षीर–५–१० बूंद।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फल्गु Ficus carica Linn. MORACEAE.

144

ENGLISH NAME:-Fig Tree. Hindi - Anjir

PARTS-USED:- Dried Fleshy receptacles and Fruits.

DESCRIPTION:- A moderate sized tree, 15-30 feet high, largecordate, serrate, deeply lobed rough leaves.

TASTE:-Sweet Cooling.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Countains: Glycosides, Protein, Aminoacids Resins, Reducing Sugars, Steroids, Triterpens, Tannins, Fixedoil, Potassium, Iron, Magenssium, Calcium, copper, Phosphorus and chloride.

ACTIONS:-Laxative, Resolvent, Antibillious, Nutritive, Cooling.

USED IN:-Constipation, Asthma, Chestpain, Inflammation, Livertonic, Resolves spleen, useful in blood purification, Dyscrasia.

प्रचलित नाम- अंजीर

प्रयोज्य अंग- सूखा हुआ मृदु पुष्पाधार एवं फल।

स्वरूप-१५-३०फूट ऊँचा मध्यम कद का वृक्ष, पत्र बड़े हृदयाकार के दंतुर अति खण्डित, खुरदर, फल गोल उदुम्बर प्रकार के मांसल होते हैं।

स्वाद-मधुर शीतल।

रासायनिक संगठन- इसके फल में ग्लायकोसाइड्स, प्रोटीन्स, एमीनो अम्ल, रॉल, प्रहासकशर्करा, स्टीरोइड्स, ट्रायटर्पेन्स, टैनिन्स, स्थायी तैल, पोटेशियम, लोह, मेग्नेशियम, कैल्शियम, कॉपर, फोस्फोरस एवं क्लोराइड तत्व पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचन, विस्थान, पित्तघ्न, पौष्टिक, शीतल।

उपयोग:-विबंध, उर: शूल, श्वास रोग, शोथ, यकृतबल्य, प्लीहाघ्न, रक्त दोष में यह औषधि रक्त शोधक गुण वाली है। पौष्टिकता के लिये अंजीर के टुकड़े तथा बादाम को गरम पानी में भिगोकर कुछ समय तक रहने दिया जाये, उसके छिलके निकालकर उसमें मिश्री का चूर्ण, इलायची दाने का चूर्ण, केसर, पिस्ता सभी सप्रमाण में लेकर आठ दिन तक गाय के घी में भिगोने के बाद इस मिश्रण का सेवन प्रतिदिन प्रात: दो तोला करने से शीतलता, धातुवृद्धि, रक्तवृद्धि होती है।

श्वासरोग में अंजीर में गोरख आमली फल के बीजदलों को मिलाकर प्रतिदिन प्रात:काल छ: माशा निरंतर सेवन से श्वासरोग में लाभ होता है। गण्ड में कच्चे अंजीर को कूटकर इस पर बांधने से लाभ। कंठ शोथ एवं जीह्वा शोथ में सूखे अंजीर का क्वाथ बनाकर लेप करने से लाभ। शरीर में से गरमी निकल कर रक्त वृद्धि होने के लिए इसके पके हुए फलों को छीलकर फल में आमने-सामने दो कट मारकर इसमें मिश्री भर ओस में रातभर रखे रहने के पश्चात् प्रात: इनका सेवन १५ दिन तक इसी प्रकार करना चाहिए। अंजीर के फल पित्त शामक एवं रक्तवृद्धि करने वाले होते हैं इसलिए निर्बल लोगों को प्रात: इसका सेवन करना चाहिए।

मात्रा-सूखा अंजीर ३०ग्राम तक उपयोग कर सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदुम्बर Ficus glomerata Roxb.Syn. F. racemosa. MORACEAE.

145

ENGLISH NAME:-Lusterfig. Hindi - gular, umar

PARTS-USED:- Whole plant, Roots, Leaves, Bark, Fruits and Latex.

DESCRIPTION:- A large evergreen tree, 50-60 feet high, leaves are dark green, glabrous and shining, fruits in clusters on woody branches.

TASTE:-Acrid-sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Cerylbehenate, Lupeol, Alpha-Amyrin, Glaunol, Beta-sitosterol, keton, Hentriacontane, Tiglic acid, Glucose, Taraxeroll and Tannin.

ACTIONS:-Sweet, Cooling, Wound healing, Blood purifieng, Anti-inflammatary.

USED IN:-Diabetes, Diarrhoea, Dysentery, Sprue, Bleedingpiles, Leucoderma, Acidity, Scabies, Small pox, Mucsularpain, Spermatorrhoea, Wound healing, Promotecomplexion, Union of fracture, Genital disorder, Metrorrhagea, Menorrhagia, in abortifacient.

प्रचलित नाम–गूलर

प्रयोज्य अंग– पंचांग (सभी अंग–मूल, पत्र, छाल, फल, दुग्धक्षीर)

स्वरूप–विशाल कंद का सदा हरित वृक्ष, ५०–६० फूट ऊँचा पत्र गहरे हरे रंग से चमकदार तथा चिकने पुरानी काष्ठमय शाखाओं पर गोल मांसल उदुम्बर फल सटे हुए गुच्छों में आते हैं। कच्चे फल हर तथा पकने पर लाल हो जाते हैं।

स्वाद–कटु–मधुर

रासायनिक संगठन– छाल में सेरिल बेहेनेट, ल्युपियॉल, आल्फा–एमिरीन, ग्लौनॉल, बीटा–सिटोस्टीरॉल, किटोन, हैन्ट्रियाकॉन्टेन, टिगलिक अम्ल, ग्लूकोज, टैरेक्सेरॉल तथा टैनिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण– मधुर, शीतल, व्रणरोपाण, रक्तशोधन, शोथहर।

उपयोग– मधुमेह, अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी, रक्तार्श, श्वित्र, अम्लपित्त, कण्डु, चेचक, स्नायुशूल, शुक्रमेह, व्रणरोपण, वर्णय, अस्थिसंधानक तथा योनिदोष में लाभकारी। रक्त प्रदर, अत्यार्त्तव एवं गर्भपात में लाभकारी।

रक्त पित्त में इसके पके हुये फल को मधु या गुड़ के साथ सेवन से लाभ होता है। नेत्र शोथ में इसके दुग्धक्षीर का लेप नेत्रों की पलक पर लेप करने से लाभ होता है। अतिसार में इसके दुग्ध क्षीर के चार–पाँच बूंद बतासे में डालकर सेवन से लाभ। रक्तातिसार में इसके तथा वट जटा का स्वरस के सेवन से लाभ होता है। अश्मरी में इसकी जड़ का रस पाँच तोला, इसमें शर्करा मिलाकर सेवन से लाभ। गर्भवती महिला को अतिसार में इसके फल का सेवन मधु के साथ करने से लाभ होता है। दाह में इसका दुग्धक्षीर, शर्करा मिलाकर सेवन से लाभ होता है। रक्तप्रदर में इसके पके हुये फलों को सुखाकर पीसकर कपड़े से छानकर चूर्ण बनाकर आधा तोला चूर्ण समभाग शर्करा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलाकर प्रातःकाल २१ दिन तक सेवन से लाभ होता है। श्वित्र रोग में इसके फल के रस का पुराने गुड़ के साथ सेवन करने से लाभ होता है। पित्तातिसार में इसके कोमल पत्रों का काढ़ा या पत्रों का छाछ में पीसकर पिलाने से लाभ होता है। प्रमेह पिटिका में मधुमेह के कारण होने वाले गण्डज ठीक नहीं होते हो, तो उन पर गूलर का दुग्ध लगाना चाहिए। गर्भपात में जिस महिला को बार-बार गर्भ पतन होता हो, उस को रोकने के लिए गूलर के फलों के क्वाथ में मिश्री मिलाकर सेवन कराना चाहिए। अर्श में गूलर के दुग्ध का लेप अर्श पर करना चाहिए, इस समय घी का सेवन अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए। कैन्सर में (कंठ कैन्सर) इसके मूल में चीरा करने से झरने वाले रस का सेवन कराना चाहिए, इससे कंठ कैन्सर वाले रोगी को लाभ होकर आराम मिलता है। मधुमेह में इसके मूल रस तीन से चार चम्मच प्रातः सायं मधु मिलाकर सेवन कराना चाहिए।

व्रण में गूलर की छाल का क्वाथ बनाकर इसमें हल्दी मिलाकर पिलाना चाहिए इसके साथ-साथ इस क्वाथ द्वारा व्रण को धोना चाहिए। बहुमूत्रता में (बार-बार मूत्र आने की प्रक्रिया में) गूलर की छाल का क्वाथ दो चम्मच अजवायन का चूर्ण मिला कर सेवन कराना चाहिए।

दंतरोग में दाँतों में से रक्त स्राव होता हो, दाँत हिलते हों तो इसके पत्रों का क्वाथ से कुल्ला कराने से लाभ होता है। रुधिर विकार में गूलर की छाल एवं नीम के पत्रों का काढ़ा बनाकर प्रतिदिन पिलाना चाहिए तथा इस क्वाथ से स्नान कराना चाहिए। थकावट में गूलर के पके हुए फल खाने चाहिए या गूलर के फल के साथ काली द्राक्षा मिलाकर बनाये हुए शरबत का सेवन कराने से थकावट दूर होती है।

मात्रा- फल का चूर्ण-२.५०० ग्राम पानी या दूध के साथ दिन में तीन बार। छाल का चूर्ण-५ ग्राम दूध या पानी के साथ दिन में तीन बार।

छाल का क्वाथ-३० मि.ली. मधु के साथ दिन में तीन बार।

क्षीर- ५-१० बूंद।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अश्वत्थ Ficus religiosa Linn. MORACEAE.

ENGLISH NAME:- Poplar leaved Fig Tree. Hindi - Pipal

146

PARTS-USED:- Bark, shoot, Leaves & Fruit.

DESCRIPTION:- A large deciduous tree often epiphytic with gray bark leaves are cordate with large petiole. and long tailed tip. fig. axullary, paired, purple when ripe.

TASTE:-Sweet-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Tannin.

ACTIONS:- Cooling, aphordisiac, Antibacterial, Anthelmintic, Laxative, Antiviral, Blood purifier, Wound healing.

USED IN:-In fusion of Barkin: Ulcer, Skindisease; Aquous extract (Bark) is anti bcterial, Anthelmintic; Decoction in: Gonorrhoea; Twig in: Skindisease, Antifungal; Young leaves Crushed with wet flour of wheat applied on skin erruptions and swellings; seeds are laxative, if taken three daysduring, Menstruation, Sterilizes women for long time.

प्रचलित नाम- पीपल

प्रयोज्य अंग- छाल, पत्र सहित टहनी, पत्र तथा फल।

स्वरूप-बड़ा ऊँचा वृक्ष, जो बहुत ही फैला हुआ होता है। जिसकी छाल घूसर, पत्र हृदयाकार के एवं नोकदार, पत्रदंड लम्बा होता है। फल गोल मांसल उदुम्बर प्रकार के होते हैं।

स्वाद- मधुर-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में टैनिन पाया जाता है।

गुण-कीटाणुघ्न, कृमिघ्न, मृदुरेचन, विषाणुघ्न, रक्तशोधन तथा व्रणरोपण।

उपयोग:-छाल का फांट- व्रण, चर्मरोग में, जलज सत (छाल का) कीटाणुघ्न तथा कृमिघ्न, छाल का क्वाथ-अपसर्गिकामेह में, पत्र सहित की टहनी-चर्मरोग तथा फफूंदी नाशक, कोमल पत्रों का गेहूँ के गीले आटे में पीसकर इसका लेप चर्म सूजन (फोड़े-फुन्सी) तथा विस्फोटक पर लगाने से लाभ। इसके बीज-मृदुरेचन, इनका प्रयोग रजो-निवृति के तीन दिन तक सेवन करने से स्त्री को लम्बे समय तक बांझपन आता है। पीपल के पके हुए फल हृद्य, शीतल, कफ, पित्त, रक्तदोष, विषदोष, दाह, तृषाशामक गुण वाले होते हैं। बच्चों के तोतलेपन में इसके पके हुए फलों का सेवन करने से लाभ होता है। खाज खुजली पीपल की छाल की राख तथा चूना, घी मिलाकर खरल में अच्छी तरह पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। छोटे बच्चों के मुख में छाले होने पर इसके ताजे पत्र एवं छाल को महीन पीसकर इसमें मधु मिलाकर लेप करने से लाभ होता है। रक्तातिसार में इसकी कोमल टहनियाँ, धनिया के बीज तथा मिश्री समभाग में सब मिलाकर इसके रस का सेवन करने से लाभ होता है। इसके पके फल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हृदयबल्य तथा शीतल, जिसके सेवन से कफ, पित्त, रक्तदोष, विषदोष, दाह, वमन तथा अरुचि का नाश होता है। इसमें से स्राव होने वाली लाख कड़वी, स्निग्ध, लघु, बल्य, भग्नसंधान कारक, वर्णप्रद एवं शीतल है, इसके सेवन से कफ, पित्त, विष, रक्त विकार, विषम ज्वर, खाँसी, कृमि, कुष्ठ, व्रण त्वचादोष एवं दाह का नाश होता है। उपदंश में इसके कांड की सूखी छाल की राख उपदंश पर छाँटने से उपदंश शुष्क होकर ठीक हो जाते हैं। अग्निदग्ध व्रण में इसकी सूखी छाल का चूर्ण घी में पकाकर व्रणों पर लगाना चाहिए।

पीपल की ताजी टहनी से प्रतिदिन दातून करने से दाँत मजबूत होकर मसूड़ों की सूजन जाती रहती है एवं मुँह से आने वाली दुर्गन्ध भी खत्म हो जाती है। उदरशूल में इसके २-३ पत्तों को बारीक पीसकर गुड़ में लपेट कर सेवन से शीघ्र लाभ होता है।

स्मरण शक्ति के लिए पीपल के ४-६ ताजा पत्तों को ५०० मि.ली. दूध में अच्छी तरह उबालकर, इसमें पर्याप्त मात्रा में मिश्री मिलाकर सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है तथा मानसिक कमजोरी दूर होती है। पोलियो रोग में पीपल के २-४ ताजे पत्रों को इतने ही लसूढ़े के पत्रों के साथ घोंट कर, छानकर नमक के साथ नित्य लेने से अतिशीघ्र लाभ होता है।

मात्रा- क्वाथ- ५०-१०० मि.ली.।

चूर्ण- १-३ माशा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



'तुलसी गंधमादाय यत्र गच्छन्ति मारुतः।
दिशो दशश्च पूतास्तुर्भूत ग्रामश्चतुर्विधः॥'

अर्थात्- तुलसी की गंध वायु के साथ जितनी दूर तक जाती है, वहाँ का वातावरण और निवास करने वाले सब प्राणी पवित्र, निर्विकार हो जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिश्रेया/मधुरिका Syn : Foeniculum vulgare Mill. Foeniculum Capillaceum

Gilbert UMBELLIFERAE **147**

ENGLISH NAME:- Fennel Fruit. Hindi - Saunf
PARTS-USED:- Roots, Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:- A large annual herb, pinnately compound leaves flowers yellow in compound umbels, cremocarp of two carpels or mericorp, each one is 5-ridged furrowed.
TASTE:-Aromatic Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant & Fruit Contains: Ascorbic acid, Niacin, Riboflavin, Alpha, Beta & Gamma-Ticopherol, Alpha & Beta-Trocotrienol, Trigonelline, Anethol, Anisaldehyde Comphene, Estragol, Fenchone, alpha-Fenelene, Foeniculin, Sabenene, Abscisic acid, Anicic acid, Caffeic acid, Chlorgenic acid, Cyanarin & Vanillin.
ACTIONS:-Cooling, Aromatic, Stomachic, Pungent, Carminative, Digestive, Anti-in flammation. stimulant, Diuretic, emmanogogue, purgative
USED IN:-Fever, Urine-in flammation, Thirst, Dysentery, Diarrhoea, Cholera, colic, Spleenomegaly, Anthelmintic, Analgesic, Braintonic, Antacid, Also useful in Flatulance, Cough, Asthma, Kidney disease, as Vehicle, flavouring agent.

प्रचलित नाम-सौंफ

प्रयोज्य अंग-मूल, पत्र एवं फल।

स्वरूप-एक वर्षायु लम्बा क्षुप, पत्ते पक्षवत संयुक्त, पुष्प पीतवर्णी, संयुक्त छत्र में होते हैं।

स्वाद-मधुर सुगंधित।

रासायनिक संगठन-इसके फल एवं पौधे में ऐस्कॉर्बीक अम्ल, नियासिन, रीबोफलेवीन, आल्फा, वीटा एवं गामा-टिकोफेरॉल, आल्फा एवं बीटा-ट्रोकोट्राइनॉल, ट्रिगोनैलिन, एनीथॉल, एनीसआलडीहाईड कोम्फीन, एस्ट्रागॉल, फेन्चान, आल्फा-फैन्चीन, फीनीक्युलिन, सेबॅनिन, एबसीसिक अम्ल, एनीसीक अम्ल, कैफिक अम्ल, क्लोरजैनिक अम्ल, सायनारीन एवं वैनिलिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, सुगंधित, दीपन, चरपरा, वातानुलोमक, पाचन, शोधघ्न।

उपयोग-ज्वर, मूत्रदाह, तृषा, प्रवाहिका, अतिसार, विसूचिका, प्लीहा वृद्धि में उपयोगी। कृमिघ्न, वेदनास्थापक, मेधाबल्य, अम्लपित्तहर। इसके अतिरिक्त यह आध्मान खाँसी, श्वासरोग, वृक्करोग में लाभकारी।

बार-बार खांसी में सौंफ तथा मिश्री का चूर्ण मुख में रखने से खांसी में लाभ होता है।

मुख के विकारों में सौंफ के दाने मुख में रखकर उसे चबाने से निकलने वाला रस लाभदायक।

अतिसार में सौंफ का क्वाथ या सौंफ एवं सोंठ को घी में सेंककर इसका चूर्ण बनाकर सेवन से अतिसार में लाभ होता है।

पित्त ज्वर में सौंफ तथा मिश्री के क्वाथ से लाभ होता है।

सौंफ को पीसकर पानी में मिलाकर पीने से पेशाब की जलन दूर होती है। गर्भाशय के रोगों में लाभकारी तथा गर्भाशय प्रद औषधि है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माताओं में दुग्ध प्रमाण बढ़ाने में उपयोगी। बच्चों के उदराध्मान एवं शूल में अति लाभकारी।

सौंफ का मूल मृदुरेचक होता है। सौंफ तथा इसमें से निकाला गया तेल दोनों ही उत्तेजक, सुगंधित तथा वातघ्न है। यह प्रजास्थापक, शूलनाशक तथा कफ नाशक है। हकीम सौंफ के पत्रों को गरम मानते हैं। गर्भवती महिलाओं को इसका क्वाथ रक्त शुद्धिकरण तथा गर्भाशय की शुद्धि के लिए दिया जाता है। यह पाचक तथा जठराग्नि प्रदीप्त करने वाली औषधि मानी जाती है।

मात्रा- फल का चूर्ण ३-६ माशा,
तेल-५-१० बूँद,
मूल का चूर्ण-३-६ माशा,
क्वाथ-२०-४० मि.ली.।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जब बम्बई में विक्टोरिया उद्यान और ऐल्बर्ट संग्राहलय स्थापित किये गये थे तो इन कार्यों में नियुक्त मनुष्य मच्छरों द्वारा इतने पीड़ित हुए थे और मलेरिया ज्वर से इतने ग्रस्त हुए थे कि काम में रुकावट पड़ी। इस पर हिन्दू जमादार कारबारी की राय से उद्यान की समूची हद पर कृष्ण तुलसी तथा तुलसी के अन्य उपलब्ध प्रजातियों की बाड़ बो दी गयी। इससे मच्छरों की फौज एकदम मंद पड़ गयीं और उद्यान में ही रहने वाले एवं राजों (मिस्त्री) में बुखार भी सर्वथा लुप्त हो गया। उद्यान वाला यह क्षेत्र पहले सदा से बम्बई के द्वीप पर सर्वाधिक विषय-ज्वर ग्रस्त क्षेत्र था। इन दिनों कोई भी व्यक्ति आधुनिक मच्छर मलेरिया सिद्धान्त से परिचित नहीं था।' -सर जार्ज बर्डवुड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्पट Fumaria indica Pugsley. F. parviflora Lamk

FUMARIACEAE.

148

ENGLISH NAME:- Fine Leaved Fumitarie. Hindi - Pitpapara

PARTS-USED:-Whole Plant.

DESCRIPTION:- Apale green annual 3-5 inch high herb, muchbranched prostrating Leaves are much dissected and linear. Flowers white or pink red, leaf opposed, lax, spurred.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- .Fumaric acid and Fumarin (Alkaloid).

ACTIONS:- Diuretic, Bitter Tonic, Diphoretic, Astringent, Blood purifier.

USED IN:-Whole plant is useful in Blooddisorder, Vertigo, Anorexia and Burning, Fever, Rhinitis, Tuberculosis, Leprosy.

प्रचलित नाम- पित्त पापड़ा

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-एक वर्षीय ३-५ इंच ऊँचा क्षुप, अतिशाखीत, प्रसरणशील। पत्र अतिविभाजित तथा रेखाकार। पुष्प सफेद या गुलाबी होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में फ्युमेरिक अम्ल तथा फ्युमारिन (क्षारभ) पाया जाता है।

गुण-मूत्रल, तिक्त पौष्टिक, स्वेदजनन, ग्राही, रक्तशोधक।

उपयोग-इसके पंचांग का उपयोग रक्त विकार, भ्रम, अरुचि, दाहनाश करने में किया जाता है। ज्वर, प्रतिश्याय, राजयक्ष्मा, कुष्ठरोग में लाभकारी। सरदी-जुकाम तथा ज्वर में इसके पंचांग के क्वाथ का सेवन लाभकारी होता है। पित्तज्वर तथा यकृत विकारों में-इसके पंचांग का क्वाथ लाभकारी है। चर्मरोग में पंचांग के क्वाथ से धोने पर लाभ होता है। पित्तज्वर में पंचांग के क्वाथ में लीडीपीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। पित्त में इसके पत्तों के रस में गाय का दूध मिलाकर तथा इसमें शर्करा डालकर सेवन से लाभ होता है। या पंचांग के स्वरस में सोंठ का क्वाथ मिलाकर सेवन से लाभ। अश्मरी में इसके पंचांग का चूर्ण (चार तोला) में गाय की छाछ में पिलाना चाहिए या पंचांग के स्वरस को छाछ में मिला कर सेवन से लाभ होता है। शिरःशूल में इसके पंचांग के स्वरस में करेले के पत्रों का स्वरस मिलाकर इसमें गाय का घी डाल कर मिश्रण कर इसका लेप कपाल पर अच्छी तरह से मर्दन करने से पित्त से हुआ शिरःशूल ठीक हो जाता है। शोष रोग में इसके पंचांग के क्वाथ का सेवन लाभकारी है। नेत्र संताप एवं वमन में इसके पंचांग के क्वाथ में मधु मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा-क्वाथ ३- ५ तोला। चूर्ण २-७ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नाड़ीहिंगु /डीकामाली Gardenia gummifera Linn. RUBIACEAE.

149

ENGLISH NAME:- Gummy Gardenia. Hindi - Deekamali
PARTS-USED:-Gum.
DESCRIPTION:- A small compact tree, leaves simple smooth & bright, flowers White during early period but yellow lateron; 1-3 in Cluster, Gum is secreted from tender branches and buds duringwinter.
Taste:-Acrid-pungent.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Gum Contains:- Two types of Resins-Which is Gardenin and Dikenali is Crystaloid and Smooth respectivaly. Secreted gum is kuown as Dikamali.
Actions:-Spasmolytic, Carminative, Stomachic, Laxative, Anthelmintic, Antipyretic, Diphoretic.
USED IN:- Gum is used in: Worms infestation (Round worms.) Infusion of plant is useful in flatulance, Indigestion & Colic, Malarial fever, Diarrheal problem during dentation in Children.

प्रचलित नाम- डीकामाली/नारीहिंग
प्रयोज्य अंग:- गोंद।
स्वरूप-सघन छोटा वृक्ष, पत्र चिकने चमकदार, पुष्प सफेद (प्रारंभ में) किन्तु बाद में पीतवर्णी हो जाते हैं, जो १-३ के समूह में आते हैं। कोमल शाखाओं में से शरद ऋतु में गोंद का स्राव होता है।
स्वाद-तीक्ष्ण-कटु।
रासायनिक संगठन- इसकी गोंद में दो प्रकार के राल पाये जाते हैं। गार्डेनिन तथा डिकेनाली, जो क्रमशः रवेदार तथा मुलायम होते हैं। कोमल शाखाओं से स्राव होते गोंद डीकामाली कहलाता है।
गुण-उद्वेष्टन निरोधी, वातानुलोमक, दीपन, मृदुरेचक, कृमिघ्न, ज्वरहर, स्वेदजनन।
उपयोग- गोंद का प्रयोग-कृमिरोग (गोल एवं छोटे कृमि) में इसके फांट का प्रयोग आध्मान, कुपचन, आंत्रशूल, नियत कालिक ज्वर, बच्चों को दंतोद्भव के समय दस्त एवं वमन आदि विकार में लाभकारी। उदरशूल में नीबू काट कर उसके एक हिस्से पर डीकामाली गोंद का चूर्ण डालकर उस पर नीबू के दूसरे हिस्से का रस उस पर निचोड़कर इस हिस्से को अंगारे पर रख गरम होने पर इसे चूस लेने से उदर शूल में लाभ होता है। कृमिरोग में डीकामाली गोंद का चूर्ण मिश्री में मिलाकर सेवन से कृमि बाहर निकल जाते हैं। इसके अतिरिक्त विसूचिका एवं ज्वर में भी लाभ होता है। डीकामाली गोंद के चूर्ण का सेवन प्लीहा वृद्धि तथा मोटापा दूर करने में लाभकारी। इसके बाह्य प्रयोग से दूषित व्रण साफ होते हैं। इससे व्रण में कीड़े नहीं पड़ते। दंतशूल में भी इसका प्रयोग लाभकारी।
मात्रा-१/२ से २ रत्ती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाङ्गली Gloriosa superba Linn. LILIACEAE.

150

ENGLISH NAME:- The Glory Lily. Hindi - Kalihari
PARTS-USED:- Rhizome and Root.
DESCRIPTION:- A large annual glabrous herbaceous climber, Root stock tuberous, cylindrical bifurcated. leaves tip ending in a tendril like spiral, Flowers beautitul perianth segment with wavy margin yellow to crimson.
TASTE:-Bitter, Acrid, pungent, Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Tubers Contain: Alkaloid Colchicine; Superbine, Gloriosine; Sitosterol, Glucosides, Benjoic acid and Resins.
ACTIONS:-Purgative, Cholagogue, Anthelmintic, Stomachic, Bitter Tonic, Antibiotic Abortifaciant, Febrifuge, Anti-inflammatory antileprotic
USED IN:-Tuber is: Anthelmintic Abortifacient: Paste of Tuber is antidotal in snake bite, Root Powder in: Fever, Rheumatism, Spleenomegaly, Tumours, Gonorrhoea, Erysipalas, Sores, Siphilis; Extract of whole plant is spasmolytic, useful in: Leprosy, Piles Ulcers, Colic & Swellings. dermatitis

प्रचलित नाम-लांगुली/कलिहारी
प्रयोज्य अंग:-कंद एवं मूल
स्वरूप-एक वर्षीय आरोहणशील आकर्षक लग जो अन्य झाड़ियों या वृक्षों पर पत्राग्र सर्पिल सूत्र की मदद से चढ़ी होती हैं। इसमें भौमिकता होता है, जिससे प्रति वर्ष इसकी दोबारा उत्पत्ति होती है। इसके पत्ते विषमवर्ती हेते हैं। पुष्प सुन्दर आकर्षक, पंखुड़ियाँ लहरदार आधार की ओर पीताभ, ऊपर नारंगी, लाल अंत में पूर्णतय: लाल होती है।
स्वाद-तिक्त, कटु।
रासायनिक संगठन- इसके कंद में एल्कलॉयड्स-कोल्चीसीन, सुपर्बाइन, ग्लोरीयोसाईन, सिटोस्टीरॉल, ग्लूकोसाईड्स, बेन्जोईक अम्ल तथा राल तत्व पाये जाते हैं।
गुण-अति रेचक, पित्त वर्धक, कृमिघ्न, दीपन, कटु, बल्य तथा गर्भघातक।
उपयोग- कंद गर्भघातक एवं कृमिघ्न, कंद का कल्क-सर्पदंश में विषघ्न, मूल का चूर्ण-ज्वर, आमवात, प्लीहावृद्धि, अर्बुद, अपसर्गिकामेह, सिफिलिस (फिरंगवन) में, विसर्प, छालों में पंचांग का सत-उद्वेष्ट निरोधी, यह कुष्ठरोग, अर्श, व्रण, शूल तथा शौफ में लाभकारी। इसके कंद को पीसकर शुष्क त्वचारोगों में एवं सर्पदंश, बिच्छू के दंश में लाभकारी। इससे वेदना कम होती है। खाज-खुजली में इसके कंद को पीसकर इसका लेप चार-पाँच दिन तक करने से लाभ होता है। अपरापतन में विलम्ब हो रहा हो तो कलिहारी के मूल को जल में घिसकर चरणतल में लेप कर देना चाहिये, इससे शीघ्र अपरापतन हो जाता है। उन्मथ नामक कर्ण रोग में निशोथ तथा लांगली से सिद्ध किया हुआ तेल उपयोगी है। इन्द्रलुप्त (गंजापन में) लांगली के मूल को जल में पीसकर लेप करना चाहिये। गण्डमाल में लांगली का कंद कल्क १०० ग्राम, तिल का तेल सिद्ध करके इस तेल का नस्य लेप आदि करना चाहिए, इससे लाभ होगा। सुख प्रसूति के लिये नाभि, बस्ति एवं योनि प्रदेश पर लांगली के कंद को पीसकर लेप करना चाहिए, इससे शीघ्र एवं आसान प्रसव हो जाता है।
मात्रा- कंद-२५०-५०० मि.ग्रा.।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मधुयेष्ठी (यष्टिमधु) Glycyrrhiza glabra Linn. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

ENGLISH NAME:- Liquoric Hindi - Mulethi.

151

PARTS-USED:- Root, Under ground stem, Leaves.

DESCRIPTION:- A perennial small spreading shrub with pinnate compound leaves, purple flowers.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Glycyrrhizin, Glyciyrrhizic acid, It is 50 times more sweeter than the normal sugar, Glycosides, Steroids, Glucose, Sucrose, Resin, Starch and Essential oil.

ACTIONS:-Tonic, Appitizer, Anti-emetic, Sweet, Cooling, Rejuvenator, Expectorant, Diuretic, Anti-inflammatory and Wound healing, Aphrodisiac, Blood purifying. demuleent emmenagogue, haemostatic.

USED IN:- Cough, Vomiting, Wound healing, Haematemesis, Thirst, Cholera, Skin disease, Spermopoitic, Heart disease, Epilepsy, ulceration, gastralgia, cephalalgia, retention of urine.

प्रचलित नाम- मुलैठी/ मीठी लकड़ी

प्रयोज्य अंग-मूल, भूमिगत कांड तथा पत्र।

स्वरूप-चिरस्थायी ३-४ फूट ऊँचा लघु क्षुप, पत्र पक्षवत संयुक्त, पुष्प बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इस वनस्पति में ग्लीसीरहाजिन, ग्लीसीरहाजिक अम्ल, यह औषध शर्करा से पचास गुना ज्यादा मीठी होती है। इसमें ग्लुकोसाइड, स्टरोइड्स, ग्लुकोज़, सुक्रोज़, राल, स्टार्च तथा उत्पत तेल पाये जाते हैं।

गुण-बल्य, रुचिकर, वमनशामक, मधुर, शीतल, रसायन, कफ नि:सारक, मूत्रल, शोथहर, व्रणरोपण, वाजीकरण, रक्तशोधन।

उपयोग- कास, वमन, व्रणरोपण, रुधिर युक्त वमन में, तृषा, विसूचिका, चर्मरोगों, शुक्रवर्धक, हृदयरोग, अपस्मार में। तृषा शमन के लिये इसके मूल का क्वाथ लाभकारी। शुक्रवृद्धि के लिये मुलैठी का चूर्ण घी तथा मधु में मिलाकर सेवन करने के बाद दूध पीना चाहिये। मुलैठी को पीसकर इसके कल्क को घी में मिलाकर घावों पर लगाने से लाभ होता है।

हृदयरोग में मुलैठी तथा कुटकी का चूर्ण जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है। गर्भ सूखा हो या शिशु सूखता जा रहा हो गम्भारी के फल, मुलैठी एवं मिश्री दूध में उबालकर इस दूध को गर्भवती महिला एवं शिशु को पिलाने से लाभ होता है। वातरक्त में मुलैठी तथा गम्भारी से सिद्ध किये हुए तेल की मालिश करने से लाभ होता है। पाण्डुरोग में मुलैठी का चूर्ण मधु के साथ या इसका क्वाथ पीने से लाभ होता है। अधोगतरक्त पित्त में मल के साथ रुधिर आता हो, तो मुलैठी के क्वाथ में मधु मिलाकर वमन कराने से लाभ होता है। रक्त के वमन में मुलैठी तथा चंदन को दूध में अच्छी तरह पीसकर पिलाने से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उल्टी में आता रुधिर बंद हो जाता है। तुरन्त हुए जख्म में जिसमें वेदना होती हो उस समय मुलैठी से पकाया हुआ गरम घी का सेवन करने से लाभ होता है। उदराध्मान में इसका चूर्ण तथा मिश्री को जल के साथ सेवन से लाभ होता है। मूत्रावरोध के कारण उदावर्त में किशमिश तथा मुलैठी के चूर्ण से उबाला हुआ दूध का सेवन लाभकारी। शिरो वेदना में किसी भी प्रकार की शिरो वेदना में मुलैठी का जितना चूर्ण, इसका चौथा भाग कलिहारी का चूर्ण तथा थोड़ा-सा सरसों मिलाकर नासिका में नसवार की तरह सूंघने से लाभ होता है। पित्त से हुआ कर्णरोग में मुलैठी तथा किशमिश से पकाया हुआ दूध कान में डालने से कर्ण रोग मिट जाता है। आँखों से कम दिखता हो तो मुलैठी तथा आँवले का क्वाथ नेत्रों पर छांटने से तथा पीने से लाभ। पित्त जन्य स्वरभंग में मुलैठी का क्वाथ घी डालकर पीने से लाभ होता है। वाजीकरण में मुलैठी का चूर्ण एक तोला मधु तथा घी मिलाकर नित्य चाटने से एवं दूध का सेवन करने से लाभ होता है। स्तन्य वर्धनार्थ माता के दूध में वृद्धि के लिये मुलैठी का चूर्ण मिश्री के साथ खाने के बाद उस पर गाय के दूध का सेवन करने से लाभ होता है। सिर के बाल झड़ने में मुलैठी एवं तिल को भैंस के दूध में पीसकर सिर पर लेप करने से बालों का झड़ना बंद हो जाता है।

मात्रा- चूर्ण-३-६ग्राम प्रतिदिन २-३ बार।



'नीम की सींक जिस पर पत्ते लगे हुए होते हैं, दमा, खाँसी, पेट के कृमि, पित्त, ज्वर और प्लेग के लिए लाभकारी वस्तु है।' - वनौषधि चन्द्रोदय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गम्भारी Gmelina arborea Roxb. VERBENACEAE.

152

ENGLISH NAME:- Shivan, Coomb tree. Hindi - Gambhari, Khamhar
PARTS-USED:- Whole Plant, Roots, Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:- A large deciduous tree, about 20 Meter high, twigs are pubescent leaves heart shaped, flowers yellow, drupe, fleshy.
TASTE:-Bitter, acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Lignan Gmelinol & Arboreol; Leaves: Luteolin, Apigenin Quercetin, Beta-Sitosterol, Isoarboreol, Gmelanon, Gummadiol, Palmiticacid, Oleicacid, Linoleicacid, Glucose, Xylose, Mannose, Arabinose, Galactose, Rhamnose, Stigmasterol, Stigmastanol, Compestrol and Butulinol.
ACTIONS:-Refrigerent, Demulcent, Laxative, Stomachic, Bitter tonic, galactogogue, anthelmintic.
USED IN:- Oedema, Fever, Cough, Gonorrhoea, Disease of oralcavity, Anti-dotal, Foetid discharge, Maggot in ulcer, Indigestion, it cures Dyscrasia, Piles; Fruits are useful in blood purification, Thirst, Tuberculosis, Disuria and Leucorrhoea, gastralgia, anasarca.

प्रचलित नाम- गम्हार

प्रयोज्य अंग-पंचांग, मूल तथा फल।

स्वरूप-महाकाय विशाल वृक्ष, औसतन २० मीटर ऊँचा, शाखाएँ श्वेताभ रोमश, पत्र हृदयाकार नुकीले, अभिमुखी किन्तु इन दोनों पत्तों में एक छोटा तथा एक बड़ा होता है। पुष्प पीले रंग के या रक्ताभ होते हैं। फल बेहड़े के समान लम्बे एवं अविष्ट होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इस वनस्पति में लिग्नान, मेलीनॉल तथा आरबोरीयॉल तत्व पाये जाते हैं। पत्रों में ल्युटियोलिन, एपिजैनिन, क्वेर सेटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, आइसोआरबोरीयॉल, मेलानोन, गम्मडीयोल, पामीटिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, ग्लूकोज़ झायलोज, मैनोज, एरेबिनोज, गैलेकटोज, रहामनोज, स्टीग्मास्टीरॉल, स्टीग्मास्टेनॉल, कम्पैस्टे रोल तथा व्युटुलिनोल।

गुण-दाह प्रशामक, शान्ति प्रदायक, उन्मादहर, मृदुरेचक, दीपन, तिक्तबल्य।

उपयोग:- शोथ, ज्वर, कास, सूजाक, मुखगत रोग, विषघ्न, गर्भप्रदर, मक्खी के लार्वीयुक्त व्रण, कुपचन, रक्तदोष, अर्श में लाभकारी। इसके फल रक्त शोधन में तथा तृषा, यक्ष्मा, मूत्रकृच्छ्र एवं श्वेत प्रदर में लाभकारी। खाज-खुजली में कोमल टहनियों के पत्र तथा अग्र भागों का रस मिश्री में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। पित्त ज्वर में इसके मूल का रस सेवन से लाभ होता है। दाह में दाहग्रस्त भाग पर पत्रों का रस लगाने से जलन कम होती है। मूत्र घात में इसके मूल को ठंडे जल में घिस कर इस जल का सेवन करने से लाभ होता है। रक्तातिसार इसके फलों का रस किंचित् अम्ल द्रव्य डालकर, मिश्री मिलाकर पिलाने से रक्तातिसार नष्ट हो जाता है। गर्भ सूखता हो या वायु के कारण शिशु सूखता जाता हो तो इसके

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फल एवं मुलैठी से सिद्ध किया हुआ घृत शिशु को मिश्री के साथ पिलाना चाहिए, गर्भ के शुष्क होने पर गर्भवती महिला को यह घृत खिलाना चाहिए। वात रक्त गंभारी तथा मुलैठी से सिद्ध किया हुआ तेल प्रयोग करने से वात रक्त नष्ट होता है। दाह एवं तृषायुक्त पित्तज्वर में इसके फल के गर्भ का क्वाथ ठंडा करके तथा मिश्री मिलाकर पिलाने से दाह, तृषा तथा ज्वर का शमन होता है। रक्तपित्त में इसके फल की मज्जा मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। शीत पित्त में इसके पके हुए फलों को सुखाकर बनाया हुआ चूर्ण दूध में मिलाकर पिलाने से शीत पित्त का नाश होता है। अंगुलिवेष्ट रोग में इसके सात कोमल पत्ते अंगुली पर लपेट कर बाँधने से लाभ होता है। माताओं में स्तन्य वृद्धि के लिये इसकी त्वचा तथा मुलैठी का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। सूजाक (अपसर्गिका मेह)में इसके पत्रों का स्वरस सेवन से लाभ होता है। गंभारी की काष्ठ से कृत्रिम अंग तथा स्टेथोस्कोप आदि साधन बनाये जाते हैं।

मात्रा- मूल त्वक क्वाथ-५०-१०० मि.ली.।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'क्षुधा निर्णुदति प्रज्ञां धर्मबुद्धिं व्यपोहति।
क्षुधा परिगत ज्ञानो धृतिं त्यजति चैव हा॥'-महाभारत

अर्थात्-भूख या क्षुधा ऐसी वस्तु है कि वह मनुष्य की बुद्धि चौपट कर देती है। उसकी धर्म भावना को मिटा देती है, भूख मनुष्य अपनी धीरज खो बैठता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Indian Cotton. Hindi - Kapas/Manva
PARTS-USED:- Root, Leaves, Fowers and Seeds.
DESCRIPTION:- A large shrub, about-4-5feet high. leaves are palmate, flowers yellow. with purple, centre; capsule rounded, seeds with two coats of hair
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Root Bark Contains: Colourless Acidic Resin, Dihydroxy benzoic acid Salicylic acid, Betain, Fattyacids, Cerylalcohol, Phytosterol, Sugars, Phenol, Seeds Contain: Oil odourless and Tasteless of light yellow colour which contains Glycerides, Fatty acids, Phospholipin, Phytosterol.
ACTIONS:-Leaves & Seeds: Carminative, Tonic, Nervinetonic, Galactogogue. Flowers: stimulant, Diuretic, Laxative (Oil). emollient, abortifacient, emmenogogue.
USED IN:-Bark of Root is used for Uterous contraction & Menstruation, Leucorrhoe; Seeds useful in in Galactogogue, Dysentery, Malarial fever, Hypochondriasis (Flowers), Leaves in Blood-dysentery.

प्रचलित नाम- कपास

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, पुष्प तथा बीज।

स्वरूप-यह लगभग चार फूट ऊँचा गुल्म, पत्र पंजाकार (३-७ खण्डी) उपपत्र युक्त, पुष्प पीतवर्णी फल-गोलाकार जिसके भीतर रुई में लिपटे हुए बीज होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- मूल की छाल में रंगहीन अम्लराल तथा डिहाइड्रोक्सि बेन्जोइक अम्ल, सेलिसिलिक अम्ल, बीटेन, वसा अम्ल, सेरील आलकोहोल, फायटोस्टीरोल, शर्करा फेनोल, इसके बीज में रंगहीन-स्वादहीन हल्के पीले रंग का तेल जिसमें ग्लिसराइड्स, स्नेहाम्ल, फोस्फोलिपिन तथा फायटोस्टीरॉल।

गुण- पत्र एवं बीज वायुनाशक, बल्य, मेधा बल्य, स्तन्यजनन, पुष्प उत्तेजक मूत्रल, मृदुरेचक (तेल)।

उपयोग- इसके मूल की छाल गर्भाशय संकोचक एवं आर्त्तवजनन, श्वेत प्रदर में लाभकारी। बीज का प्रयोग प्रसूता में दुग्धवर्धक, प्रवाहिका, शीतज्वर में इसके पुष्पों का शरबत मानसिक रोग में। पत्रों का उपयोग आमातिसार में लाभकारी। प्रवाहिका में इसके बीजों की चाय बनाकर देने से लाभ होता है। मानसिक रोगों में इसके पुष्पों का शरबत बनाकर देने से लाभ होता है। घाव में रुई को जलाकर घाव में भरने से रक्तस्राव रुकता है तथा घाव शीघ्र अच्छा हो जाता है। प्रसव के बाद इसकी छाल का क्वाथ पिलाने से गर्भाशय का संकोच होता है। श्वेत प्रदर में इसके मूल चावल के मांड के साथ सेवन से लाभ होता है। कुष्ठरोग में कपास के मूल की छाल तथा पुष्प को जल में पीसकर, कुष्ठग्रस्त भाग पर लेप करने से लाभ होता है। कर्ण स्राव में शाल वृक्ष के कांड की छाल का थोड़ा चूर्ण कान में डालकर उस पर कपास के कच्चे फल का

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रस, मधु के साथ टपकाने से, कर्णस्राव में लाभ होता है। क्षत जन्य तृषा में कपास के मूल का क्वाथ पीने से लाभ होता है। प्रदर में कपास के मूल को चावल की मांड के साथ पीसकर पीने से लाभ होता है। कफजन्य अतिसार में कपास तथा पीपल का स्वरस मधु में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। बिच्छू दंश में कपास के फल को अच्छी तरह घोट कर उसमें थोड़ा घी डालकर लेप कर बांध देना चाहिए, दंश की वेदना कम हो जाती है। सर्वप्रकार के शोथ में मूल सहित रुई वाला पौधा को जलाकर राख कर, इस राख से दुगने चावल को दूध में उबालकर, घी के साथ सेवन करने से लाभ होता है। ललाट (कपाल) का कुष्ठ मूल, छाल, पुष्प इन सबका क्वाथ तथा क्वाथ में खट्टी छाछ मिलाकर तेल को पकाना चाहिए, इस तेल का प्रयोग कपाल के कुष्ठ पर लगाने से लाभ होता है। पुत्र कामना के लिये कपास के कोमल फल सात दिन तक दूध में पीसकर महिला को पिलाया जाये (पुष्य नक्षत्र में) इससे पुत्र कामना पूरी होती है। गर्भपात के लिये बिनौले का प्रयोग किया जाता है, कपास के मूल की त्वचा का क्वाथ (प्रवाही सत) भी दिया जाता है। यह कष्टार्त्तव तथा नष्टार्त्तव में भी देने योग्य है। मूल त्वचा से गर्भाशय संकोचन अच्छा होता है। प्रवाहिका में बिनौले का फांट पिलाने से लाभ होता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



'खेत में नीम की खली डालने के ४५ दिन बाद से सूत्रकृमि की संख्या घटने लगती है तथा ७५ दिन पर सर्वाधिक कमी मिलती है।'

– नीम क्रान्ति

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परुषक/परुषकम् Grewia asiatica Linn. TILIACEAE.

154

ENGLISH NAME:- Asiatic grewia.Hindi - Phalsa

PARTS-USED:- Roots bark, Fruit and Leaves.

DESCRIPTION:- A medium tree or large shrub with gray and rough bark leaves ovate, sub-orbicular, acute stipules with Serrae margin; Howers reddish-yellow; fruid-red-globose 6-8 mmindiom. fleshy.

TASTE:-Sour (Fruit), Bitter, acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Lupeol Lupenon, Betulin, Friedelin, Taraxasterol, Beta-Amyrin, Grewionol, Glucose of delphinidin & cyanidin;Quercetin, Kaempferol and Amino acids & Citric acid, Vitamin-C.

ACTIONS:-Fruits: Cooling, Sweet Astringent, Demulcent, Appitizer, Antithirst, tonic, aphrodiriac

USED IN:- Ripe refrigerant fruits are: is stomachic. Appitizer and cures Oedema, Leaves Applied externally on: Pustular eruptions, Bark of Root in Rheumatism. heart and blood disorders, fever, diarrhoea, strangury

प्रचलित नाम- फालसा

प्रयोज्य अंग-मूल की छाल, फल एवं पत्र।

स्वरूप-लघु वृक्ष या बड़ा क्षुप, छाल घूसर रंग की खुरदरी पत्र उपपत्र युक्त, पत्र किनारी आरी समान दंतुर पत्ते आधार की तरफ तिरछे होते हैं। पुष्प पीतवर्णी तथा झुमको में होते हैं

स्वाद-आम्ल (फल)

रासायनिक संगठन-इसमें ल्यपियॉल, ल्युपिनोन, बेटयुलिन, फ्रे डीलिन, टैरेक्सास्टीरोल, बीटा-ऐमिरीन, ग्रेवियानोल, डेल्फीनीडीन एवं सायनीडीनका ग्लूकोज, क्वेरसेटिन, किम्फेरॉल तथा एमिनो अम्ल, सिट्रिक अम्ल तथा विटामिन-सी तत्व पाये जाते हैं।

गुण-फल शीतल, ग्राही, प्रशामक, रुचिकर, तृषा शामक।

उपयोग- पके हुए फल रुचिकर एवं शोथ शामक, दीपन । पत्रों का बाह्य प्रयोग छोटे-छोटे फोड़े फुन्सियों पर लाभकारी। मूल की छाल आमवात में लाभकारी। दाह प्रशमन के लिए-पके हुए फल मिश्री के साथ सेवन से लाभ। हृदय रोग तथा पित्तविकार में पके हुए फलों का रस जल में मिलाकर उसमें सोंठ तथा मिश्री का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। मधुमेह में इसके कांड की अंतरछाल को जल में भिगोकर, छानकर पीने से लाभ होता है। गले के रोहिणी रोग में इसके फल के क्वाथ से गरारे कराने से लाभ होता है। मूढ गर्भ में नाभि, वस्ति तथा योनि पर फालसे मसल कर जल में पीसकर लेप करना चाहिए। तृषा में फालसा मूल की त्वचा के प्रयोग से लाभ होता है। व्रणरोपण के लिए-इसके पत्रों को व्रण पर बाँधने से लाभ होता है। इसके फलों में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में होने के कारण शुक्रवर्धक होते हैं। पके हुए फल मधुर शीतल रक्तशोधक, पौष्टिक तथा वातनाशक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। जबकि कच्चे फल कटु, अम्लीय, पित्तज, वातनाशक होते हैं।

फालसे का शर्बत बनाने की विधि एक लीटर जल में एक किलो फालसे के पके फल भिगोकर चार घंटे रखे रहने के पश्चात् इसी जल में अच्छी तरह मसल कर इसके कूचे निकाल कर बचे जल में मिश्री का चूर्ण मिलाने से शरबत तैयार हो जाता है। इसके सेवन से गरमी के कारण होने वाले फोड़े-फुन्सी, घमौरियाँ तथा लू जैसे रोग नष्ट होते हैं। रक्तपित्त में पके फलों का रस जल में मिलाकर मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

पके फलों के रस के प्रयोग से कफ तथा हिचकी जैसे रोगों में लाभ होता है। कंठरोग में इसके कांड की छाल का क्वाथ ठंडा होने पर सेवन से लाभ होता है। इसके फलों के रस के सेवन से मूत्रदाह, रक्त मूत्रता, प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

विस्फोट (पूय युक्त फुन्सियाँ) में इसके पत्र तथा इसकी कोमल कलियों को पीसकर लेप करने से शरीर पर हुए विस्फोट ठीक हो जाते हैं।

इसके कांड की छाल का क्वाथ पीने से आमवात ठीक हो जाता है। फालसे का रस मधु के साथ सेवन से धातु की कमजोरी दूर हो जाती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'नीम के फल से विधिपूर्वक निकाले तेल को गाय के दूध के साथ एक मास तक सेवन करने से मनुष्य के बढ़े हुए पलित (कुष्ठ विशेष) को नष्ट करता है।' -भैषज्य रत्नावली

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिल्वर ऑक Grevillea robusta A. Cunn. PROTEACEAE.

155

ENGLISH NAME:- Silver Oak.

PARTS-USED:- Root and wood.

HABIT:- A large tree young shoots ferruginous-tomentose with yellow flowers in clusters on woody branches.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contains: Phenol, Robustol, Rutin, Cinnamic acid, wood contains: Gravillol, Mono and bisnoricitol.

ACTIONS:-Diuretic.

USED IN:- Extract of aerial patrs is spasmolytic and CNS deprescent.

प्रचलित नाम- सिल्वर ऑक

प्रयोज्य अंग-मूल एवं काष्ठ।

स्वरूप-महाकाय वृक्ष, कोमल शाखाएँ मृदुरोमश, पुष्प पीले रंग के काष्टमय शाखाओं पर उत्पन्न होते हैं।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में फैनोल, रोब्युस्टॉल, रुटिन, सिनामिक अम्ल, इसके काष्ठ में ग्रैवीलोल, मोनो एवं बाइसनोरीस्टॉल तत्व पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल

उपयोग- इसके हवाई भागों का सत्व उद्वेष्टन निरोधी तथा केन्द्रीय नाड़ी संस्थान को सक्रिय करता है।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेषश्रृंगी (मधुनाशिनी) Gymnema sylvestre RBr. ASCLEPIADACEAE

156

ENGLISH NAME:- Small Indian Ipecacuanha. Hindi - Gurmar

PARTS-USED:-Whole Plant.

DESCRIPTION:- A large woody much branched extensive climber, pubescent; Leaves opposite, flowers small yellowish.

Taste:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaves Contains: Gymnemic acid, Quercitol, Anthraquinon, Saponin, Calcium oxalate.

Actions:-Astringent, Diuretic, Liver tonic, Cardiotonic and Uterintonic.

USED IN:- Diabetes, Cough, Asthma, Amenorrhoea, Increases insulin in blood and oxidised glucose.

प्रचलित नाम- गुड़मार

प्रयोज्य अंग- पंचांग

स्वरूप-यह एक काष्टीय चक्रारोही लता जो फैली हुई होती है। इसकी शाखाएँ रोमश होती हैं। पत्ते अभिमुखी मृदुरोमश अग्र भाग की तरफ से नोकदार होती है। पुष्प छोटे-छोटे पीतवर्णी होते हैं। फलियाँ कठोर नुकीली होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में जिम्नेमिक अम्ल, क्वेरसीटोल एन्थराक्वीनोन, सेपोनिन तथा कैल्शियम ओक्सेलेट तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, मूत्रल, यकृतबल्य, हृद्य, गर्भाशय बल्य।

उपयोग-मधुमेह में, कास, श्वासरोग, रजोरोध, रुधिर में इन्युलिन की मात्रा बढ़ाती है, ग्लुकोज का विघटन करता है। मधुमेह में इसके पत्रों को चबाने से या पत्र का चूर्ण (एक से दो माशा) गोदुग्ध या मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। सूजन तथा व्रण पर पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। सर्पदंश पर इसके मूल को जल में पीसकर पीना चाहिए एवं लेप करना चाहिए। इसके मूल में वामक तथा कफ नि:सारक शक्ति होती है। इसके पत्रों को चबाने के बाद जैसी भी कड़वी या मीठी वस्तु खायें, तो भी उसका कोई स्वाद नहीं लगता, इसी कारण अनेक वैद्यराजों का अभिप्राय है कि यह जड़ी-बूटी मधुमेह पर कार्य कर सकती है, लेकिन अभी तक किसी ने भी स्पष्ट विश्वासनीय अभिप्राय व्यक्त किया हो ऐसा कहीं भी पढ़ने या सुनने में नहीं आया। स्वाद नष्ट करने की शक्ति जिम्नेमिक एसिड के कारण हो सकती है। डॉ०म्हसकर के अनुसार यह मधुमेह में उपयोगी सिद्ध नहीं हुई है, लेकिन ग्लाइकोसुरिया में उपयोगी अवश्य है। गुड़मार का परीक्षण सिद्ध करता है कि इसमें मधुमेह नष्ट करने का गुण नहीं है।

मात्रा-पत्र चूर्ण- एक से दो माशा, क्वाथ-५०-१०० मि. ली. प्रतिदिन।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुवर्चला (श्वेत) Syn : Cleome gynandra Linn. Gynandropsis gynandra Briq cleomaceae Gynandropsis pentaphylla D.C. CAPPARIDACEAE

157

ENGLISH NAME:- Pandri-tilwan. Hindi - Hul-Hul

PARTS-USED:-Roots and Seeds.

DESCRIPTION:- Annual, erect branched, hairy, pungent aromatic herb; Leaves digitately 3-5 foliate, with long petioles; White flowers in Corymbose racemes, petals stalked, bracts leafy; siliqua elongate, striated; seeds reniform or orbicular

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- Essential oil, Seeds Contain:- Cleomin.

ACTIONS:-Seeds Stomachic, Digestive, Stimutant, Anthelmintic, Inflammatory. Roots: Stimulant, Diphrotic.

USED IN:- Intrinsic Haemorrhage, Asthma, Cough, Indigestion, Fever, Skin Eruptions, Leprosy, Polyuria, Dyscrasia, Genital disorder, Anaemia.

प्रचलित नाम- श्वेत हुर-हुर

प्रयोज्य अंग- मूल एवं बीज।

स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत, रोमश, तीक्ष्ण गंध वाला शाखीत क्षुप, पत्ते ३-५ पत्रिकायुक्त, पत्रिका की दोनों सतह रोमश एवं होते हैं। फलियाँ लम्बी तथा सिलिकुवा प्रकार की होती हैं। पत्रवृन्त लम्बा, श्वेत पुष्प।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें उत्पत तेल पाया जाता है। इसके बीज में क्लीयोमिन पाया जाता है।

गुण-पाचन, दीपन, उत्तेजक, कृमिघ्न, दाहजनक, मूल-उत्तेजक एवं स्नेहन।

उपयोग-रक्तपित्त, श्वासरोग, कास, अरुचि, ज्वर, विस्फोटक, कुष्ठरोग, प्रमेह, रक्त विकार, योनिरोग, पाण्डुरोग में लाभकारी। पत्रों को पीसकर त्वचा पर लेप करने से पीत हुर-हुर की अपेक्षा कम रक्तियोत्पादक। पंचांग का स्वरस (१/२-एक तोला) ज्वर में कमजोरी आने पर उत्तेजना लाने के लिये पिलाते हैं। कर्णशूल एवं पूतिकर्ण में इसके पत्रों का स्वरस कान में एक दो-बूंद डालने से लाभ होता है। ग्रंथियों को बैठाने के लिये इसके पत्रों का लेप करने से लाभ होता है। इसके पत्र पर्णनाल पर सूर्य के साथ घूमते हैं, इसी कारण इस पौधे को सूर्यभक्ता या रविप्रीता भी कहते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंध पलाशी/शठी Hedychium spicatum Ham ex Smith. ZINGIBERACEAE.

158

ENGLISH NAME:- Garland Flower. Hindi - Kapurkachri
PARTS-USED:-Rhizome.
DESCRIPTION:- A small herb with tuberous roots, leaves with acute sheathing leaf base, Flowers-white.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Rhizome Contains: Oil, Cineol, Linalool Cadinol, Elemol, Eudesmols alpha-Pinene, Beta-Pinene. Limunene, Camphor, Linalylacetate, Terpeneol, Borneol, Caryophyllene, Humulene, Terpenolene, Furanoid diterpene-Heydechenene.
ACTIONS:-Anti-Septic, Aphrodisiac, Hypotensive, Stomachic, Carminative.Astringent, Flatulance.
USED IN:- Hypoglycaemia, inflamation, Cough, Asthma, vomiting, Colic, Ulcer, Hysteria, Dental trouble, Vasodialator.

प्रचलित नाम- पूर कचरी

प्रयोज्य अंग- भूमिगत कांड (मूल स्तंभ)

स्वरूप-यह वनौषधि एक लघु क्षुप, इसकी जड़ें कंद प्रकार की जो भूमि में समतल बढ़ती हैं। इसके पत्ते जमीन से निकले हुए डठल पर, एक फूट लम्बे होते हैं। पुष्प सफेद एवं आकर्षक होते हैं। इसका मूल कंद सुगंधित होता है।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके मूल स्तंभ में तेल, सीनीयॉल, लिनालूल, कैडीनोल, एलीमोल, युडेस्मोलस, आल्फा-पीनीन, बीटा-पीनीन, लिम्युनीन, कैम्फर, लिनालिल ऐसीटेट, टर्पेनियॉल, बोरनीयोल, कैरियोफायलीन, ह्युमुलीन, टर्पेनोलीन फ्युरानोइडडाय टर्पेन-हेडीशीनीन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-पूतिरोधि, वाजीकरण, रक्तदाबह्रासी, दीपन, वातानुलोमन, ग्राही।

उपंयोग:-रक्त शर्करा प्रमाण कम करने में, शोथ, कास, श्वासरोग, वमन, शूल, व्रण में, आध्मान दंतशूल मूर्छा तथा श्वसनी विस्फारक। इसके कंद तीक्ष्ण, दाहक, कड़वा, शीतवीर्य, पित्तकर। इसके सेवन से कास, ज्वर, शूल गुल्म, रक्तरोग, वायु, त्रिदोष, अरुचि, दुर्गन्ध व्रण, आँव तथा वमन का नाश होता है। इसका प्रयोग सभी प्रकार के वमन में लाभकारी। इसका कपड़ छान चूर्ण को खरल में डालकर जल के साथ भली प्रकार घोट कर चने के कद की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लेनी चाहिए। प्रौढ़ों को ३-६ गोली तथा बच्चों को एक गोली जल के साथ खिलानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर दो-दो घंटे बाद तीन से चार बार देनी चाहिए।

मात्रा-१-४ माशा।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूर्यावर्त Helianthus Annuus Linn. ASTERACEAE (COMPOSITAE)

159

ENGLISH NAME:- Sun-flower.Hindi - Suraj mukhi
PARTS-USED:-Roots, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- A small annual herb of about 4-8 feet high; Leaves hairy, serrate; Flowers in large heads, yellow; fruits Cypsela without pappus.
TASTE:-Acrid-Bitte.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Protein, Fats, Carbohydrates, Fibres, Oil which contains Linolenic acid in very little amount. Plant contains: Ascorbic acid, Carotene, Citric, Melic acids; Leaves Contain: Malonic, Lactic, Succinic, Aconitic and Fumaric acid.
ACTIONS:-Seeds: Tonic, Diuretic, Expectorant, Leaves: Anti pyretic, Pungent, Rejuvinator.
USED IN:- Cough Dyscrasia; Fever, Dyspepsia, Abscess, Leucoderma, Polyuria, Disuria, Anaemia, Calculii Uterinepain; Flattulance, Diaarrhoea, Round worms.

प्रचलित नाम- सूर्यमुखी

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र तथा बीज।

स्वरूप-४-८ फूट ऊँचा एक वर्षायु क्षुप, पत्र रोमश, दंतुर, पुष्प पीतवर्णी जो बड़े मुंडक में, फल सिप्सेलाशल्क रहित होते हैं।

स्वाद-कटु-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में प्रोटीन, कार्बोदित, रेसाओं, तेल जिसमें, अत्य अल्प मात्रा में लिनालेनिक अम्ल, पंचांग में स्केर्बीक अम्ल, कैरोटिन, सिट्रीक, मौलिक अम्ल, पत्रों में मैलोनिक, लैक्टिक, सक्सीनिक, एकोनिटिक तथा फ्युमेरिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-बीज-बल्य, मूत्रल, कफनि.सारक, पत्र-ज्वरघ्न, तीक्ष्ण, रसायनोपयोगी, स्वर्य लघु, रुक्ष, सारक।

उपयोग-कास, रक्तदोष, ज्वर, अग्निमांद्य, विस्फोट, श्वित्र, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, अश्मरी, योनिशूल तथा उदराध्मान, अतिसार तथा गोल कृमियों में। बच्चों के उदरशूल तथा उदराध्मान में इसके फूलों के रस की दस बूंदें दूध में डालकर पिलाने से लाभ होता है। बिच्छू के विष में इसके पत्रों के चूर्ण का नस्य एवं जल में पीस कर लेप करना चाहिए या ताजे पत्रों को मसल कर सूंघने से बिच्छू का विष उतर जाता है। रेचन के लिए इसके बीजों के तेल की एक बूँद नाभि पर गिराने से रेचन क्रिया होकर दस्त साफ होता है। अतिसार में कच्चे दस्त होते हों या प्रवाहिका के कारण मरोड (पेचिश) वाले दस्त होते हों या उदरशूल हो तो सूर्यमुखी के सूखे हुए पत्तों का शाक दही तथा खट्टे अनार के रस में मिलाकर तथा पका कर खिलाना चाहिए। सूजन (शोथ) में सूर्यमुखी के पत्रों का शाक लाभकारी है। वातपित्तानुग श्वास में इसके पंचांग का चूर्ण त्रिकटु, दूध तथा घी के साथ खिलाकर तथा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके पश्चात् चावल तथा घी खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

योनि दाह में इसके मूल को चावल की मांड में घिस कर पिलाने से योनिशूल में लाभ होता है। छाती में जकड़न हो गयी हो, तो इसके ताजे पत्रों के रस में हींग मिलाकर पिलानी चाहिए।

कान में कृमि पड़े हों, तो इसके पत्रों के स्वरस को थोड़ा-सा त्रिकटु मिला थोड़ा गुन-गुना कर कान में एक से दो बूँद डालने से कीड़े मर जाते हैं। अश्मरी में इसके मूल को गाय के दूध में पीसकर पिलाने से तीव्र अश्मरी निकल जाती है। सूर्यमुखी के बीजों को अंकुरित कर खाया जा सकता है, इसमें कोलिस्ट्रॉल कम करने का गुण है। दुष्ट व्रणों के लिए इसके पत्रों के क्वाथ से धोने से लाभ होता है।

इसका रोपण आरोग्य शास्त्र की दृष्टि से बहुत ही महत्त्व का है। सूर्य की किरणें जहाँ नहीं पहुँचती वह स्थल कभी भी निरोगी नहीं रह सकता यह बात तो निर्विवाद है। ऐसे स्थलों में सूर्यमुखी के पौधे उगाये जाते हैं, तो रोग दूर होकर हवा शुद्ध हो जाती है। इस तरह का उदाहरण दक्षिण अफ्रीका तथा यूरोप के अनेक देशों में जो दूषित हवा के कारण रोगग्रस्त बन चुका था, वहाँ पर संशोधनकर्त्ता डॉक्टरों ने सूर्यमुखी के पौधों का रोपण करवाया, जिसका फल यह हुआ कि वहाँ पर हो रही बीमारियाँ नष्ट होकर वहाँ के लोग आरोग्य वाले हो गये।

ऐसे उत्तम गुण वाला पौधा होने के कारण अपने घर के सामने १०-१५ पौधे अवश्य रोपित करने चाहिए। यह पौधे रोग उत्पन्न करने वाली, नमी वाली तथा दुर्गन्ध युक्त हवा का शोषण करने की शक्ति रखती है। हवा शुद्ध होती है, मलेरिया, ज्वर, संधिवात तथा नमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारिवा/आस्फोता Hemidesmus indicus RBr. ASCLEPIADACEAE.

160

ENGLISH NAME:- Indian sarsaparilla. Hindi - Anantmool/Safed Sarivan
PARTS-USED:-Roots.
DESCRIPTION:- A perennial twiner, nodes thickened, leaves variegated, elliptic to lnear lanceolate whitish along vrins flowers small green outside and purple inside.
TASTE:-Bitter, Sweet
CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contain: Essential oil, Enzymes, Saponin, Hemidester, Hemidesmol, B-sitosterol, Lupeol, Tetracyclictriserpene, Alcohol, Resin acid, Vasaacid. Tanins.
ACTIONS:-Anti bacterial, Antifungal, Antiviral, Tonic, Diuretic, Blood purifier, Anti-inflammatory, demuleent, alterative, diphoretic
USED IN:- Skeletal Fracture, Cancer, Fever, Skindisease, Blood puri fication, Leprosy, Chronic Rheumatism, Leucorrhoea, Diarrhoea, Polyuria, Asthma, Cough, dyspepria

प्रचलित नाम- अनंतमूल/कपूरी
प्रयोज्य अंग- मूल
स्वरूप-चिरस्थायी आरोहणशील फैलने वाली एक पतली लता, पर्व फूली हुई पत्र भिन्न वर्णी अभिमुखी किन्तु दूर-दूर जो ऊपर से चिकने गहरे हरे रंग के, किन्तु नीचे की सतह हल्के रंग की नोकदार होते हैं। पुष्प छोटे बाहर से हरितवर्णी जबकि भीतर बैगनी रंग, जो पत्र के कोण में गुच्छों में आते हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसके मूल में उड़नशील तेल, उत्सेचक, सैपोनिन, हेमीडीस्टेरोल, हेमीडेस्मोल, बीटा-सिटोस्टीरोल, ल्युपीयाँल, टैट्रासायक्लिक ट्रायसर्पेन एल्कोहोल, रेसीन अम्ल, वासा अम्ल, टैनिन्स तत्व पाये जाते हैं।
गुण-कीटाणुनाशक, फंफुंदी नाशक, विषाणुघ्न, बल्य, मूत्रल, रक्तशोधन, शोथहर।
उपयोग-अस्थिभग्न, कैन्सर, ज्वर, चर्मरोग, रक्त शोधन, कुष्ठरोग, जीर्ण आमवात, प्रदर, अतिसार, प्रमेह, श्वासरोग तथा कास में लाभकारी। ताजे मूल का क्वाथ उत्तम रक्त शोधक है। नेत्राभिष्यंद में इसका दुग्ध नेत्रों में डालते हैं। इसके मूल को पीसकर व्रण पर इसका लेप करने से लाभ। बच्चों की दुर्बलता एवं पाण्डुरोग में इसके मूल तथा वायविडंग को पीसकर चूर्ण बना लेते हैं, इसका सेवन अल्पमात्रा में करने से लाभ होता है। अर्श में एक मृत्पात्र सारिवा मूल के चूर्ण के साथ दूध से दही जमाकर, उसका खट्टा या अनम्ल तक्र बना खिलाने से अर्श का नाश होता है। व्रण शोधन के लिये इसके पत्रों का क्वाथ पीने से लाभ होता है। श्वासरोग (दम) में सारिवा मूल के क्वाथ से सिद्ध घी का सेवन करने से लाभ होता है। नेत्र रोग में सारिवा मूल के क्वाथ से आँख में सेचन करना चाहिए, इससे नेत्र की फलीक्षत नाश होती है। वात रोगों में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सारिवा मूल और अडूसा पत्र का दूध के साथ नित्य सेवन करने से सभी वातजन्य रोगों में लाभ होता है। पीपल की छाल, कंट विहीन कल्हार और सारिवा मूल इन तीनों का चाय के समान फांट बनाकर सेवन करने से पामा, कण्डु, फोड़े-फुन्सी तथा उष्ठता के विकारों में लाभ होता है। अश्मरी एवं मूत्र कृच्छ्र में (ऐन्सली के अनुसार) सारिवा मूल का चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। सारिवा के मूल केले के पत्र में रखकर, सेककर, उसके साथ जीरा, मिश्री, घी मिलाकर गर्भाशय एवं मूत्राशय के रोगों में सेवन से लाभ। दुर्बलता, संधिवात, फिरंग, त्वचादोष में इसके मूल अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। सारिवा वनौषधि एक संग्राही तथा रक्तपित्त प्रशामक है, रक्त दोष के कारण कुपचन, अजीर्णता, संग्रहणी तथा पाण्डुरोग जैसे रोग होने पर इस वनौषधि के मूल का सेवन अति लाभकारी, सारिवा के सेवन से पचन क्रिया बढ़ती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, रक्तदोष तथा पित्त दोष का नाश होता है। इन रोगों में सारिवा मूल का चूर्ण प्रातः एवं सायं १/४-१/४ तोला दूध के साथ नियमित सेवन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त इसके प्रयोग से प्रवाहिका का भी नाश होता है। सारिवा मूल स्तन्य शोधक होने के कारण मातृ दुग्ध को बढ़ा कर शुद्ध करता है। इसलिए जिन महिलाओं के बच्चे कमजोर तथा बीमार रहते हों, उन महिलाओं को सारिवा मूल का चूर्ण प्रातः एवं सायं १/४-१/४ तोला सेवन करना चाहिए।

मात्रा-चूर्ण- तीन से छः ग्राम। फांट-५-१० तोला।



'नीम का खाया और बड़ों का सिखाया। शुरू में कड़वा लगता है बाद में मीठा॥' - नीम क्रान्ति

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जपा/त्रिसंध्या Hibiscus rosa-sinnsis Linn. MALVACEAE

ENGLISH NAME:- Shoe-Flower. Hindi - Gudhal

161

PARTS-USED:-Root, Stem, Leaves, Flower and Flowerbuds.

DESCRIPTION:- A perennial, shrub with woody branches, leaves oate acute, shining green. dentate, Flowers red with exerted staminal tube, stigma 5. fruti - never set.

TASTE:-Acrid-Mucilaginous.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Leaf Contains: Alkaloids, Glycosides, Reducing sugars, Sterols, Resins, Beta-sitosterol, Roots Contain: Mucilage, Fibers; Flowers: Fat, Calcium, Phosphorus, Thiamine, Riboflavin, Ascorbic acid, Cyanin chloride.

ACTIONS:-Laxative, Analgesic, Diuretic, Demulcent, Antipyretic, cardiac, emolient, aperient, refrigerant, aphrodiriac, emmanagogue, contraceptive

USED IN:- Cough, Fever, Menorrhagia, is anti-inflammatory, Muscle relaxant, Anti-bacterial, Antifungal, Antiviral, Antispasmodic; Also useful in Polyaria, Piles, Leucorrhoea. gonorrhoea, catarrh

प्रचलित नाम- गुड़हल

प्रयोज्य अंग- मूल, कांड, पत्र, पुष्प तथा पुष्प कलिका।

स्वरूप-यह एक आकर्षक छोटा काष्टीय गुल्म है, जो औसतन ४-८ फीट ऊँचा होता है। इसके पत्ते सरल, चमकीले एवं दंतुर होता हैं। फूल रक्तवर्णी इसके प्रजनन अंग पुष्प नलिका से बाहर निकले हुए होते हैं।

स्वाद-कटु-श्लेष्मल।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में एल्केलायड्स, ग्लायकोसाइड्स, प्रह्लासक शर्करा, स्टीरॉल्स, राल, बीटा-सिटोस्टीरोल, मूल में ष्लेष्मल, रेषा, पुष्प में स्निग्ध, कैल्शियम, फोस्फोरस, थायमाइन, रीबोफ्लेविन, एस्कोर्बीक अम्ल, सायनीन क्लोराइड तत्व पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचक, वेदना शामक, मूत्रल, प्रशामक, ज्वरहर।

उपयोग-कास, ज्वर, अत्यार्त्तव, यह शोथहर, स्नायु विश्रामक, कीटाणुनाशक, फफूंदीनाशक, विषाणुनाशक, उद्वेष्टहर, यह प्रमेह, अर्श तथा श्वेत प्रदर में लाभकारी। गर्भ धारण के लिये- गुड़हल के मूल को गाय के दूध में पीसकर तथा उसमें बिजोरा के बीज का चूर्ण मिलाकर मासिक ऋतुस्राव के समय पिलाने से गर्भधारण में लाभ होता है। गुड़हल का मूल खांसी में लाभकारी। इसके फूल की १०-१२ कलियाँ दूध में पीसकर पिलाने से पथ्य में दूध देने से प्रदर अच्छा होता है। केश काले करने के लिये भृंगराज के पुष्प तथा गुड़हल के पुष्प भेड़ के दूध में पीसकर लोहे पात्र में भरना चाहिए, सात दिन के बाद निकाल कर भृंगराज के पंचांग के रस में मिलाकर गर्म कर रात को बालों पर लगाकर कपड़ा बाँधना चाहिए, प्रातः सिर धोने से बाल काले हो जाते हैं। गंजापन दूर करने के लिये(इन्द्र लुप्त) गुड़हल के पुष्पों को काली गाय के मूत्र में पीसकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंजे सिर पर लगाने से गंजापन दूर होता है।

श्वित्र रोगों में गुड़हल के चार पुष्प प्रतिदिन एक वर्ष तक सेवन करने से श्वित्र रोग मिट जाता है। फिरंग व्रण में इसके पत्रों के क्वाथ से फिरंग व्रण धोने से शीघ्र व्रण रोपण होता है।

गुड़हल का शर्बत इस के एक सौ पुष्प लेकर शीशे की बरणी में डालकर, इसमें बीस नींबू का रस डालें और ढक दें। रात भर बन्द रखने के बाद प्रातः इसे हाथ से मसलकर कपड़े से इस रस को छान लें, इसमें ८० तोला मिश्री, २० तोला गुले गाजबान का अर्क, २० तोला, मधुर अनार का रस, २० तोला संतरे का रस मिलाकर, मंद अग्नि पर पका लें। चासनी शर्बत सदृश हो जाय, तो उतार कर कस्तूरी दो रत्ती, अम्बर तीन माशा, केसर एक माशा तथा गुलाब अर्क में मिलाकर अच्छी तरह हिलायें। यह शर्बत हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति देता है तथा उन्माद, पैत्तिक ज्वर और प्रदर में लाभकारी होता है।

मात्रा-पत्र चूर्ण- एक से दो माशा।
क्वाथ-५०-१०० मि. ली. प्रतिदिन।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'हल्के बुखार में नीम की छाल का काढ़ा प्रभावी ज्वरनाशक है। सड़े घाव में जब सभी दवायें बेकार हो जायें, तो नीम-पत्ती की पुलटिस अधिकतर घाव भरने और स्वस्थ करने में बहुत लाभकारी है। देशी लोग इसका बीज खरीदकर तेल निकालते हैं, जो दिया जलाने के काम आता है।'- सर्जन एस.एच.बाऊने, होशंगाबाद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुटज Holarrhena antidysenterica Wall. APOCYANACEAE

ENGLISH NAME:- Tellicherry Bark.

Hindi - Kura, Kureya, Dudhi Seed - Indrajan

162

PARTS-USED:-Root, Stembark and Seeds.

DESCRIPTION:- A medium sized tree, 30-40 feet high or shrub rough bark, white flowers in cynae, follice glabrous, mealy not adenate at tip.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Root Bark Contains: Seventeen alkaloids including Holacetine, Connesine; Seeds: Essential oils and Alkaloids (Conessine & kurchicine); Stem bark: Connesine, Holarrhenine, Holarrhimine, Kurchine, Kurchicine, Conamine & Conimine.

ACTIONS:-Astringent, Carminative, Antibillous Digestive, constipative, antidysenteric refrigerant, anthelmintic, antiperiodic, aphrodiriac, febrifuge.

USED IN:- Diarrhoea, Dysentery, Haemorrhoid, Rheumatic arthritis, Skin disease, Wound healer and Blood purifier, Also useful in: Chronic Fever, Piles, Digesitive disorder, Asthma, flatulence, malaria, bronchopneumonia.

प्रचलित नाम- कूड़ा

प्रयोज्य अंग- मूल, कांड की छाल तथा बीज।

स्वरूप-३०-४० फूट ऊँचा मध्यम कद का वृक्ष, छाल खुरदरी, इसके पत्ते चौड़े नुकीले चिकने या मृदुरोमश, प्रधान शिराएं १०-१४ युग्म में होती है। पुष्प सफेद रंग के फलियाँ दो-दो एक साथ किन्तु एक-दूसरे से मुक्त होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल की छाल में सत्रह क्षारभ-होलासेटिन, कोनेसाईन सहित, इसके बीज में उत्पत तैल तथा क्षारभ (कोने साइन तथा कुर्चीसाईन) इसके कांड में कोने साईन, होला रहनाईन, होलारहमाईन, कुर्चीसाईन, कोनामाईन एवं कोनीमाईन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, वातानुलोमन, पित्तशामक, पाचन।

उपयोग-अतिसार, प्रवाहिका, रक्तार्श, आमवात संधिशोथ, चर्मरोग, व्रणरोपण के लिये, रक्त शोधन में, यह जीर्ण ज्वर, अर्श, पाचन संस्थान के विकारों तथा श्वासरोग में लाभकारी। जीर्ण ज्वर में इसके कांड की छाल रातभर जल में भिगोकर प्रातः छानकर सेवन करने से लाभ। अतिसार में कांड की छाल का रस मधु के साथ मिलाकर सेवन से लाभ। अश्मरी में मूल की छाल को दही में घिस कर सेवन से लाभ। दंतशूल में छाल के क्वाथ से कुल्ला करने से लाभ होता है। यक्ष्मा वाले को अतिसार हुआ हो कुटज की छाल एवं सोंठ का चूर्ण चावल की मांड में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। कुष्ठ रोग में इसकी छाल को जल में पीसकर लेप करने से लाभ होता है। रक्तपित्त में इसकी छाल के कल्क से सिद्ध किया हुआ घी का सेवन लाभकारी। पित्तातिसार में इसके बीज चार तोला जल में उबाल कर इस उबले हुए जल में मधु मिलाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिलाने से लाभ होता है। रक्तातिसार में इसकी छाल से सिद्ध किया हुआ घृत का सेवन से लाभदायी। व्रण रोपण में इसकी छाल का क्वाथ अति लाभकारी।

प्रमेह में इसके पुष्पों का शाक या चूर्ण का सेवन लाभकारी। विस्फोटक में इसकी छाल को चावल के पानी में पीसकर लेप करने से लाभ होता है। इसकी ताजी छाल का प्रयोग अधिक लाभकारी।

रक्त प्रवाहिका में इसकी छाल विशेष गुणकारी होती है। इसलिये ताजी छाल को छाछ में पीसकर सेवन करने से रक्त प्रवाहिका में तुरंत लाभ होता है। इसके साथ-साथ ज्वर में लाभकारी।

छाल की मात्रा प्रौढ़ों के लिए एक से दो तोला। बच्चों के लिए- १/४ से १/२ तोला (क्वाथ बनाकर सेवन करना चाहिए) कुटजपुट पाक इसकी ताजी छाल को चावल की मांड में चटनी जैसे पीसकर इसका गोला बनाकर इस पर जामुन के पत्र लपेट कर तथा एक अंगुली मोटा मिट्टी का स्तर करने के पश्चात् मिट्टी सूख जाये, तब गोबर के कंडों के बीच रख जला देना चाहिए। जब गोले की मिट्टी भलीप्रकार लाल हो जाय, तब गोले को बाहर निकाल कर पत्र तथा मिट्टी हटा कर खादी के कपड़े के टुकड़े में गोला रख कर जोर से दबाकर रस निकाल लेना चाहिए। इस रस में मधु मिलाकर सेवन से रक्त प्रवाहिका, हरस (बवासीर), संग्रहणी वगैरह में लाभ होगा। आंत्र यक्ष्मा में अत्यंत लाभकारी। इस वृक्ष को प्रत्येक गाँव में लगाना चाहिए। यह उत्तम औषधि सम्पति है।

मात्रा-छाल का चूर्ण- एक से चार माशा, छाल का क्वाथ-१-४ तोला।

●●●

'दौरा, मूर्छा आदि रोकने के लिए मुख्यतया नीम का तेल पिलाते हैं, बाह्य रूप में इसे तारपीन तेल की तरह काम में लाते हैं।'

-वी.उम्मेगुडियन, मेट्रापोलियम, मद्रास

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जातिका/जाई Jasminum grandiflorum Linn. OLEACEAE

163

ENGLISH NAME:- Common Jasmine. Hindi - Madhumalti
PARTS-USED:-Whole plant, Leaves and Flower.
DESCRIPTION:- A large scandent glabrous shrubby twiner, flowers white with purple ting out side.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Benzylacetate, Benzylbenzoate, Benzaldehyde, Benzylalcohol, Eugenol, Geraniol, Cis-Jasmone, Linalyl alcohol, Nerol, Nerolidol, Indole, Benzoic acid, Peresol, Methyl Jasmonate, Benzyl cyanide, Cinnamyl, Benzoate, Vanillin, Myrcene, Ascorbic acid, Jasminine (Alkaloid.)
ACTIONS:-Cooling, Diuretic, Deobstrent, Antileprotic, Wound healing.
USED IN:- Stomatitis, Opthalmia, ulcer, Skindiseases, Emmenogogue, Anthelmintic, Flowers: Applied externally in: Headache & Skindisease, Leaves: Chewed in Apthae and ulcertaion in mouth.

प्रचलित नाम-चमेली/मालती

प्रयोज्य अंग-पंचांग, पत्र तथा पुष्प।

स्वरूप-यह एक विशाल फैलने वाली आरोही लता है। इसकी शाखाएँ धारदार एवं चिकनी होती हैं। पत्ते अभिमुखी, संयुक्त, पत्रक ७-११ जबकि अंतिम अग्र पत्रिका बड़ी होती है। पुष्प श्वेत एवं सुगंधित होते हैं। पखुड़ियों की बाह्य सतह गुलाबी या बैगनी छींटे वाली होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- वनस्पति में बैन्जिलऐसीटेट, बैन्जिल बैन्जोऐट, बैन्जैल्डीहाइड, बैन्जिल एल्कोहोल, युजीनॉल, जिरानियॉल, सिस-जैस्मोन, लिनोलिल एल्कोहोल नेरोल, नेरोलीडोल, इन्डोल, बैन्जाइक अम्ल, पेरेसोल, मिथाईल जैस्मोनटे, बैन्जील सायनाइड, सिनामिल, बैन्जोएट, वैनीलिन, मिरसीन, एस्कोर्बीक अम्ल, जैस्मीनाईन(क्षारभ)।

गुण-शीतल, मूत्रल, स्रावशामक, कुष्ठघ्न, व्रणरोपण।

उपयोग-मुखगत व्रण, नेत्र चिकित्सा में, व्रण, चर्मरोगों, आर्त्तवजनन, कृमिघ्न, पुष्प-बाह्य प्रयोग शिर:शूल तथा चर्म रोगों में-इसके मूल का क्वाथ दूध के साथ सेवन से लाभ। (१) पूति कर्ण में पत्रों से बनाया हुआ तेल कान में डालने से लाभ होता है। (२) इसके पत्रों का रस गाय के मूत्र में मिलाकर गरम कर कान में डालने से लाभ होता है। मुखगत रोग में इसके ताजे पत्रों को चबाने से लाभ होता है। (३) मूत्रदाह तथा उष्णता में इसके मूल को बकरी के दूध में पीसकर सेवन से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वार्षिकी/मुदुरा Jasminum sambac Ait. OLEACEAE.

164

ENGLISH NAME:- Arabian Jasmine Hindi - Mogra
PARTS-USED:-Whole plant, Flowers, Leaves and Roots.
DESCRIPTION:- A scandent shrub, young shoots are pubescent, leaves simple opposite, Flowers white & scented.
TASTE:-Bitter, Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Limonene, Linalool, Myrcene, Benzyl acetate Methylbenzoate, Methylsalicylate (oill) Jasmine, Jasminine, Kaempferol, Quercetin, Rutin, Alpha-Amyrin, Betulin, Betulinic acid, Friedelin, Lupeol, Oleanicacid, Ursolic acid, Beta-sitosterol, Sambacin, Sambacolignoside, Sambacoside, Manitol and Sucrose.
ACTIONS:-Cooling, Aromatic Sweet, Aphrodisiac, Antibillous, Wound healer, Anti-in flammatory, Uterous stimulant.
USED IN:- Stomatitis, Ulcers, opthalmia, Emmenagogue, Paste of leaves and Flowers: Externally applied on breast abscess, Essential oil of Flowers: useful in Ear, Nose and Mouth.

प्रचलित नाम- मोगरा/मोतिया

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल तथा पुष्प।

स्वरूप-झाड़ीनुमा गुल्म कोमल शाखाएँ रोमश पत्र सरल, अभिमुखी, चिकने एवं पतले जिनमें ४-६ जोड़ी स्पष्ट शिराओं की होती है। पुष्प सफेद एवं अति सुगंधित होते हैं।

स्वाद-तिक्त-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसमें लिनोनीन, लिनालूल, मिरसीन, बैन्जील एसिटेट, मिथाईलबैन्जोऐट, मिथाइल सेलिसिलेट (तेल), जैस्माइन, जस्मीनीन, किम्फेरॉल, कवेरसेटिन, रुटिन, आल्फा-ऐमिरीन, बेटुलिन, बेटुलिनिक अम्ल, फ्रेडेलिन ल्युपीओल, ओलीनिक अम्ल, अर्सोलिक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरोल, सेम्बासीन, सेम्बेकोलिग्रोसाइड, सेम्बेकोसाईड, मेनीटोल एवं सुक्रोज तत्व पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, सुगंधित, मधुर, वाजीकरण, पित्तघ्न, व्रणरोपण, शोथघ्न, गर्भाशयोत्तेजक।

उपयोग-मुखगत व्रण में, व्रण, नेत्ररोग, अनार्त्तव जनन, पत्रों तथा पुष्पों का कल्क इसका बाह्य प्रयोग:-स्तन्यव्रण में लाभकारी। पुष्पों का सुगंधित उत्पत तेल कान, नाक तथा मुख में उपयोगी। प्रसूता के स्तनशोथ में इसके पुष्पों को पीसकर स्तन पर बांधने से दुग्ध स्त्राव बंद होकर स्तन शोथ में कमी होती है। इसके प्रयोग से दो दिन में ही दुग्ध स्त्राव बंद हो जाता है, प्राय: तीन दिन का समय लगता है। रक्त प्रवाहिका में मोंगरे की ३-४ पत्तियों को जल में पीसकर छानकर मिश्री मिलाकर दिन में २-३ बार सेवन करने से लाभ होता है। पुराने व्रण पर इसकी सूखी पत्तियों को पीसकर लेप करने लाभ होता है। अनार्तव एवं अनियमित अनार्तव में इसके मूल ३ माशा देने से लाभ।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्याघ्रैरण्ड/भद्रदन्तिका Jatropha curcus Linn. EUPHORBIACEAE

165

ENGLISH NAME:- Physic-nut/Purgingnut Hindi - Baghrenda, Ratanjot
PARTS-USED:-Root bark, Leaves, Stem, Seeds and Latex.
DESCRIPTION:- A large glabrous shrub, 10-12 feet high with milky latex; Leaves palmately loked, entire, broadly ovate; flowers in loose panicle, yellowish green fruit-ovoid, 4 cm; 3 carpelled
TASTE:-Acrid-sweet, pungent
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain: Amino acids, Arachid acid, Lionleic acid, Myrstic acid, Oleic acid, Stearic acid, Arabinose, Glucose, Rhamnose, Galactose, Xylose, Galact uronic acid, Beta-sitosterol, Leaves: Sucrose Vitexin, Compesterol, Triacontanol; Stem bark: Beta sitosterol, Beta-Amyrin and Taraxerol.
ACTIONS:-Purgative, Wound healing, Root: Carminative, Digestive & Astrigent. emetic, haemostatic
USED IN:- Latex: Lactagogue, styptic, Seedoil: Applied externally on Chronic Rheumatism. skin disease, Root bark: Applied in Rheumatism, useful in inflammation, Cough, Dyscrasia, Swellings, Tuberculosis; Twig used as Datun for Swelling gums; chronic dysentery, thirst, biliousness, anemia, fistula, ulcer

प्रचलित नाम-जंगली एरण्ड (बड़ी दंती)

प्रयोज्य अंग- मूल की छाल, पत्र, कांड तथा बीज, दुग्ध।

स्वरूप-यह वनौषधि १०-१२ फीट ऊँचा, चिकना लघु वृक्ष होता है। इसकी काष्ठ मुलायम, पत्ते पंजाकार (पाँच खण्ड) एवं चिकने होते हैं। पुष्प पीताभ वर्णी होते हैं। इसके अंगों को तोड़ने से सफेद दूध जैसा रस निकलता है।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में एमीनोअम्ल, एरेकीड अम्ल, लिनोलिक अम्ल, मिरस्टीक अम्ल, ऑलिक अम्ल, स्टीरीक अम्ल, एरेबिनोज, ग्लूकोज, रहामनोस, गैलेक्टोस झायलोज, गैलेक्टो युरोनिक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, इसके पत्रों में सुक्रोज, वाइटैक्सीन, कोम्पेस्टेरोल, ट्रायकोन्टानोल, कांड की छाल में-बीटा-सिटोस्टीरॉल, बीटा-एमिरीन तथा टेरेक्सेरोल।

गुण-अतिरेचक, व्रणरोपण, मूल-वातानुलोमक, पाचन, ग्राही।

उपयोग-इसका दुग्ध-स्तन्य जनन, रक्त स्तंभक, बीज का तेल जीर्ण आमवात एवं चर्मरोगों पर इसका बाह्य प्रयोग लाभकारी। इसके मूल की छाल-बाह्य प्रयोग आमवात में, इसके अतिरिक्त यह दाह, कास, रक्तदोष तथा यक्ष्मा में लाभकारी। इसकी टहनी-दातौन का प्रयोग सूजे हुए मसूड़ों पर लाभकारी। सूजे हुए मसूड़ों एवं मसूड़ों से बहते रक्त के लिये इसकी टहनी के रस की मालिश दिन में दो या तीन बार करने से लाभ होता है।

भगंदर एवं व्रण पर इसका तेल रुई में लगा इस रुई को व्रण एवं भगंदर वाले भाग पर दिन में दो या तीन बार लगाने से लाभ होता है।

उदरशूल में इसके मूल को मट्ठे में घिसकर थोड़ी-सी हींग डालकर इसका सेवन करने से लाभ होता है (प्रौढ़ों के लिये)

मात्रा-छाल का चूर्ण-एक से चार माशा। छाल का क्वाथ-१-४ तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्त व्याघ्रैरण्ड/द्रवन्ती Jatropha gossypifolia Linn. EUPHORBIACEAE

166

ENGLISH NAME:- Belly ache bush. Hindi - Baghrend
PARTS-USED:-Bark, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION- A bushy shrub 2-7 feet high, all parts covered with glandular hairs, Leaves are palmate, flowers scarle tred.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains: Alanine, Arginine, Cystine, Glycine, Leucine, Methionine, Valline, Linoleic acid, Oleic acid, Palmitic acid, Leaves: Apigenin, Vitexin, Isovitexin; Bark: Ceryl & Myricyl alcohol, Palmitone, Beta-Sitosterol; Root: Coumarino-Lignans, Jatrophalones A & B; Plant Contains: Gossypibetelene.
ACTIONS:-Emetic, Purgative, Stimulant, Wound healing (latex); Root: Astringent, Carminative & Digestive.
USED IN:- Emmenagogue, Adinitis, Worms infestation, Leaves: Locally applied in Carbuncles, Eczema & Itches, Latex & Seed oil: Externally applied on ulcer.

प्रचलित नाम-भैरण्डा/रतनजोत
प्रयोज्य अंग- छाल, पत्र तथा बीज
स्वरूप-यह एक झाड़ी नुमा २-७ फीट ऊँचा क्षुप, पत्ते ३-५ खण्डों में विभक्त, पुष्प रक्तवर्णी, पत्र किनारी, पत्रवृंत्त एवं उपपत्रों के ऊपर श्लेष्मोत्पादक ग्रंथि रोम होते हैं। इसी कारण पौधा स्पर्श करने पर चिपचपा लगता है।
स्वाद-कटु।
रासायनिक संगठन- इसके बीज में ऐलानाइन, आर्जीनाइन, सिस्टाइन, ग्लायसीन, ल्युसिन मिथ्योनीन, वैलाईन, लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल। इसके पत्रों में-ऐपीजेनीन, वाइटैक्सीन, आइसोवाइटैक्सीन, इसकी छाल में सेरिल एवं मियरीसिल एल्कोहोल, पामीटोन तथा बीटा-सिटोस्टीरॉल, मूल में कॉमरीनो-लिग्रान्स, जैट्रोफोलोन्स-ए तथा बी इस वनस्पति में गोसीपी बेटेलीन तत्व पाये जाते हैं।
गुण- वमन, अतिरेचक, उत्तेजक, व्रणरोपण (क्षीर) मूल-ग्राही, वातानुलोमक एवं पाचन।
उपयोग-आर्तवजनन, ग्रंथिदाह, कृमिरोग। पत्रों का बाह्य प्रयोग फोड़ा-फुन्सी, दादर, खाज-खुजली में लाभकारी। क्षीर एवं बीज का तेल-व्रण में लाभकारी। अजीर्ण अतिसार तथा उदरशूल में इसकी ३ से ५ से. मी. लम्बी ताजी जड़, ७ दाना काली मिर्च, थोड़ी हींग-इन सबको पीसकर इसका रस मट्ठे के साथ पिलाते हैं। व्रण पर इसका दुग्ध लगाने से कोलोडिअन की तरह पतला स्तर व्रण पर बन जाता है, जिससे रक्त स्राव रुकता है। दाद, छाजन पर इसके दुग्ध या बीज का तेल लगाने से लाभ होता है। मसूड़ों में खून आना-पत्तों के क्वाथ का कुल्ला करने से लाभ, दतुअन भी लाभकारी। प्रसूता में दुग्धवृद्धि के लिये इसके पत्रों का जरा सा गरम कर स्तन पर बांधने से या पत्रों के क्वाथ से सेंक कर इन्हीं पत्तों को स्तन पर बांधने से दुग्ध वृद्धि होती है। इसके पत्रों का रस रक्तस्राव रोकने वाला है। अजीर्ण अतिसार में इसका मूल त्वक्, हींग के साथ प्रयोग करने से लाभ होता है। मूल की त्वचा संधिवात में अत्यंत उपयोगी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हपुषा Juniperus communis Linn. CUPRESSACEAE

167

ENGLISH NAME:- Juniper berry Hindi - Hauber Jhair
PARTS-USED:-Leaves and Stem bark.
DESCRIPTION:- Small erect tree, compact, evergreen, leaves are linear, tapering sharp pointed.
TASTE:-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Essential oil, Resin, Sugars, A bitter substance Janiperin, Oxalic acid and Some organic acids, Flavon, Umbellifaron, Rutoside, Junions.
ACTIONS:-Aromatic, Diuretic, Carminative Anti-flatulance, Digestive, Stimulant Blood purifying.
USED IN:-Dropsy, Liver Spleenomegaly, Rheumatism, Arthritis, Asthma, Bronchitis, Stomatitis, Chronic, Gonorrhoea, Leucorrhoea, Emmenogogue, Diabetes and Skin disease.

प्रचलित नाम- हाऊबेर/आरार
प्रयोज्य अंग- पत्र तथा कांड की छाल।
स्वाद-कषाय रस युक्त।
रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तेल, राल, मधु, शर्करा, एक तिक्त पदार्थ-जुनीपेरीन, ऑक्सेलिक अम्ल तथा कुछ ऑरगेनिक अम्ल, फलेवान, अम्बेलीफेरोन, रुटोसाइड तथा जुनीयोन्स तत्व पाये जाते हैं।
गुण-सुगंधित, मूत्रल, वातानुलोमक, आध्मानहर, पाचन, उत्तेजक, रक्त शोधन।
उपयोग-उदर रोग, यकृत-प्लीहा विकारों में, आमवात, संधिशोथ, श्वासरोग, श्वसनिक शोथ, मुखगत व्रण, पुराना सोजाक, श्वेत प्रदर, अनार्त्तव जनन, मधुमेह तथा चर्मरोग में लाभकारी। आध्मान, शूल तथा पाचन में इसका प्रयोग मद्यसार के साथ लाभकारी।

कटिशूल में इसके तेल का प्रयोग मालिश करके किया जाता है। बच्चों की राजयक्ष्मा में इस रोग में पत्र-कांड पकाकर देने से भूख बढ़ती है एवं वजन बढ़ाकर लाभ होता है।

आमवातादि में संधियों तथा सूजन पर इसके चूर्ण को रोगग्रस्त भागों पर मलने से लाभ होता है। यह एक उत्तेजक मूत्रजनक, इसकी क्रिया वृक्क के ऊपर होकर मूत्र की मात्रा बढ़ाती है, इसका प्रयोग बच्चों के वृक्क जन्य जलोदर में अधिक लाभकारी।
मात्रा-चूर्ण- २-६ माशा, तेल-आधा से एक बूंद पाचक, ४-६ बूंद मूत्रल। फांट-२-३ औन्स।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जारुल Lagerstroemia speciosa Pers. Syn. L. flos-reginae Refz. LYTHRACEAE

168

ENGLISH NAME:- Pride of India.
PARTS-USED:-Roots, Bark, Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION- A medium sized tree with 30-40 feet height, leaves ovate & acuminate; large dark mauve blue flowers.
TASTE:-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains: Acids: Arachidic, Behenic, Capric, Cyprylic, Lauric, Lignoceric, Lignoleic, Myristic, Oleic and Stearic acids; Alanine, Alpha-Aminobutyric acid (Aslo in Root), Isoleucine & Methionine; Leaves Contain: Amylalcohol, Ellagic acid, Lageracetal, Beta-sitosterol and Lager tannin.
ACTIONS:-Astringent, Purgative, Anti pyretic (Root).
USED IN:- Seeds are: Narcotic and Febrifuge, Fruits are used in stomatitis; whole plant is Hypoglycaemic it contains insulin-principle having activity equivalent to 6-7 units of Insulin also useful in Fever.

प्रचलित नाम- जरूल

प्रयोज्य अंग-मूल, छाल, पत्र, फल तथा बीज।

स्वरूप-३०-४० फीट ऊँचा मध्यम कद का एक वृक्ष, जिसके पत्ते अण्डाकार एवं नुकीले होते हैं। पुष्प बैंगनी लाल रंग के होते हैं। फल कुछ गोल होते हैं।

स्वाद-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में अम्ल, एरेकीडीक, बेहेनिक, कैपरिक, सिपरीलिक, लौरिक, लिग्नोसेरिक, लिग्नालिक, मियरीस्टीक, ऑलिक एवं स्टीयरीक अम्ल पाये जाते हैं, इसके अतिरिक्त ऐलानीन, आल्फा-एमिनोब्युट्रिक अम्ल (मूल में भी) आइसोल्युसिन एवं मिथ्योनीन; इसके पत्रों में ऐमिल एल्कोहोल, इलैजिक अम्ल, लैगर ऐसिटल, बीटा-सिटोस्टीराल एवं लैगरटैनिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, अतिरेचक, ज्वर नाशक(मूल)।

उपयोग-इसके बीज मादक एवं ज्वरनाशक, इसके फल का मुखगत व्रणों में स्थानिक प्रयोग किया जाता है। इसके पंचांग में इन्स्युलिन के समान रासायन पाया जाता है। (पुराने पत्रों एवं पके फलों में विशेषत:) जिसकी कार्य शक्ति ६-७ युनिट इन्सुलिन के समान रक्त शर्करा की मात्रा कम करने जितनी होती है। इसमें ज्वर नाशक गुण भी होता है। ज्वर में इसके छाल का क्वाथ लाभकारी। मुखगत व्रण में इसके फलों को चबाने से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गनेरी/चुनडी Lantana camera Linn. VERBENACEAE

169

ENGLISH NAME:-Wildsage Hindi - kuri

PARTS-USED:- Whole plant.

DESCRIPTION:- A shrub with many recurved prickles and flowers of yellow white, orange coloures.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Essential oil, which contains Camerene and Micranene; Leaves: Lantanine, Lantadene, Arachidic acid, Linoleic acid, Myristic acid, Palmitic acid, Citral, Eugenol, Furfural, Geraniol, Linalool, Alpha-Amyrin, Beta-sitosterol, Lantanic acid, Lantadene-A & B. Verbascoses and Lantanane.

ACTIONS:-Anti-septic, Carminative, Antispasmodic, Diphoretic.

USED IN:- Healing of wounds, Fistula; Decoction of whole plant is laxative and useful in Malaria and Rheumatism. Leaves cures snakebite.

प्रचलित नाम-वनतुलसी

प्रयोज्य अंग- पंचांग

स्वरूप-यह वनौषधि झाड़ीनुमा गुल्म होती है। जिसकी शाखाओं पर वक्र कंटक होते हैं। पुष्प गुच्छों में, जो भिन्न वर्णी (सफेद, गुलाबी तथा पीले) होते हैं। फल गोल हरे या पकने पर काले हो जाते हैं।

स्वाद-कटु

रासायनिक संगठन- इसमें उत्पत्त तेल, जिसमें कैमरीन एवं माइक्रानीन, इसके पत्रों में लैन्टानीन, लैन्टाडीन, एरेकिडिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल मिरस्टीक अम्ल, पामीटिक अम्ल, सिट्राल, युजीनोल, फरफ्युराल, जिरानिऑल, लिनालूल, आल्फा-एमिरीन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, लान्टानिक अम्ल, लान्टाडीन-ए तथा बी, वर्बेस्कोसेस तथा लैन्टानेन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-पूतिरोधी, वातानुलोमक, उदवेष्टरोधी स्वेदजनन।

उपयोग-व्रणरोपण में, नालव्रण में, पंचांग का क्वाथ मृदुरेचक तथा इसका प्रयोग विषम ज्वर तथा आमवात में लाभकारी।

इसके पत्र सर्पदंश में लाभकारी। इसके बीज का प्रयोग क्वाथ बनाकर प्रसव के बाद किया जाता है। कास-खाँसी में-पत्रों का प्रयोग चाय बनाकर देने से कास-खाँसी में लाभकारी।

मात्रा-१/४-१/२ तोला।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मदयन्तिका/मेन्दिका Syn : L. alta Linn. Lawsonia inermis Linn. LYTHRACEAE

170

ENGLISH NAME:- Henna plant. Hindi - Mehndi

PARTS-USED:-Leaves, Flowers and Fruits.

DESCRIPTION:- A much branched glabrous shrub or small tree with greenish brown bark, branches are square leaves small, elliptic or broadly lanceolote contains orange yellow dye. flower white and fragrant.

TASTE:-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Heena dye, Hanno-tannic acid, Tannin, Olive green resin.

ACTIONS:-Duretic, Anti-inflammatory, Expectorant, Emetic, antipyretic, prophylactic

USED IN:- Headache, Lumbago, Hemicrania, Bronchitis, Ulcers, Stomatitis, Scabies, Amenorrhoea, Disease of Spleen, Favours growth of hairs; also useful in Leucoderma & Cough, leprosy, Harmorrhage, various skin diseases.

प्रचलित नाम- हिनामेहन्दी

प्रयोज्य अंग- पत्र, पुष्प एवं फल।

स्वरूप-एक अतिशाखीत चिकना झाड़ीदार गुल्म या लघु वृक्ष, छाल बादामी हरित रंग की, कोमल शाखाएँ (चौपहल) चार धार वाली पुष्प सफेद एवं सुगंधित होते हैं। फल छोटे गोल एवं अनेक बीज वाले होते हैं।

स्वाद-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में हीनारंग, हैनोटैनिक अम्ल, टैनिन तथा गहरे रंग का राल इसमें पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, शोथहर, कफ नि:सारक, वामक।

उपयोग-शिर:शूल, कटिशूल, अर्ध अवरोधिका, श्वसनीशोथ, व्रण, मुखगत व्रण, कण्डुरोग, अनार्तवजनन, प्लीहा रोग, केशवर्धक, श्वित्र एवं कास में लाभकारी। प्रमेह में पत्रों के १०० मि.ली. स्वरस में १०० मि.लि. गाय का दूध मिलाकर सेवन करने से लाभ। रक्तातिसार में इसके बीज बारीक पीसकर इसे घी में मिलाकर सुपारी के कद की गोली बनाकर प्रात: एवं सायं सेवन करने से लाभ। शिर:शूल में इसके पत्रों को थोड़ा तेल तथा राल मिलाकर पीसकर सिर पर लेप करने से सिर दर्द ठीक हो जाता है। शीतला (चेचक) में इसके पत्रों को पीसकर पैरों की तलियों पर बांधने से आँखों पर होने वाला शीतला का प्रभाव नहीं हो पाता।

गण्डूष में इसके पत्रों का क्वाथ कषाय होने के कारण इसमें लाभकारी होता है। इसकी छाल का प्रयोग कामला, प्लीहा वृद्धि, अश्मरी में, रसायन की तरह कुष्ठ एवं अन्य जीर्ण चर्मरोगों में लाभकारी। इसकी छाल का क्वाथ जलने के कारण होने वाले जख्मों पर लगाने से लाभ होता है। पत्रों तथा पुष्पों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का सत-कुष्ठरोगियों के लिये अत्यंत लाभकारी। (इसकी मात्रा-प्रतिदिन दो बार आधा-आधा चम्मच)।

वीर्यस्राव वाले रोगियों के लिये इसके पत्रों का रस मिश्री मिलाकर थोड़ा जल मिलाकर सेवन से लाभ होता है। संधिवात में इसके पत्रों को पीसकर दुखने वाले भाग पर सांयकाल में पोल्टिस बांधने से तथा दूसरे दिन प्रातः धोने से इसमें लाभ होता है। कुष्ठरोग में पत्रों तथा पुष्पों के सत् (एक्स्ट्रेक्ट) का प्रयोग करने से लाभ होता है। कामला में पत्रों के स्वरस के सेवन से लाभ होता है। पुष्पों के स्वरस के सेवन से रक्त शुद्धि करण होता है। इसके पत्रों को पीसकर पैर पर लेप करने से दाह शांत होता है।

मात्रा-१/४-१/२ तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'प्राकृतिक नियमों के साथ नित्य प्रति नियमपूर्वक हवन करने वाला कदापि रोगी नहीं हो सकता। यह हमारा दृढ़ मत है और क्षय रोग तो उसके घर के निकट आने से घबरायेगा, क्योंकि श्रुति का आदेश है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चन्द्रिका / चर्महन्त्री Lepidium sativum Linn.BRASSICACEAE (CRUCIFERAE)

ENGLISH NAME:- Common cress. Hindi - Chansur

171

PARTS-USED:- Seeds.

DESCRIPTION:- A small diffuse herb, about 1-3 feet high and hairy; leaves basal dissected. cauline loked or entire; flowers white & small, Fruits oval & flat. siliqula; seeds semi-lunar

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contain:- An aromatic Volatile oil, Oil, Iodine, Phosphates, Potash, Sulphur, Glucoside Which is knawnas Glucotropeoilin.

ACTIONS:-Rejuvenator, Tonic, Aphrodisiac, Stimulant, Carminative, Analgesic.

USED IN:- Skin disease, Dyscracia, Eye-infection, Pragnancy, Chronic Spleen & Liver megally, Bleeding piles, Asthma, Diarrhoea, Cough, Scurvy, Lumbago, Rheumatism, Arthritis, Indigestion.

प्रचलित नाम- चनसुर/ हालों

प्रयोज्य अंग- बीज

स्वरूप-यह वनौषधि रोमश क्षुप जिसकी ऊँचाई १-३ फीट होती है। इसके पत्ते विभक्त, पुष्प छोटे-छोटे एवं सफेद होते हैं। फल अण्डाकार के चपटे होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में एक सुगंधित उड़नशील तेल, स्थिर तेल आयोडिन, फोस्फेट, पोटाश, गंधक, ग्लूकोसाईड जो ग्लूकोट्रोपीयोलिन नाम से जाना जाता है।

गुण-रसायन, बल्य वाजीकरण, उत्तेजक, आनुलोमिक, दुग्धवर्धक, वेदनाहर।

उपयोग-त्वचा रोग, रक्त दोष, नेत्र रोग, प्रसूतावस्था, प्लीहा एवं यकृत की जीर्ण वृद्धि, रक्तार्श, श्वास, अतिसार, कास में इसका प्रयोग लाभकारी। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग प्रशीवाद (स्कर्वी) कटिशूल, आमवात, संधिशोथ एवं कुपचन में लाभकारी। प्रशवाद (स्कर्वी) में इसके पत्रों का उपयोग सलाद के रूप में करने से लाभ। कटिशूल, आमवात तथा संधिशोथ में इसके बीज को नीबू के रस में पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। कुपचन, अतिसार तथा संग्रहणी में इसके बीज का चूर्ण मिश्री के साथ मिलाकर सेवन से लाभ होता है। इसके बीज का चूर्ण नारियल गरी के साथ इसकी बर्फी बनाकर प्रसूता को दिया जाता है, यह पौष्टिक एवं दुग्धवर्धक है। कटिशूल तथा श्वेत प्रदर में लाभकारी। पुरुषों के लिये भी वाजीकर है। चर्मदोष एवं संधि शोथ में इसके बीज को पानी में भिगोकर इसका लेप करने से चिपक जाता है तथा लाभ होता है। हिचकी पर इसके बीज को पीसकर पानी में भिगोकर, छानकर पिलाने से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवनी Leptadenia reticulata (Retz.) W & A. ASCLEPIADACEAE

ENGLISH NAME:- Dodi Hindi - **Jivanti**

172

PARTS-USED:-Whole Plant.

DESCRIPTION:- A twiner on the hedges; Leaves small ovate acute base rounded. Flowers smalll greenish-yellow, Fruits follicals smooth, turgid, tapering to a short curved beak.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves, flowers and Fruits Contain large amount of Vitamins-A.

ACTIONS:-Sweet, Cooling, Astringent, Tonic, Blood purifier, Antibillious, Refrigerant, Anti-Tuberculosis, Rejuvenator, Aphrodisiac, Tridoshanashak, galactogogue, restorative

USED IN:- Diarrhoea, Tuberculosis, Fever, Poison effect, Ulcer, Opthalmic disease. (Night blindness) Hemorrhagic disease, ear disorders, asthema, ringworm.

प्रचलित नाम- जीवन्ती/डोडी

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप-एक आरोहणशील लता जो बाड़ पर फैली रहती है। इसकी नवीन कोमल शाखाएँ रोमश जबकि पुरानी शाखायें काष्ठीय कोर्कयुक्त, पत्ते छोटे-छोटे, अण्डाकार नोकदार, आधार गोल, चर्म सदृश, पुष्प छोटे-छोटे हरित पीताभ, फलियाँ-चिकनी एकाकी फूली हुई अग्र भाग चोंचदार टेड़ा होता है।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- पत्रों, पुष्प एवं फल में-विटामिन्स 'ए' प्रचूर मात्रा में पाये जाते हैं।

गुण-मधुर, शीतल, ग्राही, बल्य, वृष्य, चक्षुष्य, त्रिदोषनाशक, रक्त शोधन, पित्त नाशक, दाह शामक, क्षयघ्न, रसायन, वाजीकरण।

उपयोग-विष दोष, व्रण, नेत्रविकार, पित्त, रक्त में इसके पंचांग का प्रयोग लाभकारी है। जीवन्ती के कोमल पत्र, पुष्प एवं फल इन तीनों अंगों का शाक बनाकर सेवन करना नेत्र रोगों में बहुत ही लाभकारी माना गया है। इन अंगों में विटामिन-ए प्रचूर मात्रा में होने के कारण यह रतौंधी (रात्रि अंधता)में एवं अन्य नेत्र रोगों में बहुत ही हितकारी होत है। यह वनौषधि चक्षुष्या एवं शाक श्रेष्ठ तरीके मानी जाती है।

रक्त विकारों एवं क्षय रोगों में इसके मूल का चूर्ण १/४ तोला गाय के ताजा दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है। जीर्ण ज्वर में इसके मूल का चूर्ण प्रतिदिन १/४ तोला दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। यह बल्य, वृष्या (वाजीकरण) शक्ति प्रदान करने वाली वनौषधि है।

खाँसी जीर्णज्वर, यक्ष्मा में इसके मूल का चूर्ण प्रातः एवं सायं १/४ तथा १/२ तोला तक फाकी के रूप में सेवन से लाभ होता है। धातु पौष्टिकता तथा मूत्र में जलन इन रोगों में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूल के चूर्ण का सेवन लाभकारी है। यह मूत्रल वनौषधि है इसलिये इसके सेवन से मूत्र स्वच्छ आता है। ज्वरन्य दाह में इसके मूल का क्वाथ बनाकर इसमें घृत का मिश्रण कर सेवन करना चाहिये।

नेत्र रोगों (रतौंधी) में- इसके कोमल पत्रों का शाक घृत के साथ पकाकर खाने से लाभ होता है।

अतिसार में इसके पत्रों एवं कोमल टहनियों (केवल अग्र भाग) का शाक दही, अनार तथा घी के साथ सेवन करना चाहिए।

मात्रा- चूर्ण १/४-१/२ तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'खाँसी और दमे के रोग में धतूरा दूसरी सब औषधियों की अपेक्षा उत्तम औषधि है। श्वाँस नलिका की श्लेष्मा त्वचा को शिथिल करके यह दमे की पीड़ा को दूर करता है। इसलिये खाँसी की बहुत दवायें इसके रस में घोंटकर गोली के रूप में बनाई जाती हैं, फिर भी इसका विशेष लाभ इसका धूम्रपान करने से होता है। दमे का चाहे जैसा उग्र वेग चढ़ा हुआ हो, वह भी इसके पत्ते की धूम्रपान करने से तत्काल शान्त हो जाता है। श्वास को दूर करने के लिये और उसके उपद्रवपूर्ण वेग को कम करने के लिये धतूरे के समान औषधि शायद ही कोई दूसरी हो।

इसमें पाये जाने वाले Hyoscyaminye & Hyoscine में नींद लाने व शूल को नष्ट करने के गुण उपस्थित हैं और स्नायुशूल में मूफीद व आक्षेप निवारक होते हैं।

- वनौषधि चन्द्रोदय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्रोणपुष्पी Leucas cephalotes spreng. LAMIACEAE (LABIATAE).

173

ENGLISH NAME:- Tamba Hindi - Gumma

PARTS-USED:-Whole plant & Flowers.

DESCRIPTION:- A small annual herb with hairy & square stem, flowers white in Verticilaster clusters.

TASTE:-Acrid, Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Beta-sitosterol, Flavonoids, Glycosides, Glucose, Alkaloids, Laballenic acid; Aromatic oil.

ACTIONS:-Stimulant, Laxative, Antispasmodic, Appitizer, Cathartic, Carminative, Expectorant, Diphoretic, Anti-septic.

USED IN:- Cough, Cold, Scabies, Anthelmintic, Headache, Eye complaints, Snakebite, Dyspepsia, Hypotensive, Useful in skin eruptions, Jaundice and swellings.

प्रचलित नाम-गूमा

प्रयोज्य अंग- पंचांग तथा पुष्प।

स्वरूप-यह एक वर्षीय छोटा क्षुप जो औसतन २-३ फीट ऊँचा, जिसकी शाखाएँ रोमश एवं चार धार वाली होती है। पत्ते रोमश दन्तुर या गोल आरावत दंतुर होते हैं। पुष्प सफेद जो गोल मुंडक में होते हैं। पुष्प गुच्छ के शीर्ष में दो पत्तियाँ रहती हैं।

स्वाद-कटु-तिक्त।

रासायनिक संगठन- वनस्पति में बीटा-सिटोस्टीरॉल, फलेवोनोइड्स, ग्लायकोसाईड्स, ग्लूकोज, एल्कलॉइड्स, लैबालेनिक अम्ल, सुंगधित तेल।

गुण-उत्तेजक, मृदुरेचक, उद्वेष्टनरोधी, रुचिकर, भेदक, वातानुलोमक, कफनि:सारक, स्वेदजनन, पूतिरोधि।

उपयोग-कास, जुकाम, कण्डुरोग, कृमिघ्न, शिर:शूल, नेत्ररोगों में, सर्पदंश, अग्निमांद्य, दाबह्रासी, त्वचाजन्य विस्फोट, कामला तथा सूजन में लाभकारी।

जुकाम में इसके फूलों का शर्बत लाभकारी। कफ ज्वर में इसका स्वरस मधु में मिलाकर सेवन से लाभ। विषमज्वर में इसके पत्रों के रस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

आध्मान एवं उदरशूल में पत्रों का रस छुआरे में डालकर सेवन से लाभ होता है। कामला में इसके पत्रों का स्वरस नेत्र में अंजन करने से कामला नष्ट होता है। पक्षाघात में- इसके पंचांग के सेवन से लाभ होता है। इसके पंचांग की भाप लेने से या स्वेदन से ज्वर उतर जाता है। इसके पंचांग का रस खस-खुजली पर लगाने से लाभ होता है।

शिर:शूल में इसके पत्रों का कल्क बनाकर यदि प्रात:काल ही कपाल पर लेप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर दिया जाता है तो सिर दर्द ठीक हो जाता है। प्राय: इस प्रकार का सिरदर्द प्रात:काल से प्रारंभ होकर सूर्य के साथ-साथ बढ़ता जाता है, इस प्रकार यह एक प्रभावकारी औषधि है।

शोथ में इसके पत्रों एवं नीम के पत्रों को जल में उबालकर इसकी भाप लेने से पसीना आ कर सूजन उतर जाती है। आधा शीशी (अर्धाव भेदक) में इसके पत्रों का रस एक-एक बूंद नासिका छिद्रों में डालने से लाभ होता है। यह सर्पदंश की अनुभूत श्रेष्ठ वनौषधि है।

कृमियों के लिए इसके पंचांग को जल में उबालकर इस जल को पिलाने से उदर कृमियों का नाश होता है। इसके अतिरिक्त इसके सेवन से जुकाम-ज्वर में भी लाभ होता है।

मात्रा-स्वरस- १/२-२ तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जिस यज्ञ प्रयोग से प्राचीन काल में राजयक्ष्मा रोग नष्ट किया जाता था, आरोग्य चाहने वाले मनुष्य को उसी वेद-निहित यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए। -चरक चि.स्थान अ०-८ श्लोक-१२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतसी/ नील पुष्पी/ क्षुमा Linum usitatissimum Linn. LINACEAE

174

ENGLISH NAME:- Linseed. Hindi - Alsi, Tisi
PARTS-USED:-Seeds and Oil.
DESCRIPTION:- A small annual, herb,1 to 2 feet high, leaves linear branches thin & stout, Flowers blue in terminal Gyme; capsule-globose, pointed; seeds ellipsoid, bulging flat.
TASTE:-Bitter/Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:-30% to40% oil, Gum, Protein, Wax, Resin, Sugars, Phosphate and Linamarin (A glucoside); Unripen Seed and Flowers Contain:- Hydrocyanic acid and Aalkaloid-Liparine.
ACTIONS:-Seeds are Oily, Tonic, Diuretic, Carminative, Analgesic; Laxative, Wound healing.
USED IN:- Oil is used as miled laxative, Seeds are used as Poultic for ripening of Carbuncle, Also used for Cough, Polyuria. It's oil is used mixed with lime water on burned parts.

प्रचलित नाम- अलसी/तीसी

प्रयोज्य अंग:- बीज एवं तेल।

स्वरूप-यह पौधा एक वर्षायु १-२ फीट ऊँचा क्षुप होता है। इसकी शाखाएँ पतली-कठोर होती हैं। पत्ते छोटे, रेखाकार एवं तीन शिराओं युक्त होते हैं। पुष्प नीलवर्णी होते हैं। फल गोल ऊपर से नुकीला एवं पाँच कोश युक्त होता है।

स्वाद-तिक्त-मधुर।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में ३०-४० प्रतिशत तेल, गोंद, प्रोटीन, मोम, राल, शर्करा, फोस्फेट, अल्प मात्रा में एक ग्लूकोसाईड-लिनामरीन। इसके अपरिपक्व बीज तथा पुष्पों में हाइड्रोसायनिक अम्ल तथा एक क्षाराभ लिपारीन पाया जाता है।

गुण- इसके बीज-स्नेहन, बल्य, मूत्रल, वातहर, वेदनास्थापन, मृदुरेचन, व्रणरोपण।

उपयोग-इसका तेल सौम्य विरेचक इसके बीजों को पीसकर पुल्टिस बनाकर शोथ तथा फोड़ों को पकाने के लिये बाँधते हैं। इसके अतिरिक्त खाँसी प्रमेह तथा वातरक्त में इसका उपयोग लाभकारी। इसके तेल को चूने के जल के साथ मिश्रित कर जले हुए अंग पर लगाते हैं।

व्रणोंपनाह के लिये इसके बीजों को जल में पीसकर (मर्दन कर) इस में थोड़ा खट्टा दही मिलाकर व्रण पर लेप करने से व्रण पक जाते हैं। पक्व व्रण के भेदन के लिये इसके बीजों को जल में भिगोकर इसका लेप करना चाहिए। वात प्रधान व्रण में वेदना एवं दाह युक्त व्रण पर अलसी का तेल लगाने से लाभ होता है या अलसी को दूध में उबाल कर उस दूध का लेप करने से वेदना एवं दाह शान्त हो जाते हैं।

वातरक्त में अलसी को दूध में मर्दन (पीसकर) कर लगाने से शूल ठीक हो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाता है। प्रमेह में कुसुम्भ, सरसों, अलसी का प्रयोग प्रमेह में लाभकारी। इसके बीजों का उपयोग मलबन्ध में होता है। इसके बीजों की चाय बनाकर कास, प्रतिश्याय, उरोरोग, मूत्र मार्गीय शोथ, अतिसार एवं पूयमेह में लाभकारी।

अलसी (कच्ची) का प्रयोग हितकारी है। अलसी की पुल्टिस फोड़े-फुन्सी एवं शोथ पर बहुत ही लाभकारी है। इसके बीजों में एक ग्लूकासाइड-सायनोजेनिक पाया जाता है। कई लोग इसे विष द्रव्य मानते हैं, परंतु अत्यल्प मात्रा में यह हानिकारक नहीं होता।

गंधक के साथ अलसी का तेल मिलाकर पामा (चर्मरोग) में उपयोगी है। इसके पौधों से सुन्दर रेशे निकाले जाते हैं, इनसे कपड़े बनते हैं।

मात्रा- अत्यल्प (तीन से चार रत्ती)।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जिसके शरीर के रोग नाशक गूगल का उत्तम गंध व्यापकता है उसको राजयक्ष्मा रोग की पीड़ा नहीं होती। दूसरे की शपथ भी नहीं लगती। उससे सब प्रकार के यक्ष्मा-रोग शीघ्रगामी हरिणों के समान काँपते हैं, डरकर भागते हैं।' - अथर्व वेद का० १९ सू. ३८ मं०-१२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिची Syn. Nephelium litchi Comb. Litchi Chinensis SAPINDACEAE

ENGLISH NAME:- Litchi Hindi - Lichi

175

PARTS-USED:-Leaves, Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- A small glabrous spreading evergreen tree with paripinnate compound leaves; flowers minutegreenish white. Fruit globosedrupe tubercled, fleshy aril large fleshy, seed solitary

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Friedelin, Stigma sterol and its acetate, Cyanidinn-3-Galactoside, 3Glucose and Pelargonidin.

ACTIONS:- Cooling, Sweet, Tonic, Aphrodisiac, Demulcent.

USED IN:- Fruits: Heart Tonic; Leaves useful in animal bite. Seeds: Anodyne and are useful in Neuralgic disorder.

प्रचलित नाम- लिची

प्रयोज्य अंग- पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप-सदाहरित, फैला हुआ चिकना एवं लघु वृक्ष, पक्षवत संयुक्त पत्र, पुष्प हरिताभ श्वेत, फल गोल जिसकी बाहर की सतह पर कोमल कांटे होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इस वनस्पति में फ्रैडीलीन, स्टीग्मास्टीरोल एवं इसके ऐसीटेट, सायनीडीन, ३-गैलेक्टोसाइड, ३ ग्लूकोज एवं पैलारगोनीडीन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, मधुर, पौष्टिक, स्वेदजनन, प्रशामक।

उपयोग-इसके फल पौष्टिक, हृदयबल्य, पत्र-प्राणीदंश में लाभकारी। इसके बीज शूलहर तथा नाड़ी विकारों में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्षादनी/बंदाक Loranthus longiflorus Desr Syn. Dendropthoe falcala (Linn) Etting. LORANTHACEAE

176

ENGLISH NAME:- Loranthus. Hindi - Banda

PARTS-USED:-Leaves and Flowers.

DESCRIPTION:- A semi parasitic large shrub generally on Mango trees. Leaves opposite, thick, Coriaceous Ovate or linear-oblong, obtuse, midvein usually red. Flowers red or yellow or pink white.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Expectorant, Carminative, Dueretic, Wound healing, Blood purifier.

USED IN:- Oedema, Epilepsy, Insanity, Fever, Asthma, Malarial fever, Scorpion sting and for Pragnancy.

प्रचलित नाम- बांदा/बंदा

प्रयोज्य अंग-पत्ते एवं पुष्प

स्वरूप- यह एक अर्ध पराश्रयी बड़ा गुल्म है, जो वृक्षों (आम) पर उगता पाया जाता है। इसकी शाखाएँ कुछ सीधी एवं कुछ लटकती हुई, पत्ते विपरीत सरल, मोटे, चिकने, अण्डाकार, या लम्ब गोल, रेखाकार, मध्य शिरा लगभग लाल होती है। पुष्प लाल, पीतवर्णी या सफेद गुलाबी जो एक तरफ रेसीम में होते हैं।

स्वाद-तीक्त।

रासायनिक संगठन- इ

गुण-कफघ्न, वातनाशक, मूत्रल, व्रणरोपण, रक्तशोधन, शीत, कषाय, कटु।

उपयोग-शोथ, अपस्मार, उन्माद, श्वासरोग, विषम ज्वर, बिच्छुदंश (विष) गर्भधारण के लिये। कर्णशूल एवं कान में फुन्सी हुई हो तो इसके पत्तों को केले के पत्तों में रखकर पुड़िया बनाकर आग पर सेंक लें, इसके पश्चात् इन पत्तों को हाथ से मसल कर रस निकाल लें इस रस में थोड़ा मधु मिलाकर कान में एक-दो बूंद डाल दें। गर्भ धारण के लिए वट वृक्ष पर हुए बाँदा के पत्तों का स्वरस निकालकर आर्त्तव के चौथे दिन से तीन दिन तक पिलाना चाहिये। सूजन पर इसके पत्ते एवं पुष्प को पीसकर गरम कर शोथयुक्त हिस्से पर बाँधने से लाभ होता है। सामान्य ज्वर में इसके बड़े-बड़े पत्रों का स्वरस निकाल कर पिलाना चाहिये। विषम ज्वर में इसके पत्रों को छाछ में, घी में, दही में या हींग के साथ देना चाहिये। बिच्छू दंश में इसकी टहनियों को जल में घिसकर लेप करना चाहिये। रक्तवाहिनियों तथा हृदय पर बांदा के पुष्पों का प्रभाव होता है। हृदय रोग के कारण श्वास लेने में दिक्कत आना या यक्ष्मा के कारण श्वास क्रिया में होने वाली दिक्कत रक्तपित्त, अपस्मार तथा उन्माद में बांदा के पुष्पों का प्रयोग लाभकारी है। बांदा की एक अन्य जाति विस्कम आल्बम भी वृक्षों पर पराश्रयी उगती पायी जाती है। उत्तर प्रदेश में यह किशमिश काबली के नाम से जानी जाती है।

मात्रा-एक से दो रत्ती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तिक्त कोशातकी/महाजाली Luffa acutangula (Linn) Roxb. var. amara clark. CUCURBITACEAE

177

ENGLISH NAME:- Bitter Luffa. Hindi - kudui Torai Sarputia

PARTS-USED:-Fruits and Seeds, stem

DESCRIPTION:- A large climber, stem five angled, tendril trifid; leaves five angled, Scabrid, Cordate at base. flowers small yellow, fruits a pepo ten ribbed, oboviod, conical at both ends. Seeds black ovcid.

TASTE:-Acrid, Bitter

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contains:-Bitter alkaloids. Seeds Contain-Oil and Albumin.

ACTIONS:-Bitter, Emetic, Laxative, Cathartic, Heart Tonic, Stomachic, Carminative. wound healing, Antidote; Seeds are expectorant and Astringent, Diuretic

USED IN:- Cough, Billious, Anaemia, Liver disear, Leprosy, Piles, Oedema, Bowel Complaints, Jaundice, Abdominal lump, Anoraxia, Asthma, Fever, Polyuria, spleen enlargement

प्रचलित नाम- कड़वी तोरई/जंगली तोरई

प्रयोज्य अंग- फल एवं बीज

स्वरूप-एक बड़ी सूत्रारोही लता, काण्ड पाँच धार वाला, पत्र पंजाकार पाँच कोने वाले खुरदरे तल प्रदेश से हृदयाकृत पुष्प छोटे, पीले रंग के, फल कड़वा, दस धार वाला, बीज काले एवं गोल होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके फलों में तिक्त क्षारभ पाया जाता है। बीजों में तेल एवं एल्ब्युमिन होता है।

गुण-फल तिक्त वामक, मृदुरचक, उष्ण, भेदक, हृदय, बल्य, दीपन, वातहर, व्रणशोधन, विषघ्न, बीज-कफघ्न एवं ग्राही।

उपयोग-कफ, पित्त, पाण्डुरोग, विषदोष, यकृत रोग, कुष्ठ, अर्श, शोथ, खाँसी, उदर रोग, कामला, गुल्म, अरुचि, श्वासरोग, प्रमेह, ज्वर में लाभकारी। कामला में इसके फलों को सुखाकर चूर्ण बनाकर नासिका छिद्रों द्वारा सूंघने से छींक आयेंगी, इस पर पीले रंग का नाक में से प्रवाही निकलेगा, छींकें आने पर धी को सूंघना चाहिये (तीन दिन तक यह क्रिया करनी चाहिए) या कड़वी तोरई में लेण्डी पीपल तथा राई का चूर्ण भरकर इसको आग पर जलाकर इसकी राख का नस्य लेने से लाभ होता है। हड़काया श्वान दंश में पक्व कड़वी तोरई की रेशायुक्त जाली को पीसकर जल में एक घंटे तक भिगो कर रखें, पश्चात् मसल कर छान कर शक्ति अनुसार पाँच दिन तक प्रात: पिलाने से वमन एवं जुलाब (दस्त) होकर विष निकल जायेगा। (वर्षा ऋतु बीतने तक रखे हुए फल का प्रयोग करना चाहिये।) दंतकृमियों में कड़वी तोरई (फल) के छिलके दांतों के नीचे रखने से लाभ होगा। अर्धावमेदक (आधाशीशी) में इसके कड़वे फल का चूर्ण कर थोड़ा एवं सावधानी पूर्वक सूंघने से नाक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में से पानी के धारा बहने लगेगी, जिससे रोग मिट कर लाभ होगा।

मूलव्याधि (हरस) में इसके कड़वे फल का चूर्ण हरस पर घिसने से जल स्वरूप प्रवाही बहने पर अर्श मिट जाता है। विष में इसके कड़वे फल का क्वाथ बनाकर इसमें घी मिलाकर पिलाने से वमन होकर विष बाहर निकल जाता है। कण्ठ सर्प में कड़वा तोरई के चूर्ण को हुक्के में डालकर धूम्रपान करने से मुख से लार पड़ने से तुरंत कंठ खुल जायेगा। अतिदूषित गण्ड एवं व्रण में इसके कड़वे फलों का हिम अति लाभकारी है। इसके हिम से व्रण एवं गण्ड (दूषित) को धोने से शुद्धि होकर रूझ आयेगी। अल्प मात्रा में इसके फलों के सेवन से भूख लगता है, दस्त साफ होते हैं एवं उदर के अवयवों की क्रिया में सुधार होकर मध्यम मात्रा में जुलाब लगेगा तथा मूत्र की मात्रा बढ़ेगी।

हिम तैयार करने के लिये कड़वा तोरई के बीज रहित फल को (दो तोला) ५० तोला शीतल जल में एक घंटे तक भिगोकर छान लें। (एक से दो औंस)। बच्चों की यकृत वृद्धि में हिम या फांट (कड़वे तोरई का) के सेवन से लाभ होता है।

मात्रा-हिम एक से दो औंस। फांट एक से दो औंस।

www.vicharkrantibooks.org

'जिसने आँवले के वृक्ष का रोपण कर दिया, उसे बहुत यज्ञ करने, भूमिदान करने व सदैव ब्रह्मचारी रहने का महान् पुण्य प्राप्त होता है।' -वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्तवर्धक/रागफल/शाक श्रेष्ठ Syn : Lycopersicon esculentum

Mill. Lycopersicon lycopersicum SOLANACEAE

178

ENGLISH NAME:- Love apple/Wolf-Peach. Hindi - Tamalar

PARTS-USED:- Fruits.

DESCRIPTION:- A small hairy herb with small yellow flowers, fruits are greenish to red.

TASTE:-Sour-Sweet

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contain: Oxalic acid, Narcotine, Rich in Vitamins A and C, Solanine reported in the vegetative parts and in seeds only. Unripen Fruits: Protein, Fats, Carbohydrates, Minerals-Calcium, Phosphorus, Carotene, Thiamine, Nicotinic acid, Riboflavin, Ascorbic acid. Ripen fruits: Sodium, Potassium, Calcium, Magnissium, Iron, Copper, Phosphorus, Sulphur, Chlorine, Aluminium, Mangenese, Cobalt, Zinc and also-Glucose, Fructose, Amino acids, Citric acid, Mallic acid.

ACTIONS:-Digestive, Blood purifier, Cholagogue, Promotes gastric Secretions.

USED IN:- Asthma, Bronchitis, Dyspepsia, Apthous Stomatitis, Stimulates torpoid liver, also gentle natural renal stimulant.

प्रचलित नाम- टमाटर

प्रयोज्य अंग- फल

स्वरूप-एक लघु रोमश क्षुप जिसके पत्ते अनियमित तरीके से विभाजित रोमश तथा दंतुर होते हैं। पुष्प छोटे पीतवर्णी, कच्चे फलहरे पकने पर लाल रंग के होते हैं।

स्वाद-मधुर-आम्ल।

रासायनिक संगठन- इसके फल में ऑक्सेलिक अम्ल, नारकोटाइन, विटामिन्स ए तथा सी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसके सभी वानस्पतिक अंगों एवं बीजों में(पत्र तथा कांड) सोलानाइन तत्व पाये जाते हैं। इसके फलों में (कच्चे) प्रोटीन, वसा, कार्बोदित, खनिज पदार्थ कैल्शियम, फास्फोरस, कैरोटिन थायमिन, निकोटीनक अम्ल, राइबोफ्लेबीन, एस्कोर्बी क अम्ल पाये जाते हैं। पके फलों में सोडियम, पोटैशियम, कैल्शिम मेग्नेशियम, लोह, ताम्र, फोस्फोरस, सल्फर, क्लोरीन, ऐल्युमिनियम, मेंगनीज, कोबाल्ट, जिन्क तथा ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, ऐमिनो अम्ल, सिट्रिक अम्ल, मैलिक अम्ल।

गुण-पाचन, रक्तशोधन, पित्त सारक, उदरीयस्राव उत्तेजक ।

उपयोग -श्वास रोग में, श्वसनीशोथ, अग्निमांद्य, मुखगत व्रण, निष्क्रिय यकृत को उत्तेजित करता है एवं यह एक प्राकृतिक वृक्क उत्तेजक है। इसके फलों के सेवन से अनिद्रा, मधुमेह, संधिवात, अश्मरी, अजीर्णता तथा आंत्र रोगों में लाभ होता है। कैन्सर अस्पतालों में टमाटर का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है; क्योंकि इन फलों में कैन्सर प्रतिरोधक शक्ति अधिक होती है।

टमाटर के रस के सेवन से कामला तथा यकृत के रोग ठीक होते हैं। प्रातः एवं सायं भोजन से पूर्व टमाटर का रस (सूप) पीने से आंत्ररोगों से मुक्ति मिलती है, रक्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शुद्ध होता है तथा रोगजन्य कीटाणुओं का नाश करने की शक्ति इसमें होती है। जिसके जोड़ों में जकड़न आ गयी हो, उस व्यक्ति को प्रतिदिन चार बार (प्रातः दोपहर, सायं तथा रात्रि समय) टमाटर के रस का सेवन करने (एक-एक ग्लास) से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। टमाटर के सेवन से पाण्डुरोग, हरस, अग्निमांद्य, रक्तविकार तथा स्कर्वीरोग (दांतों में रक्त स्राव होना) जैसे रोगों में लाभ होता है।

पाचन शक्ति बढ़ती है तथा जीर्ण ज्वर ठीक हो जाता है। मधुमेह में टमाटर तथा बंद गोभी के रस के सेवन से लाभ होता है। गर्भवती महिलाओं के लिये तथा प्रसूति प्रश्चात् शारीरिक तथा मानसिक शक्ति बढ़ाने के लिए टमाटर के सूप का सेवन अतिलाभकारी है। यह उत्तम वातनाशक है। वात, कफ, प्रकृति वाले व्यक्ति के लिए टमाटर का सेवन अत्यंत लाभकारी है।

खाज-खुजली में टमाटर के रस से दुगुनी मात्रा में नारियल का तेल मिलाकर मालिश करने के पश्चात् गुनगुनं जल से स्नान करना चाहिए, लाभ होता है। टमाटर के रस में हींग का छोंक लगाकर सेवन से कृमियों का नाश होता है।

मात्रा-१/४-१/२ तोला।

●●●

www.vicharkrantibooks.org

'गंगा और भागीरथी की तरह तुलसी पवित्र है और स्वर्ग-दायिनी है।' -मत्स्यपुराण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कम्पिल्ल / कामेला / रक्तफल Mallotus philippinensis Muell Arg EUPHORBIACEAE.

179

ENGLISH NAME:- Monkey Face Tree. Hindi - Rari, Kamila
PARTS-USED:-Leaves, Seeds, Fruits and Powdery Covering of Fruits.
DESCRIPTION:- A medium sized, much branched tree, branches & fruits are rusty and pubescent.
TASTE:-Acrid
CHEMICAL CONSTITUENTS- Red Powder Contains: A crystalloid brownish Red Resin which contains Rottlerin & Isorottlerin, Wax, Essential oil, Starch, Sugar, Tannin, Oxalic acid & Citric acid, Aluminium, Iron, Calcium, Magnessium. Root and stem Contains: Hydrocy anic acid.
ACTIONS:-Stimulant, Purgative, Anti-fungal, Anti-bacterial, Anthelmintic, Wound healing.
USED IN:- Red Powder is Anthelmintic, Cathartic, Hypoglycaemic, Anti-cancer, Anti-Spasmodic, Anti-inflammatory.

प्रचलित नाम-कपीला/कबीला

प्रयोज्य अंग- पत्र, फल, बीज तथा फल आच्छादित रज।

स्वरूप-यह एक मध्यम कद का सदाहरित वृक्ष जिसकी ऊँचाई लगभग २५-३० फूट होती है। पत्ते विषमवर्ती नोकदार, नीचे की सतह रक्ताभ रोमश होती है। पुष्प छोटे-छोटे भूरापन लिये लाल रंग के होते हैं। इसके फल लाल रवेदार चूर्ण से ढके रहते हैं। इसी रक्तवर्णी चूर्ण को ही कबीला (कपीला) कहते हैं।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन- इसकी लाल रज में रोटलेरिन नामक एक रवेदार पदार्थ से युक्त एक बदामी लाल रंग की राल होती है, इसके अतिरिक्त इसमें आइसोरोटलैरिन, मोम, उत्पत तेल, तेल, स्टार्च, शर्करा, टैनिन, ओक्सेलिक अम्ल, सिट्रिक अम्ल, एल्युमीनियम, लोह, कैल्शियम, मैग्नेशियम। इसके मूल तथा कांड में हाइड्रोसायनिक अम्ल पाया जाता है।

गुण-उत्तेजक, अतिरेचक, फफूंदीनाशक, कीटाणुघ्न, कृमिघ्न, व्रणरोपण।

उपयोग-कबीला (लाल रज) कृमिघ्न, भेदक, रक्त में शर्करा प्रमाण कम करता है। कैन्सर नाशक, उद्वेष्टनिरोधी, शोथहर। इसके पत्रों का प्रयोग चर्मरोगों में किया जाता है। दाद-खुजली, व्रण एवं अग्निदग्धव्रण में इसकी लाल रज को तेल में मिलाकर इसका बाह्य प्रयोग करने से लाभ होता है। स्फीतकृमि में इसकी लालरज (२-८ माशा) दूध, दही, मधु के साथ मिलाकर देने से तीसरे या चौथे दस्त में कृमि निकल जाते हैं या फल की रज १/२ तोला गुड़ के साथ खिलाने से पेट के सारे कृमि विरेचन होकर निकल जाते हैं। पित्तजगुल्म में विरेचन के लिये मधु के साथ फल रज का सेवन करना चाहिए। व्रणरोपण के लिये इसके फल की रज से सिद्ध किया हुआ तेल अति उपयोगी है।

मात्रा-१/२-१/४ तोला।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आम्र Mangifera indica Linn. ANACARDIACEAE.

180

ENGLISH NAME:- Mango Tree. Hindi - Aam
PARTS-USED:-Leaves, Bark, Flowers, Fruits, Seeds Gum and All Parts.
DESCRIPTION:- A large ever green tree, branches widely spreading, campact leaves at the end of branches, flowers Creamish white. fruits variable in size & shape, fleshy.
TASTE:-Sweet-Sour.
CHEMICAL CONSTITUENTS- It Contains: Mangiferin, Amino acids, Gallotannin, Gallic acid, Ethylgallate, Isoquercetin, Beta-sitosterol, Riboflavin, Vitamin-C Citronellal, Deterpene, Geraniol, Limonene, Mangiferol, Mangiferon, Nerol and Tannine; It also Contain large amount of Vitamin A and Some amount of Ascorbic acid, Protein, Fat, Carbohydrates, Calcium, Phosphorus, Iron, Carotene, Sucrose, Fructose & Glucose.
ACTIONS:-Flowers: Cooling, Appitizer, Astringent, Unripe Fruits: Sour, Appitizer; Ripe fruit: Sweet, Spermopoeitic, Tonic, Young leaves: Appitizer, Expectorant, Antibillious.
USED IN:- Unripe fruits: in Soarthroat, Gastricstimulant, Scurvy; Ripe Fruits: in Haemorrhagic Disease and in dysentery, Appitizer; Rind: indebility, Seeds: Anthelmintic, useful in Asthma & Diarrhoea Thirst, Inflammation.

प्रचलित नाम- आम

प्रयोज्य अंग- पत्र, छाल, पुष्प, बीज, गोंद तथा पंचांग।

स्वरूप-यह एक विशाल सदा हरित वृक्ष, जिसकी शाखाएँ फैली हुई तथा इनके अंत में पत्ते सघन लगते हैं। पुष्प छोटे-छोटे बादामी श्वेतवर्णी जो मंजरियों में होते हैं। इसके फल कच्चे हरे लेकिन पकने पर पीले-लाल मांसल हो जाते हैं।

स्वाद-मधुर-आम्ल।

रासायनिक संगठन- इसमें मेन्जीफैरिन, एमिनोअम्ल, गैलोटैनिन, गैलिक अम्ल, इथाइल गैलेट, आइसोक्वेरसेटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, रीबोफलेविन, विटामिन-सी, सिट्रोनिलाल, डीटर्पेन, जिरानियॉल, लिमोनीन, मेन्जीफेरॉल, मेन्जीफेरॉन, नेरॉल एवं टैनिन इसमें विटामिन-ए अधिक मात्रा में, थोड़ी मात्रा में एस्कोर्बीक अम्ल, प्रोटीन, वसा, लोह, कार्बोदित, कैल्शियम, फोस्फरस, केरोटिन, सुक्रोज, फ्रुक्टोज तथा ग्लूकोज पाये जाते हैं।

गुण-पुष्प, शीतल, रुचिकर, ग्राही, कच्चेफल अम्लीय, रुचिकर, पके हुए फल मधुर तथा बल्य वीर्य वर्धक कोमल पत्र रुचिकर, कफ नि:सारक, पित्त शामक।

उपयोग-कच्चे फल कंठ दोष में, आमाशय उत्तेजक, मसूढ़ों में रक्तस्राव तथा त्वचा नीलांछन, पके हुए फल रक्त स्रावीरोग एवं प्रवाहिका में लाभकारी तथा यह रुचिकर, इसके छिलके दौर्बल्य में लाभकारी। बीज-कृमिघ्न, श्वसन में, अतिसार में, तृषा में तथा दाह में लाभकारी। लू लगने पर कच्चे फल का शरबत देने से लाभ। आमातिसार में तथा विषूचिका में आम की गुठली के अंदर दलदार बीज पत्रों को दही में पीसकर सेवन से लाभ होता है। रक्तार्श एवं प्रदर में गुठली के बीज पत्रों का चूर्ण मधु में मिलाकर सेवन से लाभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है। रक्तातिसार में पत्रों का रस (२ तोला) मधु एक तोला में मिलाकर, घी आधा तोला एवं दूध एक तोला इन सबका मिश्रण कर सेवन से लाभ। प्रमेह (मधुमेह) अंतर छाल का रस चार चम्मच, चूने का निथरा हुआ जल एक चम्मच-दोनों को मिलाकर सात दिन तक पीने से लाभ होता है। कृमिरोग में आम की गुठली के बीज पत्रों का चूर्ण मधु के साथ मिलाकर चटाने से लाभ होता है। दद्रु रोग में आम के वृक्ष में से निकला हुआ ताजा गोंद लगाने से लाभ होता है।

स्वर भंग में इसकी छाल का क्वाथ बनाकर ठंडा कर मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। कर्णशूल में इसकी पुष्प मंजरी पीसकर एरण्ड के तेल में उबालकर, ठंडा कर कान में एक बूंद डालने से लाभ। हड़कवा में आम के वृक्षों पर कुछ पुष्पमंजरी गोल गांठ बनकर बंध्य हो जाती है, इन को इकट्ठा कर रख लेना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति को हड़काया काटा हो, तो उस को प्रातः एवं सायं वंध्य मंजरी में से एक-एक चम्मच जल के साथ सात दिन तक सेवन से हड़काया नहीं होता।

इसका प्रयोग अयोध्या की तरफ बहुत किया गया था एवं सफल हुआ था। पित्त के कारण वमन में इसके एवं जामुन के पत्रों का शीत कषाय रस में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। रक्त पित्त में आम, जामुन तथा अर्जुन इन तीनों की छाल का चूर्ण बनाकर इसमें मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। सिर में (बालों) रूसी एवं फोड़े-फुन्सी इसकी गुठली एवं हरड़ इन दोनों का चूर्ण बनाकर दूध में घोंट कर सिर में लगाने से लाभ होता है।

पके हुए फलों के रस के सेवन से यह एक श्रेष्ठ टॉनिक है। शरीर की कान्ति सुंदर तथा तेजस्वी बनती है। मेद, अस्थि, शुक्राणुओं में वृद्धि होती है। उदर शूल तथा विकारों में लाभ होता है। संग्रहणी, श्वास रोग, अरुचि, अम्ल पित्त, आंत्रशोथ में लाभकारी तथा यकृत बल्य एवं शुक्रवर्धक है। यक्ष्मा का नाश होता है। इसके रस में विटामिन ए, बी तथा सी होते हैं। इसका सेवन मधु के साथ करने से खाँसी, जीर्ण ज्वर में लाभ होता है। हृदयरोग में १५ दिन तक आम्र रस का सेवन तथा इसके साथ बकरी दूध का सेवन करना चाहिए। पके फलों का रस कामोत्तेजक होता है। इसके पत्रों का क्वाथ सेवन-स्वरभंग में लाभकारी। आम्ररस के शरबत से गले का डिप्थेरिया ठीक होता है। कर्णशूल में आम के पुष्पों को एरण्ड तेल में उबालकर, तेल ठंडा कर एक से दो बूंद कान में डालने से कर्णशूल ठीक हो जाता है। मुखगत व्रण में आम, जामुन, नीम तथा परवल के कोमल पत्रों के क्वाथ से कुल्ला करने से इसमें लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निम्बक/महानिम्ब Melia azedarach Linn. MELIACEAE.

181

ENGLISH NAME:- Persian Lilac. Hindi - Bakain
PARTS-USED:-Root bark, Leaves, Fruits and Stem bark.
DESCRIPTION:- A medium sized tree, 9-12 meter high, leaves are bipinnate, leaflets are serrate; ovale lanceolate Flowers are fragrant and lilac; drupe globose, yellow
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Azaridine, Bakayanin, Bakalactone, Margosine, Azadirone, Azadiradione, Ochinol, Ochinine, Ochinolal, Nimbolinin, Nimbolidins, Triterpene, Meliacins, Sendanins, Melianol, Melianone, Lupeol, Beta-sitosterol, Catechin, Vanillin, Cinnamic acid, Cystine, Serine, Arginine, Glycine, Glutomic acid, Leucine, Threonine and Methionine.
ACTIONS:-Astringent, Diuretic, Bitter tonic, Anthelmintic, Analgesic.antiseptic, expectorant emmenagogue
USED IN:- Diabetes, Worm infestation, Rheumatism, Urinary disease, Sciatica, Headache, Piles, Fever, Cough, Asthma, Leprosy, Leucoderma, Burning sensation, Spleenomegaly, Chronic wounds, Heart troubles and Polyuria, lumbago, cephalalgia

प्रचलित नाम- बकायन

प्रयोज्य अंग- मूल की छाल, पत्र, फल तथा कांड की छाल।

स्वरूप-मध्यम कद का वृक्ष, जो औसतन ९-१२ मीटर ऊँचा, पत्र त्रिपक्षवत संयुक्त, पत्रिका तिरछी तथा दंतुर, पुष्प सुगंधित जामुनी रंग के होते हैं।

गुण-ग्राही, मूत्रल, तिक्तबल्य, कृमिघ्न, वेदनाहर।

उपयोग-मधुमेह, कृमिरोग, आमवात, मूत्ररोग, गृध्रसी, शिर:शूल, अर्श, ज्वर, कास-श्वासरोग, कुष्ठरोग, श्वित्र, संताप, प्लीहा, जीर्णव्रण, हृदयरोग तथा प्रमेह में लाभकारी।

रक्तविकार कुष्ठरोग एवं गण्डमाला बीज, छाल या पत्र स्वरस देने से लाभ होता है। स्नायविक शिर:शूल में इसके पुष्प एवं पत्रों का लेप करने से लाभ होता है। प्रमेह में इसके फल चावल के पानी में पीसकर तथा इसमें घी मिलाकर सेवन से लाभ होता है। गृध्रसी में इसके मूल की छाल के चूर्ण का जल के साथ सेवन से लाभ होता है। प्रमेह में इसके छ: फल को चावल की माड़ में (चार तोला) पीसकर, इसमें दो तोला घी मिलाकर अच्छी तरह घोटने के पश्चात् इसका सेवन करने से जीर्ण प्रमेह में भी लाभ होता है। अर्श में इसके फल का प्रयोग करने से लाभ होता है। श्वान विष में इसके मूल का रस-सेवन से लाभ होता है।

मात्रा- मूल तथा कांड की छाल-पाँच ग्राम (गरम जल के साथ) प्रतिदिन तीन बार। बीज का चूर्ण-आधा ग्राम मधु में मिलाकर प्रतिदिन तीन बार। नीम की गोंद का चूर्ण-पाँच ग्राम प्रतिदिन तीन बार।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिपर मिन्ट Mentha piperata Linn. LAMIACEAE.

182

ENGLISH NAME:- Peppermint. Hindi - Piparmint

PARTS-USED:-Whole Plant & Leaves.

DESCRIPTION:- A perennial aromatic herb, prostrating with suckesrs, flowers bluish white in Verticillaster Inflorescence.

TASTE:-Aromatic Pungent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:-Essentialoil (Peppermint oil) Hydrocarbon menthon (Menthol) Methyl acetate, Iservaret.

ACTIONS:-Stomachic, Digestive, Carminative, Analgesic, Anthelmintic. Diphoretic.

USED IN:- Flatulance, Vomiting, Abdominal pain, Toothache, Rheumatism, Nervepain, Headache, Catarrha, Dyspepsia, Menorrhagia, Cough, Paralysis, Hysteria.

प्रचलित नाम-पिपर मिन्ट

प्रयोज्य अंग- पंचांग तथा पत्र

स्वरूप-यह एक सुगंधित प्रसरणशील चिरस्थायी क्षुप होता है। इसके पत्ते गहरे हरे अभिमुखी होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे सफेद या हल्के नीले रंग के जो पुष्प दंड पर चक्रों के समूह में होते हैं।

स्वाद-सुगंधित, तीक्ष्ण।

रासायनिक संगठन- इस वनस्पति में उत्पत्त तेल (पिपर मिन्ट तेल) हाइड्रोकार्बन, मेन्थोन (मेन्थॉल), मिथाईल ऐसीटेट, इसरवेट तत्व पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, पाचन, वातघ्न, शूलहर, कृमिघ्न, स्वेदजनन।

उपयोग-आध्मान, वमन, उदरशूल, दंतशूल, आमवात, नाड़ीशूल, शिरःशूल, प्रतिश्याय, अग्निमांद्य, कष्टार्त्तव, नष्टार्त्तव, कास, पक्षाघात एवं मूर्छा में लाभकारी। इसके पत्रों का फांट खाँसी एवं ज्वर में लाभकारी। पुष्पों का प्रयोग उदर शूल, विसूचिका, अतिसार तथा वमन में लाभकारी। पुष्पों का प्रयोग-इसके पुष्पों को पीसकर इसका लेप व्रणों पर, शिरःशूल, शोथ, संधि शोथ, कटिशूल, दंतशूल में लाभकारी।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूतिहा Mentha spicata Linn. LAMIACEAE(LABIATAE).

183

ENGLISH NAME:- Spearmint. Hindi - Pudina

PARTS-USED:-Whole plant, Stem and Leaves.

DESCRIPTION:- A small herb spreading on moist soil with suckers: Stem and branches are square. Flowers white or bluish in spikes.

TASTE:-Little Pungent-Aromatic

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains: Essentialoil, which gives smell of Peppermint and Contains more Thymol & Peppermint, Oil Contains: Hydrocarbon menthon (Menthol) and Methyl acetate.

ACTIONS:-Antispasmodic, Carminative, Stomachic, Refrigerant, Diuretic, Digestive, Appitizer, Tonic, Heart tonic.

USED IN:-Anti fertility, Anti-Ovulatory, Gastro-intestinal disorders, Anti bacterial; Essential oil is significantly antifungal; Useful in Dyspepsia, Cough, Cold, Chronic fever.

प्रचलित नाम- पुदीना

प्रयोज्य अंग-पंचांग, कांड तथा पत्र।

स्वरूप-यह पौधा एक छोटा क्षुप जो नमी वाली भूमि पर प्रसरणशील होता है। इसका कांड तथा शाखाएँ चौपहल होती हैं। इसके पुष्प सफेद या नीलवर्णी जो मंजरियों में होते हैं।

स्वाद-अल्प तीखा सुगंधित।

रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तेल, जो पिपरमिन्ट जैसी सुगंध देता है एवं इसमें थायमॉल तथा पिपरमिन्ट अधिक मात्रा में होता है। इसमें तेल भी होता है जिसमें हाइड्रोकार्बन मेन्थोन (मेन्थॉल) एवं मिथाइल एसिटेट होता है।

गुण-उद्वेष्टिरोधी, वातानुलोमक, दीपन, दाहप्रशामक, मूत्रल, पाचन, रुचिकर, बल्य हृद्य।

उपयोग-बन्धत्व में, रजोरोधि, जठरांत्र विकारों में, कीटाणुनाशक; उत्पततेल-यह अतिमहत्व पूर्ण फंफूदी नाशक है। इसका प्रयोग खांसी, जुकाम, अतिसार, अग्निमांद्य, जीर्ण ज्वर में लाभकारी। मल-मूत्र स्तभक, विषूचिक-संग्रहणी, सर्दी जुकाम में पत्रों का स्वरस एक-एक बूंद नासिकाओं में डालने से लाभ होता है। बिच्छू के विष में पत्रों का रस या पत्रों को पान में डाल चबा कर खाने से लाभ होता है। शीत एवं सामान्य ज्वर में इसके पत्रों का रस अदरख के रस में मिलाकर सेवन से लाभ होता है या दोनों का क्वाथ बनाकर पीने से लाभ। उदरशूल तथा अतिसार में इसके पत्रों को अनार दाने के साथ पीसकर इसके रस का सेवन से लाभ या उदरशूल में इसके पंचांग का रस आधा तोला एवं इतना ही अदरख का रस मिलाकर रस में एक माशा सैंधव लवण मिलाकर सेवन करने से लाभ। प्रतिश्याय में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके पत्रों का रस नासिका में एक से दो बूंद डालने से लाभ होता है। दद्रु में इसके पत्रों का रस लगाने से लाभ होता है। अतिसार तथा खाँसी में इसके पत्रों के स्वरस के सेवन से लाभ होता है। विषूचिका (कोलेरा) में इसके पत्र छः ग्राम तथा इलायची तीन ग्राम आधा लीटर जल में उबाल कर रोगी को बार-बार पिलायें, जी मिचलाना तथा वमन बंद हो जाता है, तृषा भी कम हो जाती है तथा उदर की ऐंठन भी कम जो जाती है। पूतिहा का पानी दस मि.ली. गुलाब का अर्क ५० मि.ली. सिंकजबीन सादा दस ग्राम तीनों को मिलाकर पिलाने से (तीन से चार बार) पित्ती ठीक हो जाती है।

◆◆◆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नागकेशर/नाग पुष्प Mesua ferrea GUTTIFERAE.

184

ENGLISH NAME:- Cobra's saffron/Ironwood of Assam. Hindi - Nagkesar
PARTS-USED:-Stamens, Bark, Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A medium sized evergreen tree with short trunk; leaves opposite; flowers white aromatic, yellow stamens.
TASTE:-Bitter-Astrigent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Stamens Contain Bitter substance, yellow pigmants, Aromatic oil; Seeds Contain: Mesual oil, Mesuone, Mesuagin, Mammeigin, Mameisin, Alpha & Beta Amyrin, Beta-sitosterol, Mesuanic acid Mesua ferrones A & B, Exanthone, Mesuaxanthone A& B Guttiferol, Oleic acid, Stearic acid, Palmitic acid & Linoleic acid.
ACTIONS:-Analgesic, Anthelmintic, Stomachic, Antiemetic, Antidote.
USED IN:- Bleeding piles, Fissures, Dysentery, Worms infestation Indigestion. Haemorrhage, Disease of urinary bladder, Sore throat, Headache, Cough, Gastritis, Chronic catarrha, Dysentery, Bleeding cough.

प्रचलित नाम-पीला नाग केसर।

प्रयोज्य अंग- नरकेसर गुच्छ, छाल, पत्र, फल एवं बीज

स्वरूप-मध्यम कद का सदाहरित वृक्ष, इसका तना छोटा होता है। इसकी छाल चिकनी होता है। पत्र अभिमुखी तथा तीक्ष्णग्र युक्त होते हैं। इनकी ऊपरी सतह चमकीली तथा निचली सतह श्वेताभ एवं रज अच्छादित होती है। पुष्प सुगंधित श्वेत तथा नरकेसर पीतवर्णी होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके नर केसर में एक कड़वा पदार्थ, पीले रंजक द्रव्य, सुगंधित तेल, इसके बीज में मेसुअल तेल, मेसुऑन, मेसुआजिन, मेमीजिन, मेमेइसीन, आल्फा तथा बीटा एमिरिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, मेसुआनिक अम्ल, मेसुआफैरोन्स ए तथा बी एक्सैन्थोन, मेसुआजैन्थोन ए तथा बी, ऑलिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, पामीटिक अम्ल एवं लिनोलिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-वेदनाहर, कृमिघ्न, दीपन, रक्त संग्राहक गर्भस्थापक, आम पाचक, वमनशामक विषघ्न।

उपयोग-रक्तार्श, गुदा-विदर, प्रवाहिका, कृमिरोग, अपचन, रक्तस्राव रोग, रक्त प्रदर मूत्राशयरोग, कंठदोष, शिरःशूल, कास, आमाशय, प्रक्षोभ तथा जीर्ण प्रतिश्याय में लाभकारी, रक्तातिसार तथा रक्त कास, रक्तपित्त में उत्तम औषधि। रक्तातिसार में नाग केसर के चूर्ण का मिश्री के साथ सेवन से लाभ। खाँसी तथा आमाशय प्रक्षोभ में इसकी छाल एवं मूल का क्वाथ देने से लाभ होता है।

रक्तार्श में नाग केसर का चूर्ण मक्खन तथा मिश्री के साथ मिलाकर खाने से लाभकारी। नागकेसर का चूर्ण-१-३ ग्राम जल या मधु के साथ सेवन; पुत्र-प्रसूति के लिए आर्त्तव के समय यदि स्त्री नागकेसर का सूक्ष्म चूर्ण आधा तोला गाय के घी के साथ चाटे एवं

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊपर से गाय का दूध पिये तो इस प्रयोग के समय केवल गाय के दूध का ही सेवन किया जाये, अवश्य ही स्त्री वीर पुत्र को जन्म देती है।

हिक्का में नागकेसर का सूक्ष्म चूर्ण तीन रत्ती मधु और मिश्री के साथ सेवन करना चाहिये, ऊपर से गन्ने का रस पीना चाहिए। रक्त प्रदर में नागकेसर का चूर्ण मधु के साथ या चावल के पानी के साथ प्रातः एवं सायं दो समय दिया जाता है रोगी को केवल छाछ का सेवन करायें।

रक्तातिसार में नाग केसर का चूर्ण मिश्री के साथ सेवन से रक्तातिसार का नाश होता है। संधिवात एवं पामा में नागकेसर के बीजों के तेल का बाह्योपचार इन रोगों में उपयोगी है। कास में इसके पुष्पों का प्रयोग लाभकारी होता है।

मात्रा- चूर्ण १ से ३ ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'भगवान् श्रीराम, भगवती सीता जी एवं शेष नाग के अवतार लक्ष्मण जी भी जब वट वृक्ष के नीचे विश्राम कर आनन्द की अनुभूति करते हैं, तब सामान्य प्राणियों के लिए इस वृक्ष की महत्ता को आँकना आसान नहीं।'

-श्रीरामचरित मानस, आयोध्या काण्ड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाम्पेय/चम्पक/सुवर्णक चम्पा Michelia champaca Linn. MAGNOLIACEAE

ENGLISH NAME:- Yellow champa Hindi - Champabari

185

PARTS-USED:-Bark, Flowers and Fruits.

DESCRIPTION:- A tall hand some, evergreen tree about 20-25 metre high; leaves ovate lanceolate flowers fragrant greenish-yellow, solitary, axillary

TASTE:-Bitter-Acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark and Flowers Contains: Essential oil, Threre fore, decoction is not prepared of Flowers and Bark, only infusion and Powder is given.

ACTIONS:-Bark: Stimulant, Tonic, Carminative, Cooling, Astringent. Diuretic, Stomachic; Flowers: Stimulant, Antispasmodic, Anti-inflammation, purgative, emmenagogue

USED IN:- Root's Bark: Amenorrhoea, Rheumatism, Malarial fever, Menorrhagia, Ulcer in flammation, Flowers: Leucorrhoea, Polyuria, Haemorrhagicdisease.

प्रचलित नाम- सोन चम्पा

प्रयोज्य अंग- छाल, पुष्प तथा फल।

स्वरूप-एक ऊँचा सुन्दर सदाहरित वृक्ष जो औसतन २०-२५ फीट ऊँचा होता है। पत्ते चिकने, चमकीले, नोकदार तथा सरल होते हैं। पुष्प सुगंधित जो हरिताभ पीत वर्णी होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल तथा पुष्पों में उत्पत्त तेल पाया जाता है, इसलिये इसका क्वाथ बनाने से तेल उड़ जाता है, औषधिय प्रयोग में इसका चूर्ण या फान्ट बनाकर देते हैं।

गुण-छाल उत्तेजक, बल्य वातानुलोमक, शीतल, कफ नि:सारक, ग्राही, मूत्रल, दीपन। पुष्प उत्तेजक, उद्वेष्टरोधी, शोथहर।

उपयोग- मूल की छाल अनार्तव में, आमवात में, विषम ज्वर, कष्टार्त्तव, व्रणशोथ में। पुष्प श्वेतप्रदर, प्रमेह, रक्तस्त्रावी रोगों में लाभकारी। यह मूत्र कृच्छ्र, विष, कृमि, रक्त विकार, कफ और पित्त का नाश करता है। इसके पत्रों का रस शहद में मिलाकर सेवन से उदरशूल में लाभ होता है। आमवात एवं जीर्ण संधिवात में इसकी छाल का फांट या चूर्ण सेवन से लाभ। त्वचारोग में पुष्पों का प्रयोग लाभकारी। कष्टार्त्तव-अनार्तव में मूल की छाल के सेवन से लाभ होता है। व्रण शोथ पर मूल की छाल को दही में पीसकर लगाने से लाभ। विषम ज्वर में छाल का फांट बनाकर पिलाते हैं। ज्वर के वेग आने से पहले एक-एक घंटे के अंतर से तीन बार और ज्वर आने के पश्चात् प्रत्येक तीन घंटे के अंतर से दी जानी चाहिए। अतिमूत्र में इसके मूल की छाल का क्वाथ सेवन से लाभ होता है।

मात्रा- छाल का चूर्ण ५-१५ रत्ती।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लज्जालु/अंजलीकारिका Mimosa pudica Linn. MIMOSAE (LEGUMINOSAE).

186

ENGLISH NAME:- Sensitive plant (Touch me not) Hindi - Lajjalu/ Chuimui

PARTS-USED:-Roots, Leaves, Stem and Seeds.

DESCRIPTION:- A much branched diffused, spreading, spiny undershrub; leaves compound with long petioles; Flowers in globose head of pink colour.

TASTE:-Bitter-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contains: Stigma sterol, Leucoantho cyanidin, Flavon, Glycoside, Alkaloid Mimosine; Seeds: Mucilage & Free Aminoacids, Seed oil Contains: Linolic acid, Oleic acid, Palmitic acid, Stearic acid & Behenic acid.

ACTIONS:-Cooling, Pungent, Carminative, valunerary, alexipharmic, resolvent, diuretic, febrifuge

USED IN:- Hemorrhagic diseases Diarrhoea, Gynoecological disorder, Sinus, Sores, Piles, Fistula, Gravels, Urinary Complaints, Cough, Dyscrasia, Leucoderma.

प्रचलित नाम-लज्जावन्ती/छुई-मुई

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, कांड एवं बीज।

स्वरूप- एक अतिशाखीत प्रसरणशील कंटक युक्त गुल्म, पत्र संयुक्त संवेदनशील, लम्बे पत्रवृंत वाले जिनसे चार पत्रक दण्ड पत्रवृंत निकले होते हैं। फलियाँ संधियुक्त तथा सूक्ष्म कांटे वाली होती हैं।

स्वाद-तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसकेपत्रों में स्टीग्मास्टीरॉल, ल्युकोएन्थॉसायनीडीन, फ्लेवोन, ग्लायकोसाईड्स, एल्कलॉयड्स-माइमासीन, बीज में श्लेष्मा एवं मुक्त एमिनो अम्ल, बीज के तैल में लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामिटीक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल तथा बेहनिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, चरपरा, वातानुलोमक।

उपयोग-रक्तस्रावी रोगों में, अतिसार, योनिदोष, छालों, अर्श, नाड़ीव्रण (भगंदर), अश्मरी, मूत्ररोगों में, कास, रक्तदोष, श्वित्र रोग में लाभकारी। किसी हथियार के घाव के कारण रक्तस्राव हो तो इसके ताजा मूल को तेल में पकाकर, तेल द्वारा ड्रेसिंग करने से घाव में रूझ आती है एवं रक्त स्राव बंद होता है। अश्मरी एवं मूत्र रोगों में मूल का क्वाथ देने से लाभ होता है। ग्रंथी सूजन में पत्रों के कल्क का प्रयोग लाभकारी। अर्श में इसके पत्तों का चूर्ण दूध के साथ सेवन से लाभ। आम सिकतामेह में इसके मूल का क्वाथ लाभकारी। इसके मूल को हाथ पर घिस कर या बांध कर अति विष वाले सर्प को पकड़ा जा सकता है (राज मार्तण्ड)। इसके मूल का क्वाथ अल्सरेटिव कोलाईटिस प्रवाहिका में रक्तस्राव होता हो तो बहुत ही लाभदायी। घाव में पत्रों को पीसकर कल्क को घाव में भरने से शीघ्र ही रूझ आ जाती है। काली खाँसी (हुपींग कफ) इसके मूल का चूर्ण एक-एक रत्ती मधु के साथ चटाने से बच्चों की काली खाँसी (कुकुर खाँसी) में लाभकारी। इसके अतिरिक्त मूत्रावरोध तथा अश्मरी में भी लाभकारी।

मात्रा- स्वरस- १-१ तोला।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मौलसिरी/बकुल Mimusops elengi Linn. SAPOTACEAE

187

ENGLISH NAME:- Surinam Madler. Hindi - Maulsiri
PARTS-USED:-Bark, leaves, flowers, fruits and seeds.
DESCRIPTION:- A evergreen tree about 45 to 50 feet high, branches with compact leave glossy shining green forming head; at summit with white fragrant flowers; fruit ovoid yellow berry one seeded.
TASTE:-Bitter-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Lupeol and Xylose Leaves: Myrcetin, Quercetin; Flowers: Glucosides, Quercitol, Ursolic acid, Glucose, Triterpene, Essential Oil, Alcohol; Seeds Contains: Fatty oils, Fatty acid-Palmitic acid, Stearic acid, Behenic acid, Oleic acid, Linoliec acid, Lauric acid, Myristic acid, Saponin. Fruits Contain: Sugars.
ACTIONS:- Astringent Diuretic, Antipyretic, Spasmolytic, Antibacterial Appitizer, Tonic
USED IN:- Flowers (Dried Powder): in Headache, Skeletol fracture, Cough, Leucoderma, Worms, Hypotensive effect, Spermicidal; Bark is useful in Dental troubles. pyorrhoea diarrhoea, dysentery, stomatitis, ulcerated throat

प्रचलित नाम- मौलसिरी

प्रयोज्य अंग- छाल, पत्र, पुष्प, फल एवं बीज।

स्वरूप-एक लघु सदाहरित वृक्ष, जिसकी ऊँचाई ४५-५० फीट होती है। इसकी शाखओं पर पत्रों के सघन झुमके होते हैं। पत्ते चिकने लहरदार तथा नुकीले सदंडी होते हैं। पुष्प सफेद सुगंधित फल अंडाकार पीले तथा एक बीज वाले होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में ल्युपियॉल एवं जायलोज, पत्रों में मिरसेटिन एवं क्वेरसेटिन, पुष्पों में ग्लूकोसाइड्स, क्वेरसिटॉल, अर्सोलिक ऐसिड, ग्लूकोज, ट्रायटर्पेन, उत्पत्त तेल, आल्कोहॉल, इसके बीज में स्निग्ध तेल, वसा अम्ल-पामिटिक अम्ल, स्टीयरिक अम्ल, बेहेनिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, लौरिक अम्ल, मिरीस्टीक अम्ल तथा सैपोनिन; इसके फल में शर्करा पाई जाती है।

गुण-मूत्रल, ज्वरहर, उद्वेष्टहर, कीटाणुनाशक, रुचिकर।

उपयोग-सूखे पुष्पों का चूर्ण शिर:शूल में लाभकारी, करोटि भग्न में, कास में, श्वित्र, कृमिरोग, दाबह्रासी प्रभाव, शुक्रनाशक, इसकी छाल दंतरोगों में लाभकारी। में इसकी छाल का क्वाथ जीर्ण ज्वर में पौष्टिक रूप में सेवन कराते हैं।

पुरानी पेचिश में पके फल खाना लाभकारी। दंत विकारो में इसकी टहनी का दतुअन हिलते हुए दांतों के लिये लाभकारी। इसके साथ इसकी छाल एवं कच्चे फलों को चबाने से अत्यंत लाभ होता है। हृदयरोग में इसकी अंतर छाल का क्वाथ पीने से लाभ होता है। इसके पुष्पों का हार पहनने से भी हृदय रोग में लाभ होता है। प्रदर में इसके २० ग्राम ताजा पुष्प तीन बादाम एवं तीन ग्राम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शर्करा मिलाकर पीसकर पीने के पश्चात् दूध पीना चाहिए जिससे लाभ होता है। कोलेरा (विसूचिका) में इसके बीज एवं इमली के बीज पीसकर चूर्ण जल के साथ सेवन से लाभ होता है। मुखरोग में मौलश्री, इमली एवं खदिर की छाल को उबालकर ठंडा कर इस जल से बार-बार कुल्ला करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त इस जल के प्रयोग से कंठ में हुए टॉन्सिल तथा छालों में लाभ होता है। अर्श तथा हरस में मौलश्री के २१ दाने सूखे हुए बीज जिसके ऊपर से कठण बीजावरण निकला हुआ हो, ११ दाने काली मिरच मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लेने के पश्चात् रविवार, सोमवार या गुरुवार प्रातः खाली पेट जल के साथ सेवन करना चाहिए। सेवन करने के पश्चात् छः घंटे तक नहीं बैठना चाहिए तथा एक-एक घंटे के बाद मौसमी चूसनी चाहिए। इन छः घंटों में मौसमी के अतिरिक्त किसी प्रकार का भी प्रवाही या घन आहार लेना नहीं चाहिए। छः घंटे पश्चात ही किसी प्रकार का हल्का भोजन (दाल, चावल या खिचड़ी) करना चाहिए।

मात्रा- छाल का क्वाथ-५०-१०० मि. ली.। पुष्प का चूर्ण-१-२ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'वट वृक्ष पूजा-अर्चना, तप-साधना तथा मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए अत्यधिक उपयोगी माना गया है। यही कारण है कि अतीत से ही हमारी संस्कृति में वट वृक्ष की पूजा की जाती रही है।'- रामचरित मानस, बालकाण्ड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृष्णकली नकला/गुलबाशी Mirabilis Jalapa.

Linn. NYCTAGINACEAE

188

ENGLISH NAME:- Four O' clock Plant/ False Jalap. Hindi - Galpank

PARTS-USED:-Leaves and tuber.

DESCRIPTION:- Much branched herb with large swollen nodes; Leaves opposite, ovate, a cuminate, base cordate; Flowers yellow, white, pink, corolla crumpled.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Blood purifier, Cooling, Aphrodisiac.

USED IN:- Piles, Abcess, Goiter, Toremove unwanted hairs, to purify blood.

प्रचलित नाम- गुलवास

प्रयोज्य अंग- कंद (सफेद गुलबाशी) एवं पत्र।

स्वरूप-अतिशाखीत क्षुप, संधि स्थान फूले हुए, पत्ते विपरीत, अण्डाकार नोकदार, आधार तल हृदयाकृत, पुष्प ३-७ के गुच्छे में, पीले, सफेद, गुलाबी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त

रासायनिक संगठन-

गुण-रक्तशोधन, शीतल, वाजीकरण।

उपयोग-अपरिपक्व अर्श में, गण्ड एवं फोड़े को पकाने के लिये, गलगण्ड में, निलौमीकरण तथा रक्त शुद्धिकरण के लिये लाभकारी। गण्ड एवं कच्चे फोड़े पर गुलबास के पत्रों पर घी लगाकर गरम कर गण्ड पर बाँधने से गण्ड फट जायेगा तथा अंदर का अशुद्ध रक्त निकल जाता है। या गुलबास के कंद को जल में घिस कर बार-बार लेप करने से गण्ड फट जाता है तथा अशुद्ध रक्त निकल कर आराम मिलता है। पौष्टिकता के लिये सफेद गुलबास के कंद को थोड़ा-सा पीस कर सुखा लें एवं इसका चूर्ण बना कर इसे घी में सेंक कर इसमें बादाम, पिस्ता, चिरौंजी आदि मसाला मिला दें, इसका पाक बनाकर (मिश्री मिलाकर) प्रतिदिन दो तोला सेवन कर ऊपर से गाय का ताजा दूध पियें। इस प्रकार धातु स्थान की कमी दूर होकर धातु में वृद्धि होगी एवं शरीर हृष्ट-पुष्ट होकर स्वास्थ्य लाभ होगा। घात पड़ने पर सफेद गुलबाश के कंद को गाय के दूध में घिस कर सात दिन तक पीने से लाभ होता होगा। रक्त शुद्धिकरण एवं शारीरिक गर्मी दूर करने के लिये सफेद गुलबाश के कंद को (एक तोला) गाय के दूध में घिस कर उसमें मिश्री एक तोला तथा जीरे का चूर्ण (६ रत्ती) मिला कर प्रतिदिन दो बार सेवन कराने से लाभ होगा। निर्लोमीकरण गुलबाश के कंद को जल में घिसकर लेप करने से अवांच्छनीय बाल (केश) झड़ जाते हैं। इसकी गांठदार जड़ (मूलकंद) का प्रयोग जलापा के स्थान पर गलती से किया जाता है। इसके बीजों को काली मिर्च में मिलावट के लिये उपयोग में लाते हैं।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारवेल्लक Momordica charantia Linn. CUCURBITACEAE

189

ENGLISH NAME:- Bitter Gourd. Hindi - Karela

PARTS-USED:-Roots, Leaves, Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- A week stemed tendril climber covered with soft hairs; leaves palmatisect; Flowers bright yellow.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Aromatic Essential oil, Carotene, Glucoside, Saponine and Momoridicine alkaloid. Charantin (Non nitrogenous substance.)

ACTIONS:-Purgative, Emetic, Atispasmodic, Astringent, Stomachic, Diuretic, Carminative, Anthelmintic.

USED IN:- Diabetes, Piles, Asthma, Cough, Arthritis, Colculus in urinary track, Inflammation, Fever, Liver and Spleen disease, Leprosy, Skin disease, Anaemia, Flatulance, Polyuria, Jaundice.

प्रचलित नाम- करेला।

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप-कमजोर कांड की सूत्रारोही लता, जो मृदुरोमश, पत्र पंजाकार तरीके से विभाजित होते हैं। पुष्प चमकीले पीतवर्णी होते हैं। फल हरे रंग त्रिकोणाकार दोनों तरफ नुकीले एवं बीच में मोटे होते हैं। बाहर की सतह ऊबड़-खाबड़ होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें सुगंधित उत्पत्त तेल, कैरोटिन, ग्लूकोसाइड, सैपोनिन, मोमोरडीसाइन क्षारभ, कैरेन्टीन (नत्रलहीन पदार्थ) तत्व पाये जाते हैं।

गुण-अतिरेचक, वामक, उद्वेष्टननिरोधी, ग्राही, दीपन, मूत्रल, वातानुलोमक, कृमिघ्न।

उपयोग:-मधुमेह, अर्श, श्वासरोग, कास, संधिवात, मूत्रसंस्थान में अश्मरी, दाह, ज्वर, यकृत तथा प्लीहा रोग, कुष्ठरोग, चर्मरोग, पाण्डुरोग, आध्मान, प्रमेह में लाभकारी।

आमवात, यकृत-प्लीहा वृद्धि जीर्ण त्वचा रोगों में इसके फल का शाक बिना कड़वापन दूर किये लाभकारी।

यकृत-प्लीहा वृद्धि तथा विषम ज्वर में इसके पत्रों का रस पीने से लाभ होता है।

पुराने त्वचा रोगों में पत्तों को पीसकर इसका लेप करना लाभकारी।

वातरक्त में करेले के क्वाथ से सिद्ध किये हुए तेल के प्रयोग से वातरक्त नष्ट होता है।

आँख की नीली रोग में इसके मूल को अश्वमूत्र में घिसकर यह प्रवाही नेत्रों में डालने से लाभ होता है।

योनि बाहर निकल आती हो, तो इसके मूल को पीसकर इसके कल्क को योनि के अंदर रखने से योनि यथा स्थान अंदर प्रविष्ट हो जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मसूरिका में इसके पत्रों के स्वरस में हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।

विषूचिका (कोलेरा) में इसके पत्रों के स्वरस में तिल का तेल मिलाकर सेवन से विषूचिका का नाश होता है।

मधुमेह में इसके फल का प्रभाव विशेष नहीं होता। किसी-किसी को कभी-कभी मधुमेह में लाभ होता होगा, उसमें तिक्त रस अधिक लाभकारी हो सकता है, इसलिए करेला का शाक तिक्तता दूर किये बिना लाभकारी। इसके फल आमवात वातरक्त, यकृत, प्लीहा रोगों में उपयोगी तथा पाचक एवं बल्य तथा कृमिघ्न है।

गंजापन दूर करने के लिये पत्रों के स्वरस का लेप लाभकारी। करेला के स्वरस का उपयोग बच्चों के कृमिरोग में तथा यह रेचक है। करेले जब तक हरे एवं ताजे होते हैं, तब एस्कोर्बीक ऐसिड का प्रमाण सुरक्षित रहता है; जबकि पकने पर इसमें से अधिकतर औषधीय गुण नष्ट हो जाते हैं। जबकि शाक पकाते समय इसका ४० प्रतिशत भाग नष्ट हो जाता है, सूर्य की गर्मी में सुखाने से ८० प्रतिशत एस्कोर्बीक एसिड नष्ट हो जाते हैं इसलिए मधुमेह में औषधि के प्रयोग हेतु कच्चे करेला का स्वरस लाभकारी है।

मात्रा- फल तथा पत्रों का रस- ६-६ चम्मच दिन में तीन बार। फल तथा पत्रों का चूर्ण- २-२ छोटे चम्मच दिन में तीन बार।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'सृष्टिकर्त्ता ब्रह्म को जब सृष्टि की सामग्री न मिली, तब मनोरथ पूर्ण करने वाले अक्षय वट की उन्होंने पूजा की।'

- भारतीय संस्कृति प्रतीक कोश

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वन्ध्या ककोर्टकी (कर्कोटकी) Momordica dioca Roxb. CUCURBITACEAE.

190

ENGLISH NAME:- Wild Gourd. Hindi - Barijh Kakora

PARTS-USED:-Leaves, Fruits and Tubers.

DESCRIPTION:-A tendril climber with angular stem, simple & cordate leaves. Plants are monoecious Flowers yellow Fruits ovate, soft spiny.

TASTE:-Acrid .

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- Alkaloids and Mangenese.

ACTIONS:-Expectorant, Anti-ulcer, Antidote, Stomachic, Appitizer.

USED IN:- Asthma, Cough, Fever, Leprosy, Bleeding piles, Diabetes, Disuria, Heart trouble.

प्रचलित नाम- वन ककोड़ा/ककोड़ा/खेकसा
प्रयोज्य अंग- पत्र, फल तथा कंद।
स्वरूप- एक सूत्रारोही चिकनी एवं दुर्गन्धयुक्त लता, जिसका कांड पंचपहल होता है। पत्ते प्रायः लहरदार तथा दन्तुर किनारे वाले, हृदयाकार के होते हैं। पुष्प पीतवर्णी, फल गोल अंडाकार तथा मृदुकंटक युक्त होते हैं।
गुण-कफ निःसारक, व्रणघ्न, विषघ्न, दीपन, रुचिकर।
उपयोग में-श्वास रोग, कास, ज्वर, कुष्ठ रोग, रक्तार्श, मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र तथा हृदय रोग में लाभकारी। मधुमेह में कर्कोटकी कंद का चूर्ण वंग भस्म के साथ पीसकर सेवन से लाभ। इसके मूल को पीसकर ज्वर में, शरीर पर इसका लेप करने से लाभ। यह रुचिकर, तीक्ष्ण, अग्नि दीपक, कड़वी, उष्ण, वायु, कफ, पित्त का नाश करती है। इसके पत्र- रुचिकर, त्रिदोष नाशक एवं ज्वर, कृमि, क्षय, खाँसी, श्वास रोग, यक्ष्मा, अर्श एवं हिचकी शामक हैं। वंध्य कर्कोटकी यह कड़वी, तीक्ष्ण, उष्ण, रसायन, गुणवाली औषधि है। छिपकली के विष में कर्कोटकी कंद को जल में घिसकर सात दिन तक जल का सेवन करने से लाभ होता है। मूत्र कृच्छ्र में इसके कंद का सेवन मधु के साथ लाभकारी। स्तन रोग में:-इसके मूल को जल में घिसकर लेप करने से लाभ होता है। रक्तार्श में इसके कंद का चूर्ण लाभकारी।
मात्रा- १ से ३ ग्राम।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शोभांजन/शिग्रु Syn : Moringa pterygosperma Gaertn.

Moringa oleifera LamkMORINGACEAE. 191

ENGLISH NAME:- Drum Stick Tree. Hindi - Sahjan/Munger
PARTS-USED:-Root, Root's Bark, Flowers, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A medium sized delicate tree with 20-25 feet height; leaves tripinnate compound; leaflets small, ovate Flowers white in panicle, seeds winged white papery Fruits long Capsule.
TASTE:-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Root bark Contains: Alkaloids, Moringine, Moringinine, Spirochin, Pterigospermine; Leaves & Fruits: Vitamin-A Nicotinic acid, Ascorbic acid, Vitamin-B, Fatty acid; Flowers & Fruits: Amino acids, Glucose and Sucrose, Citric acid, Mallic acid, Succinic acid, Fumaric acid, Oxalic acid.
ACTIONS:-Stimulant Anti-inflammatory, Carminative, Stomachic, Appitizer. Anthelmintic, Digestive, Diuretic.
USED IN:- Paralytic affections, intermittent fever, Epilepsy, Chronic Rheumatism, Cardiac tonic, Nervous debility, Spasmodic, affections of bowels; Hysteria, Flatulance, Titanus, Seeds: in Veneral affections, Flowers: Anti-ulcer, Leprosy, Hypotensive.

प्रचलित नाम-सहिंजना

प्रयोज्य अंग- मूल, मूल की छाल, पुष्प, फल एवं बीज।

स्वाद- कटु।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में एल्कलॉयड, मोरिन्गाइन, मोरिन्गीनाइन, स्पायरोचिन, टेरीगोस्पर्माईन, इसके पत्रों तथा फल में विटामिन ए, विटामिन बी, निकोटिनीक अम्ल, एस्कोर्बीक अम्ल, वसा अम्ल, इसके पुष्प तथा फल में एमिनोअम्ल, ग्लूकोज, सुक्रोज, सिट्रिक अम्ल, मैलिक अम्ल, सक्सीनिक अम्ल, फ्युमेरीक अम्ल तथा ओक्सेलिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-उत्तेजक, शोथहर, वातानुलोमक, दीपन, रुचिकर, कृमिघ्न, पाचन, मूत्रल।

उपयोग-पक्षाघात प्रभाव, अंतरिया ज्वर, अपसर्गिकामेह, जीर्ण आमवात, हृदयबल्य, नाड़ी दौर्बल्य, उद्वेष्टकर, आंत रोग, मूर्छा, आध्मान, हनुस्तम्भ, इसके बीज रतिजरोग में लाभकारी। इसके पुष्प व्रण नाशक, कुष्ठरोग तथा दाबह्रासी में लाभकारी। नेत्ररोगों में इसके पत्रों का रस शहद में मिलाकर आँख में अंजन से तिमरादिक सर्व नेत्र रोगों में लाभकारी। कर्ण में स्राव समय पुष्पों को सुखाकर इसका चूर्ण कान में डालने से लाभ। अश्मरी में इसके मूल की छाल का क्वाथ दिन में दो-तीन बार पीने से लाभ होता है। बीज का तेल संधिवात, आमवात तथा वातरक्त में मालिश करते हैं। मूर्छा में बीजों का चूर्ण नाक में डालते हैं। आंत्र कृमि में इसकी फली का साग खाने से लाभ होता है। शुष्कार्श में इसकी छाल का क्वाथ देने से लाभ होता है। ग्रंथिविसर्प में इसकी छाल जल में घिसकर गरम कर लेपकरने से लाभ होता है। श्वासरोग में इसके पत्रों का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। कुष्ठक्षत

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसके बीजों का तैल लगाने से लाभ होता है। प्लीहोदर में इसके क्वाथ में सैन्धव तथा चित्रक की छाल का क्वाथ मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अपक्व विद्रधि में इसका सेवन एवं लेप करने से अपक्व विद्रधि ठीक होता है। नेत्र शोथ में, वात, पित्त, कफ या सन्निपात से उत्पन्न नेत्र शोथ में, इसके पत्रों के रस में समभाग मधु मिलाकर आँख में डालने से वेदना का शमन होता है।

कफजन्य वेदना में इसके मूल के क्वाथ में काली मिर्च, यवक्षार तथा मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। शिरःशूल में इसके मूल के रस में गुड़ मिलाकर नस्य देने से शिरोवेदना ठीक होता है। कर्णशूल में इसके क्वाथ में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। दद्रु में इसके मूल की छाल जल में घिसकर लेप करने से लाभ होता है। श्वान दंश में इसके पत्ते, लहसुन, हल्दी, नमक तथा काली मिर्च के साथ पीसकर कुत्ते के काटने पर दंश स्थान पर लगाते हैं तथा सेवन भी कराते हैं। इससे ५-६ दिन में रूझ होकर शोथ तथा ज्वर ठीक हो जाता है। वाजीकरण के लिये इसके पुष्पों को दूध में उबाल कर पीने से लाभ होता है। इसके पत्रों में विटामिन ए अधिक मात्रा में पाये जाने के कारण इसका शाक बहुत ही लाभकारी है। यह वनौषधि सभी प्रकार के शोथ (इन्फलेमेशन्स) में अति उपयोगी मानी जाती है, यदि वनौषधि छोटे कद की है, तो इसके मूल का प्रयोग किया जा सकता है, किन्तु बड़े वृक्ष कद की है, तो इसकी छाल का प्रयोग किया जा सकता है। इसकी छाल को जल में घिस कर इसका लेप शोथ ग्रसित अंग पर करने से लाभ होता है (न्यूमोनिया, पसलियों का शूल, उदर शूल आदि में बाह्योपचार द्वारा लेप करने से)। इसमें पेनिसीलिन जैसे शोथघ्न गुण होने के कारण यकृत, प्लीहा वृद्धि-शोथ, रोगों में, इसके अतिरिक्त शरीर के अंदर के अंगों में सूजन (शोथ) हो तो एपण्डीसाइटिस, ब्रोन्काइटिस, पेरीकार्डीआइटिस, पेरीटोनाइटिस इन सभी आइटिस में यह वनौषधि रामबाण औषधि है। इसको स्वदेशी पेनीसिलिन कहा जा सकता है। इसकी छाल को जल में घिसकर इसका सेवन एक तोला जल के साथ करने से लाभ होता है। इसका प्रयोग यकृत कैन्सर में आरोग्यवर्धनी औषधि के साथ करने से रोगी को बहुत ही लाभ होता है। (इसकी दो तोला छाल का क्वाथ बनाकर सेवन से)। इसकी छाल, कृमिघ्न, शोथघ्न, वृक्क विकारों, यकृतरोगों, कफ विकारों में रसायन जैसा प्रभाव डालती है। मेनीनजाइटीस जैसे रोग में भी छाल को जल में घिसकर इसकी एक-दो बूँद नासिका में डालने से तथा सेवन से लाभ होता है। वृक्क अश्मरी में इसकी छाल या मूल का क्वाथ पिलाना चाहिए।

मात्रा- मूल की छाल का चूर्ण- ४-८ माशा। मूल-एक तोला।

❑❑❑

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहतूत/तूत Morus indica Griff. MORACEAE.

192

ENGLISH NAME:- Mulberry. Hindi - Sahtut

PARTS-USED:-Leaves and Fruits.

DESCRIPTION:- A large deciduous shrub. Leaves ovate, thin, cordate, acute, serrate often lobed. Flowers small in short spikes. Fruit Sorosis fleshy.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contain:- Carotene (Vitamin 'A') Thiamine, Nicotanic acid, Riboflavin, Ascorbic acid, Calcium, Phosphorus, Iron.

ACTIONS:-Fruits-Cooling, Laxative, Carminative, Antibillious, Refrigerant, Expectorant, Aphrodisiac, Tonic, Anti-thirst.

USED IN:- Fruits are expectorant and refrigerant, useful in fever, Hemorrhagic disease, Polyuria, Worms in festation (Leaves) Stomatitis.

प्रचलित नाम- तूत/शाहतूत

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं फल।

स्वरूप-एक बड़ा पतनशील क्षुप, पत्र अण्डाकार, पतले, हृदयाकृत, नोकदार, दन्तुर लगभग खण्ड वाले होते हैं। पुष्प छोटे जो मंजरियों में होते हैं। फल संयुक्त मांसल सरसाक्ष होते हैं।

स्वाद-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके फल में केरोटिन (विटामिन ए) थायमिन निकोटेनिक अम्ल, रीबोफ्लेविन, एस्कोर्बीक एसिड, कैल्शियम, फोस्फोरस, लोह पाये जाते हैं।

गुण-शीत, रेचन, वातहर, पितहर, दाह प्रशमन, कफ नि:सारक, वाजीकर, बल्य, तृषाहर।

उपयोग-इसके फल कफ नि:सारक एवं दाह प्रशामक होते हैं। इनका प्रयोग रक्तपित्त रोग, प्रमेह, कृमिरोग एवं मुखगत व्रण में लाभकारी है। पित्त प्रकोप में इसके फलों का शर्बत पीने से लाभ होता है। रक्तपित्त में भी इसके फलों का शर्बत पीने से लाभ होकर उदरदाह तथा छातीदाह में लाभ होता है। रक्तपित्त में कच्चे फलों के सेवन से इसमें लाभ होता है तथा विबंध ठीक होकर दस्त साफ होता है। ग्रीष्म ऋतु में लू लगने पर-इसके पके हुए फल जो मधुर होते हैं, का शरबत बनाकर (मिश्री मिलाकर) पीने से लाभ होता है। प्रमेह में इसके पत्रों की चटणी बना कर सेवन से लाभ होता है। कृमिरोग में इसके पत्रों के स्वरस के सेवन से उदर कृमियों का नाश होता है। छोटे बच्चों के उदर कृमी नष्ट कर बाहर आ जाते हैं। मुखगत व्रण में इसके पत्तों का जल में उबालकर इस जल से कुल्ला करने से लाभ होता है। स्वर भंग में इसके पत्रों के क्वाथ से गण्डूष कराने से लाभ होता है।

लाभ- पत्रों का स्वरस- ३ तोला। फलों का शरबत-५०-१०० मि.ली.।

□□□

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कपिकच्छू/शूक शिम्बी Syn : Mucuna pruriens Bek. Mucuna pruritn Hook FABAACEAE (LEGUMINOSAE) 193

ENGLISH NAME:- Cow-hedge plant/Cowitch/ Lyon Bean.Hindi - kevanch

PARTS-USED:-Seeds, Roots, Out growth on pericarp.

DESCRIPTION:- An extensive annual twining herb; leaves, trifoliate, flowers: purple leaflets rhomboid, entire, oblique in drooping raceme; sub cylindric, mostly `s' shaped, clothed with deme pungent hairs, 4-6 seeded.

TASTE:-Sweet- Bitter

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains: Carbohydrates, Steroids, Phenols, Glycosides, Tannin, Aluminium, Iron, Zinc, Calcium, Magnessium and Potassium.

ACTIONS:-Astringent, Laxative, Aphrodisiac, Nervine tonic, Diuretic, Stimulant. Anthelmintic.

USED IN:- Leucorrhoea Spermatorrhoea, Paralysis, Ulcer, Dyscrasia, Worms in intestine, Tuber culosis, Asthma, Powder of Seeds mixed with Honey & Ghee is given.

प्रचलित नाम- कौंच/केबांच

प्रयोज्य अंग- मूल, बीज, फली तथा फली के उपर के रोम।

स्वरूप- यह एक वर्षीय चक्रारोही पतली लता प्रकार का क्षुप होता है। पत्ते संयुक्त, त्रिपत्रक, अग्रपत्रक तिर्यगायताकार पतले चिकने, ऊपरी सतह रोमश, पुष्प बैंगनी रंग के मंजरियों में, फली दोनों अग्रों पर विपरीत दिशा में टेड़ी, कुछ फूली हुई जो सघन रोमों से ढकी हुई स्पर्श करने से खुजली होती है।

स्वाद-तिक्तरस-मधुर।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में कार्बोदित, स्टीरोइड्स, फैनोल्स, ग्लायकोसाइड्स, टैनिन्स, एल्युमीनियम, लोह, जिन्क, कैल्शियम, मेग्रेशियम तथा पोटेशियम तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, मृदुरेचक, वाजीकरण, मेधाबल्य, मूत्रल, उत्तेजक, कृमिघ्न।

उपयोग:-श्वेत प्रदर में, शुक्रदौर्बल्य, पक्षाघात, व्रण, रक्तदोष, आंत्र कृमियों में, यक्ष्मा, श्वासरोग में। इसके बीज का चूर्ण मधु तथा घी में मिलाकर सेवन करते हैं। इसकी जड़ के सेवन से वातनाड़ियों को शक्ति मिलती है। इसकी फली के ऊपर के रोम उत्तम आंत्रकृमि नाशक है, इसके रोमों को घृत, मधु या गुड़ के साथ गोला बनाकर देते हैं। विषूचिका में इसके मूल का फांट बनाकर देने से लाभ होता है। अतिसार में (१) इसके मूल का चूर्ण एक तोला जल के साथ सेवन से पक्वातिसार तथा रक्तातिसार नष्ट होता है। (२) इसके मूल से सिद्ध किया हुआ दूध अतिसार से पीड़ित रोगी के लिये लाभकारी है। वाजीकरण के लिये इसके बीजों तथा गेहूँ को दूध में पकाकर खीर जैसा घन हो जाने पर ठंडा करके घी मिलाकर खाना चाहिए, ऊपर से दूध पीना चाहिए। रक्त पित्त में इसके कोमल फलों (शिम्बी-फली) का शाक अति लाभकारी। वात व्याधि में इसकी कच्ची फलियों का स्वरस पीने से लाभ होता है। योनि संकोच के लिये इसके मूल का क्वाथ-इससे रूई का फाया भिगोकर योनि के अंदर रखने से योनि का संकोच होता है। शुक्रदौर्बल्य, पक्षाघात में कौचपाक अति लाभकारी।

मात्रा- बीज का चूर्ण-३-५ ग्राम।
रोम- ५-१० रत्ती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुरभी नीम/कैडर्य Murraya koenigii. Sprin. RUTACEAE

194

ENGLISH NAME:- Curryleaf Tree Hindi - Karhi Patta, Meethi neem
PARTS-USED:-Whole plant, Leaves and Root bark.
DESCRIPTION:- A small, deciduous, strong smelling, shrub or tree with compound aromatic leaves, leaflets 5-9 flowers white in panicles.
TASTE:-Acrid-Aromatic, bitter, astringent
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Koenimb, Cadinine, Caryophyllene, Dipentene, Pinene, Phallandrene, Sabinene, Cavirol, Isosafrol, Terpineol, Lauric acid, Palmitic acid, Girinimbine, Koenidine, Koenigine, Koeningicine, Koenimbidine, Koenine, Mahanine, Mukonicine; Leaves contain: Mahanimbidine, Mahanimbine, Curryanine, Curryangine & Murrayaline.
ACTIONS:- Cooling, Anti bacterial, Tonic, Stimulant, lexiteric, anthelmintic, analgesic anti-emetic, Stomachic, Digestive, Astringent, Carminative.
USED IN:- Diarrhoea, Dysentery, Piles, Paste of leaves applied locally on: Erruptions, Bruised and Piosonous bites; Root bark: Relieves renal pain: leucoderma, blood disorders.

प्रचलित नाम- मीठी नीम/कड़ीपत्ता

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र तथा मूल की छाल।

स्वरूप- तीव्रगंध वाला एक लघु वृक्ष जिसके पत्ते संयुक्त, पत्रक अंडाकार दंतुर, चमकदार तथा अति सुगंधित होते हैं। पुष्प छोटे तथा सफेद होते हैं। फल गोल तथा गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-कटु-सुगंधित।

रासायनिक संगठन-इसमें कोइनिम्ब, कैडीनाइन, कैरियोफायलिन, डायपेन्टीन, पिनीन, फैलेन्ड्रीन, सैबीनीन, कैवीरॉल, आइसोसेफरॉल, टर्पेनीयोल, लौरीक अम्ल, पामीटिक अम्ल, गीरीनिम्बाईन, कोनीडाइन, कोनिजाइन, कोनिन्जीसीन, कोनिम्बीडीन, कोनाइन, महानाइन, म्युकोनीसीन, इसके पत्रों में महानिम्बीडीन, महानिम्बाइन, करीनीन, करीन्जीन, मुरायालिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-कीटाणुघ्न, बल्य, उत्तेजक, दीपन, पाचन, ग्राही, वातघ्न।

उपयोग-अतिसार, प्रवाहिका, अर्श में; पत्रों के कल्क का प्रयोग त्वचा पर होन वाले फोड़े-फुन्सियों तथा नीलान्छन एवं सर्पदंश पर लाभकारी। मूल की छाल के सेवन से वृक्कशोथ में लाभ। इसके पत्र वमन शामक, वातानुलोमक, दीपन, कृमिघ्न तथा वेदनाहर गुण वाले हैं। सविष जन्तु दंश में इसके मूल की त्वचा को पीसकर लेप करना चाहिये। प्रवाहिका में इसके पत्रों का स्वरस पीने से लाभ होता है। वमन में इसके पत्रों का फांट बनाकर पीने से वमन बंद होता है। शाकाहारियों के लिये यह पाचक है। वृक्क क्षत में इसके मूल का रस लाभकारी है। त्वचा पर खरोंच लग जाये, छिल जाये, या चोट लग जाए, तो इसके पत्रों को पीसकर इसका कल्क लगाने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामिनी Syn. M. exotica. Linn. Murraya paniculata Jack RUTACEAE

195

ENGLISH NAME:- Orange Jasmine/ Indian Box-tree. Hindi - Madhu Kamini

PARTS-USED:-Bark and Leaves

DESCRIPTION:- A small evergreen shrub or tree or large woody shrub 3-5 meter high, leaves; aromaitc compound leaflets 5-9, ovate elliptic-lanceolate flowers white; in clusters of corymbose, fragrant, berries ovoid-red, or orange

TASTE:-Bitter-Aromatic

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Phebalocin, Heptamethoxy flavon, Fruits: Paniculatin, Coumarin (Murrayan, Murralongin, Murrangatin) Flowers: Scopoletin, Glucose; Roots: Alkaloids (Noracrony cine and Skimmiacine.)

ACTIONS:-Stimulant, Astringent, leaves Antibacterial.

USED IN:- Leaves are Useful in Diarrhoea, Dysentery; Powder of Leaves Locally applied to freshcut: Decoction of leaves; in Dropsy, Stem Bark: in Diarrhoea; Root bark in; Cough, Hysteria, Rheumatism.

प्रचलित नाम- कामिनी

प्रयोज्य अंग- पत्र तथा छाल।

स्वरूप- यह एक छोटा काष्टीय गुल्म जिसकी ऊँचाई १२-१८ फीट होती है। इसके पत्ते अतिसुगंधित एवं संयुक्त, पत्रक ३-७ एकांतरिक, अंडाकार तीक्ष्णाग्र, चिकने तथा तिरछे होते हैं। पुष्प सफेद एक या समूह में होते हैं।

स्वाद-तिक्त-सुगंधित।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में फेबालोसीन, हेप्टामिथोक्सीफलैवॉन, इसके फल में- पेनीक्युलेटिन, कॉमरिन (मुरायान, म्युरोलोन्जीन, म्युरॉगांटिन)इसके पुष्प में स्कोपोलेटिन, ग्लूकोज, इसके मूल में एलकॅलायड्स (नोराक्रोनीसिन, तथा स्किमियासीन) तत्व पाये जाते हैं।

गुण-उत्तेजक, ग्राही।

उपयोग-इसके पत्र अतिसार तथा प्रवाहिका में लाभकारी।

पत्रों के चूर्ण का बाह्य प्रयोग ताजे कटे हुए जख्म पर लाभकारी। पत्रों का क्वाथ जलोदर में; कांड की छाल अतिसार में, मूल की छाल कास, मूर्छा तथा आमवात में लाभकारी।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कदली Musa sapientum Linn. M. paradisiaca. Linn. MUSACEAE

196

ENGLISH NAME:- Different species Plantain/Banana plant. Hindi - kela
PARTS-USED:-Whole plant, Roots, Flowers and Unripe fruits.
DESCRIPTION:- A large tree like herb with thick under ground rhizome, pseudo aerial stem made of long sheathing leafbases.
TASTE:-Sweet-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Flowers contain: Dopamine, Dopanoradrenalin, Caffeic acid, Cinamic acid, p-Coumaric acid Ferulic acid, Gallic acid, Protocatechuicacid, Cornpesterol, Stigmasterol, Cyclomusalenol, Cyclomusalenone and Glycosides. Ripe Fruit Contains: Potassium, Calcium, Magnessium, Mangenese, Copper, Iron, Phosphorus, Sulphur, Iodin, Aluminium, Zinc, Cobalt Citric acid Mallic acid & Oxalic acid.
ACTIONS:-Astringent, Laxative, Anthelmintic, Cooling, Anti-inlfammatory, Antithirst, Blood purifier, Appitizer (Ripe Fruit)
USED IN:- Otalgia, Dysentery, Ulcerative colitis, Diabetes, Hypertension, Nephritis, Gout. Extract of Flowers reduces blood sugar, Genitaldis order, Dyscrasia & Calculii.

प्रचलित नाम- केला

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पुष्प तथा कच्चे फल।

स्वरूप- एक विशाल वृक्ष जैसा क्षुप, अंर्तभूमिशायी कंद से अंकुर निकल कर परिवेष्टक पर्ण तलों के आपस में लिपटने के कारण कूट-काण्ड बनता है। इसके पत्ते बड़े तथा मुलायम होते हैं। इसके फल पकने पर खाये जाते हैं।

स्वाद-मधुर-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके पुष्प में डोपामाइन, डोपानोराड्रेनालिन, कैफिक अम्ल, सिनामिक अम्ल, पी-कॉमरिक अम्ल, फेरूलिक अम्ल, गैलिक अम्ल, प्रोटोकेटेचुइक अम्ल, कम्पेस्टेरॉल, स्टीग्मास्टीरॉल, सायक्लोम्युसेलेनॉल, सायक्लोम्युसेलेनॉन, तथा ग्लायकोसाइड्स, पक्व फलों में पोटेशियम, कैल्शियम,मेग्नेशियम, मेन्गेनीज, कॉपर, लोह, फोस्फोरस, गंधक, आयोडीन, एल्युमिनियम, जिन्क, कोबाल्ट, सिट्रीक अम्ल, मैलिक तथा ओक्सेलिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, मृदुरे चक, कृमिघ्न, शीतल, शोथहर, तृषाशामक, रक्तशोधक, रुचिकर (पके फल।)

उपयोग-कर्णशूल, प्रवाहिका, व्रण शूल में, मधुमेह, रक्तभाराधिक्य में, वृक्क शोथ वातरोग में। पुष्पों का सत्-रक्त में शर्करा प्रमाण कम करता है, योनिदोष, रक्तदोष, तथा अश्मरी में लाभकारी। श्वास रोग में फल के मध्य भाग को पोला कर उसमें कालीमिर्च का चूर्ण भर कर रात भर रखा रहने के बाद प्रातः इसको घी में सेक कर सेवन से अतिलाभ होता है। मूत्रघात में केले का प्रवाही (४-५ तोला) में दो तोला प्रवाही शुद्ध घृत मिलाकर सेवन करने से अत्यंत लाभ होता है, तुरंत मूत्र मार्ग से बाहर निकलता है, इसका अधिक लाभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्रियों के मूत्रघात में होता है। अत्यार्त्तव में इसके फूलों का रस दही के साथ सेवन से लाभ। अपस्मार में कांड का रस अति लाभकारी। कच्चे फल का प्रयोग मधुमेह में लाभकारी। व्रण में इसके पके पीले पत्ते साफ कर व्रण पर बांधकर उस पर पट्टी बाँधने से मवाद एवं दुर्गन्ध दूर हो जाती है। कष्ट प्रसव में इसके कंद को कमर में बांधने से शीघ्र प्रसव होता है, प्रसव पश्चात् कंद को खोल देना चाहिये। कामला में मदाग्नि न हो ऐसे रोगी को सम्पूर्ण पका हुआ एक-एक केला प्रातः एवं सायं देने से लाभ होता है। प्रवाहिका में इसके पुष्पों का रस दही के साथ मिलाकर सेवन से लाभ। रक्त प्रदर में पके हुए केले को शुद्ध घी में मसल कर सेवन से स्त्रियों का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है। सोमरोग में परिपक्व केले, आंवला का रस, मधु एवं मिश्री इन सबको मिलाकर पिलाना या खिलाना चाहिए इससे सोमरोग से होने वाला अस्थिभग्न नष्ट हो जाता है। उदर रोग में कदली का क्षार या भस्म तथा इसके पौधे के मूल में से जल निकाल कर उस जल में विलेप बना लें, इस विलोपी का सेवन केवल तीन दिन तक करने से उदरामय नष्ट हो जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'इस वृक्ष (वट) के नीचे प्राण त्याग करने पर मोक्ष मिलता है। कहा गया है-स्वर्गलोक की प्राप्ति वट वृक्ष के सान्निध्य में रहने से होती है। इन्हीं सब कारणों से वट वृक्ष हमारी संस्कृति में पवित्र एवं पूज्य माना गया है। आज भी इसकी पूजा बड़ी श्रद्धा व भक्ति के साथ की जाती है।' - भारतीय संस्कृति प्रतीक कोश

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटफल Myrica nagi Thunb. Syn. M. esculanta. Buch Ham.

MYRICACEAE 197

ENGLISH NAME:- Boxmyrtal/Bay-berry/Myrtalberry. Hindi - Kaphal

PARTS-USED:-Bark

DESCRIPTION:- A medium sized evergreen tree, bark is brown & aromatic. Flowers-Red.

TASTE:-Bitter-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains: Glycosides, Tannins, Flavonoids, Reducing sugars, Resins, Steroids, Proteins, Aminoacids, Potassium, Calcium, Iron, Zinc, Chloride, Phosphate, Myricetin.

ACTIONS:-Astringent, Anticatarrhal, Nervine tonic, Anti-inflammatory, Stimulant.

USED IN:- Chronic cough, Asthma; Bark is used with Dalchini & Honey; also used in painful dentalgin & Earache; External application in healing of chronic and malagnant ulcers.

प्रचलित नाम- कायफल

प्रयोज्य अंग- छाल।

स्वरूप- मध्यम कद का सदाहरित वृक्ष, इसकी छाल बादामी रंग की सुगंधित तथा खुरदरी होती है। पत्ते सरल तथा नीचली सतह मुरचई रंग की होती है। पुष्प रक्तवणी; फल अण्डाकार चिपटे, सतह दानेदार चिकनी पर रक्ताभ या पीताभ होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में ग्लायकोसाइड्स टैनिन्स, फ्लेवोनोइड्स, प्रह्लासक शर्करा, गल, स्टेरोइड्स,प्रोटीन्स, एमिनोअम्ल, पोटेशियम, कैल्शियम, लोह, जिन्क, क्लोराइड, फॉस्फेट, मीयरीसेटिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, प्रतिश्यायहर, नाड़ीबल्य, शोथहर, उत्तेजक।

उपयोग-जीर्णकास, श्वासरोग में (छाल का प्रयोग दालचीनी तथा मधु के साथ किया जाता है) इसका उपयोग कर्णशूल तथा दंतशूल में लाभकारी। इसका बाह्य प्रयोग जीर्णव्रण तथा कैन्सर युक्त व्रण रोपण में लाभकारी। इसका तेल-व्रणों तथा संधिशूल में लाभकारी। प्रतिश्याय, अपस्मार तथा शिर:शूल में इसके छाल के चूर्ण का नस्य लाभकारी। इसकी छाल दालचीनी तथा सोंठ का क्वाथ प्रतिश्याय, स्वरभंग, जीर्ण श्वसन नलिका शोथ, कास, अरुचि, आध्मान, रक्तातिसार, गण्डमाल एवं गृध्रसी में, इसका सेवन लाभकारी। अतिसार में इसकी छाल का चूर्ण मधु के साथ चाटना चाहिये, इससे दस्त बंद हो जाता है। रक्तपित्त में इसकी छाल का आधा तोला चूर्ण और एक चौथाई तोला चंदन चूर्ण मिलाकर मधु या मिश्री के साथ सेवन से रक्त पित्त शांत होता है।

व्रण में इसकी छाल का सूक्ष्मचूर्ण व्रण पर छिड़कने से व्रण शीघ्र ठीक हो जाता है। शिरोरोग में इसकी छाल का महीन चूर्ण सुंघाने से छींक आकर शिरोवेदना दूर हो जाती हैं। गलगण्ड में इसकी छाल का महीन चूर्ण गले के अन्दर घिसकर लगाने से गलगण्ड नष्ट होता है। पित्तज नेत्राभिष्यंद में जल में इसकी छाल को घिस कर रेशमी वस्त्र में लेकर नेत्र में एक दो बूंदें टपकाने से लाभ होता है।

मात्रा- छाल का चूर्ण-७-१० ग्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जायफल/जातीफल Myristica fragrans Houtt. MYRISTICACEAE

198

ENGLISH NAME:- Nutmeg. Hindi - Jaiphal
PARTS-USED:-Seeds.
DESCRIPTION:- A large tree with beautiful appearance, flowers small and white.
TASTE:-Bitter-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Nutmeg Contains: Fixed oil, Volatile oil, Geraniol, Safrol, Eugenol, Iso-Eugenol, Myristicin, Myristic acid, Fatty acids, Lauric acid, Myristic acid, Palmitic acid, Stearic acid, Oleic acid, Linoleic acid; Leaves Contain:Alpha penene, Myristicin; Bark Volatile oil, Seeds: Oleanolic acid and Myristic acid.
ACTIONS:-Stomachic; Astringent, Heart tonic, Carminative, Stimulant, Aphrodisiac; Styptic, Appitizer; Aromatic.
USED IN:- Cough, Throat disease, Impurity of blood, Asthma, Heart disease, Abdominal pain, Anti-emetic, Anthelmintic, Anti-thirst; Also useful in Indigestion, Diarrhoea, Flatulance.

प्रचलित नाम- जायफल
प्रयोज्य अंग- बीज।
स्वरूप- यह एक हरे रंग का एक सुन्दर विशाल वृक्ष है। पत्ते हल्के हरे-पीले रंग के अण्डाकार चर्मवत चिकने होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे घण्टाकार तथा सफेद होते हैं। फल लाल या पीले रंग के जो पकने पर दो हिस्सों में फट जाते हैं।
स्वाद-तिक्त-कषाय।
रासायनिक संगठन- इसके नटमेग में उड़नशील तेल, स्थिर तेल, जिरानियॉल, सैफरोल, युजीनोल, आइसोयुजीनोल, मियरीस्टीसीन, मियरीस्टीक अम्ल, वसाम्ल, लौरीक अम्ल, मिरीस्टीक अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ऑलिक अम्ल तथा लिनोलिन अम्ल, इसके पत्रों में आल्फापिनीन तथा मियरीस्टीन छाल में उड़नशील तेल, बीज में ऑलियानोलीक अम्ल तथा मियरीस्टीक अम्ल पाये जाते हैं।
गुण-दीपन, ग्राही, हृद्य, बल्य, वातानुलोमक, उत्तेजक, वाजीकरण, स्तम्भक, रुचिकर सुगंधित।
उपयोग-कास में, कंठ रोग, रक्त शुद्धि कारक, श्वासरोग, हृद्य, उदरशूल, वमनहर, कृमिघ्न, तृषाशामक, कुपचन में, अतिसार, आध्मान में लाभकारी। इसके सेवन के बाद आमाशयिक पाचक रसों की वृद्धि होने से भूख बढ़ती है। अतिसार एवं उदरशूल में जायफल को भूनकर नशा आने तक की मात्रा में देते हैं। शिर:शूल, प्रसवकालीन कटिशूल में, अंगघात में जायफल को जल में घिसकर लगाने से लाभ होता है। इसके तेल को ऑलिव ऑइल में मिलाकर जीर्ण आमवात में मालिश की जाती है। अजीर्ण की तृषा एवं छर्दि पर जायफल का शीत कषाय या हिम पिलाने से लाभ होता है (अग्निमांद्य चिकित्सा)। मुखरोग चिकित्सा व्यंग एवं नीलिका में जायफल को जल में घिसकर लेप करने से व्यंग तथा नीलिमा के दाग नष्ट होते हैं। पैरों में बिवाईं फटी हो तो जायफल घिस कर बिवाई में भरना चाहिये और लेप करना चाहिये।
मात्रा- जायफल का चूर्ण- २-८ रत्ती। तेल- १-५ बूंद।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जावित्री Myristica fragrans Houtt. MYRISTICACEAE

199

ENGLISH NAME:- Mace Hindi (fls) Javitri

PARTS-USED:-Persisperm.

DESCRIPTION:- A large beautiful tree, with white bell-shaped flowers.

TASTE:-Sweet-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Mace contains Volatile oil, Fixedoil, Resin, Sugars, Amylo Dextrine, Gum, Pectin.

ACTIONS:-Aromatic Sweet, Appitizer, Anthelmintic, Anti-emetic, Stomachic, Carminative.

USED IN:- Cough, Asthma, Vomiting, Anti-thirst, Antidote; Tuberculosis, Fever, Chronic Intestinal troubles, Cholera and in Worms infestation.

प्रचलित नाम- जावित्री

प्रयोज्य अंग- बीजोपांग ।

स्वरूप-सुन्दर बृहद वृक्ष, पुष्प घण्टा कृति तथा सफेद रंग के होते हैं। फल गोल फटने पर कठोर आवरण से युक्त जायफल (सूखे हुए बीज) के चारों ओर लाल रंग का आवरण दिखता है। जिसे जावित्री कहते हैं। इस प्रकार जायफल तथा जावित्री एक ही वृक्ष से उत्पन्न होते हैं।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके बीजोपांग (जावित्री) में एक उड़नशील तेल, स्थिर तेल, राल, शर्करा, एमिलोडैक्स्ट्रीन, गोंद तथा पेक्टीन पाये जाते हैं

गुण-मधुर, रुचिकर, कृमिघ्न, वमनहर, दीपन, वातानुलोमक।

उपयोग-कास, खांसी, श्वासरोग, वमन में, तृषा शामक, विषघ्न, यक्ष्मा, मंद ज्वर, जीर्ण आंत्र विकारों में, विषूचिका तथा कृमिरोगों में लाभकारी। विषूचिका में तीन माशा जावित्री गाय के दूध में पीसकर सेवन से लाभ होता है। आमातिसार, अतिसार में दो से तीन माशा जावित्री का चूर्ण दही या गाय के दूध में गर्मकर सात दिन तक सेवन से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जटामांसी/बालछड़/सुगंधमांसी Syn. Valeriana walliichii D.C.

Nardostachys jatamansi D.C. Nardostachys grandiflora DC. VALERIANACEAE.

200

ENGLISH NAME:- Spikenard. Hindi - jatamansi

PARTS-USED:-Dried Rhizome and Roots, basal leaves.

DESCRIPTION:- A perennial erect herb with woody, rootstock covered with fibrose petioles. Flowers blue or pink in head leaf all radical

TASTE:-Bitter-aromatic, acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains: Jatamanson, Lupeol, Essentialoil, Alcohol, Terpene, Jatamansic acid, Jatamansin, Alkaloid (Actinidin.)

ACTIONS:- Cooling Aromatic, Stimulant, Antispasmodic, Tonic, Diuretic, Stomachic, Digestion, Carminative, Laxative, Antipyretic, Heart tonic.Sedative, Anti-histaminic, Anti-bacterial, Hypotensive, burning sensation..

USED IN:- Hysteria, Palpitation of heart, Intestinal colic, Headache, Less memory, Ulcer, Arthritis, erysipelas, leprosy, throat troubles, epilepsy hysteria

प्रचलित नाम- भूत जटा

प्रयोज्य अंग- इसके सूखे भौमिक तने तथा मूल।

स्वरूप- यह वनौषधि उन्नत, बहुवर्षीय क्षुप है। इसका भूमिजन्य काण्ड (राइजोम) लम्बा, काष्टीय जो शुष्क रेशेदार पर्णवृंत से युक्त होता है। जमीन के ऊपर जड़ से निकली शाखायें बारीक जटादार रोवें से ढकी रहती हैं। पत्ते मूलीय, चिकने या मृदुरोमश एवं संकुचित होते हैं। पुष्प डंडियों के अंत में सफेद या गुलाबी छोटे-छोटे तथा गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त-सुगंधित।

रासायनिक संगठन- इसके भौमिक कांड में जटामेन्सोन, ल्युपियॉल, उत्पत्त तेल, एल्कोहॉल, टर्पेन, जटामान्सिक अम्ल, जटामैन्सॉन, ऐक्टीनीडीन (क्षारभ) तत्व पाये जाते हैं।

गुण-सुगंधित, उत्तेजक, उद्वेष्टननिरोधी, बल्य, मूत्रल, दीपन, पाचन, वातानुलोमक, मृदुरेचन, ज्वरहर, हृदयबल्य।

उपयोग-मूर्छा, हृदय के अनियमित स्पंदन में, आंतशोथ, शिर:शूल, स्मृतिह्रास, व्रण, संधिशोथ, वेदनास्थापन, हिस्टामिन निरोधी, कीटाणुघ्न, दाबहासी। आध्मान, शूल, आमाशयिक शूल में जटामांसी ४, दालचीनी१, शीतल चीनी१, सौंफ१,सौंठ १ तथा मिश्री ८ भाग, इनके चूर्ण को ३-९ माशे की मात्रा में सेवन कराने से लाभ होता है। दंतशूल में इसके चूर्ण का मंजन करने से लाभ।

कांति बढ़ाने के लिये जटामांसी चूर्ण का प्रयोग उबटन की तरह करने से लाभ होता है। इसके कोमल पत्रों का स्वरस निकाल कर आँख में अंजन करने से आँखों का तेज बढ़ता है। मस्तिष्क एवं नाड़ियों के रोगों में इसके सेवन से धीमी, किन्तु उत्तम प्रभावकारी औषधि है। मस्तिष्क का कार्य करके थकावट अनुभव करने वाले लोगों के लिये यह एक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तम एवं उपयोगी औषधि है। यह औषधि एक उत्तम शामक प्रसादक एवं स्वास्थ्यप्रद है। स्त्रियों को जब आर्त्तव स्राव साफ नहीं आता एवं पीड़ा होती है, उस समय शिरोवेदना, अंग वेदना तथा मन में बेचैनी होती है, तब जटामांसी का फान्ट या इसका सत देने से अत्यंत लाभ होता है। कल्कफांट जटामासी १-१/४ तोला, उबलता जल ६०० मि.ली. इन दोनों को एक बंद बर्तन में ठंडा हो जाये तब तक रखना चाहिए। इसके पश्चात् इस ठंडे हुए जल को छानकर एक बोतल में भर लो। इसका सेवन १ से २ औंस मात्रा में प्रतिदिन २-३ बार करने से यह अत्यंत उपयोगी उत्तेजक तथा संकोच-विकास प्रतिबंधक है। जटामांसी अर्क इसका सूक्ष्म (बारीक) चूर्ण, पाँच औंस शुद्ध आल्कोहॉल १२००मि.ली. हन दोनों को एक हवा चुस्त बुच वाली बोतल में आठ दिन तक रखना चाहिए। इसके बाद इसको छान लेना चाहिये। इस अर्क का प्रयोग महिलाओं के हिस्टीरिया (अपस्मार) जैसे रोगों में लाभ होता है। यह शिरःशूल में एक उत्कृष्ट औषधि है। मस्तिष्क तथा नाड़ी तंत्र रोगों में इस औषधि का प्रभाव धीमा किन्तु अच्छा होता है। मानसिक कार्य के बोझ की वजह से भ्रमित व्यक्तियों के लिये जटामान्सी उत्तम औषधि है। कभी-कभी इसको श्रेष्ठ ट्रान्क्वीलाईझर भी माना गया है।

मात्रा- फान्ट-१-२ औंस (ढाई से पाँच तोला)।

चूर्ण- १/४- १/२ तोला जल के साथ।

सत-१०-१५ बूंदे-ढाई तोला जल में मिलाकर दिन में २-३ बार देना चाहिए।

●●●

'जो व्यक्ति गूलर वृक्ष का रोपण करता है या दूसरे को गूलर वृक्ष रोपण हेतु प्रेरित करता है, वह चन्द्रलोक में आनन्द प्राप्त करता है।'

-वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुण्डरीक पद्म/रक्त कमल Syn : Nelumbium speciosum Willd.

Nelumbo nucifera Gaertn. Nelumbonaceae **201**

ENGLISH NAME:- Sacred Lotus. Hindi - Kamal (fls), Root - Bhist fruit Morar - Kamalgatta.

PARTS-USED:-Whole Plant (Seeds; Stamens, rhizome.)

DESCRIPTION :- A large aquatic herb with elongated creeping rhizome, sending out roots at nodes. Leaves thin 1-2 feet in diameter orbicular, concave above, peltate, entire, petiole long with distinct prickles. flowers solitary, white or Rosy. Fruit etaerio of achenes with spongy torus.

TASTE:- Sweet, slightly bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains:- Glucose, Tanin, Fat, Resin, Metarbin and an Alkaloid-Nelumbine.

ACTIONS:- Corolla is cooling, Refrigerant, Heart Tonic, Diuretic, Astringent Heart Protective, sedative, expectorant.

USED IN:- Hemorrhagic disease, Fever, Disuria, Diarrhoea. Heart attack, Menorrhagia, Bleeding piles; Dysentery. improves complexion, nervine tonic.

प्रचलित नाम- कमल

प्रयोज्य अंग- पंचांग (मूल, बीज एवं नरकेशर)

स्वरूप-बड़ा जलीय क्षुप, जिसका कांड भूपसरी एवं लम्बा जिसकी संधि पर से मूल उत्पन्न होते हैं। पत्ते पतले १-२ फीट के घेरे में गोलाकार, बाह्य तल बर्हिगोल, छत्राकार, अखण्ड, पत्र वृन्त कांटेदार, पुष्प एकाकी श्वेत या गुलाबी; फल समूह बीज फल।

स्वाद-

रासायनिक संगठन- इसके बीज एवं भौमिक कांड में ग्लूकोज़ टैनिन, वसा, राल, मेटार्बिन एवं एक क्षारभ नेलंबीन पाये जाते हैं।

गुण-इसकी पंखुड़ियाँ-शीतल, दाह प्रशामक, हृद्य, मूत्रल, ग्राही, हृदयसंरक्षक।

उपयोग- रक्तपित्त, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, हृदयघात, रक्तप्रदर, रक्तार्श, रक्तातिसार में इसका प्रयोग लाभकारी है। इसके फांट में मिश्री मिला कर सेवन से हृदय पर ज्वर के कुप्रभाव को रोकने में मदद करता है। यदि इसके साथ सफेद चन्दन, मुलैठी, नागरमोथा मिलाकर सेवन कराया जाता है तो यह औषधि हृदय घात में जिस प्रकार डीजीटैलिस का प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार प्रभावकारी होती है। इसके सेवन से हृदय को बल मिलता है। गर्भावस्था में महिलाओं को इसका सेवन करने से गर्भस्राव नहीं होता एवं गर्भाशय को बल मिलता है तथा गर्भ में शिशु का पोषण होता है। (इस वनौषधि के पुष्पों के नरकेसरों को मक्खन में मिलाकर सेवन करना चाहिए।) तीव्र ज्वर या दाह में इसके बीजों को शीत जल में पीसकर पिलाना चाहिये, लाभ होता है। इसके अतिरिक्त मानसिक तनाव, अनिद्रा रोग एवं मस्तिष्क दौर्बल्य में भी इसका सेवन लाभकारी होता है। मूत्रकृच्छ्र में रक्तस्राव होता हो तो इसके लम्बे पत्रवृंत का चबाने से लाभ होता है। ज्वरातिसार में कमल, अनार की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छाल (फल की) कमल के नरकेशर इन सबके चूर्ण को चावल के धोवन के साथ सेवन से लाभ होता है। नेत्ररोगों में बकरी के दूध में कमल के एक पुष्प को उबालकर पीने से नेत्रों की लालाश, नेत्रपाक, वेदना इन सब में लाभ होता है। केश काले करने लिये कमल के पुष्पों को दूध में डालकर इसको एक माह तक जमीन में दबाकर रखने के पश्चात् सिर में लगाने से बाल काले हो जाते हैं। पित्त जन्य कास में-इसके बीज के चूर्ण का मधु के साथ सेवन से पित्त कास ठीक हो जाता है।

मात्रा- पुष्पों का चूर्ण ३-६ माशा, फांट १-२ तोला, कमल काकड़ी का चूर्ण १/४-१/२ तोला। कमलकंद का चूर्ण १/२-१ तोला। मूल स्वरस एक से दो तोला, नरकेशर ५-१२ रत्ती। बीज का चूर्ण ३-६ माशा।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'कोरिया युद्ध में लड़ाई लड़ चुके एक बीमार सैनिक के उदासीन प्रकृति के कारण डॉक्टर उसके ठीक होने की आशा छोड़ चुके थे। तब एक महिला व्यावसायिक चिकित्सक ने उसका इलाज शुरू किया। उसने मरीज के बगल में एक शीशे की गिलास में ब्राऊन मांस डालकर पानी भर दिया ऊपर पीट मांस डालकर उसमें तीन बीन बीज रखकर सावधानी से सींच दिया, बीज क्रमशः अंकुरित होकर बढ़ने लगे। बीच से निकली जड़ों ने पीट मांस की सतह को तोड़कर नीचे जाने में सफलता प्राप्त कर ली तथा ऊपर को बढ़ने लगा। इस घटना को देखने से मरीज की मनोदशा में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ, जिसने मरीज को ठीक होने में मील के पत्थर का काम किया।'- उद्यान चिकित्सा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करवीर Syn : Nerium odorum Soland. Nerium indicum Mill. APOCYANACEAE

202

ENGLISH NAME:- Sweet scented oleander/Rooseberry spurge. Hindi - Kaner

PARTS-USED:-Root bark and Leaves.

DESCRIPTION:- A woody evergreen shrub about 8-10 feet high with latex Flowers aromatic red or white interminal eymeifollicle 15-23 cm. long cennate.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Root bark Contains: Neriodorin, Nerioderin, Karabin, Glucoside (Odorin); Leaves Contain: Oleandrin, Neriodin; Ursolic acid, Adynerin; Flowers: Parafin, Benzyl alcohol, Compesterol, Stigma-sterol, Fatty acids.

ACTIONS:-Antibiotic, Spasmodic, Antifungal, Insecticidal, Attenuant, Antipyretic Anti-inflammatory; Root is diuretic, anthelmintic, aphrodisiac, stomachic.

USED IN:- Leprosy, Ulcer, Piles, Polyuria, Hypotensive, Cardio tonic, Antipyretic, Analgesic, Anticancer, Anti-inflammatory, cardiac asthma, renal caliculi stomachalgia, pruritus.

प्रचलित नाम- कनेर (सफेद तथा लाल)।

प्रयोज्य अंग- मूल त्वक् एवं पत्र।

स्वरूप-एक सदा हरित गुल्म जिसकी शाखाएँ मजबूत एवं प्राय: दस फीट ऊँचा होता है। पत्ते पर्व पर ३-३ रहते हैं जो नुकीले होते हैं। पुष्प-सफेद या गुलाबी सुगंधित होते हैं। फलियाँ गोल तथा चिपटी होती हैं। अंगों को तोड़ने से सफेद दुग्ध रस निकलता है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-मूल की छाल में नेरियोडेरीन, नेरियोडोरीन, कराबीन, ग्लुकोसाईड (ओडोरीन)। इसके पत्रों में ओलिएन्ड्रीन, नेरियोडिन, अर्सोलिक अम्ल, ऐडीनेरीन। इसके पुष्पों में पाराफिन, बेन्जिल एल्कोहॉल, कम्पेस्टेरॉल, स्टीग्मा स्टीरॉल तथा वसा अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-जैवघ्न, उद्वेष्टकर, फंफूदीघ्न, कीटनाशक, तनुकारक, ज्वरहर, शोथहर, इसके मूल मूत्रल गुण वाले हैं।

उपयोग- कुष्ठरोग, व्रण, अर्श, प्रमेह, दाबह्रासी, हृद्यबल्य, ज्वरहर, वेदनाहर, कैंसर नाशक, शोथहर, कण्डु, नेत्र प्रकोप, त्वचा रोग। इसका आंतरिक प्रयोग अत्यंत सावधानी पूर्वक करना चाहिये, क्योंकि अधिक मात्रा में हृदय के लिये घातक है। इसका प्रयोग खाली पेट नहीं करना चाहिए। सर्पदंश में इसकी जड़ की छाल १-२ रत्ती की मात्रा या १-२ पत्ते थोड़े-थोड़े अंतर में देते हैं, जिसके कारण वमन तथा एक या दो दस्त हो जाते हैं। नपुंसकता में सफेद कनेर के मूल, जायफल, अफीम, इलायची तथा सेमल की छाल, सम प्रमाण में मिलाकर चूर्ण बनाया जाता है, इसको बारीक कपड़े से छानकर, इस चूर्ण की आधी मात्रा में तिल का तेल डालकर गर्म किया जाये, ठंडा कर शीशी में भर लेना चाहिए। मूत्रेन्द्रिय के नीचे तथा ऊपर का भाग छोड़ बाकी के भाग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसका लेप तीन दिन तक करने से लिंग में जागृति आती है। सफेद बाल, काले करने के लिये इसके पत्र तथा उतरन (डीमिया एक्सटेन्सा) के पत्रों को दूध में पीसकर, इसके रस का सिर पर लेप (बार-बार) करने से काले बाल आते हैं। मुंडन के पश्चात् लेप करना चाहिए। इस कनेर के तीन प्रकार अकसर पाये जाते हैं। सफेद (श्वेत) कनेर तीक्ष्ण, तिक्त, ऊष्ण वीर्य तथा ग्राही है। जिसके उपयोग में मेह, कृमि, कुष्ठ, व्रण, अर्श नष्ट होते हैं। लाल कनेर-शोधक, तीक्ष्ण, पाक, समये कटु तथा लेप करने से कुष्ठ नाशक। गुलाबी कनेर-शिर:शूल, कफ तथा वातनाशक। मूल की छाल की मात्रा-१/८ रत्ती से एक रत्ती। विषम ज्वर में इसके मूल को रविवार को कान पर बाँधने चाहिए। यह योग सर्वप्रकार के ज्वर में प्रशस्त है। शिरोरोग में इसके सूखे हुए मूल को चिकने पत्थर पर घिसकर मस्तिष्क पर वेदनायुक्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। पक्षाघात (अंगघात) सफेद कनेर के मूल की छाल, सफेद गुंजा की दाल तथा काले धतूरा के पत्र इन सबका सम भाग लेकर पीस कर कल्क बना लो, इसके पश्चात् चार गुने जल में तथा कल्क के सम भाग तेल मिला कर कलई वाले बर्तन में मंदाग्नि पर पकाना चाहिए, पानी जल जाने पर उतार कर कपड़े से छान कर, इस तेल की मालिश करने से अंगघात ठीक हो जाता है। हृदयरोग एवं हृदयोदर में इसके मूल की छाल अल्प मात्रा में (भोजन पश्चात्) सेवन से मूत्र होता है तथा हृदयोदर वेदना कम होती है। अधिक मात्रा के सेवन से शरीर ठंडा हो जाता है तथा धड़कन गति धीमी होकर हृदय तथा श्वासोच्छ्वास क्रिया बंद हो जाती है।

●●●

'जो जाने अनजाने में एक भी जामुन वृक्ष का रोपण कर देता है। वह घर में रहते हुए ही बहुत बड़े धार्मिक होने का गौरव प्राप्त कर लेता है।'- वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपकुञ्चिका काला जाजी Nigella sativa Linn

RANUNCULACEAE

203

ENGLISH NAME:- Black cumin / Nigella Seed. Hindi - Kalongi/Mangraila

PARTS-USED:- Seeds.

DESCRIPTION:- A small herb, leaves long pinnatisect, dissected, segment linear flowers blue, seeds triangular and dark black but white from inside & aromatic.

TASTE:-Spicy aromatic, Bitter, Sharp

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:- A Volatile oil of yellow colour, oil, Resin, Albumin, Sugar, Gum, Tannin, Glucoside, Mallanthin, Mallanthegenin.

ACTIONS:-Aromatic, Carminative, Stomachic, Digestive, Diphoretic, Anthelmintic. digestive purgative, stimulant, diuretic, emmanagogue, galactogogue, abortifacient

USED IN:- Dyspepsia, Indigestion, Flatulance, Skin disease, Swellings on limbs, Menorrhagia, Malarial fever, ascites, lung complaints, cough jaundice hydrophobia, eye sores

प्रचलित नाम- कलौंजी

प्रयोज्य अंग- बीज।

स्वरूप- एक लघु क्षुप, पत्र लम्बे तथा अति विभाजित पुष्प नीलवर्णी, बीज त्रिकोणक गहरे काले रंग के किन्तु अंदर से सफेद तथा सुगंधित होते हैं।

स्वाद-मसालेदार-सुगंधित।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में पीले रंग एक उड़नशील तेल, स्थिर तेल, राल, एल्ब्युमिन, शर्करा, गोंद, टैनिन, ग्लूकोसाईड, मैलेन्थीन तथा मैलेन्थेजैनिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण-सुगंधित, वातानुलोमक, दीपन, पाचन, स्वेदजनन, कृमिघ्न।

उपयोग-अग्निमांद्य, कुपचन, आध्मान, चर्मरोग, हाथ-पैर की सूजन को कम कर दर्द दूर करता है। कष्टार्त्तव एवं नष्टार्त्तव में उपयोगी। इसके अतिरिक्त विषम ज्वर में तथा सूतिका ज्वर में इसका प्रयोग किया जाता है। इसका उपयोग चित्रक मूल के साथ करने से भूख बढ़कर पाचन क्रिया ठीक होती है, गर्भाशय शुद्ध होता है एवं दूध में वृद्धि होती है। इसका प्रयोग मट्ठे के साथ करने से हिचकी में लाभ होता है।

हाथ-पैर की सूजन पर इसका लेप करने से लाभ होता है। चर्मरोग में-इसमें सिद्ध तेल का प्रयोग करने से लाभ होता है। अजीर्ण तथा उदरशूल में कलौंजी का क्वाथ बना कर उसमें काला नमक मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

मात्रा-आधा से एक माशा।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शेफालिका/पारिजातक Nyctanthes arbor-tristis Linn. OLEACEAE

204

ENGLISH NAME:- Night Jasmine/Tree of Sorrow. Hindi - Harsingar/Siari
PARTS-USED:-Bark, Leaves, Flowers and Seeds.
DESCRIPTION:- A lagre shrub or small tree, rarely 20-30 feet high. Leaves rough, opposite, Ovate, acute withserrate margin. Flowers aromatic, pedicel is orange coloured.
TASTE:-Bitter
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves& Stem Contains: Beta-sitosterol, Nyctanthic acid, Iridoid, Glycosides-Arbortristosides A, B, C, D & E Glucomannan; Glycerides of Lignocetric, Linocetric, Myristc acid, Oleic acid, Palmitic acid, Stearic acid (In Seeds), Astragalin, Nictoflorin, Nyctanthoside and Arborsides, Ascorbic acid, Carotene, Tannin, Glucose, Fructose & Manitol.
ACTIONS:-Diuretic, Diphoretic, Tonic, Astringent, Laxative, Expectorant, Stimulant, Antipyretic, Liver stimulant.
USED IN:- Dysentery, Menorrhagia, Ulcer; Seed Paste: Useful to remove dendruffs; Juice of Leaves: Anthelmintic, Cholagogue, Chronic fever, Decoction of leaves: Sciatica, Rheumatism; Bark: in Cough & Asthma.

प्रचलित नाम- हर सिंगार

प्रयोज्य अंग- कांड की छाल, पत्र, पुष्प तथा बीज।

स्वरूप- यह एक लघु झाड़ीनुमा वृक्ष जो औसतन २०-२५ फीट ऊँचा होता है। पत्ते अभिमुखी, खुरदरे, अण्डाकार एवं नोकदार अधः सतह मृदुरोमश, पत्र किनारी दूर-दूर तक दन्तुर होती है। पुष्प सफेद तथा पुष्पवृंत केसरी रंग का तथा सुगंधित पुष्प होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों तथा कांड में बीटा, सिटोस्टीरॉल, निक्टैथिक अम्ल, इरीडोइड, ग्लायकोसाइड्स-आरबोर ट्रिस्टोसाइड्स ए, बी, सी, डी और ई, ग्लुकोमनान, लिग्रोसेट्रिक के ग्लीसराइड्स, लिनोसेट्रिक, मियरीस्टीक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल (बीज में), ऐस्ट्रोगैलिन, निक्टोफ्लोरीन, निक्टैन्थोसाइड तथा आरबोरसाईड्स, एस्कोर्बीक अम्ल, कैरोटिन, टैनिन, ग्लूकोज़, फ्रुक्टोज तथा मेनीटॉल तत्व पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, स्वेदजनन, बल्य, ग्राही, मृदुरेचक, कफ निःसारक, उत्तेजक, ज्वरघ्न तथा यकृत उत्तेजक।

उपयोग- प्रवाहिका, कष्टार्त्तव, व्रण, बीज का कल्क-केश में रूसी (डैन्ड्रफ) नाश करने के लिये, पत्रों का स्वरस कृमिघ्न, पित्तद्रावक, जीर्ण ज्वर में लाभकारी। पत्रों का क्वाथ गृध्रसी, आमवात में लाभकारी। छाल खाँसी तथा श्वासरोग में। इसके बीजों को जल में पीसकर सर के गंज पर लगाने से नये बाल उगते हैं। बच्चों के कृमियों में पत्रों के स्वरस में चीनी मिला कर सेवन से कृमि चुए बाहर आते हैं। खाँसी तथा दमा में इसके कांड की छाल का चूर्ण १-२ रत्ती, पान में रखकर दिन में ३-४ बार देने से लाभ होता है। जीर्ण ज्वर में इसके

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७-८ कोमल पत्रों का स्वरस अदरख के स्वरस एवं मधु में मिलाकर सेवन से तथा मलेरिया ज्वर में अति लाभकारी। उदकमेह में इसके पंचांग का क्वाथ पिलाना चाहिए। प्लीहोदर में हरसिंगार, ईक्षुरक एवं अपामार्ग के क्षार में तेल के साथ देने चाहिए। नेत्र शोथ में इसकी त्वचा को तेल, कांजी एवं सैन्धव के साथ पकाकर तैल सिद्ध कर के इस तेल का अंजन करने से नेत्रशोथ, शूल नष्ट हो जाते हैं। पत्रों का स्वरस शिशुओं के लिये उत्तम एवं सरल विरेचक। गृध्रसी में पत्रों का क्वाथ हल्की अग्नि पर पकाकर सेवन से में लाभकारी है।

मात्रा- छाल का चूर्ण-१ से २ रत्ती।
पत्र- १ से ३ ।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'संस्कृत में वन धातु के विभिन्न अर्थों (द्रवित होना, पानी, जीवन विस्तार) में एक अर्थ जल भी होता है। प्राचीनकाल में ऋषियों ने अनुभव किया कि पेड़-पौधों का जल से सीधा सम्बन्ध है। जहाँ पेड़-पौधे होते थे। वहाँ जल की प्रचुरता हो जाती थी, हाँ, जहाँ इनकी कमी होती थी वहाँ सूखा और रेगिस्तान बढ़ता था। संभवत: इसीलिये पेड़-पौधों के लिए ऋषियों ने वनस्पति शब्द का प्रयोग किया। वनस्पति=जल का पति।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Common Sweet basil. Hindi - Kali Tulsi, Jangli Tulsi.
PARTS-USED:-Whole Plant, Roots, Leaves and Seeds.
DESCRIPTION:- Annual, much branched aromatic herb about 1-3 feet high, stem is square and hairy; green or purplish cycles of flowers.
TASTE:-Bitter/Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Ocimene, Methyl chavicol, Ceneol, Linalool, Pinene-Camphor terpin hydrate. It also Contains an aromatic oil, it becomes solid when it is kept.
ACTIONS:-Carminativc, Diuretic, Stimulant, Demulcent, Diphoretic, Anthelmintic, Aromatic, Expectorant.
USED IN:- Whole Plant in: Gonorrhoea, Dysentery, Chronic diarrhoea, Bowel complaints, Anthelmintic, Antibacteial, Anti fungal, Also useful to dissolve renal Calculii, Cough, Indigestion, Eczema, Ulcer, Snake venome, Polyuria, Disuria.

प्रचलित नाम- बर्बरी/सबजा।

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पत्र तथा बीज।

स्वरूप-एक वर्षायु अतिशाखीत सुगंधित क्षुप, लगभग १-३ फूट ऊँचा, कांड चौपहल शाखाएँ हरी या फीके पीले रंग की होती हैं। पुष्प चक्र बैंगनी या हरित वर्णी होते हैं। जो शखओं के अंत में लगते हैं।

स्वाद-तिक्त/कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें ओसीमीन, मिथाईल चेवीकॉल, सीनीयॉल, लिनालूल, पिनीन-केम्फर टरपीन हाईड्रेट तत्व पाये जाते हैं। इसमें एक सुगंधित तेल पाया जाता है, जो रखे रहने से रवेदार बनता है, जो बेसिल कैम्फर कहलाता है।

गुण- वातानुलोमक, मूत्रल, उत्तेजक, प्रशामक, स्वेदजनन, कृमिघ्न, सुगंधित तथा कफघ्न।

उपयोग- इसका पंचांग सूजाक, प्रवाहिका, जीर्ण अतिसार, उदररोगों में, कृमिघ्न, कीटाणुघ्न, फफूंदीनाशक है। इसकाा उपयोग वृक्क अश्मरी में, कास तथा कुपचन में और प्रमेह एवं मूत्रकृच्छ में लाभकारी। इसके सुगंधित तेल को जल में रखने से जल पर तैरता है तथा कण स्वरूप में परिवर्तित हो कर जम जाता है, जो बेसिल कैम्फर होता है। कर्णशूल, दंतशूल में स्वरस का प्रयोग लाभकारी। सोजाक में बीज के फांट के सेवन से लाभ होता है। नवीन नेत्र प्रकोप में इसके पत्रों का रस मधु में मिलाकर आँख में अंजन करने से दुखने वाली एवं लाल हुई आँख अच्छी हो जाती है। खूब ठंड लगकर ज्वर आने में इसके पत्र शरीर पर मसलने-घिसने से गरमी आती है। बिच्छू विष में इसके बीजों को बकरी के दूध की अनेक भावनायें देकर उस का दंश स्थान पर लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट होता है। आधा शीशी (अर्धावभेदक) शिर:शूल में इसके बीज के सेवन एवं लेप से लाभ होता है। वीर्य स्राव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसके पत्रों का क्वाथ हितकारी होता है। संधिवात एवं पक्षाघात में इसके साथ अन्य सुगंधित द्रव्य मिलाकर इसका नस्य उपयोगी है। कास में पत्रों का स्वरस मधु के साथ सेवन सै लाभ होता है। सर्पविष में इसके पत्रों का स्वरस थोड़ी-थोड़ी देर के बाद तीन-चार बार पिलाना चाहिए। दाह में इसके बीज जल में भिगोकर रखने पर फूल जाते हैं, इसके पश्चात् इसमें गाय का दूध तथा मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए। पीनस रोग इसके पत्रों का स्वरस एक तोला तथा कपूर एक माशा इकट्ठा कर घोंट कर प्रतिदिन प्रातः-सायं इसकी पाँच-पाँच बूंद नासिका छिद्रों में डालने से नाक में से पानी तथा रक्त बहना बंद हो जाता है। कृमि में इसके पत्रों का स्वरस तथा पुदीने का स्वरस इकट्ठा कर पिलाने से कृमि नष्ट हो जाते हैं। उदरशूल में इसका स्वरस मिश्री मिलाकर पिलाने से ठीक हो जाता है। अग्नि दग्ध व्रण में पत्रों के स्वरस का लेप करने से ठीक होते हैं। **मात्रा**- स्वरस आधा या एक चम्मच। बीज- आधा तोला, दूध एवं शर्करा के साथ फांट बनाकर।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जो व्यक्ति विधि पूर्वक पीपल वृक्ष का रोपण करता है, वह चाहे जहाँ भी हो भगवान् विष्णु के लोक को जाता है।' - वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनतुलसी O. americanum. Ocimum canum Sines Syn. LAMIACEAE (LABIATAE)

206

ENGLISH NAME:- Black-basil Hindi - Barbari, Kali Tulsi.

PARTS-USED:-Whole Plant, Leaves & Seeds.

DESCRIPTION:- A small annual much branched hairy herb with green cycles & white flowers.

TASTE:-Pungent-Aromatic.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Glycosides, Alkaloids, Tannins, Savonin, Volatile oil, Vitamin-C, Carotene; Seeds contain: Green coloured oil. Systo sterol, Fatty acid, Palmitic acid, Oleic acid, Linoleic acid, Linolenic acid, Mucilage.

ACTIONS:-Stomachic, Stimulant, Demulcent, Expectorant.

USED IN:- Malarial fever, Tuberculosis, Diabetes, Asthma, Urino-genital diseass, Antispasmodic, Against Parasitic nema todes, useful in spermatorrhoes; Paste of Leaves: in Ringwarm and Itching (External application only.)

प्रचलित नाम- जंगली तुलसी

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र तथा बीज।

स्वरूप-एक वर्षीय अतिशाखित रोमश छोटा क्षुप; पत्ते सरल हल्के हरे रंग के अभिमुखी होते हैं। पुष्प सफेद शाखओं के अंत हिस्से में मंजरियों में जो हरित चक्रों में होते हैं।

स्वाद-तीक्ष्ण-सुगंधित।

रासायनिक संगठन- इसमें ग्लायकोसाइड्स, एल्कलोइड्स, टैनिन्स, सैवानिन, उड़नशील तेल विटामिन सी, कैरोटिन, इसके बीज में हरे रंग का तेल जिसमें सिस्टोस्टीरॉल, वसा अम्ल पामिटिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, लिनोलेनक अम्ल तथा श्लेष्मक तत्व पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, उत्तेजक, प्रशामक, कफ नि:सारक।

उपयोग- विषम ज्वर, यक्ष्मा, मधुमेह, श्वासरोग, योनिदोष, उद्वेष्टनिरोधी, इसका प्रयोग परोपजीवी सूत्र कृमियों को नाश करने में किया जाता है। पत्रों के कल्क का बाह्य प्रयोग दाद-खाज एवं खुजली में लाभकारी। रक्त प्रवाहिका इसके बीज ठंडे जल में भिगो रखने के पश्चात् इसमें शर्करा मिलाकर प्रतिदिन दो बार पिलाना चाहिए। बच्चों के वमन में इसके पत्रों का स्वरस पिलाना चाहिए। मूत्रदाह में इसके बीज रात भर ठंडे जल में भिगोकर रखा रहने के पश्चात् प्रात: उसमें गाय का ताजा १०० मि. ली. दूध तथा दो तोला मिश्री मिलाकर लकड़ी से भली प्रकार हिलाकर पिलाना चाहिए।

व्रण पर इसके मूल तथा तिल की जड़ें गाय के दूध में घिसकर २१ दिन तक पिलाना चाहिए। पथ्य लवण रहित; गेंहूँ तथा अरहर की दाल के अतिरिक्त कुछ भी सेवन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं करना। मूत्रदाह तथा अतिसार में इसके बीज का एक भाग तथा इसबगोल चार भाग मिलाकर दोनों के समभाग सौंफ मिलाकर तथा इन सबके समभाग में मिश्री मिलाकर इसमें से प्रतिदिन एक तोला दूध के साथ या जल के साथ सेवन कराने से लाभ होता है। मूत्रघात में इसके बीज ठंडे जल में रातभर भिगोकर रखे रहने के पश्चात् दूसरे दिन प्रातः थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए।

मात्रा- पत्रों का स्वरस- १०-२० मि. ली.। बीज का चूर्ण-१-२ ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'पर्यावरण के लिये तरुण एवं वृक्षों की तुलना में स्वस्थ वृद्ध वृक्ष अधिक लाभकारी होता है। तरुण और जवान वृक्ष अपनी पूरी ऊर्जा वृद्धि में लगाते हैं, जबकि वृद्ध वृक्ष अपनी पूरी ऊर्जा वातावरण का तापमान स्थिर रखने व अन्य तमाम मानव कल्याण के कार्यों (Nutoient necycling water, conserration, Moisture pegulation) **औषधि विसरण आदि) में लगाते हैं। मोटाई में वृद्धि न होना वृक्ष के बोर हो जाने का आधार नहीं माना जा सकता। लगभग २२ वर्ष की उम्र के बाद मनुष्य की वृद्धि रुक जाती है, किन्तु उसकी कार्य क्षमता और समाज के लिये उपयोगिता निरन्तर बढ़ती चली जाती है। वृक्षों के साथ भी ऐसा ही होता है, पूर्ण वृद्धि पा लेने के बाद वे प्रकाश संश्लेषण द्वारा संग्रहीत ऊर्जा को पर्यावरण संरक्षण में लगाते हैं। वृक्ष काटने की उम्र निर्धारण करने के संबंध में अपने चिंतन को अब हमें बदलना होगा।'**

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्जक Ocimum grattisimum Linn. LAMIACEAE (LABIATAE)

207

ENGLISH NAME:- Wildbasil Hindi - Maruadona.

PARTS-USED:-Whole plant, Leaves & Seeds.

DESCRIPTION:- A small annual herb largest amongst all the species of Ocimum, with square stem and small green cycles of flowers.

TASTE:-Pungent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Essential oil, Steroids, Ascorbic acid, Glycosides, Saponins, Tannins, Essential oil Contains: Thymol which is carvacrol.

ACTIONS:-Aromatic, Expectorant, Stimulant, Appitizer, Stomachic.

USED IN:- Leaves in: Seminal debility, Gonorrhoea, Fever, Cough, Leucoderma, Colic pain, Polyuria, Disuria, Seeds in: Headache, Neuralgia, Braintonic, Heart & liver tonic. Essential oil in: Rheumatism, Paralysis.

प्रचलित नाम- रामतुलसी

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र तथा बीज।

स्वरूप-यह एक वर्षीय लघु क्षुप जो २-३ फीट ऊँचा होता है। इसका काण्ड चौपहल; पत्ते सरल हल्के हरितवर्णी अभिमुखी; पुष्प सफेद जो शाखओं के अंत में मंजरियों में लगते हैं। पुष्प चक्र हरितवर्णी होते हैं। तुलसी की तमाम जातियों में यह (अर्जक) सबसे बड़ा क्षुप है।

स्वाद-तीक्ष्ण।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में उत्पत्त तेल, स्टीरोइड्स, एस्कोर्बिक अम्ल, ग्लायकोसाइड्स, सैपोनिन्स, टैनिन्स, इसके उड़नशील तेल में थायमॉल होता है, जिसे कारवाक्रोल कहते हैं।

गुण-सुगंधित, कफ नि:सारक, उत्तेजक, रुचिकर, दीपन।

उपयोग- पत्रों का प्रयोग-शुक्रमेह, सोजाक, ज्वर, कास, श्वित्र, आंतशूल, प्रमेह, मूत्रकृच्छ में लाभकारी। इसके बीज शिर:शूल, मेधाबल्य, हृदय तथा यकृत बल्य। इसका उड़नशील तेल आमवात तथा पक्षाघात में बाह्य प्रयोग से लाभ होता है।

शिर:शूल तथा माइग्रेन (अर्धाव भेदक) में इसके बीज (२०-२५) पीसकर जल में मिलाकर पीने से लाभ होता है। पत्रों के क्वाथ से स्नान करने से पक्षाघात की प्रारंभिक अवस्था में लाभ होता है। प्रदर में इसके पत्रों का स्वरस चावल की मांड़ में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। बच्चों के वमन में इसके बीज को पीसकर मधु में मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुलसी गौरी/वृन्दा Ocimum sanctum Linn. LAMIACEAE (LABIATAE)

208

ENGLISH NAME:- Holybasil/Sacred Basil.Hindi - Tulsi, Ram Tulsi/Sursa.
PARTS-USED:-Whole Plant, Leaves, Stem and Seeds.
DESCRIPTION:- An annual much branched, hairy herb with square stem. Leaves elliptic oblong, gland dotted, light green & aromatic. Flowers in Verticillaster, purplish Nutlets sub globose or broadly elliptic
TASTE:-Acrid-Bitter
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Essential oil which contains: Eugenol, Eugenol methylether,Carvacrol, Caryophyllene, Ursolic acid, Apigenin; Luteolin, Ascorbic acid, Carotene, Alkaloid, Glycosides, Saponins & Tannins.
ACTIONS:-Expectorant, Diphoretic, Stimulant, Stomachic, Demulcent, Carminative, Heart tonic, Anthelmintic. Diuretic, febrifuge, vermifuge, alexiteric
USED IN:- Rhinitis, Bronchitis, Malarial fever, Asthma, Urinogenital disorder, Vomiting, Indigestion, Ear ache, Disuria, Leprosy, Dyscracia, Diabetes. It is a hepatoprotective, Spermatopoitic, Antispasmodic, Anti bacterial, Antituberculosis, cardiopathic, Leucoderma, Catarohal, hi cough.

प्रचलित नाम- सफेद तुलसी/ श्यामा तुलसी
प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र, कांड तथा बीज।
स्वरूप-एक वर्षायु अति शाखित रोमश, कांड चौपहल शाखाएँ सीधी एवं फैली हुई होती हैं। पत्ते सरल अभिमुखी सुगंधित हल्के-हरे रंग के, किन्तु कुछ के पत्ते एवं डंडियाँ काली हरी होती हैं। पुष्प सफेद जो हरे चक्रों में होते हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तेल जिसमें युजीनॉल, युजीनॉल मिथाइल ईथर, कारबाक्रोल, कैरयोफायलिन, अर्सोलिक अम्ल, एपिजैनिन होते हैं। ल्युटियोलिन, एस्कोर्बीक अम्ल, कैरोटिन, एल्कलॉयड्स, ग्लायकोसाइड्स, सैपोनिन तथा टैनिन्स तत्व पाये जाते हैं।
गुण-कफ निःसारक, स्वेदजनन, उत्तेजक, दीपन, प्रशामक, वातानुलोमक, हृदयबल्य, कृमिघ्न।
उपयोग- प्रतिश्याय, श्वसनी शोथ, विषम ज्वर, श्वासरोग, योनिदोष में, वमन में, कुपचन में, कर्णशूल, मूत्रकृच्छ, कुष्ठरोग, रक्तदोष, मधुमेह में लाभकारी। यह औषधि यकृत संरक्षक, शुक्र वर्धक, उद्वेष्ट निरोधी, कीटाणुघ्न, यक्ष्मारोधी। इसके बीज पौष्टिक तथा मूत्रल गुण वाले हैं। विषम ज्वर में इसके मूल का क्वाथ लाभकारी। कर्णशूल, व्रण प्रक्षालन, कृमि तथा कीटदंश में इसके पत्रों के स्वरस का बाह्य प्रयोग लाभकारी, इसके अतिरिक्त चर्मरोगों में भी लाभकारी। कास में काली तुलसी का रस मधु में मिलाकर पिलाने से कास का नाश होता है। नेत्र रोगों में तुलसी के रस में मधु मिलाकर अंजन करने से नवीन दुखने वाली आयी हुई आँख तुरंत अच्छी हो जाती है। कान पकता हो या दुर्गन्ध आती हो तो इसके पत्रों का रस कान में एक से दो बूंद टपकाने से लाभ होता है। चर्म रोगों (दद्रु-कुष्ठ) में इसके मूल का रस प्रतिदिन प्रातःकाल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिलाने से लाभ होता है। विषम ज्वर में इसके पत्रों के स्वरस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन से विषम ज्वर का नाश होता है। तुलसी का सेवन कर के दूध पीना प्रतिषेध किया गया है। तुलसी के बीज पौष्टिक होने के कारण इसके बीजों के चूर्ण की गोली बनाकर सेवन करने से शक्ति में वृद्धि होती है। फेफड़ों में बलगम तथा खाँसी में इसके पत्रों के रस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर दिया जाता है। दद्रु में इसके पत्रों के रस में निम्बू का रस मिलाकर लेप करने से लाभ होता है। इसके पत्रों के स्वरस से सिद्ध किया हुआ तेल कान में डालने से कर्णशूल में तथा कर्ण पाक में लाभ होता है। इसी तेल का प्रयोग प्रतिश्याय (जुकाम) में नासिक छिद्रों में एक से दो बूंद डालने से लाभ होता है। गृह उद्यानों में तुलसी के अनेक पौधे लगाने से मच्छर नहीं होते। तुलसी दो प्रकार की (१) साधारण तुलसी कड़वी, उष्ण, तीक्ष्ण, सुगंधित तथा रुचिकर जो शोथ, कफ, वात, कृमि एवं वमन को नष्ट करती है। (२) काली (श्याम) तुलसी तीक्ष्ण, उष्ण, दाहकर, पित्तकर, हृदय, तिक्त, अग्निदीपक जिससे वात, श्वास रोग कास, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठरोग, पार्श्वशूल, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, ज्वर, शूल का नाश करती है। ज्वर, अरुचि, दाह, वात विकार तथा पित्त में तुलसी की चाय-तुलसी के एक तोला पत्रों को ४०० मि.ली. जल में उबालकर (जब तक आधा जल रह जाय) आवश्यकता अनुसार शर्करा मिलाकर पीने से उपर्युक्त सभी रोगों में लाभकारी।

दूसरी विधि अनुसार उपर्युक्त विधि अनुसार इसमें इतना ही दूध तथा दो तोला मिश्री एक-दो छोटी इलायची के फलों का चूर्ण बना कर क्वाथ तैयार कर पीना चाहिए, यह क्वाथ उत्तम पौष्टिक, स्वादिष्ट एवं रोग नाशक है। रक्तातिसार में तुलसी के बीज रात भर भिगोने के पश्चात् प्रातः इनको मसल कर, जल का सेवन करना चाहिए। रात्रि अंधापन श्याम तुलसी के पत्रों का स्वरस १४ दिन तक प्रतिदिन दो-दो बूँद नेत्रों में डालने से यह रोग नष्ट होता है। वात शोथ में तुलसी के पत्रों के स्वरस में काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर सेवन करना चाहिए। टिटनेस में श्याम तुलसी, हरी तुलसी, हरा लहसुन तथा प्याज का रस इकट्ठा कर इसमें से तीन माशा पिलाना चाहिये तथा थोड़े से रस की मालिश शरीर पर करनी चाहिए। बच्चों के शीतला रोग में तुलसी के पत्रों का स्वरस पिलाना चाहिए।

मात्रा- स्वरस-१-२ तोला। बीजः १-२ माशा।

●●●

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षेत्र पर्पट/खेत पापड़ा Oldenlandia Corymbosa Linn. RUBIACEAE.

209

ENGLISH NAME:- Field Parpat. Hindi - Phulki.

PARTS-USED:-Whole plant.

DESCRIPTION:- A small herb, weed; Leaves subsessile, linear lanceolate, acute, recurved and hairy margins. Stipules mem branous with few bristles. Flowers white, small on solitary long peduncle. Fruits globose capsule.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Whole Plant Contains:-Alkaloids-Biflorine and Biflorone; Sodium, Potassium, Calcium and Chloride.

ACTIONS:-Anti pyretic, Anti-inflammatory, Cooling, Expectorant, Bitter, Nutritive, Styptic, Diuretic, Dephoretic.

USED IN:- Jaundice, Worms infestation, Liver disorder, Fever, Measles, Bronchitis, Chronic, Malarial fever.

प्रचलित नाम- दमन पापड़ा

प्रयोज्य अंग- पंचांग।

स्वरूप- एक लघु प्रसरणशील क्षुप, पत्ते पतले लम्बे रेखाकर, अल्प पत्रवृन्ती थोड़े वक्र रोमश, उपपत्र तथा स्फोटनशील पतले त्वचीय जिस पर थोड़ी सूक्ष्म नोकदार रचनाएँ होती हैं। पुष्प सफेद, छोटे जो लम्बे कोण पुष्प वृन्त पर होते हैं। फल गोल होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में बाई फ्लोरीन तथा बाइ फ्लोरोन दो तरह के क्षारभ पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक रंजित द्रव्य भी पाया जाता हे। इसकी राख में सोडियम, पोटेशियम, तथा कैल्शियम एवं क्लोरोइड के क्षार पाये जाते हैं।

गुण- ज्वरघ्न, शोथघ्न, शीतल, कफ नि:सारक, तिक्त, पौष्टिक, स्तंभक, मूत्रल, स्वेद जनन।

उपयोग-कामला, कृमिरोग में, यकृत विकारों में, ज्वर, रोमान्तिका, श्वसनीशोथ, गले की सूजन, जीर्ण मलेरिय ज्वर में इसका प्रयोग लाभकारी होता है।

हाथ-पैरों की जलन में इसके पंचांग के स्वरस को हाथ-पैर पर लगाने से जलन कम हो जाती है। मलेरिया ज्वर, पित्त प्रधान ज्वर में-इसके पंचांग के क्वाथ का सेवन अत्यन्त लाभकारी है।

श्वसनी सूजन तथा कंठशोथ में इसके पंचांग को सुखाकर इसके धूम्रपान से कफ ढीला होकर शीघ्र ही गिरने लगता है। कंठ एवं श्वास नली को आराम मिलता है। तमक श्वास में इसके पंचांग के चूर्ण के साथ मुलैठी, छोटी पीपल के चूर्ण में मधु मिलाकर चटाते हैं एवं अल्प धूम्र पान कराने से लाभ होता है। जीर्ण मलेरियल ज्वर में इसके पंचांग का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है।

इसके क्वाथ के सेवन से आमाशयिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रक्षोभ, तृषा, भ्रम, शारीरिक दाह तथा सुस्ती दूर होती है। मूत्र अधिक होता है तथा पसीना आता है। सन्तत ज्वर में इसके पंचांग में हंसराज, ब्राह्मी, चन्दन, खस, नागरमोथा, गिलोय एवं निम्बू घास मिलाकर इसका क्वाथ बनाकर सेवन करने से लाभ होता है।

सर्व ज्वरों में दमन पापड़ा, गिलोय, मोथा, चिरायता एवं घोड़वच इन सबका क्वाथ बनाकर सेवन कराने से सभी प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

दाह शान्ति के लिये दमन पापड़ा का ताजा पंचांग एवं चन्दन को जल में पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है।

मात्रा- क्वाथ २-३ तोला। चूर्ण २-८ माशा।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'वरुण एक वैदिक देवता है, जिन्हें जल का स्वामी, दस्युओं का नाश करने वाला तथा देवताओं का रक्षक माना गया है, इन्हें पृथ्वी और आकाश दोनों का अधिपति माना गया है। ब्राह्मण्ड पुराण के अनुसार अरण्य के पुत्र उदक बाद में वरुण हो गये। संभवतः पौराणिक प्रतीकों में प्रकारांतर से यह समझाया गया है कि जल व वर्षा के स्वामी वरुण जंगल की संतान है अर्थात् जल या वर्षा की उत्पति वनों के बिना संभव नहीं।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्वेतात्रिवृता Syn. Ipomoea turpethum. Operculina turpethum Silva manso CONVOLVULACEAE

210

ENGLISH NAME:- Indian Jalap.Hindi - Trivrit/Tidhara.

PARTS-USED:-Roots & Leaves.

DESCRIPTION:- A large climber growing all the year but extensively growing in monsoon, stem is triangular, with milky latex and three narrow lineate wings, leaves ovate, oblong, cordate, fls white.

TASTE:-Astringent/Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contains: Terpethin which is glycoside, Jalapine, Convolvulin, Soluble resin, Volatile oil, Lignin and Salts.

ACTIONS:-Cathartic, Laxative, Expectorant, Antibillious, Antibacterial.

USED IN:- Fever, Piles, Jaundice, Tuberculosis, Constipation.

प्रचलित नाम- निशोथ/ पितोहरी

प्रयोज्य अंग- मूल एवं पत्र

स्वरूप-यह वनौषधि लता जो वर्षा ऋतु में अधिक फैलती है, जिसका कांड तीन धार वाला (त्रिवृता) जो लम्बा आरोही तथा ऐठा हुआ होता है। इसमें से दुग्ध रस जैसा स्राव होता है। पत्ते हृदयाकार एवं तीक्ष्णाग्र होती है। पुष्प सफेद एवं घंटिकाकार; फल गोल एवं स्फोटनशील होते हैं।

स्वाद-कषाय-कटु

रासायनिक संगठन-इसके मूल में टर्पेथिन जो एक क्षारभ है, जलापाइन, कोनवोल्वुलिन, घुलनशील राल, उड़नशील तैल, लिग्रीन तथा क्षार तत्व पाये जाते हैं।

गुण- भेदनीय, मृदुरेचन, कफ नि:सारक तथा पित्तघ्न।

उपयोग- ज्वर, अर्श, कामला, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त, वातरोग, विसर्प, वातशोफ, विशेषत: आघात युक्त या खिन्नवृत्ति रहने पर यह उपयोगी। अर्श, उदर तथा गुल्म में निशोथ का शाक बनाकर खाने से लाभ होता है। इसके मूल के उपयोग से पतले एवं पीले रंग के दस्त होते हैं। पेट में मरोड़ न हो इसलिये इसके साथ सोंठ जैसे सुगंधित पदार्थ तथा सैंधव का प्रयोग किया जाता है। इसके सेवन से किसी प्रकार का दुष्परिणाम नहीं होता। ज्वर में इसका महीन चूर्ण द्राक्षा रस के साथ सेवन से लाभ होता है।

अर्श में त्रिफला क्वाथ के साथ इसका चूर्ण निशोथ मिलाकर पिलाने से अर्श नष्ट हो जाते हैं या घी एवं तेल में सिद्ध किया निशोथ के पत्रों का शाक दही के साथ खिलाने से लाभ होता है।

विसर्प में इसका चूर्ण घी, दूध, गरम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल या द्राक्षा के रस के साथ सेवन से विसर्प की उष्णता निकल जाती है। पित्तोदर में इसका त्रिवृत दूध के साथ सेवन से लाभ होता है।

उदर रोग में यदि उदर रोग का मल अत्यन्त कठिन हो जाता हो, तो खाने से पहले निशोथ का शाक खिलाया जाना चाहिये। कामला में निशोथ का चूर्ण मिश्री के साथ सेवन से लाभ होता है। क्षय में निशोथ का चूर्ण घी, मधु शर्करा, दूध के साथ देने चाहिए। विषम ज्वर में निशोथ का महीन चूर्ण मधु के साथ मिलाकर चटाना चाहिए, लाभ होता है। गुल्म में निशोथ का शाक खिलाना चाहिए तथा स्निग्ध एवं उष्ण भोजन देना चाहिए।

मात्रा- चूर्ण-७-१० ग्राम।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'मस्तिष्क में जिन ग्रंथियों के पास चेतना की निकटता मालूम पड़ती है उन ग्रंथियों में जो रक्तस्राव है। बहुत चकित करने वाली बात है कि मस्तिष्क के जिस कारण बोध और चेतना निर्मित होती है या जिसके अभाव में आदमी बेहोश हो जाता है। उस रासायनिक तत्त्व की सर्वाधिक उपलब्धि पीपल वृक्ष में है। मनुष्य के भीतर जो बुद्धि है, उस बुद्धि के प्रकट होने के लिये जिस रासायनिक प्रक्रिया की जरूरत है और जिन रासायनिक तत्त्वों की मस्तिष्क में जरूरत है, उनकी सर्वाधिक मात्रा पीपल में उपलब्ध है।' - आचार्य रजनीश

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्योनाक Oroxylum indicum Vent. Indian Trumpet tree BIGNONIACEAE

211

ENGLISH NAME:- Tiutun. Hindi - Sheonak/Talwar Phali
PARTS-USED:-Root-Bark, Seed, Flower and Leaves.
DESCRIPTION:- A large tree with large tri-pinnate compound leaves, each leaf is about 3-5 feet long.Flowers large bluish purple, fleshy, foetid, follicle large sword shaped
TASTE:-Bitter/Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Root bark Contains: Oroxylin-A which is a bitter Glycoside, acr d substance, Pectine chrysin, Baicalein oil, Seeds Contain: Tetuin, Flavin, Glucoside, Fatty acid & Amino acids; Bark Contains: Sodium and Salicilate in good amount-that is why is very effective on Rheumatism.
ACTIONS:-Anti-inf lammatory, Stomachic, carminativeDigestive, Diuretic, Astringent, Styptic, Wound healing, Anodyne, aphrodisiac, expectorant, diaphoretic febrifuge
USED IN:- Root bark in: Rheumatism, Diarrhoea, Cough Fever, Piles, Anthelmintic, Expectorant, bronchitis, anorexia, dyspepsia, flatulence colic, gout, vomiting, leaucoderma

प्रचलित नाम-सोना पाठा

प्रयोज्य अंग- मूल की छाल, बीज, पुष्प और पत्र **स्वरूप**-यह एक विशाल कद का वृक्ष होता है। इसकी थोड़ी शाखाएँ फैली हुई रहती हैं। पत्ते लम्बे (३-५ फीट), द्विपक्षवत जो शाखाओं पर समूह में होते हैं। पुष्प बड़े, जामुनी रंग के, अग्रीय मंजरियों में एवं मांसल होते हैं। फलियाँ लम्बी चिपटी कठोर तथा तलवार की तरह टेढ़ी होती है। बीज सफेद तथा पंखयुक्त होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसके मूल की छाल में ओरोझायलिन-ए-जो एक तरह का कडुवा ग्लायकोसाइड है, इसमें एक कटु पदार्थ, पैक्टिन, क्राइसिन, बेइका लिन तेल पाये जाते हैं। इसके बीज में टेटुइन, फलेवीन, ग्लूकोसाइड, वसा अम्ल तथा एमिनो अम्ल पाये जाते हैं। इसकी छाल में सोडियम तथा सेलीसीलेट अच्छे प्रमाण में है। इसी कारण आमवात पर अच्छी गुणकारी है।

गुण- शोथहर, दीपन, पाचन, मूत्रल, ग्राही, स्वेदजनन, स्तम्भन, व्रणरोपण।

उपयोग- इसके मूल की छाल का प्रयोग आमवात, अतिसार, कास, ज्वर अर्श में लाभकारी। यह कृमिघ्न कफ नि:सारक है। इसकी छाल से सिद्ध तेल का प्रयोग कर्णस्राव तथा कर्णशूल में किया जाता है।

आमवात तथा वातप्रधान रोगों में इसके मूल का प्रयोग सोंठ के साथ फांट बनाकर दिन में तीन बार करने से लाभ। इसके क्वाथ से शोथयुक्त संधियों को सेकते हैं, जिससे सूजन तथा पीड़ा कम होती है। मिर्गी में थोड़ी सी छाल पीसकर दूध में मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अतिसार में इसकी ताजी हरी छाल लेकर उसका कल्क बनाकर उस पर गंभारी और कमल के पत्र लपेट कर धागे से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बांध देना चाहिए। उस पर मिट्टी का एक अंगुल मोटा स्तर लगाकर अंगारों में उस गोलक को रखें। मिट्टी के रक्ताभ होने पर गोले को अग्नि से बाहर निकाल लें। कुछ ठंडा होने पर मिट्टी पत्र आदि दूर करके श्योनाक की छाल के कल्क में से रस निचोड़ लें। इस पक्व रस के पूर्ण ठंडे हो जाने पर उसमें मधु मिलाकर पिलाने से अतिसार नष्ट होता है।

उदर रोग में इसकी छाल का क्वाथ पीने से तमाम प्रकार के उदर रोगों में लाभ होता है। इसकी छाल का चूर्ण एव क्वाथ दोनों ही उत्तम स्वेदजन तथा वेदना हर गुण वाले हैं। इसकी छाल उत्तम स्वेदल तथा मूत्र रोगों के लिए अत्यंत उपयोगी औषधि है, इसकी छाल में सोडियम सेलिसिलेट्स प्रचुर मात्रा में होता है, जो संधिवात में बहुत ही उपयोगी है। एक औंस छाल, दस औंस जल में उबालकर क्वाथ बना लो, इसका सेवन १/४-१/४ तोला तीन बार (प्रतिदिन) के साथ करने से संधिवात में लाभ होता है।

मात्रा - छाल का चूर्ण- १०-२० रत्ती।
त्रिकटु के साथ।

छाल का क्वाथ-एक- एक औंस की मात्रा दिन में तीन बार दी जाती है।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'पीपल रात को भी ऑक्सीजन छोड़ता है। अतः उसके नीचे शीत रात को रहने से कोई खतरा नहीं।' - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चांगेरी Oxalis corniculata Linn. OXALIDACEAE

212

ENGLISH NAME:- Indian sorrel Hindi - Tinpatiya

PARTS-USED:-Whole plant and Leaves.

DESCRIPTION:- A small prostrate appressed pubescent, perennial herb; leaves trifoliate with long rachis, leaflets obcordate, sessile Flowers: yellow solitary or grouped in 2-6, capsule oblong, hairy.

TASTE:-Sour-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Malic acid, Tarteric acid, Citric acid, Potassium oxalate.

ACTIONS:-Cooling, Refringirant, Analgesic, Appitizer, Stomachic, Digestive.

USED IN:- Scurvy, Menstrual disorder, helps in fertility, Redness & Vaginal watery discharge, Stomachic. Hypotensive, Antipyretic, Andidote, Anti-inflammatory, Antibacterial, useful in Diarrhoea Piles & Fever.

प्रचलित नाम- तिनपतिया/अबिलोना

प्रयोज्य अंग- पंचांग एवं पत्र

स्वरूप-यह प्रसरणशील छेटा क्षुप, चिरस्थायी ग्रंथियों से आगन्तुक मूल निकले रहते हैं। पत्ते त्रिपत्रक तथा लम्बे वृन्त वाले होते हैं। पुष्प पीले या गुलाबी जो पत्तों से छोटे दण्ड पर प्राय: दो-दो की संख्या में होते हैं। फली-मृदुरोमश स्फोटनशील होती हैं।

स्वाद-आम्ल-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसमें मैलिक अम्ल, टारटेरिक अम्ल, सिट्रीक अम्ल तथा पोटेशियम ओक्सेलेट तत्व पाये जाते हैं।

गुण- शीतल, दाह प्रशामक, शूलहर, रुचिकर, दीपन, पाचन।

उपयोग- स्कर्वी विटामिन-सी की कमी के कारण उत्पन्न रोग जैसे मसूड़ों में रक्तस्राव त्वचा पर नीलांछन, आर्त्तव दोष, गर्भधारण में सहायक, योनिदोष, श्वेत प्रदर में, दीपन, दाबह्रासी, ज्वरहर, शोथहर, कीटाणुघ्न, ज्वर एवं पित्त में दीपन-पाचक है। यह अतिसार, अर्श तथा ज्वर तें लाभकारी। यह विटामिन सी का एक उत्तम स्रोत है, इसका बाह्य प्रयोग शोथयुक्त सूजन पर लेप लाभकारी है। इसके प्रयोग से छोटी धमनियों का संकोचन होकर रक्तस्राव रुकता है। खूनी आँव तथा गुदाभ्रंश में इसका प्रयोग लाभकारी। धतूरा विष निवारण में पंचांग का स्वरस लाभकारी। अर्श में इसके पंचांग को घी में सेंक कर शाक बनाकर दही के साथ सेवन से लाभ होता है। संग्रहणी में इसके पंचांग का स्वरस एवं इसमें लींडी पीपर मिलाकर तथा रस से चार गुना दही मिलाकर घी पका लेना चाहिये। यह घी संग्रहणी के लिये हितकारी है। चौथिया ज्वर में इसके लगभग एक हजार पत्रों को पत्थर पर अच्छी तरह पीसकर इससे १६ गुना जल में उबालना चाहिये, जब यह गाढ़ा होने वाला हो, उसमें घी डालकर, रबड़ी जैसा हो जायेंगा, इसका सेवन करने से ज्वर तीन दिन में उतर जायेगा। इसका पंचांग संग्राही गुण होने से अतिसार में तथा अर्श में बहुत ही उपयोगी है।

मात्रा- पंचांग का स्वरस- एक से दो तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

केतकी/कंटदला Syn : Pandanus odoratissimus Linn.f. Pandanus fascicularis Lamk PANDANACEAE

213

ENGLISH NAME:- Screw pine. Hindi - Keora

PARTS-USED:-Root Leaves, Flowers, Fruits and Oil from Flowers.

DESCRIPTION- A large shrub, looking like a tree with aerial stilt root; leaves linear with spines on margin & midrib, Flowers in spadix and aromatic.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Physcion, Circilineol, n-Tricontanol, Beta-stiosterol, Stigmasterol, Compesterol, Daucosterol, Palmitic acid and Stearic acid.

ACTIONS:-Stimulant, Antispasmodic, Anti-inflammatory, Aromatic Heart tonic, Braintonic. emollient, depurative, carminative, aphrodisiac, stomachic.

USED IN:- Leprosy, Small pox, Syphilis, Scabies, Leucoderma, Headache, Rheumatism, Effective against gynoecological disorders, Skin disease, Boils, Ulcer, Fracture, Disuria, Debility and Hysteria. antiseptic.

प्रचलित नाम- केवड़ा

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, पुष्प एवं फल तथा पुष्पों का तेल।

स्वरूप-यह एक बड़ा गुल्म जो वृक्ष जैसा दिखाई देता है। हवाई स्तंभ मूल की उपस्थिति इस पौधे की विशेषता है, पत्ते सरल शाखाओं के अंत में समूह में होते हैं। पत्तों के तट तथा मध्य शिरा (अध:पृष्ठ) पर तीक्ष्ण कंटक होते हैं। पुष्प हल्के पीले रंग के छोटे-छोटे सुगंधित एवं मंजरियों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें फिजियोन, सिरसीलिनीऑल, एन-ट्रायेकोन्टानॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, स्टीग्मास्टीरॉल, कोम्पेस्टेरॉल, डॉकोस्टीरॉल, पामीटिक अम्ल एवं स्टीयरीक अम्ल पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसके पुष्पों में सुगंधित तेल पाया जाता है।

गुण- उत्तेजक, उद्वेष्टननिरोधी, शोथहर, सुगंधित, मेधा वर्धक हृदयबल्य।

उपयोग- कुष्ठरोग, चेचक, फिरंग, कण्डु, श्वित्ररोग, शिर:शूल, आमवात, योनि रोगों में प्रभावकारी, चर्मरोगों में, फोड़ों, व्रण तथा अस्थिभग्न, मूत्र कृच्छ्र अशक्ति (कमजोरी) तथा मूर्छा में इसका प्रयोग लाभकारी। इसका अर्क ज्वर में देने से पसीना आ कर ताजगी मालूम पड़ती है। चर्मरोगों में इसके पत्रों को पीसकर लेप करने से लाभ होता है। शिर:शूल, कटिशूल एवं आमवातादि में इसके तेल की मालिश से लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र में इसके प्ररोह के अग्रभाग के कल्क से, केतकी के ही स्वरस में, सिद्ध किया हुआ घृत खाने से मूत्र कृच्छ्र नष्ट हो जाता है। वातज गुल्म इसके पंचांग को जलाकर क्षार विधि से निर्मित क्षार तेल के साथ पिलाने से गुल्म नष्ट हो जाता है। रक्त प्रदर में इसके मूल का प्रयोग किया जाता है। प्रमेह में इसके मूल से बनी बंग भस्म के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवन से लाभ होता है। चिरकाल से होने वाले शिर:शूल में तथा अन्य शिरो रोगों में इसका लेप लाभकारी है।

अपस्मार में इसके पुष्प विन्यास पर (नरकेसर) का चूर्ण (पाउडर) तथा इसके पुष्प समभाग लेकर इकट्ठा कर पीस लो, इस चूर्ण को सूंघने (नसवार की तरह) से लाभ होता है। सभी प्रकार की उष्णता में इसके पत्रों के स्वरस में पिसा हुआ जीरा तथा मिश्री मिलाकर सात दिन तक पिलाना चाहिए। पथ्य-छारा, चावल, नमक रहित। कंठरोग (कंठ रोहिणी-डिप्थेरिया) केतकी के मंजरी की बीड़ी बना धूम्रपान करने से वमन होकर कफ निकल जाता है, जिससे कंठ रोहिणी रोग नष्ट होता है। इस औषधि के साथ इंद्र वारुणी के फल का फलावरण भी उपयोग में लाया जाता है। वमन तथा अतिसार में इसके कंद (भूमिजन्य मूल) का स्वरस पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा- अर्क-चार से छः तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'कॉलिन विल्सन ने लिखा है-चैतन्य की प्रक्रिया जिस रासायनिक संभावना से बढ़ती है, वह वट, पीपल या उस तरह के वृक्षों में सर्वाधिक है।' - अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खसतिल/खाखस तिल Papaver somniferum Linn Var. Album D. C. PAPAVARACEAE

214

ENGLISH NAME:- Poppy Plant/Opium Hindi - Aphim seed - Posta/Khas-khas
PARTS-USED:-Fruits, Seeds and Opium. leaves serrile, stem clasping lobed or dentate
DESCRIPTION:- An annual gloucus glabrous herb with milky juice; stem is pubescent. Flowers white red or black, solitary, capsule with persistant arching style.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots & Fruits Contains: Reframidine, Thebain, Codeine, Cryptopine, Narcotine; Latex Contains: Papavarine, Morphine, Oxalic acid; Seed Contains: Trigly ceride ester, Alkaloid-Somniferine.
ACTIONS:-Tonic, Expectorant, Aphrodisiac, Blood purifier, Astringent, Appitizer, Styptic, Narcotic, Analgesic Diphoretic, Diuretic, Stimulant.
USED IN:- Whole plant: is Tonic, Carminative, Aphrodisiac, Expectorant, Fruit: is blood purifier, Appitizer, Aphrodisiac; Used in Rheumatism, Diarrhoea, Arthritis; Opium: is Anthelmintic; useful in: Asthma, Anaemia Tuberculosis, Polyuria, Cough, Spleenomegaly.

प्रचलित नाम- पोस्ता/अफीम

प्रयोज्य अंग- फल, बीज तथा अफीम।

स्वरूप-एक वर्षीय क्षुप जो मृदु रोमश, इसके अंगों से दुग्ध रस निकलता है। पत्ते सरल पत्रवृंत छोटा, पत्र विषम, दन्तुर, फलक मूल हृदयाकार जो कांड को चारों ओर से घेरे हुए होता है। पुष्प सफेद रक्तवर्णी या श्यामवर्णी होते हैं। फल कैप्स्युल एवं स्फोटनशील होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल तथा फल में रिफ्रामिडाइन, थीबेइन, कोडेइन, क्रिप्टोपाईन, नारकोटाइन, इसके क्षीर में पेपावेराईन, मोर्फाइन, ओक्सेलिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके बीज में ट्रायग्लीसराइड ऐस्टर, एल्कलॉयड-सोमनीफेराईन पाये जाते हैं।

गुण- बल्य, कफ नि:सारक, कामोत्तेजक, रक्त शुद्धि कारक, ग्राही, रुचिकर, रक्त स्तंभक, मादक, शूलहर, स्वेदजनन, मूत्रल, उत्तेजक।

उपयोग-पंचांग बल्य, वातानुलोमक (वातहर), वाजीकरण, कफ नि:सारक, इसके फल-रक्तशुद्धि कारक, रुचिकर, कामोत्तेजक, इसका उपयोग-आमवात, अतिसार तथा संधिशोथ में लाभकारी। अफीम कृमिघ्न, इसका उपयोग श्वासरोग, पाण्डुरोग, यक्ष्मा प्रमेह, कास तथा प्लीहा वृद्धि में लाभकारी। शिर:शूल, पार्श्वशूल, कटिशूल, गृध्रसी, उन्माद में अफीम का फांट पिलाने से लाभ होता है। आमातिसार में इसके बीज (खस-खस) को दही में पीसकर सेवन से लाभ। मोच सूजन तथा चर्म नीलांछन में रस के क्वाथ या फांट से सेंका जाता है। शुष्क कास में अन्य औषधि के साथ इसके चूर्ण का प्रयोग लाभकारी। नेत्राभिष्यंद (पीड़ा युक्त) इसका लेप नेत्र के चारों तरफ लगाते हैं। खस तिल-बीज को दूध में पीसकर सिर पर लगाने से इसमें होने वाले फोड़े-फुन्सियाँ एवं रूसी साफ हो जाती है। उग्र वेदना में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अफीम का प्रयोग अति उत्तम है। अफीम अच्छा वीर्यस्तंभक होने के कारण बहुपत्नी वाले राजा इसका कुसुम्बा बनाकर पीते थे, इससे वीर्य का टिकाव अच्छा होता है। श्वासरोग, त्रासदायक खांसी, उदर शूल में अफीम के सेवन से अत्यंत चमत्कारी प्रभाव देखने को मिला है। शूलयुक्त अर्श पर अफीम तथा रसवंती का लेप करने से वेदना कम होकर रक्तस्राव बंध हो जाता है। इसके अतिरिक्त धतुरा के पत्रों के रस में अफीम मिलाकर इसका लेप करने से वेदना शीघ्र बंद हो जाता है। कर्णशूल में अफीम जलाकर उसकी राख में चार चावल के बराबर तिल के तेल में मिलाकर कान में डालने से कर्णशूल दूर हो जाता है। अफीम का प्रयोग बुद्धिजीवी व्यक्ति औषधि के रूप में करके लाभान्वित होते हैं, किन्तु मूर्ख व्यक्ति इसके नशे के वश में होकर हृदय तथा मस्तिष्क को हानि पहुँचाते हैं। औषध के रूप में अफीम की मात्रा १/४ से आधी रत्ती मध्यम मात्रा है, जबकि आधी से डेढ़ रत्ती उत्तम मात्रा है। वेदना स्थापन के लिये अफीम उत्तम औषधि है।

मात्रा-अफीम-आधा से एक रत्ती। बीज-एक चौथाई से आधा तोला।

●●●

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'वैद्य जीवन में लोलम्ब राज ने बताया है कि पीपल वृक्ष की पूजा करने से ज्वरों का नाश निश्चित रूप से हो जाता है।' - रमेश बेदी (पीपल पुस्तक से)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बृहद् गोक्षुर/ मालवी गोक्षरु Pedalium murex Linn. PEDALIACEAE.

215

ENGLISH NAME:- Large Caltrops. Hindi - Baragokhru.

PARTS-USED:-Leaves and Fruits.

DESCRIPTION:- A small much branched and rough herb with scaly glands. Leaves opposite, fleshy, ovate-oblong, crenate-serate. flowres bright yellow, axillary solatory. Fruit- a drup hard with horizonatal spines from the four angles, conical.

TASTE:-Tasteless.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:-Alkaloid, Fat, Resin.

ACTIONS:-Oily, Anti-spasmodic, Diuretic, Tonic, Aphrodisiac, Rejuvenator, Stomachic, demulcent, emmenagogue.

USED IN:- Gonorrhoea, Arthritis, Burning during urination, Spermatorrhoea, Dysuria, Piles, Leucoderma, spleen enlargement.

प्रचलित नाम- बड़ा गोखरू

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं फल।

स्वरूप-एक छोटा अतिशाखीत खुरदरा क्षुप, जिसमें पत्र ग्रंथियाँ होती हैं। पत्ते विपरीत मांसल, अंडाकार, लम्ब गोल, दन्तुर (गोल दन्तुर); पुष्प चमकीले पीतवर्णी पत्र कोण में एकाकी, फल प्रावर कठिन, जिसके चारों कोनों पर एक-एक कांटा होता है।

स्वाद-स्वाद रहित (लुआब)

रासायनिक संगठन- इसके फल में क्षारभ, वसा एवं राल पाये जाते हैं।

गुण-उद्वेष्टहर, मूत्रल, स्नेहन, बल्य, वाजीकरण, रसायन, दीपन।

उपयोग-सोजाक, संधिवात, मूत्रत्याग के समय जलन में, स्वप्न दोष, काम शक्ति का ह्रास, प्रसूति रोग में, यकृत वृद्धि एवं प्लीहा वृद्धि में इसका प्रयोग लाभकारी होता है। मूत्रकृच्छ्र, अर्श एवं श्वित्र में लाभकारी। महिलाओं के प्रसूति रोग में इसके पत्रों के स्वरस या फलों के क्वाथ के सेवन से लाभ होता है। यकृत एवं प्लीहा वृद्धि में- इसके पंचांग का स्वरस के सेवन या पंचांग के क्वाथ के सेवन से लाभ होता है। नवीन सोजाक रोग में इसके फलों के क्वाथ में मुलैठी एवं नागरमोथा मिलाकर पिलाने से मूत्र त्याग के समय जलन नहीं होती, या इसके पंचांग का हिम लगभग २०० मि.ली. जितना एक समय पिलाना चाहिये। प्रत्येक समय पंचांग का हिम ताजा बनाकर सेवन कराना चाहिये। सोजाक एवं संधिवात में इसके पत्तों को सुखाकर इसका चूर्ण बना लें, इसमें से एक तोला चूर्ण दूध तथा शर्करा में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। काम शक्ति का ह्रास एवं स्वप्न दोष में इसके फलों का फांट बना कर पिलाना चाहिये लाभ होगा। या ढाई माशा फल का चूर्ण २५ तोला उबलते जल में मिलाकर एक घंटे पश्चात् छान लें बार-बार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ा पिलाते रहने से लाभ होगा। पौष्टिकता एवं वाजीकरण के लिए- इसके फलों के दो माशा चूर्ण में शर्करा घृत एवं दूध में मिला कर सेवन करने से लाभ होगा। पाण्डुरोग में इसके फलों के क्वाथ में मधु एवं शर्करा मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है। प्रमेह में इसके फलों के चूर्ण में मिश्री मिलाकर सेवन से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र में-इसके पंचांग का क्वाथ या फलों के क्वाथ में मिश्री का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। पौष्टिकता के लिए- इसके फलों के चूर्ण को दूध, घी चार तोला, मिश्री एक तोला इन सबको मिलाकर इसमें से प्रतिदिन तीन मासा सेवन करने से शरीर की गर्मी के विकारों का नाश होता है। मूत्रघात एवं उष्ण प्रमेह में-इसके ताजे पंचांग को जल में भिगोकर रखने से तथा कुछ समय पश्चात् पंचांग को जल में ही ऊपर नीचे करने से जल चिकना एवं लुआब वाला हो जाता है, इसमें मिश्री एवं जीरा (चूर्ण) मिलाकर सात दिन तक सेवन कराने से लाभ होता है।

पथ्य-गेहूँ की रोटी, घी, मिश्री एवं अरहर की फीकी दाल। आमवात में इसके फलों का चूर्ण एवं शुण्ठी के चूर्ण का क्वाथ बनाकर नित्य सेवन करने यसे लाभ होता है। यह पाचक होता है एवं इससे आमवात एवं कटिशूल का नाश होता है।

प्रमेह में इसके पत्तों के स्वरस में (१० तोला) कपूर तुलसी के बीज (एक तोला) पीसकर इन सबको मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। इंद्रलुप्त में-इसके फल तिलक पुष्प, मधु, घी इन सबको मिलाकर सिर पर लेप करना चाहिए। गर्भशूल में-गर्भपतन पश्चात् होने वाले शूल में इसके फल, मुलैठी एवं द्राक्ष को दूध में पीसकर एवं मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिए। अश्मरी में इसके फलों के चूर्ण को भेड़ के दूध में मिलाकर मिश्री डालकर सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा- पत्र चूर्ण एक तोला। फल २-३ तोला फांट बनाकर। फल का चूर्ण २-४ माशा।

◆◆◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शतपुष्पा Peucedanum graveolens Linn. Syn. Anethum sowa kuzr. Anethum graneolens Linn. UMBELLIFERAE

216

ENGLISH NAME:- Indian dill Fruit./ Hindi - Soya
PARTS-USED:-Fruits & Extract.
DESCRIPTION:- A small glabrous perennial herb about 1 -3 feet high. Leaves compound. Flowers in umbels and Yellow flowers in colour.
TASTE:-Bitter/Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:A Volatile oil; Anithol, Volatileoil contains an oily Substance Dill apiole, a liquid Hydrocrbon- Anethene and Carvone.
ACTIONS:-Expectorant, Carminative, Stomachic, Aromatic, Stimulant, Uterous Stimulant, Appitizer.
USED IN:- Abdominal pain, Dyspepsia, Debility, Tonic for digestive system; Inchildren complanints-Such as flatulance, digestion disorder, it is an excellent remedy, also useful in Fever, Burning sensation Colic pain, Vomiting, Diarrhoea, Thirst, Tuberculosis Piles, Cough.

प्रचलित नाम- सोआ
प्रयोज्य अंग- फल एवं सत
स्वरूप-एक लघु चिरस्थायी क्षुप जो लगभग १-३ फूट ऊँचा होता है। पत्र संयुक्त अतिविभाजित पुष्प पीतवर्णी जो छत्र में होते हैं। फल अण्डाकार किनारे पर सपक्ष, चिपटे उन्नतोदर होते हैं।
स्वाद-तिक्त/कटु।
रासायनिक संगठन- इसके फल में एक उड़नशील जिसमें तेलीय पदार्थ डील एपिऑल, एनीथोल, एक तरल हाइड्रोकार्बन एनिथेन तथा कार्वोन पाये जाते हैं।
गुण- कफ निःसारक, वातानुलोमक, दीपन, सुगंधित, उत्तेजक, रुचिकर, गर्भाशय उत्तेजक।
उपयोग-आमाशयिक शूल, अग्निमंद्यता, दौर्बल्य में पाचन तंत्र के लिये बल्य; बच्चों के अनेक रोगों में-आध्मान, पाचन विकारों के लिये उत्तम औषधि है। इसके अतिरिक्त यह दाह, उदरशूल, वमन, अतिसार, तृषा, यक्ष्मा, अर्श तथा खाँसी में लाभकारी। सोआ के क्वाथ का प्रयोग प्रसूता के वमन, अजीर्ण, आध्मान तथा दुग्ध वृद्धि, अनार्त्तव के लिये किया जाता है। अंकुश काम में भी यह लाभकारी। अतिसार में सोआ एवं मेथी को भूनकर जल के साथ देने से लाभ। जोड़ों के सूजन पर इसके पत्ते तथा मूल को पीसकर जोड़ों पर बांधने से लाभ होता है। सोया के ताजे बीज लेकर इसका चूर्ण बनाकर संग्रह कर लेना चाहिए, प्रतिदिन एक से दो तोला शक्ति अनुसार घी में मिलाकर चाटना चाहिए। इतनी मात्रा पचने के पश्चात् दूध चावल का सेवन करना चाहिये। इस प्रकार लगभग चार किलो सोया का सेवन करने के पश्चात् इच्छित संतान प्राप्त हो सकती है। इसके सेवन से बाँझ स्त्रियाँ भी संतान वाली हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त वृद्ध पुरुष युवा, बलशाली एवं मेधावी बनता है। कामोत्तेजक पुरुष को सोया का सेवन मधु के साथ करना चाहिए। कामला पाण्डु एवं शोथ वाले रोगियों को सोया का सेवन भैंस के दूध के साथ करना चाहिये। कुष्ठ रोगी को खदिर के साथ। गुल्म वाले रोगी को एरण्ड तेल के साथ सेवन करने से लाभ होता है।
लाभ-फल का चूर्ण-एक से चार माशा।
फल का अर्क-एक औंस।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुद्गपर्णी Phaseolus trilobatus (Linn.) Schreb. FABACEAE

(LEGUMINOSAE)

ENGLISH NAME:- Wild Mung. Hindi - Mugwan.

PARTS-USED:-Whole plant and Leaves.

DESCRIPTION:- A small perennial diffuse or trailing, prostrating, pubescent, 1-2 feet high herb, leaves trifoliate, each leaflet faintly 3 lobed and Coriaceus. Flowers in Spikes on long peduncle, yellow pod-sub-cylindric 3-6 cm. long.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- In Plant three crystalline compounds like-Friedlin Epifriedelin and Stigma-sterol are found.

ACTIONS:-Cooling, Sedative, Tonic, Febrifuge, Anti-billous Demulcent Anthelmintic.

USED IN:- Cough, Gout, Antipyretic, Spermopoitic, Opthalmic disease, Tuberculosis, Inflammation. Paste of Leaves: Externally applied in opthalmia and Haemorrhoid.

प्रचलित नाम- मुंगवन/वन मूंग

प्रयोज्य अंग- पंचांग तथा मूल

स्वरूप-यह एक वन स्वरूपी चिरस्थायी प्रसरणशील रोमश लता है। पत्ते त्रिपत्रक गोल एवं खुरदरे प्राय: वृन्त से छोटे ही होते हैं। पुष्प मंजरियों में जिसमें पुष्प दंड बड़ा होता है। फलियाँ लगभग दो इंच लम्बी एवं चिकनी होती हैं।

स्वाद-तिक्त रस।

रासायनिक संगठन- इसमें तीन रवेदार यौगिक पाये जाते हैं-फ्रिडेलिन, एपिफ्रिडेलिन तथा स्टिग्मा-स्टीरॉल।

गुण- शीतल, निद्राजनक, बल्य, ज्वरहर, पित्तघ्न, प्रशामक, कृमिघ्न।

उपयोग-कास, वातरक्त, ज्वरघ्न, शुक्रवर्धक, नेत्र रोगों में, यक्ष्मा, दाह में, पत्रों के कल्क का बाह्य प्रयोग नेत्र रोगों तथा अर्श में लाभकारी। पत्रों का क्वाथ इसका प्रयोग जीर्णज्वर विषम ज्वर एवं निद्रा लाने के लिये किया जाता है। वाजीकरण के लिये एक उत्तम गाय जो प्रथम बार प्रसूता हुई हो, हृष्ट-पुष्ट एवं अपने सदृश वर्ण वाले जीवित वत्सवाली एवं चारों स्तनों से दूध देती हो, उसको भर पेट माषपर्णी का पंचांग खिलाना चाहिए। फिर उसका गाढ़ा दूध दोह कर उबालकर मधु एवं घी मिलाकर पीना चाहिए। यह दूध उत्तम बलकारक एवं वाजीकर है। मूषक विष में माषपर्णी, मुद्गपर्णी एवं निर्गुण्डी के रस में मधु मिलाकर चाटने से लाभ होता है। अल्प दृष्टि वाले नेत्रों में इसके पत्रों की पुल्टिस कल्क के रूप में नेत्रों पर बांधने से लाभ होता है। अनियमित ज्वर में इसके पंचांग के प्रयोग से इस प्रकार के ज्वर में लाभ होता है। चरक के अनुसार मुद्गपर्णी तथा माषपर्णी दोनों ही जीवनीय गण औषधियाँ है। खाज (कण्डु) खस में इसके बीज एक दिन गोमूत्र में भिगोकर रखने के पश्चात् दूसरे दिन उसमें फिर थोड़ा गोमूत्र मिलाकर महीन पीस कर रोगग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। उपदंश से हुआ चर्म विकार, खरजु पर इसके बीज के तेल की मालिश प्रतिदिन करनी चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूम्यामलकी Phyllanthus niruri auct non Linn. Syn. P. asperulatus. Phyllanthus amarus schum & Thonn. Phyllanthus fraternus webster. EUPHORBIACEAE

218

ENGLISH NAME:- Bhuiaonla. Hindi - Tamlki
PARTS-USED:-Roots, Fresh Leaves and Whole Plant.
DESCRIPTION:- A small annual herb, 10 to 30 cm. high. Flowers small greenish yellow in axils, Fruits are small like Anvla.
TASTE:-Bitter/Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contain: Bitter Phyllanthin & Hypophylanthin, Alkaloid, Lignas, Vitamin-C, Quercetin, Astrogalin, Querscitrin, Rutin; Roots Contain: Glyco flavon; Seeds Contain: Oil which Contains-Ricinoleic acid, Linoleic acid & Linolenic acid.
ACTIONS:-Anti-pyretic, Antiseptic, Astringent, Cooling, Diuretic, Digestive. stomachic.
USED IN:- Dropsy, Urinary-disease, Burning sensation, Polyuria, Diarrhoea, Gastro-intestinal troubles , Colic Dysentery, Dyspepsia, Jaundice, Gonorhoea, Menorrhagia; Leaves: Diuretic, Mixed with salt: applied locally on Skin disease and Ulcers; Cough & Asthma (Decoction of whole plant.)

प्रचलित नाम- भुँई आमला/भूमि आंबरा
प्रयोज्य अंग- मूल, ताजे पत्र एवं पंचांग।
स्वरूप-एक वर्षायु लघु क्षुप १०-३० से.मी. ऊँचा शाखाएँ सीधी तथा पतली होती हैं। पत्ते छोटे-छोटे एकान्तर तथा दीर्घ वृताकार होते हैं। पुष्प छोटे श्वेत हरिताभ जो पत्र कोण में होते हैं, फल भी छोटे जो आंवले जैसे होते हैं।
स्वाद-तिक्त/कषाय।
रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में एक कडुवा तत्व फायलैन्थीन तथा हाइपोफालैन्थिन होता है। इसमें क्षारभ, लिग्रान, विटामिन-सी, क्वेरसेटिन, एस्ट्रोगैलिन क्वेरसैट्रिन, रुटिन होते हैं। इसके मूल में सायक्लोफलेवॉन, बीज में तेल जिसमें रिसीनॉलीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल तथा लिनोलैनिक अम्ल पाये जाते हैं।
गुण- ज्वरहर, पूतिरोधी, ग्राही, शीतल, मूत्रल, पाचन।
उपयोग-जलोदर, मूत्र रोगों में, दाह, प्रमेह, अतिसार, आंत-आमाशय शोथ, शूल प्रवाहिका, अग्निमंद्यता, कामला, अपसर्गिकामेह, कष्टार्त्तव, पत्रों को नमक के साथ मिलाकर बाह्य प्रयोग चर्मरोगों तथा व्रण में लाभकारी एवं मूत्रल गुण वाला। इसके पंचांग का क्वाथ कास तथा श्वास रोग में लाभकारी। व्रण शोथ पंचांग का चावल की पेया के साथ बना पोल्टिस बांधने से लाभ। मलेरिया ज्वर में इसके पंचांग का क्वाथ लाभकारी। कामला में १तोला मूल, दूध में पीसकर सेवन से लाभ होता है। आम में इसके कोमल कांड का फांट लाभकारी। हिक्का एवं श्वास रोग में इसके मूल को जल में घिस कर उसमें मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए तथा नस्य रूप में देने से लाभ होता है। नेत्र पीड़ा (शोथ) तांबे के पात्र पर इसको सैन्धव एवं जल के साथ घिसना चाहिये, जब गाढ़ा-गाढ़ा रस (घर्षण) तैयार हो जाय, तब उसका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आँखों के चारों ओर बाहर लेप करने से नेत्र पीड़ा नष्ट होती है।

रक्त प्रदर में इसके बीजों का चूर्ण तण्डुलोदक के साथ दो-तीन दिन तक पिलाने से रक्त प्रदर नष्ट होता है।

मधुमेह में-डेढ़ तोला इसका पंचांग और २० काली मिर्च, इनका चूर्ण सेवन करने से सात दिन में जीर्ण प्रमेह नष्ट होता है। प्रदर में इसके मूल का क्वाथ दो या तीन दिन तक पीने से प्रदर नष्ट होता है।

खाज-खुजली में इसके पत्रों के कल्क में लवण मिलाकर निर्मित पुल्टिस का प्रयोग चर्मरोगों में लाभकारी। जीर्ण अतिसार में इसके पंचांग का क्वाथ मेथी मिलाकर पीने से यह पाचक, कटु पौष्टिक तथा ग्राही होने से पुराने अतिसार में हितकारी है।

लाभ-पंचांग का स्वरस- १ से २ तोला। चूर्ण- ३ से ६ माशा।

◆◆◆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'इतिहास पुरुष विस्मार्क का वृक्ष मिलाप द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी का लौह चान्सलर विश्मार्क अपने निजी चिकित्सक की राय पर प्रतिदिन एक वृक्ष से आधे घंटे तक चिपका रहता था, इससे उसे कड़े परिश्रम की थकान से राहत मिलती थी।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टंकारी Physalis minima Linn. SOLANACEAE

219

ENGLISH NAME:- Ran-gooseberry. Hindi - Rasbhari.

PARTS-USED:-Leaves, Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- An annual pubescent herb, about 5-20 inch high, leaves ovate serrate, alternate, flowers small bell shaped and yellow.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:Steroidal Physalin A, B & C Epaxyphysalin-B, Plamitic acid, Stearic acid, Oleic acid, Linoleic acid, Hexadeconoid acid, Epoxy and Hydroxy fatty acid.

ACTIONS:-Fruits Tonic, Diuretic, Laxative, Gasteric stimulant.

USED IN:- Oedema, Abdominal pain, Dropsy, Gonorrhoea, Gout, Urinary disease; Leaves juice mixed with water and mustard oil remedy for ear-ache.

प्रचलित नाम- रसभरी

प्रयोज्य अंग- पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप- एक वर्षायु रोमश क्षुप जो लगभग ५-२० इँच ऊँचा होता है जो नरम तथा लोम युक्त होता है। पत्र अंडाकार एकान्तर, दंतुर, पुष्प छोटे घण्टाकृति तथा पीतवर्णी होते हैं। फल गोल रक्तवर्णी तथा स्वादिष्ट होता है।

स्वाद-तिक्तरस।

रासायनिक संगठन- इसमें स्टीरॉइडल फायसेलिन ए, बी तथा सी, इपैक्सीफायसेलिन-बी, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ऑलीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, हेक्साडीके नॉइड अम्ल, इपोक्सी तथा हाइड्रोक्सीवसा अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- फल-बल्य, मूत्रल, मृदुरेचन, आमाशयिक उत्तेजक।

उपयोग-शोथ में, उदरशूल, जलोदर, अपसर्गिकामेह, गठिया (वातरोग)। मूत्र रोग में पत्रों का रस जल तथा सरसों के तेल में मिलाकर कान में डालने से कर्णशूल में लाभ होता है। सोजाक में इसके फलों का सेवन में लाभकारी। स्तन शिथिलता दूर करने में इसके पंचांग को चावल की धोवन में पीसकर लेप करते हैं। तमक श्वास में इसकी जड़ तथा टंकण का लावा मधु के साथ देने में श्वास रोग कम होकर कफ निकलता है।

लाभ-३-६ माशा।

◆◆◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल पिप्पली Syn : Lippia nodiflora Rich. Phyla nodiflora (L) Greene, VERBENACEAE

220

ENGLISH NAME:- Purple Lippia. Hindi - Jalpipar
PARTS-USED:-Whole plant & Leaves(Juice.)
DESCRIPTION:- A small perennial, creeping marsh herb, rooting at nodes, growing on moist places. Leaves small serrate dentate, Flowers white or pale pink spikes.
TASTE:-Sweet-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:-Fructose, Glucose, Lactose, Xylose, Linoleic acid, Linolenic acid; Leaves Contains: Nodiflorins-A & B. Nodifloridins A & B, Nepetin, Lippiflorin-A. Nodifloretin, Glucosides of Beta-Sterol & Stigma-Sterol.
ACTIONS:-Diuretic, Demulcent, Astringent, Febrifuge, Cooling, Heart tonic, Spermopoietic, Blood Purifier, appetizer, stomachic, anthelmintic, ophthalmic.
USED IN:- Whole Plant: is febrifuge, Spermopoietic; Plant made in to Poultice used as maturant for boils; Infusion of tender leaves & Stalks: Given to children, in indigestion and Diar rhoea, ordinary cold & given to women after delivery in fever, also useful in Polyuria Dysentery, Arthritis.

प्रचलित नाम- जल पीपल/भुंई ओकरा

प्रयोज्य अंग- पंचांग तथा पत्र (स्वरस)

स्वरूप-चिरस्थायी, प्रसरणशील, लघु क्षुप, संधि पर से मूल उत्पन्न होते हैं। पत्र छोटे दंतुर, पुष्प सफेद जो मुंडक में होते हैं।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसमें फ्रुक्टोझ, ग्लूकोज, लेक्टोज, जायलोझ, लिनोलिक अम्ल, लिनोलैनिक अम्ल, इसके पत्रों में नोडीफ्लोरीन्स-ए तथा बी, नोडीफ्लोरीडीन्स ए तथा बी, नेप्टीन, लिप्पी फ्लोरीन-ए, नोडी फ्लोरेटिन, स्टिग्मास्टीरॉल तथा बीटा-स्टीरॉल के ग्लूकोसाईड्स पाये जाते हैं।

गुण- मूत्रल, प्रशामक ग्राही, ज्वरहर, शीतल, हृद्य, शुक्रल, रक्तशोधन।

उपयोग-पंचांग-ज्वरहर, शुक्रवर्धक, पंचांग की पुल्टिस बनाकर फोड़े को पकाने हेतु फोड़ों पर बाँधा जाता है। कोमल पत्रों तथा पुष्प विन्यास दंड का फांट बनाकर बच्चों को कुपचन, अतिसार, साधारण सरदी जुकाम में पिलाने से लाभ। इसके अतिरिक्त स्त्रियों को प्रसूति पश्चात् ज्वर में तथा प्रमेह, प्रवाहिका तथा संधि शोथ में देने से लाभकारी। इसके फांट के प्रयोग से रक्त शुद्धि करण तथा नेत्रों में लाभकारी। इसके पंचांग की पुल्टिस जलन कम करने तथा सूजन कम करने के लिये बाँधी जाती है। इससे फोड़े भी जल्दी पकते हैं। यह पित्तातिसार नाशक, श्वास, तृषा, विष, दाह, भ्रम, मूर्छा, ज्वर आदि को नष्ट करने वाली इसके दोषों को दूर करने वाली, मुख को शुद्ध करने वाली अग्नि दीपक एवं रक्तदोष नाशक है।

◆◆◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटुकी Picrorrhiza kurroa Royle ex Benth. SCROPHULARIACEAE

221

ENGLISH NAME:- Black Hellebore. Hindi - Kutki.
PARTS-USED:-Roots and Rhizome.
DESCRIPTION:- A perennial woody herb with bitter rhizome; leaves rubradical, spathulate, petiole winged flowers on cape, blue or white.
TASTE:-Bitter-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains:- A bitter glucoside-kutkin, Apoyanin Alkanol, Alkane. Other Compounds are Picrorhizin; Roots: Kutkin, Kurrin, Vanillic acid, Kutkiol, Kutkisterol, Kurrin, Kutkoside-a new glucoside recently isolated.
ACTIONS:-Anti periodic, Anti-Pyretic, Anthelmintic, Laxative, Stomachic, Digestive, Bitter tonic, hepato protector, Hypoglycarmic.
USED IN:- Dyspepsia, Ashtma, Billiousness, Fever, Piles, Blood troubles, Burning sensation, inflammation, Ringworm; Jaundice Anaemia, Heart disease, Malarial fever, Worms Infestation in Children, Indigestion.

प्रचलित नाम- कुटकी

प्रयोज्य अंग- मूल तथा भौमिक तना।

स्वरूप-यह वनौषधि चिरस्थायी, काष्ठीय, रोमशक्षुप जिसका भूमिजन्य काण्ड बहुवर्षीय और पतला तथा लम्बा होता है। पत्ते चिकने, मूल की ओर संकुचित, आगे की ओर चौड़े तथा लहरदार किनारे वाले होते हैं। पुष्प सफेद या नीलवर्णी जो डण्डी के अंत में गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु

रासायनिक संगठन- भौमिक तना-एक कड़ुवा ग्लूकोसाइड कुटकिन, एपोसायनिन, एल्केनॉल, अन्य यौगिक -पिक्रोरहाजिन, इसके मूल में कुटकिन, कुरीन, वैनीलिक अम्ल, कुटकिऑल, कुटकीस्टेरॉल, कुरीन, एक नया ग्लूकोसाइड जिसका अभी संशोधन हुआ कुटकोसाइड पाये जाते हैं।

गुण- नियतकालिक ज्वरघ्न, ज्वर हर, कृमिघ्न, मृदुरेचन, दीपन, पाचन, तिक्त पौष्टिक।

उपयोग-अग्निमांद्य, श्वासरोग, पित्तरोग, ज्वर, अर्श, रक्त विकार, दाह, शोथ, श्वासरोग, दादर, कामला, पाण्डुरोग, हृद्रोग, शीतज्वर, बच्चों के कृमि विकारों में, कुपचन में लाभकारी। चिरकाल तक चलते रहने वाले विषम ज्वर में कुटकी अमोघ औषधि है। पुनरावर्तित ज्वर में भौमिक तने का चूर्ण ३-४ माशा देने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त विबंध युक्त में तथा ज्वर जनित दाह की शांति होती है। इसका क्वाथ देने से हृदय के ऊपर, हृदय की अकार्य क्षमता जनित यकृत वृद्धि एवं उदर शोथ, इसके प्रयोग से पतले दस्त होकर लाभ होता है, बल प्राप्त होता है।

हृद्रोग में कुटकी एवं मुलैठी समभाग का चूर्ण, शर्करा मिलाकर जल के साथ सेवन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लाभ होता है।

स्तन्य शोधन के लिये कुटकी चूर्ण १/४ तोला, जल के साथ नियमित सेवन से लाभ होता है।

कुष्ठरोग में कुटकी, चन्दन तथा अतिविष का चूर्ण नियमित सेवन से लाभ होता है। कफ पित्त ज्वर में एक तोला कुटकी चूर्ण मिश्री मिलाकर फांकी देकर ऊपर से गरम जल पिलाने से कफ पित्त ज्वर नष्ट हो जाता है। बच्चों के कृमि विकार में इसका चूर्ण अति लाभकारी। इसके पत्रों का चूर्ण मधुमेह में लाभकारी।

लाभ-चूर्ण-३-४ माशा (जीर्ण ज्वर) पाचक एवं कटु पौष्टिक रूप में डेढ़ से दो माशा दिन में तीन से चार बार।

क्वाथ-२०-३० मि.ली.।

◆*◆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'लताएँ वृक्षों से लिपट जाती हैं और नीचे से चोटी तक बढ़ जाती है रास्ते को देखे बिना कोई आगे नहीं बढ़ सकता। इससे स्पष्ट होता है कि वृक्षों में देखने की शक्ति होती है। अच्छी और बुरी गंध पेड़ की वृद्धि पर प्रभाव डालती है। सुवास से उनमें फूल खिलते हैं और दुर्गन्ध उन्हें पीड़ित करती है। इससे पता चलता है कि वृक्षों में सूँघने की शक्ति भी होती है।' - महाभारत मोक्ष धर्म पर्व

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धूप सरल Pinus longifolia Roxb. PINACEAE

222

ENGLISH NAME:- Long leaved Pine/chir Pine. Hindi - Cheer, Resin - Birosa.
PARTS-USED:-Resin, Wood, Oil.
DESCRIPTION:- A tall deciduous straight tree, 100-150 feet high, diameter 6-7 feet. Leaves long needlel likeat the end of branches, 9-12 cluster of 3 each.
TASTE:-Sweet - Bitter .
CHEMICAL CONSTITUENTS- Oily resin Contains:Terpantine, Volatileoil, Pinene-D, Linaonene; Bark Contans: Tannins; From oily resin terpentine is extracted and remaning thick content is know as Tar Which is most useful.
ACTIONS:-A romatic, Stimulant, Stomachic, Carminative, Diphoretic, Diuretic, Digestive.
USED IN:- Effective on kidney, Polyuria, Applied externally on-Arthritis, Colic pain, Swellings, Abscess, Boils, Wound healing, Melagnent ulcers, insect bite, Skin diseases, Internally used in Cough, Hysteria, Flatulance, Paralysis, Calculii, Worms infestation.

प्रचलित नाम- चीड़

प्रयोज्य अंग- राल (गंधा बिरोजा), काष्ठ, तेल।

स्वरूप- पतनशील ऊँचा सीध वृक्ष जिसकी ऊँचाई लगभग १००-१५० फूट तथा गोलाई ६-७ फूट होती है। पत्र लम्बे सुई आकार के जो शाखओं के अंत भाग पर झुमको में होते हैं। ९-१२ के झुमको में प्रत्येक झुमके में ३ पत्र होते हैं। पुष्प गुच्छों में लगते हैं। नरमंजरी प्राय: आधा इंच लम्बी ३-५ के समूह में होती हैं।

स्वाद-मधुर तिक्तरस युक्त।

रासायनिक संगठन- तेल राल में तारपीन, उड़नशील तेल पिनीन-डी लिनाऑनीन, इसकी छाल में टैनिन्स पाये जाते हैं। इसके तेली रेसीन में से तारपीन सत्व निकालने के बाद बाकी रहने वाला पदार्थ टॉर (कोलोफिन) कहलाता है, इस गंध बिरोजा भी कहते हैं, यह अत्यधिक उपयोगी है।

गुण- सुगंधित, उत्तेजक, दीपन, वातानुलोमक, स्वेदजनन, मूत्रल, पाचन।

उपयोग-वृक्क रोग में प्रभावी, प्रमेह में, इसका बाह्य प्रयोग संधिशोथ, आंत्रशूल, सूजन, गण्ड, फोड़ा, व्रणरोपण, कैंसरयुक्त व्रण में, कीटदंश, चर्मरोग, इसका अंत: निग्रहण कास, मूर्छा, आध्मान, पक्षाघात, अश्मरी, कृमिरोग में लाभकारी। राल का प्रयोग क्वाथ के रूप में दाह, कास, आध्मान, अंगघात में लाभकारी। राल का लेप व्रण, शोथ, कंठमाल, त्वचा विकारों पर लाभकारी। छाल का धुँआ व्रण पर लाभकारी। कर्ण रोगों में इसके काष्ठ पर एक कपड़ा लपेटकर उस पर थोड़ा घी लगा वस्त्र को जलाना चाहिए, वस्त्र के जलने से काष्ट जलेगा और उसके जलने से तेल की बूंद टपकने लगेगी, इस तेल को एक पात्र में एकत्र कर लें। इस तेल को दीपिका तेल कहते हैं। कर्णरोगों में इस तेल का प्रयोग लाभकारी है। गंध बिरोजा का उपयोग गण्ड, फोड़, व्रण आदि पर अति लाभकारी। इसके सेवन से इसका असर मूत्रल एवं उत्तेजक है तथा सूजाक में लाभकारी। इस वृक्ष से प्राप्त टर्पेन्टाईन वात वेदना पर लगाने के लिये उपयोगी है। इस वृक्ष के गोंद को 'गंध बिरोजा' के नाम से जाना जाता है।

लाभ- ३ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ताम्बूल Piper betle Linn. PIPERACEAE.

223

ENGLISH NAME:- Betel Leaf. Hindi - Pan.
PARTS-USED:-Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:- A root climber, stem semi woody and swollen at nodes; Leaves simple, ovate. cordate, acuminate seven main veins, long petioled. Flowers in spikes.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contains:- An aromatic volatile oil, Starch, Sugar, Tanin, Diastase; Its oil is pungent and contains Chavicol Cadenene, Chavibetol, Isomeride of Eugenol and Sequiterpene; Young leaves Contain more oil and Diastase comparision to mature leaves.
ACTIONS:-Leaves-Digestive, Stomachic, Carminative, Aromatic, Anti-inflammatory, Wound healing, Anthelmintic, astringent, aphrodisiac, expectorant.
USED IN:- Rhinitis, Branchitis, Asthma, Larynxswellings, Cough, Respiratory trouble, Cold, Diptheria, Inflammation, Ulcer; For Birth Control, Canjectivitis and Nightblindness. leprosy, otalgia, obesity, conjunctivitis.

प्रचलित नाम- नागर बेल/ पान

प्रयोज्य अंग- पत्र एवं फल।

स्वरूप-यह एक मूलारोही लता है, जिसका कांड अर्धकाष्टीय एवं पर्व परसे फूला हुआ। पत्र सरल, अण्डाकर हृदयाकृत, पत्र अग्र लम्बा पत्र आधार पर सात प्रधान शिराएँ तथा लम्बा पत्रवृन्त होता है। पुष्प मंजरियों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके पत्तों में एक सुगंधित उड़नशील तेल पाया जाता है जो तीक्ष्ण होता है, इसमें चेवीकॉल, केडेनीन, चेवीबीटॉल, युजीनॉल एवं सेक्वीटर्पेन के आइसोमेरीड्स होते हैं। पत्रों में स्टार्च, शर्करा, टैनिन एवं डायस्टेज़ पाये जाते हैं। कोमल पत्तों में तेल एवं डायस्टेज़ अधिक मात्रा में होता है। (पुराने पत्तों की अपेक्षा)

गुण-पत्र-पाचन, दीपन, वातघ्न, सुगंधित, शोथहर, व्रणरोपण, कृमिघ्न, वीर्यवृद्धिकर, कामोदीपन, रुचिकर, कान्तिकर।

उपयोग-कफ प्रधान रोगों (श्वसनिका शोथ, तमक श्वास) में स्वर यंत्रशोथ, बच्चों की खाँसी, श्वासावरोध, श्वसनिकाशोथ एवं प्रतिश्याय में, बच्चों के डीपथीरिया (रोहिणी) में, गाँठ, शोथ, व्रण, संतति नियमन के लिए, नेत्र रोग (नेत्राभिष्यंद एवं रतौंधी) में। सर्प दंश में इसके मूल को पान में रख चबाकर खाने से वमन होकर विष उतर जाता है यदि पहले पान से वमन न हो तो दो तीन पान खाने चाहिए जिससे वमन होकर विष बाहर निकल जाता है। जुकाम के कारण होने वाली खाँसी में इसकी फलियों के चूर्ण में मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। तमक श्वास, श्वसनी शोथ तथा कंठशोथ में इसके पत्तों के स्वरस का सेवन लाभकारी है। बच्चों की खाँसी, श्वासावरोध, सर्दी जुकाम एवं श्वसनी शोथ में पान के पत्तों पर एरण्ड का तेल लगाकर गरम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर बच्चों को छाती पर बाँधने से लाभ होता है। डिप्थीरिया (रोहिणी) यह बच्चों के गले का घातक रोग होता है। इस रोग में पान के चार पत्तों का रस थोड़े गुनगुने जल में डालकर गरारे कराने से लाभ होता है या पान के तेल की एक-दो बूंदें लगभग १०० मि.ली. गुनगुने जल में मिलाकर गरारे करने से लाभ होगा या इसकी वाष्प को सूंघने से भी लाभ होता है। व्रण में पान के पत्तों को गरम कर व्रण पर बाँधने से व्रण ठीक होकर वेदना कम होती है। शोथ पर पान के रस में थोड़ा चूना मिलाकर पुल्टिस की तरह इस पर बांधने से लाभ होता है। सामान्य कास में इसके फलों का मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। संतति नियमन के लिये इसके मूल में काली मिर्च मिलाकर सेवन करते हैं। रतौंधी (नाइट ब्लाईनेस) एवं नेत्राभिष्यंद में पान के पत्तों के रस में मधु मिलाकर नेत्रों में अंजन करने से लाभ होता है। मुख शुद्धि के लिए पान के पत्ते में कत्था, चूना लगाकर इसमें इलायची रख कर भोजन के पश्चात् खाने से मुख की शुद्धि होकर भोजन पचने में मदद होती है। किन्तु पान का व्यसन होने पर स्वाद ग्रहण की शक्ति कम हो जाती है। मुँह में छाले पड़ जाते हैं। पान के पत्तों का रस प्रति दूषक होता है। यह कार्बोलिक एसिड की अपेक्षा पाँच गुना अधिक शक्तिशाली जंतुघ्न है।

मात्रा-स्वरस आधा तोला से एक तोला।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

◆*◆

'जो विधि पूर्वक बरगद वृक्ष का रोपण करता है वह शिव लोक को जाता है और वहाँ अप्सरायें उसकी सेवा करती हैं।' -वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिप्पली/बड़ी पीपल/बड़ी पीपर Piper longum Linn. PIPERACEAE

224

ENGLISH NAME:- Long Pepper. Hindi - Pipar.
PARTS-USED:-Roots, Dried unripe fruits (Dried Catkin.)
DESCRIPTION:- A slender under shrub, creeping and rooting below, branches rambling, root is erect and thick, leaves are delicate orbicular, heart shaped.
TASTE:-Sweet- Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Root Contains:- Alkaloids (Piper longumine, Piper longuminine) Piperine, Essential oil which Contains n-decanes, alpha- Thujene, Terpenalene; Zingiberene, Sesquiterpenes, Piplastine, Triocontane, Dehydro-stigmasterol, Reducing sugars, Glycosides; Seeds Contain: Sylvatin, Sesamine.
ACTIONS:-Tonic, Alterative, Rejuvenator, Digestive, Carminative, Aromatic, purgative, expectorant, anthelmintic.
USED IN:- Cough, Chronic bronchitis, Cold, Antidote to Snakebite, CNS Stimulant, Anti-inflammatory, Anti-malarial, Antibacterial, Dyspepsia, Throat disorder, Lumbago, Spleeno-megaly, asthema, epilepsy, insomnia, gonorrhoea.

प्रचलित नाम- पीपर/पीपल

प्रयोज्य अंग- मूल, सूखे, कच्चे फल (सूखी मंजरी)।

स्वरूप-एक पतली लता स्वरूपी गुल्म जिसकी शाखाएँ प्रसरी तथा जिनकी नीचली सतह पर से मूल उत्पन्न होते हैं, फल गुच्छ श्यामवर्णी जिनमें छोटे-छोटे फल लगते हैं।

स्वाद-मधुर कटु।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में एल्कलोयड्स (पाइपर लोंगुमाइन, पाईपर लोंगुमिनाइन), पाईपराईन, उत्पत तैल जिसमें-एन-डीकेन्स, अल्फा-थुजेन, टर्पेनोलीन, जिन्जीबरीन, सस्क्युटर्पेनस पीपलास्टीन, ट्रायोकोन्टेन, डीहाइड्रो-स्टीग्मॉस्टीरॉल, प्रह्लासक शार्करा, ग्लायकोसाइड्स, इसके बीज में सिलवेटीन तथा सेसामाइन तत्व पाये जाते हैं।

गुण- पौष्टिक, विपर्यय, रसायन, पाचन, वातहर, सुगंधित।

उपयोग-कास, जीर्ण श्वसनीय शोथ, प्रतिश्याय, सर्पदंश में विषघ्न, केन्द्रीय नाड़ी तंत्र उत्तेजक, शोथहर, विषम ज्वरघ्न, अग्निमंद्यता, कंठदोष, कटिशूल में तथा प्लीहा वृद्धि में लाभकारी। जीर्ण ज्वर में पीपर की सूखी मंजरी को घोटकर सेवन करने से लाभ होता है। प्रसूति ज्वर में गर्भाशय शुद्धि के लिये इसकी सूखी मंजरी (फल) को पीसकर मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। खांसी, दमा, प्लीहा वृद्धि एवं अर्श में प्रथम दिन पीपर का फांट मधु के साथ दिया जाता है, फिर नित्य तीन पीपर बढ़ाई जाती है, इस तरह दसवें दिन ३० पीपर का फांट दिया जाता है। फिर इसी तरह नित्य तीन पीपर घटाई जाती है। अर्श में पिप्पली या पिप्पलीमूल का सेवन एक मास तक नियमित थोड़ा-सा आहार लिये बिना सेवन से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृमि में पिप्पली मूल का चूर्ण बकरी के दूध के साथ पिलाने से कृमि नष्ट होकर बाहर निकल आते हैं। अतिसार में पिप्पली का सूक्ष्म चूर्ण मधु के साथ चटाने से पुराना अतिसार भी नष्ट हो जाता है। श्लेष्म ज्वर में पिप्पली का चूर्ण मधु के साथ चटाने से कफ जन्य ज्वर नष्ट हो जाता है। स्तन वर्धनार्थ-पिपरामूल एवं काली मिर्च दूध के साथ सेवन से स्तन्य की वृद्धि होती है। गृध्रसी में पिप्पली मूल का सूक्ष्म चूर्ण गोमूत्र एवं एरण्ड तेल के साथ पिलाने से जीर्ण से जीर्ण वात, कफ जन्य गृध्रसी नष्ट हो जाती है। अनिद्रा रोग में पिप्पली मूल का चूर्ण गुड़ के साथ मिलाकर खिलाने के बाद भैंस का दूध पिलाना चाहिये, निद्रा आयेगी। शिशुओं को शीघ्र दन्तोद्भव के लिये पिप्पली चूर्ण को मधु में मिलाकर मसूड़ों पर घिसने से दाँत सरलता से निकल आते हैं। श्वास कास में पिप्पली मूल का अष्ट पहर खरल कर इस चूर्ण का सेवन मधु के साथ करने से लाभ होता है। स्तन में दूध आने के लिये गरम किये हुए दूध में दो माशा पिप्पली का चूर्ण मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। विषम ज्वर, हृदय रोग, यक्ष्मा तथा खाँसी में पंचसार (मधु, घी, दूध, पिप्पली तथा सफेद मिश्री) इन सबको इकट्ठा कर भली प्रकार मसल कर सेवन कराना चाहिए। रक्त पित्त में पिप्पली चूर्ण मधु मिलाकर चटाने से लाभ होता है। पाण्डुरोग, अग्निमांद्य, धातुक्षय में मधु एक भाग, घी दो भाग, पिप्पली चार भाग, मिश्री आठ भाग, दूध बत्तीस भाग, चर्तुजात (दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेसर) छः भाग इन सबको मिलाकर भली प्रकार मसल कर पकाकर लड्डू बना लो, प्रतिदिन एक लड्डू का सेवन करना चाहिए।

डॉ. देसाई के मतानुसार पिप्पली वातहर, श्वासहर, दीपन, नियतकालिक ज्वर प्रतिबंधक तथा गर्भाशय संकोचक है। इसका विशेष प्रभाव फेफड़ों तथा गर्भाशय पर होता है। इसके सेवन से शीत प्रधान तथा कफ प्रधान रोगी ठीक होते हैं। महिलाओं को प्रसूति प्रक्रिया में विलम्ब होने पर पिप्पली का चूर्ण खिलाने से प्रसूति प्रक्रिया शीघ्र होती है।

मात्रा-चूर्ण-पिप्पली-१ से २ रत्ती मधु के साथ। पिप्पली मूल-४ से ८ रत्ती।

◆*◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मरिच Piper nigrum Linn. PIPERACEAE

225

ENGLISH NAME:- Black Pepper. Hindi - Kalimirch.

PARTS-USED:-Berries (Fruits) (Collected as soon as becoming red & dry.)

DESCRIPTION:- A week climber or trailing shrub growing on moist soil; leaves are heart shaped with acute apex; fruits in clusters.

TASTE:- Strong Pungent/Acrid-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains-Steroids, Alkaloids, Flavonoids, Tannins, Reducing sugrs, Polysaccharides, Glycosides and Saponins, Volatile Piperin.

ACTIONS:-Stimulant, Carminative, Antacidic, Anti periodic, Stomachic, Digestive Aromatic.

USED IN:- Throat disease, Liver pain, Muscle pain, Piles, Spleen disorder, Leucoderma, Lumbago, Paralysis, Chronic fever, Vertigo, Arthritis, Urinary disorders, Flatulance, Indigestion.

प्रचलित नाम- काली मरिच/काली मिर्च

प्रयोज्य अंग- मृदुफल जब पकने पर आते हैं-नारंग लाल हो जाते हैं, उसी समय तोड़कर सुखा लेते हैं। सूखने पर रंग काला हो जाता है।

स्वरूप-यह अशक्त प्रसरी गुल्म जो नमी वाली जमीन पर अधिक फैलती है। इसके पत्ते सरल गोल हृदयाकार नुकीले जो पान के पत्तों के आकार के होते हैं। फूल गुच्छों में लगते हैं, कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, पकने पर लाल एवं सूखने पर काले हो जाते हैं।

स्वाद-कटु-तिक्त। तीक्ष्ण चरपरा।

रासायनिक संगठन- इसके फल में स्टीरोइड्स, एल्कलोयड्स, फलेवोनोइड्स, टैनिन्स, प्रह्लासक शर्करा, पोली सेकेराइड्स, ग्लायकोसाइड्स तथा सैपोनिन्स, उड़नशील पाइपरीन तत्व पाये जाते हैं।

गुण- उत्तेजक, वातहर, आम्लहर, ज्वर प्रतिबंधक, दीपन, पाचक, सुगंधित।

उपयोग-कंठ रोग, यकृतशूल, स्नायुशूल, अर्श, प्लीहा विकार, श्वित्र रोग, कटिशूल, पक्षाघात, जीर्णज्वर, भ्रम, संधिशोथ, मूत्र विकारों में, आध्मान, कुपचन में लाभकारी। मलेरिया ज्वर में मिरच का चूर्ण क्रनीन के साथ ज्वरघ्न गुण (पाइपरीन) के कारण अधिक लाभकारी। खाँसी इसका चूर्ण मधु एवं घृत के साथ सेवन करने से लाभ होता है। पुराने जुकाम में इसका चूर्ण गुड़ एवं दही के साथ सेवन करने से लाभ होता है। आमवात, गठिया, अङ्गघात, कण्डु में मिरच से सिद्धतेल की मालिश एवं लगाने से लाभ होता है (बाह्य प्रयोग)। दंतशूल में इसके क्वाथ से कुल्ला करने से लाभ होता है। कास में काली मिर्च का चूर्ण, मधु, घृत एवं मिश्री के साथ चटाने से सब प्रकार की खाँसी नष्ट हो जाती है। हिस्टीरिया (मूर्छा) में आहार

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिये बिना (निरन्न कोष्ट) खट्टे दही के साथ वच और काली मिर्च का चूर्ण देना चाहिए, इससे हिस्टीरिया नष्ट होता है। अतिसार में मरिच का सूक्ष्मचूर्ण जल के साथ सेवन से, चाहे कितने लम्बे समय की प्रवाहिका, अतिसार नष्ट हो जाती है। रात्रि अंधता में दही में काली मिर्च पीसकर आँख में अंजन करने से लाभ होता है। प्रतिश्याय (जुकाम) डेढ़ तोला दही, एक तोला गुड़ और एक चौथाई काली मिर्च का चूर्ण इन तीनों को मिलाकर सेवन से जुकाम नष्ट हो जाता है। खाज-खुजली कण्डु में काली मिर्च का चूर्ण गाय के ताजे घी में मिलाकर, इसका लेप खुजली वाले भाग पर करने से लाभ होता है। आँख की बेल अर्म में मरिच का सूक्ष्म चूर्ण भृंगराज के रस में अच्छी तरह घोट कर आँख में बेल पर लगाने से आँख की बेल नष्ट हो जाती है।

लाभ-चूर्ण -१-२ रत्ती।

◆*◆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'आज कुटिया से बाहर निकलकर इधर-उधर भ्रमण करने लगा तो चारों ओर सहचर दिखाई देने लगे। विशाल वृक्ष पिता और पितामह जैसे दीखने लगे। कषाय वल्कलधारी भोजपत्र के पेड़ ऐसे लगते थे मानो गेरुआ कपड़ा पहने कोई तपस्वी-महात्मा खड़े होकर तप कर रहे हों।'

– पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहाड़ी पीपल Piper sylveticum Roxb. PIPERACEAE

226

ENGLISH NAME:- Small Pepper. Hindi - Chhoti Pipar

PARTS-USED:-Roots, Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- A week stemed twiner, manyfeet long; leaves are heart shaped, simple and like leaves of Ficus religiosa, fruits in dried Catkin.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains:Alkamides, Sylvetin, Piperic acid, Flavon, Sesamine, Lignon, Piperine; Roots Contain:- Piper longamine, Whole plant Contains:-Sylvon.

ACTIONS:-Tonic, Digestive, Stomachic, Aphro disiac, Carminative Aromatic, Appitizer.

USED IN:- Hepatomegaly, Spleenomegaly, Asthma, Chronic Cough, Cold, Headache, Piles, Diarroea, Tuberculosis, Wounds in lungs, Indigestion, Dyspepsia, Rheumatism.

प्रचलित नाम- छोटी पीपल

प्रयोज्य अंग- मूल, फल तथा बीज।

स्वरूप-यह एक कमजोर कांड वाली आरोही लता जो फैली हुई रहती है, जो सूखने पर आपस में लिपट जाती है। पत्ते सरल हृदयाकार के किन्तु पीपल के पत्तों से बड़े होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे मंजरियों में जो फल गुच्छों में परिवर्तीत हो जाते हैं।

स्वाद-कटुरस युक्त।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में एल्कामाइड्स, सिल्वेटीन पाइपरीक अम्ल, फलेवॉन सेसामाईन, लिग्रॉन पाइपरीन, इसके मूल में पाइपर लोन्गामाइन, इसके पंचांग में सिल्वॉन पाया जाता है।

गुण- बल्य, पाचन, दीपन, वाजीकरण, वातानुलोमक, सुगंधित, रुचिकर।

उपयोग-यकृत वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, श्वासरोग, जीर्णकास, प्रतिश्याय, शिर:शूल, अर्श, अतिसार, यक्ष्मा, फुफ्फुस व्रण में, कुपचन में, अग्निमंद्यता, आमवात में लाभकारी। श्वास रोग, जीर्णकास तथा स्वरभंग में इसके फल का चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। कटिशूल तथा गृध्रसी में छोटी पीपल के फल तथा सोंठ से सिद्धतेल की मालिश से लाभ होता है।

लाभ-चूर्ण-१-२ रत्ती।

◆*◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रास्ना/सुरसा Pluchea lanceolata Oliver & Hiern. ASTERACEAE (COMPOSITAE)

227

ENGLISH NAME:- Rasna. Hindi - Baisarai

PARTS-USED:-Wholeplant, Leaves & Roots.

DESCRIPTION:- A shrub, stem & branches are terete, viscous hairy, about 30-60 cms. high; leaves sessile, coriaceous, dirty green, lanceolate acute at both ends, apiculate; flowers are small in Capitulum of purple colour at the end of thin brannch lets.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contains:- Quercetin, Isorhamtene, Resin, Oil-Volatile, Calcium oxalate.

ACTIONS:-Laxative, Analgesic, Anti-inflammatory, Antipyretic, Thermogenic.

USED IN:- Arthritis, Swelling in muscles, Pyrexia, Rheumatism, Abdominal pain, Cough, Useful in allaying the pain Caused by the Sting of Scorpion, dyspepsia, bronchitis.

प्रचलित नाम- रायसन/रासना

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र तथा मूल।

स्वरूप-एक ऊँचा गुल्म, कांड तथा शाखाएँ चौपहल चिपचिपी रोमश जिसकी ऊँचाई ३०-६० से.मी., पुष्प छोटे बैंगनी रंग के मुंडक समूह में, यह समूह पतली शाखओं के अन्त भाग पर होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में अल्प मात्रा मे उड़नशील तेल, क्वेरसेटिन, आइसोरहामटिन, राल, कैल्शियम, ऑक्सेलेट पाये जाते हैं।

गुण- मृदुरेचक, शूलहर, शोथहर, ज्वरघ्न।

उपयोग-संधिशोथ, स्नायु सूजन में, जीर्ण ज्वर में, आमवात, उदरशूल, कास, बिच्छुदंश में उत्पन्न होने वाले दर्द को शांत करने में लाभकारी। कास, श्वासरोग, अग्निमांद्य में रास्ना, सौंठ तथा पीपर का कल्क बनाकर गरम पानी में पिलाया जाता है। इसके मूल को दूध में उबालने से उत्पन्न होने वाली वाष्प से अर्श का स्वेदन करना चाहिए। गृध्रसी में इसके चार से पाँच तोला मूल का चूर्ण, पाँच तोला गुग्गुल दोनों को मिलाकर घी के साथ गोलियाँ बनाकर इनका सेवन करने से लाभ होता है।

लाभ-क्वाथ-५० से १०० मि. ली.। पत्रों का रस, क्वाथ एवं चूर्णरूप में प्रयोज्य।

◆*◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चित्रक Plumbago zeylanica Linn. PLUMBAGINACEAE

228

ENGLISH NAME:- White leadwort. Hindi - Chitaur/Cheeta.
PARTS-USED:-Roots, Root bark and Leaves.
DESCRIPTION:- A subscandent, perennial shrub 3-6 feet high, flowers white With glandular hairs on calyxtube.
TASTE:- Acrid-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains: Volatile oil, Chitranone, Alpha and Beta-Amyrin, Lupeol, Taraxasterol, Fructose, Glucose, Invertase, Protease, Chloroplumbagin, Droserone, Elliptinone, Zeylanone, Zeylinone, Meritone, Catechol, Tannin, Amino acid, Plumbagic acid, Roots Contain:-An acrid alkadoid Plumbagin.
ACTIONS:-Antibacterial, Antifungal, Digestive, Stomachic, Diphoretic, Antileprotic, Rejuvenator.
USED IN:- Indigestion, Flatulance, Fever, Leprosy, Anaemia, Piles, Diarrhoea, Dyspepsia, Dermatitis, Cardiac Stimulant, Uterotonic, Appitizer, Hepato protective, Anticancer, Pruritus, Worms infestation.

प्रचलित नाम-चीता।

प्रयोज्य अंग- मूल, मूल की छाल तथा पत्र।

स्वरूप-यह एक बहुवर्षीय झाड़ीदार गुल्म है, जो औसतन ३-६ फूट ऊँचा होता है। काण्ड एवं टहनियों पर लम्बी धारियाँ होती है। पत्ते चिकने कोमल अण्डाकार नुकीले अभिमुखी तथा सरल होते हैं। पुष्प सफेद होते हैं। फल चिपचिपे रोवों से भरे रहते हैं।

स्वाद-कटु-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके में उड़नशील तेल, चित्रानॉन, आल्फा तथा बीटा-एमिरीन, ल्युपीयॉल, टेरेक्सेस्टीरॉल, फ्रुक्टोज, ग्लूकोज, इनवर्टेज, प्रोटिऍज, क्लोरोप्लम्बाजिन, ड्रोसेरॉन, इलीप्टीनॉन, झेलानॉन, झेयलीनॉन, मेरीटॉन, कैटेचॉल, टैनिन, एमिनोअम्ल, प्लम्बाजिक अम्ल। इसके मूल में एक कटु रवेदार क्षारभ प्लम्बाजिन पाया जाता है।

गुण- कीटाणुघ्न, फफूंदी नाशक, पाचन, स्वेदजनन, कुष्ठघ्न, रसायन।

उपयोग-कुपचन, आध्मान, ज्वर, कुष्ठरोग, पाण्डुरोग, अर्श, अतिसार, अग्निमांद्य, चर्मरोग, हृदयोत्तेजक, गर्भाशय बल्य, रुचिकर, यकृत संरक्षक, कैन्सर नाशक, कण्डुरोग, कृमिरोग में लाभकारी। अर्श में इसके मूल का चूर्ण दही के साथ सेवन करने से लाभ। आमवात, संधिशूल, अङ्गघात में इसके मूल से सिद्ध तेल की मालिश करने से लाभकारी। श्वित्र में इसको पीसकर लेप करने से लाभ होता है। अतिसार में इसके मूल का चूर्ण छाछ के साथ सेवन से लाभ होता है। कुष्ठ रोग में चित्रक के मूल का चूर्ण आधा तोला, जल के साथ सेवन से लाभ होता है। श्वित्र रोग में गाय का मूत्र, चित्रक का मूल, त्रिकुटा, घी तथा मधु इन सबको एक घड़े में भरकर रखना चाहिए, दो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सप्ताह पश्चात् इस घड़े में से इस मिश्रण का सेवन थोड़ी-थोड़ी मात्रा में श्वित्र रोग से पीड़ित रोगी को कराने से यह रोग मिट जाता है। मूत्र में रेत कण आते हो, तो इसके मूल का क्वाथ पीने से लाभ होता है।

चित्रक की तीन जातियाँ सफेद, नीला तथा पीला इसमें नीली जाति सबसे उत्तम इसके मूल छाया में सुखाकर चूर्ण बनाकर, इसका सेवन घी एवं मधु के साथ एक मास तक, दूध या जल के साथ करने से दीर्घायु, मेधा, बल तथा जठराग्नि बढ़ती है। यदि गाय के मूत्र के साथ सेवन किया हो, तो कुष्ठरोग नष्ट होता है। श्लीपद रोग में इसके मूल तथा देवदार का लेप करने से लाभ होता है। व्रण में सूजन मिटाने के लिये इसके मूल को घिसकर लगाने से लाभ होता है। श्वित्र रोग में इसकी ताजी जड़ का ही हमेशा औषधि के रूप में प्रयोग करना चाहिए। पुरानी जड़ गुणरहित हो जाती है। चित्रक के मूल को जल में घिस कर लगाने से पहले छाले पड़ेगें, फिर इसके दाग मिट जाते हैं।

लाभ-१/२ माशा।

◆*◆

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रावण द्वारा अपहृत सीता कहती है- 'इस वन में विद्यमान विभिन्न वृक्षों में जो देवता विराजमान हैं, मैं उनको नमस्कार करती हूँ। निवेदन है कि मेरे हरण की सूचना आप मेरे पति को दे दें।' - रामायण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खेर चम्पा Plumeria acutifolia Poir. APOCYANACEAE

229

ENGLISH NAME:- Pagoda tree. Hindi - Kanak Champa

PARTS-USED:-Whole plant, Root, Root bark, Branch, Flowers and Latex.

पुष्प एवं दुग्ध-क्षीर।

DESCRIPTION:- A small deciduous tree like with milky latex; Flowers white-creamish.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Plumericin, Plumeride, Citronellol, Farnesol, Geraniol, Linalool, Quercetin, Rutin, Kaempferol, Quercetrin, Amino acids, Alpha-Amyrin, Lupeol, Beta-sitosterol, Essential oil and Plumeric acid.

ACTIONS:-Purgative.

USED IN:- Root bark in: Gonorrhoea, Veneral sores, it is Purgative. Stem bark: in Diarrhoea (Given with Ghee & Rice); Milky juice rubbed in Rheumatism and is also Purgative; Leaves are Febrifuge. Roots are Power ful Cathartic.

प्रचलित नाम- गोबर चम्पा

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, मूल की छाल, टहनी, **स्वरूप**- यह पौधा एक छोटे कद का दिखने वाले वृक्ष है। पत्ते सरल एकांतर, लम्बे तथा दोनों सिरे नोकदार होते हैं। पुष्प बड़े, सुगंधित एवं सफेद पंखुड़ियाँ भीतर से सुनहरे रंग की होती हैं। इसके अंगों को तोड़ने से सफेद दूध जैसा क्षीर निकलता है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें प्लुमेरीसीन, प्लुमेराइड, सिट्रोनीलॉल, फारनेसोल, जिरानियॉल, लिनालूल, क्वेरसेटिन, रुटिन, किम्फेरॉल, क्वेरसेट्रिन, एमिनो अम्ल, आल्फा-ऐमिरीन, ल्युपियॉल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, उत्पत्त तेल तथा प्लुमेरीक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- अति रेचक।

उपयोग-मूल की छाल अपसर्गिका मेह में, मैथुन संबंधी छालों में लाभकारी यह अतिरेचक है। कांड की छाल-अतिसार में इसका प्रयोग घृत एवं चावल के साथ, दुग्धरस का प्रयोग आमवात ग्रस्त भाग पर मालिश करने से लाभ एवं यह अतिरेचक है। इसके पत्र ज्वरघ्न हैं। इसके मूल शक्तिशाली रेचक है। अतिसार में कांड की छाल, नारियल, घृत एवं चावल के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यह रेचक होता है, योग्य मात्रा में थोड़े दिन तक सेवन करने से श्वित्ररोग मिटता है। मूल की छाल अतिरेचक, यह प्रमेह रोग में उपयोगी है। पुष्पों के पंखुड़ियाँ पान के पत्ते के साथ सेवन करने से ज्वर में लाभ होता है। दुग्ध क्षीर यह रेचक होता है, इसका अल्प मात्रा में सेवन जीर्ण उदर रोग में लाभकारी।

◆*◆

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृत्रिम अशोक Polyalthia longifolia Benth & Hook. ANONACEAE

230

ENGLISH NAME:- Mast-tree. Hindi - Asok (Substitute)

PARTS-USED:-Stem-bark.

DESCRIPTION:- A medium sized deciduous tree, 20-30 feet high; leaves alternate simple, glabrous and Undulate margins; flowers greenish yellow. Fruits globose Etaerio of berries.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Stem bark Contains:- Proanthocyanidin, Beta-sitosterol, Leucocyanidin, Alkaloid Polylongine, Leaves Contains:-Alpha-Beta- Amyrin, Compesterol, Taraxa sterol, Stigma sterol, Hyperoside, Quercetin and Rutin.

ACTIONS:-Anti-bacterial, Stimulant.

USED IN:- Anti cancer, Anti-tumour, Cardiotoinc, Respiratory stimulant, Depresion, Lowering blood Pressure, Antipyretic, useful in flatulance, Piles, Indigestion, Fracture.

प्रचलित नाम- अशोक (मंदार)

प्रयोज्य अंग- कांड की छाल।

स्वरूप-यह एक सीधा ऊँचा सुहावना आकर्षक वृक्ष है, जिसके पत्ते चमकीले, नुकीले, लहरदार तथा चिकने होते हैं। पुष्प गुच्छों में हल्के हरे-पीताभवर्णी होते हैं। फल गोल वृन्तयुक्त तथा समूह में होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके कांड की छाल में प्रोऐन्थोसायनीडीन, बीटा सिटोस्टीरॉल, ल्युकोसायनीडीन, एल्कालॉयड-पॉली लोन्जाईन, इसके पत्रों में आल्फा तथा बीटा एमिरीन, कम्पेस्टेरॉल, टेरेक्सास्टीरॉल, स्टीग्मास्टीरॉल, हायपेरोसाइड, क्वेरसेटिन तथा रूटिन तत्व पाये जाते हैं।

गुण- कीटाणुघ्न, उत्तेजक।

उपयोग-कैन्सर नाशक, गण्डनाशक, हृदयबल्य, श्वसन, उत्तेजक, अवसाद में, रक्तदाब को नीचा रखने में यह औषधि लाभकारी तथा यह औषण ज्वरघ्न तथा आध्मान, अर्श, कुपचयन तथा अस्थिभग्न में लाभकारी। इसकी छाल का प्रयोग अधिकतर लोग असली अशोक की छाल के स्थान पर करते हैं, परन्तु दोनों के गुण में अंतर होने के कारण असली अशोक सराका इण्डीका के कांड की छाल का प्रयोग ही औषधि के रूप में करना लाभकारी है। इसकी छाल का प्रयोग कहीं-कहीं ज्वर में किया जाता है। यह वृक्ष औषधीय न होकर छाया वृक्ष है।

* * *

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करंज Syn : P. globravent.Pongamia pinnata Pierre Linn. FABACEAE (LEGUMINOSAE)

ENGLISH NAME:- Indian beech/ Pongame oil tree. Hindi - Putikaranj
PARTS-USED:-Seeds; Bark, Leaves and Oil.
DESCRIPTION:- A medium sized tree with imparipinnate compound leaves. leaflets ovate, elliptic Pinkish white orliliac Flowers, fragrant. pod woody, one seeded obliquely elliptic
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seed Contains:-Bitter fatty oil (27-36.4%) Pongamol (Hongayoil); and Protein (24.9); Plant Contains: Alkaloids, Tannin, Sugar, Resin and Fatty oil (Karanjin.)
ACTIONS:-Anti-leprotic, Antirheumatism, Anthelmintic, Wound healing, Anticough, Phlagmogogue, stomachic, cholagogue, depurative
USED IN:- Skin disease, impurity of blood, Leprosy, Piles, Leucoderma, Ringworm (Applied externally), Leaves in: Flatulance, Diarrhoea Indigestion; Oil is used in: Wound healing, Anti bacterial, Scabies, Herpes, Ring worm, Rheumatism, Arthritis; Flowers useful in Diabetes.

प्रचलित नाम- कंजा वृक्ष
प्रयोज्य अंग- बीज, छाल, पत्र तथा तेल।
स्वरूप-यह एक मध्यमकद का सदा हरित वृक्ष है, शाखाएँ नीचे तरफ लटकी हुई होती हैं। पत्ते पक्षवत संयुक्त, पत्रवृंत आधार पर फूला हुआ पत्रक चमकीले, चिकने नुकीले, संख्या में ५-७ होते हैं। पुष्प अंशत: गुलाबी तथा श्वेत वर्ण के गुच्छों में होते हैं। फलियाँ चिकनी कठोर एक बीजयुक्त होती हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसके बीज में एक कड़वा वसा तेल (२६-३६.४) पोन्गेमॉल या होंगे तैल, प्रोटीन (२४.९) इस वनस्पति में एल्कलॉयड, टैनिन, शर्करा, राल तथा स्निग्ध तेल (करंजिन) पाये जाते हैं।
गुण- कुष्ठघ्न, आमवातघ्न, कृमिघ्न, व्रणरोपण, कासहर, कफघ्न।
उपयोग-चर्मरोगों में, रक्त शुद्धिकरण, कुष्ठरोग, अर्श, श्वित्र रोग, दद्रु में (बाह्य प्रयोग)। इसके तेल का प्रयोग व्रणरोपण, कीटाणुघ्न, खुजली, परिसर्प, दद्रु में, आमवात संधिवात में लाभकारी। पुष्पों का फांट मधुमेह में, पत्रों का प्रयोग आध्मान, अतिसार तथा कुपचन में लाभकारी। रक्तार्श में इसके मूल को गोमूत्र में पीसकर पिलाते हैं। व्रण शोध में इसके पत्रों को निर्गुण्डी के पत्रों के साथ पीसकर बाँधने से सूजन कम होती है। मधुमेह में इसके पुष्पों का फांट पिलाने से लाभ होता है। कुष्ठ रोग में इसके बीज को पीसकर लेप करने से इसका एक बीज प्रात: एवं सायं नित्य चबाकर खाने से इसके काढ़े से स्नान करने से तथा इसके तेल से मालिश करने से लाभ होता है। विस्फोटक में इसके बीज को जल में घिस कर लेप करने लाभ। शिर:शूल में इसके बीज को घिसकर इसमें गुड़ मिलाकर, गरम कर नासिका में २ से ६ बूंद डालने से लाभ। अर्श

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में इसके मूल की छाल का चूर्ण, जल के साथ तीन दिन तक पीने से तथा केवल छाछ का ही सेवन करने से लाभ। रक्तपित्त में इसके बीज का दो ग्राम चूर्ण मधु में मिलाकर तीन दिन तक नित्य तीन से चार-बार चाटने से लाभ होता है। दंत रोग में (पायोरिया) इसकी टहनी का दातुन करने से एवं इसके तेल को दाँतों पर घिसने से लाभ। वमन में इसके बीज को सेंक कर इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर बार-बार सेवन करते रहने से वमन का नाश होता है। कुकुर खाँसी में इसके बीज जल में घिसकर या कूटकर जल में उबाल कर जल को पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा-मूल स्वरस- ३ माशा।
छाल- १-३ माशा।
पत्र-१/४ से १/२ तोला।
बीज १ माशा (प्रौढ़ व्यक्ति)।
तेल-१० बूंद कैप्स्यूल में।

* * *

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'उत्तरी अमेरिका के कुछ रेड इंडियन घर में पुत्र पैदा होने पर उसके लिए एक वृक्ष लगाते हैं। जिसकी देखभाल वे पुत्रों की भाँति करते हैं। पुत्र के दूर जाने पर उसकी कुशल क्षेम की जानकारी इस पौधे से ही करते हैं। उनका विश्वास है कि पुत्र की प्रसन्नता, दुःख, बीमारी या मृत्यु का संकेत इस वृक्ष से क्रमशः स्वस्थ, अस्वस्थ, रोगी या सूख जाने से मिलता है।' -अज्ञात

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बृहल्लोणिका/बड़ी लोणा/ राजधोलिका Portulaca oleracea Linn. PORTULACACEAE

232

ENGLISH NAME:- Common Purslane. Hindi - Loni/Kulpha
PARTS-USED:-Leaves Stem & whole plant.
DESCRIPTION:- A annual succulent prostrate herb, leaves simple spathulate and glabrous. Flowers are yellow.
TASTE:-Acidic /Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Crude fibres, Carbohydrates. Calcium, Magnessium, Phosphorus, Iron, Sodium, Potassium, Copper, Sulphar and Chlorine.
ACTIONS:-Diuretic, Alterative, Refrigerent, Appitizer, Stomachic, Expectorant, Anti-inflammatory, Blood purifier, Seeds are Anthelmintic & diuretic, stomachic, antiscorbutic alexiteric
USED IN:- Fever, Polydipsia, Headache, Burning Micturation, Piles, Antidote, Kidney inflammatiaon, Asthma, Cough, Leprosy, Diarrhoea, It is also useful in calculii. Seeds & Leaves in Disuria, Blood in uria & Cough, Jaundice, tumors, Cephalolgia

प्रचलित नाम- लोणा शाक/कुल्फा
प्रयोज्य अंग- पत्र कांड तथा पंचांग।
स्वरूप-एक वर्षायु मांसल प्रसरणशील क्षुप, पत्ते सरल, चम्मच आकार के चिकने एवं गोल खंडिताग्र वाले एवं पुष्प पीतवर्णी होते हैं।
स्वाद-आम्ल/कटु।
रासायनिक संगठन- इसमें अपरिष्कृत रेशे, कार्बोदित, कैल्शियम, मैग्रेशियम, फोस्फोरस, लोह, सोडियम, पोटेशियम, तांबा, सल्फर तथा क्लोरिन एवं पोटेशियम ऑक्सेलेट तत्व पाये जाते है।
गुण- मूत्रल, विपर्यय, दाह प्रशामक, रुचिकर, दीपन, कफ नि:सारक, शोथहर, रक्तशोधन, इसके बीज-कृमिघ्न तथा मूत्रल।
उपयोग-ज्वर में, अति पिपासा, शिर:शूल, मूत्रदाह, अर्श तथा विषघ्न वृक्क शोथ, श्वास, कास, प्रमेह, कुष्ठ, अतिसार में इसका प्रयोग लाभकारी। इसके अतिरिक्त-बीज एवं पत्र- अश्मरी, मूत्र कृच्छ्र, रक्तमूत्रता, रक्त छर्दि में भी लाभकारी। वृक्कशोथ तथा बस्ती शोथ में पंचांग का साग तथा बीज का सेवन करने से लाभ। ज्वर तथा रक्तपित्त में पंचांग का स्वरस लाभकारी। अर्श में पंचांग का शाक लाभकारी। ताजे पंचांग को पीसकर लगाने से मोच चोट, सूजन तथा हाथ पैर में जलन तथा दाहशोथ कम होता है। (रोगग्रस्त भाग पर बाँधने से) इसके सेवन से वाणी दोष दूर होता है। विसर्प में इसके पंचांग का स्वरस-लेप करने से लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र में इसके पंचांग का क्वाथ-मूत्रल गुण वाला होने से मूत्र कृच्छ्र में लाभकारी। इसके क्वाथ की मात्रा प्रतिदिन ५-७ तोला देनी चाहिए। इसके पंचांग का प्रयोग वृक्क, मूत्राशय तथा फेफड़ों के रोगों में बहुत ही लाभकारी। इसके छोटे-छोटे पौधों को इकट्ठा कर इसमें से १०० ग्राम पत्र लेकर ४०० मि. ली. जल में उबालना चाहिए, १५० मि. ली. जल बाकी रहे, तब तक उबालते रहना चाहिए, नीचे उतार कर ठंडाकर सफेद प्याज का रस मिला कर पीने से शिर:शूल के कारण सिर भारी लगता हो या पित्त के कारण शरीर पर लाल छाले पड़ गये हों, तो ठीक हो जाता है।
मात्रा- ताजे पंचांग का स्वरस- ५ मि. ली.।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षुद्र द्योलिका/लघुलोणा Portulaca quadrifida Linn Syn. P. geniculata Royl. PORTULACACEAE

233

ENGLISH NAME:- Small Purslane. Hindi - Chhoti Lonia

PARTS-USED:-Leaves and Stem.

DESCRIPTION:- An annual small herb, succulent branches spreading and prostrating, rooting at nodes; leaves simple, opposite Ovate sub-sessile. Flowers yellow.

TASTE:-Acidic-Saltish.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Starch, Saponin, Tannin, Lignin, Mucilage.

ACTIONS:-Diuretic, Lithotriptic, Vermifuge, Carminative, Stomachic.

USED IN:- Cures disuria, Cough, Headaehe, Burning micturation, Piles, Chronic fever, Anti-inflammatory, Opthalmia, Skin disease, Wound healing.

प्रचलित नाम-छोटी लोणा

प्रयोज्य अंग- पत्र तथा कांड

स्वरूप- एक वर्षायु लघु मांसल क्षुप, शाखाएँ फैली हुई प्रसरणशील पतली संधि से मूल निकले होते हैं। पत्ते अंडाकार, अभिमुखी तथा अल्पवृत युक्त होते हैं। पुष्प पीतवर्णी है।

स्वाद-आम्ल तथा लवणीय।

रासायनिक संगठन- इसमें स्टार्च, सैपोनिन, टैनिन, लिग्रीन, श्लेष्मल तत्व पाये जाते हैं।

गुण- मूत्रल, अश्मरी भेदक, कृमिघ्न, वातानुलोमक, दीपन।

उपयोग-मूत्रकृच्छ्र में लाभकारी, कास, शिर:शूल, मूत्रदाह, अर्श, जीर्ण ज्वर, शोथहर, नेत्रशोथ, चर्मरोग, व्रणरोपण में लाभकारी। मूत्रदाह में ताजे पत्रों का स्वरस दिन में दो बार प्रात: एवं सायं। विसर्प में ताजे पत्रों का लेप लगाने से लाभ। मूत्रकृच्छ्र में इसके ताजे पत्रों का फांट इसमें लाभकारी। कृमिरोग में इसके बीज के सेवन से लाभ होता है। लघुलुणी के गुण एवं उपयोग बृहल्लोणी के समान ही होते हैं।

* * *

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शमी Prosopis spicigeraL. Syn. P. cineraria. MIMOSAE.(LEGUMINOSAE)

234

ENGLISH NAME:- Sponge Tree. Hindi - Shami, Chhokar

PARTS-USED:-Bark, Flower and Pods (Fruit).

DESCRIPTION:- An armed, small, tree. Leaves bipinnate compound, leaflets 7-12 pairs, pinnae 3 pairs, opposite, often with round insect-galls on therachis. Flowers in axillary spikes yellow. Pods turgid straight, 10-15 Seeded.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Bitter, Cooling, Laxative, Fruits- Bitter Pungent, Billious, Nervine Tonic.

USED IN:- Diarrhoea; Hemorrhagic disease, Lucoderma, Piles, Asthma, Cough, Vertigo, Worms infestation, Fatigue, useful as hair remover, Mental disorder.

प्रचलित नाम- छोंकर/सफेद कीकर

प्रयोज्य अंग- छाल, पुष्प एवं फली (फल)।

स्वरूप-एक छोटा शाखीत वृक्ष, पत्र द्विपक्षवत संयुक्त, पत्रिका ७-१२ जोड़ी, प्रत्येक पत्रवृन्त पर तीन जोड़ी पत्रक जो अभिमुख, पर्णवृंत पर गोल कीट ग्रह होते हैं। पुष्प मंजरी में पीतवर्णी फलिका फुली हुई सीधी एवं १०-१५ बीज वाली होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-

गुण-तिक्त, शीतल, मृदुरेचक, फल-तीक्ष्ण, पित्तकर, मेध्य, केशनाशक।

उपयोग-रक्त पित्त, अतिसार, श्वित्र, अर्श, श्वासरोग, खाँसी, भ्रम, कृमिरोग तथा श्रम का नाश करता है। यह केशों को नष्ट करता है। मस्तिष्क की विकृतियों तथा मज्जा कम्पन में इसकी छाल का प्रयोग लाभकारी। खुजली में इसके पत्रों को गाय के दही में पीसकर लेप करना चाहिये। नाखून एवं दंत विष में शमी की एवं नीम की छाल तथा वट वृक्ष की छाल को पीसकर लेप करने से लाभ होता है। (नाखून या दंत से उत्पन्न घावों पर)। प्रमेह तथा गर्भवती के प्रदर में इसकी कोमल (एक तोला) कोपलें में तीन माशा जीरा मिलाकर महीन पीस लें गाय का ताजा दूध २०० मि.ली. मिला इसको कपड़े से छान लें। उपरांत इसमें सफेद गुड़हल के फूल (आधा तोला) घिसकर, दो तोला मिश्री का चूर्ण मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल एक बार इस प्रकार सात दिन तक या चौदह दिन तक सेवन करने से लाभ होता है। धातु स्थान की गरमी में शमी एवं देव बबूल की कोमल कोपलें (सम भाग) एकत्र कर इसमें थोड़ा जीरा मिलाकर महीन पीस लें, इसमें गाय का ताजा दूध (२०० मि.ली.) तथा मिश्री दो तोला मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र में शमी की कोपलें गाय के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूध में पीसकर इसमें जीरा मिला कर तथा शर्करा मिलाकर पिलाने से मूत्र अधिक मात्रा में आता है। मूत्र में धातु का आना शमी की कोमल कोपलें के सवरस को गाय के दूध में उबालकर इसमें जीरा तथा मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

गरमी हुई हो तो शमी की फलियों या पत्रों के रस में जीरा एवं शर्करा मिला कर १४ दिन तक पिलाने से लाभ होता है। नेत्र रोगों में शमी के पत्रों का धुँआ लाभकारी है। बाल हटाने में शरीर पर अवांच्छित बालों को हटाने के लिये इसके फलों को रगड़ते हैं। अस्थि संधान के लिये हड्डी टूटने पर शूल स्थान पर इसकी छाल की राख लगाने से लाभ होता है।

कुपचन में शमी के ताजे पत्रों को पीसकर नीबू एवं नमक मिलाकर उपयोग करने से लाभ होता है।

नेत्ररोग में शमी के पत्रों के स्वरस में थोड़ा सा नमक मिलाकर एक-दो बूँदें नेत्रों में डालने से लाभ होता है। कर्णरोग में इसकी ताजी फलियों के स्वरस को कान में डालने से लाभ होता है।

* * *

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

देवरहा बाबा से एक बार पूछा गया-'आपका सबसे प्रिय शिष्य कौन है?' उन्होंने बताया कि उनके सबसे प्रिय शिष्य ऋषिकेश के हैं, जो वहाँ कई सौ वर्षों से वृक्ष रूप से हैं, अभी भी जब मैं वहाँ जाता हूँ तो वह साक्षात् मुझे दण्डवत् करता है। इसी प्रकार जब उनसे पूछा-'आपसे सबसे अधिक कौन डरता है?' तो उन्होंने कहा-'वह सामने का बबूल सबसे अधिक डरता है। एक दिन इसका काँटा मेरे शिष्य को गड़ गया मैंने पूछा, तो डरकर काँपने लगा पत्तियाँ व शाखाएँ लटक गई, मैंने माफ कर दिया और कहा जाओ भविष्य में ऐसा मत करना।' - वनस्पति अध्यात्म

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाताद/वाताम Prunus amygdalus Batsch. ROSACEAE.

235

ENGLISH NAME:- Almond. Hindi - Badam
PARTS-USED:-Seeds.
DESCRIPTION:- A medium sized tree; Leaves in clusters at. the end of branches, linear and undulate. Flowers white with red spots. Seeds flat and ovate.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Sweet Almond Contains Oil. Bitter Almond Contains a poisonous element-Hydrocynic acid, it is found in Volatile oil of Almond.
ACTIONS:-Almond Sweet, Oily, Tonic, Corminative, Nervine Tonic, Stimulant, Kapha-Pittakar; Unripen fruits are Oily, Carminative, Anti billious. Ripen Fruits are-Oily, Carminative, Spermopoietic, Kapha-karak, Anti-Scorbutic. Seed-sweet, oily, Nutritive, Carminative, Anti billious.
USED IN:- Respiratory trouble, Diabetes, Urinogenital System, Leucorrhoea, Lumbago.

प्रचलित नाम- बादाम

प्रयोज्य अंग- बीज।

स्वरूप-मध्यम कद का वृक्ष, इसकी शाखओं के अंत भाग में पत्ते गुच्छों में, पत्ते बारीक एवं कंगूरेदार, पुष्प सफेद, जिनकी पंखुडियों पर लाल रंग के धब्बे होते हैं। बीज चिपटे तथा अण्डाकार।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन- बादाम के मधुर जाति में एक स्थिर तेल पाया जाता है, जबकि इसकी तिक्त जाति में एक अत्यन्त ही विषैला तत्त्व हाइड्रोसायेनिक अम्ल पाया जाता है, जो उड़नशील तेल में होता है।

गुण-बादाम मधुर, सारक, स्निग्ध, बल्य, वातहर, मेध्या, उत्तेजक, कफ-पित्तकर, उष्णवीर्य, कच्चे फल-उष्ण, स्निग्ध, वातनाशक, पित्त विकार नाशक, पके हुए फल उष्ण, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्धक, कफ कारक, रक्त पित्त नाशक। बादाम गिरी-मधुर, वृष्य, स्निग्ध, उष्ण, पौष्टिक, कफ कारक, वात-पित्त नाशक।

उपयोग-इसका प्रयोग श्वसन मधुमेह, मूत्र जननेन्द्रिय संस्थान, श्वेत प्रदर, कटिशूल रोगों में भी लाभकारी है। बादाम का तेल निकालना (यंत्र सिवाय) बादाम गिरी को गर्म जल में थोड़े समय तक रखने पर छिलके उतर जायेंगे, इन छिलकों रहित गिरियों को कूट लें, कूटते समय इसमें थोड़ी मिश्री मिला दें, महीन हो जाने पर इसका गोला बनाकर हाथ से अच्छी तरह दबाकर तेल निचोड़ लें। इस प्रकार थोड़ी बादाम गिरीयों (२००ग्राम) का भी तेल निकाला जा सकता है। इस तेल का प्रयोग कर्ण रोग में एक से दो बूँदे कान में डालने से कर्णरोग ठीक हो जाता है। इस तेल की मालिश मस्तिष्क पर करने से दिमाग ठंडा एवं हल्का हो जाता है। कान खूजरा दंश में इस तेल को दंश स्थल पर लगाने से लाभ होता है। वीर्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं बलवृद्धि के लिए बादाम गिरियों को गरम जल में भिगोकर छिलके निकाल लें इसको महीन पीसकर दूध में उबाल कर खीर बना लें, खीर तैयार होने वाली हो तब उसमें घी तथा मिश्री मिला दें। ठंडी कर इसका सेवन करें लाभ होगा। दांत मजबूती के लिये बादाम के छिलकों को जला कर राख बना लें, इसमें नमक मिलाकर दाँत पर घिसने से दांत मजबूत होते हैं।

मस्तक शूल एवं शिरोरोगों में बादाम एवं केसर को गाय के घी में खरल कर इसका नस्य लेना चाहिये। अथवा बादाम की दूध में बनायी हुई खीर का सेवन तीन दिन तक प्रातः करनी चाहिये या बादाम एवं कपूर को दूध में घिसकर इसका लेप मस्तिष्क पर करने से लाभ होता है।

दिमाग की ताजगी एवं धातु वृद्धि के लिए गाय का जाता घी डेढ़ तोला लेकर इसमें मिश्री, बादाम गिरि, इलायची दाना, मधु एवं कंकोल मिलाकर प्रतिदिन सायं समय सात दिन तक सेवन करने से लाभ होता है। मस्तिष्क की ताजगी के लिए बादाम गिरियों को अंगारों पर सेंक कर इनको मिश्री के साथ चबाकर खाने के पश्चात् (एक घंटे) मक्खन में मिश्री मिलाकर सेवन करें तथा सिर में बादाम के तेल की मालिश प्रतिदिन तीन बार करने से लाभ होगा।

मात्रा- पेया दो से चार तोला।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

* * *

'शोक को दूर करने वाले हे अशोक! मुझे सीता का पता बता कर शोकरहित कर अपने नाम 'अशोक' की सार्थकता को सिद्ध करो।'

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आरूक Prunus persica Batsch. ROSACEAE

236

ENGLISH NAME:- Peach. Hindi - Aaru

PARTS-USED:-Root, Fruit, Flowers and Seeds.

DESCRIPTION:- A small, shruby, spinous, unarmed tree, with pink flowers.

TASTE:-Sweet-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Beta Carotene. Cryptoxanthin, Lutein, Violaxanthin, Neoxanthin, Persicaxanthin, Terpenoids, Alkaloids, Persica chrome, Apocarotenal, Flavonol, Kaempferol, Rutoside, Thiamine, Sugars, Protein, Carbohy drates, Lauric acid, Myristic acid, Palmitic acid, Stearic acid, Oleic acid, Arachidic acid.

ACTIONS:-Refrigerent, Laxative, Astringent, Diuretic (Flowers.)

USED IN:- Spleenomegaly, Piles, Leucorrhoea, Menorrhagia, Gonorrhoea, Polyuria; Flatulance, Complete ripen Fruits are Sweet & Cool & are blood purifiers.

प्रचलित नाम- आडू

प्रयोज्य अंग- मूल, फल, पुष्प तथा बीज।

स्वरूप- एक लघु, कंटकमय, अल्प शाखीत झाड़ीनुमा वृक्ष, पुष्प गुलाबीरंग के होते हैं।

स्वाद-मधुर-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें बीटा कैरोटिन, क्रिप्टोझैन्थिन, ल्युटिन, वायॉलाझैन्थिन, नियोझैन्थीन, परसिका झैन्थिन, टर्पेनॉइड्स, एल्कॅलोयड्स परसिकाक्रॉम, ऐपोकैरोटिनॉल, फ्लैवॉनॉल, किम्फरॉल, रूटोसाइड, थायमाइन, शर्करा, प्रोटीन, कार्बोदित, लॉरिक अम्ल, मिरस्टीक अम्ल, पामिटीक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ऑलिक अम्ल, एरेकीडिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- दाह प्रशामक, मृदुरेचक, ग्राही, मूत्रल (इसके पुष्प)।

उपयोग-प्लीहा वृद्धि, अर्श, श्वेत प्रदर, कष्टार्त्तव, सुजाक, गुल्म तथा प्रमेह में लाभकारी। पूर्ण पक्व फल मधुर एवं शीत होने के कारण रक्त प्रसादन कर एवं बृंहण होते हैं। विरेचन तथा मूत्रल के लिये इसके पुष्पों का सेवन करने से लाभ। इसके बीजों का तेल बालों में लगाने से लाभ होता है। इसका फल उष्ण, बृहंण तथा शीघ्र पचने वाला होता है।

* * *

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाकुची Psoralea corylifolia Linn. FABACEAE (LEGUMINOSAE.)

237

ENGLISH NAME:- Malaya tea. Hindi - Bakuchi/Babchi

PARTS-USED:-Seeds.

DESCRIPTION:- A tall herb with grooved stem; Leaves simple, serrate, both surfaces posses black dots. Flowers violet blue. pods one seeded, black pitted

TASTE:-Bitter. Acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seed Contains:- Oil, Which Contains, Bakuchi Phenol and this contains Psoralane and Psoradin active Compound; Resin, Volatile oil.

ACTIONS:-Tonic, Appitizer, Expectorant, Anti bacterial, Stimulant, Anthelmintic, Wound healing, Laxative, Diuretic, stomachic, aphrodisiac, diphoretic

USED IN:- Leucoderma, Leprosy, Abcess, Boils, Carbuncle, Asthma, Fever, Disuria, Dysentery (Leaves), ulcers, scabies, psoriasis

प्रचलित नाम- बाकुची, बावची

प्रयोज्य अंग- बीज।

स्वरूप- एक से चार फीट ऊँचा क्षुप जिसका कांड खांचयुक्त, पत्र सरल, दंतुर, इसकी दोनों सतहों पर काले धब्बों की उपस्थिति इसकी विशेषता है। पुष्प जामुनी नीले रंग के होते हैं। फल गोल छोटे काले चिकने एवं एक बीज युक्त होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में तेल जिसमें बाकुची फेनॉल होता है, इसमें सारेलेन तथा सोराडीन सक्रिय यौगिक पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें उड़नशील तेल तथा राल होते हैं।

गुण- बल्य, रुचिकर, कफनि:सारक, कीटाणुघ्न, उत्तेजक, कृमिघ्न, व्रणरोपण, मृदुरेचक, मूत्रल।

उपयोग-श्वित्र, कुष्ठरोग, गण्ड (विद्रधि) फोड़े-फुन्सी, बहुमुखी, फोड़ों पर, श्वास रोग, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र में लाभकारी। श्वित्र में इसके बीज का चूर्ण खैर तथा आँवले के क्वाथ के साथ सेवन करने से लाभ होता है। कुष्ठ रोग में बाकुची एवं काले तिल समभाग का सेवन एक वर्ष तक किया जाये, तो रोग ठीक होकर शरीर की कान्ति बढ़ती है। इसके (बाकुची) बीज जल में पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है। खुजली-सूजन पर बीज का चूर्ण तेल में मिलाकर लगाने से लाभ होता है। प्रवाहिका या आमातिसार में इसके पत्तों का शाक दही तथा जम्बीर रस में पका कर तेल या घी के साथ रोगी को खिलाने से लाभकारी है। श्वित्र में बाकुची के बीज का चूर्ण १६ तोला और हरताल का चूर्ण चार तोला गोमूत्र में खूब खरल कर लेना चाहिये, फिर श्वित्र पर लेप करने से श्वित्र मिटकर त्वचा का रंग बदल जाता है। दंतकृमि एवं वेदना में इसके मूल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा बिजौरा समभाग में लेकर सूक्ष्म कल्क बना कर जल से वर्ति बना लें। दाँतों में इस वर्ति को दबाकर रखें, इससे इन रोगों में लाभ होता है। बधिरता में मुसली तथा बाकुची का चूर्ण प्रति दिन सेवन से वधिरता नष्ट होती है। कुष्ठ में यदि रोगी प्रतिदिन आतप में रहकर केवल दुग्धाहार करके उष्ण जल से बाकुची का सेवन करे तो तीन सप्ताह में रोग मुक्त हो जायेगा।

व्रण में बहते हुए रक्त को रोकने के लिये बाकुची के बीजों को पीस कर कल्क बना कर इस पर बांधने से लाभ होता है। दद्रु पर एक तोला बाकुची तथा आधा तोला काले तिल प्रतिदिन सेवन करने से पैर में होने वाली दाद चाहे कितनी ही पुरानी क्यों न हो नष्ट हो जाती है। श्वित्र में मिट्टी के एक पात्र में बाकुची का चूर्ण लेप कर उसमें दूध भरकर दही जमाना चाहिए, उस दही में से घी निकाल, वह मधु के साथ कुछ समय तक सेवन करने से श्वित्र रोग नष्ट हो जाता है। बाकुची के बीज विष में उपयोगी होते हैं।

कृमिरोग में इसका चूर्ण डेढ ड्राम (दोनों समय) सेवन करने से कृमियों का नाश होता है। तथा तमाम कृमि बाहर निकल आते हैं। इसमें चूर्ण देने के पश्चात् मृदुरेचक औषधि देनी चाहिए।

गोल कृमियों के लिये बाकुची का १०-३० ग्रेन चूर्ण देने से कृमि मर कर बाहर निकल आते हैं। बाकुची का चूर्ण २०-२५ ग्रेन की मात्रा में बल्य, पाचक तथा मूत्रल के रूप में प्रभावी है।

मात्रा-बीज का चूर्ण-१-३ ग्राम।

* * *

'अशोक वाटिका में ही सीता जी को रावण ने रखा था, जहाँ हनुमान् जी ने पहुँचकर उनके दर्शन किये थे।' तुलसीदास जी ने कहा है-रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुबीज/पेरुकम् Psidium guajava Linn. MYRTACEAE

238

ENGLISH NAME:- Guava Tree. Hindi - Jamphal/Bihi/Amrood
PARTS-USED:-Leaves, Bark and Fruits.
DESCRIPTION:- A small tree or large shrub with white bark, thinpeeling off. Leaves oppisite acute. Flowers white solitary axillary. Fruite fleshymany seeded.
TASTE:-Sweet-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- All Parts Contains:-Leucocyanidin, Quercetin, Beta-sitosterol, Flowers & Leaves: Ellagic acid, Beta-caryophyllene, Guaijaverin, Limonene, Pinene, Niacin, Vitamin-C&B_6; Cadinene, Beta-Cophaene, Curcumene, Farnesene, Citric, Cinnamic, Malic, Oxalic, Quinic, Succinic, Tartaric acids, Riboflavin, Thiamine, Carotene, Tannins, Sucrose, Glucose, Fructose, Rhamnose, Starch & Amino acids.
ACTIONS:-Aphrodisiac, Cooling, Laxative, Tonic, Astringent, Expectorant.
USED IN:- Thirst, Fever, Burning sensation, Cardiotonic, Vertigo, Diarrhoea, Appitizer, Highly spermo poetic, Colic, Bleeding gums, Leaves: in Bowels complaints, Anti-emetic, Anthelmintic.

प्रचलित नाम- अमरूद/जाम

प्रयोज्य अंग- पत्र, छाल तथा फल।

स्वरूप-एक लघु वृक्ष या बृहद् गुल्म, छाल सफेद जिस पर से पतला स्तर उतरता रहता है, पत्र सरल एकाकी पत्रकोण में एकाकी सफेद पुष्प। फल मांसल अनेक बीज वाला होता है।

स्वाद-मधुर-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके सर्वांग भागों में ल्युकोसायनीडीन, क्वेरसेटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, पुष्प व पत्रों में इलैजिक अम्ल, बीटा-कैरियॉफायलीन, गुवाजेवरीन, लिमोनीन, पिनीन, निऑसिन, विटामिन-सी तथा बी६, कैडीनीन, बीटा-कॉफिन, करक्युमिन, फारनेसिन, सिट्रीक, सिनामिक, मेलिक, ऑक्सेलिक, क्वीनीक, सक्सीनिक, टारटेरीक अम्ल, रीबोफलेवीन, थायमिन, केरोटिन, टैनिन्स, सुक्रोज, ग्लुकोज, फ्रुक्टोज, रहामनोज स्टार्च तथा ऐमिना अम्ल।

गुण- कामदीपन, शीतल, मृदुरेचक, बल्य, ग्राही, कफ निःसारक।

उपयोग-तृषा, ज्वर, संताप, भ्रम, अतिसार, हृदयबल्य, शूल, खूनी मसूड़ों, रुचिकर अतिशुक्रवर्धक, पत्र आंत रोगों में, छर्दिहर, कृमिघ्न। उदरशूल तथा कुपचन में इसके कोमल पत्रों को पीसकर इसका रस पिलाने से लाभ। अगर भांग का नशा चढ़ा हो, तो इसके फल खाने से या पत्रों का स्वरस पीने से नशा उतर जाता है। पत्रों का क्वाथ मुखव्रण, खूनी मसूड़ों में तथा अतिसार में लाभकारी। विषूचिका (कोलेरा) में लाल अमरूद के वृक्ष की त्वचा तथा पत्र का सेवन करने से इसमें तथा वमन और अतिसार में लाभ होता है। श्वेत अमरूद के वृक्ष की त्वचा ग्राही होने के कारण अन्य ग्राही औषधियों के साथ इसका जीर्णातिसार नाशक क्वाथ में उपयोग होता है। अतिसार तथा वमन में इसके पत्र पाचक एवं स्तम्भक होने के कारण इन रोगों में अति लाभकारी। अमरूद में विटामिन सी अधिक मात्रा में पाया जाता है। अपक्व फल पचते नहीं, इसी कारण इसके सेवन से पित्त की छर्दि होकर ज्वर आता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बीजक/असन Pterocarpus marsupium, Roxb. FABACEAE (PAPILIONACEAE)

239

ENGLISH NAME:- Indian kino Tree. Hindi - Beeja

PARTS-USED:-Bark, Wood and Gum.

DESCRIPTION:- Large deciduous tree, about 30 meter high, flowers yellow bark rusty pale brown, leaflets 4-6 broadly ovate or articulati pod with orbiculate wing

TASTE:-Bitter-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Contains: Protein, Pentosan, Mucilage, Pterosupin, Pseudobaptigenin, Liquiritigenin, Garbanzol, Beta-Cudesmol, Pterostilbene, Marsupol, Carpusin, Propterol, Marrsupinol, Marsupin, Oleanolic acid; Kinogum which contains Tannins and Kinotanic acid.

ACTIONS:-Astringent, Cooling, Rejuvenator, Anti polyuria.

USED IN:- Diabetes, Arthritis, Rheumatism, Diarrhoea, Dysentery, Worms, Fracture; Leaves Paste: Applied Externally to Absces Sores and other Skindiseases; Cold aquous extract is good for diabetes.

प्रचलित नाम- विजैसार/विजयसार

प्रयोज्य अंग- छाल, काण्ड तथा गोंद।

स्वरूप- यह एक पतनशील विशालवृक्ष जिसकी ऊँचाई औसतन ३० मीटर होती है। पुष्प पीतवर्णी या सफेद मंजरियों में होते हैं। फलियाँ गोल तथा चिपटी होती हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें प्रोटीन, पेन्टोसेन, श्लेष्म, टेरोसुपिन, स्युडोवेप्टीजेनिन, लिक्विरीटीजेनिन, गारबेन्जोल, बीटा-क्युडीस्मोल, टेरोस्टीलबेन, मारसुपोल, कार्प्युसिन, प्रोप्टेरॉल, मारसुपिनॉल, मारसुपिन, ऑलियानोलीक अम्ल, कीनोगोंद जिसमें टैनिन्स तथा कीनोटैनिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, शीतल, रसायन, प्रमेहघ्न ।

उपयोग-मधुमेह, संधिशोथ, आमवात में, अतिसार, प्रवाहिका, कृमिरोग तथा अस्थिभग्न में, पत्रों के कल्क का बाह्य प्रयोग फोड़ों, छालों पर तथा अन्य त्वक् रोगों पर शीतल जलीय सत मधुमेह में लाभकारी। विजैसार के गोंद का सेवन का अतिसार तथा प्रवाहिका में लाभकारी। प्रमेह में इसके कांड का सार क्वाथ रूप में सेवन से लाभ।

शोथ एवं त्वचा रोगों में पत्रों का लेप करने से लाभ। रक्त पित्त में इसका सार मधु के साथ चाटने से रक्त पित्त शांत होता है। रसायन के रूप में इसके सार के चूर्ण को रात जल में भिगो कर रख देना चाहिए, प्रातः इसको छानकर इसमें नागबला मूल का स्वरस मिलाकर सेवन करने से यह रसायन है। कुष्ठ रोग में इसका सार या मूल का क्वाथ प्रयोग करने से कुष्ठ रोग का नाश होता है। नेत्र सुरक्षा के लिये इसके क्वाथ में समभाग तिल का तेल बहेड़ा का तेल तथा भृंगराज का स्वरस इन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबका मिश्रण लौह पात्र में स्नेह सिद्ध कर के नस्य लेना चाहिये इससे नेत्रों का प्रकाश बढ़ता है।

उपदंश में खदिर एवं विजय सार का क्वाथ त्रिफला या गुग्गुल के साथ पिलाने से सभी प्रकार के उपदंश मिटते हैं। मोटापा कम करने के लिये इसके काष्ठक क्वाथ में मधु मिलाकर प्रतिदिन प्रातःकाल पिलाने से मोटापा कम होकर शरीर पतला होता है। श्लीपद में इसके सार का चूर्ण गोमूत्र एवं मधु के साथ सेवन से श्लीपद नष्ट होता है।

मात्रा-गोंद-२ से ८ रत्ती।

चूर्ण-३ से ६ माशा।

क्वाथ-५ से १० तोला।

* * *

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बहेड़ा एक अति महत्त्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषधि है, जो त्रिफला का आवश्यक संघटक भी है; किन्तु इस पर ''कलि'' (कलियुग के देवता) का वास माना गया है। इसे संस्कृत में कलिद्रुम, भूतवास और कलियुगालय नाम से भी जानते हैं। इस वृक्ष के नीचे वेदाध्ययन करना निषिद्ध है। पद्मपुराण के अनुसार तो इसका रोपण करने वाला प्रेतत्व को प्राप्त होता है। त्रिफला के अन्य दो घटक आँवला और हरड़ पवित्र माने जाते हैं, जिनका सम्बन्ध क्रमशः विष्णु भगवान् व इन्द्र के अमृतपान के समय गिरी अमृत बूँदों से है। अधिकता से सेवन करने पर बहेड़ा आँतों के लिये हानिकारक है, तो हरड़ और आँवला भी तो यकृत और प्लीहा के लिये हानिकारक है। महाभारत की कथा में राजा परीक्षित के समय में कलियुग बहेड़े वृक्ष में प्रवेश कर गया, तभी से कलियुग का वास बहेड़े में माना जाने लगा। वास्तव में हर वृक्ष का अपना आभा मण्डल होता है, जिसके समीप जाने पर उस वृक्ष का सूक्ष्म संस्कार प्रवाहित होता है। संवेदनशील मनुष्य या ऋषि यह जान लेते हैं कि किस वृक्ष में कैसी प्रेरणा आती है या उनके संस्कार कैसे हैं? लोगों का कहना है कि बहेड़े वृक्ष के नीचे बैठने से मनुष्य में पाप और अपराध करने के भाव जाग्रत् होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विदारी कंद Pueraria tuberosa DC. FABACEAE (LEGUMINOSAE).

ENGLISH NAME:- Saral. Hindi - Patal Kumhra/Kshir-Vidari

240

PARTS-USED:-Roots tubers and their Extract.

DESCRIPTION:- A large climber with large tuberous roots; leaves trifoliate leaflets large, broadly ovate or almost orbicular, Flowers in Spikes blue or bluish red; pod linear flattish 5-8 cm.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-

ACTIONS:-Demulcent Refrigerent, Anti-inflammatory, Tonic, Spermopoeitic, Diuretic, Rejuvenator.

USED IN:- Root tubers are useful: Galactogogue and Spermopoeitic, makes voice clear & sweet, increase life Span & provide energy and charmness and also anti-inflammatory, Oestrogenic & Progest rogenic.

प्रचलित नाम- इक्षुगदा, विलाइकंद

प्रयोज्य अंग- मूल कंद तथा इन का सत।

स्वरूप-यह एक फैलने वाली बृहद् लता, इसका कांड पोला होता हैं। पत्ते पक्षवृत, त्रिपत्रक, पार्श्व पत्रक तिरछे जबकि अग्र पत्रिका तिर्यगायताकार, अधरतल सघन शिराओं से युक्त होता है। पुष्प नीलेरक्त वर्णी जो मंजरियों में होते हैं। फलियाँ लम्बी एवं चिपटी होती है।

स्वाद-मधुररस।

रासायनिक संगठन-

गुण- प्रशामक, दाहशामक, शोथहर, बल्य, शुक्रवर्धक, मूत्रल, रसायन, दुग्धवर्द्धक।

उपयोग-इसका कंद दुग्ध वर्धक, शुक्रवर्धक, स्वर को उत्तम बनाने वाला, जीवनी शक्ति बढ़ाने वाले, बल तथा कांति बढ़ाने वाला, वायु तथा दाह को नष्ट करने वाला होता है। यह स्त्रीमद तथा पुरुषमद उत्तेजक है। शोथ पर कंद को पीसकर इसका कल्क शोथयुक्त भाग पर बांधने से लाभ होता है। बल तथा दुग्ध वृद्धि के लिये इसके मूल कंद के सेवन से लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र में इसके कंद से पकाया हुआ अथवा इसके कंद से सिद्ध किया हुआ घृत सेवन से लाभ होता है। वाजीकरण के रूप में विदारी कंद के चूर्ण में विदारी कंद में से बहुलता से निकलने वाले रस से २१ भावनाएँ देनी चाहिए। इस चूर्ण को मधु और घृत से चाटने पर मनुष्य में शक्ति आती है। विषम ज्वर में विदारी का एवं इक्षु का स्वरस मधु, दुग्ध घृत के साथ पिलाना हितकारी है। पित्तशूल में विदारी के स्वरस में सिता डालकर पिलाने से पित्तशूल तुरंत नष्ट हो जाता है। अधिक रक्तस्राव में इसके कंद के चूर्ण के सेवन से रक्तस्राव तुरंत बंद हो जाता है। इसके कंद के चूर्ण का सेवन मधु के साथ करने से प्रसूता के स्तन्य में वृद्धि होती है। जो बच्चे अशक्ति, अतिसार एवं पोषण के अभाव से रोगग्रस्त रहते हों, उन्हें विदारी कंद का पाक खिलाने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दाड़िम /लोहित पुष्पक Punica granatum Linn. PUNICACEAE

241

ENGLISH NAME:- Pomegranate. Hindi - Anar/Dadim

PARTS-USED:-Leaves, Root, Bark, Flowers, Fruits and Seeds.

DESCRIPTION:- A deciduous shrub or small tree young branches four angled and spiny at apex leaves oppsote, oblong lanceolate, glabrous flowers dark red. fruits Pome, hard out side and Fleshy inside.

TASTE:-Sweet-Sour.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains:-Malvadin, Pentasglycosides, Ursolic acid, Carbohydrates Carotene, Nicotinic acid, Riboflavin, Thiamine, Vitamin-C, Delphinidin, Dyglycoside, Amino acids, Sitosterol, Betulic acid, Punicatolin, Granatins A & B.

ACTIONS:-Cooling Astringent, Antidiarrhoeal, Styptic, Antidysentry, Stomachic Brain tonic, Appitizer, Blood purifier. anthelmintic, ophthalmic, aphrodisiac, phrangitis.

USED IN:- Diarrhoea, Dysentery, Bleeding gums, ulcers, Prolapse of anus, Pericarp of fruit is Anthelmintic (For Tapeworm.), spleen disorder, anemia, gastric disorder, conjunctivitis

प्रचलित नाम- अनार/दाड़म

प्रयोज्य अंग- पत्र, मूल की छाल, फल, पुष्प तथा बीज।

स्वरूप- यह एक झाड़ीनुमा गुल्म या लघु वृक्ष जैसा होता है। कोमल शाखाएँ चौपहल कंटकी अग्रवाली होती हैं। पुष्प गहरे रक्तवर्णी तथा फल गोल छिलका मोटा होता है।

स्वाद-मधुर-अम्ल।

रासायनिक संगठन- इसके फल में माल्वाडीन, पेन्टाझग्लायकोसाइड्स, अरसोलिक अम्ल, कार्बोदित, केरोटिन, निकोटिनीक अम्ल, राइबोफ्लेविन, थायमाइन, विटामिन- सी, डेल्फीनीडीन, डायग्लायको-साइड्, एमिनो अम्ल, सिटोस्टीरॉल, बेटुलिक अम्ल, प्युनिकाटोलिन, ग्रानाटिन्स ए तथा बी तत्व पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, अतिसार हर, रक्त स्तम्भक, प्रवाहिका नाशक, दीपन, मेध्य, रुचिकर, रक्तशोधक।

उपयोग-अतिसार, प्रवाहिका, रक्तस्रावित मसूड़ों तथा मुखगत व्रण, गुदाभ्रंश में लाभकारी। फल की छाल-कृमिघ्न (स्फीति कृमि में)। स्फीत कृमि के लिये १०० ग्राम फल की छाल, २५० मि.ली. जल में उबाल कर आधा शेष रहने पर छानकर १० मि.लि. प्रत्येक आधे घंटे के बाद दिन में चार बार खाली पेट पिलाते हैं, बाद में एरंडतैल पिलाते हैं। अतिसार तथा प्रवाहिका में फल की छाल ग्राही है, इसका क्वाथ देने से लाभ होता है। फल के दाने को भूनकर रस निकाल कर सेवन करने से भी अतिसार में लाभ होता है। नाक में से रक्तस्राव (नकसीर फूटनी) होने पर इसके फूलों के स्वरस की बूंदे नाक में डालने से रक्तस्राव बंद हो जाता है। रक्तार्श में अनार की छाल का चूर्ण तक्र के साथ देने से रक्त पड़ना बंद हो जाता है। रक्तातिसार में कुटज की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ताजी छाल चार तोला कच्चे अनार के फल की छाल चार तोला, इन दोनों को आठ गुना जल में इसका आठवाँ हिस्सा शेष रहने तक गरम कर क्वाथ बना लें, शीतल होने के बाद मधु मिलाकर पिलाने से जीर्ण रक्तातिसार भी नष्ट हो जाता है।

अर्जीर्णता में इसके पके हुए फल के बीजों का रस पिलाने से अर्श, अजीर्णता तथा विबंध में लाभ होता है। ज्वर में अरुचि होने के कारण अनार दाना तथा मिश्री या अनार दाने तथा किशमिश की चटनी मुँह में रखने से अरुचि नष्ट हो जाती है। अनार के रस में सैन्धव नमक एवं मधु मिलाकर पीने से अरुचि का नाश होता है। उपदंश में अनार की छाल का सूक्ष्म चूर्ण छिड़कने पर उपदंश भर जाता है। मुँह से रुधिर का बहना अनार के फल की त्वचा का चूर्ण में मधु मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

गर्भपात हो जाने का भय होने पर पाँचवे मास में यदि गर्भ चलित हो जाने का भय प्रतीत होता हो तो दाड़िम पत्रों का चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है।

चपटे कृमियों (स्फीति कृमियों) में अनार के मूल की ताजी छाल पाँच तोला यवकूट करके ८-१० गुना जल में क्वाथ बनाकर, इसका एक-एक घंटे के अंतर से ग्लास भर के पीते रहना चाहिए, इस पर सारा क्वाथ पी जाने से तमाम स्फीति कृमि मर कर बाहर निकल आते हैं।

मात्रा-फल की छाल-१-२ माशा।

www.vicharkrantibooks.org

* * *

वृक्ष - वृ=पृथ्वी, मेधा। क्ष= क्षयति रक्षति।
अर्थात्-जो पृथ्वी या बुद्धि को नाश से बचाता है उसे वृक्ष कहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुत्रंजीव अक्षफल : कुमार बीज Putranjiva roxburghii Wall. EUPHORBIACEAE

242

ENGLISH NAME:- Putranjiva. Hindi - Jiyapota
PARTS-USED:-Leaves, Seeds and Fruit.
DESCRIPTION:- An ever green medium sized tree, generally with pendent branches branch lets are slender & pubescent; Flowers unisexual and greenish.
TASTE:-Sweet-Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruit Contains:-Manitol & Saponins; Seed Contains: Arachidic acid, Linoleic acid, Palmitic acid, Stearic acid, Glucochlearin, Glucocleomin, Gluco putranjivin, Putranjivoside, Putranoside, Beta-Sitosterol and its Glucosides, Glycine (In Pollen), Amento flavon; Leaves contain: Stigmasterol, Bark Contains: Carboxylic acid, Putric acid, Putranjivic acid.
ACTIONS:-Tonic, Aphrodisiac, Stimulant, Anti-thirst, Diuretic, Cooling.
USED IN:- Induces Conception, Spermopoietic, Dysentery, Cold, Fever, In Eyes burning sensation. Juice of leaves used in washing infected eyes and also in filaria.

प्रचलित नाम- पितौजिया

प्रयोज्य अंग- पत्र, बीज तथा फल।

स्वरूप- यह एक सदाहरित मध्यम कद का वृक्ष होता है, जिसकी शाखाएँ कमजोर हो कर नीचे तरफ झुकी रहती है तथा कोमल शाखाएँ रोमश होती है। पुष्प एक लिंगी तथा हरित वर्णी होते हैं।

स्वाद-मधुर-कटु।

रासायनिक संगठन- इसके फल में मैनीटॉल तथा सैपोनिन्स, बीज में, एरेकीडीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, ग्लुकोक्लीरीन, ग्लुकोक्लीयोमिन, ग्लुको पुत्रंजीवीन, पुत्रंजीवोसाईड, पुत्रेनासाइड, बीटा-सिटोस्टीरॉल तथा इसके ग्लूकोसाईड, ग्लायसीन (परागरज में) एमेन्टोफ्लेवोन, इसके पत्रों में स्टीग्मास्टीरॉल, छाल में कार्बोझायलिक अम्ल पुत्रीक अम्ल, पुत्रंजीविक, अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-बल्य, वाजीकरण, उत्तेजक, तृषाशामक, मूत्रल तथा शीतल।

उपयोग-गर्भ धारण में लाभकारी, वीर्यवर्धक, प्रवाहिका, प्रतिश्याय, ज्वर में लाभकारी। पत्रों के क्वाथ से नेत्र शोथ में लाभ। पत्रों के रस से रोगग्रस्त नेत्रों को धोने से रोग मुक्त होते हैं।

हाथी पगा (पीलपाँव-श्लीपद) रोग में लाभकारी। प्रतिश्याय तथा ज्वर में पत्र तथा फलों का क्वाथ पिलाने से लाभ। शिर:शूल में फल की गुठलियों को जल में घिस कर लेप लगाने से लाभ। इसके उपरांत फोड़ों पर लेप करने से वेदना कम होती है। इसके फल की गुंठलियों का प्रयोग जिन स्त्रियों के बच्चे पैदा होते ही मर जाते हैं वे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्रियाँ गुठलियों की माला पहनती हैं। विस्फोट में इसके फल की मज्जा को पानी में पीसकर लेप करना चाहिए, इससे विस्फोट की वेदना शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

उर:ग्रह में पुत्रजीव के रस में हींग मिलाकर, उसे थोड़ा उष्ण कर रोगी को पिलाना चाहिए। विष वेगनाशार्थ पुत्र जीवक की मज्जा नींबू के रस के साथ पिलाने से वछनाग (कलिहारी) के विष का वेग इसी तरह नष्ट होता है, जिस तरह वृष्टि होने से दावानल की गति नष्ट हो जाती है। ज्वर तथा प्रतिश्याय में पत्र एवं फल का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। इस वनौषधि को अधिकतर गर्भकर माना गया है।

* * *

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लोग परिस्थिति की विदों से पूछते हैं कि क्या हम स्वच्छ और अच्छे जीवन के लिये पाषाण युग में चलें जाएँ? क्या विज्ञान तकनीकी तथा सामाजिक विकास को हम तिलांजलि दे दें? समाधान पीछे जानने में नहीं है, हमें पर्यावरण की रक्षा करनी हैं। स्वस्थ पर्यावरण ही विकास है, फिर वह जैसे भी हो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिम्बितिका Pyrus malus Linn. Malus pumila mill, Syn.ROSACEAE

243

ENGLISH NAME:- Apple Tree. Hindi - Sev
PARTS-USED:-Fruit, Bark and Root.
HABIT:- Amedium sized tree; Leaves ovate, glabrous above, tomentose beneath, Crenate, long petioled; Flowers pink; Fruits globose Pome.
TASTE:-Sweet-Astringant.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Chemical consti tuents-Leaves and Buds Contain-Glycoside, Sorbitol, Sucrose, Glucose; Fruit Cuticle Contains- Glucoside, Diglucoside, Galactoside, Rhamnoside, Arabinoside, Xyloside of Quercetin, P-Coumaric acid and Phlorizin; Apple skin Contains- Ursolic acid, 2-Beta hyderoxy ursolic acid; Fruit Contains-Matic acid, Licythin; Salts-Posassium, Calciumoxalate and Ph-lorizin.
ACTIONS:-Nutritive, Appitizer, Spermopoietic, Heart tonic.
USED IN:- Diarrhoea, Hemorrhagic disease, Asthma, Dyspepsia, Fruits are heart tonic.

प्रचलित नाम-सेव

प्रयोज्य अंग- फल, छाल तथा मूल।

स्वरूप-मध्यम कद का वृक्ष, पत्र अण्डाकार, ऊपरी सतह चिंकनी निचली सहत रोमश, पत्र किनार गोल दंतुर, पर्णवृन्त लम्बा, पुष्प गुलाबी, फल गोल मांसल जो कूट फल होता है।

स्वाद-मधुर कषाय।

रासायनिक संगठन- पत्र एवं कलियों में-ग्लायकोसाइड, सोरबीटोल, सुक्रोस, ग्लूकोज, फल के क्युटीकल में-ग्लूकोसाइडण डाय-ग्लूकोसाइड, गैलेक्टोसाईड, रहाम्नोसाइड, एरेबीनोसाइड, क्वेरसेटिन का झायलोसाइड, पी-कॉमेरिक अम्ल, फ्लोरीजिन, सेव (फल) छिलके में-अरसोलिक अम्ल, २-बीटा हाइड्रोक्सी अरसोलिक अम्ल, फल में-मैलिक अम्ल, लिसीथिन, लवण-कैल्शियम ओक्सेलेट तथा फ्लोरिजिन पाये जाते हैं।

गुण-पौष्टिक, रुचिकर, शुक्रवर्धक, हृदयबल्य।

उपयोग-इसके फल पचने में भारी, मधुर तथा शीतवीर्य, रक्तस्रावी रोगों में फल का सेवन लाभकारी। श्वासरोग, अग्निमांद्य में, फल हृदय को बल प्रदान करने वाले होते हैं। सेव का मुरब्बा हृदयबल्य होता है, मानसिक तथा छाती पर के दबाव में लाभकारी। फल में उपस्थिति फ्लोरिजिन जो एन्टीबेक्टेरियल होने के कारण ग्राम पोजीटिव तथा ग्राम नेगेटिव दोनों प्रकार के कीटाणुओं को नाश करता है। फल का सेवन प्रतिदिन लाभकारी। "An apple a day, keeps Doctor away" युरोपियन लोग भोजन के पश्चात् एक सेव अवश्य खाते हैं। सेव को कभी भी छील कर नहीं खाना चाहिये क्योंकि इसकी छिलके में अनेक महत्त्व के क्षार होते हैं। पर्यायिक ज्वर में इसकी छाल के क्वाथ का सेवन लाभकारी होता है। सेव के मूल दाह शामक, कृमिघ्न तथा निद्राजनक गुण वाले होते हैं। सेव का मुरब्बा विबंध, रक्तातिसार तथा अतिसार में सेवन करने से लाभ होता है

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मधुमालती Quisqualis indica Linn. COMBRETACEAE

244

ENGLISH NAME:- Rangoon Creeper.
PARTS-USED:-Leaves and Seeds.
HABIT:- A large scandent shrubby climber with simple opposite leaves, Flowers terminal in drooping Spikes, White-Rosy-Scarlet.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves & Fruits Contains: Trigonellin, Arachidic acid, Linoleic acid, Oleic acid, Palmitic and Stearic acid; Seeds Contain:-Sito-Sterol, Leaves Contain: L-Asparagine, L-Prolin, Monitol, Potassium Salt of Quisqualic acid; Flowers: 3-Glucosides Cyanidin, Pelargonidin and Rutin.
ACTIONS:-Anthelminic.
USED IN:- Ripe and Roasted Seeds are used in Diarrhoea, Fever and Ricketsia; Normal Seeds are Anthelmintic against Ascaris. Seeds macerated in oil applied on Parasitic Skin troubles.

प्रचलित नाम- रन्गुनबेल

प्रयोज्य अंग- पत्र तथा बीज।

स्वरूप- यह एक फैली हुई विशाल झाड़ीदार लता। इसके पत्ते सरल तथा अभिमुखी, तीक्ष्णाग्र होते हैं। पुष्प सफेद किन्तु बाद में नारंगी, गुलाबी तथा लाल हो जाते हैं, जो झुकी हुई मंजरियों में होते हैं॥

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पत्र तथा फल में ट्रायगोनैलिन, एरेकीडीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामीटिक अम्ल तथा स्ट्रीयरीक अम्ल पाये जाते हैं। इसके बीज में- सिटोस्टीरॉल पाया जाता है। इसके पत्रों में एल-एस्पाराजिन, एल-प्रोलिन मेनीटॉल, क्वीसक्वैलिक अम्ल के पोटेशियम लवण पाये जाते हैं। पुष्प में तीन ग्लूकोसाइड-सायनीडीन, पलारगोनीडीन तथा रुटिन पाये जाते हैं।

गुण- कृमिघ्न।

उपयोग- पके तथा सिके हुए बीज का प्रयोग अतिसार, ज्वर तथा सूखा रोग (सुखण्डी) में लाभकारी। साधारण बीज कृमिघ्न (सूत्र कृमियों में) इसके बीजों को तेल में पीसकर इसका लेप त्वचा पर होने वाले परोपजीवी रोगों में अतिलाभकारी।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ENGLISH NAME:- Emetic nut / Bushy Gardenia. Hindi - Mainar/Madanphal

PARTS-USED:-Fruit.

DESCRIPTION:- A small sized tree with many axillary thorns; leaves obvatem simple with winged petiole. Flowers greenish white & aromatic, turning to yellow; berry yellow globose, smooth; seed many embeded in pulp

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit Contains:- Saponin, Valerianic acid, Resin, Wax and Pigments.

ACTIONS:-Emetic, Pungent, ecbolic anodyne, anti-inflammatory, carminalive, anthelmintic, expectorant, febrifuge, sudorefic

USED IN:- Cough, Inflammation, Ulcer, Swelling, Cold, Leucoderma, Piles, Fever, Abdominal lump; Tympanitis, Cephalalgia, flatulence, amenorrhoea dysmenorrhoea, rheumatism.

प्रचलित नाम- मैनफल

प्रयोज्य अंग- फल

स्वरूप-छोटे कद का वृक्ष, पत्र कोण में कंटक होते हैं। पत्र सरल जिसका वृंत सपक्ष होता है, पुष्प श्वेत हरिताभ सुगंधित होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके फल में सैपोनिन, वेलेरिऐनिक अम्ल, राल, मोम तथा रंजक द्रव्य पाये जाते हैं।

गुण-तीक्ष्ण, कडुवा, उष्ण, लेखन, लघु, रुक्ष, वामक।

उपयोग-कफ, शोथ, व्रण, सूजन, जुकाम, श्वित्र, अर्श, जवर, गुल्म, आनाह में लाभकारी। श्वास तथा खाँसी में मुलैठी एवं मैनफल का चूर्ण दो-सात रत्ती देने से लाभ होता है। जूं नाश के लिये इसके रस का प्रयोग- सिर पर बालों में लगाने से जूं मर जाते हैं। स्तन रोग में इसके फल को ठंडे जल में घिस कर लेप करने से लाभ होता है। वमन होकर कफ बाहर निकालने के लिए सैंधव नमक आधा तोला एवं लींडीपीपर डेढ़ माशा इन सबको मिलाकर इसमें से चार मासा चूर्ण गरम जल के साथ सेवन से लाभ। इसके वृक्ष की छाल का बाह्य लेप करने से आमवात, फोड़े तथा चोट एवं हड्डियों की पीड़ा में लाभ होता है। वंध्यत्व दूर करने के लिये इसके बीज का चूर्ण दूध शक्कर या केशर के साथ खिलाने से लाभ होता है

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूलक Raphanus sativus Linn. BRASICACEAE (CRUCIFERAE).

246

ENGLISH NAME:- Radish. Hindi - Mooli
PARTS-USED:-Storage Root, Leaves, Seeds and Fruits.
DESCRIPTION:- An annual herb with f;ashy root; leaves lyrate; pinnatizeet Flowers white or light-pink; siliana short thick siliqua which is monli form, prominantly beaked.
TASTE:-Acrid-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seed Contains:- Volatile oil, Fleshy Taproot Contain Arsenic and oil; Calcium, Iron, Vitamin-A, B_1, B_2 Niacin-C, Choline, Phosphorus. Leaves Contain-Protein, Calcium oxalate, Potassium and Stroetium, Aluminium, Barium, Florin, Mangenese.
ACTIONS:-Appitizer, Digestive, Carminative, Seeds and Leaves-Diuretic, Laxative, Anti-calculii, Seeds-Expectorant, Digestive, Carminative.
USED IN:- Radish-Diarrhoea, Cystitis, Kapha janya swellings, Asthma, Cough, Ear ache, Cholerial-diarrhoea, urinary. disease, Calculii, Abdominal pain, Leaves are laxative and Diuretic. Bleeding piles and piles (Radish).

प्रचलित नाम- मूली

प्रयोज्य अंग- मांसल मूल, पत्र, बीज एवं फल।

स्वरूप-एक वर्षीय क्षुप, पत्र वीणाकार, पुष्प सफेद या हलके गुलाबीरंग के, फल छोटे एवं सिलीकुवा जो माला के मनकों जैसे होते हैं।

स्वाद-कटु-तिक्त।

रासायनिक संगठन- बीज में-उड़नशील, साधारण मांसल मूल में आर्सेनिक एवं तेल पाये जाते हैं। कैल्शियम, लोह, विटामिन-ए, बी१, बी२, नियासिन-सी, कोलाईन, फोस्फोरस पाये जाते हैं। पत्तों में-प्रोटीन, कैल्शियम ओक्सेलेट, पोटेशियम, स्ट्रोशियम, एल्युमिनियम, बेरियम, फ्लोरिन, मेंगनीज पाये जाते हैं।

गुण-रुचिकर, पाचन, वातघ्न, बीज एवं पत्र-मूत्रल, मृदुरेचक, अश्मरीघ्न।

उपयोग-मूली अतिसार, विसर्प, कफ जन्य शोथ, हिक्का, श्वासरोग, वातजन्य खाँसी में, कर्ण शूल, विषूचिका-अतिसार, मूत्ररोगों, अश्मरी, उदरशूल, मृदुरेचक तथा मूत्रल है। पत्र अर्श एवं रक्तार्श में मूली का प्रयोग लाभकारी। शुष्कार्श में मूली को सुखाकर उसकी पुल्टिस बनाकर अर्श पर बाँधने से लाभ। अर्श में मूली के स्वरस का सेवन लाभकारी होता है। अतिसार में ताजी मूली का ज्यूष का सेवन लाभकारी होता है। विसर्प में सूखी हुई मूली का कल्क अल्प उष्णकर लेप करने से लाभ होता है। कफ जन्य शोथ में मूली के गुनगुने रस का सेवन करना चाहिये। हिक्का एवं श्वासरोग में सूखी हुई मूली को यूष का सेवन करने से इन रोगों में लाभ होता है। वातजन्य कास में मूली के शाक का सेवन हितकर होता है। कर्णशूल में मूली के स्वरस (गुनगुने) की एक दो बूँदें कान में डालने से लाभ होता है। कुष्ठरोग में मूली के बीज अपामार्ग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के स्वरस में पीसकर लेप करने से लाभ होता है। विषूचिका जैसे अतिसार में कोमल मूली के क्वाथ में पिप्पली का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। सभी प्रकार के शोथ में मूली का सेवन तिल के साथ करने से लाभ होता है। कोमल मूली को सुखाकर सेवन करना लाभकारी बताया गया है। मूत्ररोगों तथा अश्मरी में मूली के सभी अंगों का प्रयोग लाभकारी कहा गया है। अर्श तथा उदरशूल में मूली का सेवन लाभकारी होता है। कर्णशूल में मूली के पत्रों के स्वरस (चार गुने) में पकाया हुआ तेल कर्णशूल में लाभकारी होता है। जलोदर में मूली के स्वरस का सेवन लाभकारी है। मूली के पत्रों वाले भाग का सेवन बहुत ही हितकारी होता है क्योंकि इसमें तमाम विटामिन्स तथा अन्य महत्त्व के पौष्टिक तत्त्व होते हैं। अम्लपित्त में मूली एवं मिश्री को चबाकर खाने से लाभ होता है। गण्डमाल तथा गलगण्ड में मूली के बीज, पटसन के बीज, सहिजन के बीज, सरसों, जौ एवं अलसी इन सबको छाछ में घोंट कर लेप करने से लाभ होता है।

मात्रा-स्वरस एक से दो तोला। बीज- तीन से छः माशा।



'तांत्रिक रूप से अशोक आवास की उत्तर दिशा में लगाना विशेष मंगलकारी माना जाता है तथा अशोक के पत्ते घर में रखने से शांति रहती है।' -वराहमिहिर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नाकुली (सर्पाङ्गी) Rauwolfia serpentina Benth, exkurz. APOCYANACEAE

247

ENGLISH NAME:- Serpentina. Hindi - Chhota Chand
PARTS-USED:-Roots and Leaves (Roots with bark-Collected in winter season.)
DESCRIPTION:- A small perennial herbaceous shrub, about 3-4 feet high, leaves simple whorled; flowers white-slightly pink in clusters.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contains:- Arachidic acid, Lauric acid, Oleic acid, Myristic acid, Palmitic acid, Stearic acid, Ajmalcine, Rauhimbine, Deserpidine, Indobine, Indobinine, Rescinna nidine, Rescinnamine, Rescinnaminol, Reserpentine, Reserpine, Serpagine, Serpentine, Serpentinine, Ajmalimines, Ajmaline, Oleoresin, Serposterol.
ACTIONS:-Analgesic, Anti-hypertensive, Tonic, Sedative, Anti pyretic.
USED IN:- Hypertension, Insanity, Epilepsy, Dismennorrhagia, Insomnia, Emmenogogue, Snake poisoning, Fever, Worms in festation, Wound healing, Uterine contraction. (Ebolic)

प्रचलित नाम- सर्प गंधा (नकुलकंद)
प्रयोज्य अंग- मूल तथा पत्र (छाल सहित मूल-शरत्काल में संग्रह)
स्वरूप- यह पौधा एक छोटा बहुवर्षायु चिरस्थायी गुल्म जैसा क्षुप जो औसतन तीन से चार फीट ऊँचा होता है। इस के पत्ते सरल संधि पर चक्र में होते हैं। पुष्प श्वेत तथा अल्प गुलाबी रंग के जो गुच्छों में होते हैं। फल छोटे मटर के दाने के समकक्ष रक्त वर्णी होते हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसके मूल में ऐरेकिडीक अम्ल, लौरिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, मिरस्टीक अम्ल, पामिटिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, अजमेलीसाईन, रोहिम्बाइन, डीसर्पीडाइन, इन्डोपाइन, इन्डोबीनाइन, रेसीनानीडाइन, रेसीनामाइन, रेसीना मिनॉल, रिसर्पोटाइन, रिसर्पाइन, सर्पाजाइन, सर्पेन्टाइन, सर्पेटीनाइन, अजमेली माइन, अजमेलाइन, ओलीय राल, सर्पोस्टीरॉल तत्व पाये जाते हैं **गुण**- शूलहर, रक्त भाराधिक्य शामक, निद्राकर, बल्य, ज्वरहर।
उपयोग- अतिरक्त भाराधिक्य में, उन्माद में, अपस्मार, कष्टार्त्तव, अनिद्रारोग, आर्त्तव जनन, सर्प विष, ज्वर, कृमिरोग, व्रणरोपण तथा गर्भाशय संकोचन के लिये लाभकारी। यह औषधि बिहार में पागल की दवा के नाम से प्रचलित है। इसके अतिरक्त इसका प्रयोग रक्तचाप, उन्माद, अनिद्रा तथा अन्य मानसिक रोगों में उत्तम औषध सिद्ध हो रही है। रक्तभार की अधिकता में इसके मूल का चूर्ण १ रत्ती से लेकर २ माशे तक लाभकारी। रिसर्पोइन सत्व का उपयोग तमकश्वास में, सव्रण स्थूलांग शोथ, पैत्तिक शूल, वृक्कशूल, मानसिक अवसाद में लाभकारी। गर्भवती महिला को सर्पगंधा का प्रयोग नहीं करवाना चाहिए, कारण कि सर्पगंधा से गर्भाशय का संकोचन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होता है। बिना किसी कारण लिंगोत्थान होकर निद्राभंग तथा शिर:शूल होता हो, उसके लिये यह औषधि अति गुणकारी है। यह औषधि ब्लड प्रैशर (रक्तचाप) के लिये उत्तम है तथा उत्तेजना शामक है।

उन्मादरोग से पीड़ित सभी रोगियों के लिए यह औषधि उपयोगी नहीं भी हो सकती, इस रोग में उपयोग करने से पहले रोगी का रक्तचाप देखना आवश्यक होता है, निम्न रक्तचाप (लो ब्लड प्रैशर) वाले रोगी को इस औषधि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसलिए उच्च रक्तचाप वाले रोगी को ही इस औषधि का प्रयोग करवाना चाहिए। रक्तचाप कम करने के लिए सर्पगंधा का चूर्ण ५-१० ग्रेन सेवन करना चाहिए, धीरे-धीरे इसका मात्रा बढ़ानी चाहिए। निद्राप्रद की तरह सर्पगंधा चूर्ण १०-३० ग्रेन (डेढ़ से दो ग्राम) गुलाब जल या दूध के साथ देना चाहिए। इस औषधि का उपयोग वैद्य डॉक्टर की सलाह के अनुसार करना अधिक हितकारी है।

मात्रा- मूल का चूर्ण-१ से २ माशा।
रक्तदाब के लिये-५ से १० ग्रेन।
निद्राप्रद-१५ से २० ग्रेन।
उन्माद में-३० से ५० ग्रेन।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'नागकेशर का फूल कषाय रस युक्त, उष्णवीर्य, रुक्ष, लघु तथा आम को पचाने वाला होता है एवं यह ज्वर, खुजली, तृषा, पसीना, वमन, हृल्लास, दुर्गन्ध, कुष्ठ, विसर्प, कफ, पित्त और विष को दूर करने वाला होता है।' -भा०प्र०नि०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एरण्ड/गन्धर्वहस्त Ricinus communis Linn. EUPHORBIACEAE

248

ENGLISH NAME:- Castor oil Plant. Hindi - Rend/Andi

PARTS-USED:-Roots, Root bark, Leaves, Flowers, Fruits, Seeds & Oil.

DESCRIPTION:- A tall annual glabrous, glaucous, branched shrub looking like a small tree; Leaves broad palmatifid & serrate broad, orbiculate; Flowers unisexual on racemes, large, apetalous

TASTE:-Acrid/Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contains: Resin, Tannin, Starch; Seeds Contain:- 50% oil, (Fixed oil), Protein, Ricinine, Ricin, Lipase (Enzyme), Fixed oil Contains:- Glycerides, Ricinolesis, Isoricinoleic acid, Stearic acid, Crystals of Calcium oxalate, Nitrate. Ricin is posinous content.

ACTIONS:-Purgative, Anti-inflammatory; Carminative alterative, febrifuge, Stomachic, Aphrodisiac, Brain toinc.

USED IN:- Leaves in: Disuria, Cough, Worms infestation, Fruits used in: Hepatomegaly, Spleenomegaly, Epilepsy, Piles, Asthma, Bronchitis, Skindiseases, Febrifuge, Jaundice, Eye disease, Nervous disease, Sciatica, Rheumatism and Lumbago, Dysponea, hydrocele, Hatalenel, Dysurla

प्रचलित नाम- अरंडी

प्रयोज्य अंग- मूल, मूल की छाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज तथा तेल।

स्वरूप-एक वर्षायु चिकना, चिपचिपा शाखीत गुल्म जो लघु वृक्ष जैसा दिखाई देता है, पत्र चौड़े, पंजाकार दंतुर; पुष्प एक लिंगी पीलापन लिये सफेद रंग के होते हैं। फल गोल सघन गुच्छों में, उन पर मुलायम कांटे से होते हैं। प्रत्येक फल में तीन बीज होते हैं।

स्वाद-कषाय/कटु।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में राल, टैनिन, स्टार्च पाये जाते हैं। इसके बीज में ५० प्रतिशत स्थिर तेल, प्रोटीन, रिसीनाइन, रिसीन, लाइपेस, किण्व, इसके स्थिर तेल में ग्लिसराईड्स, रिसीनॉलेसीस, आइसोरिसीनोलिक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, कैल्शियम ऑक्सेलेट के स्फटिक तथा नाइट्रेट तत्व पाये जाते हैं। इसके बीजों में रिसीन नामका विषैला तत्व पाया जाता है।

गुण- अतिरेचक, शोथहर, वातहर, दीपन, वाजीकरण मेध्य।

उपयोग- पत्रों का प्रयोग मूत्रकृच्छ्र, कास, कृमिरोग में लाभकारी। इसके फल ज्वरघ्न, यकृतवृद्धि, प्लीहावृद्धि, अपसर्गिका, अर्श, श्वासरोग, श्वसन शोथ, चर्मरोगों में, कामला रोग में, नेत्र रोगों में, नाड़ी रोगों में, गृध्रसी, आमवात तथा कटिशूल में लाभकारी। एरण्ड का तेल उत्तम विरेचक, इसका प्रभाव संग्रहणी पर होता है तथा आंत्र की ग्रंथियों एवं पुरस्सरण क्रिया को उत्तेजित करता है। इसके मूल का क्वाथ सोंठ के साथ पिलाने से कटिशूल, गृध्रसी हृदयशूल आमवात, संधिशोथ में लाभ होता है। नेत्रों में कोई चीज चली जाय तो एरण्ड का स्वच्छ तेल आँख में डालने से निकल जाती है तथा आँखों की खुरखुराहट (खुजली) दूर होती है। अर्श में एरण्ड तेल तथा घृतकुमारी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का स्वरस मिलाकर लगाने से जलन कम होता है। ज्वर के साथ प्रवाहिका हुई हो, तो एरण्ड के तेल में इसके मूल को उबाल कर पिलाने से लाभ होता है तथा रक्त एवं पिच्छा पड़ना बंद होता है। उदर रोग में एरण्ड मूल से सिद्ध किया हुआ दूध पिलाने से विरेचन होकर सभी प्रकार के उदर रोग ठीक हो जाते हैं। कास में एरण्ड के पत्र का क्षार, त्रिकूट, तेल एवं गुड़ समान भाग मिलाकर चटाने से खाँसी दूर हो जाती है। वातरक्त में एरण्ड का तेल दूध के साथ सेवन करना चाहिए और इसमें जीर्ण हो जाने पर दूध एवं चावल का सेवन करना चाहिए। अर्श में वासा, अर्क, एरण्ड के पत्र के क्वाथ का सेवन करने से लाभ होता है। वात जन्य शोथ में एरण्ड का तेल तथा निशोथ का उपयोग १५ दिन या एक माह तक करने से लाभ होता है। ज्वर में होने वाली दाह में एरण्ड के पत्र धोकर, साफकर शरीर पर धारण कराने से दाह नष्ट हो जाता है। कटिशूल एवं गृध्रसी में इसके बीज की मींगियों को पीसकर दूध में पका कर पिलाने से अत्यंत लाभकारी। इसके लिये यह परम औषध है। शूल में एरण्ड मूल एवं शुंठी दोनों का क्वाथ बनाकर उसमें हींग तथा काला नमक मिलाकर पिलाने से शूल नष्ट हो जाता है। पेट पर चढ़ी हुई चरबी को उतारने के लिये एरण्ड के हरे मूल को धोकर मधु में डुबोकर निकाल कर एक पात्र में सारी रात रख छोड़ें, इसमें जो पानी छूटे निकले उस पानी को प्रतिदिन पीने से पेट की चरबी उतर जाती है। पित्तजगुल्म एवं पैत्तिक शूल में यष्टिमधु के क्वाथ में एरण्ड तेल मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। तिल (मषक) के लिये इसके पत्र के वृंत पर थोड़ा चूना लेप कर तिल पर बार-बार घिसना चाहिए, इससे रक्तस्रुत होकर तिल भी निकल जाता है। कामला में इसके मूल का चूर्ण मधु के साथ चाटने से लाभ होता है। विरेचन के लिये एरण्ड तेल और इससे दुगना त्रिफला क्वाथ इन दोनों को मिलाकर पिलाने से उत्तम विरेचन क्रिया होती है।

मात्रा- तेल-१-२ तोला।
मूल का चूर्ण- आधा तोला।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शतपत्री Rosa centifolia Linn. ROSASEAE

249

ENGLISH NAME:- Rose. Hindi - Gulab
PARTS-USED:-Flowers.
DESCRIPTION:- An erect perennial shrub about 1 to 1.5 meter high branches with large hooked prickles, leaves, compound with 5 leaflets. Flowers with many petals stamens and carpels, aromatic.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Flowers Contains:- Essential oil which contains Citronellol, Nerol, Geraniol, Phenylethanol and its Glucosides, Eugenol, Methyleugenol, Chlorogenic acid, Tannin, Tannic acid, Mallic acid, Cyanidin, Quercetrin, Carotene & Sugars.
ACTIONS:-Aromatic, Appitizer, Astringent, Tonic, Digestion, Heart tonic, Improve complexion.
USED IN:- Skin disease, Burning sensation, Acne, Gulcand is a preparation from equal parts of sugar & Petals: is Astringent & Heart tonic, Rose water is used as vehicle for medicine, Buds (Rosa alba) are Cardio tonic, Astringent, Expectorant & Laxative; Improves Complexion and brings coolness during fever period.

प्रचलित नाम- गुलाब

प्रयोज्य अंग- पुष्प।

स्वरूप- एक उन्नत बहुवर्षीय चिर स्थायी गुल्म जो लगभग १-१.५ मीटर ऊँचा, शाखाओं पर बृहद् हुक जैसे कंटक होते हैं। पत्र संयुक्त पक्षवत् पत्रिका पाँच, पुष्प सुगंधित विविध वर्णी अनेक पंखुड़ियों नरकेसर तथा मादाकेसर युक्त होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पुष्पों में उड़नशील तेल, जिसमें सिट्रानिलॉल, नेरॉल, जिरानियॉल, फैनिल इथेनॉल तथा इसके ग्लूकोसाइड्स, युजीनॉल, मिथाइल युजीनॉल, क्लोरोजैनिक अम्ल, टैनिन, टैनिक अम्ल, मैलिक अम्ल, सायनीडींन, क्वेरसैट्रिन, कैरोटिन तथा शर्करा पाये जाते हैं।

गुण- सुगंधित, रुचिकर, ग्राही, बल्य, पाचन, हृद्य बल्य ।

उपयोग- चर्मरोगों में, संताप, पनसिका मे लाभकारी। इसके पुष्प की पंखुड़ियाँ तथा शर्करा (समभाग) से गुलकंद बनती है, जो ग्राही एवं हृदयबल्य है।

इसकी पंखुड़ियों से बनाया गया गुलाब जल औषध बनाने में एक आधार माना जाता है। सफेद गुलाब की कलियाँ-हृदयबल्य, वर्ण्य, कफनि:सारक, मृदुरेचक, ज्वर में शीतलता लाती है, इससे हृदय की धड़कन कम होती है। गुलाब जल नेत्र बिंदु में उपयोग किया जाता है। गुलकंद के सेवन से हृदय की धड़कन नियंत्रित होती है तथा वर्ण्य एवं शौच साफ होकर भूख बढ़ाती है, शरीर पुष्ट होता है। विबंध में गुलाब की पंखुड़ियों को शर्करा में मिलाकर चबाकर खाने से लाभ होता है।

गुलाब की पंखुड़ियों को सुखाकर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें समभाग शर्करा मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लें, रात को (८-१० ग्राम) जल के साथ सेवन करने से लाभ। नित्य रात को एक कप जल में गुलाब की पंखुड़ियों के साथ काली किशमिश भिगोकर रखें, प्रातः इसमें थोड़ी शर्करा मिलाकर, इसको मसल कर पी जाने से लाभ होता है। मूर्छा में गुलाब जल में थोड़ी रुई को भिगोकर नाक, नेत्र तथा मुख पर लगाने से मूर्छा दूर होती है। चर्म रोग में गुलाब की पंखुड़ियाँ तथा नीम के कोमल पत्रों को पीसकर इसका रस (दो चम्मच) प्रातः एवं सायं सेवन करें तथा चर्मरोग पर लगाने से लाभ होता है।

मात्रा-गुलकंद-२ ग्राम।

चूर्ण एक ग्राम।

अर्क-२ से ४ ग्राम।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'धते भरं कुसुम पत्र फलावलीनां धर्मव्यथां वहति शीत भवा रुजश्च।
यो देहमर्पयति चान्य सुखस्य हेतोस्तस्मै वदान्य गुरवे तरवे नमोऽस्तुते॥'

-भामिनी विलास

अर्थात्-जो वृक्ष फूल, पत्ते और फलों के बोझ को उठाए हुए धूप की तपन और शीत की पीड़ा सहन करता है तथा पर सुख के लिये अपना शरीर अर्पित कर देता है, उस वन्दनीय श्रेष्ठ तरु को नमस्कार है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंजिष्ठा / लोहित लता Rubia cordifolia Linn. RUBIACEAE

250

ENGLISH NAME:- Madder Root/ Indian Madder Hindi - Majeetha
PARTS-USED:-Roots and Stem.
DESCRIPTION:- A prennial herbaceous climber with terrate branches; Leaves four at node two smaller & two are larger; Flowers white in clusters.
TASTE:-Bitter-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Root Contains:- Purpurin, Manjistin, Garancin, Purpuroxanthin, Resin, Glucose, Sucrose, Triterpenes, Lucidin, Prime-veroside, Anthroquinones, Fatty acids and Gum.
ACTIONS:-Astringent, Blood purifier, Tonic, Uterinecontraction (Ebolic), Anti-inflammatory, Antipyretic, Antidote, Diuretic, Wound healer, Anti bacterial, Anticancer.
USED IN:- Stem is used in Cobrabite and Scorpion sting; Root is used in Paralysis, Disuria, Jaundice, Calculii, Bleeding piles, Polyuria, Skine disease. Chest pain, Tuberculosis, Rickets, Diarrhoea, Pleurisy, Piles, Leprosy, Eye infections, Genital disorder.

प्रचलित नाम- मंजीठ

प्रयोज्य अंग- मूल तथा कांड।

स्वरूप-एक बहुवर्षीय चिरस्थायी क्षुप जैसी लता, जिसकी शाखाएँ चौपहल, प्रत्येक संधि पर चार पत्र, उसमें से दो छोटे, दो बड़े होते हैं, पुष्प श्वेत तथा गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में परप्युरिन, मंजीस्टीन, गेरेनसिन, परप्युरोजैन्थिन, राल, ग्लूकोज, सुक्रोज, ट्रायटर्पेन्स, ल्युसिडीन, प्राइम विरोसाइड, एन्थ्रो क्वीनॉन्स, मेद अम्ल तथा गोंद पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, रक्तशोधन, बल्य, गर्भाशय संकोचन, शोथहर, मूत्रल, व्रणरोपण, कीटाणुघ्न, कैन्सरशामक, ज्वरघ्न, विषघ्न।

उपयोग- कांड का प्रयोग कोबरा नागदंश, बिछुदंश में लाभकारी। इसके मूल का प्रयोग अंगघात, मूत्रघात, कामला, अश्मरी, रक्तार्श, प्रमेह, चर्मरोग, छाती शोथ में, राजयक्ष्मा फक्का (सूखा रोग), दुर्गंधयुक्त अतिसार, फुफ्फुसावरण शोथ, अर्श, कुष्ठ, नेत्ररोग, योनिदोष में लाभकारी। मंजिष्ठा मेह में मंजीठ के रंग जैसा लाल मूत्र आता हो तो इसके मूल तथा सफेद चंदन का क्वाथ पिलाने से लाभ होता है। दाद एवं श्वित्र में इसके मूल को मधु के साथ घिसकर लगाने से लाभ। अस्थिभग्न में इसके मूल, अर्जुन एवं मुलैठी का क्वाथ पिलाया जाता है तथा इसी का लेप भी किया जाता है। अश्मरी में इसके मूल का चूर्ण एक माशे की मात्रा में दिन में तीन बार देने से सभी प्रकार की पथरी गलकर निकल जाती है। यकृत रोग में इसके फल का प्रयोग करने से इस रोग में लाभ होता है। इसके मूल का क्वाथ प्रसव के अंत में स्राव बढ़ाने के लिये देते हैं।

मात्रा- मूल का चूर्ण दिन में तीन बार- १ से ३ माशा की मात्रा में।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इक्षु Saccharum officinarium Linn. POACEAE (GRAMINAE).

ENGLISH NAME:- Sugar Cane. Hindi - Eekh/Ganna

PARTS-USED:-Juice of Stem and Root.

HABIT:- A Tall perennial grass, stem thick solid with distinct nodes and inter nodes. Leaves long, strap shaped, marginsharp serrate with hairy prominent ligule. Flowers in large cottony panicles.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Juice of Stem Contains:- Sugars and Calcium oxalate.

ACTIONS:-Sweet, Cooling, Diuretic, Tonic, Anti fatigue, Spermopoietic.

USED IN:- Juice is useful in Scorbutic, Flatulance, Jaundice, Anaemia, Tuber culosis, Disuria, Cough, Vomiting and is Appitizer, Heart tonic, Stomachic; useful in

प्रचलित नाम- ईख/गन्ना

प्रयोज्य अंग- काण्ड एवं मूल स्वरस।

स्वरूप-एक लम्बा बहुवर्षीय घास, काण्ड मोटा, कठिन, पर्व एवं आंतरपर्व स्पष्ट होते हैं। पत्ते लम्बे पट्टे जैसे पत्रकिनार तीक्ष्ण दंतुर, रोमश लिग्युल; पुष्प रुई जैसे लम्बे शाखित गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-मधुर

रासायनिक संगठन- इसके काण्ड के स्वरस में शर्करा एवं कैल्शियम ओक्सेलेट पाये जाते हैं।

गुण-मधुर, शीतल, मूत्रल, बल्य, श्रमहर, शुक्रवर्धक, वात एवं कफवर्धक।

उपयोग-गन्ने का रस रक्त पित्त, गुल्म, कामला, पाण्डुरोग, यक्ष्मा, मूत्रकृच्छ्र, कास, वमन में लाभकारी। इसका स्वरस रुचिकर हृदयबल्य एवं दीपन है। मूत्र जनन द्रव्यों में गन्ने का रस सबसे उत्तम माना गया है। गन्ने के मूल की ओर का हिस्सा अधिक मधुर होकर वातहर तथा पित्तहर होता है। जबकि अग्र भाग कम मीठा (फीका) कम रस वाला जो वातकर, पित्तजन्य, कफ एवं प्रमेह बढ़ाने वाला होता है। इसके मधुर एवं ताजे रस को पीने से क्षय, मूत्रघात, रक्तपित्त, पित्त की उल्टी हिक्का, आंत्रव्रण में लाभ होता है। गन्ने का रस यंत्र से निकाला हुआ तथा इसमें मिलाया हुआ नमक तथा खट्टापन के कारण यह रस दाह करने वाला, मल अवरोधक, कफ पित्तकर, शोषकर हो जाता है। मूत्रघात में मूत्रकृच्छ्र या मूत्र न होने पर गन्ने को चूस कर खाने से लाभ या ताजे रस में दो ग्राम जवा खार मिलाकर पीने से लाभ होता है। रक्तपित्त में रक्त वमन, मल-मूत्र मार्ग से रक्तस्राव होता हो या नाक से नकसीर फूटने पर (१) गन्ने को चूसकर रस सेवन करें। (२) गन्ने का रस पिलाना चाहिये। (३) गन्ने के रस में एक ग्राम चंद्रकला रस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। (४) नाक में से रक्त स्राव होता हो तब गन्ने के रस की एक-दो बूंदें नासिका छिद्र में डालने से लाभ होता है।

संग्रहणी में दस लीटर गन्ने के रस को गरम करें (आधा रह जाये तब तक) ठंडा होने पर इसमें एक लीटर मधु मिलाकर शीशे के मर्तबान में भर दें। इसको अनाज के ढेर में एक माह तक रखें। इसके पश्चात् प्रतिदिन दोपहर-रात्रि भोजन पश्चात् एक-एक कप (१००मि.ली.) सेवन करें। पाण्डुरोग में गन्ने के रस से तैयार मंथ का सेवन करने से लाभ होता है। विसर्प में थोड़ा गुन-गुना रस इस पर लगाने से लाभ। गरमी के कारण नेत्रशूल या लालाश होने पर गन्ने के ताजे, स्वच्छ रस से नेत्रों को धोने से लाभ होता है तथा नासिका में गन्ने के रस की एक से दो बूंद डालने से लाभ। आंत्रव्रण में पके हुए गन्ने के रस के सेवन से लाभ होता है।

मात्रा-आर्द्रक

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'माता भूमि: पुत्रोऽहमं पृथिव्या:। नमो मात्रे पृथिव्यै! नमो मात्रे पृथिव्यै।'

अर्थात्-धरती हमारी माता है और हम धरती के पुत्र। माता पृथ्वी को प्रणाम है, माता पृथ्वी को प्रणाम है। -शुकदेव प्रसाद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाल्मली/मोचा Syn : Salmalia malabarica, Sc and Endl. Syn. Bombax malabaricum. D.C. Bombax ceiba Linn. BOMBACACEAE 252

ENGLISH NAME:- Red Silk Cotton Tree. Hindi - Semar
PARTS-USED:-Tender roots, Gum, Leaves, Stem bark, Fruits & Seeds.
DESCRIPTION:- Large deciduous tree, armed with conical prickles (hard & Conical). Leaves penta-Septa foliate, leaflets long petioted, elliptic, entire flowers bright red and large, capsule 5 valved, silky inside
TASTE:-Sweet & Cooling.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Flowers Contains:- Beta-Sitosterol and its glucosides; Lupeol, Hentria contane, Hentria containol; Seed oil-Arachidic acid, Linoleic acid, Myristic acid, Oleic acid and Palmitic acid; Seeds: Carotenes, Hexacosanol, Ehtyl gallate, Octylpalmitate, Tocopherol, Essential oil, Kaempferol, Quercetin, Polysaccharides; Bark Exudate: Semulgum.
ACTIONS:-Aphrodisiac, Diuretic, Expectorant, Astringent, Laxative.
USED IN:- Fruits: Urinary Calculli, Chronic inflammation of bladder, and kidney, Seeds: Catarrhal affections, Cystitis, Gonorrhoea; Stem bark: As tonic, used in Styptic and are Spermapoeitic and Blood dysentery.

प्रचलित नाम- सेमल

प्रयोज्य अंग- मूल, गोंद (मोचरस), पत्र, कांड की छाल, फल तथा बीज।

स्वरूप-यह एक विशाल, मोटा वृक्ष होता है। इसकी शाखाओं एवं कांड पर छोटे-छोटे नुकीले कांटे होते हैं। पत्ते संयुक्त, पत्र दंड के अंत में ५-७ फैले हुए पत्रक होते हैं। पुष्प चमकदार रक्तवर्णी, पुष्पदल मोटे तथा लुआबदार होते हैं। फल गोलाकार लम्बे जिनके भीतर रेशम जैसी रुई होती है।

स्वाद-मधुर शीतल।

रासायनिक संगठन- पुष्प में बीटा-सिटोस्टीरॉल तथा इसके ग्लुकोईड्स, ल्युपियॉल, हेन्ट्रियाकोन्टेन, हेन्ट्रियाकोन्टानॉल, बीज के तेल में एरेकीडीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, मिरस्टीक अम्ल, ऑलिक अम्ल तथा पामीटिक अम्ल, बीज में केरोटिन्स, हेक्साकोसानॉल, इथाईल गैलेट, ऑक्टील पामेट, टोकोफेरॉल, उत्पत तेल, किम्फेरॉल, क्वेरसेटिन, पोली सेकेराईड्स, छाल में से सेमुल गोंद का स्राव होता है।

गुण- वाजीकरण, मूत्रल, कफ निःसारक, ग्राही, मुदुरेचक।

उपयोग- इसके फल मूत्राशय अश्मरी में, मूत्राशय के जीर्ण शोथ तथा वृक्क में, बीज-प्रतिश्याय एवं अपसर्गिकामेह में; पुष्प इसके पेस्ट के कल्क का प्रयोग त्वक् रोगों में, तथा पुष्प शुक्रवर्धक है। कांड की छाल-बल्य, शुक्रवर्धक तथा इसका प्रयोग रक्त स्तंभक तथा प्रवाहिका में लाभकारी। सेमल के मूल-सेमल मुसली के नाम से जाने जाते हैं; यह स्नेहन, पौष्टिक तथा वयः स्थापन एवं संग्राहक है। जननेन्द्रिय उत्तेजक गुण वाले हैं। सेमल मुसली का चूर्ण- एक तोला चूर्ण, दस तोला जल में घोलकर वाजीकरण के लिये पिलाते हैं। कोमल फल इसके सेवन से मूत्रकृच्छ्र में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बहुत लाभकारी है, यह मूत्रेन्द्रिय के लिये शामक होते हैं। अर्श में इसके पुष्प, पोस्त का बीज, चीनी एवं दूध में उबाल कर देने से लाभ होता है। गांठों के सूजन में पत्तों को पीसकर लगाने से लाभ होता है। व्रण रोपण के लिये इसके कांड की छाल को जल में घिसकर लेप करना चाहिए। रक्तपित्त में पहले शौच होता हो और रक्तस्राव होता हो, इसके गोंद (मोचरस) से दूध पका कर सेवन से लाभ होता है। शूल, विबंध सहित के प्रवाहिका में इसकी कलियों का क्वाथ बनाकर रात भर रखा रहने के पश्चात् प्रातः इसमें मधुयष्टि का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ शीत अवस्था में ही सेवन करने से लाभ होता है। वीर्यवृद्धि के लिये इसके कोमल मूल का चूर्ण सेवन से धातु पुष्टि होती है। मुखाकृति पर काली झाईयाँ पड़ी हों तो इसके कंटकों को दूध में अच्छी तरह पीसकर इसका लेप करने से मुख की कान्ति बढ़ जाती है। प्रदर में इसके फूलों का शाक, घी तथा सैन्धव में सिद्ध कर खाने से लाभ होता है। प्लीहा वृद्धि इसके पुष्पों को अच्छी तरह उबालकर रात भर रखे रहने के पश्चात् प्रातः राई के साथ सेवन करने से लाभ होता है। रसायन एवं वाजीकरण की तरह इसके मूल में बड़ा कट करने से जो रस स्राव होगा, उसको पात्र में एकत्र करना चाहिए, इस रस को ताजी स्थिति में या सुखाकर तिल के साथ सेवन करने से वाज़ीकरण गुण प्रदान करता है। फेफड़ों में से रक्त युक्त वमन होता हो तो इसकी गोंद (मोचरस) तथा लाख १/४-१/४ तोला एवं इतनी ही मिश्री मिलाकर इसका चूर्ण बनाकर दूध के साथ फाकी बनाकर सेवन करने से लाभ होता है। इसके छोटे पौधों के नीचे कलाई के कद के मूल कंद जैसे होते हैं, इसके टुकड़े बाजार में शेमुल मुसली के नाम से बिकते हैं। इनमें मुसली जैसी पौष्टिकता होती है तथा मुसली जैसी श्लेष्मता (चीकास) होती है, शायद इसीलिए इसका नाम मूसली पड़ा है। रक्त प्रवाहिका में:- इसके पत्रों के पत्रदंड के तलभाग को कूट कर उबलते हुए जल में रातभर रखे रहने के पश्चात् जल को छानकर मिश्री मिलाकर पिलाने से इस रोग में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त इसकी गोंद (मोचरस) १/४ तोला जल में मिश्री मिला कर पिलाना चाहिए, इसके सेवन से भी रक्त प्रवाहिका में लाभ होता है। घाव (जख्म) हुआ हो, तो उसमें सेमल की ताजी छाल को पीसकर घाव या जख्म में भर देने से शीघ्र ही रक्त बहना बंद हो जाता है। जख्म में रूझ आने पर ही छाल का कल्क उखड़ेगा तथा ड्रेसिंग की भी आवश्यकता नहीं रहती, व्रण निर्वापण में भी यह अत्यंत ही उपयोगी है। सेमल के कांटों को बारीक पीस कर सम भाग मसूर की दाल का चूर्ण मिलाकर दोनों को दूध में पीसकर इसका लेप मुँह पर करने से मुँह पर निकले कील मुहासे बिलकुल ठीक हो जाता है।

मात्रा-मूल का चूर्ण-एक तोला। फल का चूर्ण-एक से तीन माशा। पुष्प का चूर्ण-१ से २ तोला।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्वेतचन्दन/गंधसार/मलयज़ Santalum album Linn. SANTALACEAE.

253

ENGLISH NAME:- Sandal wood. Hindi - Chandan
PARTS-USED:-Heart wood and oil.
DESCRIPTION:- Evergreen medium sized tree about 25-30 feet high which is semiparasite. Leaves opposite, ovate; Flowers small of purple colour and in clusters. Fruits purple berries heart wood fragrant
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Heart wood Contains:- Resin, Tanic acid and Volatile oil which is thick, yellow and aromatic it contains Alpha and Beta santalol also Contains Aldehyde and keton, Santenone, Santalone.
ACTIONS:-Cooling, Bitter, Styptic, Demulcent, Astringent, Antidote,Diuretic, Diphoratic, Aphrodiasic, deodorant, disinfectant, cardiotonic
USED IN:- Fever, Scorbutic, Thirst, Vomiting, Disuria, Leucorrhoea, Dysentery, Skin diseases; Erysipelas, Sudamina, haemorrhaids, micturation, Leprosy urticaria, cough bronchitis.

प्रचलित नाम- सफेद चन्दन

प्रयोज्य अंग- काष्ठसार एवं तेल।

स्वरूप-सदाहरित मध्यम कद का वृक्ष जिसकी ऊँचाई लगभग २५-३० फीट जो अर्ध परजीवी होता है। पत्ते अभिमुख अण्डाकार। पुष्प छोटे बैंगनी रंग के गुच्छों में होते हैं। फल बैंगनी रंग के मांसल होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- काष्ठ सार में राल, टैनिक अम्ल एवं उड़नशील तेल पाये जाते हैं। इसका उड़नशील तेल गाढ़ा, पीला तथा विशिष्ठ सुगंध वाला होता है जिस में आल्फा तथा बीटा सेन्टालोल, एल्डीहाईड, कीटोन, सेन्टेनान तथा सेन्टालोन पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, तिक्त, रक्तस्तंभक, दाह प्रशामक, ग्राही, विषघ्न, मूत्रल, स्वेदजन, वाजीकर।

उपयोग-ज्वर, रक्तपित्त, तृषा, वमन, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रघात, श्वेतप्रदर, प्रवाहिका, चर्मरोगों में (खाज-खुजली), विसर्प, स्वेदराजिका में प्रयोग किया जाता है। चंदन का प्रयोग-पिसे हुए चन्दन को जल में भिगोकर स्थानिक शोध, अर्धाव भेदक, ज्वर में लेप करने से लाभ होता है। विसर्प, स्वेदराजिका में त्वचा पर ठंडक लाने के लिये चन्दन को जल में घिसकर लगाया जाता है।

चर्मरोगों (खाज-खुजली) में चन्दन का लेप करने से लाभ होता है। तृषा में चन्दन को नारियल के जल में घिसकर पिलाने से (दो तोला) लाभ होता है। रक्तातिसार में चावल के धोवन में चन्दन घिसकर मधु तथा मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

वमन में चन्दन को आंवले के रस में सेवन से लाभ होता है। श्वेतप्रदर तथा प्रमेह में चन्दन का क्वाथ बनाकर सेवन से लाभ होता है। चन्दन के तेल का प्रयोग अनेक रोगों में किया जाता है। यह मूत्र जनन, वृक्कोत्तेजक,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कृमिघ्न, कफ नि:सारक है। सोजाक में चन्दन के तेल की प्रतिदिन तीन बार १५-२० बूँदे देने से लाभ होता है। चन्दन के तेल का प्रयोग छोटी इलायची एवं सोंठ के फांट के साथ किया जाता है।

बार-बार होने वाले मूत्र (बस्ती शोथ में) में बताशे में दो-तीन बूँदें चन्दन के तेल की डालकर दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त कफयुक्त कास में भी इसका सेवन लाभकारी है। कर्णशूल, दंतशूल में चन्दन के तेल का प्रयोग लाभकारी। खुजली तथा फुन्सियों में चन्दन के तेल में सरसों का तेल (समभाग) मिलाकर स्थानिक प्रयोग करने से लाभ होता है।

मात्रा-तेल ५-१५ बूँदे। काष्ठ सार का चूर्ण २-४ माशा।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'जिन्दगी में, रहन-सहन में सादगी आए तो फिजूल की चीजें बनाने वाले कारखाने कम होंगे और उनसे पैदा होनें वाला प्रदूषण भी कम होगा। मुट्ठी भर लोगों को सकल ऐश्वर्य उपलब्ध कराने की बजाय सबको रोटी, कपड़ा, मकान और पीने का पानी दिलवाना हमारा लक्ष्य हो, तो हम प्रकृति को कम से कम पीड़ित करते हुए प्रगति कर सकेंगे।' - डॉ. आत्माराम (प्रख्यात गाँधीवादी वैज्ञानिक)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूचीमुखी मूर्वा Sansevieria roxburghiana Schult. HAEMODORACEAE

254

ENGLISH NAME:- Sansiviera. Hindi - Rasna

PARTS-USED:-Rhizome.

DESCRIPTION:- A perennial herb with under ground rhizome, radical tough leaves with light green intruppted bands.

TASTE:-Slightly sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Rhizome Contains:- large amount of Salicilic acid.

ACTIONS:-Laxative, Antidote, Sweet, Pungent, Expectorant, Tonic.

USED IN:- Rhizome is used in consumptive complaints, chronic cough Tender rhizomes given to children to clear throat of viscid Phlegm, Anti thrust, Polyuria, Tuberculosis, Fever, Arthritis, boils.

प्रचलित नाम- नागदमन

प्रयोज्य अंग- भूमिजन्य कांड।

स्वरूप-एक बहुवर्षीय चिरस्थायी क्षुप जिसमें भूमिजन्य कांड होता है। पत्र मूल पत्रीका, पत्ते कठोर जिनमें गहरे हरे तथा हल्के हरे रंग के एकान्तर पट्टे होते हैं। पत्तों के बीच से पुष्प ध्वज निकलता है।

स्वाद-अल्प मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके भूमिजन्य कांड में प्रचुर मात्रा में सेलीसीलीक अम्ल पाया जाता है।

गुण- मृदुरेचक, विषहर, मधुर, चरपरा, कफ नि:सारक, बल्य।

उपयोग- भूमिजन्य कांड अजीर्णता में, जीर्ण कास में, भूमिजन्य कांड की कोमल शाखाएँ या पत्तों का रस बच्चों के गले में फँसी बलगम निकालने में लाभकारी। यह तृषाहर, प्रमेह, यक्ष्मा, ज्वर, संधिशोथ में तथा फोड़े-फुन्सियों में प्रयोज्य। जीर्ण कास में इसके मूल का रस मधु के साथ सेवन से लाभ होता है।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरिष्ट Sapindus trifoliatus Linn, S. mukorossi Gaertn. SAPINDACEAE.

ENGLISH NAME:- Soapnut Tree. Hindi - Reetha

255

PARTS-USED:-Fruits.

DESCRIPTION:- A medium sized tree; Leaves pinnate compound, leaflets 2-3 pairsa cúte, entire, hairy below. Flowers dull white, rusty hairy panicles. Fruits berry fleshy.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruit Contains:-Saponin.

ACTIONS:-Fruits, Bitter, Oily, Antidote, Expectorant, Emetic, Carminative, Anti-inflammatory, Anodyne, Anti pruritic.

USED IN:- Migrain, Lice, Dandriff, Abscess, Carbuncle, Cough, Asthma, Skin diseases-Leprosy, Prurties; Arthritis, Insect-bite, Scorpion and Honeybee sting.

प्रचलित नाम- रीठा

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप-मध्यम कद का एक सुन्दर वृक्ष; पत्ते पक्षवत संयुक्त; पत्रिका २-३ जोड़ी में, नोकदार अखण्ड, नीचली सतह रोमश, पुष्प मटमैले सफेद, रस्टी रोमश गुच्छों में; फल मांसल गोल होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके फल में सेपोनिन प्रचूर मात्रा में पाया जाता है।

गुण-फल तिक्त, स्निग्ध, विषघ्न, कफघ्न, वामक, वातहर, शोथघ्न, वेदनास्थापक, कण्डुघ्न होते हैं।

उपयोग-अर्धाव मेदक, बालों में जूं तथा रूसी नाशक, फोड़े, गण्ड, कास, श्वासरोग में; चर्मरोग (कुष्ठ, कण्डु)में, संधिशोथ में लाभकारी। कीटदंश बिच्छू तथा मधुमक्खी दंश में लाभकारी। अर्धाव भेदक में इसके फल की उष्ण झाग का नस्य लेने से लाभ होता है। अल्पमात्रा में पीने से वमन होकर विष निकल जाता है। फल के जल से बाल धोने से जूँ मरकर गिर जाती है। इसके अतिरिक्त सिर में रूसी, फोड़े-फुन्सी हो तो इसके जल से सिर के बाल अच्छी तरह मसल कर धोने से ठीक होते हैं। अफीम, कलिहारी का विष शरीर में गया हो तो इसका जल पीने से विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है। बिच्छू के विष को नष्ट करने के लिये इसके फल को चिलम में धूम्रपान करना चाहिये। हिस्टीरिया में-रीठा का नस्य लेने से हिस्टीरिया का रोगी होश में आ जाता है। नष्टार्त्तव में इसके फल की छाल की छोटी गठरी बनाकर योनि में रखने से लाभ होता है। शीघ्र प्रसव के लिये इसके फल की झाग में रुई का फाहा भिगोकर योनि में रखने पर प्रसव शीघ्र हो जाता है। क्लोरोसिस (यौवन पाण्डु में) रीठा के फल के टिंक्चर का प्रयोग इस रोग में लाभकारी होता है। अभिष्यंद (सरल ओपथेलमिया) में इसके फल को उबालकर इस जल को बूँदों को नेत्रों की पलकों के नीचे रखने से लाभ होता है। रीठा के फलों को इपीकाक का प्रतिनिधि माना गया है।

मात्रा-५-१० रत्ती। वामक- १ से २ ड्राम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अशोक/शोक नाशन Syn : Saraca indica Linn. Saraca asoca (Roxb.) De Wilde

CAESALPINIACEAE (LEGUMINOSAE)

256

ENGLISH NAME:- Jonesia Ashoka. Hindi - Asoka, Seita asok
PARTS-USED:- Stem-bark, Flowers and Seeds.
DESCRIPTION:- A small ever green tree with drooping branches, leaves paripinnate compound, 3 to 6 pairs of leaftets; flowers orange or orange yellow in congested clusters.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains:- Glycosides, Saponins, Tannins, Catechol, Essential oil, Haematoxolyne, Ketosterol, Apigenin, Cyanidin, Kaempferol, Pelargonidin, Quercetin, Calcium, Iron, Fatty acid & Gallic acid.
ACTIONS:-Astringent, Stimulant, Spasmodic, Blood purifier, Anti-inflammatory, Cooling, refrigerant, anthelmintic, febrifage, demulcent, stypric
USED IN:- Metrorrhagia, Uterine affections, Disuria, Leucoderma, Calculii, Cardiac stimulant, Anti-bacterial, Anti-fungal, Anti-tumour, Anti-Cancer, Improves complexion, Colic dysentery, Piles, Ulcers, Flowers are used in Blood dysentery.

प्रचलित नाम- सीता अशोक/असली अशोक
प्रयोज्य अंग-.कांड की छाल, पुष्प तथा बीज।
स्वरूप-सदाहरित लघु वृक्ष इसकी शाखाएँ झुकी हुई होती हैं। पत्र पक्षवत्, संयुक्त जिसमें ३-६ जोड़ी पत्रिकाओं की होती हैं। पुष्प रक्तवर्णी एवं घनिष्ठ गुच्छों में होते हैं।
स्वाद-तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसकी छाल में ग्लायकोसाईड्स, सैपोनिन्स, टैनिन्स, कैटेचॉल, उड़नशील तेल, हीमोटोक्सीलिन, किटोस्टीरॉल, ऐपिजैनिन, सायनीडीन, किम्फेरॉल, पेलारगोनीडीन, क्वेरसैटिन, कैल्शियम, लोह, मेद अम्ल तथा गैलिक अम्ल पाये जाते हैं **गुण**- ग्राही, उत्तेजक, उद्वेष्टक, रक्त शोधन, शोथघ्न, शीतल।
उपयोग-रक्त प्रदर, गर्भाशय रोग, मूत्रकृच्छ्र, श्वित्ररोग, अश्मरी, हृदयोत्तेजक, कीटाणुघ्न, फंफूदीघ्न, अर्बुदशामक, कैन्सर शामक, वर्णय, शूलयुक्त प्रवाहिका (पेचिश) अर्श, व्रण में लाभकारी। पुष्पों का प्रयोग रक्त प्रवाहिका में लाभकारी। रक्त प्रदर में इसकी छाल का क्षीर पाक, प्रात:काल में पिलाते हैं। क्षीर पाक इसकी छाल का चूर्ण एक चम्मच, एक कप दूध में एक कप जल मिलाकर आवश्यक शर्करा मिलाकर गरम करने से (जल को सुखाने तक) बनता है। इसका सेवन करने से रक्त प्रदर में लाभ होता है। श्वेत प्रदर में आँवला एवं गिलोय के चूर्ण को अशोक की छाल के चूर्ण के साथ (सम भाग) उबालकर, ठंडा होने के पश्चात् ऊपर से जल को निथार कर उसमें मधु मिलाकर प्रात: एवं रात को सेवन करने से लाभ होता है। मूत्रघात में इसके बीज का चूर्ण एक चम्मच जल के साथ सेवन से मूत्रघात तथा अश्मरी का नाश होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्तातिसार में इसके पुष्पों का चूर्ण एक चम्मच बकरी के दूध में या जल में मिलाकर सेवन से लाभ।

गर्भाशय रोगों में अशोकारिष्ट प्रतिदिन भोजन पश्चात् (सुबह सायं) एक-एक चम्मच सेवन से लाभ। या अशोक के ८० ग्राम पुष्प ४०० मि.ली. जल में उबालकर १५० मि. ली. बाकी रहने तक उबालें, इसमें इतना ही गाय का दूध मिलाकर फिर उबाल लें, जल सूखने तक। इसका सेवन प्रातः एवं सायं करने से लाभ।

मात्रा-छाल का चूर्ण-१०-१५ ग्राम।
छाल का क्वाथ-३० मि. ली.।
पुष्प का चूर्ण-३ से ६ ग्राम।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आँवले का वृक्ष सब वृक्षों से श्रेष्ठ है; क्योंकि यह भगवान् विष्णु को प्रिय है। इसके स्मरण मात्र से मनुष्य गोदान का फल प्राप्त करता है। दर्शन से दुगुना फल मिलता है। अतः समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए आँवले के वृक्ष का पूजन करना उचित है। कार्तिक में आँवले के वृक्ष का पूजन करना उचित है। जो मनुष्य कार्तिक में आँवले के वन में भगवान् श्रीहरि की पूजा तथा आँवले की छाया में भोजन करता है, उसका पाप नष्ट हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाषाण भेद Syn. Saxifraga ligulata Wall Bergenia ligulata Wall. SAXIFRAGACEAE.

257

ENGLISH NAME:- Indian Rock foil. Hindi - Pasanbhed

PARTS-USED:-Roots and Leaves.

DESCRIPTION:- Evergreen herb with thick redish black root. Leaves fleshy orbicular, fleshy, minutely hairy, 4-5leaves to gether in cluster. Flowers small white, pink purple.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Root Contains:-Tanic acid, Gallic acid, Sugar, Gum, Calcium, Starch, Calcium, oxalate, Mineral salts, Albumin.

ACTIONS:-Diuretic, Anticalculus, Astringent, Anti-ulcer, Styptic.

USED IN:- Disuria, Heart disease, Piles, Abdominal lump. Genital disorder, Polyuria, Cough, Diarrhoea, opthalmia, Kindeypain and Calculii, Abdominal Colic.

प्रचलित नाम- परवान भेद/सिलफड़ा

प्रयोज्य अंग- मूल तथा पत्र

स्वरूप-सदाहरित, छोटा क्षुप, जिसका मूल लालिमा लिये काला एवं दृढ़ होता है। पत्र गोलाकार, मांसल, सूक्ष्म रोमश, ४-५ के गुच्छों में। पुष्प छोटे सफेद, गुलाबी या बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में टैनिक अम्ल, गैलिक अम्ल गोंद शर्करा, कैल्शियम, कैल्शियम ओक्सेलेट, स्टार्च, खनिज क्षार तथा एल्ब्युमिन पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, अश्मरीघ्न, ग्राही, स्नेहन तथा श्लेष्मघ्न, शीतवीर्य, व्रणघ्न, रक्त स्तंभक।

उपयोग-इसके मूल मूत्र विरेचनीय, व्रणहर, बस्तिशुद्धिकर है। मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, गुल्म, अर्श, योनिरोग, प्रमेह में मूल का प्रयोग लाभकारी है। इसके मूल के प्रयोग से कास, आमातिसार, फुफ्फुस विकारों में लाभ होता है। नेत्राभिष्यदं एवं फोड़े-फुन्सियों में इसके मूल को जल में घिसकर इसका लेप लाभकारी होती है। बच्चों में दंतोद्भव के समय इसके मूल को मधु के साथ घिसकर लगाने से बच्चों के मुख में होने वाले व्रण में लाभ होता है। दाँत आने में कम तकलीफ होती है। आंत्र शिथिलता के कारण होने वाले अतिसार में इसके मूल का प्रयोग लाभकारी होता है। वृक्कशूल तथा अश्मरी में इसके मूल के चूर्ण का जल के साथ सेवन से लाभ होता है, (५-१०रत्ती) बच्चों के उदरशूल में इसके पत्रों के स्वरस में शर्करा मिलाकर सेवन से लाभ होता है। प्रौढ़ों के उदरशूल में इसके पत्रों के स्वरस में शर्करा एवं सोंठ मिलाकर पिलाना चाहिए। पिताश्मरी में पत्रों के स्वरस में मिश्री, शिलाजीत तथा दूध मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

मात्रा-मूल का चूर्ण १ से २ ग्राम। पत्र स्वरस एक से दो तोला।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तिल Sesamum indicum Linn. PEDALIACEAE

258

ENGLISH NAME:- Sesame. Hindi - Til, Tilli
PARTS-USED:-Leaves, Seeds and Flowers.
DESCRIPTION:- A small annual herb with square stem Leaves are of various types. Flowers white to deep purple. Seeds flat ovate and oily.
TASTE:-Acrid-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contain:-Oil, Carbohydrates & Protein. Black Til contains more protein and lesscarbohydrates; Leaves contain more Mucilage and Calcium.
ACTIONS:-Seeds are Sweet and oily, Expectorant, Diuretic, Astringent, Carminative.
USED IN:- Seed's oil is Fatty, Carminative, Diuretic, Aphrodisiac, Lactogogue, Tonic, Wound healer, improves hairs growth, used in Disuria, Wound healing, Skind disease, Spermopoitic, Anthelmintic, urinary Calculii, Dysentery, Arthritis, Hair loss, Piles, Indigestion.

प्रचलित नाम- तिल

प्रयोज्य अंग- पत्र, बीज तथा पुष्प।

स्वरूप-एक वर्षीय लघु क्षुप जिनका कांड चौपहल होता है। पत्ते भिन्न पत्री, दन्तुर तथा अखण्ड होते हैं। पुष्प नलिकाकार द्विओष्ठाकार, भिन्न वर्णी (सफेद या गहरे बैंगनी रंग) होते हैं। फलियाँ लम्बी, (२ इंच) गोल अनेक बीजों युक्त, बीज तैलीय होते हैं।

स्वाद-कटु-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में तेल, कार्बोदित तथा प्रोट्रीन पाये जाते हैं। काले तिल में अधिक प्रोट्रीन्स तथा कार्बोदित कम मात्रा में पाये जाते हैं। इसके पत्रों में लुआब तथा कैल्शियम अधिक मात्रा पाया जाता है **गुण**- बीज-मधुर तैलीय, कफनि:सारक, मूत्रल, ग्राही, वातानुलोमक।

उपयोग- इसके बीजों का तेल स्नेहन, आनुलोमक, मूत्रल, वाजीकर, स्तन्य जनन, आर्तवजनन, बल्य, व्रणरोपण, केश्य, इसका प्रयोग अल्पमूत्र, व्रणरोपण के लिए, चर्मरोगों में, वृष्य (शुक्रवर्धक), कृमिनाशक, मूत्राश्मरी, प्रवाहिका, संधिवात, केशवर्धक, अर्श, रक्तार्श, रक्तातिसार, कुपचन में लाभकारी है। दाँतों के लिए तिल हितकर है, क्योंकि इसमें कैल्शियम अधिक मात्रा में पाया जाता है। तिल का सेवन २५ ग्राम, प्रतिदिन करने से दाँत मजबूत होते हैं (तिल को चबाकर)। इसके अतिरिक्त मुँह में तिल का कुल्ला भरकर (५-१० मिनट) रखने से पायोरिया ठीक होकर दाँत मजबूत हो जाते हैं। यह शरीर की त्वचा के लिए लाभकारी, प्रतिदिन तिल के तेल की मालिश करने से मनुष्य कभी भी बीमार न होकर असमय वृद्धावस्था में नहीं पहुँचता। इसके तेल की मालिश से रक्तविकार, कटिशूल, अंगमर्द, पिण्डोद्वेष्टन वातव्याधि जैसे रोग नहीं होते। सिर के बालों के लिए यह तेल लाभकारी.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, प्रतिदिन इस तेल का सेवन करने वाला तथा सिर में मालिश से बाल सदैव अच्छे रहते हैं। अग्नि, मेधा जनक–तिल के सेवन से जठराग्नि प्रदीप्त होकर मेधा बढ़ती है। विद्यार्थीयों के लिए इसका सेवन बहुत ही लाभकारी है, क्योंकि इससे बुद्धि, स्मरणशक्ति तथा ग्रहण शक्ति बढ़ती है। तिल का सेवन अपनी दिनचर्या का एक हिस्सा बना लेना चाहिए। इसका सेवन युवा कन्याओं के लिए जिनको मासिक ऋतु चक्र रुक कर साफ न आता हो तथा विवाहित महिलाओं के लिए जिनको मासिक ठीक से न आता हो, अत्यन्त लाभकारी है, क्योंकि तिल आर्त्तवप्रद है। यह मेध्य, दन्त्य, त्वच्य तथा बल्य गुणों से भरपूर है। अल्पमूत्र के लिए इसके सेवन से मूत्र अल्प मात्रा में होता है। प्रमेह रोग में मूत्र अधिक होता है, यानि 'डायबिटिस इन सिपिडीस' या उदकमेह में तिल का उपयोग बहुत ही लाभकारी है। रात को निद्रा में बच्चे पेशाब कर देते हैं, उनके लिए प्रतिदिन तिल का सेवन लाभकारी है। व्रणलेप–अगर कोई घाव हुआ हो तो उसमें तिल को बारीक पीसकर भर देना चाहिए, घाव में रूइ आ जाती है। वृष्य वाजीकरण यह घी तथा दूध जैसा वाजीकरण नहीं है, किन्तु इसका प्रसरण शील तत्व तथा स्त्रोतोमुख विकासकारित्व के कारण यह वृष्यता पैदा करता है। लेखन शरीर स्थूल है तो तिल के तेल के सेवन से पतला हो जाता है। तेल का यह लेखन गुण मेद में है, शरीर की स्थूलता में उपकारक है। कृमिघ्न इसका तेल कृमियों का नाश करने वाला है। गर्भाशय शोधन गर्भाशय के दोषों को दूर करने वाला जो प्रजा स्थापन के लिए गर्भाशय को तैयार करता है। रुई का फाया तिल के तेल में भिगो कर योनि अग्र के पास रखने से श्वेत प्रदर ठीक हो जाता है। स्थूल शरीर वाली स्त्रियों को तिल का तेल पिलाना लाभकारी है। संधिवात में तिल तथा सोंठ समभाग लेकर प्रतिदिन आधा–आधा तोला सेवन करना चाहिए (तीन से चार बार)। गंजेपन में सिर के बालों में रूसी पड़ती है, ऐसे समय में गोक्षुर तथा तिल के पुष्प (समभाग) घी तथा मधु में पीसकर सिर पर लेप करने से गंजापन दूर होता है। रक्तातिसार में तिल का चूर्ण बकरी के दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है। आमातिसार में इसके ताजे पत्रों को जल में भिगो दो जल में चिकना लुआवा हो जायेगा, उसे पिलाने से आमातिसार ठीक हो जाता है।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाक शाल Shorea robusta Gaertn DIPTEROCARPACEAE

259

ENGLISH NAME:- The Sal Tree. Hindi - Sal, Saraiya

PARTS-USED:-Bark, Wood Resin and Seeds.

DESCRIPTION:- A large deciduous tree, leaves Ovate large, rounded or cordate at bare, bluntly acuminate, Flowers yellowish, inraceme in clusters Seeds are five winged.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Seeds Contains:- Fatty oil which is Known as Salbutter wood contains: Oleo resin.

ACTIONS:-Astringent, Wound healing, Anthelmintic.

USED IN:- Bark-wood-Seeds & Gum: Useful in Diabetes, Cough, Asthma, Bleedingpiles, Bleeding diarrhoea, Dysentery, Wound healer, Sprain, Farcture, Ear disease, Opthalmia, Uterine-disease, Dyscrasia, Anaemia, Polyuria.

प्रचलित नाम- साल/साखू।

प्रयोज्य अंग- छाल, काष्ठ, राल तथा बीज।

स्वरूप-यह एक विशाल वृक्ष है। इसके पत्ते सरल अण्डाकार-आयताकार होते हैं। पुष्पपीत वर्णी जो गुच्छों में लगते हैं। इसके बीज पाँच पंखों वाले होते हैं।

स्वाद-कषायरस।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में वसा तेल जो सालबटर के नाम से जाना जाता है। इसके काष्ठ में ओलियो राल पाया जाता है।

गुण- ग्राही, व्रणरोपण, कृमिघ्न।

उपयोग- काष्ठ, छाल, बीज तथा गोंद का उपयोग-मधुमेह, कास, श्वास रोग, रक्तार्श, रक्तातिसार, प्रवाहिका व्रणरोपण, मोच, अस्थिभग्न, कर्ण रोग, नेत्र रोग, बहरापन, रक्तदोष, योनिरोग, पाण्डुरोग तथा प्रमेह में लाभकारी।

राल की मलहम राल एवं तिल का तैल सम भाग लेकर, सबसे पहले तिल के तेल को गरम करें। तेल में से धुंआ निकलने लगे, तब इसमें राल डाल दो एवं तुरंत ही इसको ठंडे जल में उाल दो इसको हाथ से ही अच्छी तरह फैंटते रहो, झाग बनेगी, बार-बार जल बदलते रहो, यह फूल कर गोल गोंद जैसा हो जायेगा, इसके पश्चात् इस मलहम को जल में डुबोकर रखना चाहिए, २ से ४ दिन तक जल बदलते रहना चाहिए, इसमें यदि थोड़ा सा नीला थोथा मिलाया जाये, तो अधिक गुणकारी मलहम तैयार होगा। इसका प्रयोग जले हुए अंग पर लगाने से अधिक लाभ होकर, व्रण रोपण क्रिया तीव्र होती है। इस मलहम को मलमल के कपड़े पर लगाकर इस कपड़े को व्रण पर रख देने से ही लाभ होता है, इसके अतिरिक्त योनि कण्डू तथा वृष्ण कच्छू पर भी बहुत लाभकारी।

इस मलहम वाली पट्टी को गण्ड-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फोड़े एवं फुन्सी पर रखने से गण्ड पककर फट जाते हैं तथा शीघ्र ही रोपण क्रिया हो जाती है। सर्ज पर्पटी चूर्ण (वात, कफ ज्वर में, अतिसार के संग्रहणी) हो उस समय प्रवाहिका, रक्तार्श, रक्त प्रवाहिका एवं भ्रम में इसका उपयोग लाभकारी।

बनाने की पद्धति-इसके राल का चूर्ण-१६ तोला, शाल्मली (सेमल) की गोंद का चूर्ण-दो तोला, बना कर तैयार रखिये। सबसे पहले एक पात्र में राल डालकर धीमी आंच पर रखकर गरम करें, पिघलने तक, राल के पिघलने के पश्चात् तुरंत ही उसमें दो तोला सेमल चूर्ण डाल दें, जब तक अच्छी तरह एकीकरण न हो जाय, तब तक हिलाते रहें, इस मिश्रण को खरल में डालकर-चूर्ण बना लें तथा एक छोटी बोतल में भर लें। इस चूर्ण को ही सर्जपर्पटी कहते हैं।

मात्रा-काष्ठ का चूर्ण- ढाई ग्राम।
छाल का चूर्ण-५ ग्राम।
राल का चूर्ण-ढाई ग्राम।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जिस घर में आँवला रखा रहता है, वहाँ भूत-प्रेत और राक्षस नहीं जाते। जो कार्तिक में आँवले की छाया में बैठकर भोजन करता है उसके एक वर्ष तक अन्न संसर्ग से उत्पन्न हुए पाप का नाश हो जाता है।

- स्कन्द पुराण, वैष्णव खण्ड, कार्तिक मास माहात्म्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बला (बरियार) Sida cordifolia Linn. MALVACEAE

260

ENGLISH NAME:- Country Mallow. Hindi - Bariyari
PARTS-USED:-Roots, Leaves, Seeds and Whole plant.
DESCRIPTION:- An erect annual or perennial herb, 2 to 4 feet high, branched, pubescent. Leaves are heart shaped, ovate, cordate, nerrate hairy with crenate margin. Flowers small yellow, axillary
TASTE:-Extremely bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contains:-Beta-sitostarol, Alkaloids-Vasicinone, Vasicine, Vasicinol, Choline and Betain, Seeds Contain:-Ephedrine, Fatty oils, Steroids, Resin, Mucin, Resin acid, Sterculic acid, Malvalic acid, Linoleic acid, Potassium Nitrate.
ACTIONS:-Tonic, Diuretic, Astringant, Aphrodisiac, Blood purifier, Wound healing.
USED IN:- Whole plant:-Juice mixed with water is beneficial in spermatorrhoea, Seeds used in: Colic & Gonorrhoea, Leaves infusion is Febrifuge, Roots are Tonic, Astringent Diuretic, Infusion of Roots is used in: Nervous and Urinary diseeses, Cystitis, Bleeding piles, Chronic dysentery, Leucorrhoea.

प्रचलित नाम- खरैटी

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पत्र तथा बीज।

स्वरूप-यह उन्नत एक वर्षायु याबहुवर्षीय क्षुप जिसकी ऊँचाई २-४ फुट होती है। शाखाएँ रोमश, पत्ते हृदयाकार, रोमश, पत्र किनारी दंतुर तथा पुष्प छोटे पीतवर्णी होते हैं।

स्वाद-अति तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में बीटा-सिटोस्टीराल, क्षारभ-वेसीसीनॉन, वेसीसाइन, वेसीसिनॉल, कोलाईन तथा बीटेइन, इसके बीज में इफेड्रीन, वसा तेल, स्टीरोइड्स, राल, म्युसीन, रालीय अम्ल, स्टर्कयुलिक अम्ल, माल्वेलिक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, पोटेशियम नाइट्रेट पाये जाते हैं।

गुण- बल्य, मूत्रल, ग्राही, वाजीकरण, रक्त शोधन, व्रणरोपण।

उपयोग- इसके पंचांग का स्वरस जल में मिलाकर देने से शुक्रमेह में लाभकारी। इसके बीज, आंत शूल तथा अपसर्गिकामेह में, पत्रों का फांट-ज्वरहर, इसके मूल, बल्य, ग्राही, मूत्रल, मूल का फांट, नाड़ी तथा मूत्र रोगों में, मूत्राशय शोथ, रक्तार्श, जीर्ण प्रवाहिका, श्वेतप्रदर में लाभकारी। मूल का फांट-अदरख के रस के साथ सेवन से विषम ज्वर में लाभकारी। श्वेतप्रदर में मूल का चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन से लाभ। नेत्राभिष्यंद में इसके पत्रों को पीसकर बांधने से लाभ। राजयक्ष्मा में इसकी जड़ से सिद्ध घृत का उपयोग मधु के साथ करने से लाभ। आयु वृद्धि के लिये-इसकी जड़ को दूध में पीसकर पिलाते हैं तथा भोजन में चावल घी तथा दूध मिलाकर सेवन से लाभ होता है। रक्त पित्त में इसके मूल से सिद्ध किया हुआ गाय का दूध सेवन करने से लाभ होता है। शूल युक्त हरस (अर्श) में बला एवं पृश्निपर्णी से सिद्ध किया हुआ दूध या घी सेवन करने से लाभ होता है। व्रण रोपण में

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके मूल को जल में घिस कर लगाने से लाभ होता है। वातरक्त में इसके मूल का कल्क एवं मूल का क्वाथ से पकाया हुआ तेल, इस तेल के सेवन तथा बाह्योपचार से यह रोग ठीक हो जाता है। कफ जन्य विसर्प में इसके मूल को जल में घिस कर लगाये जाने से लाभ होता है। मद्यार्क जन्य तृषा में-अति मद्यपान करने से उत्पन्न तृषा में बला के मूल का क्वाथ पिलाना चाहिए।

स्वर भेद में-इसके मूल का चूर्ण मधु के साथ सेवन करने से लाभ होता है। आंत्र वृद्धि में इसके मूल से सिद्ध दूध के साथ एरण्ड तेल पीने से आध्मान एवं शूल युक्त आंत्र वृद्धि में लाभ होता है। उन्माद में सफेद पुष्प वाली बला की जाति के मूल का चूर्ण साढ़े तीन तोला, अपामार्ग मूल चूर्ण एक तोला, दूध ७५० मि.ली., जल ७५० मि. ली. इन सब को मिलाकर उबालें, जल का अंश जल जाने पर उतार लें, ठंडा होने पर दूध को छानकर प्रातः काल सेवन करने से उग्र तथा घोर उन्माद ठीक हो जाता है। उरोग्रह में इसके मूल का रस निकाल कर थोड़ी-सी हींग डालकर सेवन से लाभ होता है। प्रसूता शूल में -इसके मूल के क्वाथ सिद्ध घृत प्रायः सायं दो बार पिलाने से लाभ होता है। इसके मूल में इफैड्रीन होता है जो श्वासरोग से पीड़ित रोगी के लिए अति लाभदायी होता है, इसलिए बला के मूल को उबाल कर पीना या चूर्ण बनाकर रोज जल के साथ लेना चाहिए, जो कि जंगली अवस्था में प्राप्त इस वनौषधि में इफैड्रिन का मात्रा कम होती है, किन्तु यदि इसको खेतों में खाद वगैरह का व्यवस्थित प्रयोग कर उगाया जाता है तो इसमें इफैड्रिन अधिक मात्रा में उपलब्ध होने की पूरी संभावना हो सकती है। इसके मूल तथा बीज पौष्टिक, वातहर, शीतवीर्य, वाजीकरण एवं बल्य है, जो वात, [illegible]त्त तथा कफ इन तीनों दोषों को हरने वाले हैं। यह एक उत्तम रसायन है, प्रतिदिन इसके मूल का चूर्ण (एक तोला) दूध के साथ सेवन करना चाहिए, इसके साथ दूध, घी तथा चावल का आहार करना चाहिए। हस्त अंगघात में (अवबाहुक) इस रोग में बला के मूल को जल में उबालकर इस क्वाथ का सेवन एक माह तक करने से लाभ होता है, इसके साथ-साथ बला के तेल का मालिश करनी चाहिए, इससे अंगघात का प्रभाव कम होकर हाथ मजबूत हो जाता है। हृदय रोगियों के लिए भी बला के मूल का क्वाथ लाभदायक है।

मात्रा-पंचांग का स्वरस १/२ से १ तोला।

मूल का चूर्णः-१/२ से १ तोला।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाबला (महासमंग) Sida rhombifolia. Linn Var. retusa Mes. MALVACEAE

ENGLISH NAME:- Broom Jute Sida. Hindi - Bala

261

PARTS-USED:-Whole plant, Roots and Leaves.

DESCRIPTION:- A small erect annual or perennial herb or undershrub with stellate hairs on the branches, 2-4 feet high, leaves broadly obovote or orbicular, cuneate tip retuse Yellow flowers, capsule 7-10 carpelled.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:- Ephedrine, Cellulose, Lignin, Quanozolines, Beta-Phenethyl amines, Tryptomine, Sterculic acid, Malvalic acid, Linoleic acid.

ACTIONS:-Demulcent, Aphrodisiac Tonic, Astringent, Blood purifier.

USED IN:- Heart disease, Piles, oedema, Spermato poietic, Malarial fever, Pulmonary tuberculosis, Rheumatism, Leucorrhoea.

प्रचलित नाम- पीतबला

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, पत्र।

स्वरूप-यह वनौषधि एक उन्नत छोटी एक वर्षीय या बहुवर्षीय क्षुप या उपगुल्म जिसकी ऊँचाई २-४ फीट होती है। इसकी शाखाएँ ताराकार रोमों से अच्छादित होती हैं। पत्ते संकुचित एवं पुष्प पीतवर्णी होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें एफेड्राइन, सेल्युलोज़, लिग्रीन, क्रेनोजोलाइन्स, बीटा-फेनीथील एमाइन, ट्रिप्टेमाइन, स्टर्क्युलिक अम्ल, माल्वेलिक अम्ल तथा लिनोलिक अम्ल।

गुण- प्रशामक, वाजीकरण , बल्य, ग्राही, रक्तशोधन।

उपयोग- हृदय रोग, अर्श, शोथ, शुक्रवर्धक, विषमज्वर, फुफ्फुसीय यक्ष्मा, आमवात, श्वेत प्रदर में। मूत्रकृच्छ्र में इसकी जड़ का क्वाथ पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में वेदना कम होती है। श्वेतप्रदर में पत्रों को पीसकर दूध में सेवन या मधु के साथ सेवन से लाभ। सूजन पर पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। शीत ज्वर तथा आमवात में इसके मूल तथा सोंठ समभाग लेकर क्वाथ बनाएँ। इस क्वाथ को दो या तीन दिन तक नियमित सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा-१/२ से १ तोला।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चोब चीनी Smilex china Linn. LILIACEAE

262

ENGLISH NAME:- China-Root. Hindi - Chopehini

PARTS-USED:-Rhizome and Root tuber.

DESCRIPTION:- A large woody extensive armed, tendril climber; Leaves simple stipulate, stupules are modified in to tendrils.

TASTE:-Slightly Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Root tuber Contains:-Fat, Sugar, Gum Starch, Saponin, Glucosides, Tannins and Resin.

ACTIONS:-Stimulant Stomachic, Anti-leprotic, Rejuvenator, Tonic, Antisyphilic, Resolvent, Aphrodisiac, Nutritive, Carminative.

USED IN:- Leprosy, Kidney diseases, Bladder disease, Headache, Paralysis, Syphilis, Nervous deasease, Rheumatism, Epilepsy, Gout, Insomnia, Dyspepsia, Tuberculosis, Ulcer, Goiter.

प्रचलित नाम- चोप चीनी

प्रयोज्य अंग- भूमिजन्य कांड एवं मूल कंद।

स्वरूप-यह एक काष्टीय सघन, शाखित सूत्रारोही फैली हुई लता होती है। पत्ते सरल उपपत्र युक्त, उपपत्र सूत्रों में रूपांतरित होते हैं। पत्र में पाँच प्रधान शिराएँ होती हैं। पुष्प छोटे-छोटे जो छत्रक में होते हैं।

स्वाद-अल्प तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल कंद में वसा, शर्करा, गोंद, स्टार्च, सैपोनिन, ग्लूकोसाइड्स, टैनिन तथा राल पाये जाते हैं।

गुण- उत्तेजक, दीपन, कुष्ठघ्न, रसायन, बल्य, फिरंगहर, वाजीकर, वातघ्न, पौष्टिक।

उपयोग- कुष्ठरोग, वृक्करोग, मूत्राशय रोग, शिर:शूल, अंगघात, फिरंग रोग, स्नायविक रोग, आमवात, अपस्मार, वातरोग, उन्माद, अग्निमांद्य, राजयक्ष्मा, व्रण, गलगण्ड माला। आमवात, वातरक्त, अपस्मार तथा फिरंग में इसकी जड़ (मूल कंद) को दूध में उबालकर, इसमें इलायची तथा दाल चीनी मिलाकर इसका सेवन करने से लाभ। पुराने सिर दर्द तथा आमवात एवं फिरंग में इसके मूल को अनंत मूल के साथ (चूर्ण स्वरूप) सेवन से लाभ। इसका प्रयोग चूर्ण रूप में बहुत ही लाभकारी है। शरीर में स्थिर शक्ति एवं रक्त शुद्धि के लिये इसका चूर्ण प्रतिदिन १/४ तोले से १/२ तोला की मात्रा में दूध के साथ सेवन से लाभ होता है। संधिवात में किंग पंचम चार्ल्स को संधिवात रोग हुआ था, इस औषधि के सेवन से वह रोग नष्ट हो गया था। इसके मूल का प्रयोग फिरंग, आमवात, जीर्ण चर्म विकार एवं रक्तदोष के लिये बहुत ही प्रसिद्ध औषधि है।

मात्रा-मूल का कंद चूर्ण-२५० मि. ग्राम से ५०० मि. ग्राम (सोंठ चूर्ण दूध के साथ)।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बृहती Solanum indicum Linn Syn. S. ferox Linn. SOLANACEAE

263

ENGLISH NAME:- Indian Night. Hindi - Bhata Katari
PARTS-USED:-Fruits.
DESCRIPTION:- A perennial shrub or much branched under shrub, 4 to 6 feet high, looking like brinjal plant. Leaves stellately wooly with some white recurved spines and white flowers.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits contain Glycoalkaloids, (Solasonine), Solanine, Diosgenin, Carbohydrates, Maltase, Saccharase, Melibiase, Solamargine, Solasodine, Tometidenol, Fatty acids; Leaves Contains: Solasonine, Diosgenin, Beta-sitosterol, Solamargine, Solasodine.
ACTIONS:-Astringent, Digestive, Carminative, Expectorant, Laxative, Aphrodisiac, Stimulant, Anthelmintic, Diphoretic.
USED IN:- Asthma, Dry cough, Colic, Disuria, Chronic fever, Alopecia, Dropsy, Toothache.

प्रचलित नाम- बड़ी कटेरी (वनभंटा)

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप- एक बहुवर्षीय गुल्म या अतिशाखित अर्धगुल्म जिसकी ऊँचाई ४-६ फूट होती है, जो बैंगन के पौधे जैसा दिखता है। पत्र ताराकृत रोमश इस पर थोड़े वक्र एवं सफेद कांटे होते हैं, पुष्प श्वेतवर्णी या बैंगनी रंग के होते हैं, फल गोल कच्ची अवस्था में हरे पकने पर पीले हो जाते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके फल में ग्लायकोएलकेलोइड (सोलेसोनाइन), सोलानाइन, डायोसजेनिन, कार्बोदित, माल्टेज, सकेरेज, मेलीबायेज, सोलामारजाइन, सोलेसोडाइन, टोमेटीडीनॉल, स्निग्ध अम्ल, इसकेपत्रोंसोलेसोनाइन, डायॉसजैनिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, सोलामाजाईन, सोलेसोडाईन पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, पाचन, वातहर, कफ निःसारक, मृदुरेचक, वाजीकरण, उत्तेजक, कृमिघ्न, स्वेदजनन।

उपयोग- श्वास रोग, शुष्ककास, अंग शूल, मूत्रकृच्छ्र, जीर्ण ज्वर, गंजापन में, जलोदर, दंतशूल में, अग्निमांद्यता को दूर करने वाला। खाँसी में-इसके क्वाथ में पीपर का चूर्ण मिलाकर सेवन से खांसी में लाभ होता है। अश्मरी में इसके मूल का चूर्ण मीठे दही के साथ सात दिन तक सेवन करने से अश्मरी चूर-चूर हो कर बाहर निकल जाती है। नेत्रांजन में पके हुए फलों के बीज निकालकर उन फलों में सुरमा भर दें। फिर सात दिन तक रखे रहने दें, इसको पीसकर इसको अंजन रूप में उपयोग करें। अर्श में- इसके फलों को पीसकर एक पात्र में चुपड़ दें, फिर उस पात्र में रात को दही जमा दें, प्रातः उसका मठ्ठा बनाकर पिला दें, प्रतिदिन इस प्रकार मठ्ठा पीने से अर्श नष्ट हो जाता है। कास में -इसके पुष्प के पुंकेसर को मधु में मिलाकर अवलेह बनाकर सेवन करने से जीर्ण कास में तुरंत लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भंटकी/वृन्ताक Solanum melongena Linn. SOLANACEAE

264

ENGLISH NAME:- Brinjal/ Egg-Plant.Hindi - Bhata, Baigan
PARTS-USED:-Roots, Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A small erect, prickly shrub, about 3 feet high. Leaves simple alternate shallawly lobed. Flower purple blue.
TASTE:-Acrid-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:- Solanine, Arginine, Aspartic acid, Histidine, Leucine, Methionine, Pipecolic acid, Phenylalanine, Theonine, Tryptophan, Valine, Choline, Nicotinic acid, Riboflavin, Vitamin-A and C, Fructose, Glucose, Sucrose, Antho cyanin Lycoxanthin, Caffeic acid & Chlorogenic acid.
ACTIONS:-Sweet, Pungent, Appitizer, Nutritive, Cardiotonic, Stimulant, Antibillous, Stomachic, Digestive.
USED IN:- Leaves: Analgesic & used as Narcotic, Fruits: Stomachic, Rich in Vit B_2 and used in Rheumatism, Liver disease; Leaves are also used in Asthma, Bronchitis, Disuria; Roots are Stimulant and used in Asthma.

प्रचलित नाम- भंटा-बैगुन

प्रयोज्य अंग- मूल, पत्र, फल तथा बीज।

स्वरूप-एक लघु उन्नत कंटकी गुल्म जिसकी ऊँचाई लगभग ३ फुट होती है। पत्ते सरल एकान्तर, रोमश, अलप खण्डित होते हैं। पुष्प बैंगनी नील वर्णी होते हैं।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके फल में सोलेनाइन, आर्जीनाइन, एस्पारटीक अम्ल, हिस्टीडाईन, ल्युसाईन, मिथियोनाइन, पिपेकॉलिक अम्ल, फेनिल ऐलाइनाइन, थियोमाइन, ट्रिप्टोफैन, वोलाइन, कॉलाइन, निकोटिनीक अम्ल, राइबोफ्लेवेन, विटामिन्स-ए तथा सी, फ्रुक्टोज, ग्लूकोज सुक्रोज, एन्थोसायनीन, लायकोजैन्थीन, कैफिक अम्ल तथा कोरोजैनिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- मधुर, तीक्ष्ण, रुचिकर, पौष्टिक, हृदय बल्य, उत्तेजक, पित्तघ्न, दीपन, पाचन।

उपयोग- पत्र शूलहर एवं निद्रा कारक, फल दीपन, विटामिन-बी२ सम्पन्न इसका प्रयोग आमवात तथा यकृत रोग में लाभकारी, इसके पत्रों का प्रयोग श्वासरोग, श्वसनी शोथ, मूत्रकृच्छ्र में लाभकारी, मूल का प्रयोग श्वास रोग में तथा यह उत्तेजक है।

ज्वर में इसके फल का शाक खाने से लाभ होता है। वृंत सहित बैंगन बहुत ही गुणकारी, खाने में त्रिदोषहर। मुर्गी के अण्डे जैसे छोटे-छोटे सफेद बैंगन अर्श के लिये विशेषत: लाभकारी होते हैं। अंगारों पर भून कर भर्त्ता बनाये हुए बैंगन पचने में लघु जठराग्नि बोधक तथा कफ-मेद वायु एवं आम का नाश करने वाले होते हैं।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काकमाची Solanum nigrum Linn. SOLANACEAE

265

ENGLISH NAME:- Black night shade. Hindi - Makoy
PARTS-USED:-Whole plant, Flowers, Leaves and Fruits.
DESCRIPTION:- An erect annual, diffused much branched herb, 1-2 feet high. Flowers small & white. Fruits berries, ripen fruits are black or orange-yellow.
TASTE:-Bitter/ Acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Alkaloids, Reducing Sugars, Glycosides, Saponins, Steroids, Leutein, Lycopene, Vitamin-C. Glucose, Fructose, Caffeic-Solasodine, Tomatidenel, Solamargine, Solasomine Trigogenin, Potassium, Iron, Sulphur, Calcium, Phosphorus.
ACTIONS:-Anti-inflammatory, Analgesic, Diuretic, Rejuvenator, Spermopoeitic, Demulecent, Expectorant, Anthelmintic, emollient, diphoretic, hydragogue.
USED IN:- Fever, Diarrhoea, Colic, Piles, Oedema, Skin disease (Psorisis Syphilis, Pruritis) Spermopoeitic, Polyuria, Anti-emetic, Useful in heart disease, Spleeno & Liver megaly, Rheumatism, Dropsy, otalgio, Piccough.

प्रचलित नाम- मकोय

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पुष्प, पत्र तथा फल।

स्वरूप-एक वर्षायु उन्नत, अर्ध प्रसरण शील अति शाखित क्षुप जो १-२ फुट ऊँचा होता है। इसके पुष्प छोटे तथा श्वेत वर्णी, परिपक्व फल काले तथा मांसल होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसमें एल्कलॉयड्स, प्रह्वासक शर्करा, ग्लाकोसाइड्स, सेपोनिन्स, स्टीरोइड्स, ल्युटिन, लायकोपीन, विटामिन-सी, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, कैफिक सोलेसोडाइन, सोलेनाइन, टोमेटीडीनॉल, सोलेमारजाईन, सोलेसोमाइन, ट्राईग्रोजेनीन, पोटेशियम, लोह, गंधक, कैल्शियम तथा फॉस्फोरस पाये जाते हैं।

गुण- शोथहर, शूलहर, मूत्रल, रसायन, शुक्रवर्धन, शामक, कफ नि:सारक, कृमिघ्न।

उपयोग- ज्वर, अतिसार, आंत्रशूल, अर्श, शोथ रोग, चर्मरोग (कण्डु सिफीलिस सोराइसिस), शुक्रवर्धक, प्रमेह, वमनशामक, हृदयरोग, प्लीहा, यकृत वृद्धि, आमवात, जलोदर। चर्मरोग (कण्डु, दाद, सोराइसिस)में मकोय के कोमल पत्रों का शाक खिलाने से तथा पत्रों का लेप करने से लाभ। किसी भी प्रकार के शोथ में इसके पंचांग को पीसकर इसका लेप लगाने से लाभ। जलशोथ में पत्रों का स्वरस अधिक मात्रा में पिलाने से लाभ। जीर्ण यकृत रोग में इसका शाक खिलाने से लाभ, शौच साफ तथा मूत्र अधिक होकर सभी दोष निकलते हैं।

कुष्ठ रोग में इसके पंचांग का रस चुपड़ने से लाभ होता है। शोथ में इसके पंचांग का शाक लाभकारी है। उरूस्तंभ में जल तथा तेल में सिद्ध किया हुआ शाक लवण रहित ही खिलाना हितकर होता है। मूषक दंश से उत्पन्न विष में मकोय से सिद्ध किये गये घृत के उपयोग से लाभ होता है। केश काले रंगने के

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिये इसके बीज एवं काले तिल दोनों समभाग लेकर तेल निकाल कर इस तेल का नस्य लेने से बालों का रंग काला हो जाता है। विसर्प के दाग के नाश के लिये इसके पंचांग का स्वरस में सोंठ घिस कर उसका लेप करने से लाभ होता है।

इसके फल भारतीय वैद्यक शास्त्र में बल कारक एवं मूत्रल बताये गये हैं, शोथ तथा हृदयरोग में इसका उपयोग होता है। गर्भ प्राप्ति के लिये रजस्वला स्त्री को शुद्ध हो जाने के पश्चात् पुष्य नक्षत्र में लाये हुए मकोय मूल का स्वरस पिलाना चाहिए। इससे स्त्री गर्भवती बनती हैं।

जीर्ण यकृत वृद्धि में इसके पंचांग का स्वरस ६ से ८ औंस की मात्रा में सेवन करने से यह मूत्रल एवं रसायन होने के कारण यकृत वृद्धि में लाभकारी होता है।

मात्रा-पंचांग का स्वरस- १ से २ ग्राम।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'दशकूप-समावाणी, दशवापी समोह्रदः।
दश-ह्रद समः पुत्रो दश-पुत्र समो द्रूमः॥'

अर्थात्-दस कुँओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब है, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है।

-शुकदेव प्रसाद

ब्रह्माजी बोले-'पलाश के पत्तों में किया हुआ भोजन चान्द्रायण के समान माना गया है, पलाश के पत्तों में एक-एक बार का भोजन त्रिरात्रि व्रत के समान पुण्यदायक और बड़े-बड़े पापों के नाश करने वाला बताया गया है। एकादशी व्रत का जो पुण्य है, वही पलाश के पत्ते में भोजन करने को भी बतलाया गया है, उससे मनुष्य सब प्रकार के दानों तथा समस्त तीर्थों का फल पा लेता है। कमल के पत्तों में भोजन करने से कभी नरक नहीं देखना पड़ता। ब्राह्मण उसमें भोजन करने से बैकुण्ठ को जाता है। ब्रह्माजी का महान् वृक्ष-पलाश पापों का नाशक और सम्पूर्ण कामनाओं का दाता है।' -पद्मपुराण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

266

ENGLISH NAME:- Kantakari. Hindi - Bhata kateri.
PARTS-USED:-Whole plant, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A spiny, diffuse, perennial hairy herb, yellow spines on all parts. Leaves deeply lobed, stellate hairy. Flowers purple. Fruits berry.
TASTE:-Biter-Acrid, Pungent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Alkaloids (Solasonine.), Diosgenin. Solacinine (Fruits), Carpestrol, Solano carpine, Solanine; Seeds Contains:- Essential oil, Solanocarpine; Flowers Contains:-Flavonol, Glycoside, Quercetin, Apigenin, Sito-sterol; Leaves Contain: Coumarine, Scopolin, Scopoletin; Esculin, Esculetin.
ACTIONS:-Carminative, Diuretic, Astringent, Alterative, Expectorant, Anti-pyretic appetizer, laxative, stomachic, anthelmints.
USED IN:- Whole Plant in:- Chronic bronchitis, Asthma, Laryngites, Alergic bronchites, Heart attack, To control blood Pressure; Decoction is useful in Gonorrhoea, Promotes Conception; Juice of berries in soar throat, Flatulance, Calculii and Constipation, lumbage, thirst.

प्रचलित नाम- कटेली/कटेरी (लघु कंटकारी)
प्रयोज्य अंग- पंचांग, फल तथा बीज।
स्वरूप-एक प्रसरणशील बहुवर्षीय कंटकी, रोमश क्षुप, सभी अंगों पर पीले काँटे होते हैं। पत्ते गहरे कटे हुए पक्षवत् खण्डित, खण्ड दन्तुर, इन पर ताराकार रोम होने से खुरदरे लगते हैं। पुष्प बैगनी रंग के नील वर्णी होते हैं। फल गोल चिकने पीले हरी धारियों वाले होते हैं।
स्वाद-तिक्त-कटु।
रासायनिक संगठन- इसके फल में एलकलॉयड्स, सोलेसोनाइन, डायोसजैनिन, सोलेसीनाइन, कार्पेस्टरोल, सोलेनोकार्पाइन, सोलानाईन; बीज में-उत्पततेल, सोलनोकापाईन; पुष्प में -फलेवोनॉल, ग्लूकोसाइड, क्वेरसेटिन, एपिजेनिन, सिटोस्टीरॉल, इसके पत्रों में- कॉमरिन, स्कोपोलिन, स्कोपोलेटिन, एस्कुलिन तथा एस्कुलेटिन पाये जाते हैं।
गुण- वातघ्न, मूत्रल, ग्राही, विपर्यय, कफ निःसारक, ज्वरघ्न।
उपयोग- पंचांग का प्रयोग जीर्णश्वसनी शोथ, श्वासरोग, स्वरयंत्र शोथ, एलर्जिक श्वसनी शोथ, हृदयघात, रक्त दाब नियंत्रण के लिये, इसका क्वाथ सूजाक मेह, गर्भधारण में लाभकारी, फल का रस, कंठ दोष, आध्मान, अश्मरी तथा विबंध में लाभकारी मूल का क्वाथ मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी तथा जलोदर में लाभकारी। अश्मरी में इसके मूल का चूर्ण तथा बृहती के मूल का चूर्ण मीठे दही में खिलाने से लाभ। ज्वर तथा कास में इसका मूल तथा गिलोय का क्वाथ बल्य रूप में भी लाभकारी, शरीर की पीड़ा कम होती है एवं मूत्र की मात्रा बढ़ती है। आमवात में पत्रों के स्वरस में काली मिर्च मिलाकर पिलाने से लाभ तथा पत्रों का लेप भी किया जाता है। गले की सूजन में इसके फलों का स्वरस लाभकारी होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोजाक में इसके पंचांग का क्वाथ बनाकर पीने से लाभ होता है। श्वेत कंटकारी की ताजी जड़ को दूध में पीसकर मासिक स्राव के चौथे दिन पिलाने से गर्भ धारण होता है। वात जन्य अर्श में इसके पंचांग का क्वाथ पिलाने से दस्त साफ आयेगा और अपान नि:सरण भी होगा। तृषा में इसके मूल का क्वाथ पिलाने से तृषा शांत होती है। कास में इसके पंचांग के क्वाथ में मुद्गर पकाकर उसमें आँवले मिलाकर खिलाने से सब प्रकार की खांसी नष्ट होती है। श्वास रोग में इसके मूल का चूर्ण एक तोला एवं हींग आधा तोला, दोनों के सूक्ष्म चूर्ण को मिलाकर उसमें से मधु के साथ चाटने से प्रबल श्वास भी तीन दिन में नष्ट हो जाता है। मूत्र के दोष दूर करने के लिये इसके पंचांग का रस १६ तोला मधु मिलाकर पिलाने से सभी प्रकार के मूत्रदोष दूर होते हैं। इंद्र लुप्त (बाल झड़ने पर) इसके पंचांग के रस में मधु मिला कर लेप करने से बाल उग आते हैं। बच्चों को लम्बे समय से खाँसी हुई हो, तो इसके पुष्पों का सूक्ष्म चूर्ण मधु के साथ बच्चे को चटाने से कितनी भी पुरानी खाँसी हो नष्ट हो जाती है। पंचांग का क्वाथ २५० मि.ली. जल में २५ ग्राम इसके पंचांग का चूर्ण मिला क्वाथ बना लें, प्रतिदिन ४०-८० मि.ली. दिन में दो बार पिलाना चाहिए। जीर्ण कास तथा जीर्ण ज्वर एवं जुकाम में कंटकारी के ताजे मूल (एक तोला), सोंठ (एक तोला), गिलोय ताजी (एक तोला) तीनों को कूटकर रात को ४०० मि. ली. जल में भिगो दो, प्रात: इसको उबाल कर क्वाथ बना लो (जब जल आधा रह जाये, तब तक उबालना चाहिए)। तत्पश्चात् इसे कपड़े से छान कर एक बोतल में भर लो, इसमें दो तोला मधु मिलाकर इसका सेवन प्रतिदिन तीन बार (प्रात:, दोपहर तथा सायं) बोतल को हिलाकर, करना चाहिए।

यदि नेफ्राइटिस हो तो इस क्वाथ में एक तोला पुनर्नवा मिलाकर सेवन करने से अत्यंत लाभ होता है। श्वास रोग में इसके ताजे पंचांग का ताजा स्वरस प्रतिदिन चार तोला, जिसमें मधु मिलाकर पिलाना चाहिए, इससे बहुत ही लाभ होता है।

मात्रा-पत्र स्वरस- २५०-५०० मि. ग्रा.। मूल का क्वाथ २-४ तोला। मूल का चूर्ण-१-२ माशा।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मांस रोहिणी/अतिरुहा Soymida febrifuga A Juss. MELIACEAE.

267

ENGLISH NAME:- Red Wood Tree. Hindi - Rohera.

PARTS-USED:-Stem Bark.

DESCRIPTION:- A large tree with red wood. Leaves large, pinnate compound, leaflets 2-6 pairs, elliptic oldong, oblique, subsessile, young leaf lets are redish with glandular dots. Flowers small greenish white on terminal racemes. Fruits hard with many winged seeds.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains:-Bitter resinous substance, Tannic acid, Galic acid.

ACTIONS:-Cooling, Bitter, Astringent, Abphrodisiac, Nutritive, Wound healing. Febrifuge.

USED IN:- Chronic fever, Mularial fever, Throot disorder, Chsonic diarrhoea, Dysentery, Wound healer, Skindisease, Hem orrhagic disease.

प्रचलित नाम- रोहिनी/रोहन

प्रयोज्य अंग- काण्ड की छाल।

स्वरूप-एक विशाल कद का ऊँचा वृक्ष जिसका काष्ठ रक्तवर्णी भूरे रंग का। पत्ते पक्षवत् संयुक्त २-६ जोड़े पत्रिका के, पत्रिका तिर्यक, कोमल पत्रिका लाली लिए हुई ग्रन्थियाँ युक्त होती हैं। पुष्प छोटे-छोटे हरित-श्वेत रंग के जो अग्र कलगियों में होते हैं। फल कठिन एवं अनगिनत सपक्ष बीज होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में एक तिक्त राल युक्त पदार्थ पाया जाता है, इसके अतिरिक्त इसमें टैनिक एसिड तथा गैलिक एसिड अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, तिक्त, ग्राही, वृष्य, पौष्टिक, व्रणरोपण, ज्वरघ्न।

उपयोग-जीर्ण ज्वर, विषम ज्वर, कंठशुद्धि करण के लिये, जीर्ण अतिसार पुरानी आँव में तथा व्रण शोधन में इसका प्रयोग लाभकारी है। रक्त तथा पित्त, चर्मरोगों में लाभकारी। रक्त पित्त में इसकी छाल का क्वाथ बनाकर सेवन करने से या छाल को जल में घिसकर सेवन करने से लाभ होता है(अल्प मात्रा) में। किसी भी तरह की चोट लगी हो या गिरने से चोट लगी हो तो छाल के प्रयोग से बहुत ही लाभ होता है। चर्मरोगों में इसकी छाल के क्वाथ का बाह्योपचार करने से चर्मरोग ठीक हो जाते हैं। मांस उत्पन्न करने का गुण या घाव में रूझ लाने का गुण इसमें होने के कारण ही इसका नाम मांस रोहिणी पड़ा है। फेब्रीफ्युगा का अर्थ ज्वर नाशक। जीर्ण ज्वर में इसकी छाल का चूर्ण आधा तोला जल के साथ सेवन से ज्वर ठीक होकर शक्ति प्राप्त होती है तथा भूख लगती है। जीर्ण अतिसार एवं प्रवाहिका में इसकी छाल के चूर्ण का सेवन करने से लाभ होता है। मलेरिया ज्वर में इसकी छाल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का क्वाथ एक औंस की मात्रा में नित्य तीन बार सेवन से लाभ होता है।

रोहिनी की छाल श्रेष्ठ ग्राही एवं पौष्टिक है, यदि अधिक मात्रा में सेवन किया जाता है तो चक्कर आते हैं, इसलिए दो तोला का फांट बनाकर २४ घंटे में थोड़ा-थोड़ा सेवन कराना चाहिए।

व्रण में इसकी छाल के क्वाथ से व्रण धोने से व्रण ठीक होकर रूझ आती है। सामान्यतः छाल के क्वाथ का बाह्योपचार जबकि छाल के चूर्ण का सेवन किया जाता है।

मात्रा-चूर्ण ३०-३० रत्ती प्रतिदिन तीन बार सेवन चाहिए।

&&&

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'मस्तिष्क में जिन ग्रन्थियों के पास चेतना की निकटता मालूम पड़ती है उन ग्रंथियों में जो रक्तस्राव है बहुत चकित करने वाली बात है कि मस्तिष्क में जिस कारण बोध और चेतना निर्मित होती है, या जिसके अभाव में आदमी बेहोश हो जाता है- उस रासायनिक तत्त्व की सर्वाधिक उपलब्धि पीपल वृक्ष में है। मनुष्य के भीतर जो बुद्धि है, उस बुद्धि के प्रकार होने के लिए जिस रासायनिक प्रक्रिया की जरूरत है और जिन रासायनिक तत्त्वों की मस्तिष्क में जरूरत है उनकी सर्वाधिक मात्रा पीपल में उपलब्ध है।' - आचार्य रजनीश

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालक्या/मधुसूदनी Spinacia oleracea Linn. CHENOPODIACEAE

268

ENGLISH NAME:- Spinach. Hindi - Palak, Vilayati palak.

PARTS-USED:-Whole plant, Leaves and Seeds.

DESCRIPTION:- A small erect annual herb, stem succulent. Leaves some what fleshy, green triangelar and with long petiole, flowers green and small, monoecious.

TASTE:-Acrid-sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:-Vitamin-B complex, Ascorbic acid, Carotene, Vitamin K & A, Thiamine, Riboflavin, Oxalates, Nicotinic acid, Folic acid, Amino acids, Histamines, Acetylcholine, Alpha-Spinasterol, Stigma sterol, Cholesterol, Flavin, Petuletin, Quercetin, Rutin, Saponin, Catechol and Lipids, Iodine, Lecithin, Arsenic.

ACTIONS:-Cooling, Laxative, Expectorant, Astringent, Diuretic, Anti-inflammatory, Rejuvenator, Digestive, emolient, Antidote.

USED IN:- Asthma, Febrile affections, Gout, Inflammation of lungs, Intestinal troubles, Calculii, Jaundice, Liver pain, Respiratory-troubles, constipation, tumours.

प्रचलित नाम- पालक शाक

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र एवं बीज।

स्वरूप- एक वर्षायु, उन्नत, लघु क्षुप, कांड मांसल, पत्र अल्प मांसल; हरे कुछ त्रिकोणाकार एवं लम्बे वृंत वाले होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे हरितवर्णी होते हैं।

स्वाद-कटु-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसमें विटामिन-बी समूह, एस्कार्बीक अम्ल, कैरोटिन, विटामिन के तथा ए, थायमाइन, राइबोफ्लेविन, ऑक्सेलेट्स, निकोटिनिक अम्ल, फोलिक अम्ल, एमीनोअम्ल, हिस्टामाइन, एसिटिलक लाइन, आल्फा-स्पाइन स्टीग्मास्टीरॉल, कोलेस्टेरॉल, फलेविन, पेटुलेटिन, क्वेरसेटिन, रुटिन, सैपोनिन, कैटेचॉल तथा लिपिड्स पाये जाते हैं। आयोडीन लासिथीन एवं आरसेनिक।

गुण- शीतल, मृदुरेचन, कफनि:सारक, ग्राही, मूत्रल, शोथघ्न, रसायन, पाचन।

उपयोग- श्वास रोग में, ज्वर संबंधित रोगों में, वातरोग, फुफ्फुसीय शोथ में, आंत्रविकारों, अश्मरी, कामला, यकृतशोथ, श्वास कृच्छ्र में लाभकारी। विष दोष नाशक। ज्वर (शोथ युक्त) इसके पंचांग का क्वाथ नित्य दो बार पिलाने से लाभ। आंत्र विकारों में इसके पत्रों का शाक बनाकर खिलाने से लाभ। कामला, श्वास कृच्छ्र तथा यकृत शोथ में इसके बीज का प्रयोग लाभकारी। अश्मरी में इसके बीज के सेवन से लाभ होता है, किन्तु इसके पत्र वर्जित है। कृमि रोग में इसके बीज में से निकला हुआ तेल का प्रयोग करने से कृमि नष्ट होते हैं। कंठ, फेफड़ों और श्वसनी नली के दाह में इसके पत्र तथा बीजों का क्वाथ या पंचांग का क्वाथ पिलाना चाहिए। ज्वर में भी इस क्वाथ का सेवन लाभकारी। पालक के पत्रों के रस से कुल्ला करने से कंठ तथा छाती दाह में लाभ होता है। पालक के रस का सेवन करने वाले हमेशा रक्तपित्त रोग से मुक्त रहते हैं। पालक में रक्तशोधन करने वाले तत्व पाये जाते हैं। पालक के पत्र एवं अदरख का रस मिलाकर पीने से मुख की कान्ति बढ़ती है एवं रक्त विकार भी नष्ट होते हैं। खुजली में गाजर एवं पालक के रस पीने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुपीलु (दीर्घपत्रक)/विषतिन्दुक Strychnos nux vomica Linn. LOGANIACEAE

ENGLISH NAME:- Nux-vomica Tree/Poison nut tree. Hindi - Kuchila.

PARTS-USED:-Leaves, Bark, Wood and Seeds.

DESCRIPTION:- A tall tree, some times spiny; leaves smooth, shining with five mainveins. Flowers small & greenish white. Fruits globose of about 3inch diameter & of orange colour.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Alkaloids, Glycosides,Carbohydrates Protein, Amino acids, Resin, Steroids, Triterpenes, Tannins, Iron, Magnessium, Calcium, Potassium; Allparts contain- Strychnine, Brucin; Seeds Contains Loganin (Glucoside), Trace of Copper.

ACTIONS:-Stomachic, Digestive, Stimulant, Tonic, Aphrodisiac, Blood purifier.

USED IN:- Nervous disorders, Facial paralysis, Rheumatism, Lumbago, Cough, Loss of appetite, Constipaiton, Asthma, Heart tonic.

प्रचलित नाम- कुचला

प्रयोज्य अंग- पत्र, छाल, काष्ठ तथा बीज।

स्वरूप-एक ऊँचा वृक्ष, कई बार कंटकी; पत्र चिकने, चमकदार पाँच प्रधान शिराओं युक्त होते हैं। फल नारंगी रंग के तथा पुष्प छोटे तथा कद के गोल होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसमें एल्कलॉयड्स, ग्लायकोसाइड्स, कार्बोहाईड्रेट्स, प्रोटीन, एमिनोअ प्ल, राल, स्टीरोइड्स, ट्राइटर्पेन्स, टैनिन्स लोह, मेग्रेशियम कैल्शियम, पोटेशियम तत्व पाये जाते हैं। इसके सभी अंगों में स्ट्रिकनीन तथा ब्रुसीन पाये जाते हैं। इसके बीज में लोगानिन (ग्लुकोसाईड) तथा अत्याल्प तांबा होता है।

गुण- दीपन, पाचन, उत्तेजक, बल्य, वाजीकरण, रक्तशोधन।

उपयोग- स्नायविक विकारों में, मुख (चेहरा) पक्षाघात, आमवात, कटिशूल, कास, श्वासरोग, अरुचि में, विबंध तथा यह हृदयबल्य है। बीजों का उपयोग शोधन करके-बीजों को सात दिन तक गोमूत्र में रखकर छिलके निकाल कर गाय के दूध में उबाल कर तथा गाय के घी में भूनकर चूर्ण बनाकर प्रयोग किया जाता है। कुपचन, शूल में इस चूर्ण के सेवन से भूख बढ़ती है एवं पाचक रस अधिक मात्रा में बढ़ते हैं। बच्चों के शैय्या मूत्र, अति मैथुन में इसके सेवन से नपुंसकता नहीं होती, इसके चूर्ण के सेवन से हृदय तथा श्वसन संस्थान के दौर्बल्य में इनको बल मिलता है। कृमियुक्त व्रण में पत्रों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से लाभ होता है। इसका चूर्ण सेवन से भूख बढ़ती है तथा पाचक रसों की वृद्धि होती है। वार्धक्य में तथा वाजीकरण के लिये इसके चूर्ण में लोह तथा काली मिर्च मिला कर सेवन से लाभ होता हे। विसूचिका में इसके मूल की छाल को नीबू के रस में घोटकर बनाई गई

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोली का सेवन करने से लाभ होता है। अग्निमांद्य तथा अजीर्णता भोजन के बाद इसकी फाकी खाने से लाभ होता है। विसूचिका तथा प्रवाहिका में इसकी लकड़ी का रस (यह ताजी हरी सीधी लकड़ी के दोनों छोरों पर पात्र बांध दिया जाता है और मध्य भाग में अग्नि लगाई जाती है, इससे दूसरे किनारे पर से टपका हुआ रस पात्र में एकत्र हो जाता है) इस रस की कुछ बूंदे देने से अतिलाभ होता है। संधिवात में इसके ताजे बीजों में से निकाला गया तेल लगाने से लाभ होता है। यह ज्ञान तन्तुओं को शक्ति देने के रूप में, ज्वर के चढ़ने-उतरने में, प्लीहा वृद्धि एवं नपुंसकता में बहुमूल्य औषधि है। अफीम खाने की आदत छुड़ाने के लिये कुचला खिलाया जाता है। इसके कच्चे फल ग्राही, तिक्त, वातकर, लघु एवं शीतल। पके हुए फल विष, गुरु, पाक समय मधुर तथा कफ, वात, प्रमेह, पित्त तथा रक्त विकार नाशक। मलेरिया, अजीर्णता, शूल तथा मंदाग्नि में इसके बीजों को टूटे बगैर तल कर प्रयोग किया जाता है। (बीज शुद्ध हो जाते हैं) इस शुद्धिकरण के पश्चात् इनका चूर्ण बनाकर मधु के साथ (१-२ रत्ती) सेवन करने से लाभ होता है। शीत ज्वर, नेत्र, शूल तथा संग्रहणी में इस शुद्ध किये बीजों का चूर्ण तीन भाग तथा लौंग एक भाग अदरख के रस में खरल कर रत्ती के कद की गोलियाँ बनाकर मधु के साथ देने से लाभ होता है। जीर्ण वात रोग (कमर-दर्द, पक्षाघात, अंगों की जकड़न, पाचन शक्ति की कमजोरी) में शुद्ध किये हुए, इसके बीज का चूर्ण एक से दो रत्ती प्रतिदिन दो बार दूध या गुनगुने जल के साथ थोड़े दिन तक सेवन करने से उपर्युक्त रोगों में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त हस्तमैथुन या अधिक स्त्री संभोग से वीर्यक्षय होकर शरीर में कमजोरी आने पर भी उपर्युक्त विधि से सेवन करने पर लाभ होता है। इसके कांड की छाल का लेप वेदनास्थापन है। इसके बीज तमाम इन्द्रियों की क्रियाओं की गति बढ़ाते हैं, किन्तु ज्ञान तंतुओं पर इसका प्रभाव अधिक होता है। तम्बाकू के अधिक सेवन से एक प्रकार की दृष्टिमांद्यता आती है, इसमें कुचला का अर्क मीठे सोंठ के साथ देने से लाभ होता है। मानसिक थकान के कारण नींद न आती हो एवं दूषित विचार आने के कारण नींद न आती हो तो कुचला के सेवन से लाभ होता है। श्वसनी शोथ तथा श्वासरोग में उत्तेजक कफघ्न औषधि के साथ कुचला का सेवन लाभकारी होता है।

मात्रा-बीज चूर्ण-एक रत्ती से आधा रत्ती। (एक संपूर्ण बीज को घी में भून कर शरोते से काट-काट कर नियमित खाते हैं)। नक्स वोमिका सत-आधा ग्रेन से दो ग्रेन तक। नक्स वोमिका-टिंचर-पाँच से बीस बूंद तक।

&&&

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किरात तिक्त Syn. Gentiana chirayita.Swertia chirayata Roxb GENTIANACEAE

270

ENGLISH NAME:- Chireta. Hindi - Chirayta
PARTS-USED:-Dried whole plant, Roots, Stem and Flowers.
DESCRIPTION:- A small shrub type herb, stem square, 2-4 feet high, orange, black or purple. Flowers greenish-yellow.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- A Bitter yellow acid (Ophelic acid) Glucosides (Chiraytin and Amarogenin) Phenolics (Gentiopicrin & Swertion) Tannin, Calcium, Potassium, Gum, Mallic acid, Oleic acid, Palmitic acid, Stearic acid.
ACTIONS:-Tonic, Stomachic, Febrifuge, Laxative, Appitizer, Diuretic, Anthelmintic, Anticancer, Anti bacterial, Increases Thirst.
USED IN:- Malarial fever, Leprosy, Leucoderma, Scabies, Neuro-muscular, Menorrhagia, Menstrual irregularity, Urinary disease, Heart disease, Indigestion, Asthma, Cough, Dyscrasia, Ulcer, Jaundice, Anaemia.

प्रचलित नाम- चिरायता

प्रयोज्य अंग-सूखा पंचांग, मूल, कांड एवं पुष्प

स्वरूप- यह पौधा लघु गुल्म जैसा एक क्षुप जिसकी ऊँचाई लगभग २-४ फीट तक होती है। इसका कांड चौपहल, काला, नारंगी या बैंगनी रंग का होता है। पत्ते विपरीत, चमकदार चिकने, नोकदार होते हैं। पुष्प हरित-पीतवर्णी, रोमश ग्रंथियों युक्त होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें एक कड़वा पीत अम्ल (ऑफेलिक अम्ल), ग्लायकोसाइड्स (चिरातिन तथा एमेरोजैनिन), फैनोलिक्स, (जैन्शियॉपिकरीन एवं स्वर्शीन), टैनिन, कैल्शियम, पोटेशियम, गोंद, मैलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, पामिटीक अम्ल तथा स्टीयरीक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण- दीपन, ज्वरहर, मृदुरेचन, रुचिकर, मूत्रल, कृमिघ्न, कैन्सर शामक, कीटाणुघ्न तृषा को बढ़ाता है।

उपयोग- विषम ज्वर, कुष्ठरोग, श्वित्र, काण्डु, नाड़ी स्नायु रोग, कष्टार्त्तव, आर्तवदोष, मूत्ररोग, हृदयरोग, कुपचन, श्वासरोग, कास, रक्तदोष व्रण में लाभकारी। कैन्सर शामक, कीटाणुघ्न कृमिघ्न, कामला तथा पाण्डुरोग में लाभकारी। पुराने ज्वर एवं अग्निमांद्य में इसके फांट या चूर्ण के सेवन से लाभ होता है। वातरक्त में यह बल्य औषधि होती है, इसका प्रयोग चूर्ण रूप में किया जाता है। हिचकी, मद्यपान तथा गर्भवती महिलाओं के वमन में इसका चूर्ण या क्वाथ मधु के साथ सेवन से लाभ। यकृत विकारों में चिरायता का क्वाथ, धनिया तथा मधु मिलाकर सेवन से लाभ। रक्तपित्त में इसके पंचांग का चूर्ण एक चौथाई तोला एवं चंदन का चूर्ण एक चौथाई तोला शीतल जल से सेवन करने से लाभ होता है। शोथ में इसके पंचांग का तथा सोंठ का चूर्ण सेवन करने से

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिरकाल का शोथ नष्ट होता है। गर्भावस्था में होने वाले वमन में इसके पंचांग का चूर्ण तथा इसके समभार मिश्री मिलाकर सेवन से उल्टी बंद होती है। चिरायता का क्वाथ करने से उसके औषधीय गुण अल्प हो जाते हैं। इसलिये शीत जल में इसका फांट बनाना चाहिए। इसके फांट के साथ दो ग्रेन क्विनाईन और कुछ बूंदें सल्फ्युरिक एसिड मिलाकर करने से अधिक गुणकारी होता है। आमवात, जीर्णज्वर तथा गरमी के सभी तरह के रोगों में तीन मासा चिरायता, दो तोला जल में रात को भिगोकर रखें, प्रातः कपड़े से छान कर उसमें दो रत्ती कपूर, दो रत्ती शिलाजीत, आधा तोला मधु मिलाकर प्रतिदिन इसका सेवन सात दिन तक करने से उपर्युक्त सभी रोगों से मुक्ति मिलती है तथा यह बलवर्धक है। उदरशूल तथा अजीर्णता में इसके हरे (ताजे पत्रों) को बारीक पीसकर रस निकाल कर इस रस में काली मरिच, सैंधव नमक मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अम्लपित्त में चिरायता तथा भांग का क्वाथ बनाकर इसमें मधु मिला कर पिलाना चाहिए।

मात्रा–इसके पंचांग का क्वाथ– ५० से १०० मि.ली. (विभाजित कर नित्य दो बार प्रातः सायं)।

चूर्ण–१ से ३ ग्राम (२० मि.ली. जल में भिगोकर रात्रि भर रखकर प्रातः छानकर ५ ग्राम मधु मिलाकर नित्य दो बार विषम ज्वर में)।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

&&&

'जो व्यक्ति चार पाकड़ वृक्षों का रोपण करता है। वह राजसूय यज्ञ करने को पाता है, इसमें कोई संशय नहीं है।'– वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोध्र/रोध्र Syn. S. cochinchinensise (Lour) Moure. Symplocos racemosa Roxb.

SYMPLOCACEAE 271

ENGLISH NAME:- Symplocos bark. Hindi - Lodh/Luddi

PARTS-USED:-Stembark.

DESCRIPTION:- A small tree about 20 feet high with greyish bark. Flowers aromatic yellow, in leaves elliptic, ovate, crenate, globrous, clusters, fragrant, drupe glabrous, small, ellipsoid.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains:- Alkaloids-Leupeorin, Lupeoridin, Glycosides, Loturin, Loturidine, Colloturine, Sodium carbonate. Leaves Contain:- Flavonol, Glycoside, Rham natin, Phlorizin.

ACTIONS:-Astringent, Anti pyretic, Blood purifier, Anti-inflammatory, Cooling, Styptic, Antimucilagenous, Wound healing, Tonic.

USED IN:- Diarrhoea, Piles, Dysentery, Leucorrhea, Liver troubles, Fever, Eye troubles, Menorrhagia, Leprosy, Ulcer, Elephantiasis, Chyluria; Acne, Pelvic inflammatory diseases.

प्रचलित नाम- लोध

प्रयोज्य अंग- कांड की छाल।

स्वरूप-एक लघु वृक्ष जो लगभग २० फूट ऊँचा होता है, इसकी छाल घूसर रंग की पत्ते अण्डाकार तीक्ष्ण पत्राग्र, पत्र किनारे आरावत या गोल दन्तुर पुष्प सुगंधित पीतवर्णी तथा गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-कटु।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में एलकलॉयड्स-ल्युपियोरीन, ल्युपियोरीडीन, ग्लायकोसाईड्स, लाटुरिन, लोटुरीडीन कोलोटुराईन, सोडियम कार्बोनेट इसके पत्रों में फ्लेवॉनोल, ग्लायकोसाइड, रहामन टिन तथा फ्लोरीजीन पाये जाते हैं।

गुण- ग्राही, ज्वरघ्न, रक्तशोधन, शोथघ्न, शीतल, रक्त स्तम्भक, श्लेष्मघ्न , व्रण रोपण, बल्य।

उपयोग- अतिसार, अर्श, रक्तातिसार, श्वेतप्रदर, यकृत विकार, ज्वर, नेत्र रोग, अत्यार्तव, कुष्ठरोग, व्रण, फील पाँव, पाप समेह, युवान पिड़िकाओं (मुँहासे), श्रोणी शोथ में लाभकारी। अतिसार तथा प्रवाहिका में इसका चूर्ण बेल की गुद्दी, कुचला की छाल के साथ प्रयोग किया जाता है या इसका प्रयोग अनार का छिलका, मुलैठी तथा कायफल के साथ भी किया जाता है। फील पाँव तथा पायस मेह में इसके चूर्ण के सेवन से लाभ होता है। व्रण तथा कुष्ठरोग में इसका बाह्य प्रयोग तथा अंत: प्रयोग लाभकारी। रक्त प्रदर में इसका चूर्ण मिश्री के साथ दिन में ३ से ४ बार तथा ३ से ४ दिन तक सेवन से लाभ। रक्त पित्त लोध्र की छाल का चूर्ण तीन ग्राम तथा इतना ही चन्दन का चूर्ण तथा तण्डुलोदक लेकर और शर्करा के साथ पिलाने से रक्त पित्त नष्ट हो जाता है। कुष्ठ रोग में इसकी छाल को जल में घिसकर लेप करने से इस रोग में लाभ होता है। व्रण में इसकी छाल का बारीक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चूर्ण व्रण पर छिड़कने से व्रण का रोपण शीघ्र होकर नई त्वचा शीघ्र आ जाती है। कास तथा आमातिसार में इसके पत्रों का बारीक कल्क बनाकर उसे घृत में सेक कर शर्करा मिलाकर, उसकी पूरी बनाकर सेवन करने से इन रोगों का नाश होता है।

श्वेत प्रदर में इसकी छाल का सूक्ष्म चूर्ण वट की छाल के क्वाथ के साथ सेवन से इस रोग में लाभ होता है। गर्भपात होने का भय हो, तो सातवें-आठवें मास में लोध्र चूर्ण पिप्पली चूर्ण तथा मधु मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

नेत्र रोगों में इसकी छाल का चूर्ण घृत में किंचित् भूनकर इसको आँख के चारों ओर लगाने से सभी प्रकार के नेत्र रोगों में लाभ होता है।

अतिसार में इसकी छाल का चूर्ण दही में मिलाकर सेवन करना चाहिए।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'कंदर्प के अँगुली से निकला कदम्ब सर्वगुण सम्पन्न, सुन्दर है। वामन पुराण में शंक! द्वारा सती को लेकर मदार पर्वत पर जाने का उल्लेख भी है। वहाँ विद्युत, वर्षा, वायु आदि का वर्णन सती द्वारा किया गया है, जिसमें कदम्ब के फूलों का भी उल्लेख है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लवंग/देवकुसुम Syzygium aromatica Meril and Perry. MYRTACEAE

272

ENGLISH NAME:- Clove Tree. Hindi - Laung

PARTS-USED:-Dried flower bud with peduncle.

DESCRIPTION:- A large shrub or medium sized tree, 9-12 meter high. Leaves simple, opposite, undulate bright & glabrous flowers small & pale purple.

TASTE:-Bitter-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Flower Bud Contains:- Beta-caryophyllene, Eugenol, Acetate, Methyl salicylate, N-Amylcarbinol, Benzyl alcohol, Furfural, Furfury alcohol, Vanillin, Eugenitine, Isoeugenitol, Eugenon, Galactose, Glucose, Fructose, Rhamnose, Sucrose, Xylose, Gallotanic acid and Oleonalic acid.

ACTIONS:-Stomachic, Appitizer, Carminative, Stimulant, Aromatic.

USED IN:- Cough, Cold, Colic, Tuberculosis, Thirst, Appitizer, increases digestive enzymes, Anthelmintic, cures Constipation, Asthma, Blood purifier, Diuretic, Flatulance.

प्रचलित नाम- लौंग

प्रयोज्य अंग- पुष्प दंड सहित पुष्प की शुष्क कलिका

स्वरूप- एक विशाल गुल्म या मध्यम कद का वृक्ष जो ९-१२ मीटर ऊँचा होता है। पत्ते चमकीले, चिकने, हरे, अभिमुख पत्र अखण्ड लहरदार, चिकने होते हैं। पुष्प छोटे तथा श्वेत हल्के बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन-पुष्प कलिका में बीटा-कैरियानफायलीन, युजिनोल, ऐसीटेट, मिथाईलसेलिसिलेट, ऐन-ऐमिलकार्बीनॉल, बेन्जिल एल्कोहॉल, फरफ्युरॉल, फरफ्युरी एल्कोहॉल, वैनिलिन, युजिनीटिन, आई सो-युजीनीटोल, युजीनोन, गैलेक्टोस, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, रहमनोस, सुक्रोज, जायलोस् गैलोटैनिक अम्ल तथा ऑलियोनेलिक अम्ल।

गुण- दीपन, रुचिकर, वातघ्न, उत्तेजक तथा सुगंधित।

उपयोग- कास, जुकाम, उदर शूल, यक्ष्मा, तृषा, रुचिकर, पाचक उत्सेचकों में वृद्धि करता है। कृमिघ्न, विबंध को ठीक करता है, श्वास रोग में, रक्त शोधक तथा मूत्रल। आध्मान में लाभकारी। लौंग का तेल मिश्री पर डालकर सेवन से उदर शूल तथा आध्मान में लाभ होता है। प्रतिश्याय तथा मस्तक शूल में लौंग को गरम कर जल में घिस कर माथे पर लगाने से लाभ होता है। विसूचिका में तृषा के लिये जीमि चलाने में तथा गर्भवती स्त्री को वमन में जल में लौंग डालकर इसको अच्छी तरह उबाल कर इस जल को पिलाना चाहिए। लौंग को दीपक की लौ पर सेककर मुख में रखने से कंठ शोथ तथा शुष्क कास का नाश होता है। शिरोवेदना, दंतशूल तथा संधिवात में लौंग के तेल का बाह्य प्रयोग लाभकारी। गर्भवती के वमन में लौंग को मुख में रखने से वमन का शमन होता है।

मात्रा-तेल-१-२ बूंद। लवंग-१-४ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राज जम्बू (जम्बु) Syzygium cumini skeels Syn. Eugenia jambolana. Lamk.

MYRTACEAE

ENGLISH NAME:- Java apple or Black Plum. Hindi - Jamun/Pharena.
PARTS-USED:-Leaves, Bark, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A big tree with white bark. Leaves simple, opposite, glabrous, shining, acuminate. White fragrant flowers. Fruits subglobular, berry, rose pink, black purple when ripe.
TASTE:-Sweet.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Bark Contains:- Friedelin, Kaempferol, Tannins, Quercetin, Beta-sitosterol, Betullinic acid; Fruits Contain:- Anthocyanin, Eugin, Seeds Contains: Ellagic acid, Indole-acetic acid, Oxalic acid Citric acid, Glycollic acid, Glucose, Fructose, Gallic acid; Leaves Conatins:- Glycine, Alanin, Leucin & Tyrosin.
ACTIONS:-Carminative, Diuretic, Stomachic, Astringent, Anti-ematic, refrigerant, anthelmintic.
USED IN:- Leaves: Diarrhoea, Dysentery, Menorrhagia; Anaemia, Aneaemic Diarrhoea, Fruits: Hypoglyceamic, Anti bacterial, Antidiabetic. Bark: is Astringent-Styptac, Ulcer, Diarrhoea.

प्रचलित नाम- बड़ी जामुन
प्रयोज्य अंग- पत्र, छाल, फल तथा बीज।
स्वरूप-यह एक बृहद् वृक्ष जिसकी छाल सफेद होती है। पत्ते सरल, अभिमुख, चिकने, चमकीले लम्बाग्र या कुंठिताग्र होते हैं। पुष्प सफेद तथा सुगंधित, फल गोल गुलाबी जामुनी तथा मांसल होते हैं।
स्वाद-मधुर-कषाय।
रासायनिक संगठन-इसकी छाल में फ्रैडलीन, किम्फेरॉल, टैनिन्स, क्वेरसैटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, बेटुलिनीक अम्ल, इसके फल में एन्थोसायनीन, युजीन, इसके बीज में एल्लैजिक अम्ल, इन्डोलएसेटिक अम्ल, ऑक्सेलिक अम्ल, सिट्रीक अम्ल, ग्लायकोलिक अम्ल, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, गैलिक अम्ल। पत्रों में-ग्लायसीन, एलानिन, ल्युसीन तथा टायरोसिन पाये जाते हैं।
गुण- वातानुलोमक, मूत्रल, दीपन, ग्राही, वमनरोधक।
उपयोग- पत्रों का प्रयोग-अतिसार, प्रवाहिका, अत्यार्त्तव, पाण्डुरोग तथा स्त्रियों के पाण्डु सहित अतिसार में फल, रक्तगत शर्करा का प्रमाण कम होता है, कीटाणुघ्न, मधुमेह नाशक, इसकी छाल कषाय, स्तम्भक, व्रण में तथा अतिसार में लाभकारी। इसका सिरका, मधुमेह तथा अतिसार में लाभकारी। बीज- मधुमेह में इसके सेवन से लाभ होता है। पत्रों का रस-रक्त अतिसार तथा अत्यार्त्तव में इसका सेवन लाभकारी। छाल का क्वाथ स्तंभन, अतिसार तथा व्रण प्रक्षालन में लाभकारी। पत्रों को पीसकर लोह चूर्ण में मिलाकर रखने से एक उत्तम प्रकार का लोह क्षार तैयार होता है, जिसे पाण्डुरोग तथा स्त्रियों के पाण्डु सहित अतिसार में देने से लाभ होता है। व्रण रोपण के लिये इसकी छाल का बारीक चूर्ण व्रण पर छिड़कने से व्रण रोपण क्रिया शीघ्र होती है। पित्तज वमन में जामुन तथा आम के कोमल पत्रों का क्वाथ ठंडा कर के मधु के साथ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिलाना चाहिए, इससे वमन बंद होता है। दन्तोदभव के समय शिशुओं को होने वाले नेत्राभिष्यंद में इसके कोमल पत्रों का क्वाथ बना करके उससे नेत्र धोना लाभकारी होता है। रक्त पित्त में इसकी त्वचा का शीतकषाय (हिम) मधु मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। प्रदर में इसके मूल तण्डुलोदक के साथ घिसकर पिलाने से लाभ होता है। शिशुओं की संग्रहणी में इसकी त्वचा का रस तथा उसके समान ही बकरी का दूध दोनों को मिलाकर शिशुओं को पिलाने से संग्रही का नाश होता है। रक्तातिसार में इसकी छाल का चूर्ण दूध के साथ मधु मिलाकर पिलाने से दस्त के साथ आने वाला रक्त रुक जाता है। इसके पके हुए फल (जामुन) अश्मरी नाशक है तथा मधुमेह में उपयोगी है। इसके फल की गुठलियों का सूक्ष्म चूर्ण बनाकर इसका मधुमेह औषधि के रूप में उपयोग करने से मूत्र में निकलने वाली शर्करा के प्रमाण में निश्चित् न्यूनता करके उसे बंद करता है, मधुमेह रोगियों के लिये अतिलाभकारी होता है। इसके पके फल मूत्रल होने के कारण मूत्रकृच्छ्र में अति लाभकारी है। इसके पत्रों का उपनाह (पुल्टिश) दुष्ट व्रणों में से पूय को बाहर निकाल देने एवं स्वच्छ करने के लिए बाँधना लाभकारी। जामुन के पके हुए फलों के रस से बना हुआ सिरका जैसे-जैसे अधिक खट्टा होता जाता है, वैसे-वैसे अधिक गुणकारी होता जाता है। इसका सेवन अतिसार एवं उदररोगों में बहुत लाभकारी है।

जामुन के रस के सेवन से कंठरोग तथा मुख में हुई गरमी नष्ट होती है तथा प्लीहा रोग तथा यकृत रोग में भी अत्यंत लाभकारी। इसलिए जामुन के सीजन में जामुन के रस का सेवन करने से मधुमेह, संग्रहणी, अश्मरी नष्ट होते हैं। अश्मरी में जामुन के कोमल पत्रों को पीसकर इस चटनी में काली मरिच का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से अश्मरी के टुकड़े-टुकड़े होकर मूत्र द्वारा बाहर निकल जाते हैं। अश्मरी का यह एक उत्तम उपचार है। २५० ग्राम जामुन के पके हुए फलों को ५०० मि. ली. उबलते जल में डालकर कुछ समय के लिए उबलने दें, नीचे उतार कर ठंडा होने के पश्चात् इसके अंदर के फलों को मसल कर कपड़े से छान लें, प्रतिदिन तीन बार पीने से मूत्र में निकलती शर्करा की मात्रा घटती है तथा धातुक्षीणता भी ठीक हो जाती है। इस शर्बत के सेवन से यकृत रोग भी ठीक हो जाता है। मधुमेह में बड़े कद के जामुन को सूर्य की धूप में सुखाकर इसको पीसकर चूर्ण बना लो, इस चूर्ण का सेवन प्रतिदिन एक से दो तोला १५ दिनों तक करने से मधुमेह का नाश होता है। जामुन के रस में मधु मिलाकर सेवन करने से कामला रोग, पाण्डुरोग तथा रक्त विकार में लाभ होता है। अश्मरी में जामुन के रस में सैन्धव मिलाकर पिलाने से मूत्राशय अश्मरी नष्ट होती है। जामुन का रस तथा इसकी गुठली के चूर्ण का नियमित सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है। पायोरिया में पके हुए फलों के रस को मुख में भर कर अच्छी तरह हिला कर कुल्ला करने से पायोरिया ठीक हो जाता है। प्रवाहिका एवं अतिसार में इसकी गुठली का चूर्ण मधु के साथ चाटने से इस रोग में लाभ होता है।

मात्रा-स्वरस-१०-२० ग्राम। बीज का चूर्ण-१-३ माशा।

❖ ❖ ❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

झण्डु/ पद्म चारिणी Tagetes erecta Linn. ASTERACEAE.

274

ENGLISH NAME:- Marigold. Hindi - Genda

PARTS-USED:-Leaves and Fruits.

HABIT:- A small annual or perennial herb, branching near the base. Leaves much divided. Flowers are in heads of deep yellow or orange gold in colour.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves contain-Essential oil from which mono methyl famarate and Syringic acid is extracted; Quercetagetrin, Petulatrin; Flowers & Leaves also contain Ocimene; Monoesterified, Diesterified were also isolafed from Petals.

ACTIONS:-Antipyretic, Anti-inflammatory, Astringent, Diuretic, Antidole.

USED IN:- Piles, Fever, Inflammation, Ear ache, Opthadmic disease, Ulcer, Bleeding piles Dyscrasia, Menorrhagia, Disuria and Poison effect.

प्रचलित नाम– गेंदा

प्रयोज्य अंग– पत्र एवं फल।

स्वरूप–छोटा एक वर्षायु या बहु वर्षी क्षुप, आधार तल के पास अतिशाखीत, पत्र अतिविभाजित, पुष्प मुंडक में जो गाढ़े पीतवर्णी या सुनहरे नारंगी रंग के होते हैं।

स्वाद–तिक्त।

रासायनिक संगठन– इसके पत्र में– उत्पत्त तेल होता है, जिसमें से मोनोमिथाइल फ्युमारेट तथा सायरिन्जीक एसिड अर्क के रूप में निकाले जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त क्वरसेटाजेट्रिन, पेटुलेट्रिन पाये जाते हैं। पुष्प तथा पत्रों में ऑक्सीमीन होते हैं। पंखुड़ियों में मानो–एस्टेरीफाइड तथा डायऐस्टेरीफाईड भी अलग किये जाते हैं।

गुण–ज्वरघ्न, शोथघ्न, ग्राही, मूत्रल, विषघ्न।

उपयोग–अर्श, ज्वर, शोथ, कर्णशूल, नेत्र रोगों में तथा व्रण में, रक्तार्श में, रक्त विकार तथा रक्त प्रदर में इसका प्रयोग लाभकारी है। मूत्रकृच्छ्र एवं विष विकार नाशक। रक्तार्श में इसके पुष्पों के स्वरस का सेवन लाभकारी है। पत्रों का स्वरस कर्णशूल में तथा कर्णकृमि एक से दो बूंदें डालने से लाभ होता है। शोथ पर इसके पत्रों का स्वरस लगाने से लाभ होता है। व्रण में–इसके पुष्पों के स्वरस का बाह्य प्रयोग इसमें–लाभकारी होता है। नेत्र रोगों में– इसके पुष्प के स्वरस का बाह्योपचार नेत्र रोगों में लाभकारी होता है। रक्त पित्त, रक्त विकार, रक्त प्रदर में इसके पुष्पों के स्वरस का सेवन लाभकारी होता है या इसके पुष्पों को पीसकर इस कल्क को घी में भून कर सेवन से इन रोगों में लाभ होता है।

मात्रा– स्वरस एक से दो तोला।

❖ ❖ ❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आम्लीका Tamarindus indica Linn. CAESALPINACEAE (LEGUMINOCEAE.)

275

ENGLISH NAME:- Tamarind. Hindi - Imli

PARTS-USED:-Leaves, Stembark, Fruits, Seeds and Flowers.

DESCRIPTION:- A large ever green tree with fissured bark, about 20-25 feet high. Flowers Reddish-Yellow.

TASTE:-Acidic.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Contains:-Polysaccharides, Balsamine, Catechin, Nasturtium, Tamarin, Phosphatidic acid, and its Choline, Ethanollamine, Serine, Inositol, Alkaloid, Citric acid, Tartaric acid, Potassium bitartrate.

ACTIONS:-Purgative, Stimulant, Refrigerant, Astringent, Appitizer.

USED IN:- Ripe fruits: Causes gastric stimulant, Dyscrasia, Anthelmintic, Carminative, Digestive, Liver tonic, Leaves: useful in Bleeding piles and Dysuria; Stembark: Antipyretic.

प्रचलित नाम- इमली

प्रयोज्य अंग- पत्र, कांड की छाल, फल, बीज तथा पुष्प।

स्वरूप- एक सदा हरित बृहद् वृक्ष जिसकी छाल फटी हुई, वृक्ष २०-२५ फूट ऊँचा पत्ते संयुक्त पक्षाकार, पत्रिका १०-२० जोड़ी, चिकनी तथा कुंठिताग्र होती है। पुष्प पीतरक्तवर्णी होते हैं। फली टेढ़ी-मेढ़ी एवं भूरे रंग की होती है।

स्वाद-आम्लरस।

रासायनिक संगठन- इसमें पॉलीसेके राईड्स, बाल सेमीन, केटेचिन, नौस्टर्शीयम, टैमेरिन, फॉस्फोटिडीक अम्ल तथा इसके कॉलीन, इथैनोलामिन, सेरीन, इनोसिटोल तथा एल्केलॉयड। साइट्रिक अम्ल, टार्टरिक अम्ल, पोटेशियम बाइटार्टरेट पाये जाते हैं।

गुण-अतिरेचक, उत्तेजक, दाहशामक, ग्राही, रुचिकर।

उपयोग-परिपक्व फल जठर उत्तेजक, रक्तदोष में, कृमिघ्न, वातघ्न, पाचक, यकृतबल्य; पत्र का प्रयोग रक्तार्श तथा मूत्रकृच्छ में। कांड की छाल ज्वरहर। व्रण शोथ में पत्रों को पीसकर इसका कल्क बाँधने से लाभ होता है। प्रमेह में इसके बीज का प्रयोग लाभकारी। उदरशूल तथा मंदाग्नि में इसके फलों की शुष्क त्वचा की राख का सेवन करने से लाभ होता है। सोजाक में इसके कांड के छाल की राख का सेवन लाभकारी। अर्श में इमली का शाक, दही, अनार के रस तथा घी में बनाया हुआ एवं इसमें धनिया-सोंठ डालकर सेवन से लाभ होता है। अरुचि में इमली का पानी बनाकर इसमें गुड़, दाल चीनी, छोटी इलायची, काली मिर्च मिलाकर स्वादिष्ट पेय बन जायेगा, इस रस को मुँह में भरकर कुछ देर रखने के बाद कुल्ला करने से रुचि पैदा होती है। शीतला में इमली के पत्रों का रस एवं हल्दी का ठंडा पेय

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाकर पीने से लाभ होता है। अस्थि भग्न में इसके फल का कल्क तिल के तेल के साथ मिलाकर अस्थि भग्न स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

वात व्याधि में इसके पत्रों को ताड़ी के रस के साथ पीसकर अच्छी तरह घोट कर थोड़ा गरम कर, वेदना युक्त स्थान पर लगाने से लाभ होता है। शोथ में इसके पत्रों के कल्क का सेक शोथयुक्त भाग पर बार-बार करने से लाभ होता है।

कर्णशूल में इसके फल के रस में तिल का तेल मिलाकर अच्छी तरह उबाल कर पका लेना चाहिये, इसको कान में डालने से वेदना ठीक हो जाती है। प्रदर सोमरोग में इमली के बीज को जल में भिगोकर एक रात तक रखने के बाद बीज के अंदर के मृदु भाग को दूध में पीसकर पीने से लाभ होता है। दादर (दद्रु में) इसके पत्रों का रस लगाने से खुजली कम होती है।

सर्प विष में इसके पत्रों का रस १६ तोला तथा सैन्धव लवण दो तोला मिलाकर पीने से साँप का विष उतर जाता है। नाड़ी व्रण में इसके बीज को जल में घिस कर इसका लेप करने से लाभ होता है।

मात्रा-बीज का चूर्ण-१ से ३ माशा।

फल- ४ से ३० माशा।

❖❖❖

www.vicharkrantibooks.org

'सर्ज और कदम्ब के फूल एवं पर्वतों की गेरु आदि धातुओं के मिलने से लाल हुए वर्षा के जल को मोरों के कारपों का साथ प्राप्त है। इसी कारण इस पानी को पहाड़ की नदियाँ बहुत शीघ्रतापूर्वक बहा ले जा रही हैं।'

- वा.रा.किष्किंधा काण्ड

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

झाबुक/पत्रवास Tamarix articulata. Vahl. TAMARICACEAE.

276

ENGLISH NAME:- Tamarix.(Red) Hindi - Jhau

PARTS-USED:-Bark, Whole plant (Ash), Galls.

DESCRIPTION:- A perennial gregarious shrub, about 2 meter high, bark red and cracking. Leaves minute: Flowers bisexual & pinkish white.

TASTE:-Acidic (Galls). Bark: Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Galls Contains:-Gallic acid, Tannic acid, Plant Contains (Ash) Sodium Sulphate.

ACTIONS:-Galls: Astringent, Styptic, Anti-bleeding, Bark: Tonic, Astringent, Bloodpurifier.

USED IN:- Galls are used in: Diarrhoea, Dysentery, Bleeding Piles, To stop bleeding as in-Nasal bleeding, bleeding leucorrhoe and Other bleeding troubles; Leucorrhoea, Spleen, Flatulance. Bark: Eczema and Dental ache.

प्रचलित नाम- लाल झाऊ (छोटी माई-कृमिगृह)

प्रयोज्य अंग- छाल, पंचांग (क्षार), कृमिगृह।

स्वरूप- एक चिरायु टेढ़ा-मेढ़ा गुल्म जो लगभग दो मीटर ऊँचा होता है, छाल लाल तथा फटी हुई, पत्र सूक्ष्म चिकने तथा शल्क सदृश, पुष्प छोटे-छोटे द्विलिंगी श्वेत या गुलाबी होते हैं।

स्वाद-अम्ल रस (कृमिगृह), छाल-तिक्त।

रासायनिक संगठन- कृमिगृह में गैलिक अम्ल तथा टैनिक अम्ल, अधिक मात्रा में होते हैं। इसके पंचांग की राख में सोडियम सल्फेट अधिक मात्रा में पाया जाता है।

गुण-कृमिगृह-ग्राही, रक्त स्तम्भक, रक्तस्रावरोधक, छाल-बल्य, ग्राही, रक्तशोधन।

उपयोग-कृमिगृहों का प्रयोग पित्तज अतिसार, रक्तातिसार, रक्तार्श, रक्तष्ठीवन, नासा रक्तस्राव, प्रदर तथा अन्य रक्तस्रावी रोगों में, श्वेत प्रदर, प्लीहा, गुल्म में लाभकारी।

छाल का प्रयोग खुजली, दन्तशूल में लाभकारी। घाव धोने में इसके क्वाथ का प्रयोग किया जाता है। इसके पत्रों के धुँए से व्रण में शीघ्र रोपण प्रक्रिया होती है। इसके कृमिगृह संग्राही होने के कारण इनका प्रयोग रक्तार्श, रक्त अतिसार में लाभ। छाल वाजीकरण के लिये प्रयोग किया जाता है एवं इसका लेप सिर के अपरस में किया जाता है। दंतशूल में छाल के चूर्ण का मंजन एवं छाल के क्वाथ का कुल्ला कराने से दंतशूल में लाभ होता है।

मात्रा-कृमिगृह का चूर्ण-२-४ माशा।

छाल का क्वाथ-एक तोला।

पत्रवासक पाक बनाने की विधि- पत्रवास चूर्ण ७५० ग्राम, एक द्रोण दूध में पकाकर इसमें गाय का घी डालकर मंदाग्नि पर पकायें, जब खोया बन जाये तब उसमें ढाई किलो ग्राम शर्करा तथा ४०० ग्राम मधु

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिला दें। बाद में चौड़े पात्र में डालकर प्रक्षेप द्रव्य दालचीनी, तमाल पत्र, छोटी इलायची, नागकेसर, लौंग, पिप्पली, पुनर्नवा, कौंच बीज, दुग्धिका, मजीठ एवं अश्वगंधा प्रत्येक एक-एक तोला, पान की जड़, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, ताम्र भस्म प्रत्येक ६-६ माशा, अमृतासत्व, तवक्षीर, प्रत्येक दो-दो तोला, उशीर, जटामांसी, कपूर, वंशलोचन, जायफल, जावित्री, केसर, तगर प्रत्येक चार-चार तोला, सब का बारीक चूर्ण डालकर, मिश्रण कर बोतलों में भर लें। इस तरह तैयार किया हुआ पत्र वासक पाक महाव्याधि नाशक है।

इसके प्रयोग से कास, श्वासरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र तथा सर्वप्रकार के वीर्यविकार दूर होकर बल एवं वीर्य वृद्धि होती है।

रक्तप्रदर में पत्रवास, गोक्षुर, मुसली, शतावर तथा मिश्री सब समभाग का चूर्ण बनाकर सेवन करने से इन रोगों में लाभ होकर दौर्बल्य दूर होता है। इसके पत्रों का रस कषाय होता है। अतएव इसके क्वाथ से कुल्ला करने से हिलते दाँत तथा मसूड़े मजबूत बनते हैं एवं मुखपाक में लाभदायक है। इस क्वाथ से व्रण धोये जाने से व्रण ठीक हो जाते हैं।

❖ ❖ ❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'किसी भी अंक के आगे बिंदी बढ़ाने से उसकी गणना दस गुनी बढ़ जाती है, जबकि नारी के माथे पर बिंदी लगाने से उसका सौन्दर्य असंख्य गुना बढ़ जाता है। ठीक इसी प्रकार प्रकृति के सौन्दर्य को भी द्विगुणित करने में तिलक की उपमा अद्वितीय मानी जाती है।' - महाकवि कालिदास

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

झाबुक (पत्रवास) Tamarix gallica Linn. TAMARICACEAE

277

ENGLISH NAME:- Lage Tamarix. Hindi - Chhota Jhau.

PARTS-USED:-Whole plant (Ash) Galls.

DESCRIPTION:- A large shrub looking like a small tree (Occassionally) branches are week; leaves minute. subulate Flowers small white or Pink, closely packed; capsule ovoid, attonuated from base

TASTE:-Galls: Acidic.

CHEMICAL CONSTITUENTS-It Contains:-Tamarixetin, Kaempferide, Quercetin, D-Maninol, Tannic acid.

ACTIONS:-Galls: Laxative, Astringent, Expectorant, Styptic, Ash of Whole plant-Diuretic, Astringent, Tonic.

USED IN:- Galls in Diarrhoea, Dysentery, Menorrhagea, To stop bleeding, Ulcer, Stomatitis, Throat disordes, Weekness in Dents and Gums; Liver and Spleenomegaly, Anal fissure, Piles.

प्रचलित नाम- झाऊ (बड़ी माई-कृमिगृह)

प्रयोज्य अंग- पंचांग की राख, कृमिगृह (बड़ी माई)

स्वरूप-एक बृहद् गुल्म जो कभी-कभी लघु वृक्ष जैसा दिखता है। शाखाएँ कमजोर, पत्र सूक्ष्म चिकने वल्क सदृश्य, पुष्प सूक्ष्म सफेद या गुलाबी रंग के होते हैं।

स्वाद-कृमिगृह-आम्ल

रासायनिक संगठन- इसमें टैमेरीक्सेटीन, किम्फेराइड, क्वेरसैटिन, डी-मेनीटोल तथा टैनिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-कृमिगृह मृदुरेचन, ग्राही, कफ नि:सारक, रक्त स्तम्भ, पंचांग की राख-मूत्रल, ग्राही तथा बल्य।

उपयोग-कृमिगृह का प्रयोग अतिसार, आमातिसार, अत्यार्तव, प्रदर, रक्तनिष्ठीवन व्रण, मुख, कंठ दोष, दंत तथा मसूड़ों की दुर्बलता में, प्लीहा वृद्धि एवं यकृतवृद्धि अर्श तथा गुद-विदर में लाभकारी। अतिसार-आमातिसार अत्यार्तव में कृमिगृह का फांट बनाकर दो-चार तोला सेवन से लाभ। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग दुष्ट व्रण तथा मुखगत व्रण में भी लाभकारी। यकृत तथा प्लीहा वृद्धि में इसके पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से शोथ कम होता है। गुद-विदर में कृमिगृह का चूर्ण (४-८ माशा) दो माशा अफीम तथा वेसलीन दो तोला, सबको मिलाकर इसका मलहम लगाने से लाभ होता है। प्लीहावृद्धि में इसकी लकड़ी के बर्तन में जल भर का पीने से शीघ्र लाभ होता है एवं प्लीहावृद्धि कम हो जाती है।

मात्रा- कृमिगृह चूर्ण १/४-१/२ तोला।

❖ ❖ ❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाक/ साग/ महापत्र Tectona grandis Linn. VERBENACEAE.

278

ENGLISH NAME:- Indian Teak Tree. Hindi - Sagon
PARTS-USED:-Whole plant, Bark, Wood, Leaves, Flowers & Seeds.
DESCRIPTION:- A large deciduous tree about 50-60 feet high & branches are at this height are square (Quadrangular). Leaves are large and rough; Flowers in large panicles and white.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Tactograndon, Betulin, Lupeol, Betulinic acid, Betulinaldehyde, Carbohydrates, Fatty acids Squalene, Lapachanone, Deoxylapachol, Tectoquinine.
ACTIONS:-Cooling, Anti-billous, Styptic, Anthelmintic, Diuretic, Astringent, Stimulant, Refrigerent.
USED IN:- Wood & Bark: Anthelmintic and Antibillous, used in Headache, Dyspepsia, Toothache Indigestion, Stomach inflammation. Flowers & Seeds: used in Eczema and is useful to promotes hair growth, wood ash applied on swollen eyelids.

प्रचलित नाम- सागोन/सागवान

प्रयोज्य अंग- पंचांग, छाल, काष्ठ, पत्र, पुष्प, बीज तथा गोंद।

स्वरूप-एक विशाल पतनशील वृक्ष जो लगभग ५०-६० फूट ऊँचा इस ऊँचाई पर शाखाएँ चौपहल होती है। पत्र बड़े तथा खुरदरे; पुष्प श्वेत तथा संयुक्त शाखा प्रबंधित गुच्छों में होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें टैक्टोग्रान्डोन, वेटुलिन, ल्युपियॉल, बेटुलिनिक अम्ल, वेटुलिन-एल्डीहाइड कार्बोदित, वसा अम्ल, स्केवलिन, लेपाकेनॉन, डी ऑक्सीलेपाकॉल, टैक्टोक्विनाइन पाये जाते हैं।

गुण-शीतल, पित्तशामक, रक्त स्तम्भक, कृमिघ्न, मूत्रल, ग्राही, उत्तेजक, दाहशामक।

उपयोग-काष्ट तथा छाल-कृमिघ्न तथा पित्त शामक, इसका प्रयोग शिर:शूल कुपचन, दंत शूल, अग्निमांद्यता, उदरदाह; पुष्प तथा बीज-मूत्रल, इसका प्रयोग श्वसनी सूजन मूत्रकृच्छ्र में; बीज का तेल प्रयोग खुजली तथा केशवर्धक है। काष्ट की राख का प्रयोग नेत्र पलक शोथ में लाभकारी। सागोन के पुष्पों का उपयोग गुजरात के पंचमहल प्रदेश की वृद्धाएँ उदरशूल, शूल एवं मूत्रकृच्छ्र में करती हैं। केश वर्धन के लिये साग के बीजों के तेल लगाने तथा खाज-खुजली में लगाने से लाभ होता है। विसारी में इसके पत्तों को पीसकर इस पर बाँधने से लाभ होता है।

मूत्रावरोध में पुष्पों का फांट पिलाने से लाभ होता है। मूत्रघात में इसके मूल, मिश्री बकरी के दूध के साथ पीसकर पिलाने से अवरुद्ध मूत्र का शीघ्र ही स्राव हो जाता है तथा दाह भी शांत हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरपुंख (प्लीहारि) Tephrosia purpurea (Linn.) Pers FABACEAE.

(LEGUMINOSAE)

279

ENGLISH NAME:- Wild Indigo. Hindi - Ramsar.

PARTS-USED:-Whole Plant, Root, Root's bark & Seeds.

DESCRIPTION:- A small annual herb, about 2-3 feet high, erect & branched; Leaves breaking arrow shaped, compound leaflet's-13-21; Flowers red or purple in recemes. Fruits legume and slightey curred.

TASTE:-Bitter-Astringent, acrid

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:-Beta-sitosterol, Cyanidin chloride, Pongomol, Lupeol, Rutin, Dephinindinchloride, Karangin, Kangone, Flevichapparins-B and C Methylkaranjic, acid & Purpurin. Roots Contain: Tephrosin, Degulin, Rotenone, Isotephrosin, alterative

ACTIONS:-Laxative, Anthelmintic, Anti-inflammatory, Carminative, Diuretic, Cholagogue, Antidote, Tonic, Blood purifier. Antirebic, alexiteric, Antipyretic

USED IN:- Root is useful in: Flatulance Indigestion, Chronic Diarrhoea, Cough; Ashtma, Liver-Spleeno megaly, Oedema, Leprosy, Dyspepsia. Seeds in: Worms in festation in children. Seed oil: Applied externally in Scabies & Dermatosis. ulcer, Nephraetis, bronchitis; Harmorrhage.

प्रचलित नाम- सरफोंका

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल, मूल की छाल एवं बीज।

स्वरूप-एक वर्षायु लघु क्षुप जो २-३ फुट ऊँचा इसकी शाखाएँ उन्नत, पत्र संयुकत, पत्रिकाएँ १३-२१की संख्या में, पुष्प लाल या बैंगनी रंग के जो मंजरियों में होते हैं। फली थोड़ी से वक्र होती है।

स्वाद- तिक्त-कषाय।

रासायनिक संगठन- इसमें बीटा-सिटोस्टीरॉल, सायनीडीन क्लोराइड, पैन्गोमॉल, ल्युपियॉल, रुटिन, डेफीनीडीनक्लोराइड, कैरेन्जीन, कैन्जोन, फ्लेवीकैपेरीन्स, बी एवं सी, मिथाइल कैरेन्जिक अम्ल, परप्युरिन, इसके मूल में टैफ्रोसिन, डेग्युलिन रोटेनॉन एवं आइसोटेफ्रोसिन पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचक, कृमिघ्न, शोथघ्न, वातानुलोमक, मूत्रल, पित्तसारक, विषघ्न, बल्य, रक्तशोधक।

उपयोग-इसके मूल का प्रयोग आध्मान, कुपचन, जीर्णातिसार, कास, श्वासरोग, यकृत-प्लीहा वृद्धि, शोथ में, कुष्ठ रोग तथा अग्निमांद्य में लाभकारी। इसके बीज का प्रयोग बच्चों के कृमिरोगों में लाभकारी। बीज का तेल बाह्य प्रयोग स्कैबीस (छुतहा तथा चर्मरोग) में लाभकारी। उदरशूल में इसके मूल की ताजी छाल काली मिर्च के साथ पीसकर गोली बनाकर सेवन से लाभ होता है। यकृत प्लीहा वृद्धि में इसके मूल का प्रयोग हरड़ के साथ सेवन करने से लाभ होता है। खुजली में इसके बीजों का तेल बाह्य प्रयोग लेप उपयोगी है। गुल्म में इसके पंचांग के छोटे-छोटे टुकड़े कर के सुखाने के पश्चात् इसमें समभाग नमक मिलाकर एक हांडी में भर के इसका मुख कपड़ा मिट्टी से बंद करना चाहिए। इस हांडी को चूल्हे पर चढ़ा दो, इसको पीसकर इसका चूर्ण बोतल में भर लेना चाहिए, इसको शरपुंखा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का लवण कहते हैं।

इस चूर्ण के साथ हरड़ का चूर्ण समभाग मिला कर सेवन करने से गुल्म ठीक हो जाता है। व्रण रोपण में इसके मूल को जल में घिसकर इसमें मधु मिलाकर व्रण पर लेप करने से लाभ होता है। कास (खाँसी) में इसके सूखे मूल का धुआँ सूंघने से लाभ होता है। प्लीहा वृद्धि में इसके मूल का महीन चूर्ण मट्ठे के साथ सेवन से अति लाभ होता है। श्वासरोग में शरपुंखा का लवण मधु के साथ चटाना चाहिए। दंत रोगों में इसके मूल को कूट कर दुखते दाँत के नीचे रखने से लाभ होता है। शरपुंखा के मूल के क्वाथ में हरड़ का कल्क डालकर पकाया हुआ तेल, दंतशूल के लिये अत्यंत उपयोगी माना गया है।

यकृत एवं प्लीहा रोगों में इसके मूल को दातुन की तरह चबाकर इस का रस अंदर उतारने से बहुत ही लाभ होता है।

प्लीहा वृद्धि में-शरपुंखा को जड़ सहित उखाड़कर सुखाकर, चूर्ण बना १/४-१/२ तोला मात्रा में इसका सेवन करना चाहिए या इसकी जड़ को दातून की तरह चबाकर इसका रस निगलने से भी प्लीहा रोग ठीक हो जाता है। इसलिये प्लीहा रोग से पीड़ित रोगी को प्रतिदिन एक पादप की जड़ का प्रयोग दातून के रूप में चबाकर एवं इसका रस उदर में उतार कर करना चाहिए।

मात्रा-मूल का चूर्ण- ३ से ६ माशा।

स्वरस-१ से २ तोला।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

❖ ❖ ❖

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसै, तिलक देत रघुवीर॥
-रामचरित मानस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माषपर्णी Teramnus labialis Sperng. FABACEAE (LEGUMINOSAE).

280

ENGLISH NAME:- Wild udad. Hindi - Masparni
PARTS-USED:-Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A climbing wide spreading hairy herb, leaves campound (Trifoliate.) leaf lets are of unequal size, Fowers pink or bluish white.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Galactomannan, Carbohydrates, Sugars, Aminoacids, Fatty acids, Carotene, Saponins, Sapogenin, Diosgenin, Gitogenin, Neogitogenin, Alkaloids, Saponeritin, Neogigogenin, Tigogecnin, Vicenin, Vitexin, Luteolin, Yamogenin, Furastanolglycosides, Kaempferol, Quercetin.
ACTIONS:-Aphrodisiac, Demulcent, Diuretic, Tonic, Carminative, Astringent.
USED IN:- Seeds are used in: Colic, Emmenagogue, Dysentery, Diarrhoea, Anorexis, Cough, Dropsy, Liver-Spleenomegaly, Rheumatism, Anaemia, Diabetes, Rickets; Leaves in: Applied externally on burning andswellings.

प्रचलित नाम-वन उड़द / मषवन
प्रयोज्य अंग- पत्र, फल एवं बीज।
स्वरूप- यह एक फैला हुआ आरोहणशील क्षुप, त्रिपत्री पंजाकार संयुक्त, पत्रक छोटे-बड़े होते हैं। पुष्प गुलाबी या नीले-श्वेत वर्णी होते हैं।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसमें- गैलेक्टोमनान, कार्बोदित, शर्करा, एमिनोअम्ल, वसा अम्ल, कैरोटिन, सैपोनिन, सैपोजेनिन, डायासजैनिन, गिटोजेनिन, नियोगिटोजेनिन, एल्कलोयड्स, सेपोनेरीटीन, नियोगिगोजेनिन, टिगोजेनिन, वेसिनिन, वीटेक्सीन, ल्युटियोलिन, यामोजेनिन, फ्युरास्टरानॉल ग्लायकोसाइड्स किम्फॅरोल, क्वेरसेटिन पाये जाते हैं।
गुण-वाजीकरण, शामक, मूत्रल, बल्य, वातानुलोमक, ग्राही।
उपयोग-इसके बीज का प्रयोग-आंत्रशूल, आर्तवजनन, प्रवाहिका, अतिसार, अरुचि में, कास, जलोदर, यकृत-प्लीहावृद्धि में, आमवात, पाण्डुरोग, मधु मेह, सूखारोग में लाभकारी। इसके पत्रों का बाह्य प्रयोग दाह तथा सूजन में शीतल होने के कारण लाभकारी। वाजीकरण के लिये-इसका प्रयोग गाय के दूध, मधु, शर्करा एवं घृत के साथ सेवन करने से लाभ। वातिक प्रदर तथा पिंचु (रुई का फाहा) धारण में-इससे सिद्ध तैल का प्रयोग लाभकारी। वाजीकरण के लिये एक उत्तम गाय जो चारों स्तनों से दूध देती हो, जो प्रथम बार प्रसूता हुई हो, हृष्ट-पुष्ट तथा अपने सदृश वर्ण वाले जीवित बछड़े वाली हो, उसको माषपर्णी का पंचांग यथेष्ट भरपेट-खिलाना चाहिये। फिर इस गाय का दूध दोह कर उसी समय या उबालकर सिता, मधु एवं घृत मिलाकर पिलाना चाहिए। इसके सेवन से व्यक्ति बलवान होकर वाजीकरण गुण प्राप्त करता है। मूषक विष में माषपर्णी तथा निर्गुण्डी के स्वरस में मधु मिलाकर चटाना चाहिए।
मात्रा-पंचांग का स्वरस - २ से ४ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ककुम (अर्जुन) Terminalia arjuna (Roxb) Wt. & Am.

COMBRETACEAE

281

ENGLISH NAME:- Arjun Tree. Hindi - Kahua, Kakubh

PARTS-USED:-Bark, Leaves and Fruits.

DESCRIPTION:- A large evergreen tree with white bark and root butresses, leaves sub-opposite or alternate and coriaceous, flowers in axillary spikes; fruits winged.

TASTE:-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Bark Contains:-Beta-sitosterol, Arjunic acid, Friedlene, Glucoside (Arjunetic.) Tannins, Sugars, Sodium, Magnessium, Aluminium, Calciumcarbonate.

ACTIONS:-Diuretic, Astringent, Cooling, Heart tonic, Spasmogenic, Wound healing, demulcent, expectorant, alexiteric.

USED IN:- Heart ard Liver disease, Singificantly effective on Cardiovascular system, Styptic, tuberculosis, Cough, Dyscrasia, Polyuria, Fever, Ulcer, dysentery, inflammation tumors

प्रचलित नाम- अर्जुन (कहू)

प्रयोज्य अंग- छाल, पत्र तथा फल।

स्वरूप-एक बृहद् वृक्ष जिसकी छाल श्वेतवर्णी; इसक पत्ते सरल अभिमुखी या एकांतर तथा अल्प खुरदरे होते हैं। पुष्प मंजरियों में जो पत्र कोण में होती है, फल सपक्ष होते हैं।

स्वाद- कषाय।

रासायनिक संगठन- इसकी छाल में बीटा-सिटोस्टीरॉल, अर्जुनिक अम्ल, फ्रेडलीन, ग्लूकोसाइड, (अर्जुनेटिक), टैनिन्स, शर्करा, सोडियम, मैग्नेशियम, एल्युमीनियम, कैल्शियम कार्बोनेट पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, ग्राही, शीतल, हृद्य, बल्य, उद्वेष्टक, व्रणरोपण।

उपयोग-हृदय तथा यकृत रोगों में, हृदय रुधिर वाहिका तंत्र में विशेषत: प्रभावी, रक्त स्तंभन, यक्ष्मा, कास, रक्तदोष, प्रमेह, ज्वर तथा व्रण में लाभकारी। व्रण, अस्थिभग्न, शोथ में इसकी छाल का बाह्य एवं अभ्यंतर प्रयोग से लाभ होता है। हृदय रोगों पर-इसके कांड की छाल को दूध में क्षीर पाक विधि से पकाकर सेवन से लाभ होता है। रक्त पित्त में इसकी छाल के सेवन से रक्त वाहिनयों का संकोच होता है तथा इसके चूने के कारण रक्त जम जाता है। अुर्जन हृदय रोग के लिये एक उत्कृष्ट औषधि है। यह हृद्य, हृदयबल्य तथा हृदयोत्तेजक है। इसके अतिरिक्त यह हृदय की तीव्र गति की धड़कन को शान्त करती है। हृदय को विश्राम प्रदान करती है। रक्त शोधन गुण वाली है। यदि रक्त चाप कम हो गया हो, तो उसको नियंत्रित करता है। हृदय रोग के अनुसार इसका सेवन हमेशा किया जा सकता है, क्योंकि यह एक निर्दोष औषधि है। अर्जुन का क्वाथ अर्जुन की छाल का आधा पीसा हुआ २० ग्राम चूर्ण, दो ग्लास जल (५०० मि.ली) धीमी आग पर खुला रख कर उबाल लें,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१५० मि.ली. बाकी रहे, तब तक) इसे छानने के पश्चात् इसमें मधु मिलाकर सेवन किया जाता है। इस बचे हुए भाग को फिर इतना ही जल मिलाकर उपर्युक्त विधि के अनुसार तैयार कर सेवन करें। अर्जुन छाल का चूर्ण-एक चम्मच चूर्ण, घी, दूध, गुड़ या जल के साथ सुबह-शाम सेवन से हृदय रोग में लाभ होता है।

व्रण में इसकी छाल का काढ़ा बनाकर व्रण को धोने से या चूर्ण को कटे हुए भाग में भर कर पट्टी बाँधने से घाव ठीक हो जाता है। रक्त दोष कुष्ठरोग-चर्मरोग इसकी छाल का चूर्ण प्रातः एवं रात्रि समय एक चम्मच जल के साथ सेवन से, इसकी छाल को जल में घिस कर इसका लेप करने से ,इसकी छाल को जल में उबाल कर इस जल से धोने से लाभ होता है। चर्मकील इसकी छाल को दूध में घिसकर कील पर लेप करने से लाभ होता है। रक्तार्श में इसकी छाल के क्वाथ का सेवन लाभकारी। नेत्रशोथ-नेत्र में सूजन आने पर इसकी छाल को जल या दूध में पीस कर लेप करने से लाभ होता है। कम रक्तचाप वाले रोगियों के लिए यह औषधि अधिक लाभदायी है। इसलिए जिन रोगियों का रक्तचाप (ब्लडप्रैशर) उच्च रहता हो, उनको इस औषधि का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इस औषधि के सेवन से रक्त चाप में बढ़ोत्तरी होती है। बारीक रक्त वाहिनियों के संकोचन के कारण रक्ताभिसरण का दबाव पड़ता है। यह हृदय पोषक अवश्य है तथा हृदय का विश्राम काल दीर्घ बनता है एवं हृदय की धड़कन भली प्रकार से नियंत्रित रहती है। यदि धड़कन गति अधिक है, तो इसके सेवन से कम हो जाती है। रक्ताभिसरण में जितना महत्त्व हृदय का है, उतना ही छोटी-छोटी सूक्ष्म रक्त वाहिनीयों का भी है। यदि रक्तवाहिनियों का संकोचन ठीक नहीं होता या इनमें शिथिलता आ गयी हो तो हृदय भी अपना काम ठीक नहीं कर सकता। अर्जुन के छाल का प्रभाव रक्तशुद्धि में अधिक होता है, इसलिए रक्तपित्त तथा जीर्ण ज्वर में रक्त दूषित होता है, तब इसका प्रयोग अधिक लाभदायी है ' अर्जुन की छाल में ४३ प्रतिशत चूना (कैल्शियम) का हिस्सा है एवं १६ प्रतिशत टैनिन होता है। चूने की उपस्थिति के कारण रक्तस्राव तुरंत बंद करता है, इसी तरह अस्थिभग्न में हड्डी तुरंत ही जुड़ जाती है, इसलिए अर्जुन की छाल का क्वाथ प्रतिदिन पिलाना चाहिए। जिन व्यक्तियों के मूत्र में रक्त या वीर्य निकलता हो, उनको अर्जुन की छाल का सेवन अवश्य करना चाहिए। यह औषधि वीर्यवर्धक टॉनिक है। दीर्घायु की कामना रखने वाले सभी व्यक्तियों के लिए तथा जिसमें भी हृदय दौर्बल्य का डर हो उनको अर्जुन चूर्ण घी के साथ या दूध के साथ या गुड़ के साथ सेवन करना चाहिए। आज के इस युग में हृदय रोग की सबसे उत्तम औषधि 'डीजीटेलिस' मानी जाती है, लेकिन अर्जुन क्वाथ डीजीटेलीस से भी अधिक लाभकारी है। जबकि डीजीटेलिस का शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। लेकिन अर्जुन के सेवन से ऐसा कुछ नहीं होता।

मात्रा-छाल का चूर्ण १-३ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभीतक Terminalia bellirica Roxb. COMBRETACEAE

282

ENGLISH NAME:- Beleric Myrobalans/Beddanut. Hindi - Bahera.
PARTS-USED:- Fruits (Cotyledons in side the Endocarp).
DESCRIPTION:- A large deciduous tree with bluish or ashy-grey bark, leaves crowded at the end of the branches, flowers on 2-3 inch long spikes; fruit-brown, globose.
TASTE:-Astringent-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contains:-Beta-sitosterol, Gallic acid, Ellagic acid, Chebulagic acid, Galloyl, Glucose, Many free sugars, Manitol, Galactose Fructose Rhamnose, Glucoside, (Belericannin) Fatty acids; Seeds Contain: Protein and Oxalic acid.
ACTIONS:-Astringent, Laxative, Bronchial Sedative, Analgesic, Anti-inflammatory, Nutritive, anthelmentic, expectorant, ophthalmic, antipyretic.
USED IN:- Cough, Asthma, Anorexia, Vomiting, Arthritis, General debility. Throat disorder, Fever, Epilepsy, Spleenomegaly, Piles, Diarrhoea, Leprosy, Brain tonic. insomnia, strangury, cephalalgia.

प्रचलित नाम- बहेड़ा

प्रयोज्य अंग- फल (गुठली के अंदर की मींगी)।

स्वरूप-एक वृहद् वृक्ष जिसकी ऊँचाई ६०-१०० फूट होती है। छाल नीली घूसर रंग की होती है। पत्र शाखाओं के अंत भाग पर झुमकों में होते हैं। पुष्प २-३ इँच लम्बी मंजरियों में जो मैले सफेद या हल्के हरे रंग के होते हैं। फल गोल एवं अण्डाकार होते हैं।

स्वाद- कषाय -तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके फल में बीटा-सिटोस्टीरॉल, गैलिक अम्ल, एलैजिक अम्ल, चेबुलैजिक अम्ल, गैलॉयल, ग्लूकोज, अनेक मुक्तशर्करा, मैनीटॉल, गैलेक्टोज, फ्रक्टोज, रहामनोज, ग्लूकोसाइड ((बेलेरीकैनिन), वसा अम्ल, इसके बीज में प्रोटीन तथा ऑक्सेलिक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-ग्राही, मृदुरेचक, श्वसनीशोथ शामक, वेदना स्थापक, शोथघ्न, पौष्टिक।

उपयोग-कास, श्वासरोग, अरुचि में, वमन में, संधिशोथ, सामान्य दौर्बल्य में, कंठदोष, ज्वर, अपस्मार, प्लीहावृद्धि, अर्श, अतिसार, कुष्ठरोग में लाभकारी। यह मस्तिष्क के लिये बल्य। फल की मींगी का तेल बालों के लिये अत्यंत पौष्टिक तथा कण्डुरोग में लाभकारी तथा दाहशामक है। फल की मींगी अथवा छिलके को भूनकर मुँह में रखने से खाँसी में लाभकारी। सूजन पर-इसकी मींगी को पीसकर लेप करने से प्रत्येक प्रकार का दाह एवं वेदना युक्त शोथ में लाभ होता है। अश्मरी में इसके फल की मींगी का चूर्ण मध के साथ सेवन से मूत्रकृच्छ्र एवं अश्मरी में लाभ होता है। श्वास एवं कास रोग में बहेड़ा के फल का चूर्ण मधु के साथ चाटने से खाँसी तथा श्वासरोग में लाभ होता है। नेत्र की फूली में इसके फल की मींगी का चूर्ण मधु में मिलाकर आँख में अंजन करने से लाभ होता है। अतिसार में इसके फल को तवे पर सेक कर इसका बारीक चूर्ण, इसमें सैंधव लवण मिलाकर जल के साथ सेवन से बहुत ही शीघ्र लाभ होता है। हृदय में वायु-इसके फल का चूर्ण तथा अश्वगंधा का चूर्ण समान भाग लेकर गुड़ के साथ मिलाकर गरम जल के साथ सेवन से हृदय वात नाश हो जाता है।

मात्रा - फल का चूर्ण- ३ से ५ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हरीतकी (अभया) Terminalia chebula Retz. COMBRETACEAE.

283

ENGLISH NAME:- Chebulic Myrobalans. Hindi - Harar

PARTS-USED:-Fruits.

DESCRIPTION:- A large deciduous tree with dark brown bark, young parts covered with rusty hairs, Leaves are rough; flowers small creamish yellow, fruits ellipsoid, 3-5 cm. long, 5 ribbed acrid

TASTE:-Astringent.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contain:-Tannic acid, Gallic acid, Chebulinic acid, Mucilage, Glycoside (Anthroquinine), Carbohydrates, Amino acids, Phosphoric acid, Succinic acid, Seeds contain: Oil.

ACTIONS:-Digestive, Laxative, Stomachic, Rejuvenator, Anti-inflammatory, anodyne purgative, carminative, anthelmintic

USED IN:- Constipation, Cough, Haemorrhoid, Skin disease, Asthma, Dysentery, Uterine debility, Anaemia, Headache, Diabetese, Leaucoderma; Trifala: A mixture of Harad, Behad & Anvla: Appitizer, Tonic, used in: Malaria and Eye infections.

प्रचलित नाम- हरड़

प्रयोज्य अंग- फल।

स्वरूप-एक मध्यम कद का बृहद् वृक्ष जिसकी छाल बादामी रंग की, इसके कोमल अंग जंग लगे जैसे रोमश, पत्र खुरदरे, पुष्प छोटे पीत श्वेवताभ तथा बारीक मंजरियों में होते हैं। इसका पका फल गोल, भारी जो पानी में डालने से डूब जाये, उत्तम समझा जाता है।

स्वाद- कषाय।

रासायनिक संगठन- इसके फल में टैनिक अम्ल, गैलिक अम्ल, चैबुलिनिक अम्ल, एमिनोअम्ल, श्लेष्मल, ग्लायकोसाइड (एन्थ्रोक्वीनाइन) कार्बोदित, फोस्फोरीक अम्ल, सक्सीनिक अम्ल; इसके बीज में तेल पाया जाता है।

गुण-पाचन, मृदुरेचन, दीपन, रसायन, शोथघ्न।

उपयोग-विबंध, कास, रक्तार्श (भगंदर) चर्मरोग, श्वासरोग, प्रवाहिका, गर्भाशय दौर्बल्य, पाण्डुरोग, शिर:शूल, मधुमेह, श्वित्र। त्रिफला- यह हरड़, बहेड़ा तथ आँवले का मिश्रण- रुचिकर बल्य, इसका उपयोग-विषम ज्वर तथा नेत्र रोगों में लाभकारी। यह एक उत्तम व्रणरोपक है।

मुखगत व्रण, पुराने घावों तथा अर्श में हरड़ के चूर्ण का लेप करने से लाभ होता है। दंत मंजन में हरड़ का महीन चूर्ण बहुत ही उपयोगी है।

शूलयुक्त हरस में भोजन से पहले, हरड़ का चूर्ण गुड़ में मिलाकर सेवन से लाभ होता है। अगर दस्त आते हों, तो औषधि से इसको तुरंत बंद करना नहीं चाहिए, पहले उदर को साफ होने दो, दोष वगैरह को पकाने के बाद बाहर निकालने के लिये प्रथम हरड़ के सेवन से दोष बाहर निकल कर दस्त मिट जाते हैं तथा शरीर एकदम हल्का होकर, जठराग्नि प्रदीप्त होगी। गुड़, घी, मधु के साथ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हरड़ का चूर्ण देने से लम्बे समय से जीर्ण दस्त में लाभ होता है।

उदर रोग में अगर किसी भी प्रकार के उदररोग से बचना चाहते हैं, तो एक हजार बड़ी हरड़ का सेवन करना चाहिए। कफ जन्य पाण्डुरोग में गोमूत्र में भिगोकर हरड़ का सेवन करने से लाभ होता है। वमन में हरड़ का चूर्ण मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। वातरक्त में हरड़ का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन से लाभ होता है। कफजन्य श्लीपद रोग में हरड़ का चूर्ण, गोमूत्र के साथ सेवन से लाभ होता है। हिचकी में हरड़ की गुठली दूध में डालकर अच्छी तरह पका कर सेवन से लाभ। अश्मरी में हरड़ का क्वाथ मधु मिलाकर सेवन से लाभ होता है। शक्ति के लिये बड़ी हरड़ की छाल को घी में तल कर पीसकर इसका चूर्ण बना लेना चाहिए, तलने के बाद बचा हुआ घी एक पात्र में भर लो, यह घी तथा चूर्ण दोनों को मिलाकर चाटने से बल प्राप्त होता है। रक्तपित्त में हरड़ तथा पिप्पली सम भाग लेकर इसको अडूसा के रस की भावना देकर, इसका चूर्ण बनाकर मधु के साथ चाटने से लाभ होता है। कुष्ठ व्रण में हरड़ का चूर्ण तिल के तेल में तल के सेवन करने से लाभ होता है। संधि शोथ में हरड़ को एरण्ड में तेल में तल कर पीस कर चूर्ण बना कर सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा– चूर्ण २ से ४ माशा।

❖❖❖

'चैतन्य की प्रक्रिया जिस रासायनिक संभावना से बढ़ती है वह है वट, पीपल या उस तरह के वृक्षों में सर्वाधिक है।' –कॉलिन विल्सन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असन Terminalia tomentosa W & A. Syn. T. crenulata. Rolt. COMBRETACEAE.

284

ENGLISH NAME:- Spinous kinotree. Hindi - Saj

PARTS-USED:-Bark, Wood and Gum.

DESCRIPTION:- A large deciduous tree with oblique leaves, Flowers white creamish on spikes.

TASTE:-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Bark Contains:-Arabinose, Galactose, Glucoronic acid, Rhamnose, Xylose (Gum) Beta-sitosterol, Arjunic acid, Arjunolic acid, Arjunetin, Betulinic acid, Ellagic acid, Tannin.

ACTIONS:-Rejuvenator, Astringent, Purgative.

USED IN:- Diabetes Cough, Asthma, Bleeding piles, Fracture, Heart disease, Urine troubles, Skin disease, Leucoderma, Polyuria.

प्रचलित नाम-असैन

प्रयोज्य अंग- छाल, काष्ठ तथा गोंद:

स्वरूप- एक विशाल पतनशील जिसके पत्र तिरछे होते हैं, श्वेत हल्के पीले पुष्प मंजरियों में होते हैं।

स्वाद- कटु।

रासायनिक संगठन-इसकी छाल में एरेबीनॉज, गैलेक्टोज, ग्लूकोरोनिक अम्ल, रहामनोज, जायलोज (गोंद में) बीटा-सिटोस्टीरॉल, अर्जुनीक अम्ल, अर्जुनॉलिक अम्ल, अर्जुनेटिन, बेटुलिनिक अम्ल, एलेजिक अम्ल तथा टैनिन पाये जाते हैं।

गुण-रसायन, ग्राही, अतिरेचक।

उपयोग-मधुमेह, कास, श्वासरोग, रक्तार्श, अस्थिभग्न, हृदयरोग, मूत्र विकार, चर्मरोग, श्वित्र, प्रमेह में इसका प्रयोग लाभकारी। इसके काष्ठ तथा छाल का चूर्ण-ढाई ग्राम आधा चम्मच दूध के साथ नित्य तीन बार सेवन से मधु मेह में लाभकारी या छाल का क्वाथ-३० मि. ली. इसमें आधा चम्मच मधु मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। आगन्तुक जख्म पर (फाइब्रोइड गन्ड) इसकी छाल के स्तर बना कर जख्म में बाँधने से जख्म पर तुरंत रूझ आ कर जख्म भर जाता है। हथेली तथा पैरों के तलों पर उत्पन्न होने वाली गरमी में इसके पुष्प विन्यास (पुष्प गुच्छ) बेर के पत्ते तथा आँवला इन सबको इकट्ठा कर पीसकर इनके रस को हथेली तथा पैरों के तलों पर मालिश करनी चाहिए। छाले फोड़ने के लिए इसकी छाल तथा काली तुलसी का रस निकाल कर इसमें चावल का कुशक दें, इन सबको मिला कर रखे रहने दो इसमें खट्टापन आने पर इसकी पोटली बांधनी चाहिए।

अंगघात में इसके छाल की राख रोग ग्रस्त अंग पर बाँधने से वह अंग उष्ण होकर इसकी असंवेदनता दूर हो जाती है। कफ में इसके छाल की राख का सेवन मधु के साथ करने से लाभ होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अश्वाह/पीत कनेर Thevetia peruviana (Piers) Merr. Thevetia neriifolia Juss. ACPOCYANCEAE.

ENGLISH NAME:- Yellow oleander/ Luckynut. Hindi - Peela Kaner, Kandail.

PARTS-USED:-Bark, Leaves, Roots.

DESCRIPTION:- A small evergreen shrub like tree, about 10-12 feet high with milky juice. Leaves simple, linear and alternate close to gether. Flowers fragrant bell shaped & Yellow.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Flowers & Pericarp of Fruit Contains:-Alpha and Beta Amyrin, Epiperuviol acetate, Glucoside, Kaempferol, Quercetin. Seeds Contains: Thevefolin, Thevetin-A&B. Neriifolin, Cerberin, Peruvoside, Peruvocidic acid, Theveside, Viridoside; Bark Contains: Thevetin (Glucoside.)

ACTIONS:-Diuretic, Cardio tonic, Cathartic, Anti pyretic, Febrifuge.

USED IN:- Bark is used in: intermittent fever, Oedema, Dropsy, Rheumatism; Seeds are purgative; Leaves-Emetic & Purgative. Roots. Used in the form of plaster on tumour.

प्रचलित नाम- पीला कनेर

प्रयोज्य अंग- छाल, पत्र तथा मूल।

स्वरूप-सदा हरित लघु गुल्म जैसा वृक्ष जो औसतन १०-१२ फूट ऊँचा होता है। पत्र सरल संकुचित तीक्ष्णाग्र एकांतर किन्तु पास-पास होते हैं। पुष्प घंटी आकार के पीतवर्णी होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पुष्प तथा फल के फलावरण में आल्फा तथा बीटा-एमिरीन, एपिपेरुवियॉल, एसीटेट, ग्लूकोसाईड, किम्फेरॉल, क्वेरिसेटिन। इसके बीज में थिवेफोलिन, थिवेटिन-ए तथा बी, नेरीफॉलिन, सरबेरिन, पेरुवोक्साइड, पेरुवोसिडिकअम्ल, थिवेसाइड, विरीडॉसाइड, इसकी छाल में एक ग्लूकोसाइड-थिवेटिन पाया जाता है।

गुण-मूत्रल, हृदयबल्य, भेदक, ज्वरघ्न, ज्वरप्रतिबंधक।

उपयोग-इसकी छाल का प्रयोग नियतकालिक ज्वर में, शोथ, जलोदर, आमवात में लाभकारी। इसके बीज अतिरेचक, पत्र-वामक, अतिरेचक; मूल का प्रयोग गण्ड पर प्लास्टर के रूप में लाभकारी। पीत कनेर के विविध भागों से निकलने वाला दुग्ध क्षीर अति विषैला है। छाल का चिकित्सा में उपयोग अल्प मात्रा में करना चाहिये, अधिक मात्रा में प्रयोग से वमन तथा पतले दस्त होते हैं। छाल का चूर्ण आधा रत्ती देने से मलेरिया ज्वर में लाभकारी। हृदय रोग में छाल का चूर्ण अल्प मात्रा में सेवन से हृदय को बल मिलता है। वृक्क में रक्ताभिसरण अधिक होने से मूत्रोत्सर्ग अधिक होता है। इसकी कोमल टहनियों की छाल को खुली जगह पर हवा में सुखाकर प्रयोग करना चाहिये। कुछ माह तक यह सूखी हुई छाल रखी रहने पर सत्वहीन हो जाती है। इसके बीज विषैले होते हैं, इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए। औषधि के रूप में इसकी छाल का प्रयोग कभी भी खाली पेट नहीं करना चाहिए। ज्वर में इसके फांट का प्रयोग करते हैं। 'यह वनौषधि अति विषैली होने के कारण इसका आंतरिक प्रयोग बहुत कम किया जाता है।'

मात्रा-छाल का चूर्ण-आधा रत्ती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मयूर पंख Thuja orientalis L Syn Biota orientalis, Endl. CUPRESSACEAE.

286

ENGLISH NAME:- Oriental Arbor-Vitae. Hindi - Vidya
PARTS-USED:-Green Flat branches.
DESCRIPTION:- A small compact ever green shruby tree, branches thin flattened, bark red dish brown. flat branches appear likes single diveded leaf. Leaves opposite, decussate, small scale like. Cone bluish green.
TASTE:-Acrid/Aromatic
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:- Volatile oil, Pinicrin, Tannin, Thujin, Thujetic acid. Mayurone is extracted from the essential oil; other contents like Glucoside and 7 penta hydroxy flavon are also found.
ACTIONS:-Diphoretic, Diuretic, Blood purifier, Anthelmintic, Astrigent, Antipyretic, Anti bacterial, Antiseptic, Wound healing; Anti-emetic.
USED IN:- Fever, Scurvy, Cough, Rheumatism, Leucorrhoea Menorrhagia, Dysmenorrhagia, Distocia; Ahof green flat branches is Anti-emetic used with honey.

प्रचलित नाम- मोर पंख
प्रयोज्य अंग- हरित वर्णी चिपटी शाखाएँ।
स्वरूप-एक छोटा सघन सदा हरित झाड़ीनुमा वृक्ष, शाखाएँ चिपटी पतली, छाल बादामी लाल रंग की। सपाट हरित शाखाएँ एक शाखित पत्रक की तरह दिखती है। पत्र विपरीत छोटे एवं कलक जैसे।
स्वाद-कटु/सुगंधित
रासायनिक संगठन- इसकी हरित शाखाओं में उड़नशील तेल, पिनीकिन, टैनिन, थुजिन, थुजैक्टिक एसिड पाये जाते हैं। इसके उत्पत्त तेल में मयुरॉन होता है। इसके अतिरिक्त अन्य तत्त्व ग्लूकोसाइड तथा ७-पेन्टा हाइड्रोक्सी फ्लेवॉन पाये जाते हैं।
गुण-स्वेदजनन, मूत्रल, रक्तशोधन, कृमिघ्न, ग्राही, ज्वरघ्न, कीटाणुघ्न, प्रतिदूषित, व्रणरोपण, वमन शामक।
उपयोग-ज्वर, स्कर्वी, कास, संधिशोथ, अत्यार्त्तव, नष्टार्त्तव, कष्टार्त्तव, प्रदर, उपदंश, कृमिरोग में इसकी हरित वर्णी चिपटी शाखाओं का क्वाथ या टिंक्चर बनाकर प्रयोग किया जाता है। इसकी हरी-चिपटी शाखाओं की भस्म का प्रयोग मधु के साथ (दो रत्ती) किसी भी प्रकार की उल्टी के शमन के लिए किया जा सकता है। (प्रत्येक आधा घंटे के बाद) इसकी शाखाओं (चिपटी) से निकलने वाला तेल जन्तु नाशक होने के कारण व्रणरोपण क्रिया शीघ्र होती है।

❖ ❖ ❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुडूची / अमृता Tinospora cordifolia (Willd) Miers. MENISPERMACEAE.

287

ENGLISH NAME:- Tinospora./ Guduchi. Hindi - Gurich.

PARTS-USED:-Whole plant, Juice of Fresh plant.

DESCRIPTION:- An extensive climber with corky, grooved bark, leaves are cordate simple with long petiol, flowers small yellow in clusters, appear at leafless state.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Plant Contains:-Starch, Glycoside (Giloin) Tinosporic acid, Vasa alcohol, Essential oil, Vasa acid, Proteins, Calcium. Phosporus, Berberine, Gilosterol.

ACTIONS:-Astringent, Antipyretic, Rejuvenator, Blood purifier. Tonic, Diuretic, Anti-dote, Anodyne, anthelmintic, antispasmodic.

USED IN:- Pyrexia, Skindisease, Gout, Rheumatism, Arthritis, Sprue, Piles, urinary Calculii, Hypoglycaemic, Anti elegric, Anti Inflammatory, General debility, Polyuria Leprosy flatulence, dyspepsia.

प्रचलित नाम- गिलोय

प्रयोज्य अंग- पंचांग, ताजे पादप का स्वरस।

स्वरूप-एक घनिष्ठ विशाल लता जिसकी छाल बुच जैसी, किन्तु खांच युक्त, पत्र हृदयाकार सरल तथा लम्बे पत्रवृन्त वाले, पुष्प पीतवर्णी जो झुमको में होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें स्टार्च, ग्लायकोसाइड (गीलोइन), टिनोस्पोरीक अम्ल, वासा अल्कोहल, उत्पत्त तेल, वसा अम्ल, प्रोटोन, कैल्शियम तथा फोस्फोरस पाये जाते, इसके अतिरिक्त इसमें बर्बेरिन एवं गिलोस्टीरॉल भी होते हैं।

गुण-ग्राही, ज्वरहर, रसायन, रक्तशोधन, बल्य, मूत्रल, विषघ्न।

उपयोग-जीर्ण ज्वर, चर्मरोग, वातरोग, आमवात, संधिशोथ, संगृहणी (अजीर्ण, जिह्वा शोथ, अरक्तता तथा दुर्बलता), अर्श, मूत्राशय, अश्मरी, रक्त में शर्करा प्रमाण कम करता है प्रत्युजताहर, शोथहर, सामान्य दौर्बल्य में लाभकारी। प्रमेह तथ कुष्ठ रोगों में। प्रमेह में गिलोय का सत् (दो माशा) १०० मि.ली. दूध में सेवन से लाभ।

जीर्ण ज्वर में दो माशा सत घी तथा मिश्री के साथ सेवन से लाभ। हृदयशूल तथा वातशूल में गिलोय का चूर्ण तथा काली मिरच के चूर्ण का क्वाथ गरम जल के साथ सेवन से लाभ होता है। प्लीहा तथा खाँसी एवं अरुचि में गिलोय के स्वरस में पीपली का चूर्ण तथा मधु मिलाकर सेवन से लाभ। मूत्रकृच्छ्र में गिलोय के स्वरस में मधु मिलाकर सेवन से लाभ।

रसायन इसका प्रयोग रसायन के रूप में होता है। विषम ज्वर में गिलोय के रस के सेवन से विषम ज्वर ठीक होता है। कामला में गिलोय के स्वरस में मधु मिलाकर प्रात: काल इसका सेवन करने से लाभ होता है। वातरक्त में गिलोय के रस में दूध एवं तेल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलाकर पकाना चाहिए जब तक पानी का भाग जल न जाय, इसका प्रयोग करने से लाभ होता है। स्तन्य वृद्धि के लिये गिलोय के क्वाथ के सेवन से लाभ होता है। वातरक्त (गठिया) यदि पित्त प्रधान वात रक्त हो, तो गिलोय के रस के सेवन से लाभ होता है। अर्श में गिलोय स्वरस या इसका चूर्ण का सेवन कराने के बाद ऊपर से तक्र पीने को दें। वात ज्वर में गिलोय के शीत कषाय का प्रयोग लाभकारी है। बलवान् (शक्तिशाली) बनने के लिये गिलोय चूर्ण १० तोला, गुड़ १० तोला, मधु १६ तोला, घी १६ तोला लें। प्रथम गुड़ तथा घी की चासनी बना लें, उसमें मधु एवं चूर्ण डालकर छोटे-छोटे टुकड़े बना लें। इन का सेवन जठराग्नि के बलाबल का निर्णय कर, करना चाहिये। मिताहार एवं हिताहार सेवन करें। इस प्रयोग के सेवन करने वाले को किसी प्रकार का रोग नहीं होता। वातजन्य रक्त प्रदर में गिलोय के स्वरस का सेवन कराना चाहिये। नेत्र वेदनाओं में गिलोय तथा त्रिफला क्वाथ में पिप्पली एवं मधु मिलाकर नियमित सेवन कराने से लाभ होता है। सर्व प्रमेहों में गिलोय स्वरस एवं मधु का सेवन प्रतिदिन करना चाहिये, अवश्य लाभ होता है। शास्त्रकारों के अनुसार ताजी एवं हरी गिलोय का प्रयोग औषधि रूप में करना अधिक लाभकारी होता है। इसका प्रयोग ताजी गिलोय को पीसकर चटनी बना, एक तोला चटनी १६ तोला जल में उबालकर २-४ तोला जल शेष रहे, तब इसको छानकर इसमें एक तोला मधु मिलाकर इसका सेवन करने से सभी प्रकार के ज्वर में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यक्ष्मा के रोगियों के लिए भी लाभकारी है। खाँसी, अरुचि, मूत्रदाह, जोड़ों का दर्द इन सबमें भी गिलोय का यह क्वाथ उपयोगी है। कामला में गिलोय का क्वाथ उपर्युक्त विधि से तैयार किया हुआ अतिलाभकारी है। इसके सेवन से यकृत क्रिया उत्तेजित होती है। हृदय रोग में भी इस क्वाथ का सेवन लाभकारी होता है। यदि गिलोय के साथ पुनर्नवा मिलाकर क्वाथ बनाया जाता है, तो अधिक लाभकारी है। गिलोय में कटु, कषाय, तिक्त यह तीनों रस हैं, विपाक में यह मधुर, वीर्य में उष्ण तथा प्रभाव में ज्वर नाशक है। यह बल्य (टॉनिक) रसायन, अग्निदीपन (स्टीमेकीक) हृदय बल्य (हार्ट टॉनिक) आयुष्य। इसके अतिरिक्त कामला, कुष्ठ, गाऊट (वातरक्त), संधिवात, पित्त, कृमि, दाह, तृष्णा, भ्रान्ति, पाण्डुरोग, प्रमेह(मूत्ररोग), कास, रक्तार्श, कण्डु, विसर्प इन सब रोगों का नाश करने वाली औषधि है, एक साथ में सभी रोगों का नाश करने वाली औषधि का 'अमृता' नाम सार्थक होता है।

गिलोय सत् की विधि-ग्रीष्म ऋतु की धूप में गिलोय के टुकड़ों को कूटकर जल में भिगोकर रख दें। चौबीस घंटे जल में रहने के पश्चात् भली प्रकार हाथ से मसल कर छान लें। इस जल को स्टील की परात में भर लें तथा स्थिरता के लिए परात को धूप में रख दें। जल की निचली सतह पर मैदे जैसा सत्व इकट्ठा हो जाता है। इसमें बाकी बचा जल धीरे-धीरे धूप में सुखा लें। इस सत्व की गोलीयाँ बना लें। सत्व की यह गोलियाँ पौष्टिक तथा दाह शामक होती हैं।

मात्रा- क्वाथ- ५० से १०० मि. ली.। चूर्ण- १ से २ ग्राम। ताजा स्वरस- १०-२० मि.ली.।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शृंगाष्टक Trapa natans Linn. Var. bispinosa (Roxb) Makine. TRAPACEAE.

288

ENGLISH NAME:- Water chest Nut. Hindi - Singhara.
PARTS-USED:-Stem and Fruits (Nuts.)
DESCRIPTION:- An aquatic herb, floating in fresh water ponds on long flexuos stem, ascending in water; Leaves triangular, White Flowers.
TASTE:-Sweet/Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:-Citric acid, Tannin, Amylose, Amylopectin, Carbohydrates, Beta-amylase, Phosphorylase, Protein, Fat, Nicotinic acid, Riboflavin, Thiamine, Vitamins A & C, Mangenese.
ACTIONS:-Astringent, Nutritive, Tonic, Refrigerent, Stomachic, Anti-Inflammatory, Spermopoeitic.
USED IN:- Fruits used in: Diarrhoea, Dyscrasia. Leucorrhoea, Pragnent woman; Given with milk-in nervous and general debility, Seminal weekness, Stem juice in: Opthalmic infections.

प्रचलित नाम- सिंघाड़ा
प्रयोज्य अंग-कांड एवं फल (काष्ठ फल)
स्वरूप-यह एक जलीय क्षुप जो छोटे ताल-तलैयों में उत्पन्न होता है। पानी की सतह पर तैरता हुआ। फैला रहता है। पत्ते त्रिकोणाकार होते हैं। पुष्प श्वेतवर्णी तथा फल त्रिधारे एवं उनके ऊपर दो कांटे होते हैं।
स्वाद- कषाय मधुर।
रासायनिक संगठन- इसके फल में सिट्रिक अम्ल, टैनिनश, एमिलोज़, एमिलोपेक्टीन, कार्बोदित, बीटा-एमिलेज़, फॉस्फोराइलेज, प्रोटीन, वसा, निकोटिनीक अम्ल, रीबोफ्लेविन, थायमाइन, विटामिन्स ए तथा सी, मेंगनीज पाये जाते हैं।
गुण-ग्राही, पौष्टिक, बल्य, दाहशामक (शीतल) दीपन, शोथहर, शुक्रवर्धक।
उपयोग-इसके फल का प्रयोग अतिसार, रक्तदोष, श्वेत प्रदर, गर्भिणी महिलाओं को दूध के साथ इसके सेवन से नाड़ी तंत्र तथा सामान्य दौर्बल्य तथा शुक्रदौर्बल्य में लाभ होता है। इसके कांड का रस नेत्र रोगों में लाभकारी। रक्त स्तंभक के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके फल (पेया) का सेवन दूध के साथ पैत्तिक रोग तथा गर्भिणी को लाभ होता है। गर्भवती महिला को सातवें मास में इसका सेवन लाभकारी है। पित्तातिसार में यह अति लाभकारी है। मूत्रकृच्छ्र में इसका क्वाथ लाभकारी। इसके फलों में चावल के समान पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं। मैंगनीज धातु को खींचने की इसमें अद्‌भुत शक्ति है, इसमें भी इस धातु का थोड़ा अंश पाया जाता है। पित्तातिसार में यह उपयोगी है।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोक्षुर Tribulus terrestris. Linn. ZYGOPHYLLACEAE.

289

ENGLISH NAME:- Land Caltrops. Hindi - Gokhru

PARTS-USED:-Fruits and Roots.

DESCRIPTION:- A small creeping herb. all parts are clothed with hairs. Leaves pinnate Compound, opposite, leaflets 4-7 pairs, oblique and hairy. Flowers small axillary of yellow colour. Fruits with five pairs of spines.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Fruits Contain:-Alkaloids, Fixed oil, Essential oil, Resin, Steroids, Saponins, Vitamin-C, Proteins and Nitrates.

ACTIONS:- Cooling Stomachic, Aphrodisiac, Diuretic, Tonic, Refrigerent, Diphoretic, Anti-inflammatory, Carminative, appetizer, expectorant, anodyne.

USED IN:-Disuria, Nephritis, Urinary calculii, Impotency, Seminal debility, Piles, Cough, Asthma, Polyuria, Heart disease.

प्रचलित नाम- छोटा गोखरू

प्रयोज्य अंग- फल एवं मूल

स्वरूप-एक प्रसरणशील क्षुप जो २-३ फूट के घेरे में फैला हुआ रहता है। जिसके सभी अंग रोमश होते हैं। इसके पत्ते संयुकत पक्षाकार, विपरीत, पत्रिका ८-७ जोड़े, पत्र तिरछे एवं रोमश होते हैं। पुष्प छोटे-छोटे पीतवर्णी, पत्रकोणों में आते हैं। फल चिपटे उन पर पाँच जोड़े कांटे होते हैं।

स्वाद- मधुर रस।

रासायनिक संगठन- इसके फल में क्षारभ, स्थिर तेल, उत्पत्त तेल, राल, स्टीरोइड्स, सेपोनिन्स, विटामिन्स-सी, प्रोटीन्स एवं नाइट्रेट पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, वाजीकरण, मूत्रल, बल्य, दाहशामक, स्नेहन, शोथघ्न, वातहर।

उपयोग-मूत्रकृच्छ्र, वृक्क शोथ, मूत्राशय अश्मरी, नपुंसकता, शुक्र दौर्बल्य में, अर्श, कास, श्वासरोग, प्रमेह, हृदय रोग में। इसके फलों का फांट-अश्मरी, वृक्कशोथ, वातरक्त तथा मूत्रकृच्छ में सेवन से लाभकारी। इसके अतिरिक्त कास तथा हृदय रोग में प्रयोग से लाभ होता है।

इसके फल के चूर्ण का सेवन करने से गर्भाशय शुद्ध होता है। अश्मरी भेदन के लिये फल का चूर्ण-मधु के साथ सेवन कर बकरी का दूध सात दिन तक पीने से लाभ होता है।

आमवात एवं संधि शोथ में इसके फल एवं सोंठ (सम मात्रा) का क्वाथ बनाकर, प्रात: एवं रात्रि समय में सेवन से लाभ होता है। इससे कटिशूल नंष्ट होता है, पाचन शक्ति बढ़ती है तथा वेदना दूर होती है। क्षय तथा कास में यक्ष्मा तथा इससे होने वाले कास में अश्वगंधा का चूर्ण तथा गोक्षुर फल का चूर्ण (समभाग) मिलाकर एक-एक चम्मच प्रात:

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एवं रात्रि समय सेवन करने से लाभ होता है।

मूत्रकृच्छ्र एवं मूत्रावरोध में इसके पंचांग का क्वाथ बनाकर इसमें मधु मिलाकर प्रात: एवं सायं समय सेवन से लाभ। (१०० मि.ली.दूध+१००मि.लीं.जल में एक तोला गोक्षुर चूर्ण), गंजापन दूर करने के लिये- इसके फूल तथा तिल के फल (समभाग) लेकर पीसकर इसमें मधु एवं घी मिलाकर सिर पर लेप करने से बाल आकर गंजापन दूर होता है। गर्भाशय शूल में गर्भपतन के पश्चात् होने वाले शूल में पाँच ग्राम इस के फल, पाँच ग्राम काली किशमिश दो ग्राम मधुयष्टि मिलाकर इनको पीसकर नित्य प्रात: एवं रात्रि समय सेवन से लाभ। मल-मूत्र बंद हो जाने पर इसके फल के क्वाथ में यवक्षार मिलाकर पिलाना चाहिये। वाजीकरण के लिये इसके फलों को दूध में उबालकर पिलाने से वाजीकरण गुण प्राप्त होता है। तथा जीर्ण शरीर वाले पुरुष भी स्त्रियों के साथ संभोग क्रिया कर सकते हैं। शोष में गोक्षुर तथा अश्वगंधा का सूक्ष्म चूर्ण मधु के साथ चाटकर दूध पीने से थोड़े ही दिनों में शोष, कास एवं दौर्बल्य का नाश होता है। रक्तपित्त में गोक्षुर को दूध में उबालकर पिलाने से इस रोग में लाभ होता है।

मात्रा-फल का चूर्ण-३ से ५ ग्राम दिन में तीन बार।

पंचांग का क्वाथ-२० से १० मि.ली. प्रतिदिन दो बार।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

❖ ❖ ❖

'जो पलाश वृक्ष का रोपण करता है वह ब्रह्मलोक में जाकर देवताओं का सानिध्य प्राप्त करता है।' -वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पटोल Trichosanthes dioica. Roxb.CUCURBITACEAE

290

ENGLISH NAME:- Sespadula. Hindi - Parwal.

PARTS-USED:-Leaves, Fruits and Whole plant.

DESCRIPTION:- Perennial dioecious climber, Leaves cordate ovate acute sinuate dentate, flowers white, fruits smooth Spherical, oblong green streaked, obtuse at both ends.

TASTE:-Bitter.( )

CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contain: Saponin, Essential oil and Oils.

ACTIONS:-Thermogenic fruits are Expectorant, Antipyretic, Laxative. Root are Purgative, Leaves are Stomachic, Digestive, cardiac, aphrodisiac, appetizer, germicide oleative, spermopoetic, Tonic.

USED IN:- Fruits-Jaundice, Blood disorder, Leprosy, Pruritus, alopecia Chronic fever Seeds are Anthelmintic, Antipyretic, Stomachic, Leaves are mostly used and they are Febrifuge & Blood purifier.

प्रचलित नाम- परवल

प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र तथा फल।

स्वरूप- चिरायुद्वि गृही लता, पत्र हृदयाकार, नोकदार दंतुर, पुष्प श्वेतवर्णी, फल अंड गोल तथा चिकने होते हैं।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में सेपोनिन तथा इन्द्रायण की तरह कड़वा पदार्थ, उड़नशील तेल एवं स्थिर तेल पाये जाते हैं।

गुण-कड़वे फल-कफ नि:सारक, ज्वरघ्न, मृदुरेचन, मूल अतिरेचन, पत्र-दीपन, पाचन, बल्य तथा तिक्त।

उपयोग-इसके फल का उपयोग कामला में, रक्तविकार, कुष्ठरोग, कण्डु, जीर्ण ज्वर में, बीजों का प्रयोग-कृमिनाश के लिए, ज्वरघ्न, अग्निदीपन, पत्रों का प्रयोग अधिक किया जाता है, जो ज्वरघ्न, रक्तशोधक, पित्तकफात्मक ज्वर में लाभदायी, इसके फल रक्तशोधक होने के कारण इनका प्रयोग चर्मरोगों में फोड़े-फुन्सियों में अधिक किया जाता है। गंजापन दूर करने के लिए इसके पत्रों का रस गंजे सिर पर लगाने से (लेप) असमय हुआ गंजापन (इन्द्रलुप्त) दूर हो जाता है। इसके पत्र उत्तम अम्ल पित्तहर हैं, इनका क्वाथ पीने से उदर तथा आंत में पड़े छालों पर लाभकारी, जलोदर में भी लाभ होता है। कामला तथा यकृत रोगों में इसके पत्र तथा फल का प्रयोग लाभकारी है। परवल का शाक एक श्रेष्ठ टॉनिक है। पित्त ज्वर में इसके पत्र तथा धनिया का क्वाथ लाभकारी।

रक्त पित्त में इसके पत्रों का चूर्ण या क्वाथ या स्वरस मधु के साथ सेवन से रक्तपित्त ठीक हो जाता है। विष में इसके फल का शाक खाने से लाभ होता है। पित्तश्लेष्म ज्वर में नीम की अंतर छाल एवं परवल पंचांग इन दोनों का क्वाथ इस प्रकार के ज्वर में उत्तम

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औषधि है।

शीतला में इसके मूल का क्वाथ पित्तजन्य शीतला के प्रारंभ में पिलाने से लाभ होता है। शिरोरोग में इसके मूल को जल में घिसकर कपाल पर लेप करने से किसी भी प्रकार का शिर:शूल ठीक हो जाता है या इसके मूल को जलाकर इस राख को कपाल पर लेप करने से तुरंत ही सभी प्रकार के शिर:शूल ठीक हो जाते हैं। इन्द्रलुप्त (गंजापन) में कडुवे परवल का रस निकाल सिर पर तीन दिन तक लेप करने से सिर पर बाल उग आते हैं। नेत्र रोगों में इसके फलों का शाक लाभकारी है। विद्रधि में इरंजादिघृत में पटोल पत्रों का प्रयोग लाभकारी है। मल बार के किनारे के निवासी उदर रोगों में इसका प्रयोग लाभकारी मानते हैं। इसके पत्रों तथा फलों का क्वाथ मिश्री मिलाकर सेवन से पाचन क्रिया अच्छी होती है। रक्त और पित्त विकारों में कडुवा परवल अधिक लाभकारी है।

मात्रा-मूल का स्वरस- दो औंस।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'अल्लाह वही है, जिसने पानी बरसाया, जिससे तुम्हें पीने को मिलता है और जिसमें सब्ज़ा ज़ार पैदा होते हैं और जिसमें तुम मवेशी चराते हो और उसी से तुम्हारे लिए खेती उगाते हैं। साथ ही जैतून, खजूर, अंगूर हर किस्म के फल मिलते हैं। बेशक इसमें बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो सोचने की सलाहियत (योग्यता) रखते हैं।' -उदधृत सूरहनहल (कुरान)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेथिका Trigonella foenum graecum. Linn. FABACEAE. (LEGUMINOSAE)

291

ENGLISH NAME:- Fenu greek. Hindi - Methi.
PARTS-USED:-Seeds, leaves
DESCRIPTION:- An annual erect herb, about 40 to 45 Cm. high, Compound leaves, trifoliate flowers obovate small creamish-white, bod 5-7 cm, 10-20 seeded. Seed cylindrical, truncate oblique at both ends.
TASTE:-Sharpbitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:-Alkaloids (Trigonelline, Colline.) Flavonoids, Glycosides, Proteins, Amino acid, Reducing sugars, Saponins, Steroids/ Triterpenes, Tannin, Fixed oils, Sodium, Potassim, Magnessium, Iron, Phosphate, Sulphate, Chloride; Leaves Contain: Vitamins-K, Germinating Seeds Contain: Vitamin-C.
ACTIONS:-Seeds: Oily, Aromatic, Roborant, Diuretic, emollient, aphrodisiac, jalactagogue, uterine contractor, Carminative, Stomachic, Anti flatulance, Tonic, Anti-inflammatory, Agalactia; Leaves are: Cooling, Refrigerent, Laxative.
USED IN:- Epilepsy, Paralysis, Gout, Dropsy, Chronic cough, Liver-Spleenomegaly, Decoction of Seeds with honey is beneficial in Piles, Cosmatic, Colic.

प्रचलित नाम- मेथी

प्रयोज्य अंग- बीज

स्वरूप- एक वर्षायु उन्नत क्षुप जो ४०-४५ से.मी. ऊँचा, पत्र संयुक्त, पुष्प छोटे-छोटे तथा हल्के पीले रंग के होते हैं।

स्वाद- तीक्ष्ण तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके बीज में क्षारभ (ट्रिगोनैलीन, कोलीन), फ्लेवोनोइड्स, ग्लायकोसाइड्स, प्रोटीन्स, एमिनोअम्ल, प्रह्वासक शर्करा, सेपोनिन्स, स्टीरोइड्स/ ट्रायटर्पेन्स, स्थिर तेल, सोडियम, पोटेशियम, मेग्नेशियम, लोह, फॉस्फेट, सल्फेट, क्लोराईड, इसके पत्रों में विटामिन के तथा इसके अंकुरित बीजों में विटामिन-सी पाये जाते हैं।

गुण-इसके बीज स्निग्ध, सुगंधित, वातहर, दीपन, शोथहर, बल्य, आध्मानहर, दुग्धवर्धक, इसके पत्र शीतल, दाहशामक, मृदुरेचक।

उपयोग -अपस्मार, पक्षाघात, वातरोग, जलोदर, जीर्णकास, प्लीहा तथा यकृत वृद्धि में, बीजों का क्वाथ मधु के साथ अर्श में लाभकारी। मधुमेह में इसके बीज अंकुरित कर सेवन से लाभ होता है। इसके बीज का व्यवहार कॉड लिवर आइल के स्थान पर किया जा सकता है।

ज्वर में इसके अंकुरित बीजों के सेवन से लाभ होता है। दुग्ध वृद्धि के लिये इसके बीजों की लप्सी (दलिया) बनाकर प्रसूता को देने से लाभ होता है। सूजन एवं दाह में इसके पत्रों को पीसकर इसका लेप करने से लाभ होता है। आर्तव शुद्धि के लिये इसके बीजों के लड्डू बनाकर प्रसूता को खिलाने से भूख बढ़ती है एवं आर्तवशुद्धि होती है। हाथ पैरों में वात के कारण होने वाला शूल में मेथी के बीजों को घी में भूनकर इसका आटा पीस लो, इसमें घी तथा गुड़ मिलाकर लड्डू बना कर, प्रतिदिन एक लड्डू खाने से सप्ताह भर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शूल नष्ट हो जाता है। प्रवाहिका (मरोड़-पेचिश) में मेथी के पत्रों का रस पाँच तोला, इसमें छः माशा मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिए। बहुमूत्र में मेथी के पत्रों का रस चार तोला, इसमें डेढ़ माशा कत्था तथा तीन माशा मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

गरमी के कारण लू लगने पर मेथी की सुखाई हुई भाजी ठंडे जल में भिगोकर, भलीभाँति भीगने के पश्चात् हाथ से मसल कर इस जल को छान इसमें मधु या मिश्री मिलाकर एक बार पिलाने से ही लाभ होता है।

मेथी के बीजों से औषधि निर्माण एवं सेवन विधि - मेथी के बीजों का प्रयोग चूर्ण रूप में किया जाता है। चूर्ण तैयार करने के लिए सर्वप्रथम मेथी के बीजों को साफ कर इन्हें बारह घंटे तक जल में भिगोकर रखें, इस प्रकार ये बीज फूल जायेंगे, इन्हें जल से निकाल कर सुखा कर चूर्ण बना लें। सूखे हुए बीजों का भी चूर्ण इन्हें भून कर बनाया जा सकता है। या मधुमेह में उपयोग के लिए चूर्ण बनाने के विधि निम्नानुसार है-

बीजों को साफ कर उनसे दुगुने गाय के दूध में २४ घंटे तक भिगो दें, फिर दूध फेंक कर बीजों को गर्म जल से धोकर छाया में सुखा लें, इसके बाद पुनः गाय के दूध में २४ घंटे तक भिगो दें। इसके पश्चात् निकाल कर गर्म जल में धोकर छाया में सुखायें। इस प्रकार यह प्रक्रिया १४ बार दुहरानी चाहिए। इन बीजों का चूर्ण बनाकर स्वच्छ तथा सूखी काँच की बोतलों में भर लें। रक्त में बहुत अधिक शर्करा होने पर भी इससे बहुत ही शीघ्र लाभ मिलता है। इसका सेवन कम से कम छः महीने तक करना चाहिए। मात्रा- सामान्य बीजों का चूर्ण एक चम्मच (५ ग्राम) दूध के साथ प्रतिदिन तीन बार।

दूध में भिगोये बीजों का चूर्ण दो छोटे चम्मच (१० ग्राम) प्रतिदिन तीन बार दूध के साथ।

मात्रा-बीज का चूर्ण- ३ से ६ माशा।

पत्र स्वरस- एक तोला।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूलिनी/अर्कपर्णी Tylophora indica (Burm f.) Merr. ASCLEPIADACEAE.

292

ENGLISH NAME:- Indian Ipecacaunha. Hindi - Damajari.
PARTS-USED:-Whole Plant, Roots and Leaves.
DESCRIPTION:- A glabrous or pubescent twiner; flowers small light yellow, purple inside; fruits follicle.
TASTE:-Bitter.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Leaves Contains:-Triterpene, Alpha-amyrin, Flavonoids, Alkaloids, Tylophorine, Tylophoridine, Tylophorinidine (Anti-Tumour Alkaloid), Wax, Resin, Caoutchoue Tannin, Glucose, Calcium, Salts, Potassium, chloride Essential oil.
ACTIONS:-Anti-inflammatory, Emetic, Diphoretic, Expectorant, Stimulant, Blood purifier, Carminative.
USED IN:- Diarrhoea Dysentery, Decoction of Roots & Leaves in: Asthma, Bronchitis, Diar rhoea, Dysentery, Earlystage of Whooping Cough, Rheumatism.

प्रचलित नाम- अंतमूल/ जंगली पिवनक
प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल एवं पत्र।
स्वरूप-यह एक घनी फैली हुई चक्रारोही, चिकनी, रामश लता है। पत्ते सरल अभिमुखी, अण्डाकार, तीक्ष्णाग्र ऊपरी पृष्ठ चिकना, अधोपृष्ठ रोमश होता है। पुष्प छोटे, हल्के पीले रंग, अंदर से बैंगनी रंग के होते हैं।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसके पत्रों में ट्रायटर्पेन, आल्फा-एमिरीन, फलेवॉनोइड्स, क्षारभ टायलोफोराइन, टायलोफोरीडाईन, (टायलोफोरीनीडाइन-गण्डघ्न क्षारभ) मोम, राल, कॉचाऊ टैनिन, ग्लूकोज, कैल्शियम, लवण, पोटेशियम क्लोराइड, उत्पत्त तेल पाये जाते हैं।
गुण-शोथघ्न, वामक, स्वेदजनन, कफ निःसारक, उत्तेजक, रक्तशोधन, वातहर।
उपयोग-अतिसार, प्रवाहिका (अल्प मात्रा में) मूल तथा पत्रों का क्वाथ श्वासरोग, श्वसनीशोथ, अतिसार, प्रवाहिका, बच्चों की कुक्कुर खाँसी, आमवात में लाभकारी। अतिसार एवं रक्त अतिसार तथा संग्रहणी में इसका चूर्ण, सोंठ, गोंद तथा अल्पमात्रा में अफीम मिलाकर सेवन से लाभ होता है। कफ विकारों में इसका चूर्ण, मुलैठी तथा घोड़वच का चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है। वातरक्त में इसके मूल का बाह्य लेप लाभकारी। श्वास रोग में इस रोग के रोगियों को प्रतिदिन एक से दो पत्र खाने से लाभ होता है।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृश्निपर्णी Uraria picta. Desv. FABACEAE. (LEGUMINOSAE)

293

ENGLISH NAME:- Hindi - Pithwan

PARTS-USED:-Whole plant and Roots.

DESCRIPTION:- An erect herb or under shrub, about 2-6 feet high; leaves heterophyllous, basal leaves small (3-6 leaflets) upper leaves larger (Leaf lets-5-9) midregion of leaflets is with yellowish bands; Flowers-Red 3 to 6 inch long.

TASTE:-Sweet-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Whole plant Contains:-Five Hydroxy-7, 4-Dimithoxy Flavonol and Five other flavonoids.

ACTIONS:-Stomachic, Carminative, Alterative, Tonic, Anti-inflammatory, Antibiotic.

USED IN:- Diarrhoea, Cough, Intermittent fever, Insanity, Ulcer, Burning sensation, Rheumatism, Bleeding piles, Anti-Catarrhal. Anti-emetic, Anti-thirst.

प्रचलित नाम- पठवन

प्रयोज्य अंग- पंचांग एवं मूल।

स्वरूप-एक उन्नत क्षुप या गुल्म जो २-६ फूट ऊँचा होता है। पत्र भिन्न पत्री, इनमें तल प्रदेश के पत्र छोटे (३-६ पत्रिका) अग्र तरफ के बड़े (पत्रिकाएँ ५-९), पत्ते का मध्य भाग पीतवर्ण पट्टे युक्त होता है। पुष्प ३-६ इंच लम्बा किन्तु रक्तवर्णी।

स्वाद- तिक्त, मधुर रसयुक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में पाँच हाइड्रोक्सी- ७, ४ डाइमीथोक्सी फलेवॉनोल तथा पाँच अन्य फलेवॉनाइड्स पाये जाते हैं।

गुण-दीपन, वातहर, विपर्यय, बल्य, शोथघ्न, जीवाणुनाशक।

उपयोग- अतिसार, खाँसी, विषम ज्वर, उन्माद, व्रण, दाह, आमवात रक्तार्श, प्रतिश्यायहर, वमनहर, तृषाशामक। आमवात तथा अतिसार में मूल तथा पत्रों के क्वाथ से सेवन से लाभ। सर्प विष में इसके पंचांग का स्वरस देने से लाभ होता है। रक्तार्श में इसके पंचांग का क्वाथ पिलाना चाहिये। जीर्ण वातरक्त में पृश्निपर्णी स्वरस ५०० मि.ली. तेल २०० मि.ली. तथा बकरी दुग्ध ४०० मि.ली., से सिद्ध किये गये तेल से मालिश करने से वातरक्त का नाश होता है। रक्तातिसार में बकरी दुग्ध ४०० मि.ली., जल २०० मि. ली. में पृश्निपर्णी मूल की पेया सिद्ध करके पिलानी चाहिए। अस्थि भग्न में पृश्निपर्णी के मूल का चूर्ण मांस रस से तीन सप्ताह तक पिलाने से अस्थियों का संधान हो जाता है।

मात्रा-पंचांग का चूर्ण- आधा तोला से एक तोला।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोलकंद (वनपलांडु) Urginia indica Kunth. LILIACEAE.

294

ENGLISH NAME:- Indian Squill. Hindi - Kolkand/Banpyaji.

PARTS-USED:-Bulbs.

DESCRIPTION:- A small herb with flat, linear, acute radicle leaves 6 to18 inch long & white bulbs. Flowers brown on Scape appears before leaves.

TASTE:-Bitter-Acrid.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Bulbs Contain:-Glucosides, Scillain, Scillipicrin, Scillitin, Mucilage, Sugars, Calcium oxalate.

ACTIONS:-Diuretic, Laxative, Cardio tonic, Diphoretic, Anthelmintic, Expectorant.

USED IN:- Cough Whooping Cough, Asthma, Menorrhagia, Calculii, Thirst, Skin disease, Heart disease, Blood Pressure, Paralysis, Hepatomegaly, Pneumonia fever.

प्रचलित नाम- जंगली प्याज

प्रयोज्य अंग- कंद।

स्वरूप- एक लघु क्षुप पत्र चिपटे, पतले, तीक्ष्णाग्र तथा मूल पत्री, जो ६-१८ इंच लम्बे होते हैं। कंद श्वेत वर्णी, पुष्प बादामी रंग के जो लम्बे पुष्प समूह वृन्त पर छत्र में होते हैं।

स्वाद- तिक्त-कटु।

रासायनिक संगठन- इसके कंद में ग्लूकोसाइड्स, सिलेइन, सिलीपिकरीन, सिलीटिन, श्लेष्मल, शर्करा, कैल्शियम, ऑक्सेलेट पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, मृदुरेचक, हृदयबल्य, स्वेदजनन, कृमिघ्न, कफघ्न।

उपयोग:-खाँसी, कुक्कुर खाँसी, श्वासरोग, अत्यार्त्तव, अश्मरी, तृषा, चर्मरोग, हृदय रोग, रक्तदाब, पक्षाघात, यकृतवृद्धि, फेफड़ों का शोथ तथा न्यूमोनिया ज्वर में लाभकारी। श्वासरोग में इसके सेवन से कफ का चिपचिपापन टूटता है तथा कफ आसानी से बाहर आ जाता है। कृमिरोग में कंद के रस में आटे को मिलाकर एवं इसे सेककर खाने से कृमियों का नाश होता है। वृक्क एवं शोथ रोगों में मूत्रल होने के कारण इसके सेवन से लाभ होता है। रक्त प्रदर में इसके कंद के सेवन से लाभ होता है। यह एक अत्यन्त मूल्यवान महत्त्व की औषधि है, जहाँ-जहाँ डीजीटेलीस का प्रयोग किया जाता है, वहाँ पर इस औषधि का प्रयोग किया जा सकता है, इसका प्रयोग विशेषत: फेफड़ों के रोगों में तथा अति श्लेष्मल कफ निकलता हो, तब किया जाता है। इसके अतिरिक्त जीर्ण श्वसनी शोथ में भी बहुत ही उपयोगी है। इस औषधि के साथ आक के मूल की छाल मिलाकर उपयोग किया जाता है। बच्चों के जीर्ण कफ रोग में यह अति लाभकारी है। बच्चों के इस रोग में नीचे अनुसार दो विधियों से बनाई गयी औषधि का प्रयोग अधिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाभकारी है-

(१) शुक्तकोलकंद (ऐसीट मसिला) कोलकंद दस तोला, सिरका (एसीटिक एसिड) दस तोला, जल ३२ तोला मिलाकर सात दिन तक भिगोये रहने के पश्चात् छान लेना चाहिए। इसका सेवन ५-१५बूँद। (२) मधु शुक्त कोलकंद (सीरसिला)।

उपर्युक्त कोलकंद साढ़े सत्रह भाग, मिश्री ६५ भाग, शेष १०० भाग पूरे हो इतना जल मिला दो, इसको मंदाग्नि पर सबको मिलाकर शरबत जैसी चासनी बना लो या ढाई गुना मधु मिला दो, इसके सेवन की मात्रा आधे से एक ड्राम। जीर्ण कफ रोग में यह औषधि तीन तरह से लाभकारी है- हृदय की कमजोरी को दूर करती है। कफ शीघ्र ही बाहर निकाल देती है। आमाशय की शक्ति बढ़ाकर भूख लगाती है। भोजन का पाचन होकर दस्त साफ आते हैं।

मात्रा-एक से तीन रत्ती भर।

वमन के लिये-एक माशा।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

'हँसोड़ पीला पौधा, खिल-खिलाकर हँस पड़ा, सिर हिला-हिलाकर यह स्वीकृति दे रहा था और कहने लगा-सीखने की इच्छा रखने वाले के पग-पग पर शिक्षक मौजूद हैं। पर आज सीखना कौन चाहता है। सभी तो अपनी अपूर्णता के अहंकार में ऐंठे-ऐंठे से फिरते हैं। सीखने के लिए हृदय का द्वार खोल दिया जाय तो बहती हुई वायु की तरह शिक्षा, सच्ची शिक्षा स्वयंमेव हमारे हृदय में प्रवेश करने लगे।' -सुनसान के सहचर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अरण्य जीरक Vernonia anthelmintica (Willd) Syn: Centratherum anthelminticum (Wild) o Kuntz ASTERACEAE.(COMPOSITAE) 295

ENGLISH NAME:- Purple Flobane. Hindi - Kalijeera

PARTS-USED:-Seeds.

DESCRIPTION:- A small erect, annual herb; stem leafy, hairy, 2-3 feet high; Purple flowers in capitulum.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Seeds Contains:-Beta-Sitosterol, Vernolic acid, Flavonoids Glycosides, Trivernolin, Vernodolol (A bitter, Substance,) Sabenene, Isolimonene, Terpineols, Anisa camphor, Isocaryophyllene, Caryophyllene, Selinene.

ACTIONS:-Anthelmintic, Stimulant, Antidote, Styptic, Anti-ulcer, Carminative.

USED IN:- Usefull to Cure worms infestation, Skin affections, Gastric troubles, Honeybee & Scorpion sting, Jaundice, All types of fever.

प्रचलित नाम- काली जीरी/बनजीरा

प्रयोज्य अंग- बीज।

स्वरूप-एक उन्नत लघु एक वर्षायु क्षुप, रोमश, कांड पत्रमय २-३ फीट ऊँचा, पुष्प बैंगनी रंग के जो मुंडक में होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन-इसके बीज में बीटा-सिटास्टीरॉल, वर्नोलिक अम्ल, फलेवॉनोइड्स ग्लायकोसाइड्स ट्रायवर्नोलिन, वर्नोडॉलोल (एक कड़वा पदार्थ) सेबेनीन, आइसोलिमोनीन, टर्पीनियोल्स, एनाइसा कैम्फर, आइसो कैरियोफायलीन, कैरियाफायलिन, सेलीनिन पाये जाते हैं।

गुण-कृमिघ्न, उत्तेजक, रक्तस्तंभक, विषघ्न, व्रणघ्न, वातहर।

उपयोग-यह कृमिरोग में अत्यंत उपयोगी। चर्मरोग, आंतविकारों, मधुमक्खी तथा बिच्छू दंश में, कामला तथा तमाम प्रकार के ज्वरों में लाभकारी। कृमिरोग में कालीजीरी का चूर्ण बनाकर मधु के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के कृमि नष्ट होते हैं। मधुमक्खी के विष से शरीर पर होने वाली गांठ पर-इसके पंचांग को गरम कर विषयुक्त भाग पर बाँधने से या इसका रस निकालकर लगाने से लाभ होता है। उदरशूल एवं शरीर के किसी हिस्से में वातशूल में कालीजीरी का बारीक चूर्ण जल के साथ देने से लाभ होता है। खाज-खुजली में कालीजीरी को बर्तन में रखकर गरम कर जला कर कोयले जैसी करने के पश्चात् तेल में मिलाकर खरल में पीसकर रोगग्रस्त भाग पर लगाने से लाभ होता है। इसके पत्रों का स्वरस नासिका छिद्र से निकलने वाला पानी तथा नजले को बंद करने के लिये सेवन कराना चाहिए। जूँ मारने के लिये काली

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीरी का चूर्ण निम्बू स्वरस में मिलाकर बालों में लगाने से जूँ मर जाती है। जीर्ण ज्वर की तथा प्रसूता के लिये यह एक उत्तम औषधि है, इससे स्तन्य वृद्धि होती है। सभी प्रकार के ज्वर में मिट्टी के बर्तन में कालीजीरी तीन माशा डालकर बर्तन को अग्नि पर रख दें, गरम होकर फूटने लगे तब इसमें १४ तोला जल डाल कर उबाल लें, जब चार तोला जल बाकी रहे, तब उसमें थोड़ा मधु मिलाकर ठंडा कर पिलाने से लाभ होता है। जीर्ण कामला में-१०० मि. ग्राम कालीजीरी पीसकर प्रत्येक समय ठंडे जल के साथ देनी चाहिए। गर्भवती महिला के सूजन में कालीजीरी, जीरा तथा कुटकी का क्वाथ बनाकर पिलाना चाहिए।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जड़ी का प्रभाव रत्नों जैसा आयुर्वेद के स्पर्श सिद्धान्त के अनुसार होता है। पेड़-पौधों की जड़ें रत्नों के समान प्रभाव देने वाली सिद्ध हुई हैं। प्रमुख रत्नों के स्थान पर प्रयोग में लाई जाने वाली वनस्पतियों का विवरण-१) नीलम-बिछुआ, चन्दन २) हीरा-एरंड, अनार ३) मूंगा-अनन्तमूल, नागफनी ४) पन्ना-वरधारा (विधारा) ५) पुखराज-शुद्ध हल्दी, केला ६) मोती-खिरनी ७) माणिक्य-बेल ८) गोमेद-लाल चंदन ९) लहसुनिया-लौंग का फूल।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहदेवी Vernonia cinerea (Linn) Less. ASTERACEAE.(COMPOSITAE)

296

ENGLISH NAME:- Fleabane. Hindi - Sahdei.

PARTS-USED:-Roots, Flowers, Seeds and Whole plant.

DESCRIPTION:- A small and hairy annual herb stem erect or prostrate leaves ovate or lanceolate, toothed. Flowers violet-pinkish in Capitulum (Heads.) flat topped, involucre bracts linear.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Whole plant Contains:-Lupeol acetate, Alpha-amyrin acetate, Glucoside, Quercetin, Beta-Sitosterol, Stigma sterol, Alpha-spina sterol, Potassium chloride, Alpha-amyrin, Lupeol, Flowers Contain:-Luteolin, Iso-orientin, Chrysoeriol.

ACTIONS:-Diphoretici, Anthel mintic, Anti-inflammatory.

USED IN:- Roots useful in: Dropsy, Malarial fever; Flower useful in opthalmic disease like Conjuctevitis Seeds are useful tocure worms infestation.

प्रचलित नाम- सहदेई

प्रयोज्य अंग- मूल, पुष्प, बीज एवं पंचांग।

स्वरूप-एक लघु उन्नत या प्रसरणशील एक वर्षायु, रोमश क्षुप; पुष्प जामुनी, गुलाबी रंग के मुंडक में होते हैं।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके पंचांग में ल्युपियॉल एसिटेट, आल्फा-एमिरीन एसिटेट, ग्लूकोसाईड, क्वेरसेटिन, बीटा-सिटोस्टीरॉल, स्टिग्मास्टीरॉल, आल्फा, स्पाइना स्टीरॉल, पोटेशियम क्लोराइड, आल्फा-स्पाइनस्टीरॉल, पोटेशियम क्लोराइड, आइसो-ऑरिएन्टिन, क्राइसोएरियॉल पाये जाते हैं।

गुण-स्वेदजनन, कृमिघ्न, शोथघ्न।

उपयोग-इसके मूल का प्रयोग जलोदर तथा विषम ज्वर में लाभकारी। पुष्पों का प्रयोग नेत्र रोगों (नेत्राभिष्यंद) में लाभकारी। इसके बीज कृमिरोग में लाभकारी। ज्वर में पसीना लाने के लिये इसका क्वाथ या स्वरस पिलाते हैं। विस्फोटक में सहदेवी के पंचांग का कल्क बनाकर लेप करने से सर्व प्रकार के विस्फोटकों का नाश होता है। मूत्रदाह तथा उद्वेष्टन में इसका स्वरस पिलाने से लाभ होता है। शोथयुक्त भाग पर इसके स्वरस का लेप करने से लाभ होता है। कृमिरोग में इसके बीज के प्रयोग से कृमियों का नाश होता है। अर्श में पंचांग का स्वरस पिलाना चाहिए। सहदेवी के मूल सिर के पास रखकर सो जाने से रोगी को निद्रा आ जाती है। अश्मरी के लिये सहदेवी के पत्रों के स्वरस में तीन-चार तुलसी पत्रों का स्वरस मिलाकर सेवन कराने से अश्मरी टूट कर बाहर आ जाती है। मुखरोग में:-इसके मूल का क्वाथ बनाकर, इसका कुल्ला करने से लाभ होता है। पसीना लाने के लिए इसके मूल का क्वाथ पीने से पसीना आ जाता है। ज्वर में इसके पंचांग का स्वरस पिलाने से ज्वर उतर जाता है। कुष्ठरोग में पीत पुष्पवाली सहदेवी के स्वरस पीने से लाभ होता है।

मात्रा- स्वरस-६ माशा-एक तोला। बीज-४ रत्ती से एक माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

297

ENGLISH NAME:- Cuscus grass. Hindi - Khas

PARTS-USED:-Roots.

DESCRIPTION:- Densy tuffed, perennial 3-5 feet high, stout erect grass, leaves 1-2 feet long; flowers yellowish or reddish.

TASTE:-Bitter & Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS-Roots Contains:-Essential oil, Resin, Acidic substance, Iron, Calcium Salts, Citronellal, Geraniol, Terpene, Lignin.

ACTIONS:-Diuretic, Refrigerent, Stimulant, Stomachic, Digestive, Styptic, Febrifuge, Antifatigue.

USED IN:- Roots are useful in: Menorrhagia, Vomiting, Chronic fever, Vomiting-Cholera Disuria, Thirst, Burning sensation, Poison, Leprosy, Powder of Roots mixed with loban-Fumes of this is useful to reduce air pollution and Eradication of Mosquitos.

प्रचलित नाम- खस

प्रयोज्य अंग- मूल।

स्वरूप- सघन झुमकों में बहुवर्षीय ३-५ फीट ऊँचा, उन्नत घास जैसा क्षुप, पत्ते १-२ फूट लम्बे, पुष्प पीतवर्णी या रक्तवर्णी होते हैं।

स्वाद- तिक्त-मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में उत्पत्त तेल, राल, अम्ल द्रव्य, लोह, चूने का लवण, सिट्रोनिलॉल, जिरानिऑल, टर्पेन तथा लिग्नीन पदार्थ पाये जाते हैं।

गुण-मूत्रल, दाहशामक, उत्तेजक, दीपन, पाचन, स्तम्भन, ज्वरघ्न, श्रमहर, जल को सुगंधित करने वाला।

उपयोग-इसके मूल का प्रयोग-आत्यर्त्तव, वमन में, जीर्ण ज्वर (पित्त ज्वर एवं प्रसूता ज्वर), विसूचिका वमन, मूत्रकृच्छ, तृषा, दाह, विष तथा कुष्ठ रोगों में लाभकारी। इसके मूल का चूर्ण लोबान में मिलाकर धुआँ करने से हवा शुद्ध हो कर मच्छर का नाश करती है। इसके मूल का फाँट- इसके सेवन से तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ, प्रसूति ज्वर एवं पित्तज्वर में लाभ होता है। वमन में-आधा तोला खस के मूल को २०० मि.ली. जल में उबालकर पिलाने से लाभ होता है। इसके मूल का इत्र बताशे में दो बूंद डालकर सेवन से विसूचिका (कोलेरा) में होने वाले वमन का शमन होता है। रक्तपित्त में खस तथा चंदन का चूर्ण समभाग, शर्करा युक्त तण्डुलोदक के साथ सेवन से यह रोग तुरंत नष्ट होता है। छर्दि में खस तथा धनिये का रस मिश्रित कर पिलाना चाहिए। प्रस्वेद एवं मसूरिका में खस के सूक्ष्म चूर्ण का शरीर पर लेप करना चाहिए। इससे पसीना तथा चेचक का नाश होता है।

मात्रा-चूर्ण- २ से ४ माशा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनफशा/वनप्सा Viola odorata Linn. VIOLACEAE.

298

ENGLISH NAME:- Sweet Viola. Hindi - Vanfsa.

PARTS-USED:-Flowers.

DESCRIPTION:- A small, pubescent herb with perennial stock; leaves cordate and pubescent, arising from root stock; flowers zygomorphic and purple in colour, spurred.

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Flowers Contains:-Viola quercetin (Glucosides) Alkaloid (Violene) Phenolic compounds, Tannins, Flavonoids, Resin, Sterols, Saponins, Triterpenes, Potassium, Iron, Magnessium and Sodium.

ACTIONS:-Laxative, Expectorant, Anti-inflammatory, Febrifuge, Diphoretic, Antibillious, Cooling; Carminative, Blood purifying.

USED IN:- Cough, Catarrh, Constipation (Gulucand is useful); Root is emctic.

प्रचलित नाम- गुल बनफशा

प्रयोज्य अंग:- पुष्प

स्वरूप-एक लघु चिरायु चिकना रोमश क्षुप, पत्र रोमश एवं हृदयाकार जो मूल में से उत्पन्न होते हैं। पुष्प अनियमित बैंगनी रंग के एवं सुगंधित होते हैं।

स्वाद- मधुर।

रासायनिक संगठन- इसके पुष्पों में ग्लूकोसाइड्स, फेनॉलिक यौगिक, टैनिन्स, फ्लेवोनॉइड्स, राल, स्टीरॉल्स, सेपोनिन्स, ट्रायटर्पेन्स, पोटेशियम, लोह, मेग्रेशियम एवं सोडियम पाये जाते हैं।

गुण-मृदुरेचक, कफ नि:सारक, शोथघ्न, ज्वरघ्न, स्वेदजनन, पित्तशामक, शीतल, वातानुलोमक, रक्त शोधन।

उपयोग-खांसी में, प्रतिश्याय-कफज रोगों में इसका प्रयोग लाभकारी। इसका गुलकंद विबंध में लाभकारी। इसके मूल वामक होते हैं। इसके पुष्पों का फांट-१० से २० मि.ली. सर्दी-जुकाम तथा खाँसी में लाभकारी। इसकी पंखुड़ियों का गुलकंद विबंध में लाभकारी इसके सेवन से शौच साफ होता है। शुद्ध वनफ्शा मधुर तथा ज्वर में लाभकारी औषधि है।

इसके लिये एक वैद्यराज के पास एक धनवान स्त्री की दासी आयी और यह कहा कि मेरी मालकिन ज्वर से पीड़ित है एवं वह कड़वी औषधि नहीं पी सकती, तो वैद्यराज ने वनफ्शा का सेवन करने की सलाह दी तथा कहा कि यह औषधि मधुर होने के साथ-साथ ज्वर में भी बहुत ही गुणकारी है। ऐसा माना जाता है कि असली बनफ्शा काश्मीर तथा ईरान में होता है।

वनफ्शा शरबत बनाने की विधि- ५०० ग्राम वनफ्शा को ३ लीटर जल में रातभर भिगोकर रखें, इसे प्रात:काल उबालें। जल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का अष्टमांश भाग शेष रह जाये, तो स्वच्छ कपड़े से इसे छान लें, जितना क्वाथ हो उससे चार गुनी शर्करा डालकर पुनः गर्म करें जब तक चासनी दो तार की नहीं हो जाती। इस तहर शरबत ठण्डा होने पर बोतल में भर लें। यह शरबत पित्तज्वर में तथा प्रतिश्याय (सर्दी-जुकाम) में अतिलाभकारी है। इसके अतिरिक्त यह शरबत-कफ, स्वर भंग, कंठ दोष, जुकाम में भी अतिगुणकारी है। वनपशा के पुष्पों का गुलकंद भी बनाया जाता है। यह रक्त प्रदर तथा रक्तार्श में रक्त स्राव बंद करने में बहुत ही उपयोगी है।

कैन्सर में-वनपशा के पंचांग का क्वाथ द्राक्षासव के साथ पीने एवं लेप करने में उपयोग किया जाता है। यह अपस्मार में भी अति उपयोगी है। यूनानी हकीमों की यह प्रिय औषधि है।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

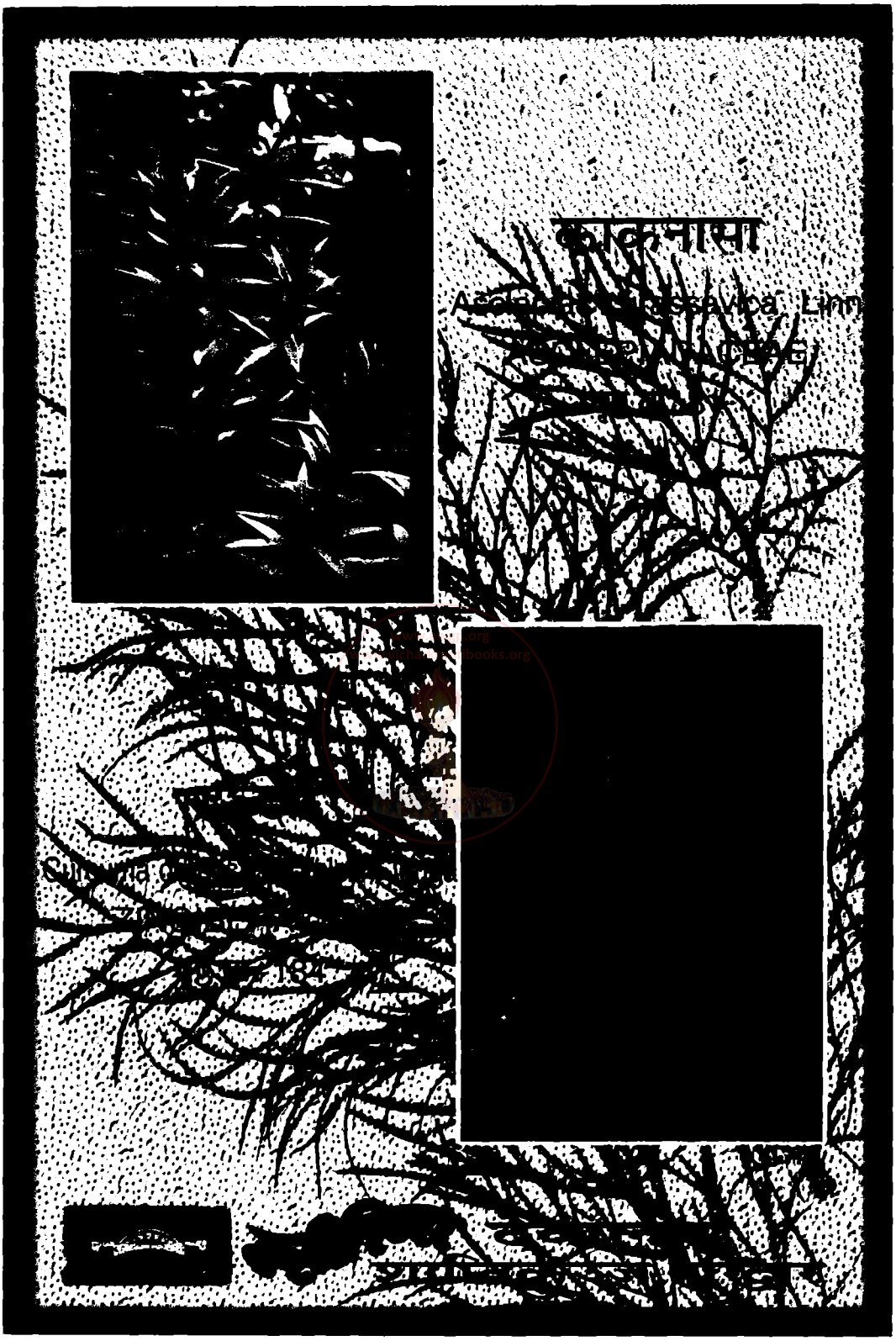
निर्गुण्डी (शेफाली) Vitex negundo Linn. VERBENACEAE.

299

ENGLISH NAME:- Fiveleaved chaste Tree (Indian Privet). Hindi - Nirguri, Samhalu
PARTS-USED:-Whole plant, Leaves, Fruits and Seeds.
DESCRIPTION:- A small shrub or tree, about 6-20 feet high, white hairy, branches are square. Leaves compound, 3 to 5 leaflets terminal leaflet large lateral leaftets are small & sessile. Flowers bluish purple. Fruits globular blackish of terripening.
TASTE:-Bitter, acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Plant Contains:-Volatile oil, Alkaloids (Nergundin and Hydrocotylon) Vitamin-C, Carotene, Flavon, Tannic acid, Hydroxy benjoic acid, Resin, Mallic acid
ACTIONS:-Aromatic, Tonic, Astringent Thermogenic Analgesic, Expectorant, Vermifuge, Anti-inflammatory, Stomachic, Carminative, Rejuvenator, Diuretic, Anthelmintic, antipyretic, diuretic, emmenagogue,
USED IN:- Acute Rheumatism, Cough, Fever, Pain, Indigestion, Flatulence, Leprosy, Ulcer, Heaviness of head, Dullness of Hearing, Spleeno megaly; Seeds are significantly anti-inflammatory, Colic, oedema, dyspepsia, Asthma.

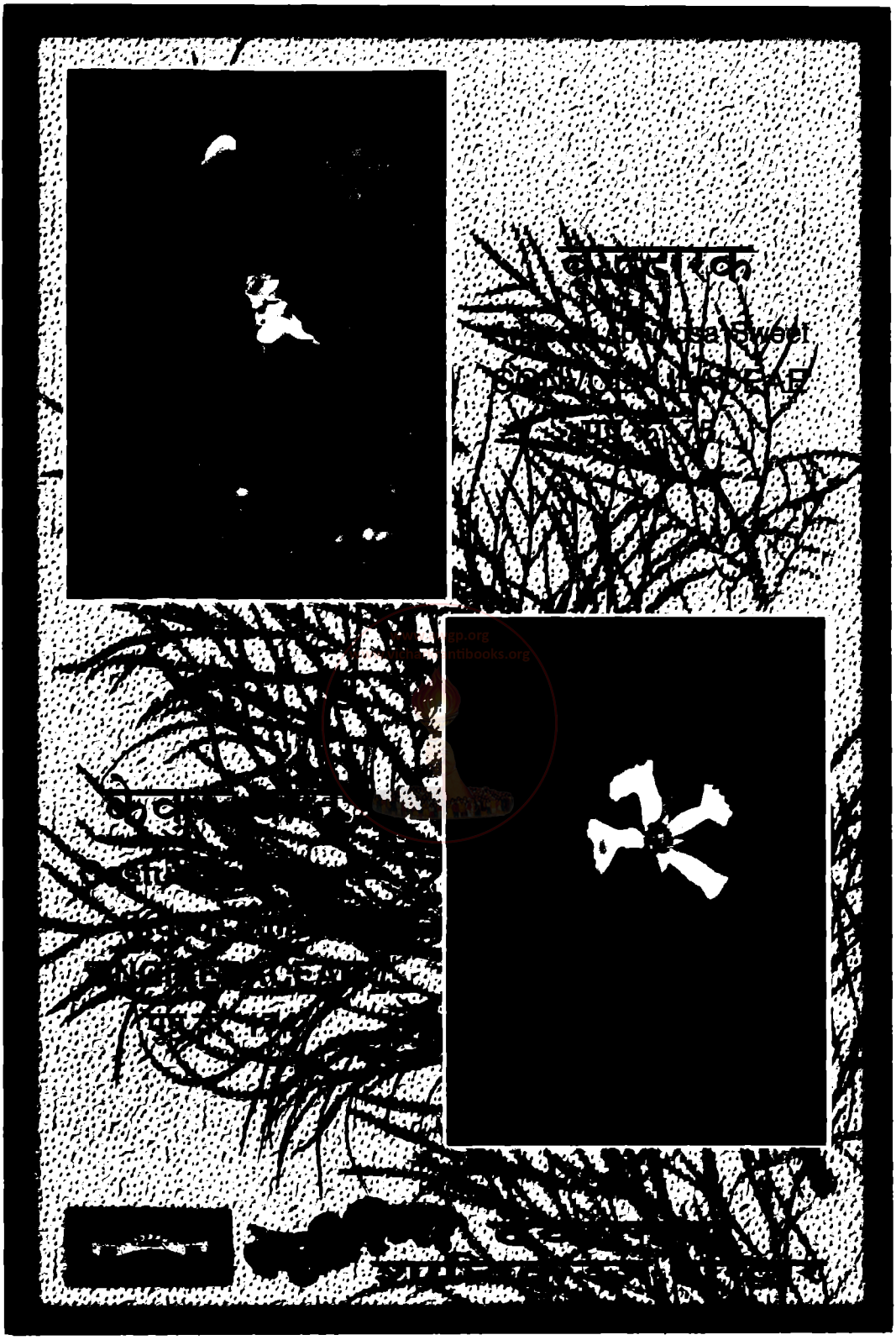
प्रचलित नाम- सम्भालु (सिंदुवार)
प्रयोज्य अंग- पंचांग, पत्र, फल तथा बीज।
स्वरूप-यह वनौषधि एक झाड़ीदार लधु वृक्ष है, जो श्वेताभ रोमावरण से आच्छादित होता है। पत्ते संयुकत, पत्रक ३-५, पत्रक अखण्ड या गोलदन्तुर, लम्बाग्र छोटे-बड़े होते हैं। अग्र पत्रक लम्बा तथा नीचे के पत्रक छोटे एवं बिना वृन्त के होते हैं। ऊपरी सतह हरी जबकि नीचली सतह श्वेताभवर्ण की होती है। पुष्प सफेद या नीले रंग के मंजरियों में होते हैं। फल गोल पकने पर काले हो जाते हैं।
स्वाद- तिक्त।
रासायनिक संगठन- इसमें उड़नशील तेल, क्षारभ (निर्गुण्डीन तथा हाइड्रोकोटिलोन) विटामिन-सी, केरोटिन, फलेवोन, टैनिक अम्ल, हाइड्रोक्सीबेन्जोइक अम्ल राल तथा मैलिक अम्ल पाये जाते हैं।
गुण-सुगंधित, बल्य, वेदनाहर, कफ निःसारक, कृमिनाशक, शोथघ्न, दीपन, वातहर, रसायन, मूत्रल।
उपयोग-जीर्ण आमवात, कास, ज्वर, शूल, कुपचन, आध्मान, कुष्ठरोग में, व्रण, शिरःभार, श्रवण भेद, प्लीहावृद्धि में इसके बीज शोथघ्न गुण वाले हैं। फेफड़ों के शोथ, उदावरण शोथ, संधिशोथ, तीव्र आमवातिक संधि शोथ-इसके बीज के चूर्ण के सेवन से लाभ, इसके पत्तों को पीसकर गरम कर शोथ पर प्रतिदिन ३-४ बार बांधने से लाभ होता है। इसके साथ करंज, नीम तथा धतूरे के पत्तों का भी उपयोग लाभकारी। कफ ज्वर एवं फुफ्फुसावरणीय शोथ में इसके पत्रों का स्वरस या क्वाथ, छोटी पिप्पली के साथ पिलाने से लाभ तथा पत्रों का सेक किया जाता है। शीत ज्वर एवं विषम ज्वर में इसके पत्रों का चूर्ण या पंचांग स्वरस के सेवन से लाभ होता है। मूल का क्वाथ गठियारोग में लाभकारी है। गृध्रसी-सायेटिका

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



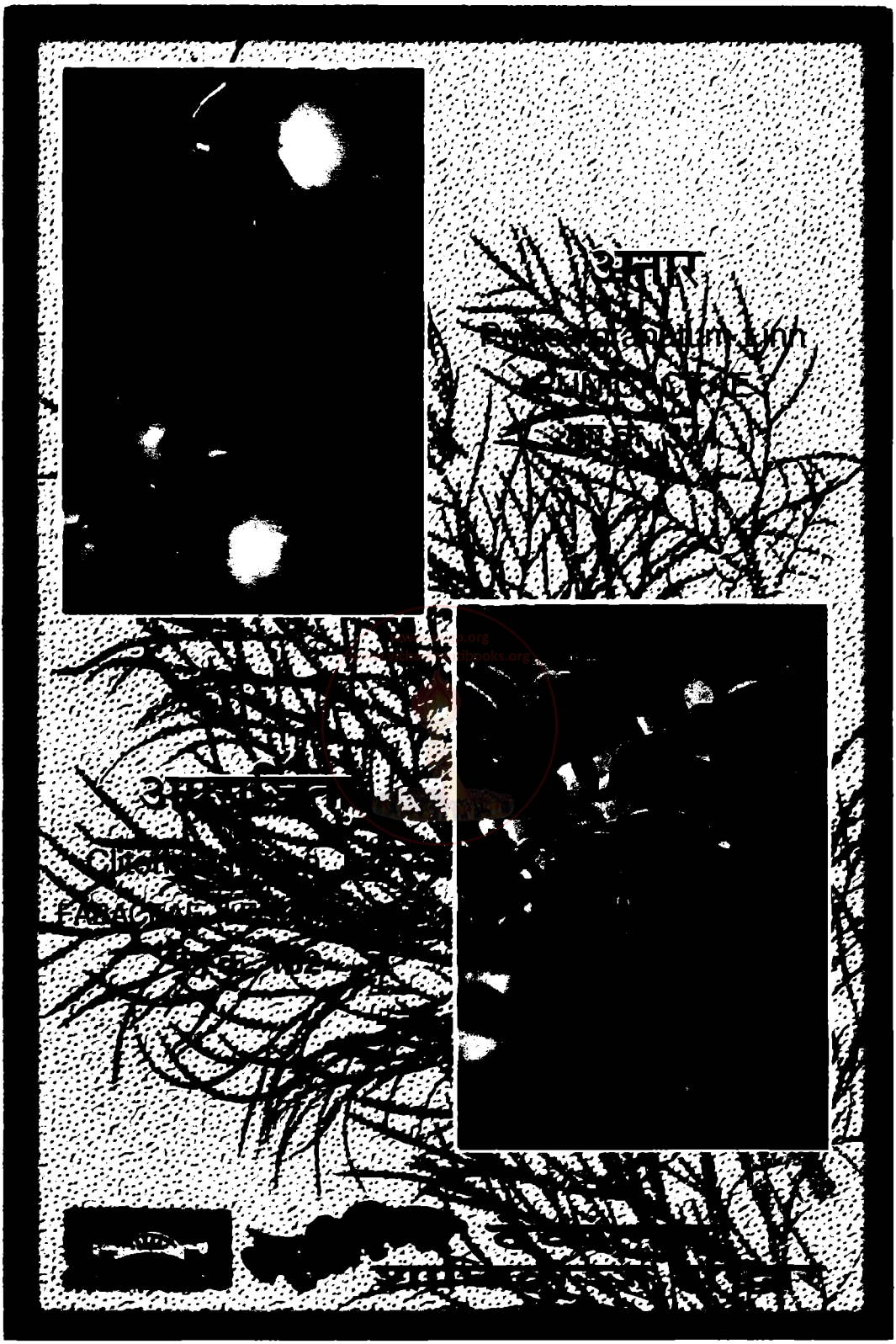
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



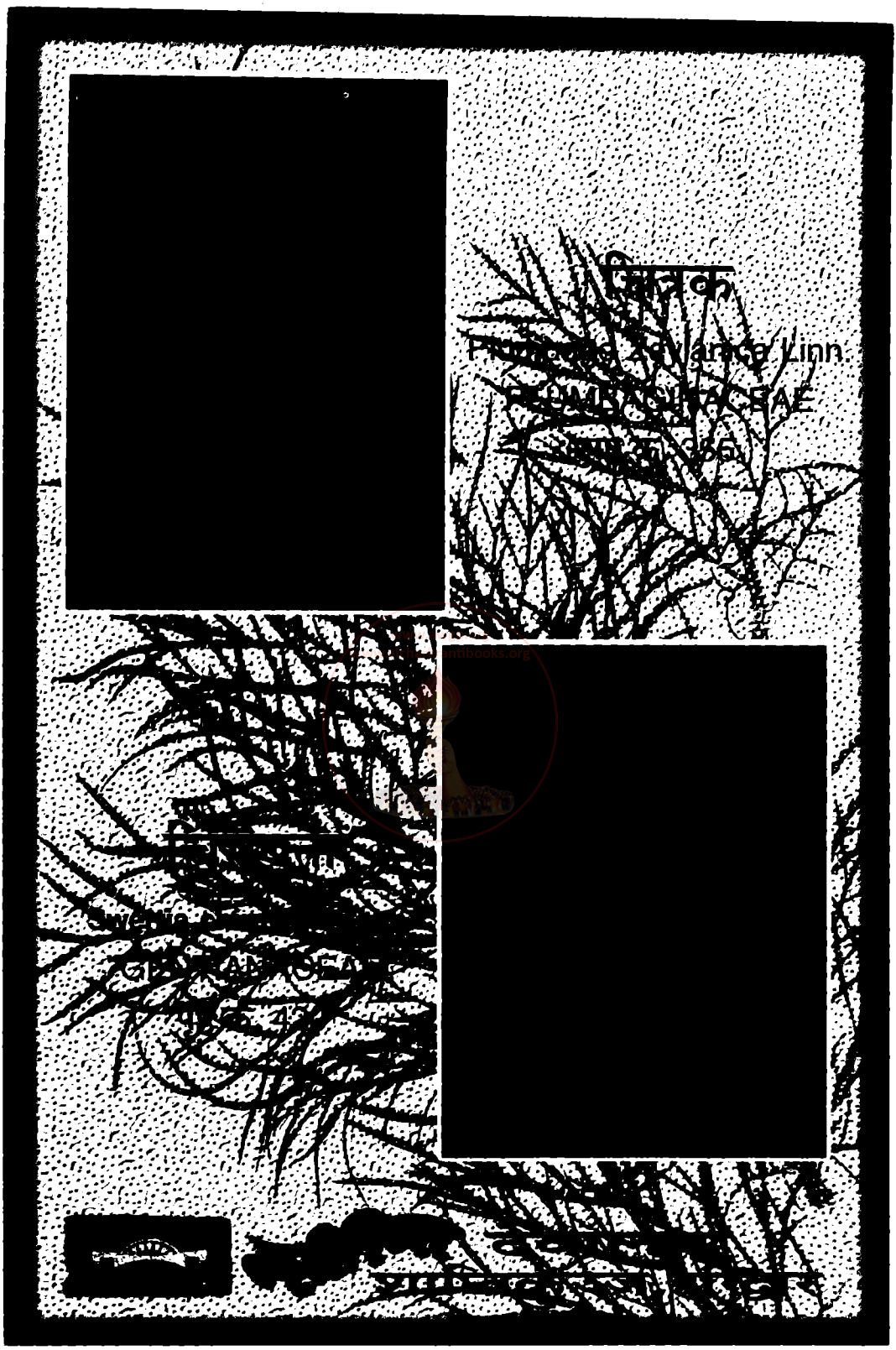
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



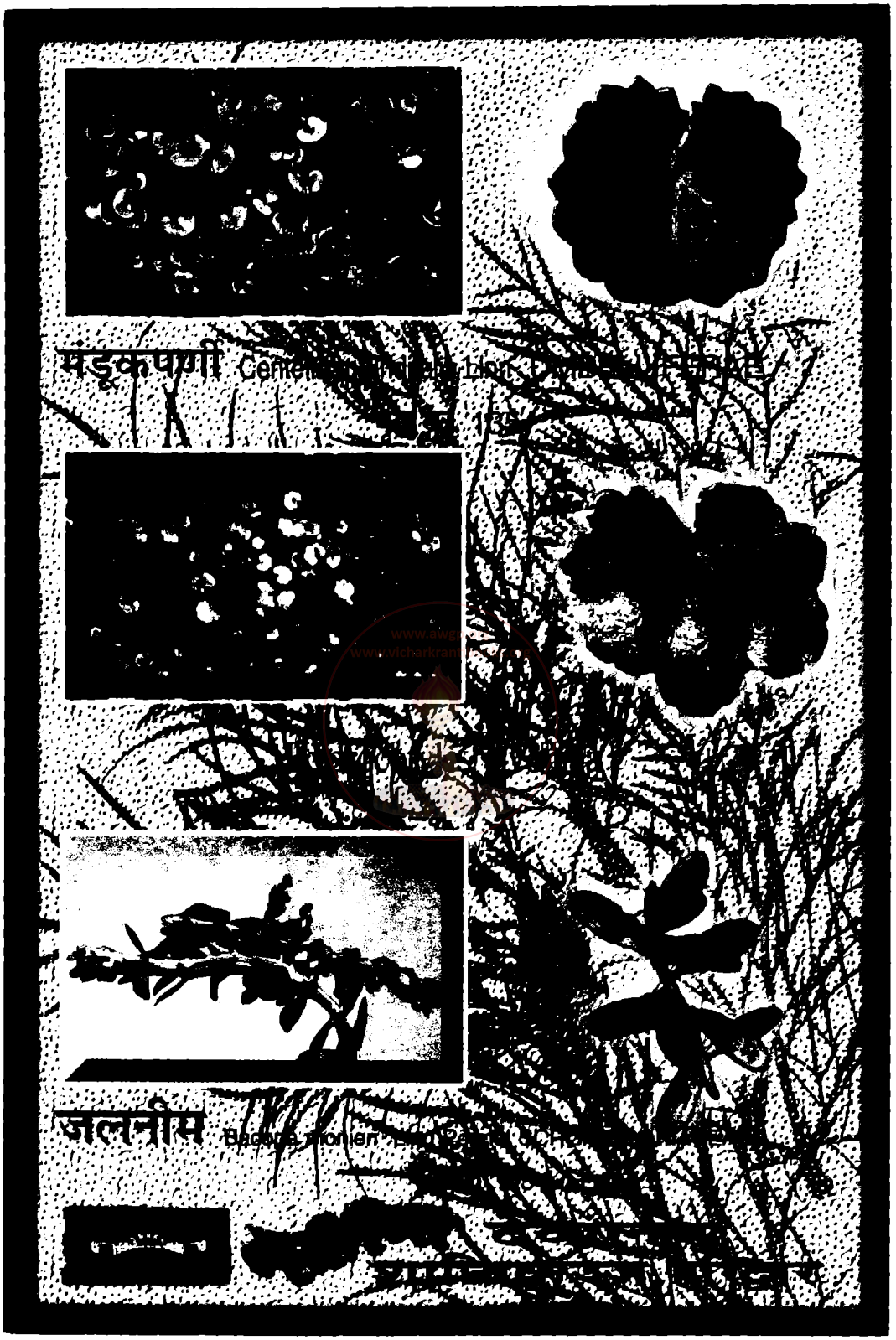
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



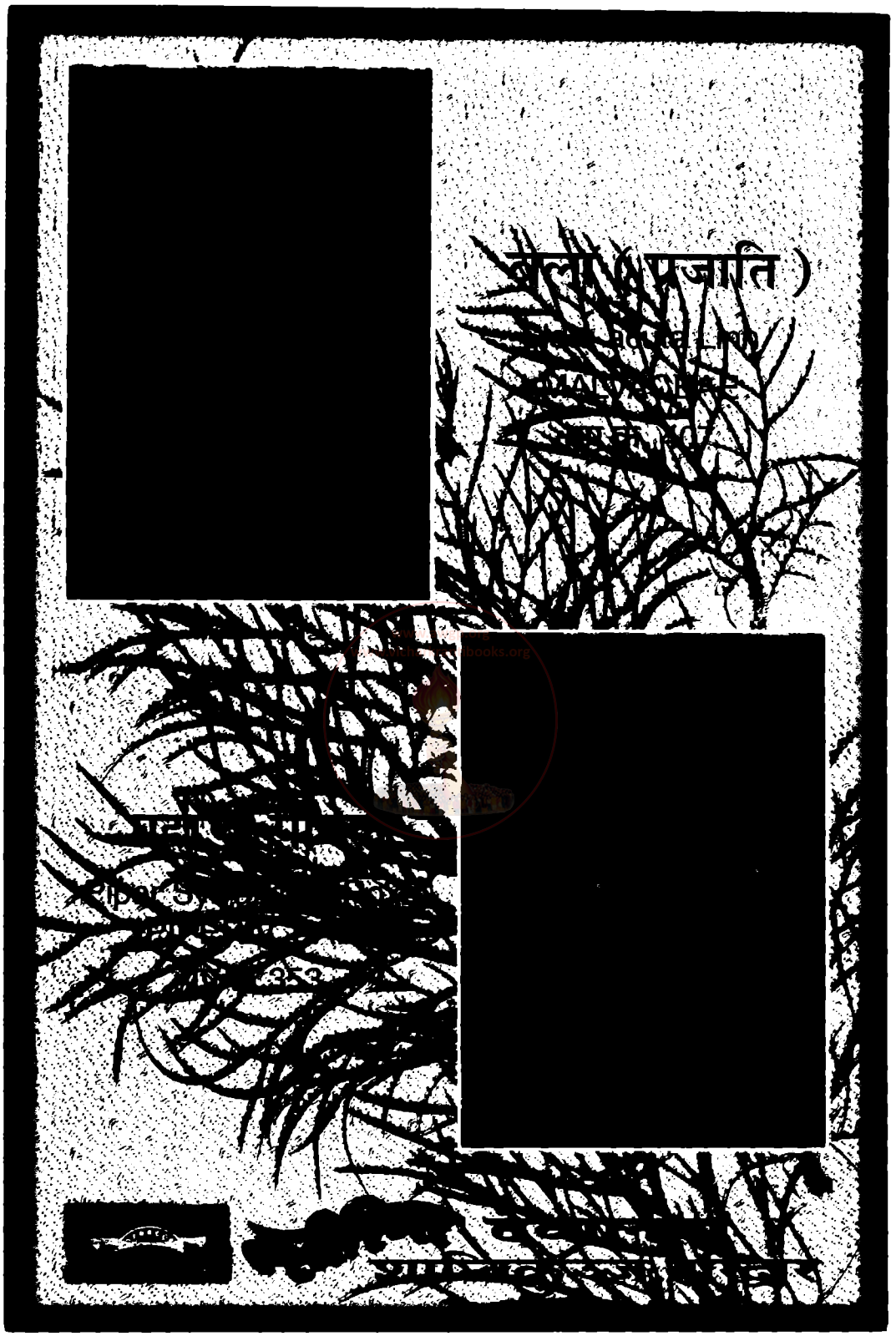
आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



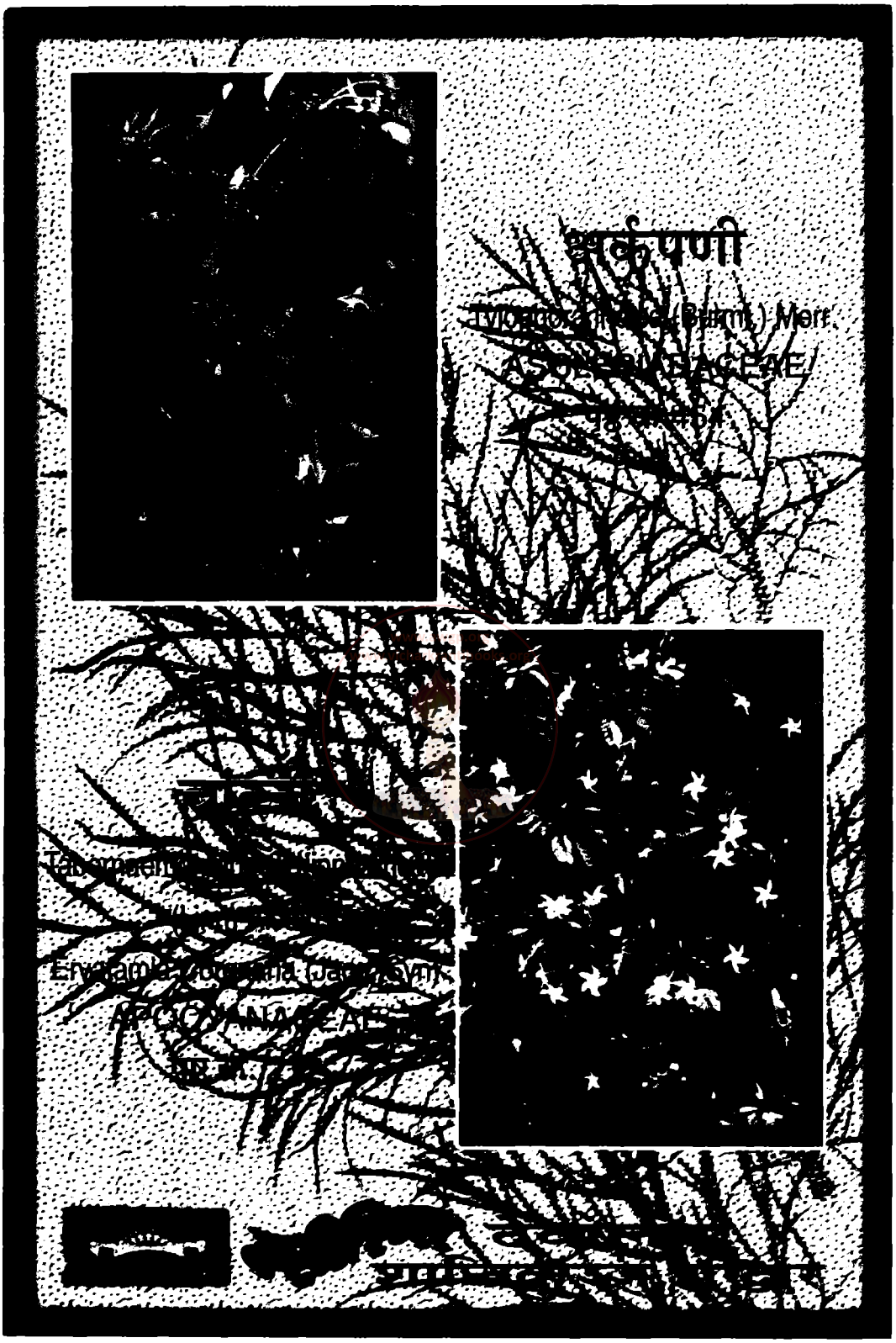
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



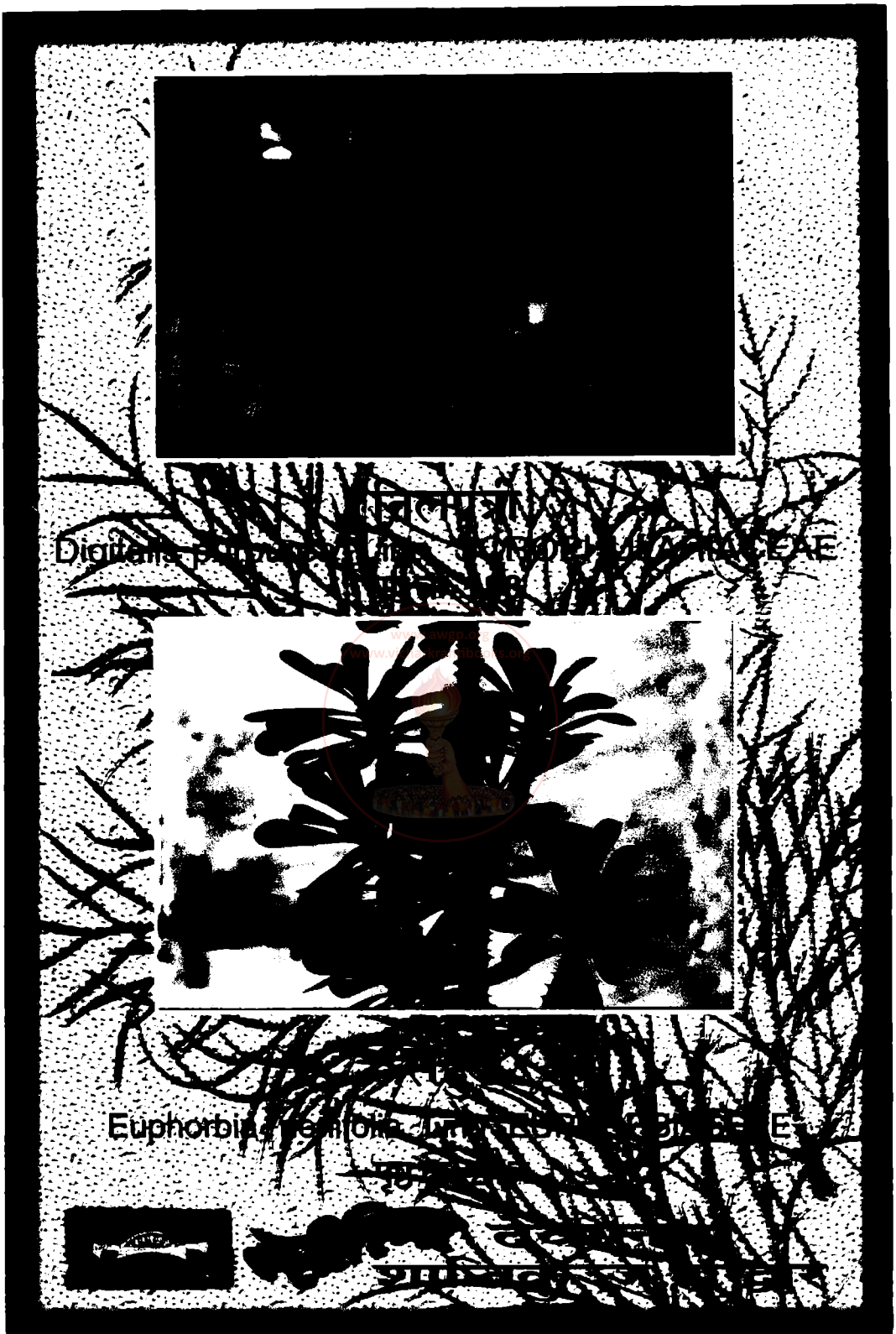
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



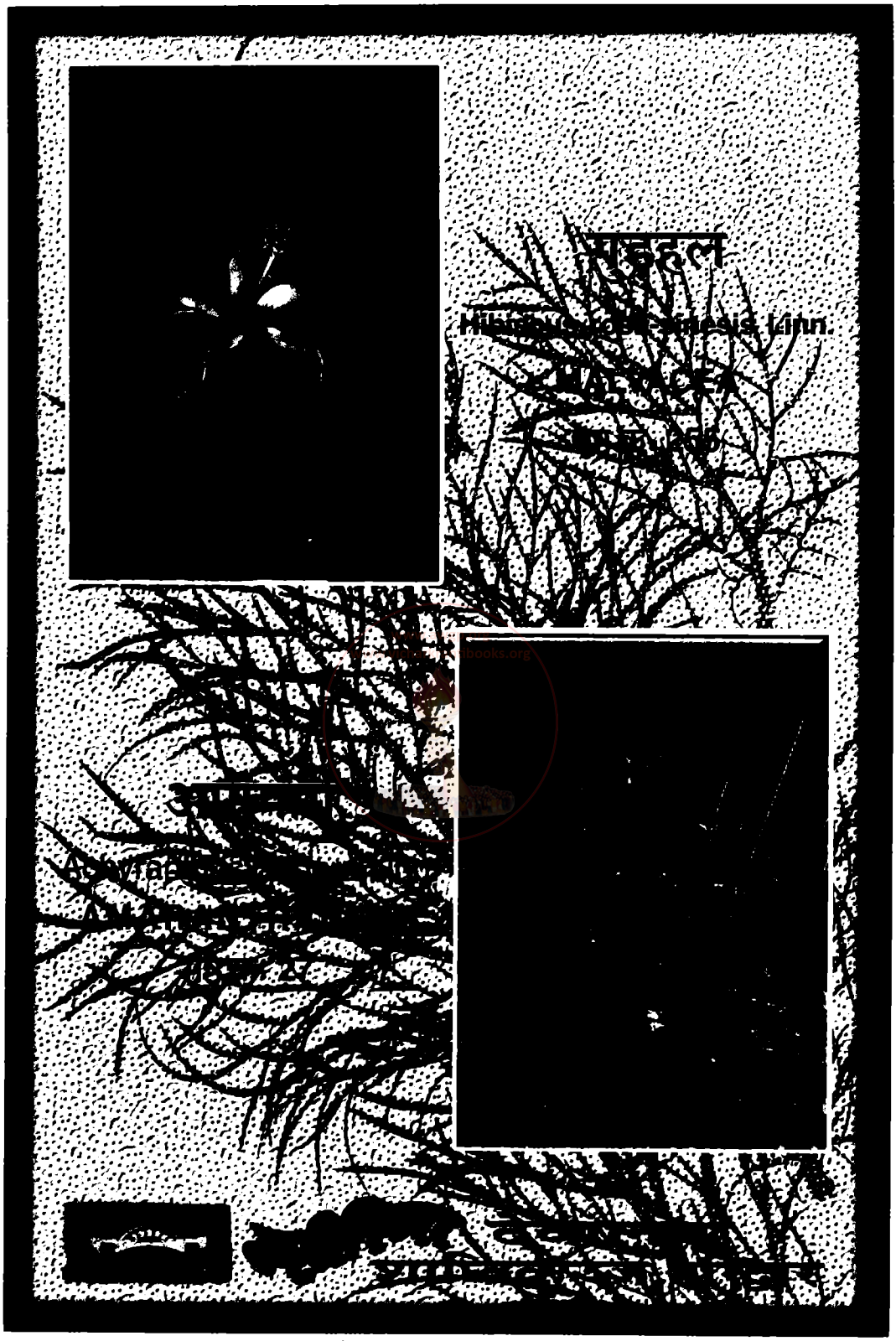
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राण: वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



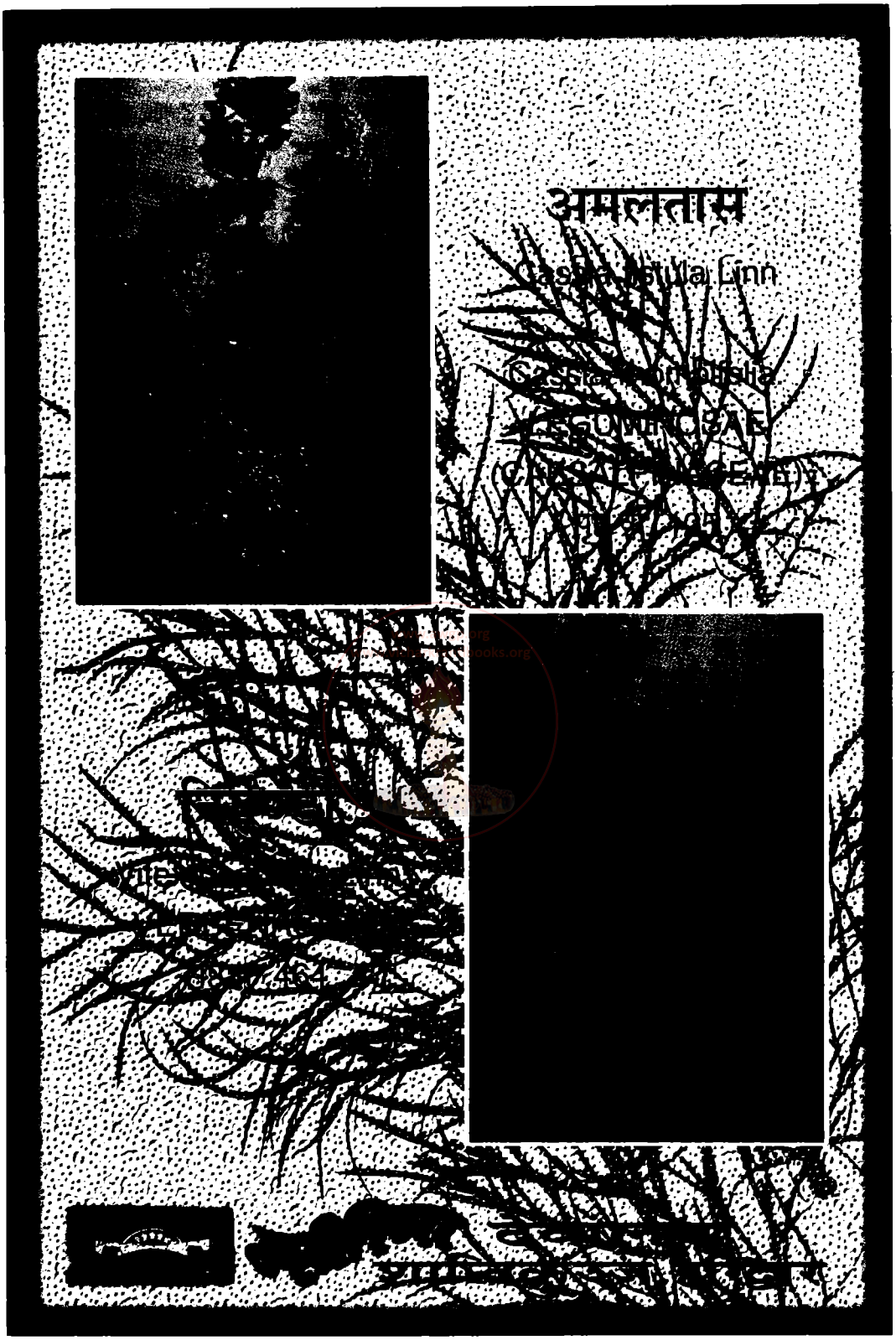
आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में यह औषधि उत्कृष्ट प्रभावकारी मानी जाती है। इसके अतिरिक्त संधिशोथ, आमवात शूल जैसे सर्व प्रकार के वातरोगों, सूजन, व्रण, कुष्ठरोग, कृमि, विष, क्षय, श्वास, खाँसी, जुकाम, कंठरोग, अरुचि, विषम ज्वर (मलेरिया) में प्रभावकारी औषधि है। सायेटिका में निर्गुण्डी के पत्रों को जल में उबालकर इसमें से निकलती भाप या गरम-गरम पत्रों को दर्द होते भागों पर रखने से या इसके गरम कल्क का सेक करने से लाभ होता है, इसके पत्रों का रस इसमें समभाग मधु मिलाकर एक-एक चम्मच प्रातः एवं सायं सेवन करने से लाभ तथा इसका क्वाथ-धीमी आग पर पकाकर मधु के साथ प्रातः एवं सायं सेवन करना, यह प्रयोग आमवात कटिशूल, स्लिप-डीस्क तथा संधिशोथ के अनय भी किया जा सकता है। आध्मान में निर्गुण्डी के पत्रों का रस निकाल कर, इसमें हींग तथा काला नमक मिलाकर यह गरम-गरम रस पिलाने से लाभ होता है। विषम ज्वर (मलेरिया) में इसके पत्रों का स्वरस नित्य प्रातः-सायं मधु के साथ सेवन से लाभ। चर्मरोग में (खाज-खुजली-दद्रु में) इसके पत्रों को पीसकर, इसके रस का प्रयोग करने से लाभ होता है। श्वास रोग में इसके पत्रों का रस मधु मिलाकर एक-एक चम्मच प्रतिदिन चार बार सेवन से लाभ होता है। इसके पत्रों का नस्य लेने से लाभ। कंठरोग (टॉन्सिल) में इसके ताजे मूल को धीरे-धीरे चबाकर इसका रस कंठ से नीचे उतारने से लाभ होता है। नेत्ररोग में इसके पत्रों को गरम कर नेत्रों पर पट्टी बाँधने से या पत्रों के रस का एक-एक बूंद नेत्रों में डालने से लाभ होता है।

मात्रा-पत्र स्वरस- १ से २ तोला। पत्र चूर्ण-१/४ से १/२ तोला। बीज का चूर्ण-दर्द निवारक। मूल की छाल का चूर्ण १-३ ग्राम।

❖❖❖

अनिष्ट ग्रहों की शांति-महर्षियों के अनुसार जो लोग रत्नों को धारण करने में असमर्थ हैं, उन्हें ग्रह दोषों की शांति के लिए जड़ी-बूटी धारण करना भी लाभप्रद होगा।

सूर्य-बेल की जड़, चन्द्र-खिरनी, मंगल-अनन्तमूल, बुध-वरधारा की जड़, गुरु-मंगरैया, केले की जड़, शुक्र-सरपोखा की जड़, शनि-बिछुआ की जड़, राहु-सफेद चन्दन, केतु-असगंध।

यह जड़ी-बूटियाँ जिस ग्रह से निर्मित करनी है तो उसी वार को स्वयं वृक्ष उखाड़ लाएँ और पूजन करके धारण करें, तो विशेष लाभ है। लाने से पूर्व सायंकाल वृक्ष को विधिवत् अभिमंत्रित करना चाहिए। राहु के लिए शनिवार एवं केतु के लिए बुधवार उपयुक्त है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्राक्षा Vitis vinifera Linn. VITACEAE

300

ENGLISH NAME:- Grape plant. Hindi - Angur.
PARTS-USED:-Fruits.
DESCRIPTION:- A large deciduous woody tendril climber, tendril bifid, leaves rub or bicular, cordate: 5 lobed to menlose beneath flowers small, creamish green in clusters. Fruits fleshy rounded berry, in clusters.
TASTE:-Sweet-Astringent.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits Contains:-Steroids/Triterpenes, Phenolics, Carbohydrates, Reducing Sugars, Flavonoids, Proteins, Amino acids, Concentrated acids (Mallic acid, Tarteric, Resemic and Arsenic acid, Fats, Oils, Unripe Fruits Contains: Oxalic acid & Fixed oil, Sodium, Iron, Copper, Chloride, Potassium Calcium & Phosphate.
ACTIONS:-Nutritive, Laxative, Expectorant, Refrigerant, Digestive, Tonic, Appitizer.
USED IN:- Ripen Fruits: Thirst, Fever, Asthma, Jaundice, Disuria, Burning sensation, Vertigo, Liver disease, Kidney disease, Urinary bladder disease, Blood pressure and Anaemia.

प्रचलित नाम- दाख (अंगूर)

प्रयोज्य अंग- फल

स्वरूप-एक पतनशील सूत्रारोही लता। पत्ते सरल, गोलाकार, कटे किनारे वाले एवं कंगूरेदार होते हैं। पुष्प छोटे हरे या हल्के पीले रंग के फल गोल मांसल होते हैं, जो गुच्छों में होते हैं।

स्वाद- मधुर-कषाय।

रासायनिक संगठन-इसके फल में स्टीरोइड्स/ ट्रायटर्पेन्स, फेनोलिक्स, कोर्बोदित, प्रह्लासक शर्करा, फलेवोनोइड्स, प्रोटीन्स, एमिनोअम्ल, सेंद्रिय अम्ल, (मैलिक अम्ल टारटेरिक, रेसेमिक तथा आर्सेनिक अम्ल) वसा, तेल, सोडियम, लोह, कॉपर, क्लोराइड, पोटेशियम, कैल्शियम, फोस्फेट। कच्चे फलों में ऑक्सेलिक अम्ल तथा स्थिर तेल पाये जाते हैं।

गुण-पौष्टिक, मृदुरेचन, कफनि:सारक, दाहशामक, पाचक, बल्य, रुचिकर।

उपयोग-पके फल-तृषा में, ज्वर, श्वासरोग, कामला, मूत्रकृच्छ्र, दाह, भ्रम, यकृत, वृक्क रोग, मूत्राशयरोग एवं रक्तदाब तथा पाण्डुरोग में लाभकारी। शूल में द्राक्षा एवं अडुसा के पत्रों का क्वाथ पीने से लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र में ठंडे जल में काली दाक्षा भिगोकर, उसमें मिश्री मिलाकर सेवन से लाभ। रक्तपित्त में दाख का मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। मूत्राश्मरी में दाख का क्वाथ बनाकर सेवन से लाभ। पित्त विकार में काली दाख रात को जल में भिगोकर दूसरे दिन प्रात: इसी जल में मसल कर छिलके निकाल कर इसी रस में जीरा चूर्ण तथा चीनी मिलाकर सेवन से पित्त जनित दाह का शमन होता है। पित्तकास मुनक्का १०, पिप्पली ३० लें एवं चार तोला मिश्री को मिलाकर इसका मिश्रण बनाकर प्रतिदिन मधु के साथ चाटना चाहिए। पाण्डुरोग में ६४ तोला घृत को ३२ तोला मुनक्का से सिद्ध कर, इस घृत के सेवन से पाण्डुरोग, ज्वर, प्रमेह, कामला,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुल्म तथा उदररोग नष्ट होते हैं। क्षय में घृत, खेजूर, मुनक्का, मिश्री, मधु, पिप्पली इन सबका अवलेह बनाकर सेवन करने से स्वरभेद, कास, श्वास, जीर्ण ज्वर तथा क्षय रोग नाश होता है। गर्भशूल में इसके सूखे फलों को मधु के साथ चटाना चाहिए।

मूर्छारोग में अंगूर के रस में आँवले का रस मिलाकर पिलाने से मूर्छा रोग ठीक होकर चक्कर आना भी बंद होता है। द्राक्षा में विटामिन्स ए, बी तथा सी प्रचुर मात्रा में होते हैं। इसका रस शरीर में लोह तत्व बढ़ाता है तथा स्फूर्ति देता है। कफ, जुकाम तथा सर्दी हुई हो, ऐसे रोगी को द्राक्षा का सेवन नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह शीतल गुण वाली होती है। आयुर्वेद में ऐसी टिप्पणी मिली है कि गाय के आँचल जितनी लम्बी द्राक्ष शुक्रवर्धक होती है, इसका स्वरस पीने से कफ तथा पित्त नष्ट होते हैं तथा शुक्राणु विकार के सभी रोग ठीक होते हैं। यदि शूल के साथ पेशाब होता हो तो इस दाख का रस दूध के साथ पीने से लाभ होता है। पित्तवमन में दाख का रस जल में मिला कर पीने से पित्तवमन ठीक हो जाता है। रक्तपित्त में गूलर के मूल तथा द्राक्षा समभाग लेकर जल में उबाल लें। इस जल को छान कर दिन में चार बार पीने से यह रोग नष्ट होता है।

शुष्ककास तथा कुकुर खाँसी में द्राक्षा, आँवला, खजूर, पिप्पली तथा काली मरिच इन सबका समभाग लेकर पीस लें। इस चटनी के सेवन से इन रोगों में लाभ होता है।

www.vicharkrantibooks.org

❖❖❖

'जो व्यक्ति शंकर जी के प्रिय वृक्ष वेल (बिल्व) का रोपण करता है, उसके कुल में कई पीढ़ियों तक लक्ष्मी निवास करती है।' -वृक्षायुर्वेद

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अश्वगंधा Withania somnifera (Linn.) Dunal. SOLANACEAE

301

ENGLISH NAME:- Rape seed Plant/ Winter cherry. Hindi - Asgandh
PARTS-USED:-Roots, Leaves, Fruits, Seeds & Whole Plant.
DESCRIPTION:- A small hairy under shrub, about 3-4feet high branches are zigzag and clothed withstellate hairs stout, root flashy. Leaves simple cuneate, narrow at base and clothed with stellat hairs. Flowers in clusters, yellowish green, in axils. Fruits are berry enclosed with persistant calyx.
TASTE:-Bitter, acrid.
CHEMICAL CONSTITUENTS- Roots Contains:-Alkaloids (Somniferon) Withaminon, Wasamin, Sugars, Glycosides, Amino acids, Essentialoil, Withaniol, Hentriacontane Phytosterol & Oils; Leaves Contain:- Withanoloids Alkaloids, Glycosides, Glucose, Amino acids, Stem Contains: Proteins Fibres, Amino acids, Tannins, Flavonoids, Calcium and Iron.
ACTIONS:-Alterative, Aphrodisiac, Rejuvenator, Diuretic, Narcotic, Antipurgative, Tonic. Anti-inflammatory, Analgesic, Antifungal, Antibacterial, alexipharmic, somniferous.
USED IN:- Roots -Fever, Painful swellings, Ulcer, Carbuncles, Neurological disorder, Respiratory System, Cardiovascular Systerm, Gastric activity, Leucoderma. Tuberculosis, Ricketsia, insomnia.

प्रचलित नाम- असगंध

प्रयोज्य अंग- पंचांग, मूल (विशेष)पत्र, फल एवं बीज।

स्वरूप-यह वनौषधि एक छोटा उपगुल्म जिसकी ऊँचाई लगभग ३-४ फीट होती है। पत्ते सरल, कुंठिताग्र तल भाग की ओर संकुचित एवं ताराकार रोमों से आच्छादित होते हैं। पुष्प गुच्छ में जो पत्ते के कोण में होते हैं यह पीतवर्णी या हल्के हरे रंग के एक साथ लगभग ६ की संख्या में होते हैं। फल गोल मटर के दाने के सदृश जो वाह्यकोश से ढका रहता है।

स्वाद- तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसके मूल में एल्कलॉयड्स (सोमनीफेरॉन), विथामीनॉन, वासामिन, शर्करा, ग्लायकोसाइड्स, एमिनोअम्ल, उत्पत्त तेल, विथेनियॉल, हेन्ट्रियाकोन्टेन, फायटोस्टीरॉल, एवं तेल, इसके पत्रों में विथेनॉलोइड्स एल्कलायड्स, ग्लायकोसाइड्स, ग्लूकोज, एमिनो अम्ल, इसके कांड में प्रोटीन्स, रेषे, एमिनोअम्ल, टैनिन्स, फ्लेवोनोइड्स, कैल्शियम एवं लोह पाया जाता है।

गुण-विपर्याय, वाजीकरण, रसायन, मूत्रल, निद्राजनक, अतिरेचघ्न, बल्य, शोथहर, शूलहर, फफूंदीघ्न, कीटाणुघ्न।

उपयोग-इसकी जड़ का प्रयोग-ज्वर में, शूलयुक्त सूजन में, व्रण, फोड़े में, नाड़ी तंत्र विकार, श्वसन तंत्र, हृदयाभिसरणतंत्र, आमाशयिक क्रियाओं में, श्वित्ररोग, क्षय तथा सुखण्डीरोग में लाभकारी। इसके मूल का चूर्ण-आधा से एक तोला-घी में गरम कर दूध तथा चीनी मिलाकर सेवन करने से क्षय, बालशोथ, सुखण्डीरोग में लाभकारी। इसके मूल उत्तम पौष्टिक एवं बच्चों के सुखण्डी के रोग में अतिलाभकारी। इसके सेवन से श्वेत प्रदर तथा कटिशूल (स्त्रियों के) में लाभ होता है। आमवात में जंगली असगंध के पत्ते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ताजे बांधने से लाभ होता है। आशक्ति में इसका चूर्ण दूध के साथ प्रातः सायं सेवन करने से लाभ होता है। जल के साथ एक-एक चम्मच अश्वगंधा का चूर्ण प्रातः सायं सेवन से लाभ होता है तथा इसका सेवन एक मास तक किया जाना चाहिये। यक्ष्मा में (क्षय) तीन ग्राम अश्वगंधा का चूर्ण एक ग्राम लींडी पीपर चूर्ण तथा तीन ग्राम मिश्री का चूर्ण सबको मिलाकर प्रतिदिन प्रातः सायं तथा रात्रि समय मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। नपुंसकता (शुक्रदौर्बल्य)-में अश्वगंधा का चूर्ण एक-एक चम्मच दूध के साथ प्रातः एवं सायं सेवन करने से लाभ होता है। प्रत्येक शरदऋतु में लम्बे समय तक इसका सेवन करने से पुरुषत्व तथा बुढ़ापे तक यौवन बना रहता है। अश्वगंधा घी तथा मधु विषम भाग में सेवन से नपुंसकता दूर होती है। शिश्न लाघव में शिश्न का पतला या छोटा होना दूर करने के लिये लिंग पर अश्वगंधा तेल की मालिश करने से या अश्वगंधा का बारीक चूर्ण सेंधा नमक, मक्खन में मिलाकर प्रतिदिन दो बार लिंग पर मालिश करने से लाभ होता है। आमवात संधि शोथ में अश्वगंधा पंचांग को पीसकर इसका रस निकाल कर दो-दो चम्मच प्रातः एवं सायं मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। कटिशूल-प्रसूति पश्चात् कमजोरी के कारण, कमर में दर्द होने में अश्वगंधा का चूर्ण घी-मिश्री या सोंठ के सांथ इसका काढ़ा बनाकर पीने से लाभ होता है। हृदयशूल में वात के कारण हृदयरोग में सदैव गरम जल के साथ अश्वगंधा का चूर्ण लेते रहने से लाभ होता है। रक्त प्रदर एवं श्वेत प्रदर में अश्वगंधा का चूर्ण इसमें समभाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर प्रातः एवं रात्रि समय एक-एक चम्मच दूध में मिलाकर सेवन सें लाभ होता है। कृमिरोग में अश्वगंधा चूर्ण समभाग गिलोय का चूर्ण मिलाकर मधु के साथ सेवन से लाभ होता है। दृष्टि दौर्बल्य में दो ग्राम अश्वगंधा का चूर्ण, दो ग्राम आँवला के चूर्ण तथा एक ग्राम मधुयष्टी का चूर्ण मिलाकर प्रातः एवं सायं एक-एक चम्मच जल के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

मात्रा-मूल का चूर्ण-३ से ६ ग्राम।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मीठा इन्द्रजव (असित कुटज) (कृष्ण कुटज) Wrightia tinctoria R. Br.

Syn. Nerium tinctorium Roxb. APOCYANACEAE **302**

ENGLISH NAME:- Black-kurchi (Kala-Kuda) Hindi - Kutaj/Stri Kutaj.

PARTS-USED:-Seeds

DESCRIPTION:- A small deciduous tree with greyish corky bark, Roots are black or greyish. Leaves simple opposite. Flowers white aromatic. Fruits Follicles in Pairs-8-12 inch long.

TASTE:-Bitter.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Contains:-Steroids, Alkaloids, Saponins, Reducing Sugars, Arachidic acid, Linoleic acid, Oleic acid, Myristic acid, Palmitic acid, Stearic acid, Beta-sitosterol, Alpha-Amyrin, Oleanolic acid, Ursolic acid, Lupeol, Cycloartenone.

ACTIONS:-Tonic, Aphrodisiac, Emmenagogue, Stomachic, Digestion, Antipyretic.

USED IN:- Dysentery, Diarrhoea, Fever, Pain due to Ulcer, Burning sensation, Jaundice, Bowel Complains.

प्रचलित नाम- इन्द्रयव (रोमश दुधी)

प्रयोज्य अंग- बीज।

स्वरूप-यह एक लघु पतनशील वृक्ष है, जिसकी छाल चिकनी एवं भूरे रंग की होती है। इसके मूल काले या भूरे रंग के होते हैं। पत्ते सरल अभिमुख तथा कुटज के पत्तों से छोटे होते हैं। पुष्प सफेद सुगंधित होते हैं। फलियाँ जोड़े में, औसतन ८-१२ इंच लम्बी एवं अग्रभाग से परस्पर जुड़ी हुई होती है।

स्वाद-तिक्त।

रासायनिक संगठन- इसमें स्टीरोइड्स, एल्कलॉयड्स, सेपोनिन्स, प्रह्लासक शर्करा, एरेकिडीक अम्ल, लिनोलिक अम्ल, ऑलिक अम्ल, मियरीस्टीक अम्ल, पामिटीक अम्ल, स्टीयरीक अम्ल, बीटा-सिटोस्टीरॉल, आल्फा-एमिरीन, ऑलियानोलिक अम्ल, अर्सोलिक अम्ल, ल्युपियॉल, सायक्लोआरटिनॉन पाये जाते हैं।

गुण-बल्य, वाजीकरण, आर्त्तव जनन, दीपन, पाचन, ज्वरहर।

उपयोग-प्रवाहिका, अतिसार, ज्वर, व्रणशोथ, दाहशोथ, कामला, पाचन संस्थान के विकारों में लाभकारी।

कामला में-इसके पत्रों का रस आधा चम्मच की मात्रा में सेवन से लाभ। सड़े हुए दाँत में शूल के लिये-इसके पत्रों को पीसकर सड़े हुए दाँत के गड्ढे में रखने से दंतशूल दूर होता है।

पत्रों एवं छाल का क्वाथ-ज्वर पश्चात् होने वाले पाचन संस्थान के विकारों में लाभ होता है। क्षय रोगी को अतिसार हुआ हो, तो तण्डुलोदक से चौथाई-चौथाई तोला इन्द्रयव एवं सोंठ का सूक्ष्म चूर्ण पिलाना चाहिए। कुष्ठ में इन्द्रयव के सूक्ष्म चूर्ण का लेप करना चाहिए। रक्तपित्त में इन्द्रयव से सिद्ध किया हुआ घृत खिलाना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पित्तातिसार में चार तोला इन्द्रयव बीज का आठ गुना जल से बनाया हुआ चतुर्थांश क्वाथ मधु के साथ पिलाना चाहिए। इससे पित्तातिसार शीघ्र नष्ट हो जाता है।

रक्तातिसार में इन्द्रयव से सिद्ध किया हुआ घृत खिलाना चाहिए, इससे शीघ्र ही रक्तातिसार शांत होता है। विस्फोटक में तण्डुलोदक से इन्द्रयव के सूक्ष्म चूर्ण का लेप करने से विस्फोट ठीक हो जाते हैं।

इन्द्रयव का १-२ ग्रेन चूर्ण शिशुओं के अतिसार को नष्ट करता है। जबकि ४-५ ग्रेन चूर्ण की मात्रा दुर्बलता में शक्तिप्रद रूप में उपयोग करते हैं। जबकि वाजीकरण के रूप में भी मीठे इन्द्रयव का ही प्रयोग किया जाता है।

मात्रा-बीज का चूर्ण- ५ से ७ ग्राम।

❖❖❖

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गृह शान्ति के लिए स्नान में प्रयोग की जाने वाली वनस्पतियाँ-
रवि-छुईमुई, चन्द्र-कोठ, मंगल-चित्रक मूल, बुध-गहुला, गुरु-नागरमोथा, शुक्र-सिरिष, शनि-हल्दी, राहु-शुआ पंख, रन्ती नील, केतु-लोध्र।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्द्रक-शुण्ठी Zingiber officinale Roscoe. ZINGIBERACEAE.

303

ENGLISH NAME:- Zinger Plant. Hindi - Adrakh.
PARTS-USED:-Rhizome.
DESCRIPTION:- A small herb with horizontal, fleshy rhizome, leaves distichous, narrow oblong-lanceolate, lanceolate, flowers on long spike and are of purple colour on spike, small.
TASTE:-Acrid Pungant.
CHEMICAL CONSTITUENTS-RhizomeContains:- Proteins, Fibres, Starch, Essential oil, Resin, Carbohydrates, Glucose, Fructose, Sucrose, Raphinis, Innulin, Globulin, Glutamin, Thrionin, Free amino acids, Zingiberol, Zingiberin, Glutamic acid, Aspartic acid.
ACTIONS:-Thermagenic, Analgesic, Blood purifier, Carminative, Expectorant, Appitizer, Digestive, Stumulant, Aromatic, Rubifacient, aphrodisiac, anti-emetic, febrifuge.
USED IN:- Sciatica, Joint problems, Lumbago, Rheumatism, Slip disc, Gout, Chronic Arthritis, Muscular troubles, Asthma, Cough, Chronic, bronchitis, Increase Longavity of life, Immunity against diseases, Haemorrhoids, rheumatism, dropsy arcites, dysponea, anorexia, elephantitis, flatulence, Dysuria.

प्रचलित नाम- सोंठ/अदरख

प्रयोज्य अंग:- भूमिगत कांड

स्वरूप-एक लघु क्षुप है जिसका भूमिजन्य कांड भूमि के समान्तर मांसल होता है। जिसको अदरख कहते हैं। पुष्प लम्बी मंजरी पर बैंगनी रंग के होते हैं।

स्वाद-कटु-तीक्ष्ण।

रासायनिक संगठन- इसके भूमिगत कांड में प्रोटीन्स, रेशे, स्टार्च उत्पत्त तेल, राल, कार्बोदित, ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, सुक्रोज, रेफिनिस, इन्यूलिन, ग्लोब्युलिन, ग्लूटामिन, थ्रीयोनिन, मुक्त एमिनोअम्ल, जिन्जीबेरॉल, जिन्जीबेरीन, ग्लूट्यमिक अम्ल एस्पार्टीक अम्ल पाये जाते हैं।

गुण-शूलहर, रक्तशोधन, वातहर, कफ नि:सारक, रुचिकर, पाचन, उत्तेजक, सुगंधित।

उपयोग-गृध्रसी, संधि विकारों, कटिशूल, आमवात, स्लीप-डीस्क में, वातरोग, जीर्ण संधि शोथ, स्नायु विकारों में, श्वासरोग, खाँसी, श्वसनीशोथ, जीवन की वय मर्यादा में एवं रोग प्रति कारक शक्ति में वृद्धि करने हेतु, इसका प्रयोग लाभकारी। त्रिकूटि-(सोंठ, काली मिरची एवं पिप्पली का मिश्रण) इसका प्रयोग अनेक रोगों में किया जाता है। सोंठ का चूर्ण: पाचन क्रिया ठीक होकर उदरगत वायु एवं उदरशूल में लाभ प्रदान करता है। सोंठ के फांट से संधिवात में लाभ होता है। इसके अतिरिक्त प्रतिश्याय, गले के रोग, स्वरभंग में लाभकारी। शिर:शूल एवं वातनाड़ी शूल में सोंठ के चूर्ण का लेप (गरम जल से) लाभकारी। वेदना के साथ मूत्र मार्ग से रक्तस्राव होता हो, तो ३०० मि. ली. दूध में आधा तोला शुण्ठी चूर्ण, मिश्री मिलाकर, उबालकर पिलाने से लाभ होता है। अर्श में शुण्ठी तथा चित्रक मूल का चूर्ण समभाग लेकर पकाये हुए इक्षुरस (गन्ने) के साथ सेवन से लाभ होता है। अतिसार में खस (उशीर) एवं अदरख से पकाये हुए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल के सेवन से लाभ होता है। उदर रोग में अदरख स्वरस तथा दूध समान भाग मिलाकर पीने से लाभ होता है। आम पाचन के लिये सोंठ का चूर्ण आधा तोला गरम जल के साथ सेवन करने से लाभ। कर्णशूल में अदरख स्वरस किंचित् तेल, मधु तथा सैन्धव लवण इन सबको मिलाकर किंचित् गरम करके कान में एक बूंद टपकाने से लाभ होता है। गुल्म में निशोथ तथा शुण्ठी का चूर्ण जल के साथ सेवन से लाभ होता है।

सन्निपात ज्वर में अदरख के स्वरस में सैंधव और त्रिकटु (सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली) का चूर्ण मिलाकर गण्डूष्य करना चाहिए, बार-बार इस प्रकार भर कर और फिर थूक देने से गले के पिछले भाग में, दोनों पार्श्व में, कण्ठ में जमा हुआ शुष्क कफ बाहर निकलने लगता है। रोगी को अपना शरीर हल्का मालूम पड़ेगा।

संधि शूल, ज्वर, मूर्छा, निद्रा, कास आदि शांत हो जाते हैं। जठराग्नि प्रदीप्त करने के लिये भोजन से पूर्व नियमित सैंधव मिलाकर अदरख का सलाद खिलाना चाहिये, इसके सेवन से जिह्वा एवं कंठ शुद्ध होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है। अजीर्ण में अजीर्ण, अर्श और दस्त खूब बंधा हुआ कठिन आता हो, तो गुड़ और सोंठ चूर्ण समभाग मिलाकर खिलाने से लाभ होता है। आमवात में शुण्ठी एवं गोखरू का क्वाथ पीने से आमवात, कटिशूल की पीड़ा नष्ट हो जाती है। हृद्रोग में सोंठ का गरम-गरम क्वाथ पिलाने से कास, श्वास व हृदय रोग नाश होता है। विषम ज्वर में महाबला के मूल और शुण्ठी इन दोनों का क्वाथ पीने से विषम ज्वर नाश होता है। कितना ही कंपन अथवा ठंडक के साथ ज्वर आता हो दो-तीन दिन के प्रयोग से विषम ज्वर ठीक हो जाता है।

अदरख का सूप- एक तोला अदरख के टुकड़ों को २०० मि. ली. जल में डालकर भलीप्रकार उबाल लें, जब केवल ५० मि. ली. जल बाकी रहे, तब अग्नि से उतार कर ठण्डा कर उसमें नीबू का रस तथा सैन्धव मिलाकर पिलाने से अरुचि तथा अजीर्णता नष्ट होकर भूख बढ़ती है। इसके साथ-साथ मल विकार के दोष नष्ट होते हैं। इस जल (सूप)में गाय का घी एक चम्मच मिलाकर पिलाने से अंगघात में बहुत ही लाभ होता है। मात्रा-आर्द्रक स्वरस- एक से पाँच तोला। शुण्ठी चूर्ण-एक चौथाई से एक तोला।

❖❖❖

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सौवीर / राज बदर Syn : Zizyphus vulgaris Lam syn; Zizyphus sativa Gaertn. Zigiphus mauritiana Lamk. var. frute cosa (Haines) Sebnis RHAMNACEAE

304

ENGLISH NAME:- Jujube. Hindi - Ber

PARTS-USED:-Bark, Leaves and Fruits.

DESCRIPTION:- A small spiny tree. Leaves simple, alternate, ovate; or suborbicular, 3 prominalty veined from base flower greenish-white, small; Fruits red, wrinkled, ellipsoid, oblong endocarp is also wrinkled, on drying.©

TASTE:-Sweet.

CHEMICAL CONSTITUENTS- Fruits aresweet and Contain-Sugars and Mucilage.

ACTIONS:-Sweet, Cathartic, Heart tonic, Antifatigue, Aphrodisiac, Blood puri fier, Bark is-Astringent, Wound healing Anti thirst, Anti-inflammatory; Expectorant.

USED IN:- Sharbat of Jujube is useful in Cough, Inflammation. Blood impurification, Pile, Diarrhoea, Throat disorder, Bleeding piles, Lucorrhoea, Headache.

प्रचलित नाम- उन्नाब /बेर

प्रयोज्य अंग- छाल, पत्ते एवं फल

स्वरूप-एक लघु कंटकी वृक्ष, पत्ते सरल, एकांतर, अण्डाकार; पुष्प छोटे-छोटे हरिताभ-श्वेत, फल लाल रंग के झुरीदार होते हैं। गुठली भी झुरीदार होती है।

गुण-मधुर, भेदक, हृदय, बल्य, श्रमप्रशमन, वाजीकरण, रक्तशोधन, दाहशामक, तृषा शामक। छाल-ग्राही तथा व्रणरोपक कफ नि:सारक, शोथघ्न।

उपयोग-उन्नाब का शरबत बनता है जिसका उपयोग कास, दाह तथा रक्त विकारों में किया जाता है। छाल का क्वाथ व्रण रोपण होने के कारण इसका प्रयोग व्रण या घाव को धोने में किया जाता है। दाह प्रशमन के लिये इसके पत्तों को घोट कर जल में मिलाने से उत्पन्न होने वाली झाग को शरीर पर लगाने से दाह प्रशमन होता है। अर्श में इसके मूल की छाल के क्वाथ में अर्श के कारण होने वाली शूल वाले व्यक्ति को इसमें बैठना चाहिये। अतिसार में इसके क्वाथ में दही एवं खट्टे अनार के रस में तेल डालकर सेवन से लाभ होता है। कंठदोष एवं खांसी में इसके पत्तों के कल्क को घी में सेंक कर सेंधा नमक मिलाकर खाने से बैठा हुआ गला खुल जाता है तथा कास में लाभ होता है। अतिसार में इसके मूल की छाल के चूर्ण में मधु मिलाकर चाटने से लाभ होता है या दही के साथ सेवन से लाभ। खांसी में इसकी गुठली के अंदर से निकलने वाले बीजदलों के चूर्ण में दही मिलाकर खाने से लाभ होता है।

रक्तातिसार में इसके काण्ड की छाल के चूर्ण में दूध तथा मधु मिलाकर पीने से लाभ होता है। प्रदर में इसके मूल की छाल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का चूर्ण गुड़ के साथ सेवन से लाभ होता है। मोटापा कम करने के लिये इसके पत्तों का पेया (राब) बनाकर कांजी के साथ पीने से मोटापा कम होता है।

शिरःशूल में इसके मूल तथा लीन्डी पिपर को जल में घिस कर कपाल पर लगाने से सिर दर्द ठीक होता है। बिच्छू दंश में पत्तों को पीसकर इस पर बाँधने से लाभ होता है। बेर के सभी मेदों में उन्नाब सब से श्रेष्ठ माना गया है, औषधियों के रूप में इसका ही प्रयोग किया जाता है। (युनानी हकीम इसका प्रयोग अधिक करते हैं। जबकि वैद्यराज इसका प्रयोग औषधि के रूप में कम ही करते हैं।)

मात्रा- ५ से ७ बेर।

❖❖❖

नवग्रह वाटिका (मानचित्र) वनस्पति का नाम - पीपल वनस्पति का ग्रह- गुरु वनस्पति का रंग- पीला

नवग्रह वाटिका

(मानचित्र)

उत्तर

कुश केतु नीला	पीपल गुरु पीला	अपामार्ग बुध हरा
शमी शनि काला	मदार सूर्य लाल	गूलर शुक्र सफेद
दूब राहु नीला	खैर मंगल लाल	पलाश सोम सफे द

पश्चिम — पूर्व

दक्षिण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनौषधियों के हिन्दी नाम

१) अकरकरा - २९
२) अकल बेर - ६७
३) अजवायन- ७१
४) अर्जुन - २८१
५) अडूसा - ११
६) अतिबला - २
७) अतिस - ८
८) अदरख - ३०३
९) अन्नत मूल - १६०
१०) अनानास - ३०
११) अनार- २१४
१२) अपराजिता - १००
१३) अपामार्ग - ७
१४) अफीम - २१४
१५) अमरबेल - ११५
१६) अमरुद - २३८
१७) अमलतास- ७४
१८) अरंडी - १७४
१९) अशोक - २३०
२०) असगंध - ३०१
२१) असैन - २८४
२२) आडू - २३६
२३) आम - १८०
२४) आमला - १३१
२५) आमाहल्दी - ११३
२६) अरार - १६७
२७) अंगूर - ३००
२८) अंगुलिया थूहर- १३८
२९) अंजीर- १४४
३०) अंतमूल- २९२
३१) इन्द्रयव - ३०२
३२) इन्द्रायन - ९३
३३) इमली- २७५
३४) इक्षुगदा- २४०
३५) इंगुजा - ४५
३७) ईख- २५१
३८) ईश्वरमूल- ३९
३९) उन्नाव- ३०४
४०) कटसरैया- ५
४१) कटेरी - २८६
४२) कटहल - ४१
४३) कड़वी तरोई - १७७
४४) कदम - ३३
४५) कनेर (रक्त एवं श्वेत)- २०२
४६) कपास- १५३
४७) कपीसा - १७९
४८) कपूर कचरी- १५८
४९) कपूर तुलसी - २०५
५०) कमरख - ४६
५१) कनल - २०१
५२) कन्दूरी - १०१
५३) कर जीरा - २९५
५४) कलिहारी - १५०
५५) काली मिर्च- २२५
५६) कलौंजी - २०३
५७) कसौंदी - ७५
५८) काकांगी - ४२
५९) कागजी नींबू - ९४
६०) काजू बदाम - २८
६१) कामिनी - १९५
६२) कायफल - १९७
६३) कालमेघ - ३१
६४) काला धतूरा - १२१
६५) कीकर - ५
६६) कुचला - २६९
६७) कुटकी - २२१
६८) कुन्दरु - १०१
६९) कुलिंजन - २१
७०) कूड़ा - १६२
७१) केला - १९६
७२) केवड़ा - २१३
७३) केवांच - १९३
७४) केवुक कंद - १०७
७५) कैथ - १४१
७६) कंघी - २
७७) कचनार - ५४
७८) कंजावृक्षा - २३१
७९) कंटकरंज - ६३
८०) खखसा - ७
८१) खरैटी - २६०
८२) खस घास - २९७
८३) खैखरवाल - ५३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

८४) खैर - ३
८५) खैरुव - ४३
८६) गन्ना - २५१
८७) गम्हार - १५२
८८) ग्वारपाठा - २०
८९) गाजर - १२३
९०) गांजा - ६६
९१) गिलोय - २८७
९२) गुड़मार - १५६
९३) गुड़हल - १६१
९४) गुनील केतकी - १४
९५) गुलखेरों - २३
९६) गुलबनफशा - २३८
९७) गुलबास - १८८
९८) गुलाब - २४९
९९) गूलर - १४५
१००) गूगल - १०३
१०१) गूमा - १७३
१०२) गेंटी - १२७
१०३) गोखरु (लघु एवं वृहद्) -
१०४) गोरख इमली - १०
१०५) गोबर चम्पा - २२९
१०६) घोड़बच - ९
१०७) घोड़ करंज - १५
१०८) चकवड़ - ७६
१०९) चनसुर - १७१
११०) चना - ८७
१११) चमनी - ९६
११२) चमेली - १६३
११३) चक्षुसा - ७२
११४) चांदनी - १३३
११५) चिता - २२८
११६) चिरचिरा - ७
११७) चिल्टा - १२६
११८) चीड़ - २५८
११९) चोपचीनी- २६२
१२०) चौलाई का शाक - २४
१२१) छोंकर - २३४
१२२) छोटा गोखरु - २८९
१२३) छोटी अरनी - ९७
१२४) छोटी इलायची - १२९
१२५) छोटी पिपली - २२६
१२६) छोटी लोणा - २३३
१२७) जटामांसी -
१२८) जमालगोटा - ११०
१२९) जलपीपली - २२०
१३०) जल ब्राह्मी - ४८
१३१) जातिफल - १९९
१३२) जायफल - १९८
१३३) जारुल - १६८
१३४) जिन्सेग - ३५
१३५) जिमीकन्द - २७
१३६) जीरा सफेद - १११
१३७) जीवन्ती - १७२
१३८) जंगली एरण्ड - १६५
१३९) जंगली तोरई - १७७
१४०) जंगली प्याज - २९४
१४१) जंगली तुलसी - २०७
१४२) झाऊ - २७७
१४३) टमाटर - १७८
१४४) टेसु - ६२
१४५) डइया - ६४
१४६) डिकामाली - १४९
१४७) डोडी - १७२
१४८) ढाक - ६२
१४९) ताल मखाना - ४५
१५०) तिधारा थुहर - १३५
१५१) निपत्तिया - १९२
१५२) तिल - २५८
१५३) तिल पुष्पी - १२५
१५४) तुलसी काली - २०८
१५५) तुलसी पत्ती - २१९
१५६) तुलसी सफेद - २०८
१५७) तूत - १९२
१५८) तून - ७८
१५९) तेजपात्र - ८९
१६०) थूहर - १३७
१६१) दमन पापड़ा - २०९
१६२) दाख - ३००
१६३) दारूहल्दी - ५५
१६४) दाल चीनी - ९०
१६५) दिन का राजा - ८३
१६६) दूद्धी - १३६
१६७) देवकिली- ६७
१६८) देवदार - ७९
१६९) देवधूप - १०३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१७०) दौना - ४०
१७१) धनिया - १०६
१७२) नाग केशर - २२३
१७३) नाग दमन - २५४
१७४) निशोथ - २१०
१७५) नीम - ४७
१७६) नील शंखपुष्पी - १४०
१७७) पत्ता गोभी- ६०
१७८) पत्थरचूर - ६१
१७९) पपीता - ६९
१८०) परवल - २९०
१८१) परवान भेद - २५७
१८२) पान - २२३
१८३) पालक शाक - २६८
१८४) पाठा - ९१
१८५) पांगरा - १३४
१८६) पिठवन - २९३
१८७) पियाज - १७
१८८) पीतबला - २६१
१८९) पीपर - २२४
१९०) पीपर मिन्ट - १८२
१९१) पीला कनेर - २८५
१९२) पीला नागकेशर - १८४
१९३) पीला धतूरा - ३७
१९४) पीला वासा - ५१
१९५) पीला हुर-हुर - ९६
१९६) पुई - ५२
१९७) पुदीना - १८३
१९८) पोस्ता - २१४
१९९) फरहद - १३४
२००) फालसा - १५४
२०१) बकायन - १८१
२०२) बथूआ - ८५
२०३) बनकुल्थी - ७२
२०४) बदाम - २३५
२०५) बर्बरी - २०५
२०६) बड़ी अजवायन - ३४
२०७) बड़ी इलायची - २८
२०८) बड़ी घास - ६४
२०९) बड़ी जामुन - २७३
२१०) बड़ा गोखरु - २१५
२११) बरना - १०८
२१२) बरगद - १४३
२१३) बरुणा - १०८
२१४) बहेड़ा - २८२
२१५) ब्रह्मांडूकी - ८२
२१६) बाकुची - २३७
२१७) बास - ५०
२१८) बिजोरा नींबू - ९५
२१९) बैगुन - २६४
२२०) बेल - १३
२२१) बेलाडोना - २५
२२२) भाङ्गरा - १२८
२२३) भांग - ६६
२२४) भारंगी - ९९
२२५) भैरण्डा - १६६
२२६) भुई ओकारा - २२०
२२७) भुंग वन - २१७
२२८) भूत जटा - २००
२२९) भूतृण - ११६
२३०) भंगरैया - १२८
२३१) मकोय - २६५
२३२) मखाना - १३९
२३३) मषवन - २८०
२३४) मानकंद - १९
२३५) मालकांगनी - ८०
२३६) मालती - १६३
२३७) मिठीनीम - १९४
२३८) मिरच (हरी-लाल) - ६८
२३९) मुलैठी - १५१
२४०) मूली - २४६
२४१) मेथी - २५१
२४२) मैनफल - २४५
२४३) मोंगरा - १६४
२४४) मोतिया - १६४
२४५) मोथा - ११९
२४६) मोरपंख - २८६
२४७) मौलश्री - १८७
२४८) मंजीठ - २५०
२४९) मदार - २३०
२५०) रक्त कचनार - ५३
२५१) रत्ती - १
२५२) रतनजोत - १६५
२५३) राजधतूरा - १२२
२५४) रात की रानी - ८४
२५५) रायसन - २२७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२५६) रासना - २२७
२५७) रीठा - २५५
२५८) रोहन- २६७
२५९) रोहिनी - २६७
२६०) रोहिष घास - ११७
२६१) रंगून बेल - २४४
२६२) लकजन - ५६
२६३) लज्जावंती - १८६
२६४) जटजीरा - ७
२६५) लाल ऑक - ६७
२६६) लाल पुनर्नवा - ५७
२६७) लालराई- ५९
२६८) लाल झाऊ - २७६
२६९) लहसुन- १८
२७०) लिची - १७५
२७१) लिसोड़ा - १०५
२७२) लुगाठ - १३२
२७३) लोणा शाक - २३२
२७४) लोध - २७१
२७५) लौंग - २७२
२७६) लंजाई - ९७
२७७) वच - ९
२७८) वन ककोड़ा - १९०
२७९) वन तुलसी - १६९
२८०) वन मूंग - २१९
२८१) वायविडंग - १३०
२८२) विधारा - ३८
२८३) विजयसार - २३८
२८४) विलाई कंद - २४०
२८५) श्यामा तुलसी - २०८
२८६) शरीफा - ३२
२८७) शिकाकाई - ४
२८८) शीशम - १२०
२८९) श्वेत हुर-हुर - १५७
२९०) शंखाहुली - १०४
२९१) सतमूली - ४४
२९२) सतवन - २२
२९३) सत्यानासी - ३७
२९४) सदाबहार - ७७
२९५) सनाय - ७३
२९६) सर्पगंधा - २४७
२९७) सफेद चंदन - २५३
२९८) सफेद तुलसी - २०८
२९९) सफेद मुर्गा - ८१
३००) सफेद मूसली - ४३, ८६
३०१) सम्भालु - २९९
३०२) स्याह मूसली - ११२
३०३) सरफोंका - २७९
३०४) सरसों - ५८
३०५) सरिवन - १२४
३०६) सहदेई - २९६
३०७) सहिजन - १५१
३०८) साखू - २५९
३०९) सागवान - २७८
३१०) सागोन - २७८
३११) साल- २५९
३१२) सुखदर्शन- १०९
३१३) सुदर्दन - १०९
३१४) सुपारी - ३६
३१५) सूर्यमुखी - १५९
३१६) सिन्दूवार - २९९
३१७) सिरस - १६
३१८) सिलफड़ा - २५७
३१९) सिल्वरऑक - १५५
३२०) सिंघाड़ा - २८८
३२१) सीता अशोक - २५८
३२२) सेब - २४३
३२३) सेमल - २५२
३२४) सोआ - २१६
३२५) सोंक - ३०३
३२६) सोनचम्पा - १८५
३२७) सोन पाठा - २११
३२८) सौंफ - १४७
३२९) हरड़- २८३
३३०) हड़जोड़- ९२
३३१) हल्दी - ११४
३३२) हरसिंगार - २०४
३३३) हरीदूब - ११८
३३४) हाऊबेर - १६७
३३५) हालों - १७१
३३६) हिना मेहन्दी - १७०
३३७) हींग - १४२
३३८) हंसपदी- १२
३३९) हंसराज - १२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनौषधियों के संस्कृत नाम

१)	अर्कपर्णी -	२९२	४३)	उदुम्बर -	१४९
२)	अग्निमंथ -	९८	४४)	उशीर -	२९७
३)	अर्जक -	२०७	४५)	एरण्ड -	२४९
४)	अजमोत -	३४	४६)	एरण्ड कर्कटी -	६९
५)	अजमोदा -	७१	४७)	ऐला -	१२९
६)	अर्जुन -	२८१	४८)	कचनार -	५४
७)	अतसी -	१७४	४९)	कटफल -	१९७
८)	अतिबला -	२	५०)	कटुपर्णी -	३७
९)	अतिविषा -	८	५१)	कटुकी -	२२१
१०)	अतिरुहा -	२६७	५२)	कतृर्ण -	११७
११)	अन्नानास -	३०	५३)	कदलि -	१९६
१२)	अपामार्ग -	७	५४)	कदम्ब -	३३
१३)	अर्बुर -	७०	५५)	कनक -	१२२
१४)	अमरवल्लरी -	११५	५६)	कपिकच्छू -	१९३
१५)	अमृता -	२८७	५७)	कपित्थ -	१४१
१६)	अरलवो -	१५	५८)	कर्मरङ्ग -	४६
१७)	अरण्यक जीरक -	२९५	५९)	करवीर -	२०२
१८)	अलर्क -	६५	६०)	काकतुण्डी -	४२
१९)	अलम्बुसा -	५६	६१)	काकनासा -	४२
२०)	अरिष्ट-	२५५	६२)	काकमाची -	२६५
२१)	अश्वगंधा -	३०१	६३)	कारवेल्लक -	१८९
२२)	अश्वत्थ -	१४६	६४)	काजुतक -	२८
२३)	अश्वाह -	२८५	६५)	कार्पासी -	१५३
२४)	अस्थि संहारी -	९२	६६)	कामिनी -	१९५
२५)	असन -	२३९/२८४	६७)	कामिला -	१७९
२६)	अक्षफल -	२४२	६८)	कालाजाजी -	२०३
२७)	आकारकरम -	२९	६९)	कालाधतूरा -	१२१
२८)	आर्द्रक -	३०३	७०)	काली मुसली -	११२
२९)	आमलकी -	१३१	७१)	कासमर्द -	७५
३०)	आम्लीका -	२४५	७२)	किरात तिक्त -	२७०
३१)	आम्र -	१८०	७३)	कृष्ण कुटज -	३०२
३२)	आम्रगंधा हरिद्रा-	११३	७४)	कृत्रिम अशोक -	२३०
३३)	आरग्वध-	७४	७५)	कुटज-	१६२
३४)	आरूक -	२३६	७६)	कुंडली -	९७
३५)	आस्फोता -	१००	७७)	कुंदरी -	१०१
३६)	अंतमूल -	२९२	७८)	कुपीलु-	२६९
३७)	इन्द्रवारुणी -	९३	७९)	केतकी -	१०७
३८)	इक्षु -	२५१	८०)	कोकिलाक्ष -	४५
३९)	इक्षुरगंधा -	४५	८१)	कोलकंद -	२९४
४०)	ईश्वरी -	३९	८२)	कोविदार -	५३
४१)	इंगुदी -	४९	८३)	कंटकारिका -	२६६
४२)	उग्रगंधा -	९	८४)	कंटाला -	१४

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

८५) खदिर - ३
८६) खस तिल - २१४
८७) खेर चम्पा - २२९
८८) खेरु - २३
८९) गर्जर - १२३
९०) गंधपलाशी - १५८
९१) गंधसार - २५३
९२) गनेरी - १६९
९३) गम्भारी - १५२
९४) गुग्गुलु - १०३
९५) गुंजा - १
९६) गूडूची - २८७
९७) गुलबाशी- १८८
९८) गोरक्षी - १०
९९) गोक्षूर - २८९
१००) घृतकुमारी - २०
१०१) चक्रमर्द- ७६
१०२) चनक - ८७
१०३) चन्द्रिका - १७१
१०४) चाम्पेय - १८५
१०५) चांगेरी - २१२
१०६) चाक्षुष्या - ७२
१०७) चित्रक - २२८
१०८) चीनक कपूर - ८८
१०९) चुनडी - १६९
११०) चोबचीनी - २६२
१११) जटामांसी - २००
११२) जपा - १६१
११३) जयफल - ११०
११४) ज्योतिष्मती - ८०
११५) जल पिप्पली - २२०
११६) जाई - १६३
११७) जातिका - १६३
११८) जायफल - १९८
११९) जारूल - १६८
१२०) जावित्री - १९९
१२१) जीवनी - १७२
१२२) झण्डु - २७४
१२३) झाबुक पत्रवास - २७६/२७७
१२४) टंकारी - २१९
१२५) तगर - १३३
१२६) तण्डुलीय - २४
१२७) तमालपत्र - ८९
१२८) त्वक्दारुसिता - ९०
१२९) ताम्बुल - २२३
१३०) तालमूली - ४३
१३१) तिक्त कोषातकी - १७७
१३२) तिल - २५८
१३३) तुलसी - २०८
१३४) तूत - ७८
१३५) दन्तिबीज - ११०
१३६) दमनक - ४०
१३७) दाडिम - २४१
१३८) दारुहरिद्रा - ५५
१३९) द्राक्षा - ३००
१४०) दिवासीनी - ८३
१४१) दुग्धिका - १३६
१४२) देवकिली - ६७
१४३) देवदारु - ७९
१४४) द्रोणपुष्पी - १७३
१४५) धानक - १०६
१४६) धूपसरल - २२२
१४७) नन्दीवृक्ष - ७८
१४८) नाकुली - २४७
१४९) नागकेशर - १८४
१५०) नागदमनी - १०९
१५१) नाड़ी हिंगु - १४९
१५२) निर्गुण्डी - २९९
१५३) निम्ब - ४७
१५४) निम्बक - १८१
१५५) निम्बूक - ९४
१५६) नीरब्राह्मी - ४८
१५७) नीरदूर्वा - ११८
१५८) पटोल - २९०
१५९) पदन- २०१
१६०) पदन चारिणी - २७४
१६१) पदन बीजाभ - १३९
१६२) पर्णबीज - ६१
१६३) पनश - ४१
१६४) पर्पट - १४८
१६५) परुषक - १५४
१६६) प्लीहारी - २७९
१६७) प्लाण्डु - १७
१६८) पहाड़ी पीपल - २२६
१६९) पारिभद्र - १३४
१७०) पालक्या - २६८
१७१) पाषाण भेद - २५७
१७२) पाषाणभेदी - १०२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१७३) पिपरमिन्ट - १८२
१७४) पिप्पली - २२४
१७५) प्रियंगु - ६४
१७६) पीतकनेर - २८५
१७७) पीत हुरहुर- ९६
१७८) पृश्निपर्णी - २९३
१७९) पुत्रजीव - २४२
१८०) पूगीफल - ३६
१८१) पूतिकरंज - ६३
१८२) पूतिका - ५२
१८३) पूतिहा - १८३
१८४) पेरुकम - २८३
१८५) पेली - ६०
१८६) पंचपर्णी - १०
१८७) फल्गु - १४४
१८८) बचा - ९
१८९) बदर - २४३
१९०) बन्दाक - १७६
१९१) बन तुलसी - २०६
१९२) बताड़ - २८
१९३) बब्बूल - ५
१९४) बरियार - २६०
१९५) बला - २६०
१९६) बहुवार - १०५
१९७) बाकुची - २३७
१९८) बिम्बी - १०१
१९९) बिल्व - १३
२००) बीजक - २३९
२०१) बीजपुर - ९५
२०२) बृहती - २६३
२०३) बृहद् गोक्षुर - २१५
२०४) बृहदेला - २६
२०५) बृहज्जोणिका - २३२
२०६) बेलाडोना लिली - २५
२०७) भव्य - १२६
२०८) भारंगी - ९९
२०९) भृंगराज - १२८
२१०) भूनिम्ब - ३१
२११) भूम्यामलकी - २१८
२१२) भंगा - ६६
२१३) भटकी - २६४
२१४) मखान्न - १३९
२१५) मदन - २४५
२१६) मधुनासिनी - १५६
२१७) मधुमालती - २४४
२१८) मधुयेष्टी - १५१
२१९) मयुरपंख - २८६
२२०) मरिच - २२५
२२१) मरुबक - २०५
२२२) मलयज - २५३
२२३) महाजाली - १७७
२२४) महापत्र - २७८
२२५) महाबला - २६१
२२६) महाभरी वच - २१
२२७) महासभंग - २६१
२२८) मार्कण्डिका - ७३
२२९) मानकंद - १९
२३०) मालवी गोक्षुर - २१५
२३१) मापपर्णी - २८०
२३२) मांसरोहिणी - २६७
२३३) मिश्रेया - १४७
२३४) मीठा इन्द्रजव - ३०२
२३५) मुक्तवर्चा - ६
२३६) मुद्गपर्णी - २१७
२३७) मुदुरा - १६४
२३८) मुर्वा - २५४
२३९) मुस्तक - ११९
२४०) मुष्टिप्रमाण - २४३
२४१) मूलक - २४६
२४२) मेथिका - २९१
२४३) मेन्दिका - १७०
२४४) मेषशृंगी - १५६
२४५) मौलसिरी - १८७
२४६) मंजिष्ठा - २५०
२४७) मंदार - ६५
२४८) मण्डूकपर्णी - ८२
२४९) रक्त कमल - २०१
२५०) रक्त पुनर्नवा - ५७
२५१) रक्तवर्धक - १७८
२५२) रक्त व्याग्रैण्ड - १६६
२५३) राज जम्बू - २७३
२५४) राज बदर - ३०४
२५५) राजिका - ५९
२५६) रातरानी - ८४
२५७) रास्ना - २२७
२५८) लघुलोणा - २३३
२५९) लज्जालु - १८६
२६०) लघुपाठा - ९१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२६१) लवंग - २७२
२६२) लसुन - १८
२६३) लक्ष्मणा - ३५
२६४) लिची - १७५
२६५) लोध्र - २७१
२६६) लौकाट - १३२
२६७) लंका - ६८
२६८) लांगली - १५०
२६९) वज्रकंटक - १३५
२७०) वट- १४३
२७१) व्याघ्रैण्ड - १६५
२७२) वरुण - १०८
२७३) वाताम - २३५
२७४) वादात - २३५
२७५) वाराहीकंद - १२७
२७६) वासा - ११
२७७) वास्तुक - ८५
२७८) वार्षिकी - १६४
२७९) विडंग - १३०
२८०) विदारीकंद - २४०
२८१) विभीतक - २८२
२८२) विमला - ४
२८३) विष्णुकांता - १४०
२८४) वीरण मूल - २९७
२८५) वृन्ताक - २६४
२८६) वृद्धदारक - ३८
२८७) वृक्षादनी - १७६
२८८) वंध्याक कोटकी - १९०
२८९) वंशलोचन - ५०
२९०) श्वेत - १५७
२९१) श्वेत मूसली - ४३
२९२) श्वेता त्रिवृता - २१०
२९३) श्योनाक - २११
२९४) श्लेष्मांतक - १०२
२९५) शतपत्री - २४९
२९६) शतपुष्पा - २१६
२९७) शतावर - ४४
२९८) शमी - २३४
२९९) शरपुंखा - २७९
३००) शरबाण - ११६
३०१) शातला - १३८
३०२) शाल्मली - २५२
३०३) शाल - २५९
३०४) शालपर्णी - १२४
३०५) शितवार - ८१
३०६) शिरिष - १६
३०७) शिंशपा - १२०
३०८) शृंगाष्टक - २८८
३०९) शुक्लजीरक - १११
३१०) शुण्ठी - ३०३
३११) शेफालिका - २०४
३१२) शेफाली - २९९
३१३) शेकनाशन - २५६
३१४) शोमांजन - १९१
३१५) शंखपुष्पी - १०४
३१६) सुवर्णक्षीरी - ३७
३१७) सदापुष्पा - ७७
३१८) सप्तपर्ण - २२
३१९) सप्तला - ४
३२०) सर्पाङ्गी - २४७
३२१) सफेद मूसली - ८६
३२२) सैरेयक - ५१
३२३) सहतूत - १९२
३२४) सहदेवी - २९६
३२५) सर्षपा - ५८
३२६) साग - २७८
३२७) सारिवा - १६०
३२८) सिल्वर ऑक - १५५
३२९) सिविलिका फल- २४३
३३०) सीताफल - ३२
३३१) सुदर्शना - १०९
३३२) सुल्तान - ६
३३३) सुवर्चला - १५७
३३४) सुरभी नीम - १९४
३३५) सूर्यावर्त - १५९
३३६) सूरनकंद - २७
३३७) सेहुन्द - १३७
३३८) सोमराजी - २९५
३३९) सौवीर - ३०४
३४०) हपुषा - १६७
३४१) हरिद्रा - ११४
३४२) हरीतकी - २८३
३४३) हिंगु - १४२
३४४) हत्पत्री - १५२
३४५) हंसापादी - १२
३४६) क्षुद्र अग्निमंथ - ९७
३४७) क्षेत्रपर्पट - २०९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनौषधियों के अँग्रेजी नाम

1)	Ailanthus -	15	40)	Black Plum -	273
2)	Ajova Seeds-	71	41)	Blue shankhpushpi-	140
3)	Almonda -	235	42)	Bondac Nut-	63
4)	Apple Tree -	243	43)	Box Myrtle -	197
5)	Arbian Jasmine-	164	44)	Brinjal -	264
6)	Arjune Tree-	281	45)	Broom Jute sida-	261
7)	Asfoetida -	142	46)	Bushy Gardenia -	245
8)	Asoka Tree-	256	47)	Bus Tard -	42
9)	Asiatic Grawia-	154	48)	Cabbage -	60
10)	Asporagus -	44	49)	Camphor Plant-	88
11)	Bacopa -	48	50)	Capsicum -	68
12)	Bael Tree -	13	51)	Cardamon major-	26
13)	Balanite -	49	52)	Cardamum fruit-	129
14)	Bambo -	50	53)	Carambola -	46
15)	Banana Plant -	196	54)	Carrot -	123
16)	Banyan Tree -	143	55)	Cashew Nut Tree-	28
17)	Baobad -	10	56)	Caster oil Plant-	248
18)	Barbados Aloe -	20	57)	Cat-tail -	6
19)	Barbreng -	130	58)	Celery fruit -	34
20)	Bedda Nut -	282	59)	Celosia -	81
21)	Beleric Myrobalans-	282	60)	Century Plant -	14
22)	Belladona Lily -	25	61)	Chebulic Myrabalans -	283
23)	Bellyache bush-	166	62)	China-Root -	262
24)	Bengal Gramm -	87	63)	Chireta -	270
25)	Bengal Quince -	13	64)	Chir Pine -	222
26)	Betal Leat -	223	65)	Cinnamom Bark-	90
27)	Beta Nut Palm-	36	66)	Citron -	95
28)	Bhuianvla -	218	67)	Clerodendron -	98
29)	Bitter Apple -	93	68)	Clove Tree -	272
30)	Bitter Gourd -	189	69)	Cobras Saffrom -	184
31)	Bitter Luffa -	177	70)	Colocynth -	93
32)	Black Basil -	206	71)	Common Cress -	171
33)	Black Catechu -	3	72)	Common Jasmine -	163
34)	Black Cumin -	203	73)	Common Purslane -	232
35)	Black hellebore -	221	74)	Common Sweet Basil -	205
36)	Black kurchi -	302	75)	Coral Tree -	134
37)	Black Musale -	112	76)	Coriender -	106
38)	Black Night shade -	265	77)	Country Mallow -	260
39)	Black pepper -	225	78)	Creeping Cynodon -	118

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

79) Crinum - 109
80) Crotan oil Seed - 110
81) Cumin Seed - 111
82) Cuptard Apple Tree - 32
83) Curry Leaf Tree - 194
84) Cuscus Grass - 293
85) Datura - 122
86) Dellenia - 126
87) Devil's Tree - 22
88) Doddar - 115
89) Dodi - 172
90) Drum stick Tree - 191
91) East Indian Walnut- 16
92) Edible Stammed Vine - 92
93) Egg Plant - 264
94) Elephant Creeper - 38
95) Emblic Myrobalan - 131
96) Emetic Nut - 245
97) False Jalap - 188
98) Fennel fruit - 147
99) Fenu Greek - 291
100) Fever Nut - 63
101) Fig Tree - 144
102) Fine Leaved Fumiteric - 148
103) Flame of the Forest - 62
104) Fleabanc - 296
105) Flowers Priyangu - 64
106) Four Leaved Cassia - 72
107) Four 'O' Clock Plant - 188
108) Fox Glove - 125
109) Gardenmint - 183
110) Garden Quinine - 97
111) Garland Flower - 158
112) Garlic - 18
113) Giant Alocasia - 19
114) Ginseng - 35
115) Gorgon Fruit - 139
116) Grape Plant - 300
117) Greater Galangal - 21
118) Guava Tree - 238
119) Gummy Gardenia - 149
120) Henna plant- 170
121) Himalyan Cedar - 79
122) Hog Weed - 57
123) Holy Besil - 208
124) Hollyhock - 23
125) Indian Atees - 8
126) Indian Beach - 231
127) Indian Bedellium Tree - 103
128) Indian Berberry - 55
129) Indian Birth worth - 39
130) Indian Atees - 8
131) Indian Beach - 231
132) Indian Bedellium Tree - 103
133) Indian Berberry - 55
134) Indian Birth worth - 39
135) Indian Cotton - 153
136) Indian dill fruit - 216
137) Indian Gum Tree - 5
138) Indian Ipeca Caunha- 293
139) Indian Jack fruite - 41
140) Indian Jalap - 212
141) Indian kino Tree - 239
142) Indian Madder - 250
143) Indian Mallow- 2
144) Indian Mustard - 59
145) Indian Night - 263
146) Indian Penny wort - 82
147) Indian Privet - 299
148) Indian Rock Foil - 257
149) Indian Sarsaprilla - 160
150) Indian Senna - 73
151) IndianSnot - 67
152) Indian Sorret - 212
153) Indian Spinach - 52
154) Indian Squill - 294
155) Indian Teak Tree - 278
156) Indian Trumpet flower - 211
157) Indian Worm wood - 40
158) Ivy Gourd - 101
159) Iyrisp - 102
160) Java Apple - 273

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

161) Jequirity - 1
162) Jonesia Ashoka - 256
163) Jujub - 304
164) Juniper Berry - 167
165) Kadamba - 33
166) Kantkari - 266
167) Kosht - 107
168) Large Caltrops - 215
169) Lamb mint - 183
170) Lemon Grass - 116
171) Life Plant - 61
172) Lime Plant - 94
173) Line seed - 174
174) Liquoric Root - 151
175) Litchi - 175
176) Locket - 132
177) Long Leaved Barleria- 45
178) Long Pepper - 224
179) Loranthus - 176
180) Love Apple - 178
181) Lucky Nut - 285
182) Luster Fig - 145
183) Lyon Bean - 193
184) Madder Tree - 250
185) Maiden hair - 12
186) Malaya Tea - 237
187) Malbar Nut - 11
188) Mango Ginger - 113
189) Mango Tree - 180
190) Margosa Tree - 47
191) Marigold - 274
192) Mast Tree - 230
193) Maxican Poppy - 37
194) Milk Bush - 138
195) Milk Hedge - 137
196) Milk Weed - 136
197) Monkey Bread Tree - 10
198) Monkey face Tree - 179
199) Moon Been Plant - 133
200) Mountain Ebony - 54
201) Mulberry - 192
202) Negro Coffee - 75
203) Night blooming Jasmine - 84
204) Nut Grass - 119
205) Nut meg - 198
206) Onion - 17
207) Opium - 214
208) Orange Jasmine - 195
209) Oriental Arbor vitae - 286
210) Pagoda Tree - 229
211) Pandari Tilwan - 157
212) Papwa Tree - 69
213) Peach - 236
214) Pepper Mint - 182
215) Periwinkle - 77
216) Persion Lilac - 181
217) Physic Nut - 165
218) Pine Apple - 30
219) Plantain - 196
220) Plum - 304
221) Poison Nut - 269
222) Pomegranate Tree - 241
223) Pongame Oil Tree - 231
224) Poppy Plant - 214
225) Poppular Leaved Fig Tree - 146
226) Prickly Amaranthus - 24
227) Prickly Chaff Flower - 7
228) Pride of India - 168
229) Prishna Parni- 293
230) Pudding Pipe Tree - 74
231) Purging Nut - 165
232) Purple Fleabane - 294
233) Purple Lippia - 220
234) Putanjiva - 242
235) Radish - 246
236) Ran-Goose Berry - 219
237) Rangoon Creeper - 244
238) Rape Seed - 58
239) Rape Seed Plant - 301
240) Rasna - 227
241) Red Cedar - 78
242) Red Ebony - 53

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

243) Red Silk Cotton Tree - 252
244) Red wood Tree - 267
245) Ring worm Plant - 76
246) Rose - 249
247) Rosha Grass - 117
248) Sacred Lotus - 201
249) Sandal Wood - 253
250) Sansevieria - 254
251) Saral - 240
252) Sarivan - 124
253) Screw Pine - 213
254) Sebestan - 105
255) Sensitive Plant - 56
256) Serpentine - 247
257) Sesame - 258
258) Sespadula - 290
259) Shankhpuhpi - 104
260) Shallow wort - 65
261) Shikakai Acasia- 4
262) Shivan - 152
263) Shoe Flower - 161
264) Silver Oak - 155
265) Sisso Tree- 120
266) Small Caltrops - 289
267) Small Indian Ipeca Caunha - 156
268) Small Pepper - 226
269) Small Purslane - 233
270) Soap Nut tree - 255
271) Sponish Pellitory - 29
272) Spikenard - 200
273) Spinach - 268
274) Spiny Yellow Borleria - 51
275) Sun Flower - 159
276) Supper mint - 183
277) Spinous kino Tree - 284
278) Sponge Tree - 234
279) Staff Tree - 80
280) Sugar Cane - 251
281) Surinam Madler - 187
282) Sweet Flag - 9
283) Sweet Scented Oleander - 202
284) Sweet Viola - 298
285) Swinum Cherry - 273
286) Symplocos Bark - 271
287) Tamrind - 275
288) Tamrinsk - 277
289) Tamrix (Red) - 276
290) Tamba - 173
291) Tamla Tree - 89
292) Tanners Cassia - 70
293) Tillicherry Bark - 162
294) The Creat - 31
295) The Day Jasmine - 83
296) The Sal Tree - 259
297) Thorne Apple - 121
298) Tinospora - 287
299) Tiutun - 211
300) Touch me not - 186
301) Trailing Eclipta - 128
302) Triangular Sponge - 135
303) Turk's Turbon - 99
304) Turmeric - 114
305) Varuna - 108
306) Vasaka - 11
307) Vegetable Corn - 27
308) Velvet Leaf - 91
309) Water Chest Nut - 288
310) White Goose Foot - 169
311) White Leald wort - 228
312) White Musale - 86
313) Wild Besil - 207
314) Wild Indigo - 279
315) Wild Mung - 217
316) Wild Sage - 169
317) Wild Udad - 280
318) Winged Leaved chiforia - 100
319) Winter Cherry - 301
320) Yam - 127
321) Yellow Cleome - 96
322) Zinger Plant - 303

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूध-चरक ने दूध को 'परमं जीवनीयानाम्-' जीवनी द्रव्यों में सबसे श्रेष्ठ गाय के दूध को कहा है। गाय के दूध में १०१ विभिन्न पदार्थ होते हैं-एमिनो अम्ल (१९), प्रोटीन्स (तीन प्रकार के) वसा अम्ल (११ प्रकार के-मक्खन), विटामिन्स (६ प्रकार), पाचक रस (८ प्रकार) खनिज क्षार (२५ प्रकार), फास्फोरस के यौगिक (५ प्रकार), नत्रल विशेष पदार्थ (१४ प्रकार), शर्करा आदि बताये गये हैं। यह देखकर आज के युग में आश्चर्य होता है कि हमारे पूर्वजों ने एक वाक्य में ही क्या-क्या बता दिया है। परमं जीवनीयानाम् गाय के घी को आयुर्वेदाचार्यों ने श्रेष्ठ माना है, क्योंकि गाय का दूध ओजवर्धक है। ओज हृदय में रहता है। सभी धातुओं के परम सार को ओज कहा गया है। गाय के दूध में निम्न गुण हैं-

* गाय के दूध में मधुर रस है, शीतवीर्य है। स्निग्धता है, श्लक्ष्णता एवं पिच्छिलता है। पचने में भारी है, मंद है। प्रसन्न (एकदम निर्दोष) है। इस प्रकार गाय के दूध में दस गुण होते हैं। गाय का दूध ओजवर्धक है। यह धातु की वृद्धि करने वाला होता है। अत: जीवनीय द्रव्यों में गाय के दूध को श्रेष्ठ माना गया है।

* आयुर्वेद में छोटे-छोटे शब्दों में द्रव्य के गुण-दर्शन कराने का प्रयत्न किया गया है।

* जीवनीय के समकक्ष दूसरा शब्द आयुष्य है। इसका सरल अर्थ आयुष्य प्रदान करने वाला या लम्बी आयु देने वाला होता है, किन्तु अपरिमित आयुष्य प्रदान करने वाले के लिए इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

रसायन-यह शब्द अति प्राणवान् है। 'रसायनं तु तत् ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्।' जरा का अर्थ वृद्धवस्था एवं व्याधि का अर्थ रोग इन दोनों का जो नाश करता है, उसी का नाम रसायन है। इस शब्द में जो वृद्धावस्था को दूर रख रोगों के प्रति प्रतिरोध शक्ति प्रदान करे, ऐसा अर्थ समाविष्ट है। गिलोय, गुग्गुल, हरड़ इसके उदाहरण हैं। वनस्पतियों में पाये जाने वाले हार्मोन्स मुक्त होते हैं यह वनस्पतियों का रसायन गुण हैं।

वय:स्थापन- जिन द्रव्यों के सेवन से आयु का प्रभाव विदित न हो तथा व्यक्ति युवा ही दिखाई दे, उन द्रव्यों को वय:स्थापन कहा जाता है।

आयुर्वेद में रसायन, वय:स्थापन, जीवनीय इन तीनों शब्दों की परिभाषा ज्ञान इसका द्रव्य गुण शास्त्र समझना अत्यन्त ही आवश्यक है। (वैसे यह तीनों शब्द लगभग एक जैसे ही प्रतीत होते हैं।)

गिलोय को रसायन, वय:स्थापन माना गया है। गिलोय का एक नाम अमृता भी है। नाम देना भी एक कला है, आयुर्वेद में द्रव्यों के नाम भी अतिगुण सूचक हैं। अमृता नाम में ही अमृत जैसे गुण समाये हुए हैं। गिलोय को परम संशमन कहा गया है। बढ़े हुए दोषों को कम करना, क्षीण दोषों की वृद्धि करना, संशमन का यही अर्थ है। जैसे गिलोय परम संशमन है, इसका अर्थ यह हुआ कि यह वनौषधि दोषों तथा धातुओं को सम स्थिति में लाने वाली होती है। इसलिए गिलोय जीर्ण ज्वरों में, यक्ष्मा में, शरीर क्षीणता में तथा जहाँ पर निदान का निश्चित निर्णय न किया जा सका हो, वहाँ पर वैद्यराज गिलोय का उपयोग करने की सलाह देते हैं। वर्तमान में गिलोय का विश्लेषण कर उसमें बर्बरिन एल्कायड है, केवल इतना ही बताया गया है। आज के संभ्रान्त चिकित्सकों में गिलोय आयुर्वेदोक्त गुणों को समझने की शक्ति ही नहीं है। इसलिए आयुर्वेद को समझने के लिए प्रयत्न की आवश्यकता होती है।

बृंहणीय-जो द्रव्य शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाता हो वह वृंहण है। चक्रपाणि दत्त के अनुसार रोग से ग्रस्त हुए व्यक्ति को जिस द्रव्य के सेवन से बल प्राप्त होता हो, वह वृंहण द्रव्य होता है। वृंहण का अर्थ Flattening होता है तथा रोग निर्मुक्तावस्था

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में ही शीघ्र बलवान बने, उन द्रव्यों को ही वृंहण कहना उचित होगा। अश्वगंधा वृंहण द्रव्य है। चरक ने सालम, विदारीकंद, खजूर, अंजीर, नारियल, पिस्तो, चिलगोजा को वृंहण कहा है।

लेखनीय-वृंहण से विपरीत गुण वाले को लेखन कहा गया है। इसके अतिरिक्त जो द्रव्य शरीर की रसादि धातुओं को एवं मल को सुखाकर शरीर से बाहर निकाल, शरीर को पतला कर दे। ऐसे द्रव्यों को लेखन कहा गया है। मधु, गरम जल, वच इन द्रव्यों में वायु एवं अग्नि महाभूत प्रधान होते हैं। चरक ने मोथा, हल्दी, दारुहरिद्रा, घोड़वच एवं चित्रक को लेखनीय कहा है।

'लेखनम् पत्तलीकरणम्।' इसलिए स्थूल मेद वाले व्यक्ति (मोटे) को लेखन द्रव्यों का सेवन लाभकारी है।

अनुलोमन- जो वातादि का अधः प्रवर्तन करता है, उसे अनुलोमन कहते हैं। हरड़ का प्रधान गुण अनुलोमन है। उदर में गैस हो, वातमुक्त न होती हो, उसको हरड़ का सेवन करना चाहिए। 'सर' शब्द का अर्थ सारक है।

दीपन- जिस द्रव्य से आम (अपरिपक्व अन्न) का पाचन होकर जठराग्नि का दीपन करता है (भूख बढ़ाता है) उसको दीपन कहते हैं। सौंफ दीपन का श्रेष्ठ उदाहरण है। दीपन द्रव्य अग्नि गुण की अधिकता वाला होता है। यह द्रव्य उदर (आमाशय) के अंदर की श्लेष्मकता को उत्तेजित कर आमाशय के रस (एन्जाईम्स) को बढ़ाने वाला होता है। इसे दीपन कहते हैं। अन्न का पाचन हो जाता है, किन्तु जब भूख न लगती हो तो दीपन द्रव्यों का सेवन करना चाहिए। इसलिए दीपन को अग्नि दीपन कहना अधिक उचित होगा। अजवायन, पोदीना, त्रिकटु, घी, पिप्पली, पिप्पलीमूल, चित्रक, शुण्ठी, कालीमिर्च, हींग वगैरह यह सब द्रव्य दीपन हैं।

दीपन पाचन-जिस द्रव्य से आम परिपक्व बनता हो एवं जठराग्नि भी प्रदीप्त होता हो। उदाहरण चित्रक मूल। इसलिए जब भूख न लगती हो तथा खाए हुए भोजन का पाचन भी न होता हो, उस समय पाचन दीपन द्रव्य का सेवन करना चाहिए।

हृद्यं- हृदय को लाभकारी हो, ऐसे द्रव्यों को हृद्य माना गया है। कहीं-कहीं हृदय का अर्थ मन माना गया है। इसलिए मन को रुचिकर हो वह द्रव्य हृद्य माने गये हैं। हृदय के लिए Cardiac Tonic शब्द का प्रयोग उचित होगा। चरक ने करौंदा, आम्र, कोकम, बेर, अनार, बिजौरा वगैरह को हृद्य कहा है।

हृदय का अर्थ यदि हृदय के लिए लाभकारी यह माना जाए तो यह हृदय को उत्तेजित करने वाला है। इसलिए रक्तवाहिनियों का विस्फारण (Viso-cantractor) जैसे शब्दों को भी समझना आवश्यक हो जाता है।

वेदनास्थापन- वेदना होती हो उसका नाश कर शरीर को जो आराम प्रदान करे, उस द्रव्य को वेदनास्थापन कहा गया है। कायफल, कदम्ब, मोचरस, अशोक, शिरिष यह द्रव्य वेदना स्थापन हैं। वर्तमान में वेदनास्थापन एवं वेदनाहर द्रव्य आयुर्वेद में नहीं है। Anodyne, Analgesic आयुर्वेद में वेदनाहर एवं निद्राप्रद औषधियों की पूर्ण कमी दिखाई देती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संदर्भ सूची

रोगों के अनुसार उपयोगी जड़ी-बूटियाँ

(रोगों के सामने जो अंक लिखे हैं उस क्रमांक पर प्रकाशित वनौषधि उस रोग के लिए उपयोगी है।)

अग्निमांद्य (भूख न लगना)	१५, २८, ४८, ६८, १०८, ११९, १२९, १३०, १५९, १७३, १७८, १८२, २०३, २१६, २१८, २२१, २२४, २२६, २२७, २२८, २४३, २६३, २६९, २७०, २७८, २७९
अजीर्णता (अपच)	३०, ९०, २११, २१६, २५४, २६५, २७०
अत्यार्तव (माहवारी अधिक होना)	५५, ७७, १३१, १३४, १८५, २७१, २७१, २७३, २७६, २९४, २९७
अतिरेचक (अधिक दस्त लाने वाला)	११५, १३५, १३७, १३८
अतिसार (दस्त लगना)	५, ६, ८, ९, ११, १२, १३, १५, २२, २६, ३६, ४१, ४३, ५३, ५४, ६१, ६२, ६६, ६८, ७८, ८४, ८८, ९१, ९४, १०६, १११, ११२, ११६, ११९, १२१, १२३, १२४, १२९, १३१, १४०, १४५, १४७, १५९, १६०, १६२, १७१, १८३, १८६, १९४, २०६, २११, २१२, २१३, २१४, २१६, २१८, २२०, २२४, २२५, २२६, २२८, २२९, २३१, २३४, २३७, २३९, २४१, २४३, २४४, २४६, २५९, २७१, २७३, २७५, २७७, २८०, २८२, २८८, २९२, २९३, ३०२, ३०३, ३०४
अर्धांव भेदक (आधे सिर का दर्द)	१६,२४,,२०५, २५३, २५५
अनिद्रा रोग (नींद न आना)	२२४, २४९
अपसर्गिकामोह	१, ८४, ९१, १०८, ११२, १४६, १५०, १९०, १९१, २१८, २१९, २२९, २४८, २५२, २६० ९, १८, २९, ४८, ५७, ८२, ९३, १०४, ११५, ११८, १२९, १३०, १४०, १५१, १७६, १९७,
अपस्मार (मिरगी)	२११, २१३, २४७, २६२
अम्लपित्त (एसिडीटि)	३१, १४५, १४७, २७०
अरुचि (भोजन की इच्छा न होना)	५, १११, १४८, २४१, २६९, २७५, २८०, २८२
अश्मरी (पथरी)	७, २६, ३४, ४३, ४५, ६१, ८१, १०१, १०२, १०७, १०८, १११, १३२, १३७, १५९, १९६, २०५, २२२, २४६, २५०, २६२, २५६, २५७, २६३, २६६, २६८, २७३, २८२, २८३, २८७, २८९, २९४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्श (बवासीर)	२, ७, ८, १३, १७ २०, २७, ४२, ४७, ५३, ५४, ६२, ७६, ९२, ९८, १०९, ११२, १२३, १२४, १२७, १२९, १३१, १३७, १५०, १५२, १६२, १८६, १८९, १९४, २०२, २१०, २११, २१२, २१५, २१७, २२१, २२४, २२५, २२६, २२८, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३६, २४१, २४६, २४८, २५०, २५६, २५७, २५८, २६०, २६१, २६३, २७१, २७४, २७५, २८२, २८७, २८९, २९१, २९६, ३०४
अस्थिभग्न (हड्डी टूटना)	९२, २३०, २३९, २५०, २५९, २७९, २८१, २८३
अस्थिशूल	२४५
आर्तवजनन (माहवारी लाना)	१५३, १६३, १६६, २४७, २५८, २८०
आध्मान (पेट फूलना)	११, १७, २६, २७, ३४, ४०, ५३, ६७, ८८, ९०, १०६, १०८, १०९, १११, ११६, १२९, १३०, १३५, १३७, १४२, १४७, १५८, १५९, १६७, १८२, १८९, १९७, १९८, २००, २०३, २१६, २२२, २२५, २२८, २३०, २३१, २६०, २६६, २७२, २७९, २९९
आमातिसार (आंव के साथ दस्त आना)	१९९, २१४, २३७, २५७, २५८, २७१, २७७
आमवात (गठियावात)	११, २१, २९, ३२, ३४, ३८, ३९, ४७, ६०, ७१, ७४, ८०, ९७, ९८, १००, १०१, ११०, ११६, ११७, १३५, १५०, १६२, १६७, १६९, १७१, १८२, १८५, २०४, २०७, २२१, २१३, २१४, २१५, २२५, २२६, २२८, २३१, २३९, २४५, २४८, २६१, २६२, २६४, २६५, २६९, २७०, २८०, २८५, २८७, २८९, २९२, २९३, २९५, ३०१, ३०३, ३०४
अंग घात (लकवा)	२२५, २२८, २५०, २६२
आंत्र विकार (आंत संबंधी रोग)	१३६, १९१, २३८, २६८
आंत्र शूल (पेट दर्द-ऐंठन)	२७, ६३, ११३, ११७, १३७, १४२, २०७, २२२, २६०, २६५
उच्च रक्त चाप	८२
उत्तेजक	१११, १६६, १२९, १४२, १५७, २२४, २२९, २४०, २६४
उदर आध्मान (पेट फूलना)	
उदर रोगों में (पेट संबंधी विकार)	२४, ४१, ४३, ४४, ५३, ५५, ५९, ८२, ९०, १०६, ११४, १७७, २०५, २१०, २११, २१६, २४८, २७३, २७८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदरशूल (पेट दर्द)	६८, ७१, ७९, ९३, १०८, ११६, ११७, १२६, १२७, १२९, १४४, १८२, १८३, १९८, २१९, २२७, २३८, २४६, २५७, २७०, २७२, २७५, २७८,
उदवेष्टनरोधी (पेट में मरोड़ को दूर करने वाला)	१०१, १०२, १०३, १०७, १२१, ११६, १३७, १४२, १४९, १५०, १५५, १७९, १८३, १८९
उदक मेह	२०४, २५८
उदवेष्टहर	१६१, १८७, १९१
उन्माद (मानसिक रोग)	९, १०४, ११५, १२१, १२५, १३३, १४०, १७६, २४७, २६०
कटिशूल (कमर दर्द)	११६, १७०, २१३, २२४, २२५, २३५, २४८, २५८, २६९,|३०१, ३०३
कर्णशूल (कान दर्द)	१७, १८, १९, ७९, ९९, १०७, १०९, १३८, १७६, १९६, १९७, २०५, २०८, २११, २१४, २१९, २४६, २५३, २७४, २७५
कर्ण रोग	२२२, २३४, २३५, २५९
कर्णशोथ (कान में सूजन)	९२, २०९, २१३, २७२
कष्टार्त्तव (माहवारी दर्द से होना)	१३४, १८२, १८५, २०४, २१८, २३६, २४७, २७०, २८६
कण्डुरोग (खुजली)	११४, १२१, १२९, १३०, १४८, १७०, १७३, २०२
कफ नि:सारक (कफ निकलने वाला)	१००, १०३, १०५, १२०, १२५, १३२, १३६, १३७, १५१, १५९, १८०, १९०, १९२, २११, २१४, २१६, २४९, २५३, २५०
कामला (पीलिया)	४, ७, १३, १७, २०, ४५, ५७, ९३, ११२, ११४, १२३, १३१,१७३, १७७, २०९, २१०, २१८, २२१, २४८, २५०, २५१, २६८, २७०, २७३, २८७, २९०, २९५, २९९, ३००, ३०२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कास (खाँसी)	११, २०, २१, ३६, ३७, ४८, ५१, ५३, ५५, ७५, ८२, ८५, ९०, ९३, ९६, ९८, १०६, ११३, ११४, ११५, ११७, १२१, १२४, १२५, १२८, १२९, १३०, १३२, १३६, १३८, १४२, १५१, १५६, १५९, १६०, १६१, १७०, १७३, १८१, १८३, १८४, १८६, १८७, १८९, १९०, १९८, २०५, २०७, २०८, २११, २१४, २१७, २२२, २२४, २२५, २२७, २३२, २४८, २५०, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८६, २८९
कुपचन	८, १३, १९, ३२, ५३, ५५, ७९, ९१, ९२, १०६, १०८, १११, ११४, ११७, १२८, १२९, १३०, १४९, १५२, १९८, २०३, २०५, २०८, २२०, २२१, २२५, २२६, २२८, २३०, २३१, २३४, २३८, २५८, २६९, २७०, २७८, २७९
कुष्ठ रोग (त्वचा संबंधी विकार)	१, २, ३, २८, ४९, ५०, ६०, ६२, ६३, ७२, ७९, ८२, ९३, ९०, १००, १०९, १२०, १२२, १२७, १२८, १२९, १४८, १५०, १५७, १६०, १७७, १८१, १८९, १९०, १९१, २०२
कीट दंश (कीड़े के द्वारा काटना)	६१, २२२, २५५
किटाणुघ्न (कीड़ों का नाश करने वाला)	२०५, २०८, २१२, २३१, २५६, २७०, २७३
किटाणु नाशक	१०३, ११०, ११८, १४६, १६०, १६१, १८३, १८७, १९४, २००
केशवर्धक (बाल बढ़ाने वाला)	११९, १७०, २५८, २७८
कैन्सर	१४, ११८, १२८, १६०, १७९, १९७, २०२, २२८, २२९, २५६, २७०
कंठ रोग (गले संबंधी विकार)	११७, १२०, १९८
कंठशोध (गले में सूजन)	१, २०९, २१३, २७२
कंठ दोष	३, ८८, १०९, १२९, १८०, १८४, २२४, २२५, २६६, २७७, २८१, २९९, ३०१
कृमिरोग	७, ८, ११, १८, २७, ४९, ६३, ९४, २२१, २२२, २२४, २२८, २३४, २३७, २३९, २४३, २४७, २४८, २६८, २७९, २८६, २९५, २९६, २९९, ३०१
कृमिघ्न (पेट के कीड़े मारने वाला)	७, ८, ११, २७, ४९, ६३, ९४, १००, १०१, १०५, १०७, १०९, ११०, ११९, १२०, १२२, १२४, १२७, १२९, १३०, १३४, १४२, १४६, १४७, १४९, १५०, १५७, १६३, १६६, १७३, १७५, १८१, १८४, १८७, १८९, १९१, १९८, १९९, २०४, २०५, २११, २३८, २४०, २५३, २७०, २७२, २७५, २७८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाज-खुजली	३, १८, २४, ४७, ६८, ८८, ९०, ११३, ११५, ११८, १२२, १३१, २१९, २२५, २३१, २३७, २५३, २६८, २७६, २७८, २७९
खाँसी	१, ३, ७, ८, ९, २३, २४, २७, ५१, ५४, ७३, १४७, १७७, १८२, २०४, २१४, २१६, २२३, २२४, २२५, २३४, २४६, २४८, २६३, २८७, २९३, २९४, २९८, ३०४
गठिया	२२५, २९९
गण्डमाला (गले में माला की तरह गांठे होना)	१, २३, ५४, ९३, ९९, १०८, १९७, २३०
गलगण्ड रोग (घेंघा)	७, १४, १६, २०, २१, १८८, २२२, २३७, २४६, २५५, २५९
गर्भ धारण	२४२, २६५, २६६, २८३
गर्भाशय दौर्बल्य	१४०, १५६
गर्भाशय रोग	११९, १२०, १२३, १५०, २४७, २५६
गर्भवती वमन	२७०, २७२
गाठों की सूजन	२५२
ग्राही (मल को बांधने वाला)	१०१, १११, ११४, ११८, ११९, १२६, १३१, १३४, १३६, १३९, १४१, १४८, १५६, १५८, १६२, २६०
गुद विकार	२७७
गुल्म (गोल गांठ)	१७७, २४५, २५१, २५७, २७६, २७९
गृध्रसी (सियाटिका)	१, १८, १९७, २०४, २२४, २२७, २४८
चर्मरोग	३, ११, २०, २४, ३१, ३९, ५५, ६२, ६६, ७६, ७९, ९०, ९९, १०९, ११३, ११४, ११९, १२०, १२१, १२७, १२९, १३०, १३३, १३५, १३७, १४६, १५१, १६०, १६२, १७०, १८१, २०३
चर्म विकार	२०, २४, ३१, ५१, ५४, ७५, ८२, २०८, २१३, २१८, २२२, २२८
चेचक	३६, १४५, २१३, १४५
छालों में	२३९
जठराग्नि	१२७, १८३, २५८, २६२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्वर	२, ८, ११, १२, १३, २०, २८, ३२, ३८, ३९, ४०, ४३, ४८, ६०, ६४, ७१, ८२, ९३, ९४, ९६, ९९, १०१, १०६, १०७, १०९, १११, ११३, ११६, ११७, ११९, १२१, १२२, १२४, १२५, १३४, १३५, १४७, १४८, १४९, १५०, १५२, १५५, १५९, १६०, १६१, १६८, १८२, १८९, १९०, २०१, २०२, २०९, २१०, २११, २१२, २२०, २३१, २३७, २३८, २४२, २४९, २५३, २५४, २६४, २६५, २६६, २६८, २६९, २७१, २७३, २८५, २८६, २९२, २९६, २६९, ३००, ३०१
ज्वर जन्य दाह	१०६
जलोदर (पेट में पानी भरना)	१४, १९, २०, २२, २८, ४५, ५१, ७३, ९३, १०१, १०७, १६३, २१८, २१९, २४६, २६३, २६६
जुकाम	११, १२, ४७, ८८, २९८, ३००
जू नाशक	४, २४५
जीर्ण अतिसार (पुराने दस्त)	११८, २०५, २६७, २७९
जीर्ण कास (पुरानी खाँसी)	४९, १४०, १९७, २२६, २५४, २६६, २९१
जीर्ण आमवात	१६०, १९१
जीर्ण वर्ण	११३, १८१
जीर्ण ज्वर	२०, ७५, ७६, ११६, १२८, १६२, १८७, २२४, २२५, २२७, २३३, २६३, २६६, २६७, २७०, २८४, २८७, २९४, २९५
जीर्ण शोथ	७५, २५२, ३०३
ज्वरघ्न (बुखार दूर करने वाला)	९०, २१७, २२४, २२९, २३०, २४८
ज्वर हर (बुखार दूर करने वाला)	२२०, २६०, २७५
तमक श्वास (अस्थमा)	१०, १०७, १३६, २०९, २१९, २२३, २४७
त्वक रोग (त्वचा संबंध विकार)	१, १७१, २०२
तनाव	४८, २३९, २५२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तृषा (प्यास लगना)	४६,११९, १३२, १४७, १५१, २१६, २२०,२३८, २५३, २६०, २६६, २७२, २९३, २९४, २९७, ३००
तृषा शामक (प्यास दूर करने वाला)	१०६, ११८, १५४, १९८, १९९
तृषा हर	२५४
दद्रु रोग (दाद)	३७, ६२, ६९, ७५, ७६, १०९, २०८, २३१, २३७
दाद-खाज	२०६, २३७, २५०
दादर	२२१, २७५
दाबह्रासी	१६७, १७३, १८७, १९१, २००, २०२
दाह (जलन)	४७, २०५, २१७, २१८, २२०, २२१, २४०, २४८, २६८, २७८, २९३
दाह शामक	१०६, १२९, १३३, १३५, १४८, १५२, १८३, १८९, १९२, २४३
दीपन (भूख बढ़ाने वाले)	१०२, ११०, १११, ११४, ११५, ११६, ११९, १२८, १३०, १३५, १४०, १४१, १४२, १४७, १४९, १५०, १५२, १५४, १५७, १५८, १८२, १८४, १९०, २२३, २६४
दुग्ध वर्धक	१३६, १५३, २१६, २२४, २४०
दौर्बल्य	४८, १३०, १३९, २१६, २७६
दंत कृमि	१, ५१, ८८, २३७
दंतोदभव (दाँतों का निकलना)	२२४, २५७, २७३
दंतरोग	२१, २८७, २३१, २३५, २५८, २७३, २७९
दंत विष	२३४
दृष्टि विकार	१३३
दंत शूल	२, ६, ७, २२, २६, २९, ४१, ५१, ५४, ८८, १०५, १२८, १३०, १३५, १३८, १५८, १८२, २०५, २२५, २६३, २७२, २७६, २७८, २७९
धातु पुष्टि	५, २३५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नपुंसकता	२, १७, ११८, २८९, ३०१
नाड़ी बल्य	१२३, १२९, १३०, १९१
निद्रारोग	२, ४७, १२२, २४३, २६४
नेत्राभिष्यंद (आँख आना)	११४, १३४, २१४, २५७, २६०, २७३
नेत्र शूल	२५१, २६९
नेत्रशोथ	७, १३३, २०४, २०५, २०८, २१९, २७८, २८१
पक्षाघात (लकवा)	२९, ५१, ८०, ११५, १८२, १९३, २०५, २०७, २२२, २२५, २६९,
पाचन	२१६, २६९, २७२, २७५
पाण्डुरोग (रक्त की कमी होना)	३१, ५६, ५७, ८२, ९८, ११४, १२८, १३७, १५७, १५९, १७८, १८१, १८९, २१४, २१५, २२१, २२४, २५१, २७३, २९९
प्रतिश्याय (जुकाम)	८, २३, ३२, ५१, ७१, ९८, ११४, ११६, ११७, १४८, १८२, २०८, २२३, २२४, २२५, २२६, २४२, २५२, २७२, २९८, ३००
प्रमेह (मूत्र बार-बार आना)	२, ३०, ५९, ६०, ६१, ७५, ८५, ८८, ९६, १२४, १२७, १३१, १५७, १५९, १६०, १६१, १७७, १८१, १८५, १८९, १९२, २०२, २०५, २०७, २१३, २१४, २१५, २१८, २२०, २२२, २२९, २३२, २३४, २३६, २३९, २५०, २५१, २५९, २६५, २७५
प्रदर (सफेद जाना)	८४, १६०, २७३, २७६, २७७
प्रवाहिका (पतले दस्त)	९, ११, १३, १४, १५, १७, २२, ३६, ४३, ५१, ५४, ६१, ६२, ६६, ७८, ८५, ११८, १२७, १४१, १४५, १४७, १५३, १६२, १९४, १९५, १९६, २०४, २०५, २०६, २१८, २२०, २३७, २३९, २४१, २४२, २४८, २५२, २५६, २५८, २५९, २६७, २६९, २७१, २७३
प्रशामक	१५४, १६१
प्रसव शीघ्र	२२५
प्रक्षालन	२७३, २०८
पित्तवर्धक	१२७, १७२, १७९, २५०
पित्तशामक	१४४, १८०, १९२
प्लीहावृद्धि	२७, ७१, ९३, १२५, १३७, १४४, १४७, १५०, १६७, १७०, १७१, १८१, १९०, २०४, २१४, २२४, २२६, २३६, २४८, २५२, २६९, २७०, २७३, २७६, २७७, २७९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पौष्टिक	२५२, २६०, २६७
फफूंदी नाशक	२०५
फोड़े-फुन्सी	८२, २२०, २२२, २२५, २३७, २३९, २४५, २५७, २५९
बच्चों के अतिसार	२३
बच्चों आंत्रकृमि	१३६
बच्चों के ज्वर	३३
बच्चों के वमन	३३
बच्चों के खाँसी	२२३
बलवर्धक	२, ८, २१८
बधिरता (कान न सुनना)	२३७
बस्तीशोथ (मूत्राशय में सूजन)	४५, २३२, २५३
बहुमूत्र (बार-बार पेशाब आना)	११४
बाजीकरण (पौरुष शक्तिवर्धक)	२१४, २१५, २१७, २४०, २५२, २५८, २६१, २६९, २७६
बिच्छु विष	४, १७, ८८, १५०, १७६, २०६, २२७, २५०, २५५
बुद्धिवर्धक	९
बेरी-बेरी (विटामिन बी की कमी से होने वाला रोग)	२२
बन्धत्व (बच्चे न होना)	१८३
बल्य (शक्तिदायक)	२५८, २६०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भ्रम	१४०, १४८, २२०, २३४, २३८, २९९
मधुमेह	५, १३, २१, ४३, ५४, ७७, ९८, ११३, ११४, ११८, १३१, १४५, १६५, १८१, १८९, १९०, १९६, १९६, २०६, २०८, २१८, २३१, २३५, २३९, २७३, २८०, २८३, २८४, २९१
मलेरिया	११, २२, ९१
मलेरिया ज्वर	४७, २०४, २०९, २१८, २२५, २६७, २८५
मसूढ़ों का रक्तस्राव	१८०, २१२
मानसिक रोग	१३३, १४०
मुखरोग	५, ८४, २९६
मुखगत व्रण (मुँह के छाले)	३३, ५४, ११३, १३१, १५२, १६३, १६४, १६७, १७०, १६८, १७८, १९२, २७७, २८३
मूषक विष	२१७, २६५
मूर्च्छा	१८१, १३१, १४२, १५८, १८२, १९१, २००, २२०, २२२, २४९, २५५
मूत्राल्पता (मूत्र कम आना)	५७
मूत्रावरोध	४०, २७८
मूत्राशय	२५१, २६२
मूत्रघात (मूत्र न होना)	८१, १४७, २०६, २१५, २५०, २५१, २५३, २५६, २७८
मूत्रदाह	२०६, २१५, २३२, २३३, २८७, २९६
मूत्ररोग	३४, १००, १२०, १२५, १८१, १८६, २११, २१८, २१९, २२५, २६०, २७०
मूत्रकृच्छ	१, २, ५, २२, २५, ७६, ८१, ८५, ८८, १०८, १११, ११२, ११८, १२७, १२९, १३१, १३४, १५९, १९०, २०१, २०८, २१३, २१५, २३२, २३३, २३४, २३७, २४०, २४८, २५१, २५२, २५३, २५६, २५७, २५८, २६१, २६३, २६४, २६६, २७३, २७४, २७५, २७८, २८२, २८७, २८८, २८९, २९७, ३००
मूत्रल	७९, १००, १०१, १०२, १०६, १०७, १०८, ११६, ११८, ११९, १२३, १२९, १३१, १३४, १३६, १३७, १४६, १४८, १५१, १५३, १५६, १५९, १६०, १६१, १७४, २४६, २५८, २६०, २६९, २७८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूत्राश्मरी	९१, १२९, १८९, २८९, ३००
मूत्राशय दाह	१०१, १०७, १०८, १३७, १८४
मेधावर्धक	८२, १४७, १५३, १९३, २५८
मंदाग्नि	५४, २६८, २७५
मृदुरेचन	७६, १३१, १३४, १४४, १४६, १४९, १५२, २४६, २४९, २९०
- -	- -
यकृत बल्य	११४, १३१, १४४, १५६, २०७, २०८, २०९, २२१, २२५, २५०, २६४, २७३
यकृत रोग	८, २०, २६, ३४, ९४, ११०, १२५, १७७, १८९
यकृत विकार	१२८, २७०, २७१
यकृत वृद्धि	३१, ६९, ११५, १६७, १७१, २२६, २४८, २६५, २७७, २७९
यकृत संरक्षक	१२८, २२८
योनी दोष	१८६, १९६, २०६, २०८, २१२, २५०
यक्ष्मा	२०६, २०८, २१०, २१४, २१६, २१७, २२४, २२६, २५१, २७२
रक्तदाब	८०, १२५, २३०, २६६, ३००,
रक्त दोष	१६, २२, २०८, २१४, २२१, २५८, २५९, २६२, २६९, २७०, २७३, २७४, २७५, २८१, २८८
रक्त प्रदर	२, २४, ११८, १८४, २०१, २१३, २१८, २५६, २७१, २७४
रक्त पित्त (नाक से खून आना)	१, ११, २०, २१, २४, २७, ४६, ८५, ९४, ९६, १४१, १५७, १८४, २०१, २१०, २२४, २३१, २३४, २३९, २५२, २५३, २६०, २६७, २६८, २७०, २७१, २७३, २७४, २८५, २९१
रक्त वमन	१४०, १५१
रक्त शुद्धि	७६, २३०, २३१, २६८, २७२
रक्त शोधक	१६, २२, ४७, ४८, ७५, ७६, १०१, १०३, १०७, १०८, १०९, १११, ११३, ११४, ११८, ११९, १२४, १२९, १३०, १३८, १४४, १४५, १४६, १४८, १५१, १५७, १५८, १५९, १६०, १६२, १७२, १७८, १८८, १९३, १९६, १९८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रक्तस्राव	२४०, २४३
रक्त स्तंभक (खून रोकने वाला)	१६५, २५२
रक्तस्रावी रोग	२८, १२५, १४०, १८४, १८६
रक्तातिसार (दस्त के साथ खून आना)	१५, १२५, १३६, १८४, १९७, २०१, २४१, २४३, २५३, २५६, २५८, २५९, २७१, २७३, २७६
रक्तार्श	१५, १२३, १४५, १६२, १७०, १८०, १८४, १९०, २०१, २३१, २४१, २४६, २५०, २५८, २५९, २६०, २७४, २७५, २७६
रजोरोध (मासिक धर्म रुक जाना)	१५६, १८३
राजयक्ष्मा (टी. बी.)	११, १२४, १४८, २१०, २५०, २६०
रतौंधी (रात को न दिखना)	१६
वमन (उल्टी)	८, १७, ३४, ८८, ९०, १०६, १०९, १११, ११६, ११८, १२०, १२४, १२९, १३२, १४३, १५१, १५८, १८२, १८४, १९४, १९८, १९९, २०६, २०७, २०८, २१३, २१६, २३१, २३८, २५१, २५२, २५३, २५५, २६५, २८२, २९७
व्रण (घाव)	४७, २३७, २४५, २५६, २५७, २७१, २७३, २७४, २८१, २९३, २९९, ३०१, ३०२
व्रणरोपण (घाव भरने वाला)	३, २०, २२, २८, ३५, ५०, ५८, १००,११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२७, १२८, १३५, १४१, १४३, १४५, १४६, १५०, १५१, १५८, १६३, १६४, १६५, १७०, १७२, १७४, १७९, १९०, १९३, २००, २०२, २४७,२५९, २७६
व्रण शोथ (घाव में सूजन)	१३७, १८५, २०४, २१८, २७५
वाजीकरण	१, ८५, १०३, १२३, १२४, १३९, १४२, १५१, १५८, १८९, १९२, १९३, २८०, २८९, ३०२
वातरक्त (जोड़ों का दर्द)	३, ४५, ८०, २१७, २४८, २६०, २६२, २८९,
वातरोग	२१०, २१९, २६२, २६८, २८७, २९१, ३०३
वातहर	१११, ११४, १५३, १७४, १९२, १९४, २५१, २६०
विबंध(कब्ज)	१३, १९, २०, ११५, १३८, १४४, २४१, २४५, २५२, २६६, २६९, २७२, २८२, २९७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वामक (उल्टी लाने वाला)	१०९, १२८, १३५, १३८
विरेचन (दस्त लाने वाला)	११०, २४८, २३६
विष दोष	१७२, १७७, २६८, २७४, २९६
विषघ्न (विष के प्रभाव को दूर करने वाले)	८, ११४, १२४, १३३, १४०, १५०, १५२, १९०, १९९
विषाणुघ्न (विषाणु का नाश करने वाला)	१०१, १०७, ११८, १२८, १४६, १६०, १६१
विसर्प (त्वचा का एक रोग)	२१०, २३३, २४६, २५१, २५३, २६०, २६५
विषम ज्वर (मलेरिया)	८, ९, १३, १४, १५, १८, २०, ३१, ३७, ४७, ५२, ५९, ७८, ९७, १२४, १४२, १८५, २०३, २०५, २०६, २०८, २१७, २२१, २२४, २४०, २६०, २६१, २६७, २७०, २८७, २९३, २९६, २९९
विसूचिका (हैजा)	७, ३६, ५५, ६१, ६८, ७१,१०१,१०७,११६,१४२,१४७,१५१,१९९, २३८, २४६, २६९, २७२, २९७
वेदनाहर	४७, १११, १४७, १६१, १८४, २००, २०२
वृक्क	२०५, २२२, २३२, २४७
वृक्क रोग (गुर्दे की बीमारी)	२३, २८, १४७, १९६, २६२, २५७, ३००
वृक्कशोथ	२३२, २८९
श्वसनी शोथ (सांस की नली की सूजन)	१४, १६, २३, ३४, ५७, ५०, १२४, १४२, १६७, १७०, १७८, २०८, २०९, २२३, २२४, २४८, २६४, २६६, २७८, २८२, २९२, ३०३
श्वांसरोग (दमा)	६, ९, ११, १५, १६, २१, २७, ३३, ३७, ४०, ४१, ५०, ५४, ५६, ५७, ७५, ७९, ९२, ९६, २०४, २०६, २०८, २१४, २१८, २२१, २२६, २२७, २३२, २३४, २३५, २३७, २४३, २४८, २५९, २६०, २६३, २६४, २६६, २६८, २६९, २७०, २७२, ३०३
श्वेतप्रदर	२४, ४३, ४४, ४७, ५३, ५५, ५९, १५२, १५३, १६१, १६७, १८५, १९३, २०७, २१२, २१८, २३५, २३६, २५२, २५३, २५६, २५८, २६०, २६१, २७१, २८८, ३०३
श्लीपदरोग(फाइलेरिया)	१२८, २२८, २३९, २४२, २७१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिरोवेदना	२६, २७२
शिर:शूल	७, ६०, ८८, ९०, १००, १३०, १६३, १७०, १७३, १८१, १८२, २००, २०५, २०७, २१३, २२६, २३१, २३२, २३३, २४२, २४७, २६२, २७८, २८३, २९०, २९९, ३०४
श्वित्र रोग (सफेद दाग)	१५२, १५३,१६१, १६७, १८५, १९३, २०७, २०८, २१३, २२१, २२४, २२८, २२९, २३१, २५२, २३४, २३७, २३९, २४६
शुक्रवर्धक	२८, १२७, १४०, १५१, २१७, २२०, २४०, २५२, २५८, २६१, २६५, २८९
शूल	८, २०, ५९, ८८, ९४, १०६, १०९, ११२, १२१, १२६, १२८, १२९, १३०, १३६, १४०, १५८, १६७, १७५, २००, २६४, २९९, ३००, ३०१
शोथ	८, १३, १७, ३१, ३८, ४०, ४५, ५९, ९८, २००, २८१, २८५, २३२, २३७, २४०, २४५, २७४, २७५, २७९
शोथघ्न	१०१, १०९, ११०, ११४, ११८, १२१, १२३, १२४, १२५, १३४, १३७, १३८, १४३, १४४, १४५, १४७, १५१, १५२, १५४, १५८, १६०, १६१, १७३, १७६, १७७, १७९, १९१, २०२
शोथहर	२११, २१२, २१९, २२३, २३३, २४५, २६५
सर्पविष	७, १६, २४, ३३, ५७, ९३, ९९, १५०, १७३, १९४, २०५, २२३, २२४, २४३, २७५, २९३
सर्वांगशोथ (सारे शरीर में सूजन)	१०१, १०७
स्तनरोग	२०, २१९, २२४, २४५
स्तन्य जनन (दूध बढ़ाने वाले)	११९, १५३, १६५, २५८
स्तम्भक	१३९, १४३, २७३
सूखा रोग	८०, ३०१
सूजाक	११, १२०, १५२, १६७, २०५, २०७, २२२, २३६, २६६
स्वेद जनन (पसीना लाने वाला)	११६, १४८, १४९
सर्दी-जुकाम	२२०, २४५, २७२
सोजाक	२१५, २१९, २५३, २६६, २७५
संग्रहणी	२१२, २५१, २५२, २६९, २७३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संधिशूल (जोड़ों की सूजन)	२०५, २११, २१५, २२८, २३१, २५८, २६२, २६९
संधिशोथ	१९, ३८, ३९, १०९, ११०, १६२, १६७, १७१, २००, २१४, २२०, २२२, २२४, २२७, २३९, २४८,२५४, २५५, २८३, २८६, २८७, २८९, २९९
हिक्का (हिचकी)	२४०, २५१
हृदय बल्य (हृदय को बल देने वाला)	१२६, १७५, १९१, २०२, २३०, २३८, २४३, २४९, २६९
हृदय रोग	१७, १८, ५७, ७१, ७९, १०८, ११५, ११७, १२९, १३०, १३९, १५१, १८१, १९०, २२४, २५७, २६१, २६५, २७०, २८१, २८४, २८५, २८९, २९४, ३०१
हृदयशूल	२४८, २८७
हृदयाघात	२०१, २६६
त्रिदोष नाशक	२९९, ३००, ३०१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org